‘‘हरियाणवी लोककला में पंखी और दरियों का विवरण’’

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

विभागाध्यक्षा	निर्देशिका	शोधकर्त्री
श्रीमती संतोष	अजंली धीमान	अन्नू
ललित कला विभाग		स्नातकोत्तर
आर्य कन्या महाविद्यालय		(अन्तिम वर्ष)
शाहाबाद (मा0)		

Estd. 1968

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद (मारकण्ड़ा)

2023—2024

ललित कला विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि अन्नू, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **''हरियाणवी लोककला में पंखी और दरियों का विवरण''** शीषर्क पर मेरे निर्देशन से प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इसने पूरी मेहनत और लग्न से उक्त शोध कार्य सम्पन्न किया है। इस महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य पहले नहीं किया गया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ।

मैं इसके उज्जवल भविष्य एंव सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांक :

एसो. प्रोफेसर
श्रीमती, संतोष

प्रमाण पत्र

मैं अन्नू, यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध **''हरियाणवी लोककला में पंखी और दरियों का विवरण''** विषय मेरे स्वंय के प्रयास से किया गया है। आर्य कन्या महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य नहीं किया गया है। मैंने इसे पूरी मेहनत और लग्न से सम्पन्न किया है। यह अप्रकाशित कृति है। जो सामग्री प्रयोग की गई है। उनको दिखाने का प्रयास किया गया है।

निर्देशिका — **शोधकर्त्री**

अंजली धीमान — **अन्नू**

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0)

कुरूक्षेत्र।

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि अन्नु, अनुक्रमांक न0. 220156002, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **''हरियाणवी लोककला में पंखी और दरियों का विवरण''** शीषर्क पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ। इसने पूरी मेहनत और लग्न से यह लघु–शोध कार्य सम्पन्न किया है।

मैं इसके उज्जवल भष्यि एंव सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांकः **प्राचार्या**

डॉ श्रीमती आरती त्रेहन

प्राक्कथन

मानव जीवन का लोककला में गहरा सम्बध है। पंखी तथा दरी कला का एक बहुत ही सुंदर व अनोखा नमूना है। लोककला गांवों के युवा लोगों के अनुभवों, आंतरिक इच्छाओं, भवनाओं का स्वाभाविक रूप है। यह कला सदियों से चली आ रही है। पीढ़ीयों का अनुभव धीरे–धीरे इस कला को निंरतरता और संतारता रहा है।

लोककला देखने में सीधी–सीधी परंतु इसमें कला का एक प्रबल अंश होता है जो इसी छवि को मनमोहक और प्रभावशाली बनाता है। लोककला घरों में सुंदर श्रृंगार होती है। हर व्यक्ति में जन्म से सुंदरता की भूख होती है। जिसकी पूर्ति साधारण जीवन में लोककला द्वारा करता है।

आर्य कन्या महाविद्यालय द्वारा ललित कला विषय में स्नात्कोतर उपधि हेतु पाठ्क्रम में सम्मिलित शोध हेतु हरियाणा की हस्त कला में दरी और पंखी कला विषय चयनित करने की पृष्ठभूमि में यह एक तरफ ही लोक कला रही, वहीं दूसरी तरफ हमारे रीति – रिवाजों में भी इसकी विशेष भूमिका रही है। जो मैंने इस प्रकार से बताया है :–

➡ प्रथम अध्याय में ''कला का परिचय, लोक कला और हस्त कला में संबंध, हरियाणा की भिन्न लोक कलाएं'' का वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

➡ द्वितीय अध्याय में ''प्राचीन भारत में पंखों का इतिहास और प्राचीन भारतीय कला में दरी'' पर प्रकाश डाला गया है।

➡ तृतीय अध्याय में ''पंखी की सामग्री तथा निर्माण विधि, विभिन्न प्रकार की पंखियों का विवरण व दरी की सामग्री तथा निर्माण विधि'' बताई गई है।

➡ चतुर्थ अध्याय में ''प्राचीन ग्रन्थों में दरी व वस्त्र बुनाई कला का उल्लेख, नारी तथा दरी कला का सबंध, दरी की उपयोगिता'' के बारे में लिखा है।

➡ पंचम अध्याय में ''पंखियों के चित्रों का विवरण, दरियों के चित्रों का विवरण'' लिखा है।

अंत में उपसंहार, संदर्भ ग्रंथ सूची और चित्र संग्रह सूची को प्रस्तुत किया गया है। इसमें लघु शोध प्रबंध के माध्यम से स्थापित की गई मौलिक मान्यताओं को प्रतिपादित किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र को सावधानीपूर्वक प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है, तो भी कुछ अशुद्धियां रह जाना स्वभाविक है। आशा है कि विद्वान समीक्षक उन्हें अलक्ष्य करने की कृपा करें।

इस शोध पत्र में जो त्रुटियां रह गई हैं, उनके लिए दोस्ती मैं ही दोषी हूं । अतः इसके लिए मैं विद्वानजनों से क्षमा प्रार्थी भी हूँ।

अन्नू

शोधकर्त्री

आभार

मेरे इस लघु शोध कार्य को करने में जिन महानुभावों का सहयोग रहा है उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरे इस शोध कार्य का उलेख संपूर्ण नहीं होगा। मैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझती हूँ जिनकी प्रेरणा, सहयोग और प्रोत्साहन से में इस कार्य को साकार रूप दे पाई।

सर्वप्रथम में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्थित आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा, के ललित कला विभाग की अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती संतोष के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ , जिन्होंने पूरे शोध कार्य के दौरान मेरा मार्गदर्शन किया। श्री डॉ. राम विरंजन विभागाध्यक्ष, ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र की धन्यवादी हूँ कि इस विषय को सफलतापूर्वक चलाने में आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा की सहायता की।

इसके साथ–साथ में अपने परिवार जनों का भी हृदय की गहराइयों से आभार प्रकट करती हूँ क्योंकि उनके सहयोग के कारण ही मैं इस शोध कार्य को संपूर्ण करने में सक्षम हो पाई।

मैं अपने गुरु आदरणीय श्री महेश धीमान सर व आदरणीय सहायक श्रीमती अंजली धीमान के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने इस कार्य के दौरान मेरी शंकाओं और समस्याओं का निदान किया तथा निरंतर प्रोत्साहित करते रहे।

मैं पूर्व प्राचार्य महोदया आदरणीय डॉ0. श्रीमति आरती त्रेहन जी का भी आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होनें ललित कला विषय में स्नात्तोतर कक्षाएं प्रांरभ कर हमारे चिरलंवित स्वपन को साकार करने का मौका प्रदान किया ।

मैं अपने सभी गुरुजनों के प्रति श्रद्धेय भाव प्रस्तुत करती हूँ। इन्हीं की प्रेरणा व निर्देशन से यह शोध कार्य सम्पन्न हो सका। यदि इस लघु शोध – प्रबंध से पाठक वर्ग का कुछ भी लाभ हुआ तो मैं इसे अपना सफल प्रयास मांनूगी।

अन्नू

शोधकर्त्री

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन	पृष्ठ संख्या
आभार	
प्रथम अध्यायः	**01 – 16**
– कला का परिचय	
– लोक कला और हस्त कला में संबंध	
– हरियाणा की भिन्न लोक कलांऐ	
द्वितीय अध्याय :	**17 – 24**
– प्राचीन भारत में पंखी का इतिहास	
– प्राचीन भारतीय कला में दरी	
तृतीय अध्यायः	**25 – 34**
– पंखी की सामग्री तथा निर्माण विधि	
– विभिन्न प्रकार की पंखियों का विवरण	
– दरी की सामग्री तथा निर्माण विधि	
चतुर्थ अध्यायः	**35 – 48**
– प्राचीन ग्रन्थों में दरी व वस्त्र बुनाई कला का उल्लेख	
– नारी तथा दी कला का संबंध	
– दरी की उपयोगिता	
पंचम अध्याय :	**49 – 59**
– पंखियों के चित्रों का विवरण	
– दरियों के चित्रों का विवरण	
– उपसंहार	**60 – 60**
– संदर्भ ग्रंथ सूची	**61 – 61**
– चित्र संग्रह सूची	**62 – 62**
– चित्र सूची	**63 – 87**

प्रथम अध्याय

- परिचय
- लोक कला और हस्त कला में संबंध
- हरियाणा की भिन्न भिन्न लोक कलाएं

परिचय

कला :–

“मनुष्य की रचना, जो उसके जीवन में आनन्द प्रदान करती है, कला (**Art**) कहलाती है“।

भारतीय कला ‘दर्शन’ है। शास्त्रों के अध्ययन से पता चलता है कि ‘कला’ शब्द का प्रयोग ‘ऋग्वेद’ में हुआ – यथा कला, यथा शफ, मध, शृण स नियामति।’ कला शब्द का यथार्थवादी प्रयोग ‘भरतमुनि’ ने अपने ‘नाट्यशास्त्र’ में प्रथम शताब्दी में किया –

“न जज्ञान न तच्छिल्प न साविघा न सा कला।”

अर्थात ऐसा कोई ज्ञान नहीं, जिसमें कोई शिल्प नहीं, कोई विद्या नहीं, जो कला न हो।

कला संस्कृत भाषा से संबंधित शब्द है। इसकी उत्पत्ति ‘कल्’ धातु से मानी जाती है, जिसका अर्थ है– प्रेरित करना। कला के संबंध में ‘पाश्चात्य दृष्टिकोण’ भी कुछ इसी प्रकार है। अंग्रेजी भाषा में कल को ‘आर्ट’ कहा गया है। फ्रेंच में ‘आर्ट’ और लैटिन में ‘आर्टम’ और ‘आर्स’ से कल को व्यक्त किया गया है। इनके अर्थ वे ही है, जो संस्कृत भाषा में मूल धातु ‘अर’ से है। ‘अर’ का अर्थ है– बनाना, पैदा करना या रचना करना। यह शारीरिक या मानसिक कौशल ‘आर्ट’ माना जाता है।

कला का अर्थ है– सुंदर, मधुर, कोमल और सुख देने वाला शिल्प, हुनर अथवा कौशल।

इन अर्थों के अंतर्गत कुछ सुखद, सुंदर एवं मधुर सृजन है। कला शिल्प कौशल की प्रक्रिया है। अतः कल का अर्थ है– “शिल्प कौशल की प्रक्रिया से युक्त सुंदर व सुखद सृजन रूप। दूसरे शब्दों में “सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् की अभिव्यक्ति ही कला है।

समान्यता, हम कला को मनोविनोद का साधन मानते हैं, अर्थात मन बहलाव, मन का विनोद विशिष्ठ नोदन – यद्यपि मनोविनोद भी मामूली बात नहीं। तथापि हमारा विचार है कि कला मनोनिर्माण – मन का निर्माण भी करती है। सृजन इसका सार है और सृजन का सर्वश्व है। नूतन, चेतना का अभिवर्भाव नये आयाम और स्फूर्ति का उदय है।

कला की अपनी दृष्टि है, जो कला का दर्शन है। इसके लिए विराट विश्व एक ‘रूप’ है, महान ही नहीं महतो महीयान्। लय और संतुलन इसके प्रमुख विधान है। इसी संतुलित और लयात्मक रूप में सत्य का साक्षात्कार होता है। इसी में मानव–मन की मंगल कामना, शिव की साधना और सारे संकोच एवं बंधनों से मुक्ति स्वरूप आनंद की सिद्धि होती है।

➢ कला का परिचय और परिभाषाः–

रचना या निर्माण करना मनुष्य की सहज वृति और व्यापार है। यों पशु–पक्षी भी कुछ न कुछ बनाते हैं, जैसे– घोंसला, मांद, छत्ता या बांभी, आदि क्यों बनाते हैं? कैसे बनाते हैं? और इसे बनाने के पीछे क्या विचार, प्रवृत्ति या भाव रहते हैं? हम इनका अनुमान ही कर सकते हैं। इसलिए हम उनकी रचनाओं के 'दर्शन' का विवेचन – विश्लेषण नहीं करते। अपनी सभ्यता–संस्कृति की यात्रा में मनुष्य ने जब से होश संभाला है, वह अपनी रचनाओं में उपयोगिता का ध्यान तो रखता ही है, साथ ही वह रचना – कौशल के उत्तरोत्तर विकास के सहारे उनमें रूप के सौंदर्य को सजाने में भी सफल हुआ है। कला क्या है? किसी भी कृतिको (करना), भणिति (कथन या कहना), गठन, निर्माण, रचना अथवा अभिव्यक्ति को हम 'कला' कह सकते हैं, जिसके विन्यास या ताने–बाने में 'रूप' का अनुभव हो।

रामायण को हम एक कृति मानते हैं। इसमें कथा–वस्तु, छन्द, अंक अथवा अध्याय, संगीत, भाषा और भाव आदि अनेक अव्यय या अंग होते हैं।

➢ कला की अवधारणाएँ या परिभाषाएँ :–

विद्वानों ने कला के बारे में अपने–अपने अलग–अलग तर्क दिए हैं। वह इस प्रकार हैं –

1 'प्लेटो' – के अनुसार? प्रत्येक व्यक्ति सुंदर वस्तु को अपना प्रेमास्पद चुनता है। अतः कला का प्राण सौंदर्य है। उन्होंने कला को सत्य की अनुकृति माना है।
2 'अरस्तू' – ने इसे अनुकरण कहा है।
3 'हीगल' – ने कला को आदि भौतिक सत्ता को व्यक्त करने का माध्यम माना है।
4 'क्रौचें' – की दृष्टि से कला बाह्य प्रभाव की आंतरिक अभिव्यक्ति है।
5 'फ्रायड' – ने कला को मानव की दमित वासनाओं का उभार माना है।
6 'हरबर्ट रीड' – अभिव्यक्ति के रंजन स्वरूप को कला मानते हैं।
7 'टैगोर' – के अनुसार, मनुष्य कला के माध्यम से अपने गंभीरतम् अन्तर की अभिव्यक्ति करता है।
8 'प्रसाद' – जी के अनुसार ईश्वर की कर्तव्य तथा शक्ति का मानव द्वारा शारीरिक तथा मानसिक कौशलपूर्ण निर्माण कला है।

➢ कला के प्रकार :–

कल के कई प्रकार होते हैं और इन प्रकारों का परिगठन भिन्न–भिन्न रीतियों से होता है।

1 वास्तु कला या स्थापत्य कला :— अर्थात भवन—निर्माण कला, जैसे— दुर्ग, मंदिर, स्तूप, चैत्य, मकबरे आदि।

2 मूर्तिकला :— पत्थर या धातु की छोटी—बड़ी मूर्तियाँ।

3 चित्रकला :— भवन की भित्तियों, छतों या स्तंभों पर अथवा वस्त्र, भोजनपत्र या कागज पर अंकित चित्र।

4 मृदभाण्ड़कला कला :— मिट्टी के बर्तन।

5 मुद्राकला :— सिक्के या मोहरें।

6 प्रस्तर कला :— पत्थर से गढ़ी हुई आकृतियाँ।

7 धातुकला :— काँसे, तांबे अथवा पीतल से बनाई गई मूर्तियाँ।

8 दंतकला :— हाथी के दांत से निर्मित कलाकृतियाँ।

9 मृतिकाकला :— मिट्टी से निर्मित कलाकृतियाँ।

➢ भारतीय कला और संस्कृति का संबंध :—

कला मानव संस्कृति की उपज है। इसका उदय मानव की सौंदर्य भावना का परिचायक है। इस भावना की कृति व मानसिक विकास के लिए ही विभिन्न कलाओं का विकास हुआ है। कला का शाब्दिक अर्थ है— किसी वस्तु का छोटा अंश। कला धातु से 'ध्वनि' व 'शब्द' का बोध होता है। ध्वनि से आशय है — अव्यक्त से व्यक्त की ओर उन्मुख होना।' कलाकार भी अपने अव्यक्त भावों को विभिन्न माध्यमों से व्यक्त करता है। कला की उत्पत्ति इस प्रकार भी कर सकते हैं— क + ला, क — कामदेव, सौंदर्य, हर्ष व उल्लास, ला — देना, 'कलांति ददातीति कला' अर्थात सौंदर्य की अभिव्यक्ति द्वारा सुख प्रदान करने वाली वस्तु ही कला है।

आधुनिक काल में कलाओं का वर्गीकरण दो बिंदुओं पर किया गया है —

1 उपयोगी कला :— उपयोगी कला मानव जीवन समाज के लिए उपयोगी होती है।

2 ललित कला :— ललित कला सौंदर्य प्रदान होती है। ललित कलाओं का उल्लेख प्राचीन भारतीय साहित्य में कहीं भी उपलब्ध नहीं है। अतः ललित कला का नामकरण पाश्चात्य संपर्क की देन है।

3 कला अध्ययन के स्त्रोत :— कला अध्ययन के स्रोत का अभिप्राय उन साधनों से है, जो प्राचीन कला के इतिहास को जानने में सहायक हो। भारतीय चित्रकला के अध्ययन स्त्रोत निम्न श्रेणियों में विभक्त किया जा सकते हैं :—

✪ ऐतिहासिक ग्रंथ :—

वर्तमान में कुछ ऐसे ग्रंथ प्राप्त हैं जिनमें प्राचीन समय की कला विषयक जानकारी मिलती है। राजा—महाराजाओं के राज्य काल में घटित घटनाओं का वर्णन भी इन ग्रन्थों से मिलता है।

✪ शिलालेख :—

शिलाओं पर अंकित प्राचीन लेखो की कला, धर्म एवं वास्तु निर्माण के विषय में जानकारी होती है। बादामी, अजन्ता, बाघ आदि गुफाओं में शिलालेख प्राप्त हुए हैं, जिनसे निर्माण एवं कला शैलियों के विषय में जानकारी मिलती है।

✪ प्राचीन खंडहर :—

उत्खनन के पश्चात प्राचीन समय में ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल, स्मारक, मंदिर तथा भवनों से प्राप्त चित्रों तथा मूर्तियों के विषय में जानकारी मिलती है। अजंता, एलोरा, बादामी, सारनाथ आदि जगहों में खुदाई एवं साफ—सफाई के बाद ही कलाकृतियों के विषय में जानकारी मिली।

✪ मोहरे तथा मुद्राएं :—

प्राचीन काल में प्रचलित कला के विषय में मोहरें तथा मुद्राओं से जानकारी मिली है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से प्राप्त मोहरे पर अंकित पशु आकृतियों से उस समय की उन्नत मूर्ति कला का अनुमान लगाया जा सकता है।

✪ यात्रियों के वृतांत :—

भारत में समय—समय पर उनके विदेशी यात्रियों ने भारत की यात्रा की तथा उन्होंने यहां की कलाकृतियों का अवलोकन कर उनके विषय में विवरण लिखें। उदाहरण के लिए चंद्रगुप्त मौर्य के समय की कलाकृतियों का वृतांत विदेशी यात्री 'मैगस्थनीज' में दिया है। चंद्रगुप्त—विक्रमादित्य के समय का वृतांत फाह्यान ने लिखा है।

✪ बादशाहों द्वारा लिखी आत्मकथाएँ :—

मुगल बादशाहों द्वारा लिखी आत्मकथाओं के उसे समय में प्रचलित कला, कलाकार, स्थापत्य एवं कलाकृतियों के विषय में जानकारी मिलती है। बाबर द्वारा लिखित 'वाकथात—ए—बाबरी' जहांगीर

द्वारा लिखी 'तुजुक–ए–जहांगीरी' और अबुल– फजल द्वारा लिखी 'आईन–ए–अकबरी' के द्वारा चित्रकला संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

यही नहीं भारतीय संस्कृति में लोक कलाओं की खुशबू की महक आज भी अपनी प्राचीन परंपरा से समृद्ध है। जिस प्रकार आदिकाल से अब तक मानव जीवन का इतिहास क्रमबद्ध नहीं मिलता उसी प्रकार कला का भी इतिहास क्रमबद्ध नहीं है। परंतु यह निश्चित है कि सहचरी के रूप में कला सदा से ही साथ रही है। लोक कलाओं का जन्म भावनाओं और परंपराओं पर आधारित है क्योंकि यह जनसमान्य की अनुभूति की अभिव्यक्ति है। यह वर्तमान शास्त्रीय और व्यावसायिक कला की पृष्ठभूमि भी है।

आज भारत की वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण 'ताजमहल' है, जिसने विश्व की अपूर्व कलाकृतियों के सात आश्चर्य में शीर्षस्थ स्थान पाया है। लाल किला, अक्षरधाम मंदिर, कुतुबमीनार, जामा मस्जिद भी भारतीय वास्तु कला का अनुपम उदाहरण रही है। मूर्तिकला, समन्वयवादी वास्तुकला तथा भित्तिचित्रों की कला के साथ–साथ पर्वतीय कलाओं ने भी भारतीय कलाओं से समृद्ध किया है।

सत्य, अहिंसा, करुणा, समन्वय और सर्वधर्म समभाव ये भारतीय संस्कृति के ऐसे तत्व हैं, जिन्होंने अनेक बाधाओं के बीच भी हमारी संस्कृति की निरंतरता को अक्षुण बनाए रखा है। इन विशेषताओं ने हमारी संस्कृति में वह शक्ति उत्पन्न की है कि वह भारत के बाहर एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया में अपनी जड़े फैला सके।

लोक कला और हस्तकला में संबंध

लोक कला को सजाने–संवारने के लिए जिस रूपांकन का प्रयोग किया जाता है, उसे लोक कला कहते हैं। कला का जन्म मानव सभ्यता के साथ–साथ हुआ। लोक कला को तीन भागों में विभाजित किया गया है :–

1. धार्मिक कला
2. अनुष्ठानिक कला
3. अलंकृत कला

इन तीनों प्रकार के कलाओं में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण रहता है।

हस्तकला वह कला है जिसका प्रयोग हम अपने हाथों द्वारा लिखी चीज का निर्माण करते हैं। इससे हमें सदियों से चली आ रही परंपरा का बोध होता है। लोक कला की कहानी मानव जीवन को संचित्र कहानी है। जन्म से मृत्यु तथा सुबह से शाम तक किए जाने वाले मनुष्य के हर कार्य में देखी जा सकती है। लोक कला मनुष्य के जीवन में बड़ी सहजता और सरलता से उतरी है। हस्तकला का अर्थ है – हाथों द्वारा जो कला बनाई जाए उसे हस्तशिल्प कला कहते हैं। लेकिन हस्तशिल्प कला संबंध जहां मानव के व्यवसाय व आर्थिक उन्नति के साथ है वहीं लोक कला जहां घर के आंतरिक स्थल पर जगह पाती है। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता जाता है। लोक कला का छोर गृह लक्ष्मी के हाथों में है व हस्तकला घर के पुरुषों के द्वारा चलाई जा रही है। लेकिन आजकल स्त्रियां भी पुरुषों के बराबर कार्य कर रही हैं। दोनों की भावनाओं में अंतर होने के कारण यह कलाएं एक दूसरे से भिन्न है। दोनों कलाएं अपनी–अपनी परंपरा का निर्वाह कर रही हैं। ऐसा कोई कार्य नहीं जो हाथों द्वारा न हो। इसलिए लोक कला भी हस्तकला के साथ–साथ चलती है।

लोक कला और हस्तकला के समानार्थी अंग्रेजी शब्द ''फाक'' की उत्पत्ति 'एंग्लो सैक्शन' शब्द 'फार' से हुई है। जर्मनी में यह बॉलक के रूप में प्रचलित है।

'फोक' शब्द से असंस्कृत और गूढ़ समाज का बोध होता है तथा व्यापक अर्थ में इसका प्रयोग, संस्कृत राष्ट्र के सभी लोगों के लिए होता है। इस 'फोक' के लिए हिंदी में लोक, जन, ग्राम तीन शब्दों का प्रयोग हुआ है। परंतु लोक शब्द को ही उपयुक्त स्थान प्राप्त है। लोक, मनुष्य, समाज था, वह स्वर्ग है, जो अभिभाव, संस्कार, शास्त्रीयता और पंडित्य की चेतना के अहंकार से शून्य हैं और जो एक परंपरा के प्रभाव में जीवित हैं। हस्त लोक कला का अभिव्यक्त स्वरुप वह सामान्य जन समूह है जो अपने नैसर्गिक प्रकृति के सौंदर्य की दिव्य ज्योति से कल्याणमय संस्कृत का निर्माण करते हैं।

डॉक्टर कृष्ण बिहारी दास ने 'लोक' की सुंदर व्याख्या करते हुए लिखा है – लोक है – लोक हस्तकला उन लोगों के जीवन की अनायास प्रणागत्मक अभिव्यक्ति है, जो संस्कृति तथा सुसभ्य प्रवाहों से परे रहकर कम या अधिक रूप में आदिम अवस्था में निवास करते हैं। इस हस्त लोक कला का अर्थ वह सरल, स्वाभाविक मानव समाज है, जिनकी भावनाओं, विचारों, परंपराओं, क्रियो एवं मान्यताओं में वास्तविक कल्याण के तत्व विद्यमान रहते हैं। इसी को लोक संस्कृति भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त 'गोडर एच गैस्टर' ने कहा भी है कि – लोक के अंतर्गत उन समस्त तत्वों या साहित्य का समावेश होता है जो लोक कला के हैं। जनता के लिए हैं, तथा जो लोक द्वारा चित्रित किया गया है और इसी प्रकार लोक कला में वे समस्त लोकत्रियां आएगी जो लोग द्वारा सृजित हैं तथा लोक के लिए ही उनकी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में है।

आग फोकलर शब्द का प्रयोग उन विशिष्ट पिछड़े हुए जातियों के तत्वों के संबंध में किया जाता है जो आज सभ्य समाज में मिलते हैं। उपरोक्त विचारों में लोक का अर्थ अधिकांश विद्वानों ने आदिमानव या असभ्य ग्रामीण मानव के संबंधित तत्वों के संदर्भ में किया है।

पश्चिमी और भारतीय लोग संबंधी विचारों को देखते हुए हम कह सकते हैं कि लोक से हमारा तात्पर्य उस समाज से है, शास्त्रीयता और पंडित्तय से कोसों दूर है, जिसे नागरिक संस्कृति ने प्रभावित नहीं किया है, जो अनपढ़ और ग्रामीण है, जिसमें कृतिमता नहीं है, जो आदिम संस्कृति के परंपरागत तत्वों को वहन किए हुए हैं। इसी लोक समाज की रंगों और तुलिका द्वारा रूपभि व्यंजना को लोक कला कहते हैं।

➢ लोक कला व हस्तकला का अर्थ :–

लोक कला स्वाभाविक होती है और हस्तकला हुनर पर आधारित होती है। इसका रूप सरल होते हुए भी हृदय को स्पर्श करने वालों पर आधारित होती है। भले ही यह जीवन की गहराई और जटिलता को अभिव्यक्त न कर सके, परंतु जीवन का उत्साह इसकी रेखाओं में सजीव हो उठता है। अतः इसको समझने के लिए संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है।

लोक हस्त कला का अभिप्राय एक देश के संपूर्ण समाज से है। इस प्रकार संपूर्ण समाज में व्याप्त कला को ही लोक कला कहा जा सकता है। लोक कला आंतरिक सौंदर्य का अभिव्यक्त प्रत्यक्ष तथा सरलतम रूप हैं, जिसमें न कोई शास्त्रीय बंधन होता है और न ही कोई बनावटीपन।

लोक हस्तकला की कहानी मानव जीवन की सचित्र कहानी है, जो जन्म से मृत्यु तथा सुबह से शाम तक किए जाने वाले मनुष्य के हर कार्य में देखी जा सकती है। लोक कला हमारे जीवन का अर्विच्छिन अंग है। वह हमारे प्रतिदिन के जीवन में समाहित है, जिसका हम अपने घरों में, अपने

त्योहारों और उत्सवों पर, अपने रस्मों तथा अनुष्ठानों में तथा अपनी आत्मभिव्यक्ति के साधनों में प्रयोग करते हैं। वह किसी भी जाति या धर्म विशेष की धरोहर नहीं होते।

लोक कला मानव जीवन में बड़ी सहजता और सरलता से उतरी है। फलतः स्वरुप मनुष्य के अंदर विद्यमान तत्वों से उनका अटूट संबंध है। लोक कला एक सृजनात्मक अभिव्यक्ति है जो सरल एवं स्पष्ट लोक मानस द्वारा रची गई है तथा वादों के झमेले से दूर रहती है। किसी भी क्षेत्र की संस्कृति को अच्छी तरह समझने के लिए उस क्षेत्र की लोक कला को जानना जरूरी होता है। कला और संस्कृति का आपस में घनिष्ठ संबंध होता है। लोक जीवन की सच्ची झांकी उस क्षेत्र की लोक कलाओं में देखने को मिलती है। प्रत्येक जाति के लोगों का रहन–सहन, धर्म संस्कार एक दूसरे से थोड़ा भिन्न होता है। यह भिन्नता उनके दैनिक जीवन के क्रियाकलापों में व्यक्त होती है। यह लोक का एक ऐसा पक्ष है जिसमें क्षेत्रीयता की पहचान बनती है, रंगोली, फुलकारी बनाना, सांझी बनाना, माडना, पंखी का निर्माण, कोहलर, कढ़ाई, बनाई, आदि ऐसी लोक परंपराएं हैं जिससे एक निश्चित क्षेत्र की लोक कला का बोध होता है।

प्रत्येक क्षेत्र की अपनी कुछ विशेषता होती है जो वहां के लोक की व्याख्या करने पर सामने आती है। इस लोक हस्तकला की व्याख्या से उस समाज के रहन–सहन तथा संस्कृति की व्याख्या होती है जिसमें वह जीता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी क्षेत्र के जनजीवन का अध्ययन वहां की लोक कला के अध्ययन के बिना अधूरा है। लोक कला का अध्ययन आज इसलिए भी आवश्यक हो गया है क्योंकि शहरीकरण एवं आधुनिकता का प्रसार गांव में इतना तीव्र गति से फैल रहा है कि अपनी लोक संस्कृति को बच्चा बना कठिन हो गया है और वह भय इस बात का है कि सदियों पुरानी हमारी संस्कृति नष्ट न हो जाए।

आज सभ्यता के उत्थान और भविष्यकारों के परिवेश में गांव के स्वरूप बदल रहे हैं। हमारी आचार संहिता में न जाने कितने परिवर्तन हुए और न जाने कितने अभी और होने हैं। आज अध्यात्मक तीज, त्यौहार या संस्कारों के प्रति पहले जैसी प्रवृत्ति नहीं हो रही है।

- ### लोक कला शब्द का अर्थ :–

लोक कला के संबंध में कुछ लिखने से पूर्व यह आवश्यक है कि लोक शब्द के अर्थ को पहले समझ। ऋग्वेद में लोक शब्द का प्रथम अर्थ स्थान मिलता है। हिंदी में सूर उलसी और मीरा आदि में लोक शब्द का प्रयोग 'जन समाज' मानव मात्र के लिए किया है। लोक शब्द संस्कृत में 'लोक दर्शन' धातु के धत्र, प्रत्यय करने पर निस्पन हुआ है। लट् लकार में अन्य पुरुष का एक वचन रूप 'लोकते' है, अतः लोक शब्द का अर्थ देख देखने वाला है। अतः वह समस्त जन समुदाय जो इस कार्य को करता

है, जन्म कहलाऐगा। हश्र लोककला का अर्थ अर्थात हाथों द्वारा जो कला बनाई जाए उसे हस्तशिल्प कला कहते हैं। इस कला का संबंध कई प्रकार की कलाओं से है। लोक कला व हस्तशिल्प दोनों का जन्म मानव की अभिव्यक्ति के द्वारा हुआ है। लेकिन हस्त शिल्प कला का संबंध जहां मानव के व्यवसाय व आर्थिक उन्नति के साथ है, वहीं लोक कला जहां घर के आंतरिक स्थल पर जगह पाती है। वहीं हस्तकला सार्वजनिक स्थानों पर देखी जा सकती है।

लोक कला का विकास मानव सभ्यता के साथ–साथ हुआ। यह कला मानव की अवस्थाओं एवं धार्मिक विश्वास के नियमों में पली, बड़ी और विकसित हुई। भारतीय साहित्य में घर के आंगन, दालान रसोई व दीवारों पर स्त्रियों द्वारा बनाए गए अनेक चित्र देखने को मिलते हैं। लोक कला व हस्तकला दोनों एक दूसरे की पूरक हैं। लोक कला में वे सभी कार्य हैं जो हस्तकला में क्योंकि दोनों प्रकार की कला का कार्य हाथों द्वारा ही होता है। लोक कला हाथों द्वारा किया गया कार्य लोक जीवन को सजाता है। लोक कला विशेष कर स्त्रियों से जुड़ी हुई है। भारतीय साहित्य में घर के आंगन, दालान, रसोई व दीवारों पर स्त्रियों के द्वारा जो कुछ भी बनाया जाता था वह उन्हें आंतरिक आनंद देता था। उससे उन्हें खुशी मिलती थी।

हरियाणा की विभिन्न कलाओं में लोक कला

प्रदेशों में विभिन्न प्रकार की लोक कलाएं पाई जाती हैं। प्रत्येक कला का अपना अलग महत्व होता है। हरियाणा में भी विभिन्न प्रकार के लोक कलाएं पाई जाते हैं। जिनमें कुछ का विवरण इस प्रकार है :–

❖ सांझी :–

सांझी का त्यौहार बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। सांझी अकेली बहन थी। सभी भाई उसे बहुत प्यार करते थे। परंतु सांझी का छोटा भाई दुलीचंद उसका सबसे अधिक प्यारा भाई था। सांझी का विवाह सभी सात भाई मिलकर करते हैं और वह ससुराल चली जाती है। सांझी के साथ सांझी का भाई दुलीचंद भी उसके साथ जाता है और सांझी के साथ वह घर का सारा कार्य करता था। सांझी ससुराल में उस चिंता में भयभीत रहती है कि कहीं कोई उसे पर चोरी आप ने लगा दे। इसलिए दुलीचंद को वह वापस घर भेज देती है। सांझी युवावस्था में ही विधवा हो गई थी और उसे सास में ननद द्वारा सम्मानित किया जाता था। और साझी अपने मायके चली जाती है और खुद को भगवान की भक्ति में लीन कर लेती है। जब सांझी को पता चलता है कि सांझी का जेठ 'दशहरा' उसे लेने के लिए आ रहा है। तभी सांझी अपने छोटे भाई दुलीचंद के साथ ससुराल चली जाती है। सांझी के विषय में एक मान्यता है कि दशहरा सांझी का जेठ होता है। इसलिए सांझी को घर से एक दिन पहले ही विदा किया जाता है। सांझी आश्विन माह की कृष्ण पक्ष 'पितृपक्ष' की अमावस्या में दोपहर बाद लगाई जाती है।

❖ गौरा माँ :–

लोक कला में गौरा का अंकन विशेष रूप से गीली मिट्टी अथवा सुपारी द्वारा निर्मित होता है, जो चिआयामी होता है। लोक जीवन में गौर को अनाज में ही प्रतिस्थापित करने की प्रथा है। लोकगीतों में गौ अभिप्राय सुयोग्य वर प्राप्ति तथा शुंभकर के रूप में वर्णित है।

❖ अहोई माता :–

इनकी पूजा कार्तिक मास में अष्टमी को की जाती है। ऐसी मान्यता है की अहोई माँ पुत्र प्रदान करने वाली है और सभी मृतक पुत्रों को जीवित करने का समर्थन इनमें है। अहोई माता को लोक में

✪ वर्मा – वदंना :– हरियाणा की विभिन्न लोक कलाएं

'होई' भी कहा जाता है। अहोई माँ हिमाचल प्रदेश और पहाड़ी क्षेत्रों में देवी दुर्गा के रूप में भी पूजी जाती है और इनका बच्चों के स्वास्थ्य और सुरक्षा से संबंध है।

❖ भिति चित्र :—

हरियाणा की हवेलियों, चौपालों, कुओं, बाबंड़ियों, सरोवरों की बारह दरियों, धर्मशालाओं, ठाकुरद्वारों, शिवालियों, मंदिरों, मठों, साधोनों के डेरों, छतरियों आदि की दीवारों पर बने भिति चित्रों से पता चलता है कि ये चित्र जीवन जगत के हर पक्ष को दर्शाते हैं।

❖ मिट्टी के खिलौने :—

हरियाणा में मिट्टी के खिलौने बनाने की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। हरा—भरा प्रदेश होने के कारण यहां मोर, तोता, चिड़िया, हरियल, कबूतर आदि के खिलौने भी प्राप्त हुए हैं। प्रेरणा नामक घुमक्कड़ जाति की महिलाएं आजकल भी गली—गली में घुमकर हुक्का, पपैहा, गाय, बैल, ऊंट, कुत्ता आदि मिट्टी के पके हुए खिलौने आटा, अनाज, गुड़ आदि के बदले में बच्चों को देकर जाती हैं।

❖ कुम्भ कला :—

नवपाषाण युग में जब हरियाणा में खेती बाड़ी आरंभ हुई तभी से मिट्टी के बर्तन बनाने की कला का जन्म हुआ। मिताथल (भिवानी, हिसार, जींद) से उत्खन्न से मिले कच्चे का पक्के मिट्टी के बर्तनों के टुकड़ों से पता चलता है कि पुराने समय से ही यहां मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग होता रहा है। लेकिन कुम्हार की नई पीढ़ी के किशोर इस पुश्तैनी धंधे के प्रति उदासीनता दिखाई देते हैं। लेकिन बुजुर्ग कुम्हार पारंपरिक शैली से कार्य करने को अधिक सरल और स्वाभाविक मानते हैं।

❖ हस्त कसीदाकारी :—

हरियाणा में महिलाओं के द्वारा की जाने वाली हस्तकसीदाकारी एवं फुलकारी की सदियों पुरानी लोक परंपरा रही है। तीन—चार दशक पहले तक कर्सत के दिनों में ग्रामीण महिलाएं किसी चौबारे या आलान में अपने—अपने चरखे या अन्य कसीदाकरी का सामान लेकर एकत्रित हो जाती थी। ओढनी, चूदडी, सोपाली, दुकनिया आदि के सौंदर्य के दुकनिया आदि के सौंदर्य को बढ़ाने हेतु इन पर शीशे के छोटे—छोटे गोल—गोल टुकड़े लगाए जाते थे। हरियाणा में सभी आयु वर्ग की महिलाएं अपने—अपने हुनर के अनुसार सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, ठकाई आदि करती आई हैं। कोई बैलों के पाल व मखेरणों की

✪ वदंना वर्मा :— ''भारतीय लोक कला एंव हस्त शिल्प वैभव''

कसीदाकारी में दक्ष होती थी तो कोई रंग–बिरंगी टोपी, थैले, बीजोहड़ी आदि पर 'किरोशिए' से मोर, पपीहा, हाथी, घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली आदि करने में परंपरागत होती थी।

➢ अन्य लोक कलाएं :–

1. कपड़े के खिलौने :–

हरियाणा में गांव की औरतें कपड़े द्वारा कपड़े के ऊंट, बैल, रथ, गाड़ी, घोड़ा, गाय, कबूतर, चिड़िया, झुनझुना, गेंद आदि अनेक प्रकार के खिलौने बनाने में माहिर होती हैं। झुनझुना बनाने के लिए माचिस में गेहूं के दोनों का या कोई दाल, कंकर डालकर उस पर रंगदार कपड़ा चढ़ाया जाता है। फिर इसे बड़े ही सलीके से कपड़ा और 'गोटा–पेमक' से गढ़े हुए आधा फुट कि सरकंडे से जोड़ दिया जाता है और जब बच्चे इसे पकड़ कर हिलाते हैं तो झुनझुन, झुनझुन की ध्वनि निकलती है। इसी तरह कपड़े से मोर, कुत्ता, भालू, बंदर आदि अन्य पशु–पक्षी और गुड्डा–गुड़ियाँ आदि बनाई जाती हैं।

2. बदनवार :–

अन्य लोक कलाओं में बिन्दरवाल या बंदनवार भी एक है, जिसे कलात्मक रूप देकर घर के मुख्य द्वार बांधा जाता है। नव विवाहिताएं तो बंदनवार के किनारो पर गोटा पेमक लगाकर कलात्मक फुलकारी की जाती है।

3. रंगीन दरी :–

गाँव के बुनकर सदियों से ही ठेठ देसी यंत्रों के बीच में सफेद और किनारो पर रंगदार सूत की दरियां खडड़ी द्वारा बनाई जाती हैं। गांव की महिलाएं ज्यादा औजारों से ही रंगीन दरियां, आसन बनाने में माहिर हैं। जब दर्जी सिलाई के लिए कपड़ों की कटाई छटाई करता है तो काफी करकने बच जाती हैं। बस इन्हीं बची हुई रंग बिरंगी कतरनों को एकत्रित करके दरियां व आसन बना लेती हैं। फिर भी कतरनों के रंगों का संयोजन और दरी निर्माण की शैली लोक कला का सुंदर नमूना है।

4. फुलझड़ी :–

लोककला का एक आकर्षक रूप फूलझड़ी भी है। इसे बनाने के लिए सरकंडे के एक–डेढ़ फुट के टुकड़े काटकर इन्हें वर्णाकार रूप में जोड़ा जाता है। मंदिर के आकार – प्रकार जैसे इस ढांचे के सरकंडों पर रंगीन कपड़ा या कागज लपेटकर ऊपर से गोटा–पेमक चढ़ाकर कलात्मक रूप दे दिया

जाता है। इसके बीच में करीने से चौकोट काटकर दोहरा त्रिकोण सावनाकर रंग–बिरंगे कागज और छोटे–छोटे मूर्तियों की लड़ियां लटकाई जाती हैं, इन लड़कियों के बीच–बीच में माचिस की डिबिया बांधी जाती हैं। जिनके अंदर गेहूं के दाने डालकर ऊपर रंग–बिरंगे कपड़ा चढ़कर कलात्मक रूप दे दिया जाता है और इस प्रकार फुलझड़ी तैयार की जाती है। नव इसर के समय अपने ससुराल में ले जाती हैं। और दालान के बीच में 'शहतीर' के कड़े से बांधकर इसे लटकाया जाता है।

5. पलंग निर्माण कला :–

पुरुष भी एक कुशल लोक कारीगर सनी, गूंज, सूत, सीमेंट के खाली कटटे के रस्से आदि का बाण बाटकर बड़े कलात्मक पतंग, खाट, पीढ़ा–पीढ़ी आदि भरते हैं। हरियाणा के कहीं गांव में ऐसे कलावंत अभी हैं जो अभी भी पलंग खाट बनाते हैं।

6. तुलियों के खिलौने :–

कई स्त्री–पुरुष बारीक सरकंडों, तुलियों आदि से बच्चों के लिए खिलौने जैसे रथ, घोड़ा, ऊंट, गाड़ी आदि बनाते हैं। हर गांव में ऐसे लोक प्रतिभा संपन्न स्त्री पुरुष होते हैं जो अपनी कलाअभिरुचियों के द्वारा हस्तकलाओं को बचाए रखने का प्रयास करते रहते हैं।

7. लाडली निर्माण कला :–

घर में बेकार पड़े कागजों को पानी के मटके में डालकर गला लिया जाता है। गल जाने के बाद इसकी लुगदी तैयार कर ली जाती है। इस लुगदी को इच्छानुसार छोटी बड़ी कई प्रकार की डाडली बना ली जाती है और सूखने पर पीली मिट्टी, खड़ी या सफेदी से पोचकर ऐसी चित्रकार और फुलकारी की जाती है जो देखने योग्य होती है।

8. टोकरी निर्माण कला :–

हरियाणा में हर चीज को समाजयोगी पर हर स्थान पर हृदय के वृक्ष मिलते हैं जिनकी डालियां मजबूत होने के साथ–साथ मुड़ने–तुड़ने वाली भी होती हैं। कांटी–छांटी और झांगी हुई इन शहतूत की डालियां से गांव के कलात्मक लोग टोकरी, टोकरा, झल्ला, छाबड़ा, बोहिया आदि बनाते हैं। इन चीजों को शिल्पकार अपने प्रयोग में लाते हैं और ज्यादा मात्रा होने पर बेच देते हैं। बोंहिया में रोटियां रखी जाती हैं। इसके अतिरिक्त बारीक सरकंडों से छाज, खारी, पिटारी आदि बनाए जाते हैं।

✪ डॉ. सतराम देशवाल, हरियाणा :– ''संस्कृति एंव कला'' पेज न0. – 150

9. रस्सी :–

पशुओं के गले की गल, पट्टी, पट्टा, केशक्यिास के समय महिलाओं के उतरे हुए बालों से 'जतनी' मोर पंखों की 'चरो' व रंग बिरंगी कपड़ों की कतरनों से पट्टी व गांठली, पीतल या स्टील के नन्हे नन्हे घुंघरू को पिरोकर चौरासी आदि बनाने में यहां के पुरुष कलावंत होते हैं। इसके अलावा ज्वार, बाजरा, मक्की आदि की फसल पकने पर तोता, चिड़िया आदि पक्षी आकर बैठते हैं तथा फसल खराब करते हैं। इन्हें उड़ने के लिए बनाई गई टाट व गोफिया और चीज रखने के लिए बनाई जाने वाली 'सिडौरी' आदि ऐसी कलात्मक चीज हैं, जिन्हें हाथ से बांटे गए बारीक बान से बनाया गया है।

10. तोता :–

पुरानी रूई या कपड़े के टुकड़ों को लेकर उनके ऊपर तोता रंगी हरा कपड़ा सिलकर, तोता का आकार बना लिया जाता है। लाल कपड़े से उसकी चोंच बनाई जाती है। इसे और ज्यादा अच्छा दिखाने के लिए उसे पर सूई या किरोशिये से वैसे ही रंगों के धागों की बारीक रेखाएं बनाई जाती हैं। जैसी रेखाएं तोते के शरीर पर होती हैं। मुख्य द्वार की 'चौखट' पर लटकता 'तोता' लोककला की उत्कृष्टता की गवाही देता है।

11. पंखी लोक कला :–

बदलते समय के साथ लोक कला में भी निखार आता गया है तथा शहरी वर्ग लोग भी लोक कला की तरफ आकर्षित होते गए हैं। पंखी की सृजन करना बड़ा ही रोचक पूर्ण है। ग्रामीण महिलाएं अपने व्यस्त जीवन में से समय निकालकर पखियों का निर्माण करती हैं। ग्रामीण महिलाएं कला के प्रति अपनी भावनाओं एवं रुचि को उजागर करती हैं। प्राचीन समय में कला को शिक्षित करने के लिए कोई भी संस्था नहीं थी तथा कलाकार अपने अनुभवों से ही कला के क्षेत्र सृजनात्मक कार्य सीखते थे। तथा अपनी भावनाओं एवं भावनाओं को पंखी कला, गृह सज्जा, अज्यना आदि द्वारा दर्शाया। इन सभी लोक कलाओं में पंखी और दरी ऐसी कला है जो अधिकतर सभी ग्रामीण महिलाओं ने की है।

पंखी ग्रामीण क्षेत्र की लोक कला का अभिन्न अंग है जो कि विश्वभर में प्रसिद्ध है। यह ग्रामीण औरतों द्वारा बनाई गई रचना है। पंखे की कला 4000 साल से भी पूर्व की है। जब मानव जंगलों में रहता था अर्थात आदि मानव के काल से है। तब से लेकर आज तक अर्थात आधुनिक समय तक यह कला विकसित होई आई है। लेकिन जैसे–जैसे मानव वैसे–वैसे उसकी कल्पना शक्ति का भी विकास होता गया और जो समय घर के पुरुष घर से बाहर खाने–पीने का इंतजाम करने जाते तो घर की

महिलाएं खाली समय में रचनात्मक कार्य करती जैसे – कढ़ाई, बुनाई, सिलाई, पंखी आदि की कला को रचनात्मक बनाते चले गए।

12. दरी लोक कला :–

ग्रामीण वर्ग द्वारा रचित धारी लोक कला जो भारतीय कला जगत की अनमोल धरोहर है। ग्रामीण वर्ग में विभिन्न तरह की लोक कलाओं का सृजन किया जाता है। बदलते समय के साथ लोक कला में भी निखार आता गया तथा शहरी वर्ग के लोग भी लोक कला की तरफ आकर्षित होते गए। इन लोक कलाओं में प्रसिद्ध लोक कला दरी कला है। ग्रामीण तथा शहरी महिलाएं अपने जीवन में से समय निकाल कर दरियों का निर्माण करती हैं तथा अपनी भावनाओं एवं रुचि पर आधारित कला का सृजन करती हैं।

प्रत्येक जगह के लोगों का रहन–सहन, धर्म, संस्कार एक दूसरे से भिन्न होते हैं। यह लोक कला का ऐसा पक्ष है जिससे क्षेत्रीयता की पहचान बनती है। जैसे की दरी को बनाने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। इसका संबंध आज से नहीं बल्कि प्राचीन काल से चला आ रहा है। यह ग्रामीण सभ्यता होते हुए भी भारत के हर कोने में बसी हुई है। अक्सर लोक कलाएं गांव में ही पाई जाती हैं। जिनमें दरिया, पंखे आदि आती हैं।

दरी ग्रामीण क्षेत्र की लोक कला का अभिन्न है जो कि विश्व भर में प्रसिद्ध है। यह ग्रामीण औरतों द्वारा बनाई गई रचना है। कुछ लोक कलाओं को ग्रामीण में अपनी मेहनत तथा साधना से नई पहचान दिलाई। ऐसे ही लोक कला दरी कला है, जो की बहुत ही अनमोल है। यह एक सुंदर और अनूठी कला है। यह सौन्दर्य के साथ मनुष्य की जीविका का साधन भी है। जिसके द्वारा हम अपनी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। अधिकतर हम औरतों को ही दरियां बनाते हुए पाएंगे, क्योंकि वह जब घर में घर का काम खत्म करके बैठती हैं। प्रत्येक क्षेत्र के सामान्य क्रियाकलापों में जो लोक कला बनाई जाती है, उसकी जानकारी उस क्षेत्र में रहकर ही प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार दरी भी लोक कला ग्रामीण सभ्यता होते हुए भी भारत के हर कोने में बसी हुई है।

द्वितीय अध्याय

- प्राचीन भारत में पंखों का इतिहास
- प्राचीन भारतीय कला में दरी

प्राचीन भारत में पंखों का इतिहास

ऐसा माना जाता है कि पंखी की कला 400 साल से भी पूर्व की है। भारत में पंखों का साहित्य उल्लेख 'महाभारत' और 'रामायण' काल से मिलता है। महान कवि 'वाल्मीकि' ने एक पंखे के बारे में लिखा है। जिसे उन्होंने एक बार भगवान राम के लिए बनाया था। ''धुंधली रात में पंखा अर्धचंद्र की तरह चमक रहा था और वह चमकीले रंगों से गहनों से सजा हुआ था।''

पुंखा या पंखा शब्द की उत्पत्ति 'पंख' शब्द से हुई है जिसका अर्थ पक्षी का पंख है। पंखा का उपयोग सभी पंखों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, जबकि पंखी शब्द प्राचीन भारत में इस्तेमाल किए जाने वाले छोटे पंखे को दर्शाता है। भारत में पंखी के अस्तित्व और उपयोग का प्रमाण अजंता में बौद्व दीवार चित्रों में पाया जा सकता है और यह दीवार पेंटिंग दूसरी शताब्दी ईस्वी पूर्व की है। प्राचीन काल में पंखों का उपयोग मंदिरों में देवताओं को पंखा करने के लिए किया जाता था। इनका उपयोग शाही दरबारों में राजाओं को प्रंशसित करने के लिए भी किया जाता था। पंखों का आकार 2 इंच के छोटे पंखे से लेकर बड़े पंखों तक होता है। वास्तव में, मुगलों ने अपने पीछे खड़े होने और हाथ के पंखे चलाने के लिए, पंखा वाले के नाम से जाने जाने वाले सहायकों को नियुक्त किया था। तब से पंखा ने शाही संपत्ति होने का स्थान प्राप्त कर लिया है।

ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत के शेष यूरोप तक व्यापार मार्ग स्थापित करने में मदद की और पंखा सबसे महत्वपूर्ण वितरित संस्कृत वस्तुओं में से एक बन गया। वे धन और वर्ग के एक आकर्षक और स्टाइलिश प्रतीक थे। हालांकि पूरे भारत में इसके उपयोग में पर्याप्त सामानता थी। विभिन्न गांवों और कस्बों में पारंपरिक पंखों की किस्में विकसित हुई। प्रत्येक स्थान से अलग–अलग डिजाइनों की विविधता वाले पंखे विकसित हुई जो उन्हें एक दूसरे से अलग करते हैं।

बांस, बेंत, ताड़ के पत्ते, रेशम, पीतल, चमड़े और सजावटी मोतियों और पत्थरों के साथ चांदी के पंखों का उपयोग भूगोल, संस्कृतियों, धार्मिक अनुष्ठानों, सामाजिक प्रोटोकॉल और वर्ग संरचनाओं के आधार पर किया जाता था। आधुनिक समय में हाथ से चलने वाले पंखों की मांग कम हो गई है। उनका स्थान बिजली के पंखों ने ले लिया है और उनका उपयोग सजावटी उद्देश्यों तक ही सीमित कर दिया गया है।

पंखा ग्रामीण भारत के कुछ हिस्सों में पारंपरिक शिल्प वस्तु बन गए हैं। प्रत्येक पंखे की संरचना उस क्षेत्र की संस्कृति के मूल से मिलती–जुलती है जो पंखा तैयार करती है। उदाहरण के लिए राजस्थान का पिपली हाथ का पंखा है जो सजावटी सुई वर्क के उपयोग के साथ विभिन्न आकार और पैटर्न में कपड़े के टुकड़ों को दूसरे कपड़े से सिल दिया जाता है। इस प्रकार के पंखा से काफी

✪ https:// en.m.wikipedia.org/wiki/hand_fan

मिलता जुलता इस क्षेत्र का सैटिन सीलिंग पंखा भी है। आमतौर पर शाही घरों में विशेष रूप से मध्ययुगीन पर भारत में पंखावाले की मदद से उपकरण खींचने के लिए उपयोग किया जाता है। यह पंखा हाथ से खींच जाने वाला एक छत पंखा है जो रेशम और साटन की झालरों से सजाया गया है। इसके अलावा राजस्थान का जरदोजी हाथ का पंखा चमकदार, अलंकृत और जड़े हुए सोने के धागे के काम के उपयोग में भिन्न है। राजस्थान में मंदिर के हाथ पंखे भी लोकप्रिय हैं। ये पीतल पर नक्काशी करके बनाए गए हैं और इनका हैंडल लंबा है।

चित्रित हाथ का पंखा, विभिन्न चित्रों वाला एक कार्डबोर्ड पंखा आमतौर पर देवताओं विशेष कर कृष्ण को अर्पित किया जाता है। राज्य गुजरात के पंखे का अपना स्वदेसी स्वरूप है। मिरर वर्क वाले हाथ के पंखे, शुद्ध कपास आधारित शानदार पंखे हैं, जिन्हें मिरर वर्क से सजाया गया है। कई हैड फैन रंगीन मोतियों से ढका हुआ है और इनमें चांदी का हैंडल होता है। गुजरात भारत में मनका शिल्प का केंद्र है और इन सुंदर सजावटों का उपयोग आमतौर पर दीवार की सजावट के रूप में किया जाता है।

कच्छ, गुजरात में अपने हाथ से सिले हुए चमड़े के हाथ के पंखों के लिए पहचाना जाता है, जो इसके किनारो पर धागे और ऊन से सजाए गए हैं। गुजरात की मेहनती घरेलू महिला श्रमिकों ने पारंपरिक दर्पण कार्य और विभिन्न आकृतियों और आकारों में क्रॉस–कड़ाई के साथ कढ़ाई वाले हाथ के पंखे बनाने के लिए पंखा बनाने की हस्तकला में बहुत परिश्रम किया है।

पश्चिम बंगाल अपने सोला पिथ और पाम लीफ हैंड पंखों के लिए जाना जाता है। बंगाल में कारीगर देवी पूजा के लिए लोकप्रिय रूप से उपयोग किए जाने वाले सोला पेड़ की सुंदर दूधिया–सफेद की लकड़ी से नाजुक पंखा बनाते हैं। पास–लीफ हाथ के पंखे को स्थानीय रूप से ताल पातर पंखा कहा जाता है। इन्हें ले जाना आसान होता है और बंगाली घरों में इन्हें हमेशा स्वामित्व की वस्तु के रूप में रखा जाता है। भारत के अन्य राज्यों में भी प्रशंसकों की अपनी अपनी विविधता है।

उत्तर प्रदेश का फड़ हाथ का पंखा शुद्ध सोने, चांदी की जरी, रेशम और साटन की झालर से सजा हुआ है। उड़ीसा का बड़ा ताड़ के पत्ते का पंखा, दिल्ली का मोर पंखों और बिहार का रंगीन और मजबूत बांस के हाथ का पंखा सभी जगह पहचाने जाते हैं। भारत में कई जनजातीयों ने पंखे के अपने संस्करण बनाने के लिए इस हस्तकला को अपनाया है। “घास और धातु जैसी सामग्री को बांस की छड़ियों और घास का उपयोग करके पंखे में लगाया जाता है।

यहां तक की बेत और ताड़ के पत्तों का भी उपयोग किया जाता है, रेशम और पीतल को इन हाथ के पंखों के प्राचीन टुकड़ों के लिए और मोर के पंखों को आधुनिक सौंदर्यपूर्ण रूप से आकर्षक हाथ के पंखों के लिए आरक्षित किया जाता है। ज्यामितीय पैटर्न और सफेद स्याही और लाल पृष्ठभूमि के संयोजन का उपयोग जनजातियों को कई खूबसूरती से डिजाइन किए गए पंखा बनाने में मदद

✪ https:// wikipedia.org/wiki/hand-fan

करता है। समय और प्रौद्योगिकी तथा नवीन रचनाओं के आगमन के साथ पंखों की खूबसूरत संस्कृति धीरे–धीरे भारतीयों के बीच अपनी उपस्थिति खो रही है।

"भारत में इस शिल्प की प्रासंगिकता के लुप्त होने के साथ, भारत की शिल्प संस्कृति की गहराई से जुड़ी हुई परंपरा खत्म होने लगी है।" एक बार व्यक्तिगत उपयोग के लिए बनाया गया यह हस्तशिल्प एक व्यावसायिक व्यवसाय में बदल गया है और अब भारत की जनजातियों और ग्रामीण लोगों को किसी ने किसी रूप से पंखा जैसी प्राचीन वस्तुओं अविश्वसनीय रूप से शौकीन होते हैं, उनकी धीमी मांग के परिणामस्वरुप कारीगर हाथ के पंखों को कटे हुए दर्पणों और धागों से कढ़ाई करके सजाते हैं, जो उन्हें शाही और सजावटी बनाते हैं। लोकप्रियता और मांग में मामूली वृद्धि पंखें तैयार किया जा रहे हैं, यह विभिन्न संस्करणों के कारण हुई है, कुछ संस्करणों में रामायण जैसे महाकाव्यों के प्रिंट भी शामिल हैं।

आजकल बिजली कटने पर लोग पंखे चलाने के लिए किताबें या अखबारों का सहारा लेते हैं। लेकिन किताब भारी होती है और अखबार में ठोस हैंडल का अभाव होता है। इसलिए उनका उपयोग केवल थोड़े समय के लिए ही किया जा सकता है। कुछ पंखों में दो हैंडल होते हैं और वे हर दिशा में हवा प्रदान करने के लिए 360 डिग्री तक घूम सकते हैं और हवा को एक विशेष स्थान की ओर निर्देशित कर सकते हैं। पंखा भारत की संस्कृति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और जैसा कि–

1. वीरेन भूटा ने कहा – "संस्कृति का नुकसान किसी भी समाज के लिए सबसे बड़ा नुकसान हो सकता है"।
2. जतिन दास पुष्टि करते हैं– "पंखे में कविता और रोमांस है'। बिजली का पंखा एकरस तरीके से चलता है, लेकिन हाथ के पंखे को कई तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है। यह फुसलाने, लुभाने, देखभाल करने का एक उपकरण है।

शिल्प के सार को संरक्षित करने के लिए पहले कदमों में एक पंखा का जश्न मनाना और उसे संस्कृति, कहानियों और कलात्मकता की सराहना करना है जो इस हस्तकला का आह्वान करती है। यह समकालीन पंखा निर्माता को अपनी कला का प्रदर्शन करने और इसकी लोकप्रियता और सापेक्षता को फिर से हासिल करने की अनुमति देता है, साथ ही उन्हें स्थाई आजीविका बनाने के लिए वाणिज्यिक मंच प्रदान करने में भी मदद करता है। इन प्रदर्शनियों के भीतर और बाहर पंखा बनाने की कार्यशालाएं जैसी पहल भारत की संस्कृति में शिल्प की सुंदरता और महत्व के प्रसार की अनुमति देता है।

✪ https:// en.m.wikipedia.org/wiki/hand_fan

➢ जतिन दास की प्रसिद्ध भारत के प्रमुख पेंटर के रूप में है :—

अनेक लोग एक पेंटर के अलावा उन्हें अभिनेत्री नंदिता दास के पिता के रूप में भी जानते हैं, लेकिन शायद लोगों को यह पता नहीं है कि जतिन दास पुराने कलात्मक चीजों के बड़े संग्रहकर्ता भी हैं, और उनके पास हाथ पंखों का एक विशाल संग्रह है। दास के दुर्लभ संग्रह में देश—विदेश के करीब 5000 हाथ पंखें हैं।

कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल संग्रहालय में पिछले दिनों उनके पंखा संग्रह को आम लोगों के लिए प्रदर्शित किया गया है। दास के संग्रह में भारत के विभिन्न राज्यों के पंखों के अलावा दक्षिणी एशियाई देशों के पंखे, बर्मा, जापान, कोरिया, चीन, इंडोनेशिया के पंखें और दक्षिणी अमेरिका और अफ्रीका के रंग—बिरंगे बहुआयामी पंखें मौजूद हैं।

उन्होंने साधारण ताड़ के पत्ते से लेकर सोने—चांदी के धागे से बने पंखे, कपड़ों पर कासीदरी किये हुए पंखे से लेकर मोर पंखे से बने पंखे से लेकर तांबे चांदी से बने मंदिरों में रखे जाने वाले पंखे हर तरह के हाथ पंखें जुटा रखे हैं। जतिन दास ने बताया कि हाथ पंखों के संग्रह में उन्हें पूरे 24 साल लगे हैं।

उन्होंने कहा, "अपने संग्रह के लिए मुझे देश के हर प्रांत की ही नहीं बल्कि विदेशों तक की खाक छानी पड़ी"। दास ने कहा — "मुझे ज्यादातर पंखें खरीदने पड़े और इसके लिए कई बार अपनी पेंटिंग्स भी बेचनी पड़ी"।

यह पूछे जाने पर की क्या इस संग्रह के लिए उनका नाम किसी रिकॉर्ड बुक में शामिल किया गया है, उन्होंने कहा कि उन्होंने नाम कमाने या रिकॉर्ड बनाने के लिए हाथ पंखों का संग्रह शुरू नहीं किया। दास ने बताया कि उनकी दिलचस्पी कांसे के बर्तन, पेंटिंग आदि उसे हर चीज के संग्रह में है, जिनके लोप होने का खतरा है।

दिल्ली के बाद प्रदर्शनी के लिए कोलकाता आये जतिन दास के अनुसार कई राज्यों में उनकी इस प्रदर्शनी के लिए पर्याप्त गैलरी नहीं है, वैसे, उनकी योजना अगले महीने हैदराबाद में हाथ पंखों की प्रदर्शनी लगाने के अलावा भविष्य में विदेश में अपना संग्रह प्रस्तुत करने की भी है। उन्होंने भुवनेश्वर में एक संग्रहालय बनाने की अपनी योजना का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि उड़ीसा सरकार ने संग्रहालय के लिए जमीन आवंटित कर दिया है और भवन के लिए धन जुटने में कई कलाकार उनकी मदद कर रहे हैं। दो रूप्ये से अस्सी हजार मूल्य वाले पंखों के संग्रहकर्ता जतिन दास का मानना है कि गर्मी से पंखे नष्ट हो जाते हैं। इसलिए इनको सहेज कर रखना कठिन काम है।

✪ https:// www.bbc.com>2004/07

दरी लोक कला

ग्रामीण वर्ग द्वारा रचित दरी लोक कला जो भारतीय कला जगत की अनमोल धरोहर है। ग्रामीण वर्ग के विभिन्न तरह की लोक कलाओं का सृजन किया जाता है। बदलते समय के साथ लोक कला में भी निखार आ गया और शहरी वर्ग के लोग भी लोक कला की तरफ आकर्षित होते गए। ग्रामीण वर्ग की तरह शहरी वर्ग भी लोक कला की लोकप्रियता मिलती है। इन लोक कलाओं में प्रसिद्ध लोक कला दरी कला है। ग्रामीण तथा शहरी महिलाएं अपने जीवन में से समय निकालकर दरियों का निर्माण करती हैं। तथा अपनी भावनाओं एवं रुचि पर आधारित कला का सृजन करती हैं।

प्रत्येक जगह के लोगों का रहन–सहन, धर्म, संस्कार एक दूसरे से भिन्न होते हैं। यह लोक एक ऐसा पक्ष है, जिससे क्षेत्रयिता की पहचान बनती है। जैसे की दरी को बनाने की परंपरा सदियों से चली आ रही है, इसका संबंध आज से नहीं बल्कि प्राचीन काल से चला आ रहा है। यह ग्रामीण सभ्यता होते हुए भी भारत के हर कोने में बसी हुई है। अक्सर लोक कलाएं गांव में ही पाई जाती हैं। जिनमें दरियां, पंखी आदि आती हैं।

दरी ग्रामीण क्षेत्र की लोक कलाओं का अभिन्न अंग है जो कि विश्व भर में प्रसिद्ध है। यह ग्रामीण औरतों द्वारा बनाई गई रचना है। कुछ लोक कलाओं को ग्रामीण में अपनी मेहनत तथा साधना से नई पहचान दिलाई, ऐसा ही लोक कला दरी कला है। यह एक सुंदर और अनूठी कला है और यह सौंदर्य के साथ–साथ मनुष्य की जीविका का साधन भी है, जिसके द्वारा हम अपनी जरूरत को पूरा कर सकते हैं। अधिकतर हम औरतों को ही दरियां बुनते हुए पाएंगे क्योंकि वह जब घर में घर का काम खत्म करके बैठती हैं, प्रत्येक क्षेत्र के सामान्य क्रियाकलापों में जो लोक कला बनाई जाती है। उसकी जानकारी उस क्षेत्र में रहकर ही प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार दरी की लोक कला ग्रामीण सभ्यता होते हुए भी भारत के हर कोने में बसी हुई है और किसी भी क्षेत्र की संस्कृति को अच्छी तरह समझने के लिए उस क्षेत्र की लोक कला को जानना जरूरी है।

लोक जीवन की सच्ची झांकी उस क्षेत्र की लोक कलाओं में देखने को मिलती है। लोक कला, इसमें दरी भी महत्वपूर्ण है। इसे हम ज्यादा गांव में या शहरों में देख सकते हैं। क्योंकि इसका प्रयोग गांव, शहरों, स्कूलों हर जगह होता है। जब हम दिन भर काम करते हैं तो इस पर लेट कर नींद लेते हैं और अपनी थकान दूर करते हैं। इसका प्रयोग हम हर जगह पर देखते हैं। जब हम किसी कमरे में चटाई को देखते हैं तो इतना ध्यान आकर्षित नहीं करती है, जितना की डिजाइन वाली दरियों को देखकर मन आनंदित हो उठता है। मेरे अपने घर में जब मैंनें डिजाइन वाली दरियां देखी जो मेरी माता जी ने अपने हाथ से बनाई है।

वे इतनी सुंदर हैं कि मैं उनसे बहुत प्रभावित हुई। मेरी माता जी ने एक दरी में दो या तीन–तीन डिजाइन डालकर बनाई है। वे दरियां बहुत ही मजबूत और सुंदर है। प्राचीन काल से ही दरियां धार्मिक एवं सामाजिक अनुष्ठानों से सम्बधित रही है। इस विश्व को अनुपम रूप से बुना हुआ तंतु माना गया है। दरियों ने एक प्रतीक का रूप धारण कर लिया है तथा पूजा की वस्तुओं में इन्हें महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था।

प्राचीन समाज का जन जीवन प्रकृति के अधिक निकट होने के कारण उनके वस्त्र भी लोक शैली पर आधारित होते थे। शिल्पकारिता में सूती वस्त्र कला अत्यधिक उत्कृष्ट थी। विदेशी पर्यटकों का कहना था कि ये बुनकर उस जादूगर के समान प्रतीत होते हैं जो अपनी छड़ी घुमा कर अद्‌भुत सामग्री उत्पन्न कर देता है। इसलिए उन्हें विभिन्न आकर्षक नाम से विभूषित किया जाता था। उत्तर प्रदेश में रंगीन मीनाकारी कला तथा 'नीलों' में जटिल नक्काशी के कारण प्रसिद्ध हैं। मुरादाबाद में श्वेत पृष्ठभूमि का अलंकरण स्वर्णिम वर्ण द्वारा किया जाता है।

ये शिल्प बारीक काम के नाम से प्रसिद्ध है। हल्के रंग की धातु को गहरे रंग की धातु पर जड़ने की कला को 'कोफतगिरी' कहते हैं। जिस दमिश्की तकनीक के रूप में जाना जाता है। पहले समय में इसका प्रयोग केवल शास्त्रों तथा कवच इत्यादि के अलंकार तक ही सीमित था। कोफतगिरी द्वारा इसका चित्रांकन किया जा सकता है। ''केरल'' में यह कला प्रचलित है।

दरी कला ऐसी कला है जिसका नारी के जीवन से अटूट संबंध है, जोकि संसार भर में प्रसिद्ध है। यह औरतों द्वारा बनाई गई रचना है। पहले समय में सारा काम हाथों द्वारा औरतें करती थी। उसके बाद मशीन आई। लेकिन आज भी कई जगहों पर औरतें अपने हाथों द्वारा ही दरियां बनाती हैं। दरी कला बहुत ही सुंदर और अनूठी कला है। औरतें इस कला को अपनी आराम की घड़ियों को त्याग कर बहुत ही आनंद व चाव से बनाती हैं। दरी कला उनके लिए आनंद का साधन रही है। दरी बनाने के लिए सहज की जरूरत होती है। इससे दरी अच्छी बनती है। अगर सहजता नहीं होगी, तो दरी का डिजाइन भी अच्छा नहीं बनेगा। इसलिए एक लकड़ी कहती है – ''जितना ज्यादा प्यार एक मां अपनी बेटी से करती है वह उतनी ही अच्छी दरी उसके लिए बुनती है'। वह दरी में अच्छे–अच्छे डिजाइन बनाकर अपनी भावनाएं व्यक्त करती है।

नारी को न केवल सुंदरता के कारण बल्कि एक लोक कला के रूप में भी पहचान मिली है। हमारे भारत में अक्सर ग्रामीण महिला समय का सदुपयोग करना अच्छी तरह से जानती है। अक्सर लोक कलाएं गांव में ही पाई जाती हैं। जिनमें मज्जियां, फुलकारी, दरियां पंक्खियां आदि आती है। ये सब कलाएं अधिकतर गांवों की महिलाएं ही करती हैं। कई महिलाएं जिनके घर का निर्वाह बहुत

मुश्किल से होता है, वे भी दूसरे लोगों से पैसे लेकर उन्हें दरियां बुनकर देती हैं और अपने घरों का निर्वाह करती हैं। मेरे गांव में भी काफी औरतें हैं जो दरियां किराए पर बुनती हैं।

दरी को हर धर्म के लोग खरीदते हैं। चाहे वे पंजाबी हो, हिंदू या मुस्लिम हो, इसे सब खरीदते हैं। जब कोई नारी दरी बनती है, तो वह अपनी कल्पना में ईश्वर से कम नहीं है। इस शक्ति का संबंध मस्तिष्क से होता है। मनोरंजक रचनात्मक एवं काल्पनिक विचारों को मनुष्य किसी भी माध्यम के द्वारा प्रकट करने की क्षमता रखता है। इसी तरह जब ये नारियां दरियां बनाती हैं। वह अपनी कल्पना के माध्यम से इसे व्यक्त करती हैं। हर वस्तु में अपनी—अपनी ताकत के अनुसार भावनाएं विद्यमान होती हैं। उसमें धीरे—धीरे वृद्धि करना या उत्साहित करना ही प्रधान है। जिससे की दरी की सुंदरता की ओर विकास बढ़ जाता है। यदि देखा जाए तो कला का बड़ा नमूना है। क्योंकि कल हर वस्तु में पाई जाती है। यह मनुष्य के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमारा कोई भी कार्य ऐसा नहीं जहां कला का महत्व न हो। मनुष्य जब भाषा नहीं जानता था, तब वह अपने ह्रदय की भावनाओं को चित्रों के द्वारा प्रकट करता था। इतिहास में कोई भी युग ऐसा नहीं है जिसमें कला का महत्व न रहा हो, कला तथा लोककला का एक दूसरे से गहरा संबंध है। किसी भी क्षेत्र की संस्कृति को अच्छी तरह समझने के लिए उसे क्षेत्र की लोक कला को जनना जरूरी है। लोक जीवन की सच्ची झांकी उस क्षेत्र की लोक कलाओं में देखने को मिलती है।

लोक कला में दरी कला भी महत्वपूर्ण कला के अंतर्गत आती है। आज भी दरी कला का कार्य गांव में औरतें बड़े शौक से करती हैं और अब पुराने फटे हुए कपड़ों को फेंकने की बजाय उनका उपयोग नए तरीके से किया जा सकता है। नागौर शहर में उत्तर प्रदेश से आए सलीम फटे हुए कपड़ों से पुरुष महिला के भी हो उनसे दरिया व गलीचे बनाने का काम करता है। हाथ से बनाई हुई दरियों की बाजार से रेडीमेंट ली हुई दरी के मुकाबले मजबूती ज्यादा होती है।

सलीम ने बताया की दरी बनाने में फटे हुए कपड़ों का इस्तेमाल होता है। इसे बनाने में लकड़ी के दो मजबूत लट्ठे, कुछ तार और धागो के रूप काटा जता है, फिर कटे हुए धागों को आपस में जोड़ा जाता है। इस प्रकार हाथ से बनाई हुई दरी तैयार होती है।

तृतीय अध्याय

- पंखी की सामग्री तथा निर्माण विधि
- विभिन्न प्रकार की पंखियों का विवरण
- दरी की सामग्री तथा निर्माण विधि
- दरी की निर्माण विधि

पंखी की सामग्री एंव निर्माण विधि

पंखी के लिए सामग्री भी वैसे ही उपलब्ध कराई जाती है, सजावट के लिए कागज, गत्ते, मोर के पंखों को बनाया जाता है। मोरों के पंखों से झाड़–फूंक भी की जाती है। यात्रा के लिए अधिकतर फौलडिंग वाली पंखी, प्लास्टिक से बनी पंखी का प्रयोग किया जाता है। मौके या समय के अनुसार ही पंखी का निर्माण किया जाता है। कई बार तो औरतें अपनी पंखियों सुंदर बनाने के लिए अधिक समय पंखी बनाने में व्यय करती हैं। रातों की नींद भी त्याग देती हैं। लेकिन वे अपनी कला को सुंदर–सुंदर रंग देती हैं। जब तक हम अपनी कलाओं को संभाल कर रखेंगे, तब तक हम अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए एक अनमोल विरासत संभाल कर रख रहे हैं और इसे संभाल कर रखना हमारा कर्तव्य है।

पंखी के निर्माण के लिए विभिन्न सामग्री की आवश्यकता होती है। पंखी की निर्माण विधि इस तरह होती है जिस तरह दरी का तना–बना बुना जाता है। उसी प्रकार पंखी के लिए भी पहले तना और फिर बना बुन जाता है।

अजंता एलोरा की गुफाओं में विभिन्न दासियों के हाथों में भिन्न आकृतियों से संबंधित पंखियाँ हैं। यही पंखी का निर्माण प्राचीन समय से ही होता आ रहा है। आज यह जरूरत की वस्तु से अधिक सौंदर्य पूर्ण वस्तु बन गई है। इसके बनने के लिए कांच के छोटे–छोटे टुकड़ों, तिले का धागा, प्रत्येक किस्म के छोटे–छोटे मोतियों का प्रयोग किया जाता है। इसके बाहरी भाग पर झालर लगाई जाती है। जो पंखी के रंगों के तालमेल के अनुसार लगाई जाती है, उनी धागों में से एक रंग को चुनकर झालर में चुंगट डालकर पंखी के बाहरी भाग पर लगाई जाती है। पंखी गेहूं की तीलियों में भी बनाई जाती है। इस पर फिर सूई की सहायता से धागे की कढ़ाई की जाती है, जो देखने में सुंदर व आकर्षित होती है।

- **सामग्री :–**

विभिन्न प्रकार की पंखीयों के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार की सामग्री की आवश्यकता है, जैसे– कागज की पंखी बनाने के लिए कागज तथा उसके ऊपर मोती, सितारे आदि लगाए जाते हैं, वैसे ही खजूर के पत्तों की पंखी बनाने के लिए खजूर, शहतूत के पेड़ की टहनी ली जाती है। पत्तों की पंखी

बनाने के लिए पीपल, ताड़ के वृक्षों के बड़े–बड़े पत्तों को जोड़कर भी पंखीयाँ बनाई जाती हैं। आदि अनेक भिन्न–भिन्न प्रकार से तथा भिन्न–भिन्न सामग्री को लेकर पंखी का निर्माण किया जाता है।

- निर्माण :–

किसी भी वस्तु का निर्माण करने के लिए किसी प्रकार की सामग्री की आवश्यकता होती है। पंखी के निर्माण के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्री की आवश्यकता है। पंखी की प्रत्येक किस्म के लिए सामग्री भिन्न–भिन्न प्रयोग की जाती है। पंखी का निर्माण करने के लिए कागज, कपड़ा, विभिन्न प्रकार के धागे है जैसे – ऊनी, रेश्मी पट का धागा, सूती धागा, सूत्र आदि का प्रयोग किया जाता है। सुई इसके निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। खजूर के पेड़ के पत्तों से बनी पंखी भी बहुत प्रचलित है। प्राचीन समय की बनी हुई पंखीयों पर तोते की ज्यामितिय रूप से बनी आकृतियाँ लगती थी। उसे वे अपनी कला में शामिल कर लेते हैं।

विभिन्न प्रकार की पंखियों का विवरण

1. कागज से बनाई जाने वाली पंखी :–

इसमें लकड़ी के बने खाके के बीच कागज लगाया जाता है, जिस कागज का प्रयोग इसमें किया जाता है, वह बहुत मजबूत होता है, ताकि हवा करते समय वह फटे ना, पंखी को सुंदर बनाने के लिए कागज के ऊपर मोती, सितारे आदि लगाए जाते हैं। क्योंकि सुंदर बनाने के लिए कागज के ऊपर मोती सितारे आदि लगाए जाते हैं। क्योंकि सुंदर चीज सबको अपनी और आकर्षित करती है। कागज की पंखी पर रंगों में धागों की सहायता से लोक कला के नमूने पेश किए जाते हैं।

2. खजूर के पत्तों की पंखी :–

इस पंखी को बनाने के लिए खजूर के पेड़ के पत्तों का प्रयोग किया जाता है। पंखी में डिजाइन बनाने के लिए पत्तों पर कहीं–कहीं रंग भी किया जाता है। इन पत्तियों को दूसरी भाषा में 'खजियां' भी कहा जाता है। इसके डंडी वाले भाग में नीचे की तरफ एक बांस का टुकड़ा जोड़ा जाता है। जिससे हवा करने में आसानी होती है।

3. पत्तों की पंखी :–

पीपल, ताड़ के वृक्षों के बड़े पत्तों को जोड़कर पंखियां बनाई जाती हैं। पत्तों को सुखाने के बाद छोटी–छोटी नुकीली तीलियों की सहायता से इन्हें आपस में जोड़कर इन्हीं तीलियों द्वारा लकड़ी या लोहे के बने खाके में लगा दिया जाता है।

4. मोर के पंखों से बनी पंखी :–

मोर के काफी सारे पंखों को इकट्ठा करके एक धागे से बांध लिया जाता है, जिससे मोर पंख कहा जाता है। मोर के पंख को शुद्ध माना जाता है। श्री कृष्ण जी के समय में अधिकतर मोर पंखों से बने पंखी का ही प्रयोग किया जाता था। श्री कृष्ण जी ने मोर पंख का प्रयोग अपने मुकुट में किया था। मोर के पंखों से बनी पंखी का प्रयोग आज में केवल सजावट के लिए ही किया जाता है।

5. तीलियों से बनी पंखी :–

गेहूं की फसल काटने के बाद इसकी बची हुई तीलियों को सुई व धागे से जोड़कर लकड़ी के बने ढांचे में फिट कर दिया जाता है और उसे पर धागे की सहायता से विभिन्न आकृतियों को कटाई करके उसे नया रूप दिया जाता है। तीलियों से बनी पंखी का अपना एक अलग ही महत्व है। इसे बनाने में खर्च भी बहुत काम आता है। यह बहुत ही सस्ती व टिकाऊ होती है।

6. बांस से बनी पंखी :–

बांस के बड़े हो जाने पर बांस की पतली पतली परतें उतार ली जाती हैं, फिर इन परतों को लोहे या लकड़ी के खाको में छोटी–छोटी किलो के द्वारा लगाया जाता है। विभिन्न रंगों द्वारा, विभिन्न प्रकार की आकृतियों को उकेरा जाता है। बांस की बनी पंखीयों में हम बैल से बनी हुई चारपाईयों जैसी झलक आती है। पंखी को बनाने से पहले बांस की पतली पतली परतों की अच्छी तरह रंग लिया जाता है और पंखीयों का एक अनूठी सुंदरता में निर्माण किया जाता है।

7. गत्ते की पंखी :–

गत्ते की पंखी की अपनी एक अलग ही महत्वता होती है। इस पंखी को बहुत ध्यान से संभाल कर रखना पड़ता है, क्योंकि गत्ता एक जलनशील वस्तु है। नमी वाली जगह पर पंखी रखने पर इसके रूप में अटपटा सा बदलाव आ जाता है, जो इसकी सुंदरता को नष्ट कर देता है।

8. धागे की पंखी :–

धागे से बनी पंखी हमारी ग्रामीण लोक कला में सबसे अधिक प्रचलित है। यह पंखी लकड़ी के खाके पर कपड़ा लगाकर सुई व धागे की सहायता से विभिन्न रंगों में डिजाइनों से तैयार की जाती है। बहुत सी पंखियों के डिजाइन फुलकारी जैसे होते हैं। पंखी बन जाने पर इसके बाहरी सिरे पर कपड़े की झालर पर कढ़ाई करके चुगंट डालकर सुंदर बनाया जाता है।

9. प्लास्टिक से बनी पंखी :–

इस तरह की पंखी को आकर्षित बनाने के लिए उस पर विभिन्न तरह की आकृतियां अंकित होती हैं। प्लास्टिक से बनी पंखी जल्दी टूटती नहीं है। यह आधुनिक युग में हो रहे नए आविष्कारों की देन है।

10. कपड़े से बनी पंखी :–

इस पंखी को कपड़े की सहायता से निर्मित किया जाता है। कई पंखियों पर सुई अंकित की जाती है। जिस क्षेत्र में जिस तरह की पंखी का अधिक प्रचलन होता है, इस तरह की पंखी उस क्षेत्र में अधिक मात्रा में देखने व प्रयोग करने के लिए मिलती है।

11. फोल्डिंग वाली पंखी :–

इस तरह की पंखी को पहले अधिकतर चीन में ही देखा जाता था, लेकिन अब यह संसार के हर कोने में पाई जाती है। इस तरह की पंखी को हम आसानी से अपनी जेब में भी डालकर ले जा सकते हैं।

12. रिबनों से बनी पंखी :–

पंखी बनाने से पहले रिबनों को फूलों के आकार में, डिब्बों के आकार में, छोटे–छोटे पीस काटकर सिलाई द्वारा इन्हें आपस में जोड़कर लकड़ी के बने खाके में सुई की सहायता से लगाया जाता है। रिबन की पंखी के सिरों पर मोती या नग लगाकर उसकी सजावट की जाती है। इस तरह की पंखी उपयोगी होने के साथ–साथ सुंदर और आकर्षित भी लगती है। कई पंखियों पर सुई की सहायता से कढ़ाई करके उस पर लोक कृतियां अंकित की जाती है, जिस क्षेत्र में जिस तरह की पंखी का अधिक प्रचलन होता है। इस तरह की पंखी उस क्षेत्र में अधिक मात्रा में देखने व प्रयोग करने के लिए मिलती है।

अतः विभिन्न प्रकार की पंखियों में सामग्री भी वैसे ही उपलब्ध कराई जाती है। दहेज के लिए तो अधिकतर धागे, कपड़े व रिबनों बनाने वाली पंखियां का ही निर्माण किया जाता है। सजावट के लिए कागज, गत्ते व मोर के पंखों को बनाया जाता है। मोरों के पंखों से झाड़–फूंक भी की जाती है। यात्रा के लिए अधिकतर फोल्डिंग वाली पंखी, प्लास्टिक से बनी पंखी का प्रयोग किया जाता है। मौके या समय के अनुसार ही पंखी का निर्माण किया जाता है। अगर पंखी बनानी हो तो कम समय लगता है और अगर अधिक सजावटी पंखी बनानी हो तो अधिक समय लगता है। कई बार तो औरतें अपनी पंखियों को अधिक सुंदर बनाने के लिए अधिक समय पंखी बनाने में व्यय करती हैं। रातों की नींद भी त्याग देती हैं, लेकिन वह अपनी कला को सुंदर से सुंदर रूप देने की नायब कोशिश करती हैं।

इस तरह की कला शायद ही अन्य किसी देश की नारी में हो। यह काम करने की लगन अधिकतर भारतीय नारी में पाई जाती है। भारत के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों ने ही अपनी मेहनत, जीवन साधना से

कई कलाओं को जीवित रखा है, नहीं तो इस मशीनीकरण के युग में इन्हें खत्म करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

लेकिन ग्रामीण नारियों व लोगों की वजह से हमारी संस्कृति से संबंधित कलाएं बची हुई है। जब तक हम अपने आने वाली पीढ़ी के लिए एक अनमोल विरासत संभाल कर रख रहे हैं और इसे संभाल कर रखना हमारा कर्तव्य है।

अतः पंखी हमारी भारतीय कला का बहुत बड़ा हिस्सा है। इसका निर्माण भारतीय औरतों बहुत कुशलता से करती हैं। इसकी सामग्री वे अधिकतर घरेलू चीजों से ही इकट्ठी करने की कोशिश करती हैं। पंखी हमारी धरोहर को पूर्ण करने में अहम भूमिका निभाती है। कोई भी सांस्कृतिक ढंग से किया गया कार्य पंखी के बिना अधूरा है। पंखी को बनाने के लिए जिस तरह दरी का ताना–बाना बुना जाता है, उसी प्रकार पंखी के निर्माण के लिए भी पहले ताना बुना जाता है, फिर जो डिजाइन कलाकार को चाहिए, व उसमें सुई की सहायता से निकलता है। ग्रामीण संस्कृति में पंखियों पर अधिकतर फुलकारी वाले डिजाइन ही मिलते हैं। विभिन्न तरह के फूलों वाले डिजाइन ग्रामीण सभ्यता की पंखियों में मिलते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग रंगों से अधिक प्रभावित होते हैं। उनकी रगों में अत्यधिक रुचि है। वे रंगों के तालमेल को अधिक महत्वता देते हैं।

प्राचीन समय में इसे अधिक रचनात्मक नहीं बनाया जाता था, लेकिन आधुनिक युग में इसे कई तरह के मोती, लैस, घुंघरू आदि लगाकर इसको सुंदर व रचनात्मक बनाया जाता है। आज यह जरूरी है की वस्तु से अधिक सौंदर्य पूर्ण वस्तु बन गई है। इसको बनाने के लिए कांच के छोटे–छोटे टुकड़ों, तीले का धागा (चमकदार धागा), प्रत्येक किस्म के छोटे–बड़े मोतियों का प्रयोग किया जाता है। इसके बाहरी भाग पर झालर लगाई जाती है जो पंखी के रंगों के तालमेल के अनुसार लगाई जाती है। जिन रंगों के धागों से पंखी को बनाया जाता है, उन्हीं धागों में से एक रंग को चुनकर उसकी झालर चूंगट डालकर पंखी के भाहरी भाग पर लगाई जाती है। इस पर फिर सुई की सहायता से धागे की कढ़ाई की जाती है, जो देखने में सुंदर व आकर्षित होती है।

दरी की सामग्री व निर्माण विधि

दरी बनाने की सामग्री वैसे तो भिन्न तरह की दरी को बनाने की भिन्न–भिन्न सामग्री की आवश्यकता होती है, फिर भी कुछ सामग्री ऐसी है जो दरी बनाने के लिए आवश्यक ही होती है।

1. रूई :– जिससे दरी की शुरुआत होती है।
2. चरखा :– जिसके द्वारा सूत काता जाता है।
3. सूत :– इसके द्वारा खेस, दरियाँ बनाई जाती हैं।
4. लोहे का अड्डा या खड्ड़ी :– इस पर दरी बुनी जाती है। खड्डी पर चदरें भी बनाई जाती हैं।
5. हत्थी :– हत्थी द्वारा दरी के सूत को ठोका जाता है। इससे दरी मजबूत बनती है और ताना भी दिखाई नहीं देगा।
6. अलग–अलग रंगों के सूत :– दरियों में अलग–अलग डिजाइनों के लिए अलग–अलग रंगदार सूत की आवश्यकता होती है।
7. कन्दला :– इसका प्रयोग दरी की सन्धे डालने में किया जाता है।
8. पंख :– पंख का प्रयोग दरी के खिंचाव के लिए करते हैं, ताकि दरी सिकुड़े नहीं।
9. फट्टी :– इसे दरी बनाते समय आगे पीछे करते हैं, जिसके द्वारा ऊपर का नीचे और नीचे के तानो के धागे ऊपर आते हैं।

दरी बनाने के लिए दो इंसानों की जरूरत होती है। अड्डे के ऊपर धागे को इस तरह से लपेटा जाता है ताकि उसमें सलवटे आए। धागों को लपेटते समय एक–एक ऊंगल का फैसला रखा जाता है। दरी को शुरू करने से पहले एक मजबूत धागे को अड्डे पर फेरा जाता है। दरी कम से कम छः फुट लंबी होती है। दरी पूरी होने पर इसके थोड़े धागे छोड़कर काट दिया जाते है।

निर्माण :–

दरियां सूत, ऊन व कतरनों की तरह की होती हैं, परंतु ज्यादातर सूत द्वारा बनाई गई दरी का प्रचलन है। सूत की दरी बनाने के लिए पहले रूई को चरखे पर कातकर इसकी छोटी–छोटी गोलियां

बनाई जाती हैं और फिर इन गोलियों के भी छोटे–छोटे हिस्से बनाए जाते हैं, ताकि दरी की बुनाई करने में आसानी से निकल जाए। दरी की बुनाई करने के लिए सबसे पहले लोहे के अड्डे के अंदर धागों का सांचा तैयार किया जाता है, फिर उसके बाद सूत के धागों द्वारा बुनाई की जाती है।

दरियों की बुनाई में अलग–अलग रंगों के धागों का प्रयोग करके सुंदर दरी बुनी जाती है और अंत में अतिरिक्त धागों को काट दिया जाता है। दरी को उधड़ने से बचने के लिए बाकी धागों पर गांठे लगाकर नीचे जाली बना दी जाती है। दरियां बनाने का ढंग भी अलग–अलग होता है। कुछ लोग इसे अड्डे पर बनाते हैं तथा कुछ लोग इसे खड्डी पर बनाते हैं। मैंने खड्ड़ी पर बनाई जाने वाली दरियां अच्छी हैं जो इस प्रकार की जाती है।

1. दरियों को बनाते समय पहले धागा लपेटना चाहिए।
2. फिर कंघी के हर घर में तार डालते हैं और हमें ताना–बाना कितना चाहिए, इसका ध्यान रखा जाता है।
3. लंबाई और चौड़ाई कितना किनारा चाहिए, इस बात का ध्यान रखा जाता है।
4. अब हम देखेंगे कि हमें किस तरह की दरी चाहिए। प्लेन या जलीदार दरी और उसके अनुसार हम उसे फ्रेम में लगाएंगे और भर्ती करेंगे।
5. फिर हम पैडल के द्वारा इसकी चाल देखेंगे। हर डिजाइन के अनुसार इसकी चाल बदलेगी।

दरी कला का मानव जीवन में बहुत गहरा संबंध है। दरी कला की प्रणाली मानव संस्कृति से प्रारंभ से चली आ रही है। प्रत्येक क्षेत्र की दरी कला अपने ही ढंग की होती है, इसमें ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति बड़े सशक्त रूप में होती है। इसका विकास बिना किसी आयोजित प्रयास के अपने आप हो जाता है। मनुष्य दरी कला से कुछ विमुख हो रहे हैं। हरियाणा क्षेत्र की दरी कला महत्वपूर्ण है। किंतु अभी तक शिक्षित वर्ग का ध्यान इस और नहीं गया है। यहां दरी की पूर्ण व्याख्या तो संभव नहीं फिर भी कुछ कृतियां अपने कई प्रकार के गुणों के कारण विशेष महत्व रखती हैं। उनका उल्लेख करना आवश्यक है।

दरी भी एक कला है जिसका निर्माण हाथों द्वारा किया जाता है। जीवन में उपयोगी वस्तुएं भौतिक संस्कृति का आवश्यक अंग है। विभिन्न प्रकार के बर्तन, दरियां, आसान, चादर, कसीदा, शयन, वादन, अस्त्र–शास्त्र आदि वस्तुएं क्षेत्रों के अनुसार रूपाकारो में विभिन्नता लिए हुए होते हैं। पहले मनुष्य पत्तों

से अपने आसान बनाता था। व अपने शरीर को भी पत्तों से ढकता था। यह आदिकाल की बात है, लेकिन जैसे–जैसे समय बीतता गया, मानव जीवन में उन्नति हुई। पहले आग की खोज हुई। आदिमानव ने पत्थर पर चोट करके आग का आविष्कार किया। फिर सोने के लिए जहां पर वे पत्तों के आसन लगाते थे, वहां पर उन्होंने दरी को बिछाया। यह उनके सोने व आराम करने में सहायक बनी।

कई प्रकार के डिजाइनों वाली दरियां औरतें बुनती रही और अपनी जरूरतें पूरी करती रही। तेज गति से बदलते हुए आधुनिकीकरण का भी हस्तकला पर बहुत प्रभाव पड़ा। अंधे आधुनिकीरण का भी हस्तकला पर बहुत प्रभाव पड़ा। अंधे आधुनिकीकरण के चलते हमारे हस्तकला खतरे में पड़ गई। आजकल गांव में भी कोई–कई दरी कला को बनाए रखने वाली औरतें कम मिलती हैं। वह दरी का कार्य अपने घर पर ही करती हैं। अपने घर के काम को निपटाकर जो समय बचता था। वह दरी बनाने में लग जाती थी। कई गांव में आज भी स्त्रियां दरी कला का कार्य करती हैं।

दरियों का ताना तैयार करने की विधि :–

दरियों को बनाने के लिए इसमें प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल को बाजार से खरीदा जाता है, परंतु पहले समय में लोग खेतों में कपास उगाते थे और घर पर ही रूई को चरखे पर कातकर सूत बनाकर उसकी दरियां, चदरें अपनी जरूरत की चीजें बनाते थे। रूई की पहले छोटे छोटे गोल व लंबे हिस्सों में उनकी पुनियाँ बनाई जाती हैं, फिर इन पुनियों को चरखे पर काता जाता है। चरखे पर कातते समय उनके छोटे–छोटे गोले जो की लंबाई में बनाए जाते हैं। आवश्यकतानुसार जितना गोला चल सके, उसे उतना ही चरखे के तकल्ले पर चढ़ाया जाता है। फिर इस गोले को उतार कर रख दिया जाता है। ऐसे ही काफी गोलियां बनाकर रखी जाती हैं। सुबह इन्हें पानी में भिगो दिया जाता है और सुबह इन्हें पानी में से निकलकर इनके लच्छे कर लिए जाते हैं, और फिर आवश्यकतानुसार इसे तीन–चार गोलियां को इकट्ठा करके मोटा कर लिया जाता है, ताकि पक्का ताना तैयार हो सके।

चतुर्थ अध्याय

- प्राचीन ग्रन्थों में दरी व वस्त्र बुनाई कला का उल्लेख
- नारी तथा दरी कला का संबंध
- दरी की उपयोगिता

प्राचीन ग्रन्थों में दरी व वस्त्र बुनाई कला का उल्लेख

प्राचीन ग्रंथो में विभिन्न प्रकार की वस्त्र सामग्री का विस्तृत रूप में वर्णन मिलता है। भिन्न–भिन्न वस्त्रों की नाम की सूची हमें कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में मिलती है। पवित्र अवसरों पर आकर्षक दरियों के प्रयोग का वर्णन प्रचुर मात्रा में मिलता है। जैसे राम के राज्याभिषेक के अवसर पर अयोध्या की सड़कों को रेशम की चादरों व दरियों से सुसज्जित किया जाता था। कालिदास ने अपने काल में इतने महीन कपड़े का उल्लेख किया है, जो सांस लेने मात्र से उड़ जाता था। इससे कपड़े की उच्चतम कोटि प्रगणित होती है। उन निर्माण केन्द्रो के स्थान के बारे में भी बताया गया है। जहां इस प्रकार के स्थान के बारे में भी बताया गया है, जहां इस प्रकार के वस्त्रों को निर्मित किया गया है। वह स्थान आज भी कार्यरत है, वहां पर आज भी काम चल रहा है।

प्राचीन ग्रंथो में वस्त्र शिल्प के समान विस्तृत तथा असंख्य विवरणों से युक्त कोई अन्य शिल्प योजना दुष्कर कार्य है। हम यह कह सकते हैं कि प्राचीन काल से ही वस्त्र बुनाई या दरी बनाई में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न सामग्री असंख्य तकनीकें तथा बाह्य अलंकरण की भिन्न–भिन्न शैलियाँ प्रचलित थी। अनुमान लगाया जाता है कि वैदिक काल में भी अलंकृत वस्त्रो का प्रयोग होता था। उदाहरण स्वरूप ऊनी वस्त्रों से सुसज्जित इंद्र का वर्णन उस समय के ग्रन्थों में मिलता है। बाज्सानेई संहिता में कढ़ाई वाले वस्त्रों की बुनाई का उल्लेख मिलता है। 'अथ व वेद' में भारी स्वर्ण काशीदाकारी वाले चौगे का उल्लेख मिलता है।

निसंदेह इनका अस्तित्व ही नहीं अपितु उनकी वृहव मात्रा में उपलब्धि भी आश्चर्यजनक है। शतपथ ब्राह्मण तथा काठक–संहिता के अनुसार उस समय वस्त्र के दोनों और एक सी दिखाई देने वाली अनुपम तथा अच्छी तकनीक से दुरुस्त 'दरूखा' कढ़ाई कला प्रचलित थी। प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ कौटिल्य ने मदुरई के दक्ष सुत बुनकरों की अत्यधिक प्रशंसा की है। हम रेशम से लेकर जूट तक सभी प्रकार की सामग्री से बने प्रचलित अथवा संग्रहालय में दिखाई देने वाली सज्जा अथवा अलंकार में प्रयुक्त किसी भी बुनाई कला द्वारा निर्मित एक भी ऐसे वस्त्र या दरी की कल्पना नहीं कर सकते जिसका उल्लेख इन साहित्यक अभिलेखों में न किया गया हो।

कपड़े से बनी अनेक वस्तुओं जैसे चंदौवा से लेकर पोशाक तक, बिछोने, पालकी की सज्जा, दरियां आसान, तब्बे एवं कालीन इत्यादि का वर्णन भी मिलता है। प्राचीन काल से ही दरियां धार्मिक एवं सामाजिक अनुष्ठानों से संबंध रही है। इस विश्व को अनुपम रूप से बुना हुआ तंतु माना गया है।

✪ बेदी सोहिन्द्र सिंह, पंजाब की लाकधारणा, पेज न0. – 220

दरियों ने एक प्रतीक में एक प्रतीक का रूप धारण कर लिया है तथा पूजा की वस्तुओं में इन्हें महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था।

प्राचीन समाज का जन–जीवन प्रकृति के अधिक निकट होने के कारण उनके वस्त्र भी लोक शैली पर आधारित होते थे। शिल्पकारिता में सूती वस्त्र कला अत्यधिक उत्कृष्ट थी। विदेशी पर्यटकों का कहना था ये बुनकर उस जादूगर के समान प्रतीक होते हैं जो अपनी विभूषित किया जाता था। उत्तर प्रदेश रंगीन मीनाकारी कला तथा 'नीलो' जटिल नक्काशी के कारण प्रसिद्ध है। मुरादाबाद में श्वेत पृष्ठभूमि का अलंकरण स्वर्णिम वर्ण द्वारा किया जाता है। ये पहले समय में इनका प्रयोग केवल शास्त्रों तथा कवच इत्यादि में अलंकरण तक ही सीमित था।

नारी तथा दरी कला का संबंध

दरी कला ऐसी कला है जिसका नारी के जीवन से अटूट संबंध है, जो कि संसार भर में प्रसिद्ध है। यह औरतों द्वारा बनाई गई रचना है। पहले समय में सारा काम हाथों द्वारा ही औरतें करती थी, उसके बाद मशीनें आई। लेकिन आज भी कई जगहों पर औरतें अपने हाथों से दरियां बुनती हैं। दरी कला बहुत ही सुंदर और अनूठी कला है। औरतें इस कला को अपनी आराम की घड़ियों को त्याग कर बहुत ही आनंद व चाव से बनाती हैं। दरी कला उनके लिए आनंद का साधन रही है। दरी बनाने के लिए सहज की जरूरत होती है, इससे दरी अच्छी बनती है। अगर सहजता नहीं होगी तो दरी का डिजाइन भी अच्छा नहीं बनेगा। इसलिए एक लड़की कहती है – जितना ज्यादा प्यार एक मां अपनी बेटी से करती है, वह उतना ही प्यार दरी से करती है। वह दरी में अच्छे–अच्छे डिजाइन बनाकर अपनी भावनाएं व्यक्त करती है। नारी को न केवल उसकी सुंदरता के कारण बल्कि एक लोक कला के रूप में भी पहचान मिली है। हमारे भारत में अक्सर ग्रामीण महिलाएं समय का सदुपयोग करना अच्छी तरह से जानती हैं, जिनमें मज्जियां, फुलकारी, दरियां, पंखियां आदि बनाई जाती हैं। कई महिलाएं जिनके घर का निर्वाह बहुत मुश्किल से होता है, वे भी दूसरे लोगों से पैसे लेकर उन्हें दरियां बुनकर देती हैं। अक्सर अपने घरों का निर्वाह करने में सहायता करती हैं।

कई गांव में ऐसी कई औरतें हैं जो दरियां किराए पर बुनती हैं। दरी को हर धर्म के लोग खरीदते हैं चाहे वह पंजाबी हो, हिंदू हो या मुस्लिम हो। इसे सब खरीदने हैं। जब कोई नई दरी बनती है, तो वह अपनी कल्पना, बुद्धि, भावनाएं सब उसमें लगा देती हैं। मनुष्य कल्पना में ईश्वर से कम नहीं है। इस शक्ति का संबंध मस्तिष्क से होता है। मनोरंजन, रचनात्मक एवं काल्पनिक विचारों को मनुष्य किसी भी माध्यम से इसे व्यक्त करती है। हर वस्तु में अपनी–अपनी ताकत के अनुसार भावनाएं विद्यमान होती हैं। उसमें धीरे–धीरे वृद्धि करना या उत्साहित करना ही प्रधान है जिससे की दरी की सुंदरता की ओर विकास बढ़ जाता है। यदि देखा जाए तो यह कला का बड़ा नमूना है, क्योंकि कला हर वस्तु में पाई जाती है। यह मनुष्य के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमारा कोई भी कार्य ऐसा नहीं जहां कला का महत्व न हो।

मनुष्य जब भाषा नहीं जानता था, तब वह अपने हृदय की भावनाओं को चित्रों के द्वारा प्रकट करता था। इतिहास में कोई भी युग ऐसा नहीं है जिसमें कला का महत्व न रहा हो। कला तथा लोक कला का एक दूसरे से गहरा संबंध है। किसी भी क्षेत्र की संस्कृति को अच्छी तरह समझने के लिए

उसे क्षेत्र की लोक कला को जानना जरूरी है। उस लोक कला को जीवन की सच्ची झांकी उसे क्षेत्र की लोक कलाओं में देखने को मिलती है। लोक कला में दरी कला भी महत्वपूर्ण कला के अंतर्गत आता है।

आज भी दरी कला का कार्य गांव की औरतें या पुरानी औरतें बड़े शौक से करती है। हर गांव, शहर सभी जगह दरी का प्रयोग लोग करते हैं। दरियों के अलग–अलग डिजाइन देखकर हम आनंदित हो उठते हैं। जब हम कोई नई वस्तु खरीदने हैं और उस वस्तु को जब तक हम किसी और को न दिखाएं तो हमें ठीक नहीं लगता, हमारा मन चाहता है कि कोई दूसरा आकर हमारी चीज को देखें और उसकी तारीफ करें। वैज्ञानिक आविष्कार हो या साहित्य रचना जब तक उसकी जानकारी या रसिकों के सामने नहीं रखा जाता, तब आविष्कार या साहित्यकार का अनुभव सफल नहीं होता।

पवित्र अवसरों पर आकर्षक दरियों के प्रयोग का वर्णन प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है। जैसे– राम के राज्याभिषेक के अवसर पर अयोध्या की सड़कों को रेशम की चदरों व दरियों से सुसज्जित किया गया था। विवाह मंडपों पर अलंकरण जालीदार सस्त्रों में किया जाता था। कालिदास ने अपने काल में इतने महीन कपड़े का उल्लेख किया है जो सांस लेने मात्र से उड़ जाता था। इससे कपड़े की उच्चतम कोटी प्रभावित होती है। उन निर्माण केंद्रो के स्थानों के बारे में भी बताया जाता है जहां इस प्रकार के वस्त्रों को निर्मित किया जाता था। इससे भी अधिक रोचक बात यह है कि ग्रन्थों में जिन स्थानों का वर्णन किया जाता है, वह स्थान आज भी कार्यरत है। वहां पर आज भी काम चल रहा है।

प्राचीन समाज का जन–जीवन प्रकृति के अधिक निकट होने के कारण उनके वस्त्र भी लोक शैली पर आधारित होते थे। इसी तरह अलग–अलग प्रदेश अलग–अलग बुनाई से प्रचलित हैं। जैसे उत्तर प्रदेश रंगीन मीनाकारी के लिए तथा 'नीलों' में जटिल नक्काशी के कारण प्रसिद्ध है।

➢ नारी और पंखी कला में संबंध :–

नारी का पंखी से वही संबंध है जो पत्ते का डाल से, आसमान का तारों से, समुद्र का पानी और खुशबू का फूल से होता है। जब कोई नारी पंखी बनती है तो वह उसमें अपनी कल्पना, बुद्धि, भावनाएं सब उसमें लगा देती है। एक मनुष्य कल्पना में ईश्वर से कम नहीं। इस शक्ति का संबंध मस्तिष्क से है। मनोरंजन, रचनात्मक एवं काल्पनिक विचारों को मनुष्य किसी भी माध्यम के द्वारा प्रकट करने की क्षमता रखता है। इसी तरह जब ग्रामीण नारियां पंखी बनाती हैं वह अपनी कल्पना के माध्यम

से इसे व्यक्त करती हैं। प्रत्येक वस्तु में अपनी–अपनी ताकत के अनुसार भावनाएं विद्यमान होती हैं। उनमें धीरे–धीरे वृद्धि करना या उत्साहित करना ही प्रधान है, जिससे पंखी का सुंदरता की ओर विकास बढ़ जाता है।

यदि हम देखें तो यह सबसे बड़ा कला का ही नमूना है, क्योंकि कला हर वस्तु में पाई जाती है। कला मनुष्य के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमारा कोई भी कार्य ऐसा नहीं है जिसमें कला का महत्व न हो। मनुष्य जब भाषा नहीं जानता था तब वह अपने ह्रदय की भावनाओं को चित्रों के द्वारा प्रकट करता था। इतिहास कोई भी युग ऐसा नहीं है जिसमें कला का महत्व न रहा हो। कला तथा लोक कला को जानना जरूरी है। लोक जीवन की सच्ची झांकी उस क्षेत्र के लोक कलाओं में देखने को मिलती है। लोक कला में पंखी भी महत्वपूर्ण काल के अंतर्गत आता है। पंखी भारतीय औरत का श्रृंगार है। पंखी बिना तो यह नारी अधूरी लगती है। पंखी केवल भारत में ही नहीं चीन, रशिया, तुर्किस्तान व पूरे विश्व में विख्यात है।

आनंद व ज्ञान बांटने से बढ़ता है। यह सामान्य अनुभव है की नई वस्तु प्राप्त होने पर उसको दूसरों को दिखाने की हार्दिक इच्छा होती है। नई साड़ी खरीदने पर लोगों के सामने उसका प्रदर्शन किए बिना महिलाएं संतुष्ट नहीं होती और कोई दूसरा जाकर उसके बारे में तारीफ न करे तो यह कुछ ठीक नहीं लगता। वैज्ञानिक आविष्कार या साहित्यकार सफलता का अनुभव नहीं करता। इसी तरह से हमारी भारतीय सभ्यता में पंखी को काफी उच्च स्तर पर रखा जाता है। जब भी भारत में किसी भी क्षेत्र में लड़की की शादी होती है तो उसके घर वाले उसे पंखी उपहार के रूप में देते हैं और एक मां अपनी बेटी के लिए उसके बचपन से ही उसके लिए अच्छी–अच्छी पंखियां बनाकर रखती हैं। गांवों में पंखी को नारी की शोभा समझा जाता है। औरतें अपने पति को रिझाने के लिए दहेज में लाई गई पंखी से हवा करती हैं। पंखी के बारे में लोकगीत भी है :–

चड़ी जवानी तां किसे नाल, मिल गईयां अखीयां, फिर अंबीया वी बूटियां ते गईया रसीयां,

फेर पीद्यां वी रूखां उते गईयां कसीयां, तृजन विज जुडियां, कूड़ियां बना उंदिया ने पंखीयां।

इस दूजे दी सुनदीयां वे सुनाउनियां ने सखींया।।

दूध मखना नाल पालियां मापियां दीआ, ओह ने रूप दीयां रानियां,

डूल–डूल पैदा नूर ओहना दे चहरियां ते ओहने भारत दीयां जटीयां,

सांभ–सांभ मापियां ने श्रृगांर घर दा, बनाके ने रखीआं,

तृजन विच बैठिया कुड़ियां बनाउंदिया ने पंचीया, इक दूजे दी सुनदीया तें सुनाउंदिया ने सखीया।।

इस अस्त–व्यस्त जीवन में नारी को अपनी भावनाओं को खुलकर ब्यान करने में नारी कुछ असमर्थ हो गई है, लेकिन कुछ क्षेत्रों में अभी भी महिलाएं ग्रामीण लोग अपनी संस्कृति से जुड़े हुए हैं। वह अपने क्षेत्र की लोक कला को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानते हैं।

अतः अपनी मेहनत व समय के सदुपयोग से भारतीय नारी ने पंखी की कला को विकसित किया है। अपने घर के काम समेट कर एक जगह जब सब लड़कियां इकट्ठी होती हैं, वहां बैठकर सिलाई, कढ़ाई , बुनाइ पंखी कला करती हैं, और बातें करती हैं, लोकगीत गाती हैं। उस जगह को 'त्रिजंन' कहा जाता है।

अतः पंखी और नारी का आपस में घनिष्ठ संबंध है। इसे लफ्जों में बयां करना मुश्किल नहीं नामुमकिन है। प्रत्येक देश की अपनी–अपनी संस्कृति होती हैं। उसमें निहित गुणों के कारण ही उसकी महत्वता होती है। भारत की संस्कृति को पूरे विश्व में बहुत सम्मान मिला है। संस्कृति मानव को मानव एक देने वाली कतिपया विशिष्ट गुना में अन्यतम है। वे सारी अभिव्यक्तियों ही संस्कृति है, जो मनुष्य को मानसिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक विशिष्टता प्रदान करती है। किंतु यह संस्कृति किसी एक व्यक्ति के कुछ समय के अथवा संपूर्ण जीवन के कार्यों से निर्मित नहीं होती, यह संस्कृति तो किसी भी देश के ज्ञात अथवा अज्ञात असंख्या व्यक्तियों को दीर्घकालीन एवं कष्ट साध्य प्रयत्नों के परिणाम से पल्लवित होती हैं। देश की परंपरागत संपूर्ण मानसिक निधि ही संस्कृत शब्द में समाहित हो जाते हैं। समय का निर्वाह गति में योगदान देते जाते हैं। हरिदत्त वेदालंकार ने संस्कृति निर्माण की इस प्रक्रिया के लिए अत्यंत सुंदर उपमान प्रस्तुत किया है।

संस्कृति की तुलना ऑस्ट्रेलिया के निकट समुद्र में पाए जाने वाली मूंगे की भीमकाय चट्टानों से की जा सकती है। मूंगे के असंख्या कीड़े अपने छोटे–छोटे घर बनाकर समाप्त हो गए, फिर नए कीड़ों ने घर बनाए, उनका भी अंत हो गया। इसके बाद उनकी अगली पीढ़ी ने भी यही किया और यह काम हजारों वर्ष तक चलता, निरंतर चलता रहा। आज उन सब मूंगों को नन्हे नन्हे घरों ने परस्पर जुड़ते हुए विशाल चट्टान का रूप धारण कर लिया है। संस्कृति का भी इसी प्रकार धीरे–धीरे निर्माण होता है और उसके निर्माण में हजारों वर्ष लगते हैं। मनुष्य विभिन्न स्थानों पर रहते हुए विशेष प्रकार के सामाजिक वातावरण, संस्थाओं, प्रथाओं, व्यवस्थाओं, धर्म व भाषा, लिपि, दर्शन तथा कलाओं का विकास करने वाली विशिष्ट संस्कृति का निर्माण करते हैं। भारतीय संस्कृति की भी इसी प्रकार रचना हुई है।

प्राचीन तपस्वियों एवं ऋषियों ने भारत के भिन्न–भिन्न स्थानों पर तपोवनों तथा गुरुकुलों की स्थापना की है, जहां संपूर्ण देश में उत्सुक छात्र विद्या ग्रहण करने आते थे। प्राचीन काल में वाल्मीकि, वशिष्ठ, अगस्त एवं आदि के आश्रम तथा मध्य युग में नालंदा, तक्षशिला आदि ऐसे ही विद्या के केंद्र थे। धार्मिक गुरुओं, संतो तथा महापुरुषों ने अपने–अपने मत की अभिवृद्धि के लिए पूरे भारत को ही कार्य क्षेत्र बनाया। शंकराचार्य ने अल्पायु में ही भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक भ्रमण कर वैदिक धर्म का पुनरुत्थान किया। तीर्थ यात्रियों के विश्वास और आस्था ने इस एकत्व की नैरन्तर्य प्रदान किया।

उत्तरी भारत को पवित्र करती गंगा का जल सुदूर दक्षिण में अवस्थित में चढ़ना और देश के कोने–कोने में अपने पितरों की अस्थियां प्रवाहित करने हरिद्वार में जाना। इसी मौलिक एकता स्थापित करने के अंशतः साधन बने। इस प्रकार की अखंड एकता के सूत्र में अनुसूचित भारत की संस्कृति को भारतीय संस्कृति नाम देना समीचीन ही है। पाश्चात्य विद्वानों ने भारतीय संस्कृति को प्रायः केवल आर्य संस्कृति कहा है, किंतु यह नाम पर्याप्त भ्रामक है। भारतीय संस्कृति केवल आर्यों की ही नहीं है। इसमें आर्यों के अतिरिक्त द्रविड़, अग्नेय, नेग्रिटो, ईरानी, यवन, शक, कुषाण, अरब तुर्क, मुगल आदि अनेक संस्कृति भारत में आर्य तथा आर्येतर अनेक बहूविध जातियों की विविध सुदीर्घ साधनाओं के सम्मिश्रण फल स्वरुप निर्मित हुई और इन विभिन्न अंशों को अलग कर पाना आज असंभव है।

इसी विशिष्टय के कारण भारतीय संस्कृति को निर्मित करने में अलग–अलग महत्व हैं। पंखी हमारी भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। पंखी का हमारी भारतीय संस्कृति में बहुत बड़ा महत्व है। प्राचीन काल से लेकर अब तक पंखी मानव जीवन का एक हिस्सा रही है। पंखी को बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्री का प्रयोग होता है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवार किसी आम सामग्री जैसे खजूर की पत्तियों से बनी पंखियों द्वारा अपनी हवा की आवश्यकता को पूर्ण करता है तथा उच्च वर्ग का व्यक्ति किसी महंगी लकड़ी, महंगे कपड़े व कीमती धागों एवं मोतियों व सितारे लगाकर उसको सुंदर व आकर्षित बनाकर प्रयोग में लाते हैं।

भारत के हर कोने में बसने वाली नारी को सुंदर–सुंदर चीजें बनाने का बहुत शौक है। चाहे वह घर के किसी सामान को लेकर हो या फिर अपने से संबंधित लोगों को लेकर हो। उन्हें न केवल अपने बल्कि घर के बच्चों तथा बूढ़ों के कपड़े पर सुंदर–सुंदर कढ़ाई की सजावट का भी शौक है। यह शौक सदियों से चला आ रहा है। सौराष्ट्र तथा कच्छ के इलाके में तो घर की दीवारों को सजाने का प्रचलन है। कश्मीर में कसीदा अर्थात कश्मीरी कढ़ाई का बारीक काम आसमान के शिखर को छूता है। मैसूर तथा महाराष्ट्र में कसूती का अपना कोई जवाब नहीं है। हिमाचल में चम्ब रूमाल तथा राजस्थान

में कढ़ाई कला पारखुलों का मन मोहती है। हरियाणा में सांझी कलाकारी शिखर पर है, परंतु जो प्रसिद्ध पूरे भारत में, प्रत्येक राज्य में पंखी को मिली है, वह दुनिया भर में किसी भी इलाके की किसी भी लोक कला को नहीं मिली, क्योंकि वह अपने ही राज्य तक सीमित होकर रह गई। परंतु पंखी एक विश्वविद्यालय लोक कला रही है। पंखे की पवित्रता ने ही भारत का नाम फक्र से ऊंचा किया है।

पंखी लोक कला का एक अभिन्न अंग है। गुरुओं, पीरों, पैगंबरों से लेकर राजा – महाराजाओं तक पंखी का उपयोग किया गया है। भारतीय संस्कृति में पंखी का आज बहुत महत्व है। किसी भी खास मौके पर पंखों ने बहुत सम्मान दिया जाता है।

एक कलाकार ने इसे न जाने क्या सोचकर बनाया परंतु आज पंखी का महत्व इतना बढ़ गया है कि इतने बड़े–बड़े म्यूजियम तथा अजूबों की शोभा बढ़ाई है। आज पंखी दिन–प्रतिदिन नए मोड़ लिए बढ़ रही है। पंखी का उपयोग तो प्राचीन काल से ही आम था। आज शायद ही भारत में कोई ऐसा घर होगा जहां पंखी का उपयोग न होता हो।

आज फैशन के दौर में पंखी का उपयोग केवल हवा करने के लिए ही नहीं बल्कि घर में दीवारें सजाने के रूप में होता है। जिस तरह से अलग–अलग देश में मेहमानों को उपहार के रूप में वहां के स्तंभ चिन्ह देकर सम्मानित किया जाता है, इस तरह भारत में विभिन्न हाथ से बने पंखी को ही उपहार के रूप में देते हैं, जिससे हमारी संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। पंखी को ग्रामीण लोग अपने निजी उपयोग के लिए बनाते हैं। इसे दुल्हन को दहेज में दिया जाता है। प्राचीन परंपराओं के अनुसार पंखी को एक पीढ़ी द्वारा दहेज में दिया जा रहा है जो की बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। हर खास मौके के लिए अलग–अलग पंखियां होती हैं जिसका उपयोग पूरे रीति रिवाज से किया जाता है। चाहे विवाह की कोई रसम हो या राजा का दरबार, अन्य कोई भी खास मौका। इन सब में पंखी को बहुत मान दिया जाता है। यह एक बेटी अपनी मां से सिखाती है, जिस तरह से अन्य कार्य सिखाती है।

आज भी भारत के कई ग्रामीण क्षेत्रों में जहां लड़कियां शिक्षा के साथ–साथ एक जगह इकट्ठी होकर पंखियां बनाती हैं। इनको सुंदर व आकर्षित बनाने के लिए अलग–अलग डिजाइन होते हैं। हिमाचल में बेटी की शादी के समय दहेज में जो कपड़े ससुराल वालों को दिए जाते हैं। उन सब सूटों के साथ एक–एक पंखी भी दी जाती है। इसे शुभ माना जाता है। अतः नारी और पंखी के बीच में विशेष संबंध माना जाता है।

दरी की उपयोगिता

किसी भी क्षेत्र की संस्कृति को अच्छी तरह समझने के लिए उस क्षेत्र की लोक कला को जानना जरूरी है। लोक जीवन की सच्ची झांकी उस क्षेत्र की लोक कलाओं में देखने को मिलती है। लोक कला, दरी कला भी एक महत्वपूर्ण कला है। इसे हम गांव या शहरों में देख सकते हैं, क्योंकि इसका प्रयोग गांव, शहरों, स्कूलों हर जगह होता है। जब हम दिन भर के थके हारे घर आते हैं तो इस पर लेटकर नींद लेते हैं और अपनी थकान दूर करते हैं। इसका प्रयोग हम हर जगह पर देखते हैं। जब हम किसी कमरे में चटाई को देखें तो इतना ध्यान आकर्षित नहीं करती है, डिजाइन वाली दरियों को देखकर मन आनंदित हो उठता है।

मेरे अपने घर में जब मैं डिजाइन वाली दरियां देखी जो मेरी माता जी ने अपने हाथों से बनाई है, वे इतनी सुंदर है कि मैं उनसे बहुत प्रभावित हुई। मेरी माता जी ने एक दरी में दो या तीन–तीन डिजाइन डालकर बनाई हैं। वे दरिया बहुत ही मजबूत और सुंदर हैं। वे दरियां सबका ध्यान अपनी और आकर्षित करती हैं। ये दरियां मेरी माता जी अपने दहेज में लेकर आई और अभी भी कभी–कभी वह दरियां बना लेती हैं और वे दरिया बहुत ही अच्छी हैं। कहते हैं आनंद व ज्ञान बांटने से बढ़ता है। यह सामान्य अनुभव है। मैं इन दरियों का वर्णन भी करूंगी। मैं दरियों से इतनी प्रभावित हुई हूं कि मैंने सोचा क्यों न मैं इसके बारे में सबको बताऊं। कई वस्तु प्राप्त होने पर उसको दूसरों को दिखाने की हार्दिक इच्छा होती है। वैज्ञानिक आविष्कार हो या साहित्य रचना जब तक उसकी जानकारी या रसिकी के सामने नहीं रखा जाता, तब तक आविष्कार या साहित्यकार सफलता का अनुभव नहीं करता।

ग्रीक विचारक पर्सियस ने लिखा है कि इसका निष्कर्ष यह हुआ कि आपके ज्ञान का आपके लिए कोई अर्थ नहीं है, जब तक अन्य लोग नहीं जानते। कलाकार भी इसका अपवाद नहीं है। भले ही वह कहता फिर की वह केवल निजी आनंद के लिए कलाकृतियां बनता है। सच्चाई तो यह है कि अपने कृतियों को निजी उपयोग तक सीमित नहीं रखता व उसको तब तक संतोष नहीं मिलता जब तक उसकी कृतियां अन्य लोगों से प्रकाशित नहीं होती।

अतः कलाकार का कथन है कि वह (स्वान्त, सुखाय कला निर्मित) करना है। अर्ध सत्य है जिस कुएं के जल का उपयोग नहीं करते तो हमारी हस्तकला ही व्यर्थ है। इसका उपयोग हम विभिन्न प्रकारों से करते हैं जैसे –

1. भावनात्मक उपयोगिता
2. शारीरिक उपयोगिता
3. शादी विवाह के लिए
4. आर्थिक स्थिति

➢ भावात्मक उपयोगिता :–

काल्पनिक विषयों के चित्रण एवं मानव के अंतर्गत में लुप्त भावनाओं के प्रकटीकरण के लिए अतियथार्थवादी रूपांकन पद्धतियां व प्रतीक योजना काफी उपयुक्त सिद्ध हुई है। विज्ञान के युग में प्रवेश के पश्चात भी मानव का काल्पनिक जीवन के प्रति आकर्षण कम नहीं हुआ। असल में अपने जीवन के भौतिक पक्ष में भी मानव के सुख–दुख, महत्वपूर्ण रहन–सहन के तरीके, चयन सब कुछ वास्तविकता व तर्क, बुद्धि की अपेक्षा कल्पना पर निर्भर करता है। कल्पना के बिना मनुष्य के जीवन का भाव ही समाप्त हो जाता है। कल्पना के बिना उसके काल्पनिक भय व दुख के साथ उनके काल्पनिक श्रेष्ठत्व व सुख का भी अंत हो जाएगा। व मानव व पशु पक्षियों में कोई अंतर नहीं रहेगा। रहस्य, कथा, पुराण, भूत–प्रेतों की कहानीयाँ आदि।

कल्पनिक साहित्य अभी भी लोकप्रिय है। विज्ञान तथा अलौकिक मानव की कथा उसी का नया संस्करण है। अति यथार्थवाद के स्वाज्जिल प्रभाव निर्माण करने के सामर्थय का चल चित्र पर नृत्य, नाटक, संगीत, मनोवर्धक कला आदि का सामूहिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में काफी उपयोग किया जाता है। काल्पनिक साहित्य के सचित्रीकरण में अतियथार्थवादी शैली विशेष उपयुक्त है। कल्पना भी हमारी भावना से जुड़ी हुई है। ग्रामीण स्त्रियां अपने समय का सदुपयोग करने के लिए अपनी कल्पना द्वारा दरियों को बनाती हैं। जब सब औरतें घर का काम निपटा लेती हैं तो इकट्ठे बैठकर नए–नए डिजाइनों की बातें करती हैं और अपने–अपने भावों के अनुसार उन डिजाइनों को दरी में उतरते हैं। दरियां हमारी भावनाओं से जुड़ी हुई हैं। जिस तरह के भाव हमारे मन में आएंगे हम उसी तरह के रंगों को दरी में लेंगे और जिस तरह के डिजाइन की कल्पना करेंगे उसी तरह के डिजाइन को दरी में उतरेंगे।

यदि हमारा मन खुश है तो हम उचित प्रकार के डिजाइन को दरी में उतरेंगे। यदि हमारा मन खुश और चमकीले रंगों का प्रयोग करेंगे और देखने वाला भी खुश होगा। सभी इस दरी की ओर आकर्षित होंगे। यदि हमारा मन उदास है तो हमसे न तो उचित डिजाइन बनेगा और न ही उचित रंग

लगेंगे और उसे देखने वाला भी परेशान हो जाएगा। यदि हमारा मन खुश है तो हमें अच्छे–अच्छे सुझाव आएंगे। हमारा मन कुछ अच्छा करने को करेगा। कला एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हमें यह पता चलता है कि मनुष्य जो कार्य कर रहा है, वह खुश होकर कर रहा है या नहीं। कला द्वारा मनुष्य के भाव निकल कर सामने आते हैं। इसे साफ पता चलता है कि मनुष्य मन से कर रहा है या गुस्से में।

अतः हम कह सकते हैं कि यह भावात्मक अनुभूति को प्रकट करने का साधन है। मानव भावनाएं अत्यधिक हैं। वे इन्हें कला के माध्यम से प्रकट करता है।

- शारीरिक उपयोगिता :–

दरियों का शारीरिक उपयोगिता में भी स्थान है जैसे कि हम दिन के थके हारे इस पर लेट कर आराम करते हैं। अपनी थकान दूर करते हैं। दरी बिछाकर उस पर बैठकर हम व्यायाम कर सकते हैं। जो की जरूरी होता है शरीर के स्वस्थ रखने के लिए इसे व्यवस्था के रूप में प्रयोग लाते हैं। इसका मानव जीवन में भी बहुत महत्व रहा है। पहले लोग गांव में इसे अपने घर को सजाने का सुंदर गहना मानती थी। घर में किसी की मेहमान के आने पर चारपाई पर दरियां बिछाती थी। स्कूलों में बच्चों के बैठने के लिए भी दरियां ही उपयोग में लाई जाती हैं। पहले मानव पत्तों से अपने शरीर को ढकता था, लेकिन धीरे–धीरे समय बदलता गया।

मानव द्वारा नए–नए आविष्कारों की खोज की गई, जिसमें उन्होंने अपनी शरीर को ढकने के लिए वस्त्र व आराम के लिए दरियों की कला की। एक बच्चे के जन्म से लेकर घर में होने वाले प्रत्येक सुख–दुख के कार्यक्रमों में भी दरियों का बहुत महत्व है।

यह हमारी कल्पना शक्ति को विकसित करता है किस तरह हम अपनी कल्पना को दरियों के डिजाइनों के माध्यम से व्यक्त कर सकते हैं। इस प्रकार हम कहेंगे कि दरियां हमारी शारीरिक उपयोगिता है। यह कहना उचित होगा शरीर–रचना साधर्म्थ के कारण वस्तु से प्राप्त संवेदनाओं का, यानी रूप का, अनुभव तीव्रता के न्यूनाधिक्य को छोड़कर सब मनुष्यों के लिए समान गुण लिए हुए होता है। जिस व्यक्ति में ज्ञान ज्ञानेंद्रित एक अक्षमता है, वह व्यक्ति संबंधित रूपानुभव से वंचित हो सकता है। वह कला को समझ ही नहीं पाता। कला एक ऐसा साधन है जो मनुष्य को आत्म संतुष्टि के साथ–साथ शारीरिक संतुष्टि भी देता है।

➢ शादी – विवाह :–

प्रत्येक माँ के मन में अपनी बेटी को लेकर अनेक भाव होते हैं। वह अपनी बेटी के जन्म से लेकर उसके बड़े होने तक उसके विवाह के लिए न जाने क्या–क्या सपने संजोती है जिस तरह से वह अन्य वस्तुएं दहेज के रूप में अपनी बेटी को देती है। इस तरह से दरियां भी दहेज में उतनी ही मायने रखती हैं। जो औरतें खुद दरियां बनाती हैं। वह अपनी बेटी के लिए बनाई जाने वाली दरियों में अपना प्यार और अपनी ममता को संजोती है, जिसमें अपनेपन को वह न जाने कितने अरमानों से बुनती हैं।

दरियों का उपयोग यहां पर ही सीमित नहीं होता। जब किसी घर में शादी विवाह या अन्य कोई कार्यक्रम पर सगे–संबंधी एक–दो दिन या शादी वाले घर में तो एक हफ्ता या महीना पहले ही मेहमान आने शुरू हो जाते हैं। तब घर की औरतें अपने हाथों के द्वारा बनी हुई दरियां बिछाती थी, उनके सोने के लिए आज भी कहीं–कहीं इन्हीं परंपराओं को अपनाया जाता है। आज भी छोटे–छोटे गांव में औरतों और लड़कियां इकट्ठी दरियां बुनती, फुलकारी निकालती, चादरों पर कढ़ाई करती तथा लोकगीत गाती हैं, और मार्ग दर्शन करने के लिए गांव के बुजुर्ग औरतें भी उनके साथ देती हैं।

आज भी गांव में विवाह से एक या दो दिन पहले लोगों के घरों से चारपाई तथा दरियां इकट्ठी करके लाई जाती हैं और मेहमानों को उसके ऊपर सुलाया जाता है। जब किसी लड़की के घर बच्चा पैदा होता है और उसके मायके वालों की तरफ से लड़की के लिए व उसके बच्चे के लिए कुछ सामान आता है। बच्चों के कपड़ों के साथ दरियों सहित एक बिस्तर शगुन के रूप में आता है। किसी भी लड़की के जीवन में इसका बहुत महत्व है। जब वह विवाह करके ससुराल आती है तो उसकी मां उसे दहेज के रूप में यह देती है। जब वह मां बनती है तो वह अपनी बेटी को देती है और जब वह नानी बनती है, तो अपनी बेटी को दहेज के रूप में ये दरियां देती हैं। इस प्रकार दरियों का प्रयोग एक जगह तक सीमित न होकर हर जगह होता है।

➢ आर्थिक उपयोगिता :–

एक तो लोग दरियों को अपने शौक के लिए बनाते हैं और कई औरतें अपने खाली समय को व्यर्थ नहीं जाने देती। वे अपना सारा काम निपटाकर जो समय बचता है उसका सदुपयोग कर कला का कार्य करती हैं, जिनमें से दरियां प्रमुख हैं, जिनका वर्णन मैं इस पुस्तक में कर रही हूँ। दरियों का प्रयोग हम आर्थिक उपयोगिता के लिए भी करते हैं। हमारे हरियाणा के अधिकतर गांवों में स्त्रियों को

काम करने के लिए घर से बाहर जाने नहीं दिया जाता। उनका भी मन करता है कि वे भी अपने परिवार के लिए कुछ करें। जिससे घर का गुजारा हो सके व उनके बच्चों का पालन पोषण अच्छी प्रकार से हो सके। अपनी घर गृहस्थि के निर्वाह में अपने परिवार को सहयोग देने की इच्छा होती है। गांव की स्त्रियों के पास अक्सर खाली समय होता है। खाली मस्तिष्क शैतान का घर कहलाता है, इसलिए कहीं स्त्रियां खाली समय में दरियां बनाती हैं और जो अमीर लोग होते हैं, वे इन्हें खरीदते हैं। हमारे हरियाणा में गांव में दरिया बनाने का कार्य स्त्रियों द्वारा अपनी आत्मिक शांति व आर्थिक जरूरत को पूरा करने के लिए करती हैं। कुछ औरतें किराए पर दरियां बुनती हैं। गांव के अन्य लोग उन्हें पैसे देकर दरियां बनवाते हैं।

कई औरतें अपनी बेटियों के दहेज के लिए और कहीं घर में इस्तेमाल के लिए भी दरियां बनवाते हैं। गांव की औरतें जो दरियां अपने हाथ से बनाती हैं, वह मजबूत और टिकाऊ होती हैं। यह बाजार की दरियों से काफी ज्यादा अच्छी होती हैं। अतः हम कहेंगे कि दरियां हमारे भावात्मक व शारीरिक, आर्थिक उपयोगिता में सहायक हैं।

पंचम् अध्याय

- पंखीयों के चित्रों का विवरण
- दरियों के चित्रों का विवरण

पंखीयों के चित्रों का विवरण

1. रेशमी धागे की पंखी :–

रेशम की रीलों से लकड़ी के खाके में सुंदर डिजाइन का अलंकरण किया जाता है। ज्यामितीय आकृतियां बनाई गई हैं, जिसमें फूल और पत्तियों के भिन्न–भिन्न आकर्षित रंगों से पत्तियों का प्रयोग किया गया है। इसमें गुलाबी, नीला, पीला, हरा, रेशमी रंग के धागों का प्रयोग किया गया है। पंखी पर नीले रंग की झालर चुंगट डालकर लगाई हुई है, एवं उसकी शोभा बढ़ाने के लिए उस पर सफेद रंग की लेस लगाई गई है। पंखी में चार रंग के रेशम के धागों का प्रयोग किया गया है। इस पंखी में फूल एवं पत्तियों को बनाया गया है, क्योंकि ग्रामीण लोग प्रकृति के सबसे करीब होते हैं।

2. मनको वाली पंखी :–

इस पंखी को धागे व मनको के साथ बनाया गया है और फिर उसमें सुई की सहायता से मनको को पिरोया गया है। पंखी के बाहरी हिस्से पर लाल रंग का कपड़ा लगाया गया है, जिससे पंखी देखने में सुंदर व आकर्षित लगती है। इन मनको से झूमर भी बनाए जाते हैं, जो शोभा बढ़ाने के लिए घरों, गुरुद्वारों, मंदिरों आदि में लगाए जाते हैं और इन मनको से नारियों द्वारा सुंदर हार भी बनाए जाते हैं।

3. रगेलो के डिजाइन वाली पंखी :–

इस पंखी में रंगोली के ही एक डिजाइन में बनाया गया है। लाल, नीले, पीले रंग के धागे का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार के डिजाइन की बहुत सारी दरियां भी बनाई जाती हैं। रंगोली के डिजाइन से बनाई गई पंखी बहुत सुंदर व आकर्षित होती है।

4. अठकालियां पंखी :–

पंखी के खाके पर पहले से धागों से ताना तना गया है। फिर लाल रंग के धागे से पंखी के ऊपर अठकलियां डिजाइन बनाया गया है जो फूलों की आकृतियां जैसे प्रतीत हो रहा है। पंखी के बाहरी भाग पर सफेद रंग का कपड़ा लगाया गया है और आगे हरे रंग की झालर को चुंघट डालकर लगाया है, जिससे उसकी सुंदरता में निखार आया है।

5. फूलों वाली पंखी :–

पंखी में फूलों की आकृतियां बनाई गई हैं। पहले खाके में लाल रंग का ताना तना गया है। फिर काले रंग से इसके ऊपर फूल बनाए गए हैं। फूलों को चतुर्भुज के बीच में अंकित किया गया है। गुलाबी रंग की झालर को बहुत अधिक चुंघट डालकर लगाया गया है। पंखी के डंडे पर गुलाबी रंग का कपड़ा लगा हुआ है। डंडी पर भी ऊपरी और अंदरूनी हिस्से पर झालर को चुंघट डालकर लगाया गया है। यह एक अलंकृत पंखी लग रही है।

6. कपड़े से बनी पंखी :—

लकड़ी के बने खाके में पहले एक वैलवट का लाल रंग का कपड़ा लगाया गया है और फिर उसके ऊपर चमकदार लेस को थोड़ी—थोड़ी जगह छोड़कर लगाया गया है और उस छोड़ी हुई जगह पर छोटे—छोटे शीशे व सितारे लगाकर पंखी को सुंदरता को बनाया गया है। सफेद व लाल रंग की झालर के ऊपर लगाया गया है। इससे सजावटी पंखी जो देखने में सुंदर व आकर्षित लगती है।

7. लोक आकृतियों वाली पंखी :—

नीले व सफेद रंग के धागों से लोक आकृतियों का अंकन किया गया है। साथ ही ऊपर और नीचे के भाग पर लहरिया डाला गया है। छोटे—छोटे पक्षियों को पंखे में चतुभुजों में अंकित किया गया है। सफेद और नीले रंग के धागे का सुंदर तालमेल हैं पंखी की डंडी पर सफेद रंग का कपड़ा लगाया गया है। पंखी के बाहरी भाग पर सफेद रंग का कपड़ा सुई धागे की सहायता से लगाया है और उसके आगे काले सफेद रंग के मोती लगाए गए हैं। उनके आगे सफेद रंग की झालर लगाई गई है। इस कढ़ाई को कटवर्क की कढ़ाई कहते हैं। यह पंखी लोक कला का आकर्षक नमूना है। पंखी देखने में सुंदर व आकर्षित लगती है।

8. मोती वाली पंखी :—

लाल रंग के धागे से पंखी का ताना बुना गया है और फिर पीले रंग के धागे से खाके में आयात के आकार के डिजाइन डाले गए हैं। पंखे के बाहरी भाग पर सफेद रंग का कपड़ा सुई की सहायता से लगाया है और उसके आगे पीले रंग की झालर को चुंघट डालकर लगाया गया है। पंखी की सुंदरता और अधिक बढ़ गई है। इन मोतियों से केरोशिये से रुमाल बनाए जाते हैं और कई अलग—अलग तरह की सजावट की चीजें बनाई जाती है।

9. क्रोशिया से बनी पंखी :—

लकड़ी के बने खाके पर पहले गहरे गुलाबी रंग के कपड़े को जोड़ा गया है और फिर उनके धागे से क्रोशियों की सहायता से पंखी के ऊपर डिजाइन को तैयार किया है और इसकी झालर भी इसी से संबंधित बनाई गई है। इस प्रकार करेशियों से पंखी के अलावा तकिया, रुमाल, बेडशीट आदि को भी भिन्न–भिन्न डिजाइनों में बनाया जाता है। यह सब चीज ग्रामीण लोग अपने हाथों से बनाकर अपनी बेटियों को दहेज में देते हैं।

10. फुलकारी वाली पंखी :–

इस पंखी को फुलकारी डिजाइन में बनाया गया है। पंखी को गहरे गुलाल व नीले रंग में से बनाया गया है। लकड़ी के बने खाके में पहले गहरे गुलाबी रंग का ताना तना गया। फिर ऊपर से पीके, नीले रंग के बीच फुलकारी वाले डिजाइन को अलंकृत किया गया है। डंडी पर गहरे गुलाबी रंग के वेलवेट के सादे कपड़े को लगाया गया है और डंडी पर बहुत ही छोटे–छोटे मोतियों की लड़कियों को थोड़ा–थोड़ा स्थान छोड़कर लगाया गया है। डंडी के नीचे के भाग को भी कलात्मक दिखाया गया है। मोती सफेद व काले रंग के हैं। इस डिजाइन में अधिकतर फुलकारियों के ऊपर कढ़ाई की जाती है।

11. तोते वाली पंखी :–

इस पंखी की डंडी बहुत अधिक कलात्मक है जो देखने वाले को अपनी और आकर्षित करती है। लकड़ी के बने खाके में हरे रंग के धागे का प्रयोग किया गया है। इसमें हरे रंग के ऊनी धागे एक से लोकाकृति तोते को चित्रित किया गया है। इसमें हरे रंग के ऊनी धागे एक से लोककृति तोते को चित्रित किया गया है। एक फूल को भी पंखी पर बनाया गया है। तोते के पैर पीले रंग के धागे से बनाए गए हैं। बाह्ररीय भाग पर फीके लाल रंग के कपड़े को सुई की सहायता से लगाया गया है। फिर झालर को सघन ाचुगंट डालकर लगाया गया है। यह लोक कला का एक सुंदर नमूना है। भिन्न–भिन्न डिजाइनों में बनाया जाता है। ये सब चीजें ग्रामीण लोग अपने हाथों से बना कर अपनी बेटियों को दहेज में देते हैं।

12. शेर वाली पंखी :–

इस पंखी को पीले और नीले रंग के धागों से बनाया गया है। लकड़ी के खाके में रेशमी धागे से शेर की आकृति को अलंकृत किया गया है और उसके आसपास तिरछी रेखाओं को अलंकृत किया गया है। लोक कला का एक नमूना पेश किया है। पंखी के बाह्राय भाग पर फीके लाल रंग के कपड़े को लगाया गया है। झालर को चूंघट डालकर पंखी के आगे लगाया गया है। झालर के बीच में सुनहरी रंग

के मोतियों को लगाया गया है। कलात्मक डंडी का प्रयोग किया गया है। पंखी की डंडी पर भी पीके लाल रंग के कपड़े को लगाया गया है। पंखी प्रत्येक देखने वाले को अपनी और आकर्षित करती है। शेर को बहुत ही स्पष्ट दिखाया गया है। पंखी में प्रयोग किए गए रंगों में समानता के स्थान पर विशेषता है, फिर भी पंखी देखने पर सुंदर व आकर्षित लगती है।

13. सीपी वाली पंखी :–

सजावटी पंखी की तरह लगाई गई। यह एक बहुत ही कलात्मक किस्म की पंखी है। इसमें लकड़ी के बने खाके में धारियों से सिपियां लगाई गई हैं। पंखी से सफेद रंग के मोती व गुलाबी और सुनहरी की सीपीयों की सहायता से इस सुंदर पंखी का निर्माण किया गया है। बाह्राय भाग पर सफेद रंग के कपड़े का प्रयोग किया गया है और उसके आगे सफेद रंग की झालर को चुंघट डालकर लगाया गया है। डंडी पर सफेद रंग के कपड़े को लगाया गया है। कलात्मक डंडी का प्रयोग किया गया है। इस तरह की सीपियों से पर्दों पर लगने वाली कलात्मक लड़ियां भी बनाई जाती हैं। इसके अलावा कई प्रकार की सजावटी वस्तुएं बनाई जाती हैं।

14. चारकलियों वाली पंखी :–

पंखी को गहरे रंग के धागों से बनाया गया है। पंखी में पहले नीले रंग के तना बुना गया है। फिर पीले रंग के धागे से इसमें चार कलियां डिजाइन निकाला गया है। चार कलियां डिजाइन चतुर्भुज के अंदर अंकित किया गया है। पंखी के बाहरी भाग पर सफेद रंग का कपड़ा लगाया गया है। पंखी में आगे गहरे पीले रंग का कपड़ा लगाया गया है। पंखी के आगे पर झालर के आगे चमकदार सितारों को सुई की सहायता से लगाया गया है। दरियों, चादरों में इस तरह के डिजाइन अधिकतर बनाए जाते हैं।

15. तितली वाली पंखी :–

लकड़ी के बने खाके में बहुत ही रेशम चमकदार टांके के धागे से पंखे को बनाया गया है। पंखी में पहले लाल रंग के रेशमी धागे से तना गया है। फिर ऊपर चमकदार धागे के साथ पंखी के बीच में तितली वाला डिजाइन निकाला गया है। पंखी के बाहारी भाग पर गहरे गुलाबी रंग के वैलवेट के कपड़े की सुई धागे की सहायता से लगाया जाता है। उसके आगे काले रंग के मोतियों को लगाया गया है। वेलवेट के कपड़े को लगाया गया है। वेलवेट के कपड़े की झालर को चुंघट डालकर पंखे के बाहरी भाग पर लगाया गया है। डंडी पर भी वैलवेट के कपड़े को लगाया गया है। कलात्मक डंडी का प्रयोग किया गया है।

16. मोर आकृति वाली पंखी :7

इस पंखी को पट के धागे के साथ बनाया जाता है। लकड़ी के बने खाके में पहले लाल रंग के धागों का ताना तना है। फिर सुई की सहायता से उसमें हरे रंग के धागे से मोर की आकृति को अंकित किया गया है। मोर आकृति के अतिरिक्त इसमें छोटी–छोटी डिब्बियों के डिजाइन को भी अंकित किया गया है और पंखी के बाहरी स्थान पर हरे रंग का कपड़ा लगाया है। फिर उसी रंग की झालर चुंघट डालकर पंखी के बाहरी हिस्से पर लगाई गई है और पंखी को और अधिक सुंदर बनाने के लिए छोटे–छोटे मोतियों की झालर के बीच में लगाया गया है। यह लोक कला का आकर्षक नमूना है। क्योंकि मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है और इसका संबंध श्री कृष्ण जी के साथ भी है।

17. त्रिभुज आकृति वाली पंखी :–

गहरे नीले व गुलाबी रंग से इस पंखी को बनाया गया है। तिरछी लाइन में त्रिभुजाकार आकृतियों को बनाया गया है। पंखी के बाहरी भाग पर सफेद रंग के कपड़े को लगाया गया है और आगे सफेद रंग के कपड़े को चुंगट डालकर झालर के रूप में लगाया गया है। पंखी देखने में सुंदर व आकर्षित लगती है।

18. चतुर्भुज आकृतियां वाली पंखी :–

इस पंखी को रेशम के धागे के साथ बनाया गया है। पंखी के बाहरी भाग पर सफेद रंग के कपड़े को सुई धागे की सहायता से लगाया गया है। इसके आगे काले व लाल रंग के मोतियों को लगाया गया है। सफेद रंग के कपड़े की झालर को चुंघट डालकर आगे लगाया गया है। झालर पर लाल व काले रंग के मोतियों को लगाया गया है। डंडी पर भी सफेद रंग के कपड़े को लगाया गया है। लाल व काले रंग के मोतियों की डंडी की सुंदरता बढ़ाने के लिए डंडी के साथ–साथ लगाया गया है। कलात्मक डंडी का प्रयोग किया गया है।

19. ऊनी धागे से बनी पंखी :–

इस पंखी को ऊन के धागे से बनाया गया है। पंखी को लाल, व पीले रंग के धागे से बनाया गया है। लकड़ी के खाके में पहले लाल रंग में फिर नीले रंग के धागे से छोटी–छोटी लहरियादार आकृतियों को बनाया गया है। पंखी पर सफेद रंग के कपड़े को सुई धागे की सहायता से लगाया गया है। आगे

सफेद रंग की चुंगट डालकर लगाया गया है। डंडी पर भी सफेद रंग के कपड़े को लगाया गया है। कलात्मक डांडी का प्रयोग किया गया है।

20. डिन्सी धागे से बनी पंखी :–

इस पंखी को लोहे के खाके के साथ बनाया गया है। गुलाबी रंग के कपड़े के ऊपर नीली, गुलाबी तथा पीले रंग के ऊन के धागे से डिजाइन बनाया गया है तथा नीले रंग के कपड़े से चुगंटों का प्रयोग किया गया है। डंडी पर भी हरे रंग का प्लास्टिक का हत्था लगा है जो बहुत ही कलात्मक है।

21. चिड़ियों वाली दरी :–

इस चित्र में बहुत ही सुंदर आलेखन को दिखाया गया है। यह नीले रंग के धरातल पर पीले रंग की चिड़ियों की टहनियों पर बैठे हुए दिखाया गया है और टहनियां की पत्तियों और उन पर लगे फूलों का भी अंकन किया गया है। फूलों का अंकन किया गया है। फूलों का रंग पीला रंग है, नीले रंग के धरातल पर पीले रंग की चिड़ियां, टहनियां पत्ते, फुल एकदम से दिखाई पड़ रहे हैं। इस चित्र में दरी का आलेखन बहुत ही सुंदर लग रहा है।

22. गुलदस्ता दरी :–

यह दरी का चित्र बहुत ही कलात्मक ढंग से अंकित किया गया है। इस दरी में नीले रंग के धरातल पर फूलों से भरे गुलदस्ते बनाए गए हैं। गुलदस्तों में नीले, हरे, पीले रंग का प्रयोग किया गया है। एक गुलदस्ते के ऊपर व नीचे सफेद रंग की किनारी बनाई गई है और चित्र में संतुलन आ रहा है।

23. मुर्गों वाली दरी :–

इस दरी के नमूने को बहुत ही सुंदर ढंग से अंकित किया गया है। इस चित्र में काले रंग के धरातल पर सफेद मुर्गों का अंकन है। मुर्गों की लाल रंग की कलंगी दिखाई है और पीले रंग के पैर। चित्र में ऊपर सफेद मुर्गी का नीचे भी सफेद रंग के मुर्गों को अंकित किया है। मुर्गों के बीच में तीन मुर्गियों को भी अंकित किया है। दरी के चारों तरफ बॉर्डर बनाया गया है। यह दरी एकदम से हमें अपनी और आकर्षित करती है। चित्र में ले लयात्मकता दिखाई गई है।

24. कप केतली :–

यह दरी देखने में बहुत ही सुंदर लग रही है। यह कोका–कोला धरातल पर सफेद रंग की केतली का अंकन किया गया है। केतली को बहुत ही सुंदर ढंग से बनाया गया है और केतली के पास एक कप को भी दिखाया गया है। यह कप और केतली देखने में बहुत ही सुंदर लग रहे हैं। ऐसा लगता है कि जैसे असली में हमारे सामने एक कप और केतली पड़ी हो। दरी के किनारो पर पीले रंग का कवर बॉर्डर भी बनाया गया है। इससे दरी की शोभा और बढ़ गई है।

25. मोरनी वाली दरी :–

इस दरी में लाल, नीली व कई पत्तियों को दिखाया गया है। इन पत्तियों पर मोरनीयों का अंकन है। मोरनीयों को सफेद व भुरे रंग का बनाया है। दो मोनीयों के बीच में एक बड़ा फूल अंकित है जिसे भुरे, सफेद व हरे रंग की कलाकृति की है। मोरों को टहनियों पर अंकित किया है। टहनी पर पत्तियां भी अंकित हैं। यह आलेखन बहुत ही सुंदर लग रहा है। चित्र में दोनों मोरनीयों को एक दूसरे के सम्मुख दिखाया गया है। संपूर्ण चित्र को देखने से लगता है कि मानो यह किसी वन का दृश्य हो। यह दरी का चित्र बहुत सुंदर ढंग से बनाया गया है।

26. बाग दरी :–

यह दरी का आलेखन बहुत ही सुंदर है। इस दरी को वैलवेट वाली ऊन से बनाया गया है। दरी में दो रंगों की ऊन पीले व नीले रंग को लगाया है। दरी में तिरछी फूलों वाली रेखाओं के साथ–साथ वर्गाकार बनाए हैं गए हैं जो की पीले रंग के धरातल पर नीले रंग से अंकित है। यह दरी बहुत ही आकर्षित है।

27. जल मुर्गी दरी :–

इस दरी में काले रंग के धरातल पर सफेद रंग की जल मुर्गियों को अंकित किया गया है जिनके मुंह एक दूसरे की तरफ है। मानो वे आपस में बातचीत कर रहे हैं। बीच में एक पेड़ के समान कलाकृति को दिखाया गया है। पेड़ों के बीच में एक तितली के समान आकृति को चित्रित किया गया है जो कि काले रंग की है। पेड़ की दो टहनियां भी चित्रित की गई है जो की सफेद रंग की हैं। संपूर्ण चित्र में संतुलन का बहुत अच्छा प्रयोग किया गया है। पृष्ठभूमि में काले रंग का प्रयोग किया गया है।

28. कचन दरी :–

इस चित्र में कटवर्क वाले सफेद रंग की एक पट्टी दिखाई गई है जिसमें तीन फूल बनाए गए हैं जो की लाल, पीला तथा नीला आदि रंगों में बनाए गए हैं। ऊपर हरे रंग के दो फूल बनाए गए हैं जो की देखने में बहुत ही सुंदर लग रहे हैं। इन फूलों को एक कतार में चित्रित किया गया है। पृष्ठभूमि में गहरे नीले रंग का प्रयोग किया गया है। संपूर्ण चित्र लयात्मक ढंग से चित्रित किया गया है।

29. तोते वाली दरी :—

यह दरी सूत के धागे से बनाई गई है। इस दरी में तो तोतों को सीधी रेखाओं में अंकित किया गया है। ये लाल रंग के धरातल पर हरे रंग के तोतों का अंकन है। तोते के गले में सफेद रंग की माला बनाई गई है। दरी के किनारे को सफेद रंग से बनाया गया है। ये किनारे करवट वाले डिजाइन की है।

30. कबूतरी वाली दरी :—

दरी के लाल रंग के धरातल पर सफेद रंग के कबूतरों को बनाया गया है। दरी के चारों तरफ नीले रंग का बॉर्डर बनाया गया है। जिससे दरी की शोभा और भी बढ़ गई है। इस दरी में सफेद, नीला व लाल रंगों का प्रयोग किया गया है। यह दरी सूत से बनाई गई है।

31. पान पत्ते वाली दरी :—

इस दरी में नीले रंग के धरातल पर पान के पत्ते का अंकन किया गया है। यह पत्ते हरेच लाल व सफेद रंग के हैं। य पत्ते सीधी, लंबी रेखाओं में बनाए गए हैं। ये पत्ते एक लाइन के पत्तों का मुंह दाएं तरफ और दो ऊपर वाले पत्तों की लाइन का मुंह है बाई तरफ किया गया है। सारी दरी में इसी प्रकार के पत्तों को बिछाया गया है जिससे चित्र में लयात्मकता है। पत्ते के आगे एक हरे रंग की रेखा लगाई गई है। दरी के पल्लों पर लाल रंग के धरातल पर सफेद रंग के डिजाइन वाले फूलों का अंकन किया गया है जिससे दरी की शोभा और बढ़ गई है।

32. जंजीर दरी :—

इस दरी को वैलवेट की ऊन द्वारा बनाया गया है जो की बहुत ही मुलायम है। इस पर हाथ फेरने पर मखमल जैसी लगती है। इस दरी में नीले धरातल पर पीले रंग की जंजीर जैसा डिजाइन बनाया गया है। इस पीली जंजीर में जामुनी रंग का भी प्रयोग हुआ है। जंजीर के बीच में जामुनी रंग की रेखाओं को लगाया गया है और इसके बहरीय स्थान पर भी जामुनी रंग का अंकन किया गया है। चित्र

में जंजीर को आधा बनाकर बनाया हुआ भी अंकित किया गया है। संपूर्ण दरी का चित्र सुंदर ढंग से अंकित किया गया है।

33. सेरा जाली :–

सेरा जाली का प्रयोग कई जगह होता है। यह घरों के दरवाजे के आगे टंगे हुए बंधनवर्ण की तरह डिजाइन में है। यह जाल क्रोशियों से बनाया गया है। इस जाल में त्रिकोणी डिब्बी थोड़ी–थोड़ी जगह छोड़कर बनाई जाती है और दो से चार चरणों की सहायता से इसे आपस में जोड़ा जाता है। फिर इसके नीचे ऊन के धागों से फूल बनाया लगाए जाते हैं। यह नीले रंग के बनाए गए हैं। इस जाल को एक ही रंगों से बनाया है। इसकी त्रिकोण डिब्बियों को बड़ी चरणों का जोड़ा गया है।

34. बड़ा अठकलियां दरी :–

इस दरी के चित्र में नीले रंग के धरातल पर सफेद रंग के बड़े अठकलिये का अंकन किया गया है। अत कलियों के बीच में लाल बिंदु का अंकन है। इसके ऊपर एक बड़ा लाल रंग का फूल अंकित ही है। फूलों के बीच में काले रंग की बिंदु है। अठकलिये के लिए के चारों कोनों पर डिजाइन वाली रेखाओं का अंकन किया गया है। संपूर्ण चित्र में संयोजन है।

35. कैंची दरी :–

इस दरी के आलेखन को सुंदर ढंग से अंकित किया गया है। इस दरी को चार रंग की चौड़ी पत्तियों में विभक्त किया गया है। पहले लाल रंग के धरातल पर सफेद रंग की कैंची जैसा डिजाइन अंकित है। इससे अगले वाले भाग में नीले रंग के धरातल पर लाल रंग की केंचिया बनाई है। इन कैंचियों बीच में सफेद रंग का भी प्रयोग हुआ है। तीसरे भाग में सफेद रंग के धरातल पर नीले रंग की कैंचियों को अंकित किया है और इन कैंचियों में लाल रंग का प्रयोग भी हुआ है। चौथा भाग में पीले रंग के धरातल पर लाल रंग की कैंचियों के बीच में काले रंग का प्रयोग किया गया है। यह दरी सूत के धागो से बनाई गई है। इसमें लाल, काला, पीला, नीला, सफेद रंग के सूत का प्रयोग किया गया है। संपूर्ण चित्र में संतुलन है।

36. तिरछा लहरिया दरी :–

यह दरी का चित्र बहुत ही रंग–बिरंगे धागे से बनाई गई है। इस दरी में रंग–बिरंगे धागों के द्वारा तिरछा लहरिया बनाया गया है। लहरिया में लाल, सफेद, काला, पीला रंगों का अंकन है।

37. छमाह दरी :–

यह आलेखन देखने में बहुत ही सुंदर लगता है। यह चित्र रंग के धरातल पर पीले रंग के लहरिया जैसी लाइनों को अंकित किया गया है। इन लाइनों को डिजाइन में बनाया गया है। लाइनों के बीच में काले रंग की कलात्मक की गई है। पीली लाइनों के डिब्बो में लाल, सफेद, गुलाबी रंग के फूलों का अंकन है और इन फूलों के चारों कोनों में सफेद रंग की छोटी–छोटी कैंचियों को अंकित किया गया है। और इन कैंचियों में लाल रंग का प्रयोग भी हुआ है। चौथे भाग में पीले रंग को धरातल पर लाल रंग की कैंचियों के बीच में काले रंग का प्रयोग किया गया है। यह दरी सूत के धागे से बनाई गई है। इसमें लाल, काला, पीला, नीला, सफेद रंग के सूत का प्रयोग किया गया है। संपूर्ण चित्र में संतुलन है।

38. बाग दरी :–

इस दरी में पीले रंग के धरातल पर नीले, सफेद, लाल रंग का प्रयोग किया गया है। दरी के ऊपर वाली जगह पर चौरस दो डिब्बे को दर्शाया गया है और उन डिब्बों में लाल रंग की कलाकृति की गई है। इन डिब्बो के नीचे फिर चार नीले रंग के चौरस डिब्बों को दर्शाया है। ऊपर वाले दो नीले डिब्बो में सफेद रंग की कलाकृति की गई है और नीचे वाले डिब्बो के बीच में लाल रंग से कलाकृति की गई है। इसी प्रकार सारी दरी में डिजाइन को दोहराया गया है।

39. बटेरी वाली दरी :–

यह चित्र नीले रंग के धरातल पर बनाया गया है। इस दरी में सफेद रंग के बटेर अंकित किए गए हैं। इन बटरों में एक दूसरे की तरफ पीठ की हुई है। बटेर के पंखों में नीले रंग को दिखाया गया है। यह दरी ऊन की बनाई गई है। इसे देखने से ऐसा लगता है मानो वृक्षों पर कितने ही बटेर बैठे हैं। यह दरी का चित्र बहुत ही सुंदर लग रहा है।

40. शीर्षकही दरी :–

इस दरी को ऊन के काले रंग की पृष्ठभूमि पर बनाया गया है। काले रंग की पृष्ठभूमि पर सफेद तथा पीले रंग का आलेखन बनाया गया है। दरी देखने में बहुत ही सुंदर लग रही है।

उपसंहार

लोक कला मानव जाति की प्रमुख कला है। मानव जीवन से इसका गहरा संबंध है। प्रत्येक क्षेत्र के लोक कला अपने अपने ढंग की होती है। लोक कला केवल कलाकार कि कला नहीं होती इसमें उन लोगों का प्रत्यक्ष या उसके सरल बोधगम्य रूप से हुए भावनिक सहयोग होता है। यह सामाजिक परंपरा का भी एक अंग है। जब तक कतादाम्य का आनंद शेष रहता है, तब तक धर्म व संस्कृति नष्ट नहीं हो सकते।

मैं गांव कालवा, जिला कुरुक्षेत्र की निवासी हूं। सबसे पहले मैंने अपने माता जी से दरी कला के बारे में जानकारी प्राप्त की। मेरी माता जी ने शादी से पहले काफी दरियां अपने हाथों से बुनी । जिन दरियों को वे अपने साथ दहेज के रूप में लाई हैं। मेरी माता जी मुझे दरियों के ताने को तैयार करने की विधि भी बताई। हमारे घर पर कई डिजाइनों की दरियां अभी भी पड़ी हैं। मैंने अपने गांव कालवा में जहां पर मैंने औरतों को दरियां बनाते हुए देखा और उनसे भी जानकारी प्राप्त की।

वे अभी भी अच्छी–अच्छी डिजाइनों वाली दरियां किराऐ पर बनाती हैं। इसके साथ में गांव सुनारियां में भी गई, जहां पर मुझे दरियों के बहुत अच्छे डिजाइन देखने को मिले। ये दरिया सूत की बनी हुई हैं जिसके चित्र में अपनी पुस्तक में भी लग रही हूं, इतनी सुंदर दरियां और इतने अच्छे लोगों से मिलकर मुझे जो खुशी मिली है वह मैं ब्यान नहीं कर सकती।

मैं शाहबाद मारकंडा में भी दरियों को मैंने निर्माण करते देखा। दरियों पर विभिन्न प्रकार के डिजाइन फूल, पक्षी, जानवर, को मनुष्य के सहचरी के रूप में चित्रित किया गया है। दयरियों के लिए रंग–बिरंगे धागों का प्रयोग किया जाता है, जिससे डिजाइन बनाए जाते हैं। हर डिजाइन का अलग–अलग नाम होता है। जैसे मैंने चित्रों के अध्ययन में बताने की कोशिश की है।

इस शोध का उद्देश्य गांव में बसने वाली औरतें जो की दरियां बनाती हैं, पर प्रकाश डालना है, कि किस तरह से वे दरियां बनाती हैं। आज का समय मशीनी हो गया है क्योंकि आज के समय में दरियां ज्यादातर मशीनों द्वारा बनती हैं, जिससे लोक कला लुप्त होती जा रही है, लेकिन हमारे राज्य हरियाणा में अभी भी बहुत से ऐसे गांव हैं जहां पर औरतें खुद अपने हाथों से दरियां बनाती हैं।

अतः इस शोध का उद्देश्य यह है कि हमारी लोक कला की आभा का प्रकाश इसी तरह प्रचलित रहे। हमें अपनी संस्कृति धरोहर वालों कला से जुड़े रहना चाहिए। इसके बिना हमारा राष्ट्रीय समाज उन्नति नहीं कर सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास – प. – 1, (डॉ. रीता प्रताप)
2. कला दर्शन (डॉ. हरि द्वारीलाल शर्मा) प. – 2
3. मीनाक्षी कासीवाल 'भारती', ललित कला के आधारभूत सिद्धांत, प. सं. – 6, 7 राजस्थान हिंदी ग्रंथ जयपुर
4. वंदना शर्मा : "भारतीय लोक कला एवं हस्तशिल्प वैभव", प. सं. 3, 4
5. डॉ. संतराम देशवाल : "हरियाणा : संस्कृति एवं कला" प. सं. 129, 134, 149, 50, 51
6. बेदी सोहिन्द्र सिंह : "पंजाब दी लोकधारा", पृ. सं. 220
7. मीनाक्षी काशीवाल भारती : ललित कला के आधारभूति सिद्धांत" , पृ. सं. 6, 7 राजस्थान हिंदी ग्रंथ।

1. **https://gaatha.com/indian-hand-fan-pankha/#:text=In%20Inida%2C%20literary%20mentions%20of,sturdy%20and%20mapnifient%20boking$20too**
2. **https://www.bbc.com>2004/07**

चित्र सूची

क्रमांक न0	–	चित्र
01	–	रेशमी धागे वाली पंखी
02	–	मनको वाली पंखी
03	–	रंगोली के डिजाइन वाली पंखी
04	–	अठकलियां पंखी
05	–	फूलों वाली पंखी
06	–	लोक आकृतियों वाली पंखी
07	–	मोती वाली पंखी
08	–	करोशिया से बनी पंखी
09	–	फुलकारी वाली पंखी
10	–	तोते वाली पंखी
11	–	शेर वाली पंखी
12	–	सिपी वाली पंखी
13	–	चारकलियां वाली पंखी
14	–	तितली वाली पंखी
15	–	कपड़े से बनी पंखी
16	–	चिड़ियों वाली दरी
17	–	गुलदस्ता दरी
18	–	मुर्गों वाली दरी
19	–	कप – केतली वाली दरी
20	–	कतरों वाली दरी
21	–	बाग दरी
22	–	जल मुर्गी वाली दरी
23	–	तोते वाली दरी
24	–	कबूतर वाली दरी
25	–	पान पत्ते वाली दरी

चित्र –1 (रेशमी धागे वाली पंखी)

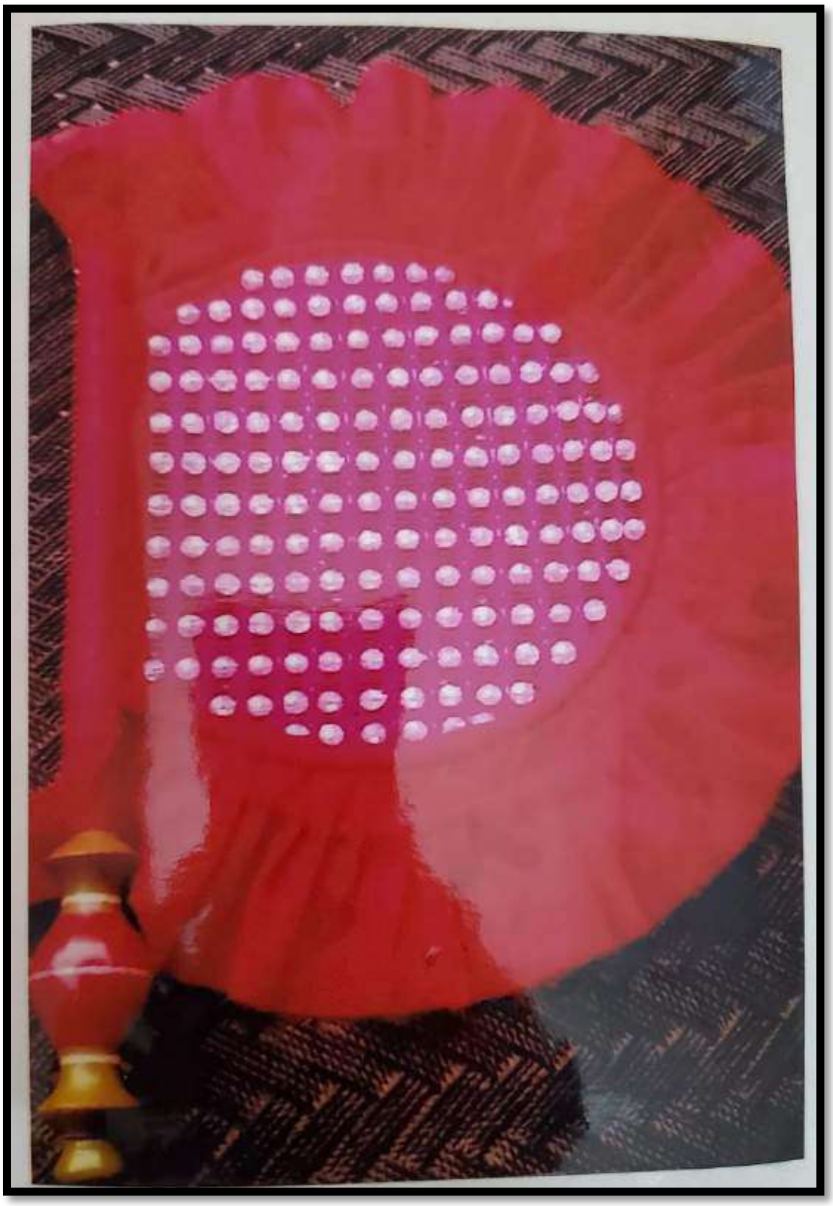

चित्र – 2 (मनको वाली पंखी)

चित्र – 3 (रंगोली के डिजाइन वाली पंखी)

चित्र – 4 (अठकलियां पंखी)

चित्र – 5 (फूलों वाली पंखी)

चित्र – 6 (लोक आकृतियों वाली पंखी)

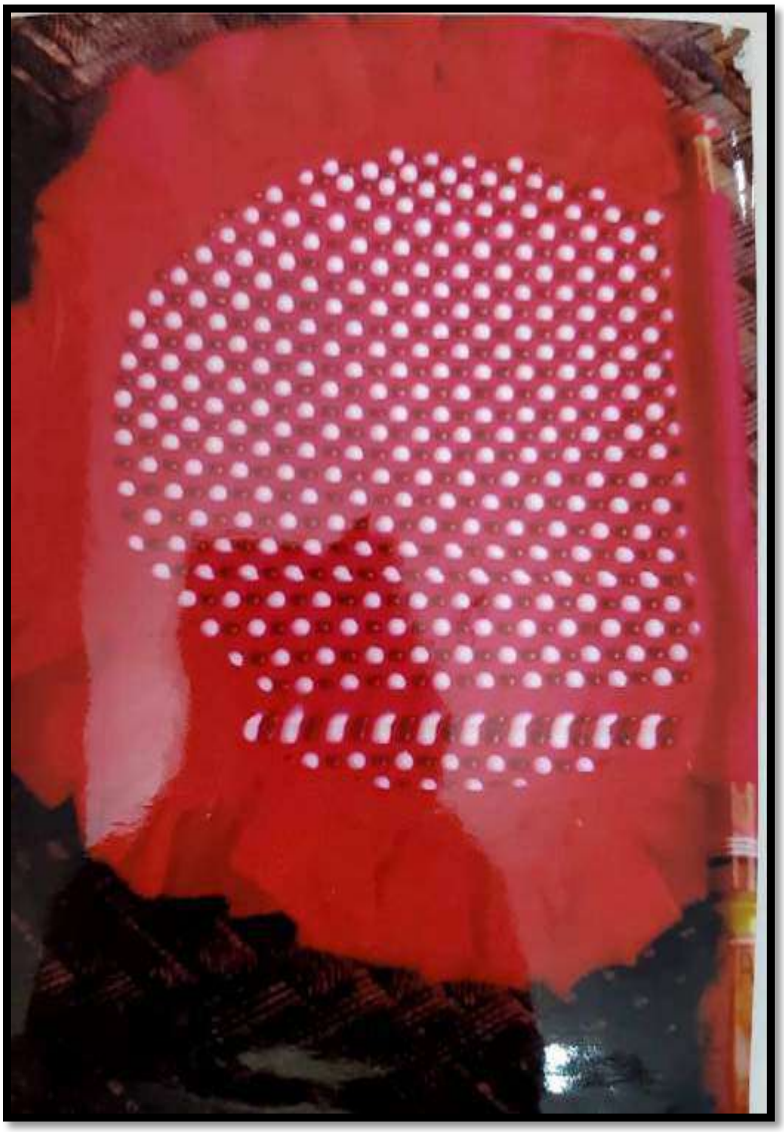

चित्र – 7 (मोती वाली पंखी)

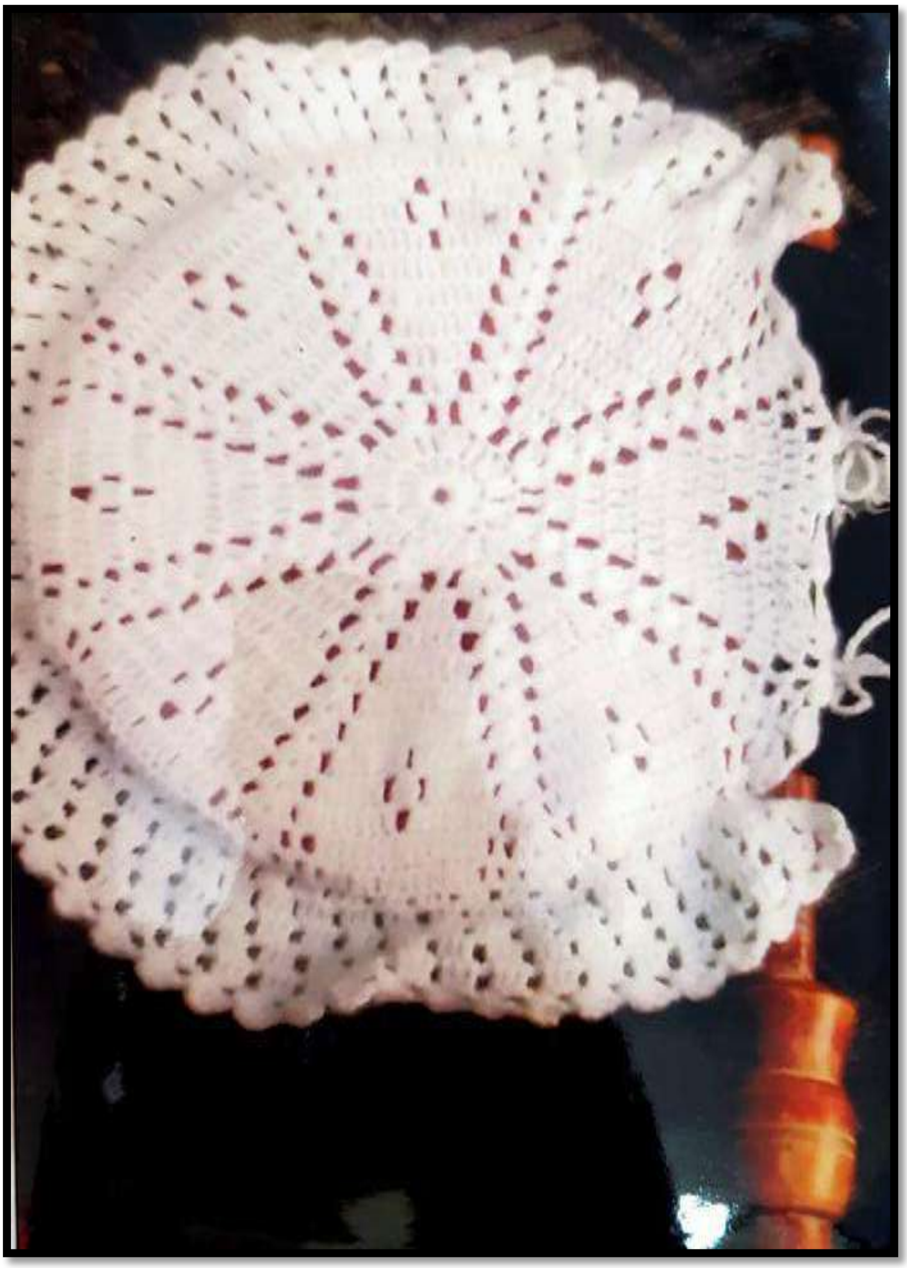

चित्र – 8 (करोशिया से बनी पंखी)

चित्र – 9 (फुलकारी वाली पंखी)

चित्र – 10 (तोते वाली पंखी)

चित्र – 11 (शेर वाली पंखी)

चित्र – 12 (सिपी वाली पंखी)

चित्र – 13 (चारकलियां वाली पंखी)

चित्र – 14 (तितली वाली पंखी)

चित्र – 15 (कपड़े वाली पंखी)

चित्र – 16 (चिड़ियों वाली दरी)

चित्र – 17 (गुलदस्ता दरी)

चित्र – 18 (मुर्गों वाली दरी)

चित्र – 19 (कप – केतली वाली दरी)

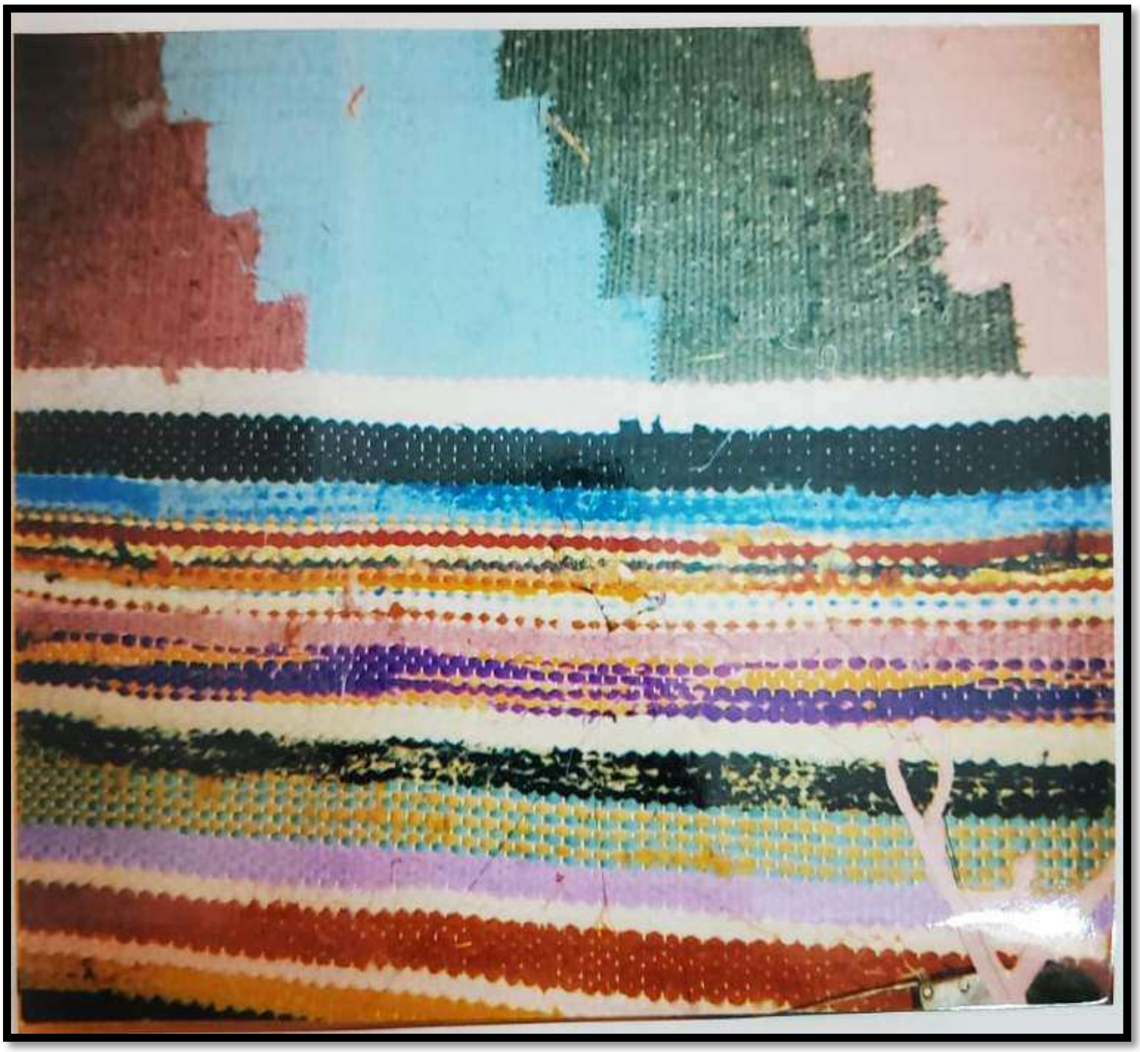

चित्र – 20 (कतरों वाली दरी)

चित्र – 21 (बाग दरी)

चित्र – 22 (जल मुर्गी वाली दरी)

चित्र – 23 (तोतों वाली दरी)

चित्र – 24 (कबूतर वाली दरी)

चित्र – 25 (पान पत्ते वाली दरी)

‘‘अखिलेश वर्मा और चित्रकला’’

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

विभागाध्यक्षा
श्रीमती संतोष
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय
शाहाबाद (मा0)

निर्देशिक
महेश धीमान

शोधकर्त्री
स्मृति
स्नातकोत्तर
(अन्तिम वर्ष)

Estd. 1968

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद (मारकण्ड़ा)

2023—2024

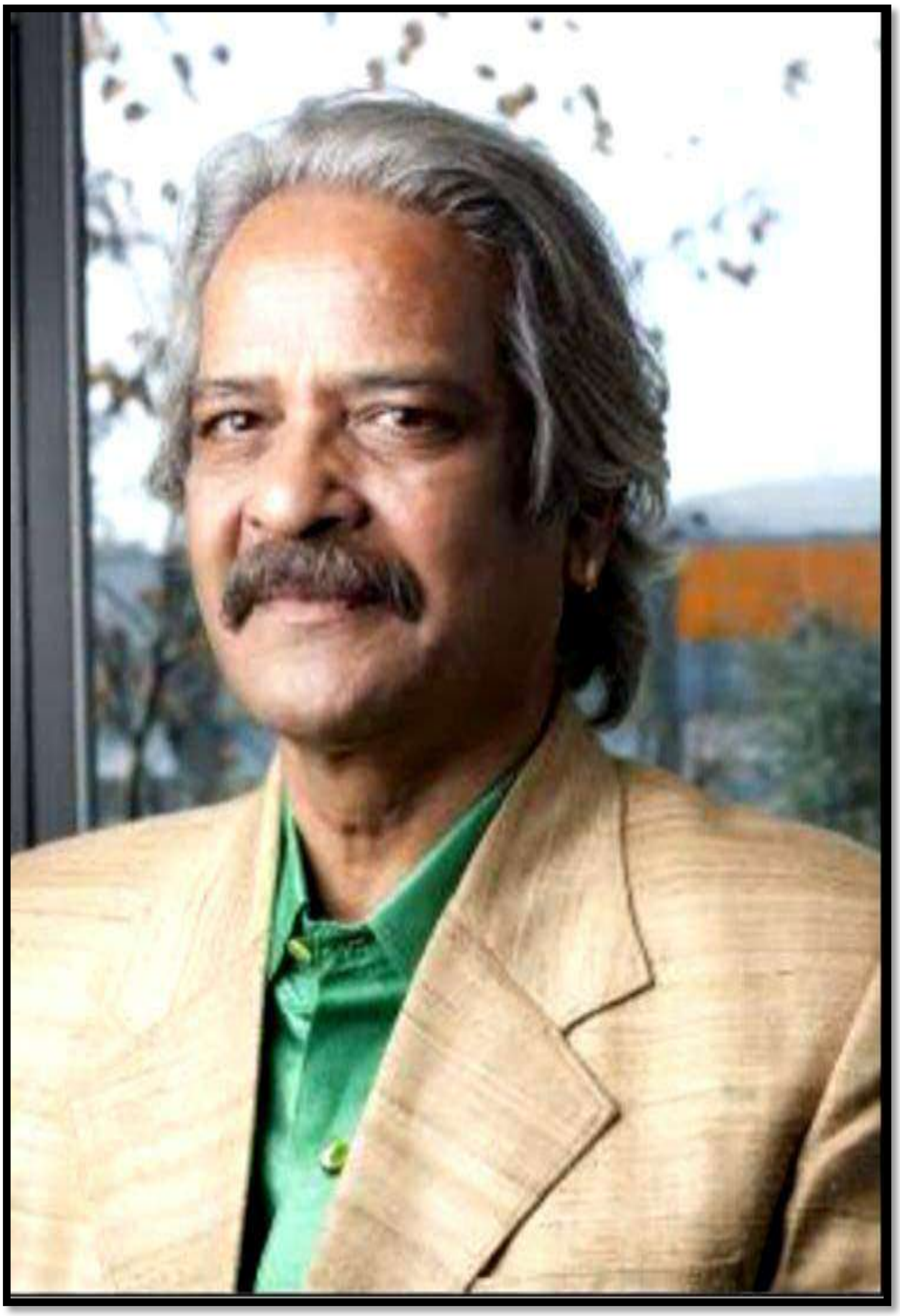

अखिलेश वर्मा जी

ललित कला विभाग,

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि स्मृति, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **''अखिलेश वर्मा और चित्रकला''** शीषर्क पर मेरे निर्देशन से प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इसने पूरी मेहनत और लग्न से उक्त शोध कार्य सम्पन्न किया है। इस महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य पहले नहीं किया गया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ।

मैं इसके उज्जवल भविष्य एंव सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांक :

एसो. प्रोफेसर

श्रीमती, संतोष

प्रमाण पत्र

मैं स्मृति, यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध **''अखिलेश वर्मा और चित्रकला''** विषय मेरे स्वंय के प्रयास से किया गया है। आर्य कन्या महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य नहीं किया गया है। मैंने इसे पूरी मेहनत और लग्न से सम्पन्न किया है। यह अप्रकाशित कृति है। जो सामग्री प्रयोग की गई है। उनको दिखाने का प्रयास किया गया है।

निर्देशिक **शोधकर्त्री**

महेश धीमान **स्मृति**

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0)

कुरूक्षेत्र।

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि स्मृति, अनुक्रमांक न0. 220156006, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **''अखिलेश वर्मा और चित्रकला''** शीषर्क पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ। इसने पूरी मेहनत और लग्न से यह लघु–शोध कार्य सम्पन्न किया है।

मैं इसके उज्जवल भष्यि एंव सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांकः

प्राचार्या

डॉ श्रीमती आरती त्रेहन

प्राक्कथन

कला का स्वरूप स्वतंत्र है। वह मानव को अपार आंनद से भर देती है। और कला का हमारे जीवन में महत्वपुर्ण योगदान है व चित्रकार मानव को एक ऐसी शान्ति से अवगत कराती है जो उसके लिए सुखमय होती है। उसमें ही अमूर्तन कला जो आत्मलिनता को दर्शाती है, उसी प्रकार अमूर्तन में उच्च उपाधि पाने वाले चित्रकार अखिलेश वर्मा पर है जो अपनी कला के लिए विश्वभर में प्रसिद्व है।

इस लघु शोध में अखिलेश वर्मा जी से मुझे संवाद करने का मौका मिला। इसके लिए में आभारी हूँ। मैंने इस लघुशोध का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है।

- प्रथम अध्याय में 'कला और आधुनिक कला का वर्णन' का वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

- द्वितीय अध्याय में 'अखिलेश जी का जीवन परिचय और शिक्षा, कला यात्रा, प्रदर्शनियाँ व पुरस्कारों' पर प्रकाश डाला है।

- तृतीय अध्याय में 'उनका महान तीन चित्रकारों से अनुभव।

- चतुर्थ अध्याय में 'अखिलेश जी का भारतीय कला में योगदान' के बारे में लिखा है।

- पंचम अध्याय में 'अखिलेश जी से साक्षात्कार' लिखा है।

अंत में उपसंहार, संदर्भ सूची, और चित्र संग्रह सूची को प्रस्तुत किया गया है। इसमें लघु शोध प्रबंध के माध्यम से स्थापित की गई मौलिक मान्यताओं को प्रतिपादित किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र को सावधानीपूर्वक प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है, तो भी कुछ अशुद्धियां रह जाना स्वभाविक है। आशा है कि विद्वान समीक्षक उन्हें अलक्ष्य करने की कृपा करें।

इस शोध पत्र में जो त्रुटियाँ रह गई हैं, उनके लिए मैं ही दोषी हूँ । अतः इसके लिए मैं विद्वानजनों से क्षमा प्रार्थी भी हूं।

स्मृति

शोधकर्त्री

आभार

मेरे इस लघु शोध कार्य को करने में जिन महानुभावों का सहयोग रहा है, उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरे इस शोध कार्य का उलेख संपूर्ण नहीं होगा। मैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझती हूँ, जिनकी प्रेरणा, सहयोग और प्रोत्साहन से में इस कार्य को साकार रूप दे पाई।

सर्वप्रथम में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्थित आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा, के ललित कला विभाग की अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती संतोष के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने पूरे शोध कार्य के दौरान मेरा मार्गदर्शन किया। मैं डॉ. राम विरंजन विभागाध्यक्ष, ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र की धन्यवादी हूँ कि इस विषय को सफलतापूर्वक चलाने में आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा की सहायता की।

मैं आदरणीय एस.प्रणाम सिंह जी का भी ह्रदय से आभार व्यक्त हूँ जिन्होंने अपना मूल्यवान समय निकालकर अपने विचार सांझा किए तथा शोध की निष्कर्ष राह दिखाई। इसके साथ–साथ में अपने परिवार जनों का भी ह्रदय की गहराइयों से आभार प्रकट करती हूँ क्योंकि उनके सहयोग के कारण ही मैं इस शोध कार्य को संपूर्ण करने में सक्षम हो पाई हूँ।

मैं अपने गुरू आदरणीय श्री महेश धीमान सर व आदरणीय सहायक श्रीमती अंजली धीमान मैडम के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने इस कार्य के दौरान मेरी शंकाओं और समस्याओं का निदान किया तथा निरंतर प्रोत्साहित करते रहे।

मैं अपने मित्रों तथा सहपाठियों की भी ह्रदय से आभारी हूँ।

अतः में, मैं पूर्व प्राचार्य महोदया आदरणीय डॉ. श्रीमति आरती त्रेहन का आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने ललित कला विषय में स्नात्तकोतर कक्षाएं प्रांरभ कर हमारे चिरलंबित स्वप्न को साकार करने का मौका प्रदान किया।

मैं सभी गुरुजनों के प्रति श्रद्धा भाव प्रस्तुत करती हूँ। इन्हीं की प्रेरणा व निर्देशन से यह शोध कार्य संपन्न हो सका। यदि इस लघु शोध प्रबंध में पाठक वर्ग का कुछ भी लाभ पहुंचा, तो मैं इसे अपना सफल प्रयास मानूंगी।

स्मृति

शोधकत्री

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन	पृष्ठ संख्या
आभार	
प्रथम अध्यायः परिचय	**01 – 18**
– कला का परिचय	
– आधुनिक चित्रकला	
द्वितीय अध्याय :	**19 – 37**
– अखिलेश वर्मा का जीवन परिचय	
– शिक्षा	
– कला यात्रा	
– प्रदर्शनियाँ व पुरस्कार	
तृतीय अध्यायः	**38 – 44**
– अनुभव	
चतुर्थ अध्यायः	**45 – 47**
– अखिलेश वर्मा का भारतीय कला में योगदान	
पंचम अध्याय :	**48 – 53**
– अखिलेश वर्मा के साथ संवाद	
– उपसंहार	**54 – 54**
– संदर्भ ग्रंथ सूची	**55 – 55**
– चित्र संग्रह सूची	**56 – 56**
– चित्र सूची	**57 – 85**

प्रथम अध्याय

- कला का परिचय
- आधुनिक चित्रकला

परिचय

कला :–

मनुष्य की उत्पत्ति 3.5 लाख वर्ष पूर्व पृथ्वी पर हुई और वह स्वयं को प्रकृति के अनुरूप बनाने में दिन, प्रतिदिन परिश्रम करता रहा। मानव ने शारीरिक विकास और मानसिक स्तर पर स्वयं को विकसित किया। मानव अपनी जरूरतों के अनुरूप संसाधनों को भी तरक्की की ओर अग्रसर करता रहा। मानसिक और शारीरिक विकास के साथ उसका भावात्मक विकास भी हुआ। उसके भीतर भिन्न प्रकार के भाव उत्पन्न होने लगे व उसने अपने विचारों को सर्वप्रथम चट्टानों पर व्यक्त किया। जो मानव की उस स्थिति को उजागर करते है, जो लाखों वर्ष पूर्व थी। भाव को शरीर द्वारा व्यक्त करना एक रस को परिभाषित करता है और सर्वप्रथम मानव ने अपने भावों को व्यक्त करने के लिए एक ऐसी क्रिया को जन्म दिया जो आज के युग में कला के नाम से जानी जाती है।

समय के साथ–साथ मनुष्य ने उसे क्रिया को एक सुंदर रूप देना आरंभ किया और शुरुआत में पत्थर की चट्टानों पर फिर उस रस को बनाए रखने के लिए घरेलू कामों में इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं और घर को सजाने हेतु कला का विकास किया। पुरातत्वों द्वारा खुदाई के दौरान मिली वस्तुएं कला और मानव के लाखों वर्ष पुराने संबंध को परिभाषित करती हैं। खुदाई के दौरान मिली मूर्तियां, बर्तनों और पुराने सिक्कों से यह पता चलता है कि कला का प्रभाव उस समय के लोगों पर किस भांति था।

विश्व की सबसे विशाल और पुरानी सभ्यताएं हड़प्पा, मिश्र, मेसोपोटामिया आदि उस समय की व्यापक कला पर प्रकाश डालते हैं और समाज के साथ–साथ कला भाव को एक दार्शनिक रूप दिया गया। विद्वानों ने कला भावों को गहराई से समझा और व्यक्त करने के तरीकों को दर्शन से जोड़ उसे एक नया अर्थ प्रदान किया।

➢ कला का अर्थ :–

कला शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है। इसके अतिरिक्त कला शब्द का प्रयोग सत्पथ ब्राह्मण साख्यापन ब्राह्मण, आरण्यक तथा अर्थवेदों में भी मिलता है। भारतीय इतिहास में कला शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 'भारतमुनि' ने अपने 'नाटयशास्त्र' में प्रथम शताब्दी में मिलता है। ''न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सविधा – न सा कला'' श्लोक का तात्पर्य है – ऐसा कोई ज्ञान नहीं जिसमें कोई शिल्प नहीं, कोई विद्या नहीं, जो कल न हो। कला संस्कृति भाषा से संबंधित शब्द है। इसकी उत्पत्ति 'कल्' धातु से मानी गई है, जिसका अर्थ है – प्रेरित करना।

▪ भारतीय चिकला एंव मूर्तिकला का इतिहास, डॉ. रीता प्रताप प0 सं. – 1

इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने इसकी उत्पत्ति 'क' धातु से मानी गई है – ––कं लाति इति कलम्' कं आनन्द लाति इति कला। इस प्रकार कला के अनेक अर्थ माने गए हैं।

कला का अर्थ – सुंदर, मधुर, कोमल और सुख देने वाली एवं शिल्प हुनर अथवा कौशल भी माना गया है। भारतीय विद्वानों ने कला दृष्टिकोण के साथ–साथ कला के संबंध में पश्चिमी दृष्टिकोण भी कुछ इसी प्रकार है। पश्चिम की विभिन्न भाषाओं में कला के लिए विभिन्न प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो आपस में समानता लिए हुए हैं। अंग्रेजी में कला को 'आर्ट' कहा जाता है। फ्रेंच में और लैटिन में 'आर्टम' और 'आर्स' कहा जाता है। 'अर' का अर्थ है – बनाना, पैदा करना या रचना करना। यह शारीरिक या मानसिक कौशल आर्ट माना जाता है। इन अर्थों के अंतर्गत कुछ सुखद, सुंदर एवं मधुर सृजन है। दूसरे शब्दों में 'सत्यम् शिवम् सुंदरम् की अभिव्यक्ति ही कला है।

➢ कला के प्रकार :–

सीधे रूप से परिभाषित किया जाए तो जिस वस्तु, रूप अथवा तत्व का निर्माण किया जाता है, उसी के नाम पर इस कला का प्रकार कहा गया है। जैसे– वास्तुकला या स्थापत्य कला – अर्थात भवन निर्माण कला जैसे – दुर्ग, प्रसाद, मंदिर, स्तूप, चैत्य, मकबरे आदि मूर्ति कला, चित्रकला, मुद्रकला प्रस्तकला, धातुकला, दंत कला, मृतिका कला इत्यादि।

➢ अवधारणाएं :–

पश्चिमी विद्वानों और भारतीय विद्वानों की कला के प्रति भिन्न–भिन्न अवधारणाएं रही हैं और वे कहीं पहलुओं से कला पर प्रकाश डालते हैं।

- 'प्लेटो' के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति सुंदर वस्तु को अपना प्रेमास्पद चुनता है। अतः कला का प्राण सौंदर्य है। उन्होंने कला को सत्य की अनुकृति माना है।
- 'अरस्तु' – उसे अनुकरण कहते हैं।
- 'हीगल' – ने कला को आदि भौतिक सत्ता को व्यक्त करने का माध्यम माना है।
- 'टॉलस्टॉय' – की दृष्टि में क्रिया, रेखा, रंग, ध्वनि, शब्द आदि के द्वारा भावों की वह अभिव्यक्ति जो श्रोता, दर्शन और पाठक के मन में भी वही भाव जागृत कर दे, कला है।

➢ भारतीय विद्वानों द्वारा :–

▪ भारतीय चिकला एंव मूर्तिकला का इतिहास, डॉ. रीता प्रताप प0 सं. – 6

- ❖ 'टैगोर' – के अनुसार, मनुष्य कला के माध्यम से अपने गंभीरतम अंतर की अभिव्यक्ति करता है।
- ❖ 'प्रसाद जी के अनुसार' – ईश्वर की कर्तव्य शक्ति का मानव द्वारा शारीरिक तथा मानसिक कौशल पूर्ण निर्माण कला है।
- ❖ 'डॉ श्याम सुंदर दास' – के अनुसार जिस गुण या कौशल के कारण किसी वस्तु में उपयोगी गुण और सुंदरता आ जाती है, उसे कला की संख्या दी जाती है।

➢ मानव और कला :–

विश्व के तीन युग प्राचीन युग, मध्य युग और आधुनिक युग में मानव इन अवधियों में मानव ने अनेक भाव रसों से कला को विकास की ओर अग्रसर किया। मनुष्य स्वयं को प्रसन्न करने के लिए अनेक सुख सुविधाओं पर आश्रित है। कला हर इंसान को भाति है चाहे वे दर्शक हो या कर्ता। कर्ता अपनी भावनाओं को करने से व्यक्त करता है और दर्शक केवल देखकर अपनी भावनाएं व्यक्त करता है। वह देखकर आनंदित होता है। इन दोनों प्रतिक्रियों में मानव को आनंद की अनुभूति होती है। उसका आनंद उसके निजी जीवन में उसकी मानसिक क्षमता को भी बल प्रदान करता हैं।

कुछ स्वयं पूर्व या आज के युग में मानव ने अपने दिनचर्या को बदला और रहन–सहन को भी बदला, लेकिन वह भाव जो कुछ युगों पहले थे, आज भी वही है। वह कुछ विचारों को लेकर आज भी चिंतित था और इससे पूर्व भी। आज के युग में भी चिंता अधिक है, कारण इच्छाएं अधिक हैं। इस वातावरण में वह हर युग में कला ने मनुष्य को सहारा दिया है। उसके मानसिक तनाव को कम करने और वर्तमान में रहकर एक लक्ष्य पर केंद्रित होकर इस संसार की चिताओं से दूर एकांत का रस प्रदान किया है।

प्राचीन काल के मंदिरों पर की गई करागिरी इसका परिणाम है कि उस समय मानव अपने कार्य शैली में कितना केंद्रित था और स्वयं के साथ भगवान, देवी–देवताओं को प्रसन्न करने की लालसा थी। मानव तनाव और चिंता को दूर करने के लिए अपना पसंदीदा कार्य करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन **WHO** द्वारा चलाए गए अभियान से प्रभावित विश्व भर के विश्वविद्यालय इस मुद्दे को उजागर करते हैं और रिसर्च में लगे हैं। इसमें ही एक मार्च नेटवर्क यूके रिसर्च एंड इनोवेशन द्वारा वित्त पोषित 8 नए राष्ट्रीय नेटवर्कों में से एक है, जिन्होंने दावा किया है कि कला आपकी मानसिक स्वास्थ्य के लिए किस प्रकार बेहतर साबित हो सकती है। उन्होंने अपने रिसर्च में कला में लीन रहने के फायदे का वर्णन किया है।

मूर्ति कला, चित्रकला, संगीत, नृत्य, समूह, थिएटर जैसी सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने पर मिलने वाली खुशी की भावना जिसके द्वारा कला से जुड़ने से स्वास्थ्य पर शक्तिशाली और स्थाई प्रभाव

पड़ सकता है। यह कई प्रकार की मानसिक बीमारियों से बचने में मदद कर सकता है। मानसिक अस्वस्थता को प्रबंधित करने में भी मदद करता है और सुधार में सहायता कर सकता है। कला की अनुभूति मात्र ही शरीर में व्यापक आनंद को उजागर करती है। सीधे शब्दों में कहा जाए कला वह होती है जो मनुष्य की इच्छा शक्ति अर्थात जो उसे पसंद है उसके मन को मोहित करता है, वही कला है, जो उसके मन को प्रभावित करती है और तनाव दूर करने में सहायक सिद्ध हुआ है।

➢ कला कौशल :–

शिल्प और क्राफ्ट के कार्य को 'कौशल' शब्द से संबंधित किया जाता है। जैसे– कला कौशल, वास्तव में कौशल का अर्थ होता है किसी काम को करने की प्रणाली या ढंग हर प्रकार की पूर्णता को प्राप्त करना जो कार्य कुशलता से चतुराई पूर्ण किया जाए वही कौशल कहलाता है। अंग्रेजी भाषा में कौशल के स्थान पर 'टेकनीक' शब्द का प्रयोग किया है। जीवन के आसान से आसान कार्य को रचना या निर्माण और आज के युग में विज्ञापन का काम ही इन कार्यों में कौशल की अधिक आवश्यकता होती है। विभिन्न कलाओं, ललित कलाओं, शिल्प एवं क्राफ्ट अथवा प्रयोग में कला कौशल की जरूरत होती है। कार्य को उचित प्रकार से करने की प्रणाली को तकनीक कहा जाता है और इसी को कौशल भी माना जाता है।

ललित कला का क्षेत्र बहुत व्यापक है और उसी प्रकार कलाओं की संख्या भी सीमित नहीं है। कला का संबंध मनुष्य की प्रत्येक क्रियाओं से है। ललित कला क्रियओं का विशेष वर्ग है, इसमें विशेषतर छः कलाएं शामिल है –

1 चित्रकला।

2 मूर्तिकला ।

3 वास्तु कला ।

4 संगीत कला ।

5 काव्य कला ।

6 नृत्य कला ।

ललित कलाओं में केवल उन कलाओं को ही महत्व दिया जाता है जिनके द्वारा किसी जीवन उपयोगी सामग्री अथवा वस्तु का निर्माण नहीं किया जाता है। ललित कलाओं का एकमात्र उद्देश्य केवल मानसिक या आत्मिक आनंद प्रदान करना ही है। उदाहरण के लिए जब हम किसी चित्र, मूर्ति, भवन तथा नृत्य को देखकर अथवा काव्य ग्रंथ को पढ़कर या किसी भी प्रकार के संगीत को सुनकर केवल मानसिक आनंद प्राप्त करते हैं या आत्मा की संतुष्टि को प्राप्त करते हैं, परंतु उनसे हमें किसी प्रकार

का कोई शारीरिक सुख अथवा जीवन उपयोगी नहीं होता अर्थात भौतिक सुख प्रदान नहीं करते। ललित कलाएं जीवन उपयोगी उत्पादन या भौतिक सुख प्रदान नहीं करती हैं। यह हमको सूक्ष्म आनंद व मानसिक या भावनात्मक तथा आध्यात्मिक सुख प्रदान करती हैं। परंतु उपयोगी कलाएं पदार्थ रूप में भौतिक आनंद या सुख सुविधा प्रदान करती हैं।

ललित कलाएं हमारे पांच ज्ञानेंद्रिय को प्रभावित करके हमको ऐच्छिक आनंद प्रदान करती हैं। मानव अपने जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति होने से भी सुख प्राप्त करता है, परंतु हमको आनंद उन्हीं कलाओं से मिलता है जिन कृतियों से श्रवण तथा दर्शन से मानव मन आत्म विभोर होकर कुछ समय के लिए इस जगत को भूल जाता है और अलौकिक जगत के आनंद को प्राप्त करता है।

ललित कलाओं में किसी भौतिक सुख सामग्री की प्राप्ति नहीं होती है और फिर भी इन कलाओं से मन को अपार आनंद मिलता है और मानव अपने व्यक्तिगत जीवन के संकट विषाद को भूलकर एक आनंद में यात्रा में लग जाता है। मनुष्य जब हिमाच्छदित पर्वत की चोटियों पर प्रातः कालीन सूर्य की स्वर्णित किरणों की अनुपम छटा देखा है, या सरिता, झील अथवा सागर तट पर सूर्योदय अथवा सूर्यास्त की रंग–बिरंगी प्रतिछाया देखा है तो उसका हृदय आनंद से आत्मविभोर होता है और एक अनोखे आनंद की अनुभूति करता है।

परंतु इस सूर्योदय अथवा सूर्यास्त की वर्णमयी प्रतिछाया से उसके जीवन की कोई स्थूल अथवा भौतिक आवश्यकता पूर्ण नहीं होती। नगरों तथा महानगरों की भीड़–भाड़ हलचल तथा कार्य की विशेषता से थके ऐसे अनेक मानव हैं जिन्होंने कभी प्रातः कालीन सूर्य की स्वर्णित किरणें की अनुपम छटा देखा है, या सरिता, झील अथवा सागर तट पर सूर्योदय अथवा सूर्यास्त की रंग–बिरंगी प्रतिछाया देखता है तो उसका हृदय आनंद से आत्मविभोर होता है। कला की यही अनूठी विशेषता है, आत्मलीनता।

आधुनिक चित्रकला

आधुनिक चित्रकला के इतिहास को प्रभाववाद से आरंभ करने का मुख्य कारण सर्वप्रथम प्रभाववाद में आधुनिक चित्रकला की कुछ विशेषताएं मिलती हैं और आधुनिक चित्रकला से प्रभाववाद का मुख्य स्थान है। कला के क्षेत्र में विरोधी शक्तियों का निष्ठा से सामना करने का साहस सर्वप्रथम प्रभाववाद के कलाकारों ने ही किया था। प्रभाववाद के साथ कलाकारों ने कला के प्रति दृष्टिकोण को बदला और स्वतंत्र रूप से विचार कर निजी कला को निर्धारित कर कलाकारों के अधिकारों को सर्वोच्च रखा। वे अब कला को समाज सेवा का साधन मानने की बजाय कला को आत्मिक अभिव्यक्ति का माध्यम स्वीकारा। उनके लिए वैयकितक अनुभूति ही कलाकृति के कलात्मक गुण बन गए। कला के संबंध में कलाकारों में आपसी वाद–विवाद भी होने लगे। समाज के विपरीत होकर कलाकारों ने अपनी अलग दुनिया बसाई। जिसका कला के लिए 'कला ध्येय' बन गया।

प्रभाववाद के अध्ययन से पहले यदि हम उसके पहले की शताब्दी की कला का निरीक्षण करते हैं तो प्रभाववाद की उत्पत्ति के समय उसका वातावरण उसकी स्थिति को उजागर करता है कि किस स्थिति ने उसे उत्पन्न किया। पूर्वीगामी कलाओं के परिशीलन से अध्ययन के लिए तुलनात्मक दृष्टिकोण का होना आवश्यक है जिससे प्रभाववाद में कौन से नवीन तत्व थे, यह समझना सरल होगा। 18वीं शताब्दी के मध्य तक फ्रांस में किसी राष्ट्रीय महत्व की कला का निर्माण नहीं हुआ था। 1516 ईस्वी में फ्रांस के शासक फ्रानियस प्रथम ने लियोनार्दो द विंची नाम के एक विख्यात इटालियन कलाकार को अपने दरबार में स्थान दिया था। उसे समय फ्रांस में इटालियन, डच व फलेमिश चित्रों की बहुत अधिक मांग होती थी। जॉर्ज द ला तूर, लोरें, पुॅस व लूई ने को छोड़ फ्रांस में कोई विश्व विख्यात चित्रकार नहीं हुए थे। इनमें से लोरें और पुॅस ने इटली को अपना निवासस्थान बना लिया। जॉर्ज द ला तूर ने ईसा मसीह के जीवन की घटनाओं को छाया प्रकाश का सफल प्रभाव दिखाते हुए बड़ी कुशलता चित्रित किया, जो मानव शरीर चित्रण एवं नैसर्गिकतावादी चित्रण के उच्चकोटि उदाहरण हैं।

पुॅस को हम मौलिक प्रतिभा के कलाकार नहीं मान सकते, किंतु उन्होंने पुनर्जागरण – कालीन इटालियन कला का गहरा अध्ययन कर शास्त्रशुद्ध शैली का पूर्ण विकास किया। उस शैली ने आधुनिक चित्रकला के जन्मदाता सेजान को यहां तक प्रभावित किया कि वे पुॅस को अपने प्रेरणास्थान मानते थे। लोरें कोई विशेष प्रतिभा के चित्रकार नहीं थे, किंतु उन्होंने कला में प्रति चित्रण को स्वतंत्र महत्व का स्थान प्राप्त कराया। उन्होंने सिद्ध किया कि मानवजीवन रहित भी प्रकितक दृश्य भी प्रभावित चित्रण के लिए उपयुक्त विषय हो सकते हैं। फिर भी उनके चित्रों में छोटी मनुष्य कृतियों का भी समावेश देखने को मिलता है।

▪ आधुनिक चित्रकला का इतिहास, रवि साखलकर, प0 सं. – 7

18 वीं सदी के प्रारंभ में फ्रांस की दरबारी कला में एक नई शैली ने जन्म लिया। इस शैली में समकालीन व्यापिक वास्तुकला का स्पष्ट प्रभाव था व यह शैली रॉर्कोको नाम से प्रसिद्ध हुई। इस शैली के कलाकारों में वातो, बुशे, फ्रागोनार व विजी लब्युं प्रसिद्ध हैं। सामर्थशाली अंकन – पद्धति के बावजूद नाटकीय अभिनय, काल्पनिक वातावरण व भावनाओं के विचार से, उनके चित्र बड़े अस्वाभाविक से दिखाई देते हैं। समकालीन धनिक वर्ग व प्रतिष्ठित समाज की कल्पनामय जीवन के प्रति रुचि बढ़ जाने के कारण रॉकॉको शैली के चित्रों की मांग थी व इस शैली को बहुत प्रोत्साहन मिला। 'रॉकोको शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच शब्द 'रॉकॉय' से हुई थी जिसका अर्थ है सीप, सीप के ऊपर जिस प्रकार की गतिमान वर्क रेखाएं होती हैं, उसी प्रकार की रेखाओं को रॉकॉको शैली में प्राधान्य दिया जाता था।

व ऐसी रेखाओं से बृद्ध आकारों की इस शैली में भर–मार होती थी, अर्थात सर्वसाधारण जनजीवन के यथार्थ चित्रण का उसमें नाम ही नहीं था। इस शैली के चित्रों में अधिकतर नायक–नायिकाओं के सदृश, काल्पनिक और स्वर्ग समान वातावरण के चित्र बनाए गए। राजाओं व दरबारी लोगों के व्यक्ति चित्र भी इसमें शामिल थे एवं ग्रीक व रोमन पुराणों से लिए गए थे, देवता परियां व अन्य अतिमानवीय शक्तियों पर आधारित चित्र हुआ करते थे। कलाकार शार्दं को छोड़ 18वीं सदी के मध्य तक फ्रेंच कला दरबार तक ही सीमित रही थी।

➢ नवशास्त्रीयतावाद :–

18वीं सदी में फ्रांस राज्य शासन–पद्धति में बहुत उथल–पुथल होने लगी। सर्व साधारण जनता में जागृति हुई व बदलते हुए वातावरण के साथ कला में भी व्यापिक परिवर्तन होते गये। 15वें लूई के शासनकाल में कला व साजसज्जा में ग्रीक मूर्तियों को बड़ा महत्व प्राप्त हुआ। फ्रेंच प्रतिष्ठित समाज में ग्रीक मूर्तियों के प्रति अभिरुचि बढ़ाने का कार्य लूई की की प्रेयसी मादाम पापम्पादूर के वास्तुकार भाई ने किया था। उस समय इटली में उत्खन्न हो रहे थे, जिनमें प्राचीन ग्रीक वास्तुकला व मूर्तिकला की रोमन प्रतिकृतियां प्रचुर मात्रा में प्राप्त हो रही थी। कला प्रेमियों का ध्यान उनकी और आकर्षित होना लाजिमी था। 1738 में हकर्यूलियन व 1755 में पॉम्पेई के उत्खन्न हुआ व प्रसिद्ध जर्मन विद्वान विवेकमान ने ग्रीक मूर्ति कला की प्रशंसा की व बहुत से लेख भी प्रकाशित किये।

हमेशा नवीनता के पीछे भागने वाले समाज को प्रचलन का विषय मिल गया था। परिणामस्वरुप समकालीन फ्रेंच कला पर ग्रीक कला का प्रभाव पड़ा व उसको एक नई दिशा में मोड मिला। चित्रकला में ग्रीक कला को आदर्श रूप में सम्मुख रखकर नई चित्रकला शैली को जन्म देने का कार्य प्रसिद्ध फ्रेंच चित्रकार जाक दाविद ने किया। यह शैली नवशास्त्रीयतावाद नाम से प्रसिद्ध हुई। नावशास्त्रीयवाद ने आदर्श मानव शरीर सौंदर्य की ग्रीक कल्पना को पुरज्जीवित किया। इस शैली के अधिकतर चित्रों के

▪ आधुनिक चित्रकला का इतिहास, रवि साखलकर, प0 सं. – 9

विषय ग्रीक पुराणों या रोमन कथाओं से लिए गए हैं एवं उस काल की पृष्ठभूमि पर अंकित किए गए हैं। अध्ययन पूर्ण बाह्यरीय रेखा से आकारों को आदर्श व स्पष्ट रूप दिया है। इस शैली के सबसे प्रसिद्ध चित्रकार जाक दाविद थे।

➢ रोमांसवाद :–

नवशास्त्रीयतावाद का प्रमुख दोष था तर्क कठोरता, उसमें मानवता व समाज के यथार्थ रूप को कोई स्थान नहीं था। समाज में वैचारिक जागृति बढ़ती जा रही थी व कलाकारों के लिए आवश्यक था कि वह बदलते हुए सामाजिक एवं राजनीतिक वातावरण के अनुकूल दृष्टिकोण अपनाएं। दाविद कहते थे – "कला का आधार तर्क होना चाहिए"। किंतु शायद वे इस फ्रेंच कहावत को भूल गए थे कि – 'दिल के भी कुछ अपने तर्क होते हैं जिनका तर्क शास्त्र द्वारा ज्ञान नहीं हो सकता'। इसमें कोई संदेह नहीं है की कलाकृति को समर्थ्यवान रूप व अभिव्यक्ति प्रदान करने का एक साधन तर्क है, किंतु कलाकृति का जन्म भावना में होता है व भावनाओं से ही कलाकृति में चैतन्य आता है। महान कलाकृति के सृजन में भावना व बुद्धि दोनों का सहयोग आवश्यक है। अतः दाविद के शिष्यों की नवशास्त्रीयतावाद पर विशेष निष्ठा नहीं रही, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

18वीं सदी के फ्रेंच समाज में नवशास्त्रीयतावाद लोकप्रिय होने का मुख्य कारण था – समकालीन फ्रेंच समाज का सामाजिक, राजनीतिक व व्यक्तित्व जीवन के प्रति परंपरागत तार्किक दृष्टिकोण। किंतु 18वीं सदी के मध्य में एक महान दार्शनिक ने फ्रांस में अपने क्रांतिकारी विचारों का प्रसार आरंभ किया जिससे परंपरागत दृष्टिकोण को धक्का पहुंचा। ये दार्शनिक थे, ज्या जाक रूसो, उनके विचार से मानव वे जन्मतः कोई बुराइयां नहीं होती व संसार में सुख व शांति की प्रस्थापना के लिए आवश्यक है कि मानव जीवन का विकास स्वाआविकता से हो – परंपरागत विचारों व आदर्शों को सामने रखने से नैसार्गिक प्रकृतियों पर दबाव आकार मानव के सृजनशील व्यक्तित्व का विकास नहीं होता।

परंपरागत विचारों पर अंधश्रद्धा होने से संघर्ष बढ़ता है व अशांति का वातावरण फैलता है। कला क्षेत्र में परंपरागत आदर्शों को ठुकरा कर नैसर्गिक भावनाओं द्वारा कला निर्मित करने का कार्य रोमांसवादी कलाकारों ने शुरू किया जो रूसो के उपायुक्त सिद्धांतों के अनुरूप था। इस वाद के प्रमुख चित्रकार तेओदोर जेरिको, ओजेन देलाका, अँग्र, फ्रान्सिस्को गोया एल्ग्रेको है।

➢ यथार्थवाद :–

नवशास्त्रीयतावाद फिर रोमांसवाद कला दोनों की पौराणिक कहानियों व राज दरबार तक ही सीमित थी। इसके पश्चात कलाकारों ने कला के प्रति अपना नजरिया बदला व कलाकारों विषयों के लिए

▪ आधुनिक चित्रकला का इतिहास, रवि साखलकर, प0 सं. – 22

दरबार और कहानियों को न चुनकर जनसाधारण को अपना विषय बनाया। अब चित्रकार जीवन का यथार्थ चित्रण करने लगे थे, जो आगे चलकर यथार्थवाद कहलाया। यथार्थवाद का संबंध इतिहास की कहानियों से नहीं था, इसका उद्देश्य केवल वर्तमान की स्थिति को प्रस्तुत करना था। यथार्थवाद के चित्र आम लोगों की जीवन शैली पर आधारित थे। ये चित्र किसान, मजदूर, घरेलू महिलाएं आदि के जीवन को प्रकाशित करते थे। इस चित्र के प्रसिद्ध चित्रकार थे – कर्बु, बार्बिजां, रूसो तेओदोर, दोबिन्यी, मिले, कोरो।

- **प्रभाववाद :–**

आधुनिक कला व प्राचीन काल में यह एक महत्वपूर्ण अंतर है कि प्राचीन कलाकार अपनी कला के ध्येय के निर्माण के लिए धर्माधिकारियों, राजाओं व सामाजिक आवश्यकताओं पर निर्भर रहते थे, जबकि आधुनिक कलाकारों ने अपनी कला के ध्येय को निश्चित करने का अधिकार स्वयं के हाथों में लिया। चित्रकला में जिस समय प्रभाववाद का उदय हो रहा था, समकालीन साहित्य प्रभाववाद की ओर विकासशील था। दोनों ने विषय के महत्व को ठुकराया दिया था। चित्रकला में चित्रकार किसी भी साधारण दृश्य जैसे कि कोने में अस्तव्यस्त पड़ी वस्तुएं स्वाभाविक अवस्था में बैठा हुआ आदमी आदि को लेकर चित्रण करते थे। जिसमें छाया प्रकाश के स्थान पर रंगों का प्रयोग करके, गोलाई एवं स्थूलत्व का एहसास कराया गया, उसे परंपरावादी समीक्षकों ने प्रभाववाद कहा। इसके प्रसिद्ध कलाकार – मोने, पिसारो, सिसली, देगा, रेन्वार स्लेवोट, कोरिंट, प्रेन्डरग्रास्ट।

- **नवप्रभाववाद :–**

नव – इंप्रेशनवाद एक शब्द है जिसे 1886 में फ्रांसीसी कला आलोचक फेलेकस फेनेन ने जॉर्ज सेराट द्वारा स्थापित कर एक कला आंदोलन का वर्णन करने के लिए बनाया था। सीरेट की सबसे बड़ी कृति, ला ग्रांडे जाटे के द्वीप पर एक रविवार दोपहर, इस आंदोलन की शुरुआत को चिन्हित करती है। इस समय फ्रांस के आधुनिक युग की चोटी उभरी और कई चित्रकार नई विधियों की खोज में थे। इसके अतिरिक्त वैयक्तिक भावनाओं या स्वतंत्र कल्पना से कलानिर्मित करने को प्रभाववाद में स्थान नहीं था, जिससे मौलिक सर्जन के आनंद से कलाकार वंचित रह जाता। प्रभाववाद की इन त्रुटियों को देखकर जिन चित्रकारों ने नयी दिशा में प्रयोग किये उनमें जॉर्ज सोरा थे और उन्होंने जिस शैली को जन्म दिया वह 'नवप्रभाववाद' नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके प्रसिद्ध चित्रकार थे – सोरा, सिन्याक।

- **उत्तरप्रभववाद :–**

- आधुनिक चित्रकला का इतिहास, रवि साखलकर, प0 सं. – 42

1880 के दशक के उत्तरार्ध में, फ्रांस में युवा चित्रकारों के एक समूह ने प्रभाववाद के विशिष्ट रंग और प्रकाश को चिन्हित करने के लिए प्राकृतिवादी दृष्टिकोण से मुक्त होने का प्रयास किया और केवल दृश्य छापों के बजाय भावनाओं को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र कलात्मक शैलियों की खोज शुरू की और प्रतीकवाद पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। इन कलाकारों में जॉर्जस सेरात, विंसेंट वान गाग, पॉल गउगिन और पॉल से जेन शामिल थे। इस कला आंदोलन को उत्तर – प्रभाववाद के नाम से जाना गया।

उत्तर – प्रभाववाद ने प्रभाववाद के कुछ दृष्टिकोण का विस्तार किया जैसे की ज्वलंत रंगों का प्रयोग, कभी–कभी इंपैस्टो नामक पेंट के गाढ़े अनुप्रयोग का उपयोग करना, कलाकारों ने ज्यामितीय या विकृत रूपों का चयन करने प्रभाववाद की सीमाओं को अस्वीकार करना शुरू कर दिया, जिसके लिए उन्होंने मजबूत भावनात्मक अर्थ को जिम्मेदार ठहराया। उत्तर–प्रभावादियों का रुझान भी प्रतीकवाद और अमूर्तता की ओर अधिक था। इस शैली के कलाकार – सेजान, वान गो, गोग्वं थे।

➢ प्रतीकवाद :–

1886 में प्रकाशित पत्रिका में फ्रेंच लेखक मोरेआ ने घोषित किया कि समकालीन सर्जनात्मक प्रवृत्तियों को साहित्य व कला द्वारा व्यक्त करने का प्रतीकवाद एकमेव साधन है। 1891 में आल्बेर ओरिय ने 'चित्रकला में प्रतीकवाद' शीर्षक के लेख में प्रतीकवाद के महत्व का स्पष्टीकरण किया और गोग्वं को प्रतीकवादी चित्रकला के अग्रदूत का स्थान अर्पण किया। प्रतीकवाद का मुख्य सिद्धांत था 'चित्रकार की कल्पना को साकार करना'। यथार्थ दृश्य अनुभूति को स्वप्नदृश्य रूपांतरित करना, प्राचीन, आदिम एवं अप्रसिद्ध शैलियों में प्रचलित उपयुक्त प्रतीकात्मक संकेतों का अपनी कलाकृतियों में प्रयोग करना, वगैरह तरीकों से प्रतीकवादी चित्रकार अपनी अभिव्यक्ति को प्रणामकारक बनाते थे। प्रतीकवादी चित्रकला के आधारभूत तत्व थे कल्पना, संश्लेषण, प्रतीकात्मकता, आत्मनिष्ठा व अलंकारित्व थे। इस वाद के प्रसिद्ध चित्रकार थे – रेदों, देनी, बोन्नार, वीयार।

➢ फाववाद :–

19वीं शताब्दी के अंत के करीब वान गो गोग्वं व सेजान की जो प्रदर्शनियां हुई उसमें फाव चित्रकारों को काफी प्रेरणा मिली। 'सलो दोतान' व 'सलों द अदेपांदा' संस्थाओं से उनको प्रोत्साहन व विकास क्षेत्र प्राप्त हुआ। मॉरिस देनी ने फाववाद की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है – "यह ऐसा चित्रण है जिसका कोई बाह्य लक्ष्य नहीं है। यह केवल विशुद्ध चित्रण है।" इन कलाकृतियों में कोई व्यक्तिगत विचार, दर्शन या कथन नहीं है। ये चित्रकार विशुद्ध निरपेक्ष की खोज में है। किंतु इस विशुद्ध

▪ आधुनिक चित्रकला का इतिहास, रवि साखलकर, प0 सं. – 117, 126

खोज की एक मर्यादा है जो सापेक्ष है, वह है व्यक्तिगत भावना, फाव चित्रकारों के चित्रों के विषय अधिकतर समुद्र किनारों, सार्वजनिक स्थानों, समारोहों व पर्यटनस्थलों के दृश्य थे। जिनमें उनको चमकीले रंगों का प्रयोग व गति पूर्ण चित्रण करने का मौका मिला। इसके लिए प्रमुख कलाकार थे– मातिस, व्लामकँ, देरें, द्युफि, रूओ मार्क्वे, वान डोंजेन।

➢ धनवाद :–

अंग्रेजी कला इतिहासकार डगलस कपूर ने अपनी मौलिक पुस्तक 'द क्युबिस्ट ईपक' में क्यूबिज्म के तीन चरणों का वर्णन किया है। कपूर के अनुसार 'प्रारंभिक कयूबिज्म' 1906–08 तक था, जब शुरुआत में पिकासो और बराक के स्टूडियो में आंदोलन विकसित किया गया था। दूसरे चरण को उच्च कयूबिन्म 1909–14 तक कहा जाता है, जिस दौरान जुआन ग्रिस महत्वपूर्ण प्रतिपादक के रूप में उभरे और आखिर में कपूर ने "अंतिम कयूबिन्म" 1914–21 तक को कट्टरपंथी नव–विचारक कला आंदोलन का आखिरी चरण कहा गया।

धनवाद 20वीं शताब्दी का एक नव–विचारक कला आंदोलन था जिसका नेतृत्व पाब्लो पिकासो और जॉर्ज बराक ने किया था। जो यूरोपीय चित्रकला और मूर्ति कला में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया और जिसने संगीत एवं साहित्य को भी संबंधित आंदोलन के लिए प्रेरित किया। 1907 में धनवाद का उदय हुआ, 1914 तक विभिन्न अवस्थाओं को पार करते हुए वह विकसित हुआ। उसको बहुत अनुयायी मिले और 1925 तक उसने कला क्षेत्र में सबसे सामर्थ्यशाली एवं प्रेरणादायक कला शैली के रूप में कार्य किया। वस्तुकला, उद्योग कला, विज्ञापन, शिल्प, हस्तकला अलंकरण आदि सभी मानवीय निर्माण क्षेत्रों पर उसने जो प्रभाव छोड़ा वह अब तक दृढ़मूल है। इसके प्रमुख कलाकार – ह्रान ग्रीस, लेजे, ब्राक, पिकासो।

➢ अभिव्यंजनवाद :–

कलाकार जब बाह्रा रूप की अपेक्षा करके विषयवस्तु के प्रति निजी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से कलानिर्मित करता है तब ऐसी कला को अभिव्यंजनवादी कला कहते हैं। 20वीं शताब्दी में अभिव्यंजना वादी कला का उत्थान जर्मनी में हुआ और उसकी तुलना गोथिक कला की गूढ़ भावनात्मकता से की जा सकती है। अभिव्यंजनावादी में कलाकार मानवीय शरीर एवं वस्तु के नैसर्गिक रूप को अपनी भावनाओं के अनुकूल विकृत या ऐंठनदार रूप में बनाते हैं, रंग संगती में आकषर्कता का विचार नहीं होता एवं प्रायः भावनाओं के पोषक गहरे एवं विरोधी रंगों का प्रयोग होता है। अभिव्यंजनावादी कला की आंतरिक व्याकुलता व गूढ़ आत्मिक अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से भिन्न है यद्यपि

▪ आधुनिक चित्रकला का इतिहास, रवि साखलकर, प0 सं. – 166

अभिव्यंजनवाद के विकास में फपवाद व धनवाद बहुत प्रेरणादायक रहे थे। प्रसिद्ध कलाकार – होडलर, मुंख, एन्सोर मोडर सोन, बेकेर, नोल्डे, रोल्फस, किर्शनेर ब्रयूके, हेकेल, शिमट रीटलूफ, पेश्टाइन, मुएलेर ब्लौ राइटेर, मार्क, माके, कले आदि।

➢ दादावाद :–

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात मानव समाज में निराशा व कटुता का वातावरण फैल गया था। इन परिस्थितियों में कलाकार स्विट्जरलैंड के शहर ज्युरिख में इकट्ठा हुए और यहां पर चित्रकारों द्वारा दादावाद नामक कला संगठन स्थापित किया गया। दादावदियों के अनुसार धर्मनीति व सामाजिक मूल्यों पर कोई विश्वास नहीं हुआ था। ये मानव समाज को अर्थहीन मानते थे। यह वाद किसी नये कला संबंधी सिद्धांत को स्थापित करने के उद्देश्य से नहीं स्थापित किया गया था। इसका उद्देश्य कला के पुराने नियमों को नष्ट करना था। दादावादी कला एवं दर्शन के प्रति अराजक विचार रखते थे। इसलिए कुछ कला समीक्षकों ने इसे 'कला का दुश्मन' कहा था। इसके कलाकार – पिकाबिया, द्युशां, अतियथार्थवाद, डाली, माकस एन्सर्ट, तांग्वी ईव, मास्सों होन मीरो थे।

▪ आधुनिक चित्रकला का इतिहास, रवि साखलकर, प0 सं. – 226

भारतीय आधुनिक कला

1940 ई0. के दशक में भारतीय कला जगत में बंगाल शैली की पारंपरिक रूढ़िवादिता का विरोध होने लगा और बंगाल शैली उबाऊ होने लगी। कलाकारों के नए समूहों ने मिलकर पश्चात्यशैली तथा नव विचारों से प्रभावित होकर स्वतंत्र रूप में नए–नए माध्यमों एवं शैली को विकसित किया। जिससे कला संगठनों एवं शैली को विकसित किया, जिससे कला संगठनों का गठन हुआ। जिसमें मुख्य हैं – कोलकाता कला समूह, मुंबई प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप समूह, दिल्ली शिल्पी चक्र।

➢ कलकत्ता कला समूह :–

इसकी स्थापना सन 1943 में प्रदोष दास गुप्त एवं निरोद मजूमदार ने की। प्रदोष दास गुप्ता ने ब्रिटेन से मूर्ति कला सीखी थी। अतः उन्होंने पाश्चात्य शैली का मिश्रण कर अपनी नव शैली विकसित की एवं भारत में आकर कलकता कला की स्थापना की। मुख्य कलाकार – इस समूह के अन्य सदस्य कलाकारों में निरोद मजूमदार, परितोष सेन, गोपाल घोष, हेमंत मिश्रा, प्राणनाथ, कृष्णपाल, सुनील माधव सेन इत्यादि थे।

- उद्देश्य :–

इस समूह की स्थापना का उद्देश्य कला के प्रति पुराने विश्वासों, धारणाओं, अभिव्यक्ति के माध्यम को जड़ से उखाड़ना तथा नए रूपाकारों, नवीन प्रयोगों से नई कला को आरंभ करना रहा। इससे भारत में कला के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय विचारों को विकसित किया गया। इस कला समूह के कलाकारों पर आरंभ में पिकासो, ब्राक, मातिस, हेनरी मूर आदि पाश्चात्य कलाकारों का प्रभाव रहा। परंतु धीरे–धीरे कलाकारों ने नव प्रयोग के द्वारा निजी शैलियों का विकास कर लिया। कोलकाता ने 1943, 1944, 1945, 1947 व 1953 में कल प्रदर्शनिया की जिन्हें बहुत सराहा गया।

➢ प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप :–

इसकी स्थापना 1947 ईस्वी में सूजा, रजा, हुसैन बाकरे, गाडे ने मुंबई में की। इस ग्रुप को पेग के नाम से जाना जाता है।

- उद्देश्य :–

प्राचीन कला परंपराओं, नियमों के बंधनों से मुक्त कर कला के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों को अपनाना रहा था। इस समूह के कलाकारों ने अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए पत्र पत्रिकाओं में लेख की लेख भी छपवाए। 1949ई0. में इस समय की पहली प्रदर्शनी हुई एवं कई विदेशी समीक्षकों एवं संग्राहकों ने उनकी कलाकृतियों खरीदी। जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हुई।

इस ग्रुप के कलाकारों ने मुख्य रूप से ज्यामितीय आकारों, तेज रंगों से विविध, सामाजिक विषय, घटनाओं को चित्रित किया। मुख्य रूप से यह चित्रकार पाश्चात्य धनवादी कलाकारों पिकासो, मातिस से प्रभावित थे। 1953 ई के बाद सभी कलाकार अपनी–अपनी निजी शैली में कार्य करने लगे एवं समूह की सामूहिक गतिविधियां कम हो गई।

- दिल्ली शिल्पीचक्र :–

25 मार्च 1949 को दिल्ली शिल्पीचक्र की स्थापना हुई। इस ग्रुप का आदर्श वाक्य रहा – ''कला जीवन को प्रदीप्त करती है''।

इसके मुख्य संस्थापक कलाकार थे – बी. सी. सान्याल, धनराज भगत, के के कुलकर्णी, प्राणनाथ मांगो, शिल्पीचक्र करने अपने घोषणा पत्र में लिखा – ''समूह है समझता है कि कला को एक गतिविधि के रूप में जीवन से अलग नहीं किया जाना चाहिए। एक राष्ट्र की कला का स्वरूप ऐसा होना चाहिए, जो राष्ट्र के लोगों की आत्मा की अभिव्यक्ति हो एवं उनकी उन्नति की प्रक्रिया में सहयोग करें।''

1949 ईस्वी में शिल्पीचक्र के कलाकारों ने चांदनी–चौंक, करोलबाग, विश्वविद्यालय में अपने कार्यों की प्रदर्शनी लगाई, जिनकी अच्छी प्रतिक्रिया मिली और कई और कलाकार जैसे देवयानी कृष्ण, सतीश गुजराल, रामकुमार, जे0. स्वामीनाथन, रामेश्वर बरूटा, अनुपम सूद, अर्पिता सिंह आदि भी इस ग्रुप के सदस्य बन गए।

- उद्देश्य :–

शिल्पचक्र का मुख्य उद्देश्य था प्रभावी गतिविधियों और कार्यक्रमों द्वारा कार्यरत कला संस्थाओं की कार्यप्रणाली की जांच करना। यहां के कलाकार कला और संस्कृति के संबंधों को आधुनिक तरीके से कलाकृति के माध्यम से प्रस्तुत करते थे। युवा कलाकारों ने जोश के साथ कई शैलियों प्रयोग के द्वारा अपनी अभिव्यक्ति दी एवं भारतीय समकालीन कला के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अमूर्त चित्रकला का स्वरुप

अमूर्त चित्रण में चित्रकार ने बाह्य संसार से प्रेरणा लेकर चित्रों का सृजन किया किंतु इसमें प्रकृति के बाह्य स्वरूप का चित्रण न करके उसके नीचे छिपे सत्य को प्रस्तुत किया है तथा स्वतंत्र होकर स्वच्छंद रंगो तथा रेखाओं के माध्यम से अपने आंतरिक भागों को व्यक्त किया है। वस्तुनिरपेक्ष कला के संबंध में एक विद्वान ने लिखा है की – "वस्तु के बाह्य रूप से सुख प्राप्त होता है, तो आंतरिक चैतन्य से जीवन चित्रों में रंग तथा रेखाएं वही होती हैं, किंतु चित्रकार उनको नए–नए ढंग से प्रयोग करता है।" इसमें चित्रकार की भावनाएं प्रधान होती हैं। जिसे वह सूक्ष्म रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे कि वह अधिक से अधिक भागों की अभिव्यक्ति उसमें कर सके।

'सर हरबर्ट रीड ने फिलास्की ऑफ मॉडर्न आर्ट' में ठीक ही लिखा है कि – "आधुनिक कला 'इलेस्ट्रेशन नहीं', 'इण्टरस्प्रटेशन' है, 'प्रतिभा' नहीं 'प्रतीक' है।" क्योंकि कलाकार जो कुछ भी चित्रित करता है उसमें गठन अर्थ छिपे होते हैं तथा चित्रकार द्वारा चित्रित आकृतियां विभिन्न भावों की प्रतीक होती हैं, जिन्हें समझने के लिए दर्शन को कभी–कभी कठिनाई का भी अनुभव होता है। इसलिए चित्रों में अभिव्यक्ति के साथ–साथ संप्रेषण भी होना आवश्यक है। संप्रेषण का संबंध दर्शक के ग्रहण शक्ति से होता है, क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि कलाकार की अभिव्यक्ति से संप्रेषण भी हो इसके लिए कलाकार आकृतियों को सरलीकृत करते हैं।

इसी प्रकार की कुछ सरल ज्यामितीय अमूर्त आकृतियों का प्रयोग आधुनिक भारतीय चित्रकार रज़ा के चित्रों में देखने को मिलता है। उन्होंने अपनी आंतरिक भावनाओं को पूर्व में की गई अपनी यात्राओं तथा प्रकृति से जुड़े अनुभवों को अपने दृश्य चित्रों में विभिन्न सरल प्रति तथा ज्यामितीय आकृतियों के माध्यम से संसार, जल तथा प्रकृति आदि विभिन्न चित्रों में व्यक्त किया है। रज़ा प्रारंभ से ही दृश्य चित्रण किया करते थे, लेकिन वे सभी यथार्थवादी अर्थात वास्तविक दृष्टि चित्र थे। धीरे–धीरे उन्होंने प्रकृति को महसूस किया तथा अनुभव की गई प्रकृति को रंगों में उतारा। रज़ा के चित्रों में आकृतियां विलीन होने लगी तथा अनुभव भरा वातावरण जिसे अमूर्त कहा जाता है, प्रकट होने लगा। इसके अतिरिक्त एम.एफ. हुसैन भी अपने चित्रों में आकृतियों को मात्र कुछ ही रेखाओं के माध्यम से बनाते थे तथा प्रतीक रंगों का प्रयोग करते हैं, तो कभी–कभी वे रेखाओं का प्रयोग नहीं करते बल्कि केवल चौड़े तूलिका संघातों के माध्यम से ही विभिन्न आकृतियाँ सृजित करते हैं।

19वीं शताब्दी में सामाजिक तथा राजनीतिक उथल–पुलि हुई तथा चित्रकारों ने मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से कार्य करना प्रारंभ किया। अब भारतीय कला समाजवादी से हटकर व्यक्तिवादी हो गई। कलाकारों ने दिशाओं में कदम बढ़ाते हुए नये प्रवाहों को जन्म दिया। इन कला प्रवाहों में वास्तुनिरपेक्ष

▪ आधुनिक चित्रकला का इतिहास, डॉ. राकेश कुमार सिंह, प0 सं. – 84, 97

कलर प्रमुख है। अब कलाकार अपने आंतरिक भावों को अभिव्यक्त करने लगा। इन कलाकारों ने यथार्थ सौंदर्य को इस हद तक नकार दिया कि 'एनाटमी' के नियमों को भी त्याग दिया और प्रत्येक कलाकार ने अपने लिए नियम निर्धारित कर लिए। नए सौंदर्य शास्त्र को गढ़ लिया। चित्रकार इस वस्तुनिरपेक्ष कला के सादृश्य विहीन रूपों तथा रंगों के चमक, स्वच्छंद तूलिका संचालन पर अधिक बल देते हुए ज्यामितीय तथा काल्पनिक रंग संगतियों के द्वारा चित्र रचना करने लगा तथा कलाकार यथार्थ से प्रेरणा लेकर अपने रूपों को सरलीकृत करने लगा, जिसकी परिणति प्रतिकों माध्यम से दिखाई देती है अर्थात कलाकार किसी वस्तु का चित्रण नहीं करते बल्कि उसकी किसी विशेषता मात्रा को प्रतीक तथा सरल रूप में चित्रित करते हैं। जैसे मात्र एक वृत्त बनाकर पृथ्वी का चित्रण करना तथा एक वर्ग के माध्यम से आकाश को प्रतीक रूप में चित्रित किया।

भारत में अमूर्त कला का प्रारंभ गगनेन्द्र नाथ के द्वारा धनवाद के माध्यम से हुआ। यूं तो अनेकों भारतीय चित्रकारों ने अमूर्त चित्रण किया है, किंतु गगनेन्द्र नाथ पहले भारतीय चित्रकार थे जिसने अपनी कृतियों में साहस के साथ अमूर्त सरल तथा धनाकर आकृतियों का समावेश किया। उन्होंने अकल्पनीय वातावरण में अमूर्त सरल तथा धनकार आकृतियों का समावेश किया। उस समय वे ही एक ऐसे चित्रकार थे। आकृतियां धनवाद से प्रभावित थी।

अमूर्त चित्रकारों ने मात्र प्रतीक रूपों में ही नहीं अपितु प्रतीक रंगों को भी अपने चित्रों में लगाया है। चित्रकारों ने विभिन्न भावों के अनुसार रंगों को लगाया है जैसे – लाल रंग क्रोध उत्तेजना, हरा रंग खुशी हरियाली, श्वेत रंग शांति, नीला रंग विशालता तथा काला रंग शोक का प्रतीक माना गया। किंतु ऐसे आधुनिक अमूर्त चित्रकारों ने यथार्थ रूपों का त्याग किया है। उसी प्रकार चित्रकारों ने बाह्य यथार्थ के रंगों का भी त्याग किया तथा रंगों को अपने मूड के अनुसार लगाया जैसे – लाल रंग उत्तेजना का प्रतीक है, से खुशी को दर्शाया। हरा रंग जो की हरियाली तथा खुशी का प्रतीक है। इस प्रकार आज का कलाकार स्वयं अभिव्यक्ति की भावना के कारण चित्र बनाने से पूर्व कोई धारणा या वर्ग संयोजन निश्चित नहीं करता और अपनी मनः स्थिति के अनुसार रंग लगाता है। साथ ही जहां रंगों का नियोजन कभी करता भी है तो परंपरा के अनुरूप न करके कल्पना से करता है। इसलिए आज एक ही रंग अलग–अलग चित्रकारों के चित्रों में अलग–अलग भावों का प्रतीक बन जाता है।

इस प्रकार चित्रकार अपने मन में अनेकों अनुभवों को एकत्रित करता रहता है तथा अमूर्त चित्रण करते समय उनका प्रतिरूप अपने चित्रों में अंकित करता है तथा इसके लिए वह विभिन्न प्रतिकों भी प्रयोग करता है। कलाकार को कल्पना समृति, सृजन करने की इच्छा, व्याकुलता आदि अनेकों प्रेरणायें प्रेरित करती हैं। अमूर्त चित्रण के विकास में इन चित्रकारों का योगदान रहा– एफ.एन.सूजा, कृष्ण हवाल

जी आरा, सैयद हैदर रज़ा, मकबूल फिदा हुसैन, कृष्ण खन्ना, तैयव मेहता, राजकुमार, वी.एस. गायक तोण्डे, जहांगीर सवाबाला, के.जी. सुब्रमणियम, जतिन दास हरिपाल त्यागी।

अमूर्त चित्रों की अपनी ही एक विशेषता है और यह देखने वाले पर निर्भर करता है कि वह उस चित्रों को किस भावना से देखता है और ये लघुशोध उस चित्रकार की कला यात्रा को प्रस्तुत करता है जो अमूर्त कला की उस माला से सुनहरे मोती हैं जिसके धागे–रज़ा, हुसैन, जे. स्वामीनाथन से जुड़े हैं, भोपाल के प्रसिद्ध चित्रकार अखिलेश वर्मा जी है।

द्वितीय अध्याय

- अखिलेश वर्मा का जीवन परिचय
- शिक्षा
- कला यात्रा
- प्रदर्शनियाँ व पुरस्कार

अखिलेश वर्मा का जीवन परिचय

अखिलेश वर्मा उच्च दृष्टिकोण के एक तेजस्वी चित्रकार हैं और बहुत अच्छे गद्य लेखक, अनुवादक भी हैं और वे अपने कला संवादों के लिए भी जाने जाते हैं। इनके अमूर्त चित्र उनके उच्च कोटि दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं और देखने वालों का अपनी और आकर्षक करते हैं और वह सहायक प्रद्धति प्रतिदिन के व्यक्ति हैं, व वाणी के धनी है, व अपनी बात को तर्कपूर्ण व्यक्त करने वाले व्यक्ति हैं। उनका स्वभाव बहुत शांत है और सभी से सहजता से बात करते हैं। कला क्षेत्र में वह एक ईमानदार चित्रकार हैं और जल्दी किसी धरणा या विचार को स्वीकार नहीं करते। उसमें तर्क होना आवश्यक है। कला में हर विषय पर बोलते हैं और चित्रकला के हर पहलू को उन्होंने समझा जो कि उनके चित्रों में स्पष्ट दिखता है। उनका उच्च दृष्टिकोण और कला के प्रति प्रभा दृष्टि आज के युवाओं के लिए युवाओं के लिए एक प्रेरणा है।

अमूर्त चित्रों की चिन्मय में समझ, उनके चित्रों को समझने के लिए दर्शक का भी ईमानदार होना आवश्यक है। अगर आप सच्चे कला प्रेमी है तो इनके अमूर्त चित्र आपको लीन कर सकते हैं। आज के युग में या इससे पूर्व कला पर बोलने वाले व कला के क्षेत्र को विस्तार से दिखाने के लिए उसकी भ्रमित व्याख्याएँ करते हैं और कम जानकारी के होते हुए मिलावटी जानकारी प्रस्तुत करते हैं। अखिलेश जी अपने शब्दों से किसी को आहत नहीं पहुंचाना चाहते, परंतु वे कभी सच बोलने से पीछे नहीं हटते। अखिलेश जी कला को जैसी है, वैसे ही स्वीकारते हैं और कहते हैं – ''कला को किसी भी प्रकार के वर्गीकरण की आवश्यकता नहीं है।'' रंगों की उच्च कोटि समझ उसके पीछे कई सालों के परिश्रम और अनुभवों को प्रकाशित करती है। अखिलेश जी हमेशा से मेहनती रहे हैं। वह कॉलेज के दिनों में बहुत परिश्रम किया करते थे और आज भी करते हैं।

अमूर्त कला में उनका अतुल्य योगदान रहा है। उनके जीवन का और कला यात्रा का वर्णन कुछ इस प्रकार है :–

➢ जीवन परिचय :–

अखिलेश जी का जन्म 28 अगस्त 1956 को इंदौर में पिता रामजी वर्मा व माता प्रयाग देवी के घर पर हुआ। अधिकतर चित्रकार जिन्हें पढ़ाई में कोई रुचि नहीं होती, इसी प्रकार अखिलेश जी को भी कोई विशेष रुचि नहीं थी और बचपन में उन्हें चित्रकला में भी कोई रुचि नहीं थी। उनके पिता रामजी

वर्मा जो कि पेशे से शिक्षक व चित्रकार थे। अखिलेश जी भाग्यशाली या कह लीजिए उनके द्वारा पूर्व जन्म में किए अच्छे कर्म की उन्हें बचपन से ही कलाकारों के बीच रहने का मौका मिला। व कलात्मक वातावरण में बड़े हुए। बचपन में वे चित्रकला से दूर भागते थे। उनके पिता चित्रकार थे और इनका संयुक्त परिवार था। वे 10 भाई बहन थे। उनके घर में सब चित्र बनाते थे। वे भी चित्रकला नहीं करना चाहते थे। उनके घर के बाहर मैदान हुआ करता था। वे वहां खेलते रहते थे। जब वे कॉलेज के द्वितीय वर्ष में थे, तब एक दुर्घटना के कारण उनके पैर की स्कीन बॉन में फ्रैक्चर आ गया था। इसके पश्चात 3 महीनों के लिए बिस्तर पर रहे व इस दौरान उन्होंने अनुभव किया कि वह केवल एक ही काम कर सकते हैं, वह है चित्रकला।

सर्वप्रथम उन्होंने उस दिन स्वयं को चित्रकार स्वीकार किया और इसके बाद उन्होंने सब छोड़ दिया और चित्रकला करने लगे। उनके पिता चित्रकार थे तो कलात्मक वातावरण था व उनके घर में कलाओं से संबंधित किताबें हुआ करती थी। इन किताबों में प्राचीन, धार्मिक, मंदिरों की शिल्पकारी सहित चित्र छपे होते थे और चित्र भी हुआ करते थे। उन किताबों के चित्रों ने उन्हें बचपन में बहुत प्रभावित किया व स्कूल के समय वह साहित्य से भी प्रभावित हुए और जब वह स्कूल में थे तो हरिशंकर परसाई का नियमित कॅलाम – ''सुनो भाई साधो'' आया करता था। इससे वह बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने लिखना शुरू किया। फिर धीरे–धीरे उन्होंने पढ़ना भी शुरू किया व साहित्य से उनका जुड़ाव होने लगा।

वे कहते हैं – ''यदि मैं चित्र नहीं बना रहा होता तब शायद लेखन ही करता'' व उनकी उनकी संगति में भी रुचि है। अखिलेश जी चाहे बचपन में चित्रकला से दूर भागते थे, परंतु उनके भाग्य में एक प्रसिद्ध चित्रकार बनना लिखा था और आज भी वह अपने इस यात्रा के यात्री हैं और अपने स्टूडियो में कैनवास पर रंगों और तूलिका से अमूर्त चित्र बनाने में आन्तरलिन रहते हैं। वे उनके जीवनसाथी श्रीमती अर्चना जी और उनके दो पुत्र और वह भी कला के क्षेत्र में कार्यरत है।

- इस प्रकार अखिलेश से संवाद, राजेश्वर त्रिवेदी, प0 सं. – 67

शिक्षा

अखिलेश जी ने औपचारिक शिक्षा कला अकादमी से ग्रहण की व उनकी स्कूली शिक्षा इंदौर स्कूल ऑफ आर्ट से पूरी की थी। व इंदौर कला महाविद्यालय से उन्होंने नेशनल डिप्लोमा इन पेंटिंग प्राप्त किया। कॉलेज के शुरुआती दिनों में 1978 में अखिलेश जी व उनके अन्य दो और दोस्त रजा साहब (सैयद हैदर रजा) की प्रदर्शनी देखने भोपाल आए और वे कहते हैं कि रजा साहब उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुए की इंदौर से उनकी प्रदर्शनी देखने आए हैं। वे जब गैलरी में उन्होंने प्रवेश किया रजा साहब के चित्रों को देखे हुए आश्चार्य चकित रह गए कि रंगों का इतना सुंदर प्रयोग इससे पहले उन्होंने नहीं देखा था। उस दौरान उन्हें कुछ समझ नहीं आया, उन्होंने रजा साहब से कहा मुझे कुछ समझाइए। रजा साहब ने उलट उन्हें कहा – आप यहां कितने दिन हैं? उन्होंने कहा – तीन दिन। रजा साहब कहते हैं, आप प्रतिदिन प्रदर्शनी देखिए, तीसरे दिन बात होगी। तब वह 3 दिन सुबह 10:00 से शाम 8:00 गैलरी बंद होने तक वहीं रहते और केवल चित्रों को देखते रहते। व राजा साहब भी आते जाते रहते और देखते कि यह लड़का लगातार चित्र देख रहा है और इस प्रदर्शनी में उन्होंने देखना सीखा। चित्रकला के गुण से परिचित हुए। जिससे हर चित्रकार को होना चाहिए। जैसा कि उनके पिता चित्रकार थे तो उनके घर में अनेक चित्रकार आया करते थे। व शाम को बैठक होती थी, उन्होंने पूछना शुरू किया कि वह रंगों का उस तरह इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं। सभी के सुझाव भिन्न–भिन्न थे, उन्हें में से एक चित्रकार धवल कंलात जी उनके पिता के छात्र थे। उन्होंने अखिलेश जी को सुझाव दिया कि आप केवल 8–10 महीने काले रंग में काम करें और फिर उन्होंने अगले 10 वर्षों तक केवल काले रंग में काम किया और उनका यह अनुभव उनके सहारनिय योग्य रहा।

अखिलेश जी ने कॉलेज के तृतीय वर्ष में अपनी पहली प्रदर्शनी लगाई। उस समय वे केवल 20 वर्ष के थे। उस समय विद्यार्थियों को केवल शिक्षा पर ध्यान को कहा जाता था, परंतु अखिलेश जी ने उस समय लोगों की बातों को नजरअंदाज करते हुए अपने ह्रदय की सुनी और रवींद्रनाट्य ग्रह दीर्धा में लगाई इस प्रदर्शनी को लगाने में वे और उनके मित्र दिन भर परिश्रम करते थे। व इस प्रदर्शनी से उनके शिक्षक भी नाराज हुए और फिर वे भी प्रदर्शनी देखने आए। उन्होंने अपना समय व्यर्थ न गँवाया, खुब काम किया व कॉलेज में उनको काम करता देख उनके शिक्षक चश्द्रेश सक्सेना जी ने उनके अधिक देर तक काम करने का भी प्रबंध कराया और कॉलेज खर्चे से उनके और उनके मित्रों के लिए

नाश्ता भी आने लगा, वे कहते हैं – ''और खूब काम किया''। ''विद्यार्थी जीवन में उसका उनका भविष्य आकार लेता है''। अखिलेश जी इसका सही उदाहरण है।

कला यात्रा

अखिलेश जी अपने जीवन में अनेक अनुभवों से गुजरे और हर अनुभवों ने कुछ सीख प्रदान की। वे अमूर्त चित्रकार हैं, और उनकी अमूर्त कला यात्रा की शुरुआत अखिलेश जी कॉलेज के दिनों में पढ़ाई कर रहे थे, तब वे सर्वप्रथम एक घटना से प्रभावित हुए। उन्होंने अमूर्त को समझा, कॉलेज के दिनों में अखिलेश जी को आकृति मूलक चित्र बनाना सरल लगा लगता था। उन्हें इसमें कोई मुश्किल नहीं दिखाई पड़ती थी और वह एक दिन में कई चित्र बनाते रहते थे। जैसा कि उनके घर में अनेक मिनिएचर चित्रों की किताबें हुआ करती थी। उनके घर की दीवारों पर कांगड़ा शैली के चित्र चित्रित हुआ करते थे। उन्हीं में से चित्र अभिसारिका की नायिका का था, जो अपने प्रेमी से मिलने जा रही, उसके मार्ग में बहुत सी रुकावटें हैं। उसमें जंगली जानवर, भूत, चुड़ैल, डायन आदि हैं, अर्थात माहौल को डरावना चित्रित किया गया है और नायिका रूकावटों के होते हुए चले जा रही है। काले बादलों में बिजली गरज रही है। वह बिजली के प्रकाश में चलती जा रही और आकाश में दो बिजलियां चमक रही हैं, वह ध्यान से देखने पर दिखाई पड़ता है कि वह कामवासना के दो सांप हैं, वह अपने कामवासना के प्रकाश में चलते जा रही हैं। इस घटना ने उनका रुझान अमूर्त की ओर विकसित किया।

वे कलाकृति बनाते समय सबसे ज्यादा प्रकृति से प्रभावित होते हैं। उनका विचार है कोई भी चित्र पूरा नहीं होता, उसमें अधूरापन रहता है। उसे किसी भी समय पूरा किया जा सकता है। चित्रों का विस्तार अनंत है और उनके सारे चित्र एक ही चित्र का विस्तार है। चित्रकला में आज के युवा व कई लोगों की यह मान्यता है, व अपनी–अपनी धारणा है कि यथार्थ चित्र बहुत प्रभावशाली और आकर्षित होते हैं, पर अमूर्तन जैसा आनंद यथार्थ में नहीं हो सकता।

अखिलेश जी रंगों को प्रकृति से जोड़कर एक सफल उदाहरण देते हैं कि रंगों का संबंध प्रकृति से होता है, रंग अपना होना नहीं बताते, वे केवल हैं और मानव उन्हें देखता है, फिर क्रिया में लेकर आता है। अखिलेश जी ने अपने जीवन में बहुत यात्राएं की हैं। कॉलेज के दिनों में, स्कूल के दिनों में, व कला से जुड़े रहे और कला उनके लिए नई बात नहीं थी। घर में कला वातावरण बना रहता था, उनके घर में, शहर भर के चित्रकार आते थे, जिनसे उन्हें बहुत स्नेह मिला। उनके आसपास के वातावरण का उनकी कला यात्रा में विशेष योगदान रहा उनकी यात्रा का वर्णन उनकी प्रदर्शनियों और पुरस्कारों से भी होता है।

प्रदर्शनियाँ व पुरस्कार

प्रदर्शनियाँ :–

- ➡ 1976 अखिल और अखिल रविंद्र आर्ट गैलरी – इंदौर
- ➡ 1976 एम.पी. द्वारा प्रायोजित कला परिषद – इंदौर
- ➡ 1979 एम.पी. द्वारा प्रायोजित कला परिषद – भोपाल
- ➡ 1979 एम.पी. द्वारा प्रायोजित कला परिषद – नई दिल्ली
- ➡ 1984 देवलालीकर आर्ट गैलरी – इंदौर
- ➡ 1986 एम.पी. कला परिषद – भोपाल
- ➡ 1986 जहांगीर आर्ट गैलरी – मुंबई
- ➡ 1988 देवलालीकर आर्ट गैलरी – इंदौर
- ➡ 1988 जहांगीर आर्ट गैलरी – मुंबई
- ➡ 1989 देवलालीकर आर्ट गैलरी – इंदौर
- ➡ 1990 चित्रकूट गैलरी द्वारा – कोलकाता
- ➡ 1990 साक्षी गैलरी – चेन्नई
- ➡ 1990 कोमोल्ड गैलरी – मुंबई
- ➡ 1992 विजुअल स्क्रिप्ट बाय इलेक्ट्रा – मुंबई
- ➡ 1994 देवलालीकर आर्ट गैलरी – इंदौर
- ➡ 1996 कला निगमित द्वारा – नई दिल्ली
- ➡ 1997 ईजल आर्ट गैलरी द्वारा – चेन्नई
- ➡ 1997 आर्ट स्टूडियो द्वारा – इंदौर
- ➡ 1997 बनारस एबीसी आर्ट गैलरी – बनारस
- ➡ 1998 आर्ट एंड गैलरी द्वारा पेस्टल – नई दिल्ली
- ➡ 1999 आर्ट एंड गैलरी नॉट ओनली पेपर्स – नई दिल्ली
- ➡ 2000 'कागज' **GIFAEX** गिफ्ट द्वारा – इंदौर

- ➡ 2000 एलाइंस फ्राकोइस डी हैदराबाद – हैदराबाद
- ➡ 2002 'रंगचिन्ह शून्य पर एलायंस फ्राकोइस डी भोपाल – भोपाल
- ➡ 2003 अफाराव गैलरी द्वारा वार्म बॉडीज – चेन्नई
- ➡ 2004 टर्बूलेन्ट स्पेस एंड टाइम गैलरी – बेंगलुरु
- ➡ 2005 8301 – रिवर रोड एम डी – वांशिगढन
- ➡ 2006 गोर्बियो – फ्रांस
- ➡ 2007 एलजेब्रा ऑफ इरोस बोधि आर्ट – सिंगापुर
- ➡ 2007 ऐकोन गैलरी – पाल ऑटो कैलिफोर्निया
- ➡ 2010 आकार पराकर – कोलकाता
- ➡ 2010 रितू फलक देवलालीकर आर्ट गैलरी – इंदौर
- ➡ 2010 एलायंस फ्रैन्काइज डी भोपाल – भोपाल
- ➡ 2011 रिफ्लेक्शन आर्ट गैलरी में गैलरी में रंग लीला – इंदौर
- ➡ 2011 रेड अर्थ आर्ट गैलरी – बडौदा
- ➡ 2011 इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, नैनटेस में – फ्रांस
- ➡ 2012 संग्रहालय जोरो – हॉलैंड
- ➡ 2013 मुस्से डेला सिल्टैडेल सेट एल्में विलेफ्रान्चे सुरमेर – फ्रांस
- ➡ 2013 फौएडिक गैलरी ओरिएंट – फ्रांस

भागीदारी :–

- ➡ 1976 अतरराज्यीय कला – विनियम – लखनऊ
- ➡ 1976 युवा कलाकार प्रदर्शनी – भोपाल
- ➡ 1978 शिविर – इंदौर
- ➡ 1981 कुछ कलाकार – भोपाल
- ➡ 1984 ब्लैक ग्रुप प्रदर्शनी – भोपाल
- ➡ 1984 ब्लैक ग्रुप प्रदर्शनी – इंदौर

➡ 1978–85 राष्ट्रीय कला मेला – नई दिल्ली

➡ 1985 आज भारतीय कला के कुछ पहलू रूपांकर की अखिल भारतीय प्रदर्शनी – भोपाल

➡ 1985 आज भारतीय कला के कुछ पहलू – भोपाल

➡ 1987 मध्य प्रदेश से ललित कला – नई दिल्ली

➡ 1987 उपलब्धि 28 मध्य प्रदेश के कलाकार – भोपाल

➡ 1986–87 ग्रेशामा कला मेला – इंदौर

➡ 1987–91 ब्लैक ग्रुप प्रदर्शनी – मुंबई

➡ 1982–86 रजा पुरस्कार प्रदर्शनी – भोपाल

➡ 1988–98 **II, III, V, VI** भारत भवन बेनीनेल – भोपाल

➡ 1988 केमोल्ड आर्ट गैलरी द्वारा सत्रह भारतीय चित्रकार – मुंबई

➡ 1989 आर्टिस्ट अलर्ट, सहमत – नई दिल्ली

➡ 1989 भारत में फ्रांस के दूतावास द्वारा इंडियन इलेक्ट्रिक का आयोजन किया गया – नई दिल्ली

➡ 1989 हैबियार्ट विराट गैलरी ओपनिंग शो – नई दिल्ली

➡ 1990 दो पे दो प्रदर्शनी – भोपाल

➡ 1990 एकसल प्रैक्टिस फाउंडेशन प्रिंट प्रदर्शनी – मुंबई

➡ 1991 सांप्रदायिकता के खिलाफ कलाकार – नई दिल्ली

➡ 1992 हलाटोल, मालवा उत्सव प्रदर्शनी – इंदौर

➡ 1992 हमारे समय पर छापे – मुंबई

➡ 1992 अंतर्राष्ट्रीय शो कॉम आर्ट – कोरिया

➡ 1994 ला ओड फिनिट एल अनुपस्थिति – भोपाल

➡ 1994 टैटू वाली जगह – दिल्ली

➡ 1994 मध्य प्रदेश के कलाकार – चेन्नई

➡ 1994 चालीस कलाकार – मुंबई

➡ 1994 एन.जी.एम.ए संग्रह से गीता कपूर द्वारा 100 साल की आधुनिक कला, कयूरेटेड – नई दिल्ली

➡ 1994 आठ कलाकारों ने गैलरी एस्केप दिखाए – नई दिल्ली

➡ 1995 शांति के लिए कला, सहमत – नई दिल्ली

➡ 1995 सोरिग्राम – जयपुर

➡ 1995 ब्लैक ग्रुप प्रदर्शनी – मुंबई

➡ 1995 उभरते रुझान, सत्रह चित्रकार – नई दिल्ली

➡ 1995 सार अभिव्यक्ति सूर्य गैलरी – हैदराबाद

➡ 1995 मध्य प्रदेश से ललित कला – नई दिल्ली

➡ 1996 द्विवार्षिक गैलरी से आठ कलाकार लकेंरे – मुंबई

➡ 1996 हार्मनी रियायस शो – मुंबई

➡ 1996 मंजीत बावा, आर्ट टुडे द्वारा भोपाल स्कूल, कयूरेटड – नई दिल्ली

➡ 1996 पेस्टल– कयूरेटड बाए प्रयाग शुकला आर्ट मोटिफ – नई दिल्ली

➡ 1996 बियोन्ड द पैलेट मैक्स मुलर भवन चेन्नई द्वारा – चेन्नई

➡ 1997 बाईस कटेम्पेरीज सूर्य प्रकाश द्वारा संकलित – मुंबई

➡ 1997 मदर टेरेसा को श्रद्धांजलि, कला सिंधु – नई दिल्ली

➡ 1997 प्रमुख रुझान– आरएम द्वारा क्यूरेट किया पलानीप्पन – नई दिल्ली

➡ 1997 मध्य प्रदेश के कलाकार आर्ट इंडसगैलरी – नई दिल्ली

➡ 1997 पांच चित्रकार एशियाई कला केंद्र – यू.एस.ए.

➡ 1998 जहांगीर में छिपी हुई जगहें – मुंबई

➡ 1998 मदर टेरेसा– सिमरोजा आर्ट गैलरी – मुंबई

➡ 1998 जे – स्वामीनाथन को श्रद्धांजलि – भोपाल

➡ 1998 भोपाल स्थित कलाकार मुंबई – 1998

➡ 1998 सन आर्ट गैलरी ओपनिंग शो – भोपाल

➡ 1998 एलाइंस फ्राकोइस में ग्रुप शो – भोपाल

- ➡ 1998 आर्ट सिंधु गैलरी में मध्य प्रदेश के कलाकार – नई दिल्ली
- ➡ 1998 मध्य पर्व – चंडीगढ़
- ➡ 1999 संगम इंडोनेशिया कलाकार – काठमांडू
- ➡ 1999 संगम द्वितीय इंडोनेशिया कलाकार – दिल्ली
- ➡ 1999 तथा, 20 चित्रकारों पर एक प्रदर्शनी – इंदौर
- ➡ 2000 ऑल इंडिया आर्टिस्टि शो – चेन्नई
- ➡ 2000 एलायंस फ्राकोइस डे, भोपाल में दृष्टि पेंटिंग्स सेरामिक्स – भोपाल
- ➡ 2000 सात सार चित्रकार कला सिंधु – नई दिल्ली
- ➡ 2000 सतह से परे – की एक प्रदर्शनीए पेपर वकर्स, रेनू मोदी द्वारा क्यूरेटेड – नई दिल्ली
- ➡ 2000 कंबाइन– वॉइस फॉर द न्यू सेंचुरी – नई दिल्ली
- ➡ 2000 आर्ट इंक द्वारा आयोजित कंबाइन – नई दिल्ली
- ➡ 2000 अन्यरथा – चंडीगढ़
- ➡ 2000 अनादि एलकेए गैलरी – नई दिल्ली
- ➡ 2001 अनादि बिड़ला अकैडमी – कोलकाता
- ➡ 2001 अनादि चित्रकला परिषद – बेंगलुरु
- ➡ 2001 अनादि एन.जी.एम.ए – मुंबई
- ➡ 2001 आर्ट मोटिफ द्वारा आयोजित अब्स्ट्रैक्शन – नई दिल्ली
- ➡ 2001 आर्ट टुडे गैलरी में ब्लैक एंड व्हाइट ड्रॉइंग शो – नई दिल्ली
- ➡ 2001 बातचीत में गैलरी एस्पेस के लिए गायत्री सिंह द्वारा क्यूरेट किया गया – नई दिल्ली
- ➡ 2001 सार समकालीन भारतीय कला आर्ट मोटिफ गैलरी द्वारा – नई दिल्ली
- ➡ 2001 ताओ आर्ट गैलरी द्वारा मध्य क्षेत्र – मुंबई
- ➡ 2002 लोकरंग क्यूरेट बाए प्रयाग शुक्ला – नई दिल्ली
- ➡ 2002 ब्रह्म से बापू तक, चाइना गैलरी द्वारा – नई दिल्ली
- ➡ 2002 धूमिमल आर्ट गैलरी द्वारा हाल्का फुट स्क्वायर – नई दिल्ली
- ➡ 2002 एम.एस.आई.एल द्वारा 15 कलाकार – बेंगलुरु

- ➡ 2002 दायरा द्वारा बरसन लागी – हैदराबाद
- ➡ 2002 दायरा द्वारा क्रॉस करंट्स – हैदराबाद
- ➡ 2002 इशारा – नई दिल्ली
- ➡ 2002 प्रेत, सात चित्रकार – त्रिचूर
- ➡ 2002 प्रेत, सात चित्रकार – एर्नाकुलम
- ➡ 2002 अन्या चित्रकारों की एक प्रदर्शनी – इंदौर
- ➡ 2003 सेवन हैबिटेट गैलरी – नई दिल्ली
- ➡ 2003 सात अप्पाराव गैलरी – मुंबई
- ➡ 2003 एक साथ यात्रा करें – भोपाल
- ➡ 2004 सेवन टाइम एंड स्पेस गैलरी – बेंगलुरु
- ➡ 2004 रूप आध्यात्मिक प्रेस्बिटर्स – गोर्बियो फ्रांस
- ➡ 2004 गैलरी 88 द्वारा छवि और कल्पनाएं – कोलकाता
- ➡ 2004 रूप आध्यात्म प्रेस्बिटर्स – गोर्बियो फ्रांस
- ➡ 2004 CIMA द्वारा एक दशक के चित्र – मुंबई
- ➡ 2004 गेसेहेन, एर्लेबट, इंटरप्रीटिमर्ट गैलरी नॉर्थबर्गा – ऑस्ट्रेलिया
- ➡ 2004 छवियाँ और कल्पना 11 गैलरी 88 – कोलकाता
- ➡ 2004 आर.पी.जी द्वारा सेक्रेड स्पेसेस – मुंबई
- ➡ 2005 हार्मनी शो – मुंबई
- ➡ 2005 सीआईएमए गैलरी द्वारा अवधारणाएं और विचार – कोलकाता
- ➡ 2005 आर्ट अलाइव द्वारा एब्स्ट्रेक्शन – नई दिल्ली
- ➡ 2005 पैलेट आर्ट गैलरी का वार्षिक शो – नई दिल्ली
- ➡ 2005 चेल्सी में समकालीन भारतीय कला श्रीमती कल्पना शाह द्वारा कॉलेज आफ आर्ट – लंदन
- ➡ 2005 भारतीय समकालीन कला कवैसाइट गैलरी – लंदन
- ➡ 2005 88 द्वारा 'चिवस आर्ट एक्सपीरियंस – मुंबई

- 2005 'इंडियन आर्ट' आर्टस् इंडिया द्वारा – न्यूयार्क
- 2005 आर्ट्स इंडिया द्वारा भारतीय कला – कैलिफोर्निया
- 2006 ''नौ अमूर्त कलाकार'' सिराज द्वारा क्यूरेट किया गया पोल्का आर्ट गैलरी के लिए एकसेना – नई दिल्ली
- 2006 हालिया अमूर्त पेंटिंग – बडौदा
- 2006 'स्पेस' हैसिंडा आर्ट गैलरी – मुंबई
- 2006 'एब्सोल्यूट एब्स्ट्रेक्ट – बेंगलुरु
- 2006 रूप अध्यात्म – सिंगापुर
- 2006 रूप अध्यात्म पैलेट गैलरी – नई दिल्ली
- 2006 हार्वेस्ट अरूशी आर्ट गैलरी – नई दिल्ली
- 2006 भारतीय कला पर्व सुमुखा गैलरी – लंदन
- 2006 समकालीन भारतीय कला कल्पना शाह टेट ब्रिटेन गैलरी द्वारा क्यूरेट – लंदन
- 2006 इंडियन आर्ट गैलरी – सिंगापुर
- 2006 कल्पना शाह चेल्सी कॉलेज ऑफ आर्ट द्वारा समसामसिक भारतीय कला का संचालन – लंदन
- 2006 द एसेंस आर्ट शो इजिप्ट – मुंबई
- 2007 'अमूर्त आकार प्रकार गैलरी – कोलकाता
- 2007 ऑफ इंडियन आर्ट कोली बनिक द्वारा क्यूरेट किया गया – मैरीलैंड
- 2007 एनिमा प्रकृति आर्ट गैलरी – नेपाल
- 2007 एल इंदे रजा, गोर्बियो – फ्रांस
- 2007 भारतीय कला ताओ आर्ट गैलरी – जापान
- 2007 जैसलमेर येलो – नई दिल्ली
- 2007 हार्वेस्ट आरुषि आर्ट गैलरी – नई दिल्ली
- 2007 'पावर ऑफ पीस' ताओ आर्ट गैलरी – इंडोनेशिया
- 2007 'स्वस्ति रूप आर्ट अलाइव गैलरी – नई दिल्ली

- ➡ 2007 आर्ट एंड सोल गैलरी के लिए रोशन साहनी द्वारा क्यूरेटेड द एब्स्ट्रेक्ट टेबल्यू – मुंबई
- ➡ 2007 भारतीय समकालीन पेंटिंग आर्यन – नई दिल्ली
- ➡ 2007 आभार अंबादास के लिए एक प्रदर्शनी – भोपाल
- ➡ 2007 'अमूर्त' आकार प्रकार गैलरी – कोलकाता
- ➡ 2008 आर्ट मोटिफ द्वारा पेस्टल्स – नई दिल्ली
- ➡ 2008 हार्मनी शो – मुंबई
- ➡ 2008 फ्यूजन भारत भवन – भोपाल
- ➡ 2008 ब्लैक एंड व्हाइट ताओ आर्ट गैलरी – मुंबई
- ➡ 2008 सरस्वती – भोपाल
- ➡ 2008 मनीष द्वारा क्यूरेटेड अल्ट्रा मॉडर्न सॉलिट्यूड पुष्कले पैसेज आर्ट गैलरी – नई दिल्ली
- ➡ 2008 दस साल का सालगिरह शो – म्यूरिख
- ➡ 2008 ब्लैक एंड व्हाइट – मुंबई
- ➡ 2008 खाली और भरा हुआ – बैंगलोर
- ➡ 2008 आरंभ देवलालीकर गैलरी – इंदौर
- ➡ 2009 लैस आर्टिस्ट डेस भोपाल – भोपाल
- ➡ 2009 पांच भारतीय कलाकार एशियाई संग्रहालय – नीस, फ्रांस
- ➡ 2009 डीप इन ब्लैक गैलरी मुलर एंड प्लेट – म्यूरिख
- ➡ 2009 रूपक बदलाव और नई दिल्ली कल्पना – नई दिल्ली
- ➡ 2009 वार्षिक शो गैलरी सारा – बेंगलुरु
- ➡ 2009 आर्ट ऑफ इंडिया 20 ड्यर्स ऑफ कटेम्परेरी आर्ट गैलरी मुलर और प्लेट – म्यूरिख
- ➡ 2009 सिंबल और मर्विलज़ लेस कूलर्स डी इंडे – नीस, फ्रांस
- ➡ 2010 गूढ़ ग्रंथ – म्यूरिख
- ➡ 2010 इंडियन आर्ट रोजन ऑफ गैलरी नाइस – फ्रांस
- ➡ 2010 अमूर्तन – कोलकाता
- ➡ 2010 वार्षिक शो विनयास गैलरी 2010 – चेन्नई

- ➡ 2010 बटरफ्लाई क्यूरेटेड प्रयाग शुक्ला द्वारा – मुंबई
- ➡ 2010 संस्कृति गैलरी – कोलकाता
- ➡ 2010 मनीष पुष्कले द्वारा 'रेमनेटस आर्ट वॉयड' – ऑस्ट्रेलिया
- ➡ 2010 MANIT शो अबिल गायकवाड द्वारा क्यूरेट किया गया – भोपाल
- ➡ 2010 आयकर विभाग के 150 वर्ष – भोपाल
- ➡ 2010 इंटरनेशनल ओपनिंग शो – फ्रांस
- ➡ 2010 गैलरी म्युनिसिपल गिलेट – फ्रांस
- ➡ 2011 चेन्नई कला शिखर सम्मेलन – चेन्नई
- ➡ 2011 ऑफिस डु टूरिज्म वेबलबर्न – फ्रांस
- ➡ 2011 समकालीन – नई दिल्ली
- ➡ 2011 सेले म्यूनिसिपेल डी चेटेन्यूफ – फ्रांस
- ➡ 2011 मुसी डु पार्टिमोइन डे ला ब्रिग – फ्रांस
- ➡ 2012 गैलरी यूरेका, कन्स – फ्रांस
- ➡ 2012 अविराम बढेरा गैलरी द्वारा एक प्रदर्शनी – नई दिल्ली
- ➡ 2012 सुरुचि गैलरी द्वारा मुख्य संवाद – नई दिल्ली

शिविर :–

- ➡ 1989 हुडको द्वारा आयोजित कलाकार शिविर – नई दिल्ली
- ➡ 1991 अंतर्राष्ट्रीय कलाकार बुनाई शिविर द्वारा मैकस मूलर भवन – चेन्नई
- ➡ 1992 सी.एस.सी कलाकार शिविर – नई दिल्ली
- ➡ 1994 कलाकार शिविर – वाराणसी
- ➡ 1994 एन.सी.जेड. सी.सी द्वारा कलाकार शिविर – भोपाल
- ➡ 1994 अपना सीवर – भोपाल
- ➡ 1995 ब्रिटिश ऊंचायोग, वी एंड ए संग्रहालय लंदन और संस्कृति द्वारा आयोजित संग्रहालय और डिजाइनर शिवर – नई दिल्ली

- ➡ 1995 सी.सी.एम.बी द्वारा आयोजित कलाकार शिविर – हैदराबाद
- ➡ 1995 डोंगर महोत्सव – कोरापुट
- ➡ 1995 डब्ल्यू. सी. जेड. सी.सी द्वारा सेरीग्राफ शिवर आयोजन – जयपुर
- ➡ 1995 भुवनेश्वर कला केंद्र कलाकार शिविर – भोंडसी
- ➡ 1995 उदयपुर कलाकार शिविर – उदयपुर
- ➡ 1995 एल. यू. एन. द्वारा ब्लॉक प्रिंटिंग शिविर का आयोजन भोपाल – उज्जैन
- ➡ 1996 आई.पी.सी.एल आर्टिस्ट कैंप – बड़ौदा
- ➡ 1999 सेल वी डू एन ऑल इंडिया आर्टिस्ट कैंप – पाठराड
- ➡ 2000 कलाकार शिविर – गोवा
- ➡ 2001 एम.एस.आई.एल कलाकार शिविर – हम्पी
- ➡ 2001 कलावर्स कलाकारों का शिविर – उज्जैन
- ➡ 2005 आर्ट्स इंडिया कलाकार शिविर – न्यूनायक
- ➡ 2006 मिस्त्र कलाकार शिविर – मिस्त्र
- ➡ 2006 मैक्सिको कलाकार शिवर – मैक्सिको
- ➡ 2006 इंडिया कलाकार शिविर ' न्यूयॉर्क
- ➡ 2007 जैसलमेर के कलाकारों का डेरा सेहर – जैसलमेर
- ➡ 2007 केन्या कलाकारों का शिविर – दक्षिण अफ्रीका
- ➡ 2007–8 सद्भाव शिविर – मुंबई
- ➡ 2008 कला शिखर शिवर – कोलकाता
- ➡ 2008 मैहर कलाकार शिविर – मैहर
- ➡ 2000 भोरू का फाउंडेशन शिवर – दुबई
- ➡ 2009 रजा फाउंडेशन कैंप – नई दिल्ली
- ➡ 2010 तुर्की कलाकार शिविर – इस्ताबुल
- ➡ 2010 भैरूका फाउंडेशन कैंप – जयपुर
- ➡ 2010 अलीबाग कैंप – मुंबई

- ➡ 2010 आई.सी.ए आरर्टिस्ट कैंप – जयपुर
- ➡ 2010 कलाकार शिविर – कूर्ग
- ➡ 2010 कलाकार शिखर – गोवा
- ➡ 2010 लोक कलाकार शिविर – चेन्नई
- ➡ 2010 नीरजा मोदी फाऊंडेशन कैंप – जयपुर
- ➡ 2011 कलाकार शिविर – बेंगलुरु
- ➡ 2011 कलाकारों का डेरा सुरुचि गैलरी – नई दिल्ली
- ➡ 2011 राजा फाउंडेशन कैंप – नई दिल्ली
- ➡ 2012 सेहर द्वारा एस.ए.आर.सी. देश शिविर – भूटान
- ➡ 2013 अल्वा विरासत कैंप – मंगलौर

दो और तीन व्यक्तियों का शो :–

- ➡ 1991 आमने–सामने अंबादास के साथ – उज्जैन
- ➡ 2003 'संपात्रा' के साथ प्रदर्शनी ओल्गा ओकुनेवा, रूस और फिट्रस के हॉलैंड – कोचीन
- ➡ 2004 'संयात्रा' – चेन्नई
- ➡ 2004 'सयात्रा' – भोपाल
- ➡ 2004 'सयात्रा' – एम्स्टर्डम
- ➡ 2004 'गेसेहन, एल्बर्ट, इंटरप्रीटियर्ट गैलरी नॉर्थबर्गा इंसब्रुक – आरिट्रेया
- ➡ 2005 मनीष पुष्कले के साथ 'युगल' प्लेट मुगल गैलरी – म्यूरिख
- ➡ 2012 शे. लेश हर्मवर्धन और मनीष के साथ – भोपाल

पुरस्कार :–

- ➡ 1976 युवा कल्याण केंद्र – भोपाल
- ➡ 1976 कालिदास अकादमी प्रमाणपत्र पुरस्कार – उज्जैन
- ➡ 1977 कैमलिन पुरस्कार – मुंबई

- 1984 राज्य पुरस्कार – ग्वालियर
- 1990 भारत भवन द्विवार्षिक – भोपाल
- 1994–95 भारत सरकार की वार्षिक वरिष्ठ कलाकार फैलोशिप – नई दिल्ली
- 2002 रजा फाउंडेशन पुरस्कार – नई दिल्ली
- 2006 कला कोस्तुआ पुरस्कार – उज्जैन
- 2013 मेरी पुस्तक दरसपोथी के लिए वेगीश्वरी पुरस्कार – भोपाल

संग्रह :–

- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय – नई दिल्ली
- रूपंकर भारत भवन – भोपाल
- आधुनिक काल की राष्ट्रीय गैलरी – नई दिल्ली
- हुडको – नई दिल्ली
- माधव नायर फाउंडेशन – केरल
- सी.सी.एम.बी – हैदराबाद
- सी.एम.सी – नई दिल्ली
- एकसल प्रौकिसस फाउंडेशन – मुंबई
- एन.सी.जेड.सी.सी – इलाहाबाद
- ईरान की रानी – ईरान
- ताओ आर्ट गैलरी – मुंबई
- हबियार्ट गैलरी – नई दिल्ली
- एल.वी. प्रसाद नेत्र संस्थान – हैदराबाद
- जवाहर कला केंद्र – जयपुर
- एशियाई कला केंद्र, मेरी लैंड – यू.एस.ए
- श्रीमान श्रीमती चेस्टर हर्विट्ज – यूएसए
- विकटोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय – लंदन

➡ स्विट्जरलैंड दूतावास – नई दिल्ली

➡ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय – नई दिल्ली

➡ लालबाग पैलेस – इंदौर

➡ विधानसभा भवन – भोपाल

➡ आई.पी.सी.एल – बड़ौदा

➡ एम.एस.आई.एल – बेंगलुरु

➡ पीबॉडी संग्रहालय बोस्टन – यू.एस.ए

➡ मिसेज और मिस्टर महेंद्र टॉक कलेक्शन – वाशिंगटन

➡ गैलरी मुलर और प्लेट – म्यूरिख

➡ भरोसा – मुंबई

➡ इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज नैनटेस – फ्रांस

➡ अल्वा संस्थान – मंगलौर

तृतीय अध्याय

- अनुभव

अनुभव

अखिलेश जी अपने जीवन काल में अन्य कलाकारों से मिले और सभी से उनके अनुभव अलग–अलग रहे, जिनमें देश के तीन सुप्रसिद्ध चित्रकार सैयद हैदर रजा, जगदीश स्वामीनाथन, मुक्कबुल फिदा हुसेन है और उनका अनुभव उनके शब्दों में इस प्रकार है :–

हुसेन :–

हुसेन अक्सर अचानक फोन किया करते थे। जब भी फोन किया, संक्षेप में ही सारी बात की और जो मैंने कहा वह सुना, बस इतना ही। यहां यह बता देना मुझे जरूरी लगता है कि हुसेन के साथ मेरा संबंध बचपन से रहा है। इंदौर में उनका घर हमारे घर से थोड़ी ही दूर था और हुसेन के लिए हमारा घर लैंडमार्क था, अपने घर जाने का। जब हमारा घर बेच दिया गया और जिसने खरीदा उसने नई बिल्डिंग बनाने के लिए तोड़ दिया था, तब हुसेन अपना घर नहीं ढूंढ पाए। इस तरह से वे पहली बार इंदौर अपने घर जाय बगैर वापस चले गए। इसका जिक्र उन्होंने मुझे बाद में किया। दूसरा वह मेरे पिता के बचपन के मित्र थे। यह भी कहना आवश्यक लगता है कि हुसेन का जन्म इंदौर का ही था, जिसे बदलकर पंढरपुर अपनी मां से प्रेम के चलते कर दिया था, जिन्हें उन्होंने कभी देखा नहीं था। खैर उन्होंने फोन किया कि आप क्या कर रहे हैं? अब हुसेन को अपनी व्यस्तता बताना सूरज को दीया दिखाने जैसा होगा। इसलिए मैंने हमेशा की तरह कहा कुछ नहीं। तब फिर आप कल आ जाएं। साथ में चाय पियेंगें। मैंने कहा – बाबा आप लंदन में है और मैं कल नहीं आ सकता, वीजा लेना होता है। वीजा के लिए कितना समय लगेगा, उन्होंने पूछा। मेरे बताने पर की एक हफ्ता लगता है, ठीक है दस दिन बाद मिलते हैं। कहकर उन्होंने फोन रख दिया।

ऐसे अनेक बार के फोन है जिनमें कभी पटना, कभी दिल्ली, कभी मुंबई, हैदराबाद आने का आग्रह होता था। मैं वीजा लेकर दसवें दिन लंदन में था। अप्रवास आदि से निपट कर जब मैं बाहर निकल सुबह के 6:00 रहे थे। प्रसिद्ध लंदन कैब लेकर उनके घर जा पहुंचा। लंदन कब आपको उन दिनों की याद दिलाती है। जब लंदन के सभ्य लोग बग्घी किया करते थे, एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए, क्योंकि संभावित लोग अमीर और ऊंचे तबके के हैं और बग्घी चलाने वाला गरीब और अनपढ़ गवार है। इसलिए उसे हक नहीं है इन लोगों की बात सुनने का।

अतः बग्घी में बैठने वाले केबिन में बैठेंगे और बग्घी चालक बाहर, लंदन कैब में आज भी ड्राइवर और पैसेंजर के बीच दूरी है। एक काँच की दीवार से दोनों अलग–अलग कर दिए गए हैं, ताकि ड्राइवर पीछे बैठे लोगों की बातें सुन सके। यह बंटवारा लंदन में शान का प्रतीक है। मैं पहली मंजिल पर हुसेन के घर पहुंचा। घर का दरवाजा खुला था। मैंने धक्का दिया और आवाज लगाई। बाबा ने अंदर आने को कहा। वे चित्र बना रहे थे। उन्होंने बताया कि वह चार संग्रहालय के चित्र बना है– एक अरब संस्कृति का कतार में, दूसरा भारतीय संस्कृति पर लंदन में, तीसरा घोड़ा और भारतीय सिनेमा का दुबई में। वे कुछ देर तक चित्र पूरा करते रहे फिर ब्रश रखा और पूछा आप मेरी चीज लाए हैं। उन्होंने उस दिन के सारे अखबार मंगवाए थे। मैंने कहा– हां और मैं उन्हें निकालने के लिए अपना बैग खोलने लगा। इस बीच बाबा अंदर चले गए। स्टूडियो में नजरे घुमाई, पूरा स्टूडियो चित्रों से भरा था। कहीं कैनवास पर सिर्फ रेखांकन किया हुआ था, बहुत से अधूरे थे और कुछ अपने बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

काफी देर हो गई थी, उन्हें अंदर गए हुए। मैं थोड़े सामंजस में था, यह भी लगा कि मुझे यहां बिठाकर कहीं बाहर तो नहीं चले गए। मैंने अपना ध्यान अखबारों में लगाया जो कल रात दिल्ली एयरपोर्ट पर खरीदे थे और जल्दी में बैग में रख लिए थे। जल्दी ही मैंने पाया कि इन अखबारों में वह दम नहीं है कि मेरा ध्यान केंद्रित कर ले। उनका संसार हल्का और चमक भरा है, जिसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं घर का जायजा लेने लगा। यह एक स्टूडियो अपार्टमेंट था। जिससे बंकिघम पैलेस के पास वाली सड़क पर ही जगह मिली हुई थी। यह बहु मंजिला इमारत थी, जिसमें इस तरह के कई छोटे बड़े स्टूडियो अपार्टमेंट थे।

बाबा का अपार्टमेंट अच्छा खासा बड़ा था। उसमें इसबर्ड से स्टूडियो के अलावा दो बेडरूम थे, एक रसोईघर, एक स्टोर। अभी भी बाबा का कोई पता न था। मुझे अब पक्का होने लगा कि किसी दूसरे दरवाजे से बाबा बाहर निकल गए। थोड़ी देर मैं अंदर से आई आवाजों को सुना, फिर उनका पीछा करते हुए रसोई घर तक जा पहुंचा। वहां जाकर देखा हूं – बाबा आमलेट बना रहे हैं और दूसरे स्टोव पर चाय बन रही हैं। मैंने कहा – बाबा यह क्या, आप मुझे कह देते, मैं चाय बना देता। बाबा ने कहा – नहीं आप चलकर बाहर बैठो, मैं आ रहा हूं। मैं वापस स्टूडियो में आकर उनका इंतजार करने लगा।

थोड़ी देर में बाबा अंदर से चाय, आमलेट और ब्रेड लेकर आए और कहने लगे इतनी दूर से आ रहे हो, आपकों भूख लगी होगी। चाय–नाश्ता तैयार है। और ठहरिए, इंदौरी सेव भी है, कहकर

उन्होंने पास की अलमारी से इंदौर की सेव निकली और प्लेट में भरकर मेज पर रखी। इतनी सुबह कुछ खाने का मान्य था। किंतु यह नाश्ता संसार के सबसे हसीन–तरीन व्यक्ति ने प्रेम से बनाया था, तो मैंने मन भर खाया। बाबा का स्नेह इतना अधिक था कि कभी भी मैं उसे किसी भी तरह लौटाना चाहूं तब भी नहीं लौटा सकता। ऐसे अनेक प्रसंग हैं जिसे पूरी एक किताब बन सकती हैं। उनकी उदारता, स्नेह, शहर में मस्ती आदि के अनेक प्रसंग हुसेन जिन्होंने अकेले दम पर भारतीय समकालीन कला को अंतरराष्ट्रीय दर्जा दिलाया।

हमेशा युवा चित्रकारों और इधर जो चल रहा है, उनकी चिंता करते, पूछते, बताते रहते। उन्होंने युवा चित्रकारों के लिए पहला पुरस्कार स्थापित किया और उसका नाम 'बेन्दे – हुसेन' अवार्ड रखा। वे सिर्फ बेन्दे के नाम से शुरू करना चाहते थे, किंतु समिति की जिद के आगे उन्हें झुकना पड़ा। यह अवार्ड कई वर्ष तक दिया जाता रहा। अब इसकी समिति लगभग भंग हो गई।

रज़ा :–

राजा भी फोन करते थे और हमेशा 1 घंटे, 40 मिनट से कम बात नहीं करते। रजा भी मेरे पिता के अच्छे दोस्तों में से एक थे। कॉलेज में उनके जूनियर रजा को 1948 में लॅण्डस्केप करने की छात्रवृत्ति मिली थी, जिसमें पूरा देश घूमते हुए उन्हें लैंडस्केप करना था। इस दौरान वे 3 महीने हमारे घर रहे थे। इन तीन महीनों में वे ओंकारेश्वर, महेश्वर, उज्जैन आदि जगहों पर जाते–आते और हमारा घर बेस कैंप था। रजा घर पर रहे हैं, यह बात मेरे पिता ने मुझे कभी नहीं बताई। जब पहली बार रजा मेरे घर आए और सीधे अंदर जाकर एक कमरे में रखे बड़े तहत की ओर इशारा कर पिता से पूछा – मैं यहीं सोता था, इसी तहत पर। पिता ने कहा हां – तब मुझे पता चला कि रजा और पिता एक दूसरे को पहले से जानते हैं। रजा जैसा कलाकार होना मुश्किल है उनके जैसा उदार और विशाल हृदय पाना भी मुश्किल। रजा जो इतने बरस बाहर रहे अमेरिका की बर्कले यूनिवर्सिटी में पढ़ने गए। दुनिया भर में चित्र प्रदर्शित करते रहे, किंतु भीतर से वे ठेठ बुन्देलखण्डी रहे, अंत तक। रजा 60 वर्ष पेरिस में रहे और इस कदर अपने में रहे कि उन्हें पेरिस के बारे में बहुत ज्यादा पता नहीं था। उन्हें यह भी नहीं मालूम था कि पेरिस में सुबह 7:00 बाजार जाकर कुछ खरीदा जा सकता है। वह पेरिस में कुछ ही जगह अच्छी तरह जानते थे।

आप उनके मेहमान हैं तो वह एक बार जरूर ले आ जाएंगे इन जगहों पर। एक रास्ता जो उनके घर के नीचे ही था, उनके रंग ब्रश की दुकान जो घर के पास वाली गली में थी, एक पेस्ट्री की

दुकान जो घर के पास वाले चर्च के रास्ते में है, उनका कॉलेज लूब्र पोम्पेदु, और एक गली जहां उनकी गैलरी थी। 50 के दशक में, जब उन्हें प्री–दि ला क्रितीक पुरस्कार मिला था – 1956 में इन सब के अलावा एक और जगह इंदौर में एक अच्छे मेजबान है और हिंदुस्तान से आने वाले के लिए उनके पास ले जाने को सिर्फ एक हिंदुस्तानी रेस्टोरेंट हैं, जो शहजालिए लिए पर हैं – जिसका नाम 'इंदिरा' है। यह बहुत महंगा रेस्तराँ है। न जाने क्यों इस रेस्टोरेंट का नाम पेरिस भर के लोग इंदिरा कहते हैं, जबकि नाम इंद्र है।

खैर जब मैं गया तो जाहिर है उन्होंने घोषणा कि की शाम को इंदिरा चलेंगे। मैंने पूछा क्या है? तो वे बोले कि चलकर देख लीजिएगा। पेरिस का सबसे अच्छा हिंदुस्तानी रेश्तराँ है। उन्होंने उत्साह में एक दो मित्रों को और आमंत्रित कर लिया। जब दोपहर का खाना हम लोग साथ खा रहे थे, मैंने कहा यह हिंदुस्तानी रेश्तराँ नहीं होगा। वे चौक चौंक गए, आप जाए बगैर कह रहे हैं, मैंने कहा– मेरा अनुभव कहता है कि यह हिंदुस्तानी रेश्तराँ नहीं है होगा। आप इतने विश्वास के साथ कैसे कह रहे हैं। आप पहले तो कभी वहां गए नहीं हैं। मैंने कहा अच्छा मैं दो चीज आर्डर करूंगा और दोनों ही वे मना कर देंगे। विश्वास से भरे रजा उस दिन बेचौन रहे। आखिर तक शाम को रजा अपने दोस्तों के साथ रेस्टोरेंट की सबसे अच्छी मेज पर बैठे। अंगूरी मदिरा का लुफ्त ले रजा इस रेस्टोरेंट में पिछले 40 सालों से आ रहे थे और इसका मालिक उनके दोस्त बन चुका था। जब भी रजा आएंगे वह खुद मौजूद रहता, उनकी खातिरदारी के लिए। सो वह हाजिर था और साक़ी बना हुआ था। वह बहुत अच्छी उर्दू मिश्री हिंदी बोल रहा था। फिर बारी आई खाना मांगने की – रजा ने मेरी तरफ देखा और कहा मंगाये। मैंने अरहर की दाल लाने को कहा – वह बोले माफ कीजिए यह नहीं है। मेनें रजा से कहा एक चीज मना हो गई। आप लोग ऑर्डर करें। मैं आखिर में लूंगा।

सबके ऑर्डर के बाद मैंने कहा हरी मिर्च ला दीजिएगा। वह बोले – माफ कीजिए यह भी नहीं है। अब रजा की आंखें विश्वास से भर उठी। वे ठगा सा महसूस कर रहे थे। मैंने रेस्टोरेंट के मालिक से पूछा आप हिंदुस्तान में से कहां से हैं। वे बोले मैं हिंदुस्तान से नहीं पाकिस्तान से हूं। रजा की शाम अहसानियां थी। पेरिस में इतने सालों में रहते हुए जान न सके कि यह रिश्ता हिंदुस्तानी नहीं है। उसके बाद वह कभी उस रेश्तराँ नहीं गए। रजा युवा कलाकारों के लिए हमेशा मदद करने को तैयार रहते थे। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से हमेशा उनकी मदद तो की बाद में उनके लिए रजा अवार्ड भी शुरू किया जो दर वर्ष चित्रकला, कविता, नृत्य और संगीत के लिए दिया जाता रहा।

स्वामी :–

स्वामी ने जीवन में सिर्फ दो बार फोन किया। वह फोन बहुत कम इस्तेमाल किया करते रहे होंगे। उनका फोन दोनों बार संक्षिप्त और सिर्फ काम के लिए था। स्वामी ने जितना स्नेहा किया होगा उतना किसी से मुझे नहीं मिला, पिता से भी नहीं। वे मेरा सिर्फ ध्यान रखते थे, बल्कि मेरे भटकने को भी आगाह कर मुझे राह पर रखते। स्वामी की शख्सियत कुछ खास थी। एक तरफ वह बेहद साधारण ढंग से रहने वाले जिसमें ज्यादा दिखावा नहीं, दूसरी तरफ विलक्षण प्रतिभा जिसका परिचय शायद ही चले – यदि अवसर नहीं आया तो स्वामी के साथ कुछ अनहोनी भी होती रही और वह हुसेन रजा से भिन्न रहे। चित्र बनाने के मामले में यदि हुसेन 24 घंटे चित्र बनाते हुए मिल सकते हैं, तब रजा नियम से सुबह 8:00 से 2:00 तक फिर दोपहर का खाना खाकर एक झपकी के बाद पनः स्टूडियो में और 4:00 से देर रात तक नियमित चित्र बनाते हैं।

स्वामी साल के तीन या चार महीने लगातार काम करते और 20 या 25 चित्र बनाते। सधा हुआ काम जिसे देखकर लगता कि बनाने में स्वामी के साथ ऐसा भी कुछ घटता रहा, जो आमतौर पर दिखाई नहीं देता। उन्हें पेड़–पौधों से बात करते हुए देखा गया। उन्हें किसी पक्षी को बनाने की इच्छा हुई तो अमेरिका में ही पाया जाता, वह पक्षी स्टूडियो की बालकनी में आकर बैठ जाएगा, फिर गायब।

एक घटना जो मेरी देखी हुई है – जिसका जिक्र में यहां कर रहा हूं – स्वामी के घर के पीछे ही मेरा घर था। जिसमें हम किराए से रहते थे। अक्सर आते–जाते स्वामी गेट पर खड़े मिल जाते, कुछ बात होगी, कुछ साथ होगा, कभी कई दिनों तक मिलना ना होता। मैं 35, शामला हिल रोड वाला मकान था, जो अब अपार्टमेंट में तब्दील हो गया और अब इस सड़क का नाम बदलकर 35, जय स्वामी नाथन मार्ग हो गया। उन दिनों यहां सिर्फ तीन मकान थे, एक स्वामी वाला बांग्ला, दूसरा हमारे मकान मालिक का, घर तीसरा दो कमरों का मेरा मकान और पूरा बगीचा जिसमें तीन आम के पेड़ लगे थे, जो लगभग 70 साल पुराने फलदार।

एक रात में कहीं से लौटा। रात के 2:00 बज रहे होंगे। स्कूटर खड़ा करते हुए मैंने देखा कि स्वामी एक गाय के गले में हाथ डाले सड़क के बीचो–बीच बैठे हैं। मैं स्कूटर खड़ा किया और स्वामी के पास गया और देखा कि गाय और स्वामी दोनों की आंखों से झर–झर आंसू बह रहे थे। मैंने धीरे से कहा – स्वामी जी उन्होंने आँख के इशारे से ही चुप रहने का संकेत किया। मैं थोड़ी देर खड़ा देखता रहा। फिर दोनों को रोता छोड़ चला आया। स्वामी के साथ इस तरह के अनेक किस्से हैं, जो सामान्य किसी के साथ नहीं होते दिखते।

इन सबसे अलग स्वामी का देखना एक चित्रकार की तरह था और यह भी कि वह कला में आदिवासी लोक कला को समकालीन दर्जा दिलाने के पक्ष में थे और इसके लिए सार्थक जतन भी किया। आज स्वामी के कारण मध्य प्रदेश के लगभग चार लाख आदिवासी कलाकार अपनी आजीविका का साधन प्रतिभा को बनाए हुए हैं। यह काम पिकासो भी न कर सका या दुनिया का कोई भी चित्रकार। सभी ने आदिवासी कला को अपना, अपने लिए इस्तेमाल किया। मगर स्वामी ने उनको चित्रकार का दर्जा दिलवाया। स्वामी हुसेन और रजा ही नहीं, मुझे अंबर दास ज्योति भट्ट, तैयब मेहता, अकबर पद्मसी, राजकुमार, कृष्णा खन्ना आदि अनेक कलाकारों से जो स्नेह मिला है, उनसे मेरी दृष्टि को विकसित निश्चित करने में बहुत मदद की। ये तीनों ही कलाकार विशेष थे, विलक्षण थे, विधर्मी थे, विद्वान थे, विवेकी थे। उनके साथ कोई साधारण बात हो नहीं सकती थी।

चतुर्थ अध्याय

- अखिलेश जी का अमूर्त चित्रकला में योगदान

अखिलेश जी का अमूर्त चित्रकला में योगदान

अखिलेश जी का अमूर्त चित्रकला में अतुल्य योगदान है और उनके संवाद कला की वास्तविकता को पहचानने के लिए प्रेरित करते हैं, जैसा कि हर चित्रकार को उससे अवगत होना चाहिए। अखिलेश जी के सालों पुराने अनुभव भी कला को हर प्रकार से देखने को उजागर करते है। अखिलेश जी ने न केवल चित्रों में अपना योगदान दिया, बल्कि कला साहित्य में भी उनका अपार योगदान रहा और उन्होंने अपना लेखन शुद्ध भाषा में लिखा, जिन्हें समझना सरल है।

जीवन से जुड़े कुछ घटनाएं जो हर किसी से सामानता लिए हुए हैं और कला का प्रकृति से संबंध उनके चित्रों में प्रेरणा का कार्य करता है। अखिलेश जी ने विद्यार्थी जीवन से अपने प्रदर्शनियों की शुरुआत की और वह अंतरराष्ट्रीय स्तर तक अपने चित्रों को पहुंचाने में सक्षम हुए, जहां तक कोई – कोई ही पहुंच पाता है व उन्होंने देखने को समझा और देखने की क्रिया पर जोर दिया। हालांकि आज भी कोई देखने को सही से नहीं समझता है और आज के समय में जो स्वयं को चित्रकार कहते हैं वे देखने को केवल सामान्य बात मानते हैं और प्रदर्शनी में से 2 सेकंड या एक या दो मिनट देखकर जाने को आतुर होते हैं। बल्कि चाहे वे इसी काम से प्रदर्शनी देखने आए हो।

आमतौर पर देखा जाता है या हमारी स्वयं की शिक्षा प्रणाली में कला पर कम और उसके वर्गीकरण को ज्यादा उजागर किया है और वर्गीकरण की भी अपनी मान्यता है, उसे हर पहलू में लेकर आना उचित नहीं। अखिलेश जी इस विचारधारा को मानते हैं कि कला स्वतंत्र है। उसे वर्गीकरण की आवश्यकता नहीं और एक चित्रकार के लिए उसकी कला स्वतंत्रत होती है और बाकी धारणाएं केवल भ्रमित करती हैं। इनका असर देखने को मिलता है।

इस विषय पर भी उन्होंने बोला है और अमूर्तन को उन्होंने बहुत गहराई से समझ कर उस पर अपने विचार प्रकट किए हैं जब कला को पढ़ा जाता है, वह पढ़ने वाले को विशेष रूप से प्रभावित करती है, कि पढ़ने से पहले कुछ ओर दृष्टिकोण था और फिर पढ़ने के बाद उसमें परिवर्तन आना स्वभाविक हो जाता है। इसी प्रकार उनके संवाद पढ़ने से सामने वाले केब नजरिए बदल जाते हैं और फिर वह कला को किसी और ढंग से देखता है।

उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन कला को समर्पित किया है और विशेष कर कला को साधन के रूप में भी देखा जाता है। इस विचार पर वह कहते हैं – कला साध्य है, साधन नहीं। जो कि आज के युवाओं को कला के प्रति समर्पण को दर्शाता है। रंगों को समझने के लिए उन्होंने 10 वर्ष तक केवल

काले रंग में काम किया और कैनवास पर अमूर्तन में ऐसे ही नहीं रंग लगाऐ जाते इसके भीतर की विशेषता जानने में सालों लगते हैं और जो कि उनके चित्रों से साफ अनुमान लगाया जा सकता है।

उसके पीछे छुपा कई सालों का अनुभव, उन्होंने रंगों पर भी अपने विचार प्रकट किए हैं कि रंगों को चुनना कोई आसान बात नहीं है। यह चुनौती पूर्ण है और यह हर कलाकार के सामने आता है। आज की विद्यार्थी व्यवस्था भेड़–चाल है और वह दूसरों के द्वारा किए गए प्रयोगों पर काम करती है। वह खोज से घबराते हैं, बल्कि कलाकार को और कला को स्वतंत्र होना चाहिए।

अखिलेश जी के संवाद हमें स्वतंत्र रूप से कार्य करने की प्रेरणा देते है। और विशेषकर विद्यार्थियों को उनके बारे में पढ़ने व जानना चाहिए। भारतीय कला में उनका योगदान शब्दों में प्रस्तुत किया जाए कम होगा और उनके अमूर्तन को जानकर यथार्थ चित्र करने में हिचकिचाहट आ सकती है। उनके शब्द पढ़ने वाले पर विशेष प्रभाव डालते हैं और हम भविष्य में भी और कलात्मक ज्ञान की आशा उनसे करते हैं।

पंचम अध्याय

- संवाद

संवाद

प्र01. आपका जन्म कब हुआ ?

उत्तर : मेरा जन्म 28 अगस्त, 1956 को इंदौर में हुआ था।

प्र02. आपके परिवार में कोई कला से संबंधित था या आप ही कला से सर्वप्रथम प्रभावित हुए?

उत्तर : मेरे पिताजी (रामजी वर्मा) चित्रकार थे, सो हमारे घर अजंता, एलोरा, खुजराहो आदि मंदिरों की पुस्तकों के साथ–साथ बूँदी, बासोहली, कांगड़ा, राजपूत, मालवा, मुगल, जैन, मिनिएचर और स्थापत्य और और उन चित्रों की ही स्मृतियाँ हैं।

प्र03. प्रथम कब आप चित्रों से आकृष्ट हुए ?

उत्तरः जैसा की बचपन में उन पुस्तकों में देखी गई मूर्तियों, मंदिरों के स्थापत और उन चित्रों की ही समृतियां हैं, किताब में देखे गए चित्रों से स्थापत्य और उन चित्रों की ही समृतियां हैं। किताब में देखे गए चित्रों से स्थापत्त की विराटता और सूक्ष्मता का उतना एहसास नहीं हो पाया था। किताब में 100 फीट के मंदिर का चित्र 10 इंच में छपा होता है।

प्र04. क्या आप हमेशा से चित्रकला बनाना चाहते थे और आपको कला की प्रेरणा कहां से मिली ?

उत्तरः मेरे पिताजी चित्रकार थे। घर में सब चित्र बनाते थे और मैं वही नहीं करना चाहता था, जो सब कर रहे हैं। हमारा संयुक्त परिवार था। घर में हम 10 बच्चे थे और सभी चित्र बनाते थे। यह मुझे सुहाता न था। मैं घर से बाहर खेल के मैदान में हुआ करता था, किंतु चित्र नहीं बनाता था। मैं सबसे अलग पता नहीं किन खेलों या चीजों में व्यस्त रहता था। कॉलेज के द्वितीय वर्ष में एक दुर्घटना के कारण मेरे पैर की **Skin Bone** में फैक्चर हुआ और परिणामस्वरुप में तीन महीनों के लिए बिस्तर पर था। इस दौरान मैंने पाया कि एक ही काम मैं बहुत अच्छे से कर सकता हूं, वह चित्र बनाना है। इसी दौरान मैंने पाया कि मैं चित्रकार हूँ। बस इसके बाद मैं बाकी सब छोड़ दिया और चित्रकला पर एकाग्र हुआ।

प्र05. आरंभ में किन चित्रकारों से मिले और कोई एक चित्रकार जिससे आप बहुत प्रेरित हुए ?

उत्तरः आरंभ से हमारे घर अनेक चित्रकार, कवि, संगीतकार, नाटककार आया करते थे। प्रसिद्ध चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन पिता के दोस्त थे। दोनों एक ही कॉलेज में पढ़ते थे। दोनों की स्कूली शिक्षा भी साथ हुई थी। हुसैन हमारे घर खास तौर पर सुबह आ आया करते थे, उनके हाथ में जलेबी का टोकरा होता था और हम सब उनके साथ बैठकर उनकी बातें सुनते और जलेबी खाते और मौज करते। उस वक्त प्रेरित होने का कोई कारण नहीं था। बाद में भी कभी हुसैन के चित्रों से प्रेरणा नहीं ली। बस प्रकृति की खूबसूरती ही प्रेरित करती है।

प्र06. आपने कला को ही क्यों करियर के रूप में चुना ?

उत्तर : मैंने कला को नहीं चुना, कला ने मुझे चुना। कला में कोई कैरियर नहीं होता। कला के लिए समर्पण जरूरी है। कला से कुछ सांसारिक लाभ हासिल करने की सोचना ही मुझे गलत लगता है। कला साधन नहीं, साध्य है। इसे पाना नहीं, देना होता है। इसका परिष्कार एक लंबे समय की साधना की मांग करता है, जिसके लिए धैर्य की जरूरत होती है।

प07. चित्रकला में आप किस तकनीक का प्रयोग करते हैं ?

उत्तरः चित्रित करने के लिए मैं ब्रश, रोलर और कभी–कभी पैलेट नाइफ इस्तेमाल करता हूँ।

प्र08. चित्रकला करने के लिए आप कौन सा समय चुनते हैं, दिन या रात में ?

उत्तर : सुबह 4 बजे अपने स्टूडियो में काम शुरू करता हूँ। लगभग 9 बजे तक बिना किसी व्यवधान के उसके बाद बीच में कुछ दुसरे काम करते हुए, शाम तक स्टूडियो में रहता हूँ।

प्र09. अपने अमूर्त को ही क्यों विषय चुना ?

उत्तरः अमूर्त विषय नहीं, भाव है। कॉलेज में पढ़ाई के दौरान एक मिनिएचर चित्र देखने में आया। यह चित्र अभिसारिका का है। अभिसारिका वह प्रेमिका है जो अपने प्रेमी से मिलने खुद जाती है। इस चित्र में एक अंधेरी रात में घने जंगल, जानवर, शेर, चीते, भालू, भूत–चुड़ैल आदि भी हैं जो उसे ललचायी नजरों से देख रहे हैं। निर्भय वह इन सबसे बेफिक्र अपनी चाल में चली जा रही है। मेरा ध्यान इस तरफ गया कि अंधेरी रात में, घनें जंगलों के बीच वह अपनी राह कैसे पा रही है? उसके हाथ में दीया नहीं है। आसपास कोई मशाल नहीं जल रही, फिर वह अपना रास्ता कैसे देख रही है। ऊपर आकाश

में बादल छाए हैं और वहां बिजली कड़क रही है, तो शायद वह उस बिजली की रोशनी में अपना रास्ता देख रही है। किंतु वहां बिजली की जगह दो लहराते सांप चित्रित हैं। माने रोशनी वहां भी नहीं है। मुझे यह एहसास हुआ कि वह अपने प्रेमी से मिलने की कामना के प्रकाश में अपना रास्ता देख रही है। इससे बड़ी अमूर्तन की ओर बढ़ने लगा।

प्र10. चित्रकला के आरंभिक दिनों में आपका कला के प्रति क्या दृष्टिकोण था और अब क्या है ?

उत्तरः कला के प्रति मेरा दृष्टिकोण उस वक्त भी सही था कि कला साधन नहीं, साध्य है। आज भी वही है।

प्र11. आपकी रहस्य युक्त आकृतियाँ क्या दर्शाती हैं ?

उत्तरः मेरे चित्रों में जो भी रहस्य दिखता है, वह दर्शक का अपना रहस्य है। मेरे सभी चरित्र उजागर हैं। कुछ भी नहीं छुपाते। वे सब कुछ दिखा रहे हैं, किंतु दुर्भाग्य से हमारे देश में चित्र देखने की तमीज अभी तक आई नहीं। विद्यार्थी भी जो सीख रहे हैं जिन्हें देखकर ही सीखना है, वे चित्र देखना नहीं जानते। यह दुर्भाग्य है कि देश में कोई कला समीक्षक आजादी के बाद से अभी तक नहीं हुआ। कला पर बात करना नहीं आता। शिक्षक भी अब उतनी रुचि नहीं रखते, न उनकी दिलचस्पी होती है कि विद्यार्थी को देखने का महत्व समझाएं। मेरे चित्रों में कोई रहस्यमयी आकृति नहीं होती और जो कुछ भी दिखता है, वही उसका अर्थ होता है। 1905 में, प्रख्यात फ्रांसीसी चित्रकार सेजां ने कहा था कि – चित्र किसी के बारे में नहीं होते, वे अपने बारे में है।

प्र12. किस आंतरिक सूक्ष्म भावना से प्रेरित होकर चित्र बनाते हैं ?

उत्तरः मैं किसी आंतरिक भावना के वशीभूत चित्र नहीं बनता। मैं चित्र नहीं बनता, मैं चित्र बनाता हूँ और मेरे लिए चित्र बनाना लुका–छिपी के खेल की तरह हैं, जिसमें रंग, आकार और रेखा मेरी मदद करते हैं। मैं रंग के उन छिपे हुए पदों को उजागर करने की कोशिश करता हूं जो रंग संवाद से पैदा हो रहे हैं।

प्र13. आप कला से क्या समझते हैं ? आपकी दृष्टि में कला क्या है ?

उत्तर : मेरी दृष्टि में कला साध्य तो है ही, साथ ही वह बेहतर मनुष्य बनने का मौका भी देती है।

प्र14. 10 वर्ष तक काले रंग में कार्य करने का आपका अनुभव कैसा रहा ?

उत्तरः 10 वर्ष तक काले रंग में काम करने के दौरान मुझे एहसास हुआ कि रंग में टोन का महत्व है, किसी भी रंग को जानने के लिए उससे बनने वाले अनंत टोन उसका रहस्य है। दो रंग को पास–पास रखना ही महत्व नहीं है, बल्कि उन दो रंगों के कौन से टोन हैं, जिससे समरसता है। यह एक महत्वपूर्ण पक्ष है जिससे अनेक चित्रकार अनभिज्ञ रहते हैं और रंगों से डरते हैं। वे जीवन भर एक सुरक्षित रंग योजना में काम करते हैं, उसके बाहर नहीं आते। उनके लिए रंग अजूबा है, जिन्हें छूना नहीं चाहिए और वह जीवन भर उन्हीं रंगों को नहीं लगाते और कभी लगाया भी तो डरते–डरते लगाते हैं। यह उनके चित्रों को देखकर पता चलता है।

प्र15. आप इस विचार से सहमत हैं कि एक चित्रकार अपने व्यक्तित्व को कैनवास पर चित्रित करता है?

उत्तरः यह कोई विचार नहीं है, यह एक मान्यता है कि कलाकार अपने व्यक्तित्व को प्रकट करता है। यह मान्यता हमने साहित्य से उधार ली है, जिस पर कभी विचार नहीं किया। साहित्य में ऐसा मानते हैं कि लेखक का लेखन उसके व्यक्तित्व का प्रकटन है, उसके चरित्र में वह स्वयं अनजाने चला आता है। अब मोरादी नामक इतावली चित्रकार ने जीवन भर बोतल के चित्र बनाएं। इससे क्या प्रकट होता है? स्टिल लाइफ। दृश्य चित्रण आदि अमूर्त विषय है। चित्रकार की अपनी पसंद ना पसंद है। अनेक मौके ऐसे आते हैं जहां वह अमूर्त ही रह आता है, तब ऐसे किसी बात को थोपना गलत ही लगता है मुझे।

प्र16. चित्रकला के अलावा किसी और कार्य में भी आपकी रुचि है ?

उत्तरः चित्रकला का संबंध अन्य कलाओं से गहरा है। बाकी समय में संगीत सुनना, किताब पढ़ना, नाटक देखना आदि सब करता हूँ।

प्र17. कला आपके जीवन के अन्य क्षेत्रों में किस प्रकार सहायता करती है ?

उत्तर : चित्रकला से आए परिष्कार मेरे लिए महत्वपूर्ण है और यह समझ जीवन के हर मोड़ पर मदद करती है।

प्र18. एक कलाकार के रूप में आप सफलता को कैसे परिभाषित करते हैं ?

उत्तरः इस प्रशन में यह भाव है की चित्रकला साधन है, जिसे मैं स्वीकार नहीं करता। सफलता का ऐसा कौन–सा मानदंड है जो कलाओं के लिए उचित जान पड़ता हो। कला एक ऐसी साधना है जिससे कुछ हासिल नहीं होता। उसमें वही बात है कि "जो जलाते घर अपणा, चले हमारे साथ"। सफलता को हम किस तरह देखते हैं यह जरूरी है। मेरे लिए रंग ठीक से लगा देना सबसे बड़ी सफलता है।

उपसंहार

अखिलेश जी जैसे चित्रकार से मिलना और संवाद करना हमारे लिए सौभाग्य की बात है, क्योंकि अखिलेश जी जैसे चित्रकार बहुत कम देखने को मिलते हैं और इससे यह वर्णन होता है कि उनके उच्च दृष्टिकोण को समझना हमारे लिए जरूरी हो जाता है। अखिलेश जी और उनके चित्रों विशेष भिन्नता लिए हैं जो कि उनके सालों के अनुभव को दर्शाते है। वे कभी चित्रकार नहीं बनना चाहते थे, या यूं कह लीजिए कि उन्होंने चित्रकार स्वयं को स्वीकार नहीं था। पर वे भारत के प्रसिद्ध चित्रकारों में से एक हैं। उनके बारे में जानना, पढ़ना भी सौभाग्य की बात है और कई लोग इससे वंचित रह जाते हैं। कारण वह एक ईमानदार चित्रकार हैं और वह हर विषय पर तर्क देते हैं और उनके तर्कों को गलत साबित नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह कला के प्रति सच्चे चित्रकार हैं और वे कल को साधन नहीं, साध्य मानते हैं, जो कि हर कला प्रेमी के लिए यह विचार प्रभावित करने वाला है।

कला को वे गहराई से समझते हैं और फिर अपने विचार प्रकट करते हैं। अखिलेश जी बचपन से ही महान कलाकारों के बीच बड़े हुए और यूं नहीं कहा जा सकता कि वह एक चित्रकार से प्रभावित हुए, पर जिससे भी वह मिले, उन्होंने बहुत कुछ सीखा। अखिलेश जी के लिए वे चित्रकार प्रेरणा थे और आज के समय में अखिलेश जी हमारे लिए प्रेरणा है और वे कला में वर्गीकरण को नकारते हैं।

अखिलेश जी के कला कार्य पर शोध करके अंत में, मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं कि चित्रकार तो आज बहुत हैं और सबकी अपनी–अपने प्रतिभा है। सबका भिन्न दृष्टिकोण और विचार भी भिन्न है। वे कई मायनों में मिलते–जुलते हैं, पर अखिलेश जी उन तारों में ध्रुव तारा है, जो अपनी विशेषता लिए हुए हैं। उनके विचार सामान्य नहीं है। उन विचारों में सामने वाले को गहराई से प्रभावित करने की क्षमता है। यह मैंने स्वयं अनुभव किया है। वे हर विषय पर बोलते हैं और अपने विचार सांझा करते हैं। वे सच बोलने से पीछे नहीं हटते और अपने तर्क सफलतापूर्वक देते हैं और हर युवा को उनके बारे में और उनकी कला दृष्टिकोण को जरूरी पढ़ना चाहिए और उनकी प्रदर्शनियों में भागीदारी व प्रदर्शनीयों, शिविर उनके परिश्रम को दर्शाते हैं।

मैं आशा करती हूँ कि अखिलेश जी जैसे चित्रकार हमें भविष्य में भी देखने को मिले।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आधुनिक चित्रकला का इतिहास, रवि साखलकर 2009, प. – 9, 42, 80, 329
2. भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास, डॉ रीता प्रताप, 2009 प. – 1, 7
3. आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास, डॉ. राकेश कुमार सिंह, 2012, प. – 1, 84
4. कलाकार का देखना, अभिषेक कश्यप, 2018, प. – 10, 11, 59
5. इस प्रकार अखिलेश से संवाद, राजेश्वर त्रिवेदी, 2023, प. – 30, 36

चित्र संग्रह सूची

क्रमांक न0	–	चित्र
01	–	ला' हामोनिया इनविजीवल ड्रू
02	–	ग्रीन वेलकम ग्रीन
03	–	ईटइज ए लोंग वे टू गो टू येलो ओचर
04	–	ब्लैक वंडरिग
05	–	ब्लू एस अ ब्लू लाइन
06	–	ग्रीन अगेन वेलकम ग्रीन
07	–	ब्राऊन वीशप्रींग
08	–	एट अर फलेस वी फांउड वाइड
09	–	सरटीफाइटिड कॅलर
10	–	पिंक एस अ ब्लू
11	–	इन द मैमरी ऑफ रेड
12	–	पिंक कन्नैकशनस
13	–	ब्लैक हॉल
14	–	इन द कॉफी हाऊस
15	–	विटविन यू एंड मी
16	–	वेरीफीकेशन ऑफ अ कलर
17	–	ब्रॉबन वीशप्रींग
18	–	वॉटिंड टू वी राइट
19	–	इन द मैमरी ऑफ लैममेन येलो
20	–	अगेन ट्राइड टू बी लैममेन येलो
21	–	रील थिंक अबाउट येलो
22	–	थिंकिग अबाऊट कॉबाल्ट ब्लू
23	–	कैन वी कॉल इट कॉबल्ट ब्लू
24	–	दिस ब्लू वॉटेड टू बी डेट ब्लू
25	–	मिसिंग येलो कॉलस ब्लू
26	–	ब्लू थिंकिग अबाउट रेड
27	–	वेन इट वॉज ऑल ऑरेज
28	–	रेड बीलिव इन रेड
29	–	इन द अबसेंस ऑफ रेड

ग्रीन वेलकम ग्रीन

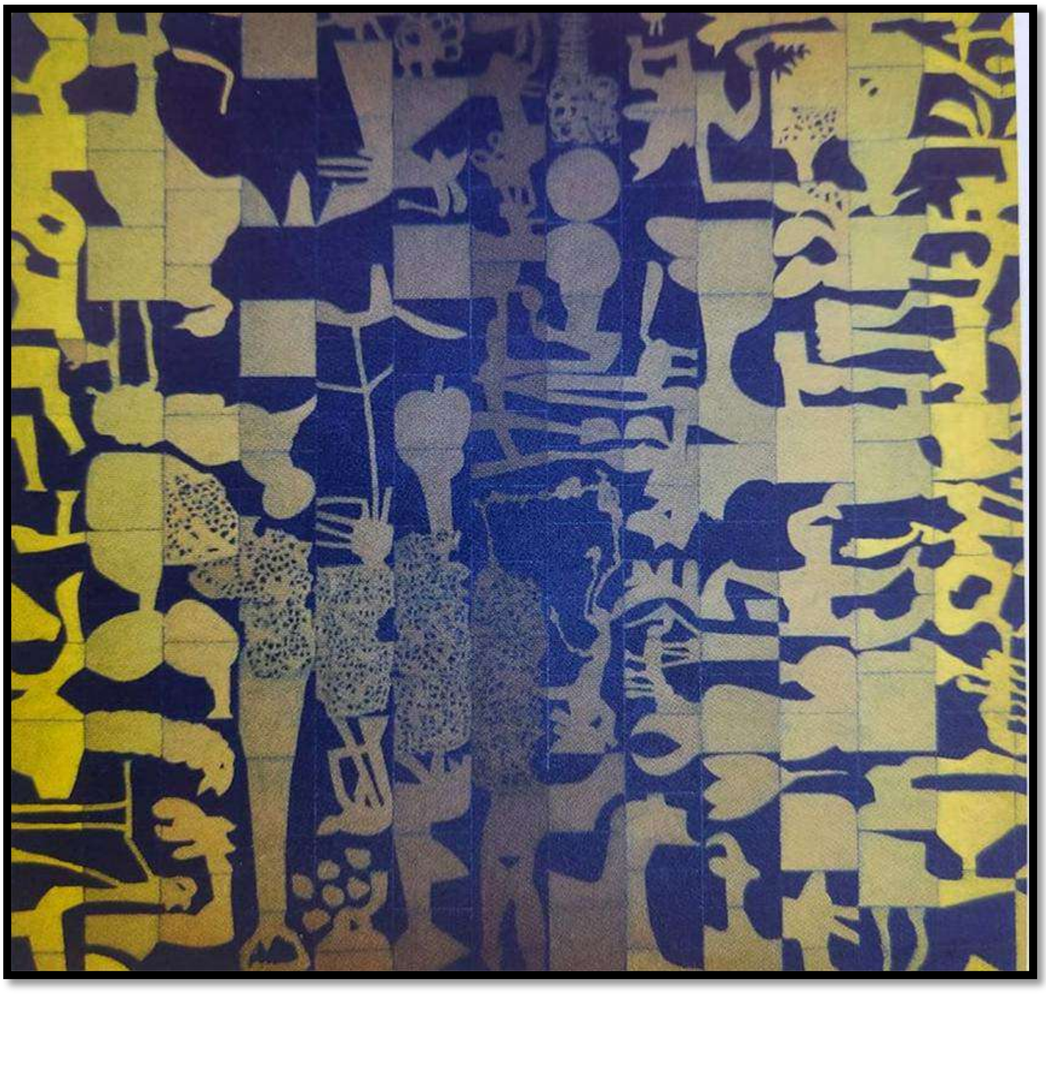

ईटइज ए लोंग वे टू गो टू येलो ओचर

ब्लैक वंडरिग

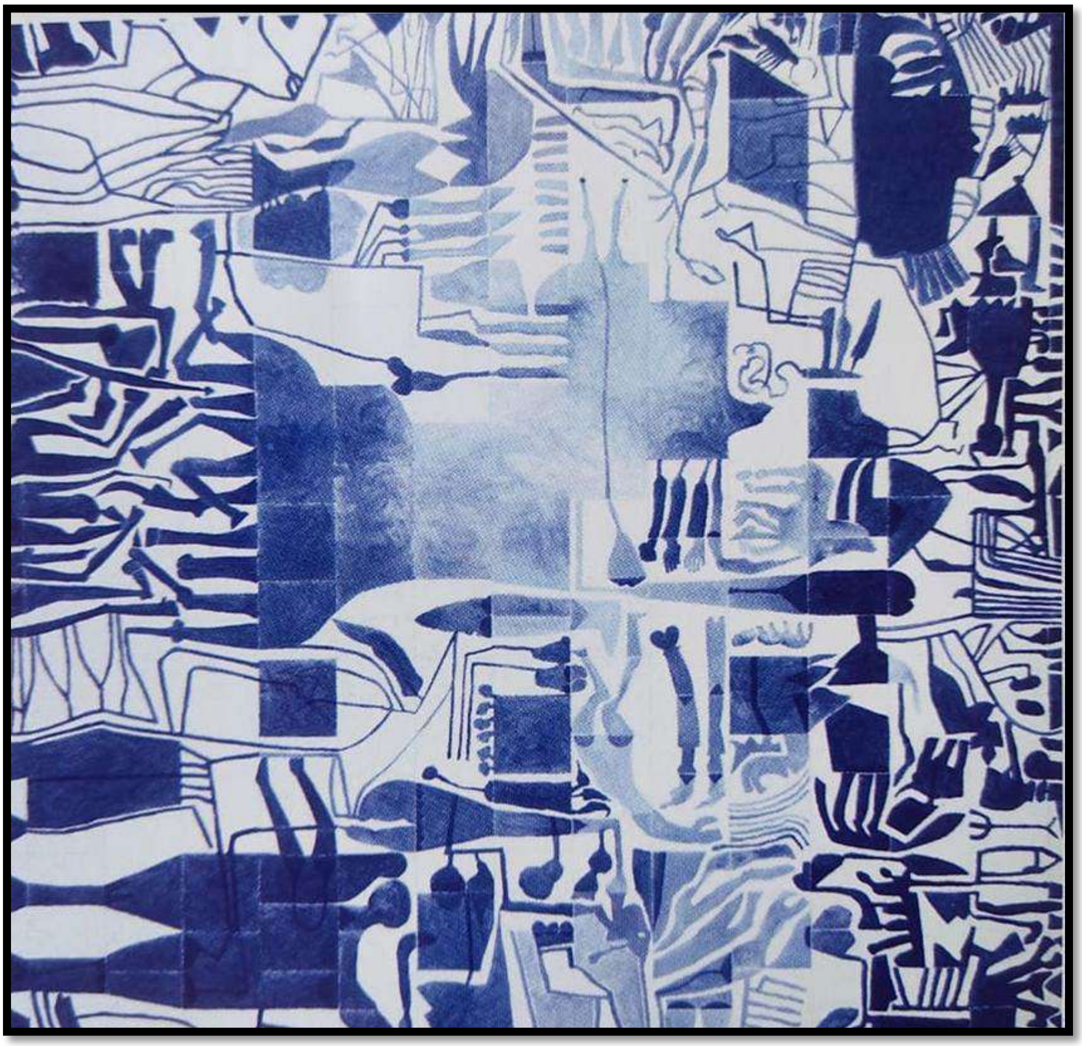

ब्लू एस अ ब्लू लाइन

ग्रीन अगेन वेलकम ग्रीन

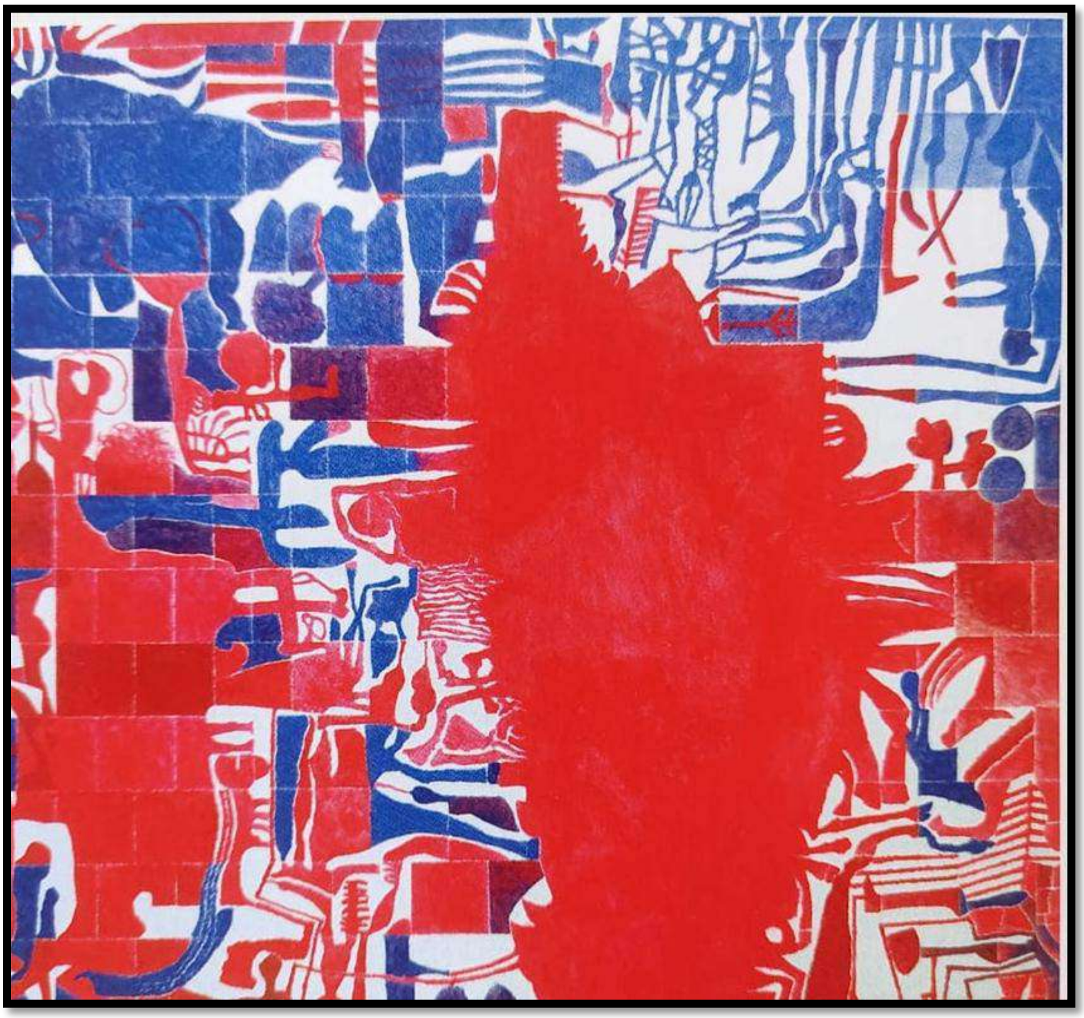

ब्राऊन वीशप्रींग

एट अर पलेस वी फांउड वाइट

सरटीफाइटिड कॅलर

पिंक एस अ ब्लू

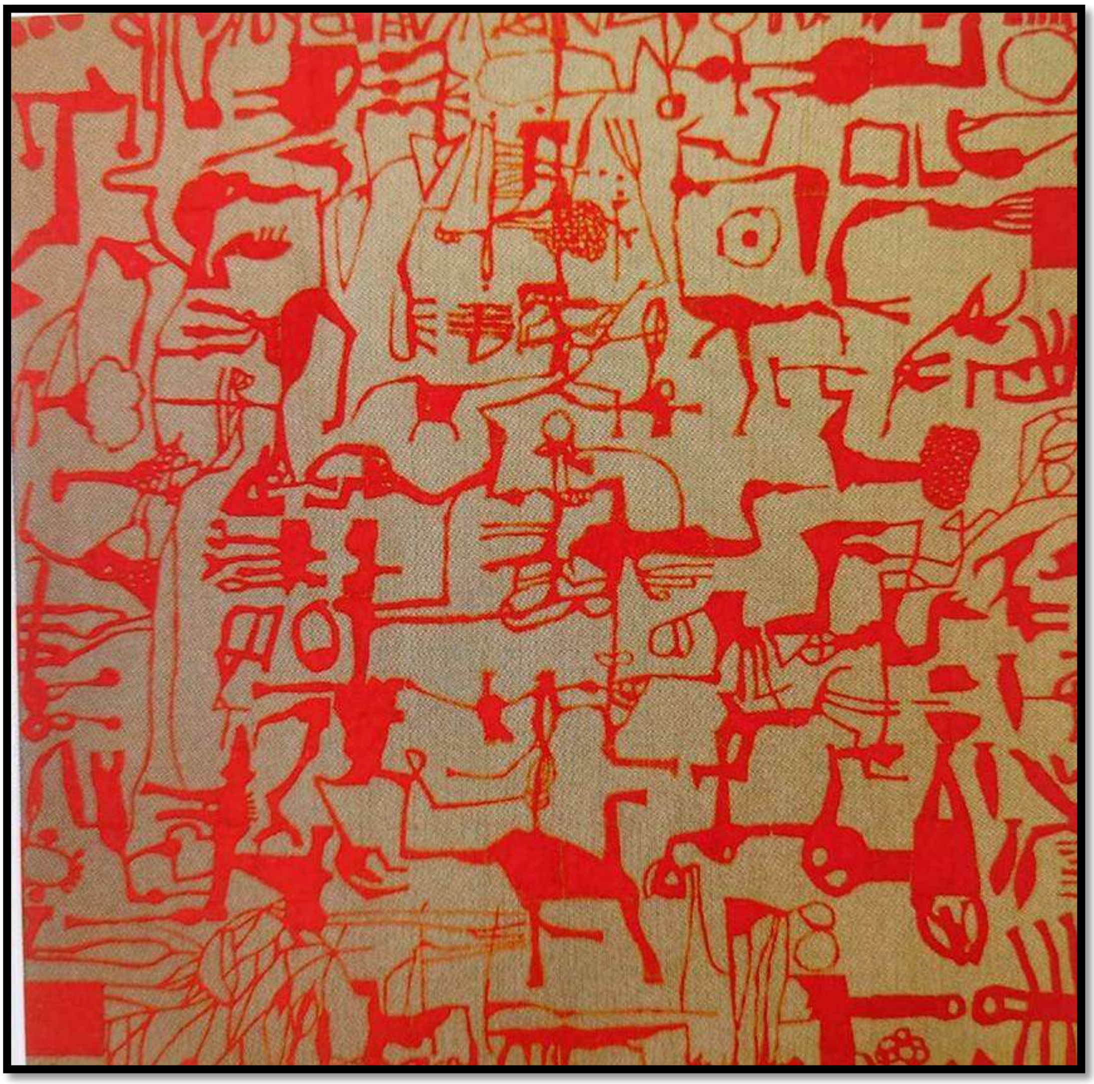

इन द मैमरी ऑफ रेड

पिंक कन्नैकशनस

ब्लैक हॉल

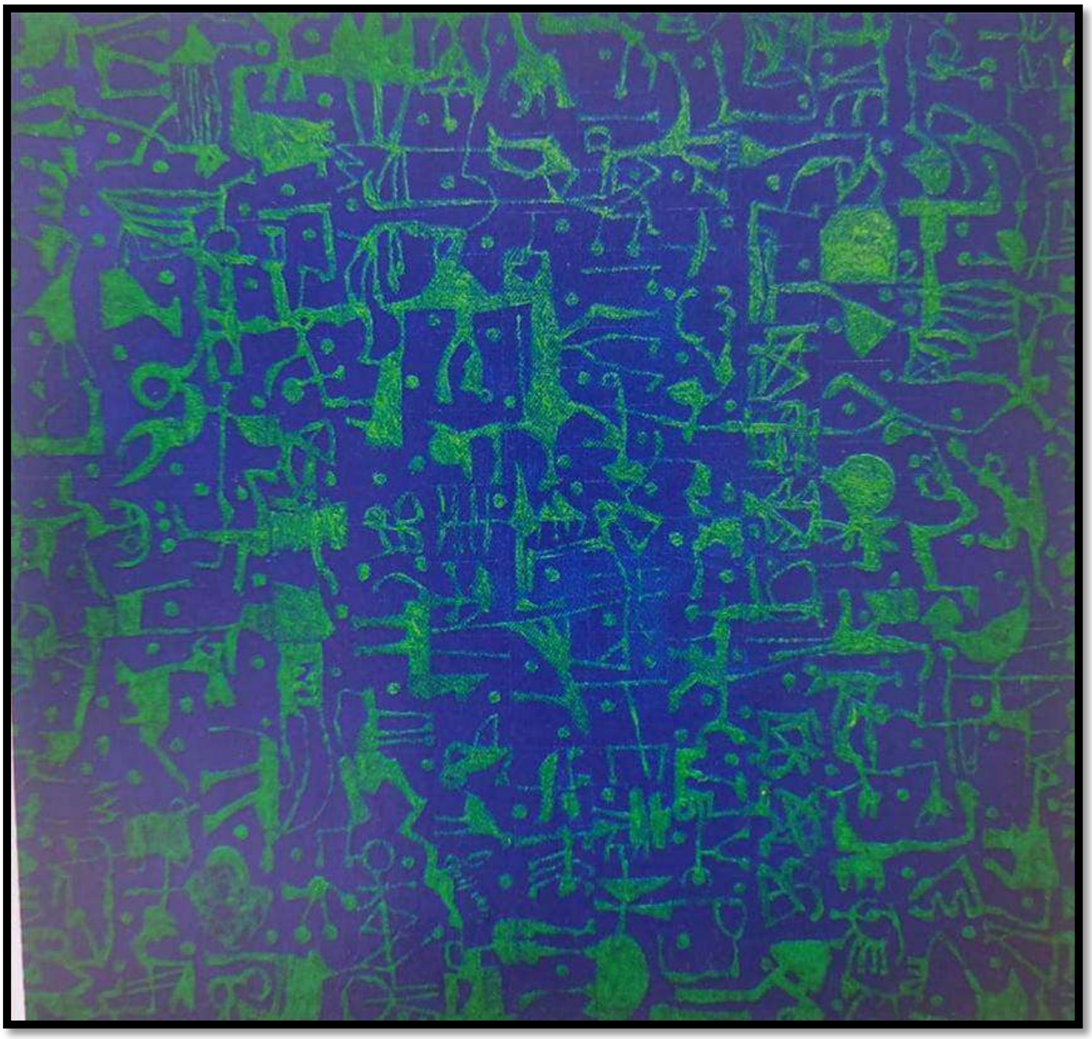

इन द कॉफी हाऊस

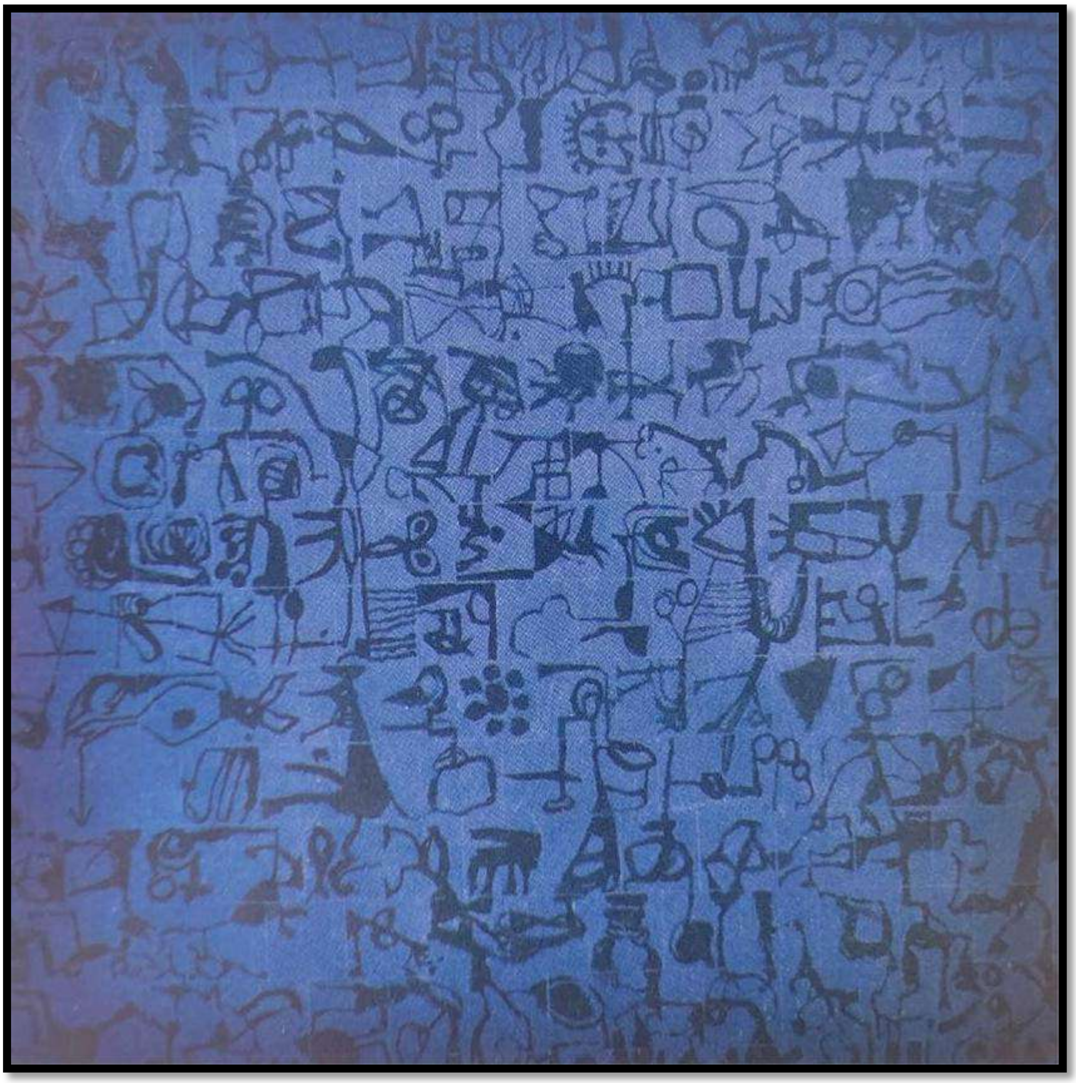

बिटविन यू एंड मी

वेरीफीकेशन ऑफ ए कलर

ब्रॉन वीशप्रींग

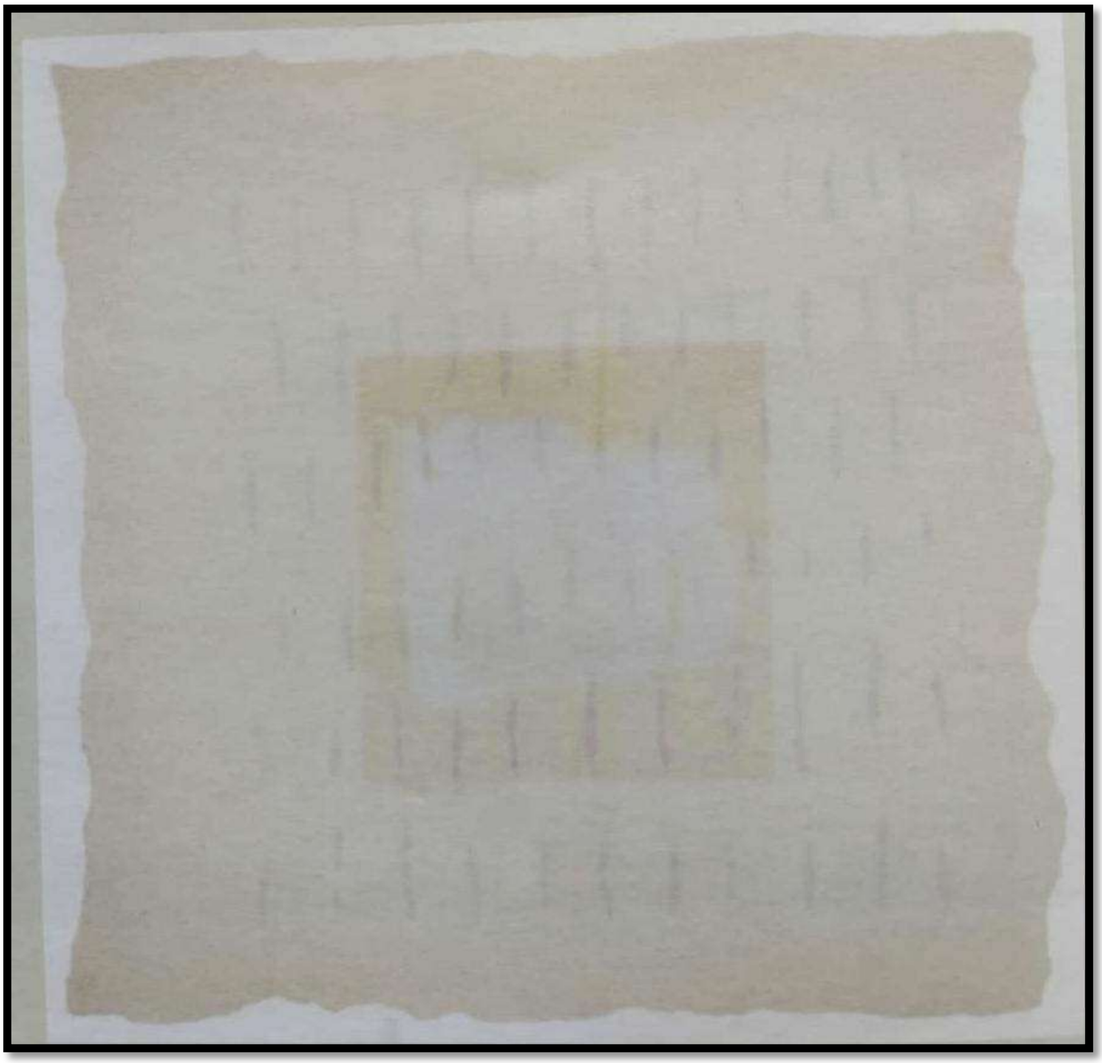

वॉटिंड टू वी राइट

इन द मैमरी ऑफ लैममेन येलो

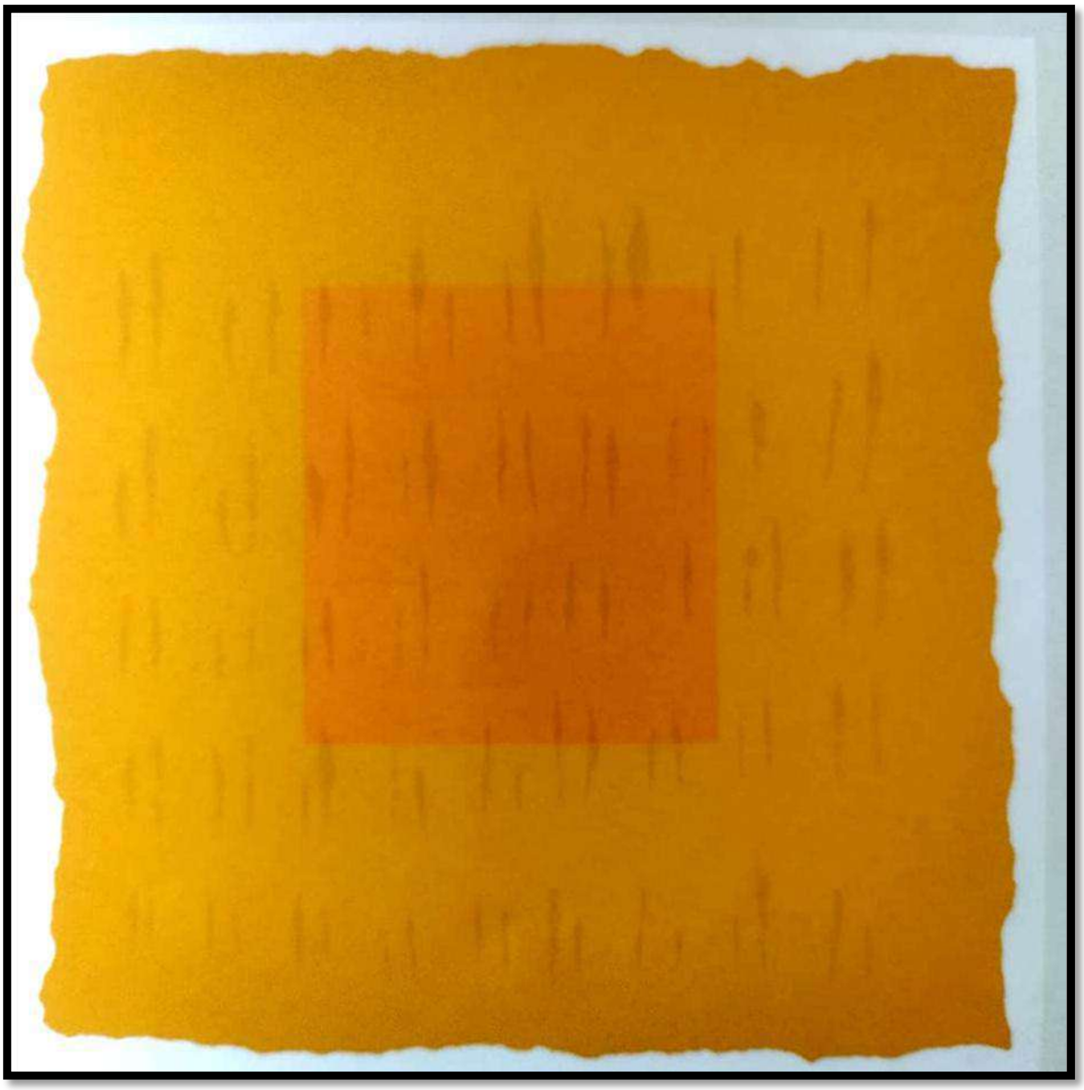

अगेन ट्राइड टू बी लैममेन येलो

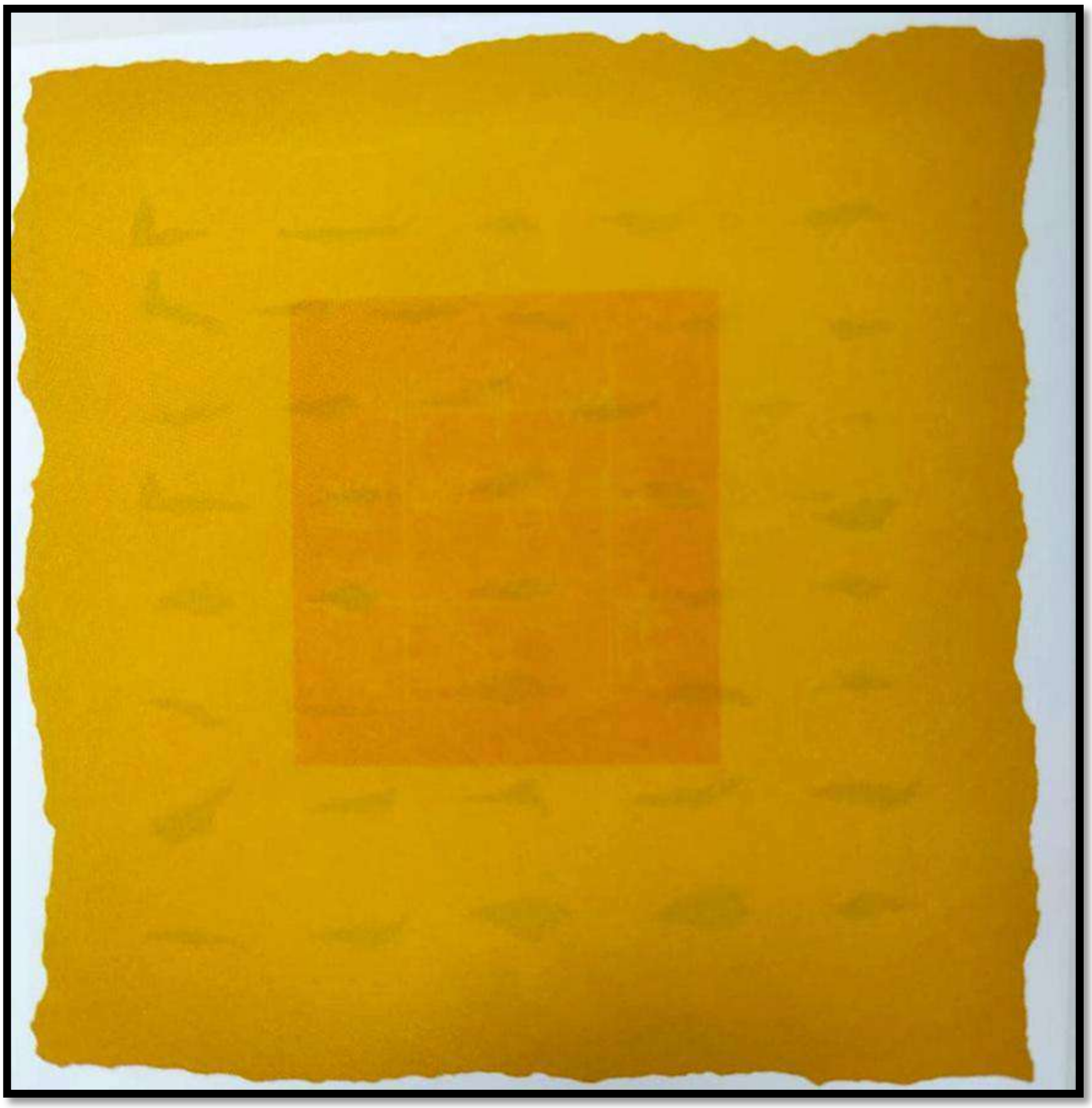

वील थिंक अबाउट येलो

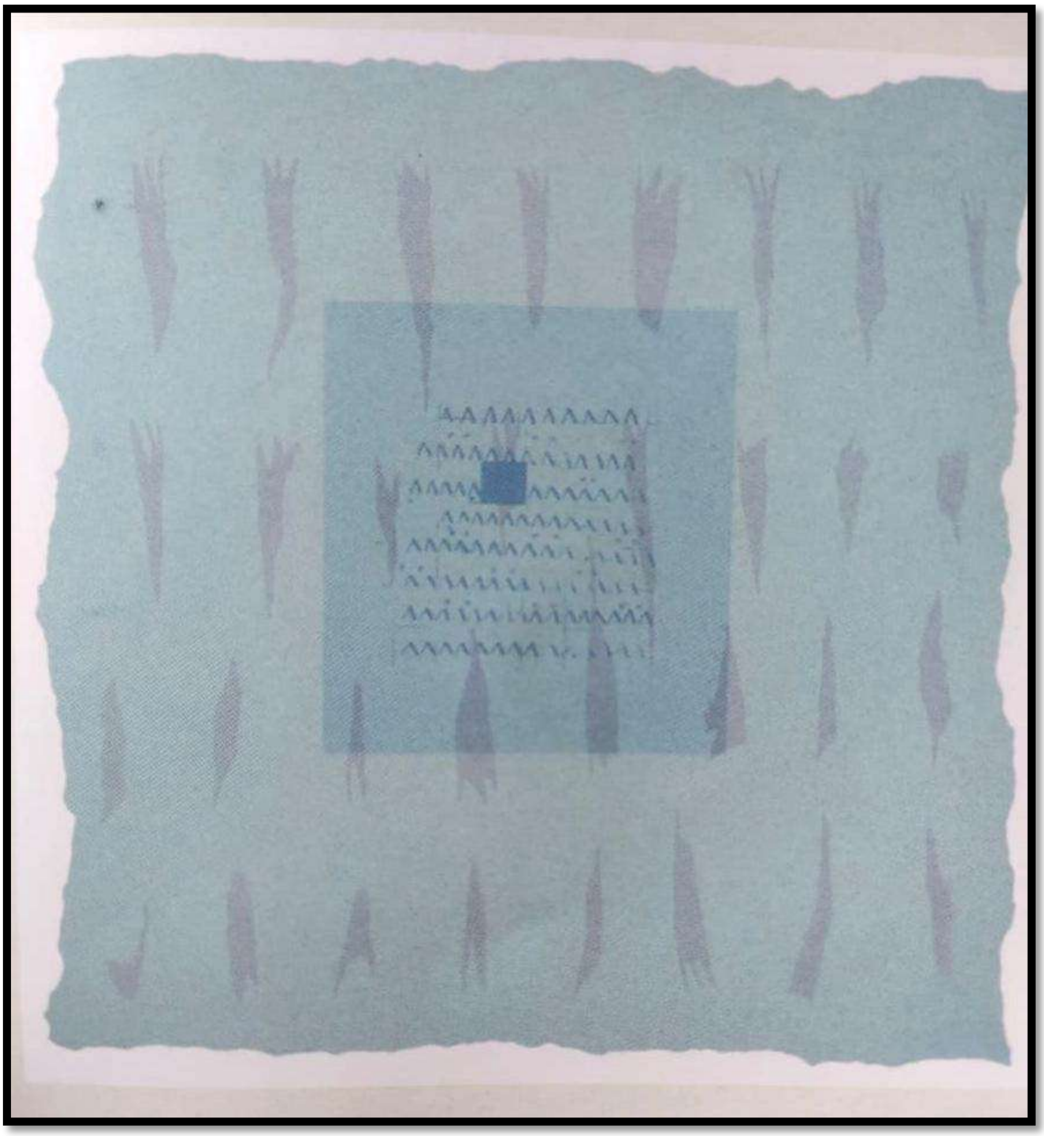

थिंकिग अबाऊट कॉबाल्ट ब्लू

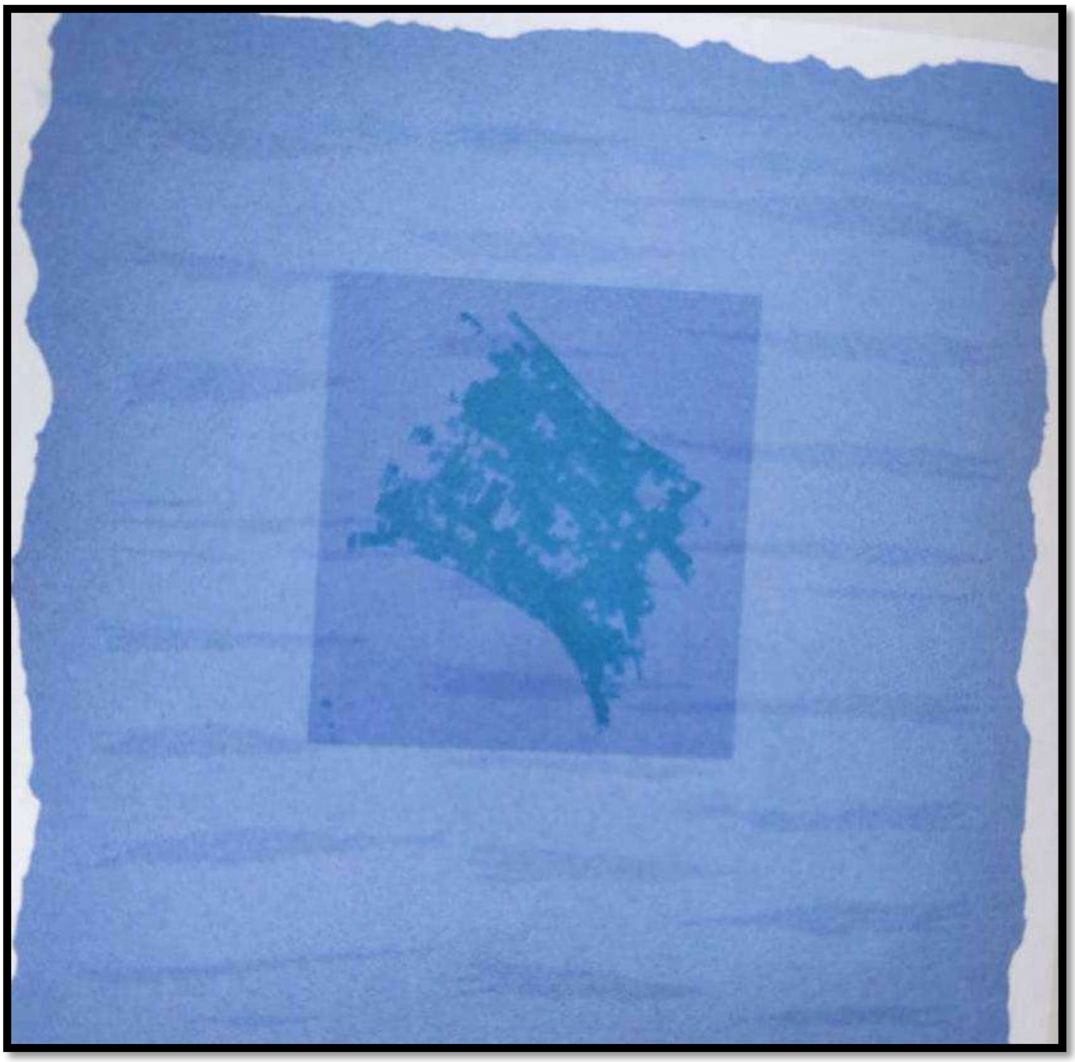

कैन वी कॉल इट कॉबल्ट ब्लू

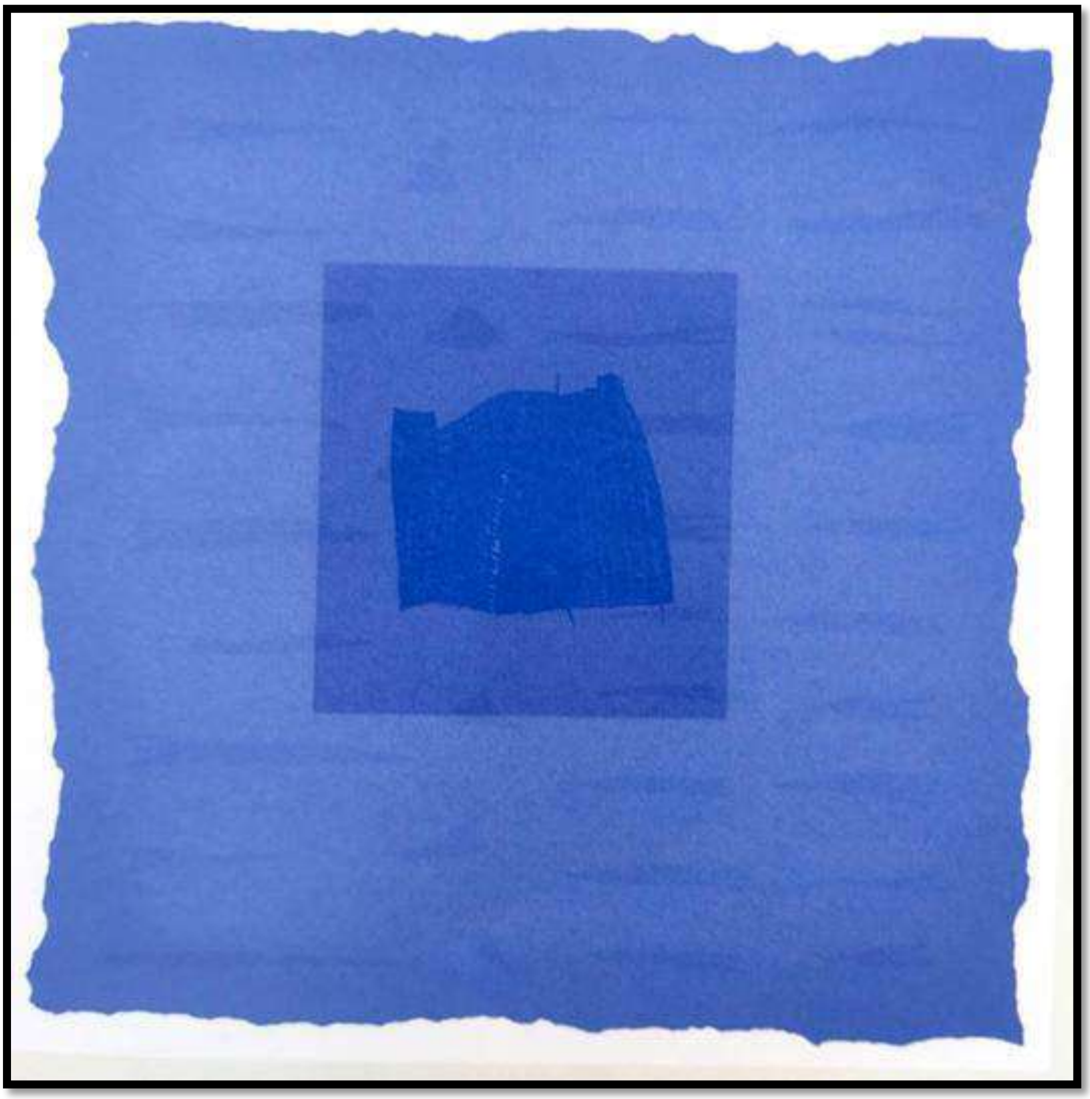

दिस ब्लू वॉटेड टू बी डेट ब्लू

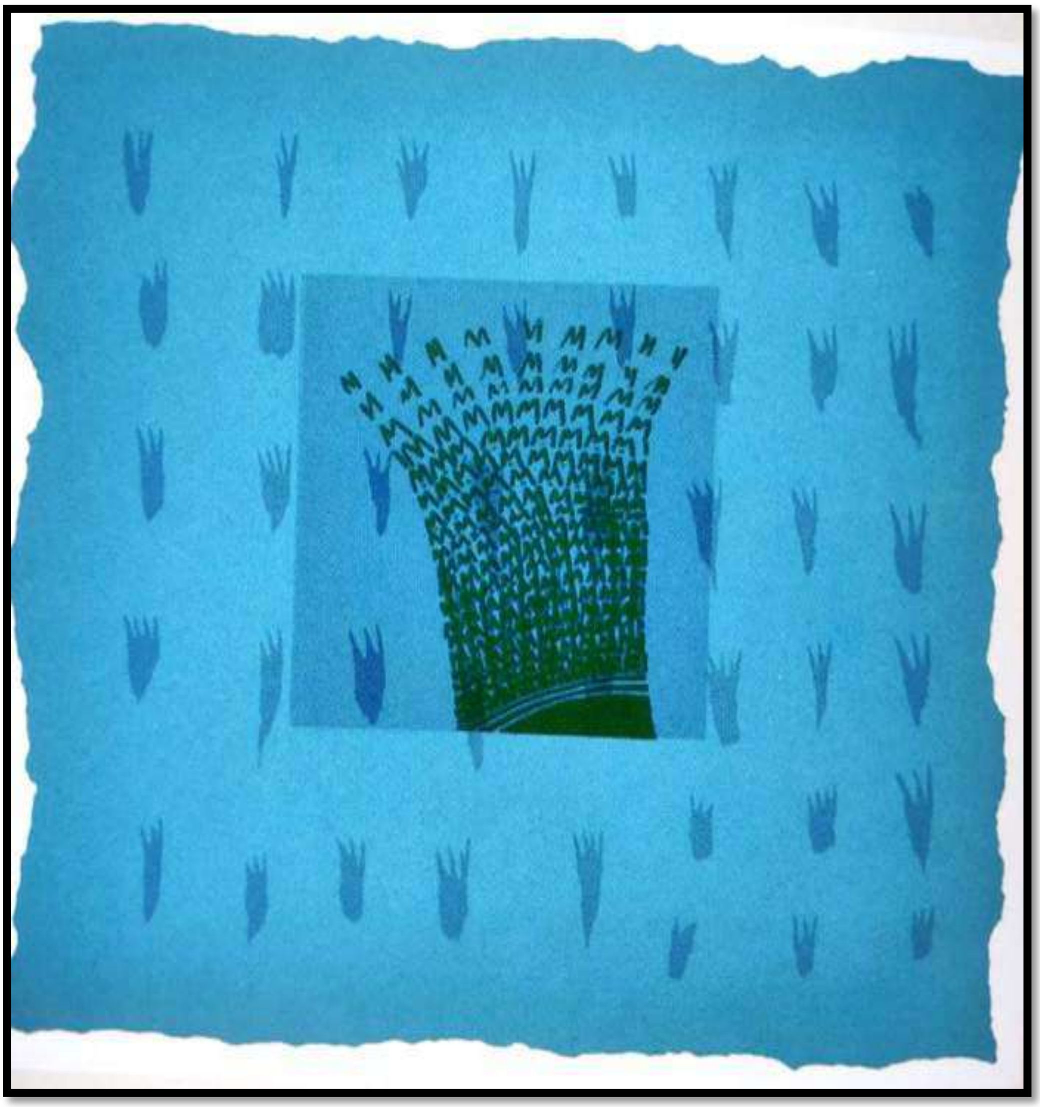

मिसिंग   येलो कॉलस ब्लू

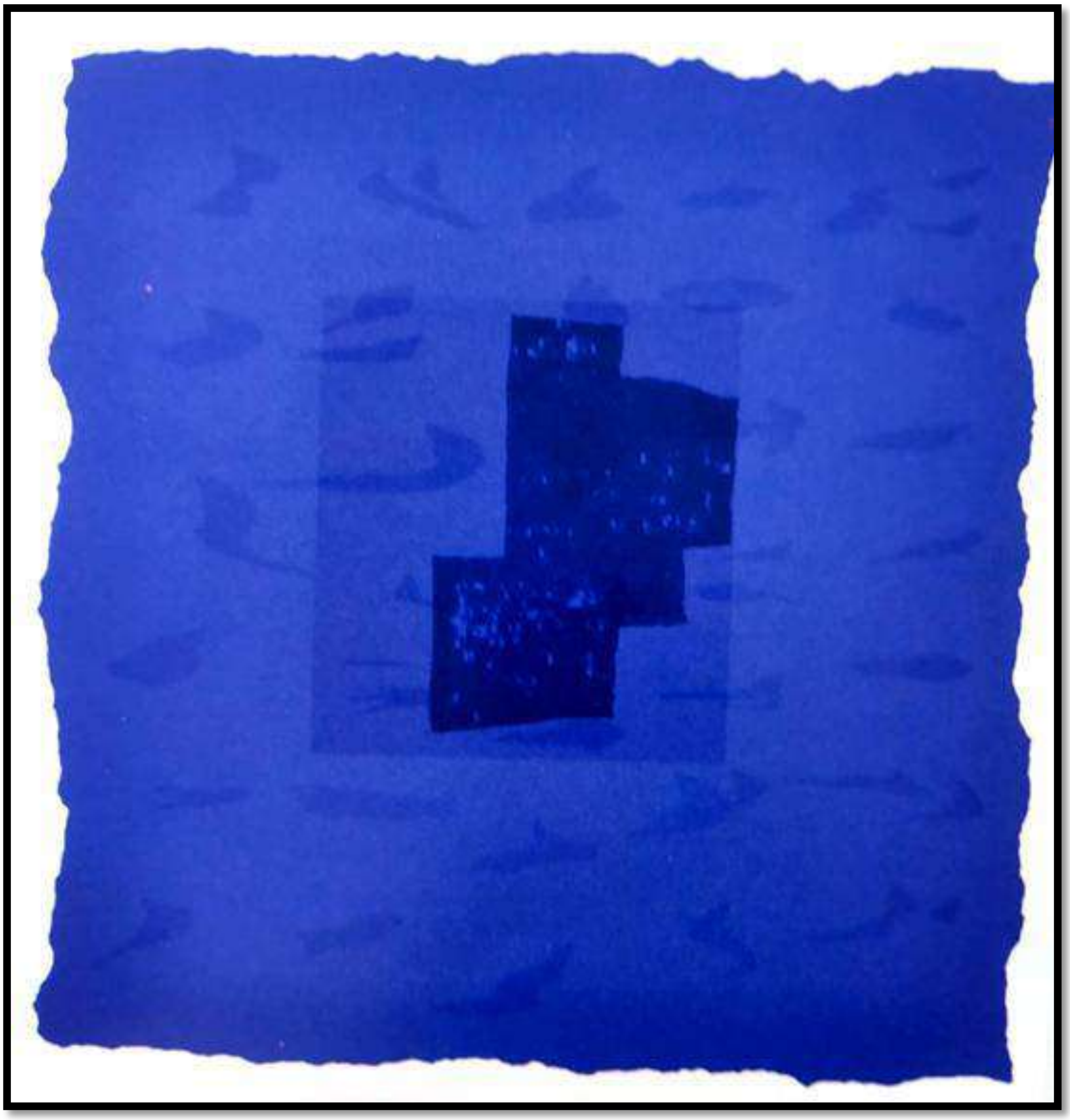

ब्लू थिंकिग अबाउट रेड

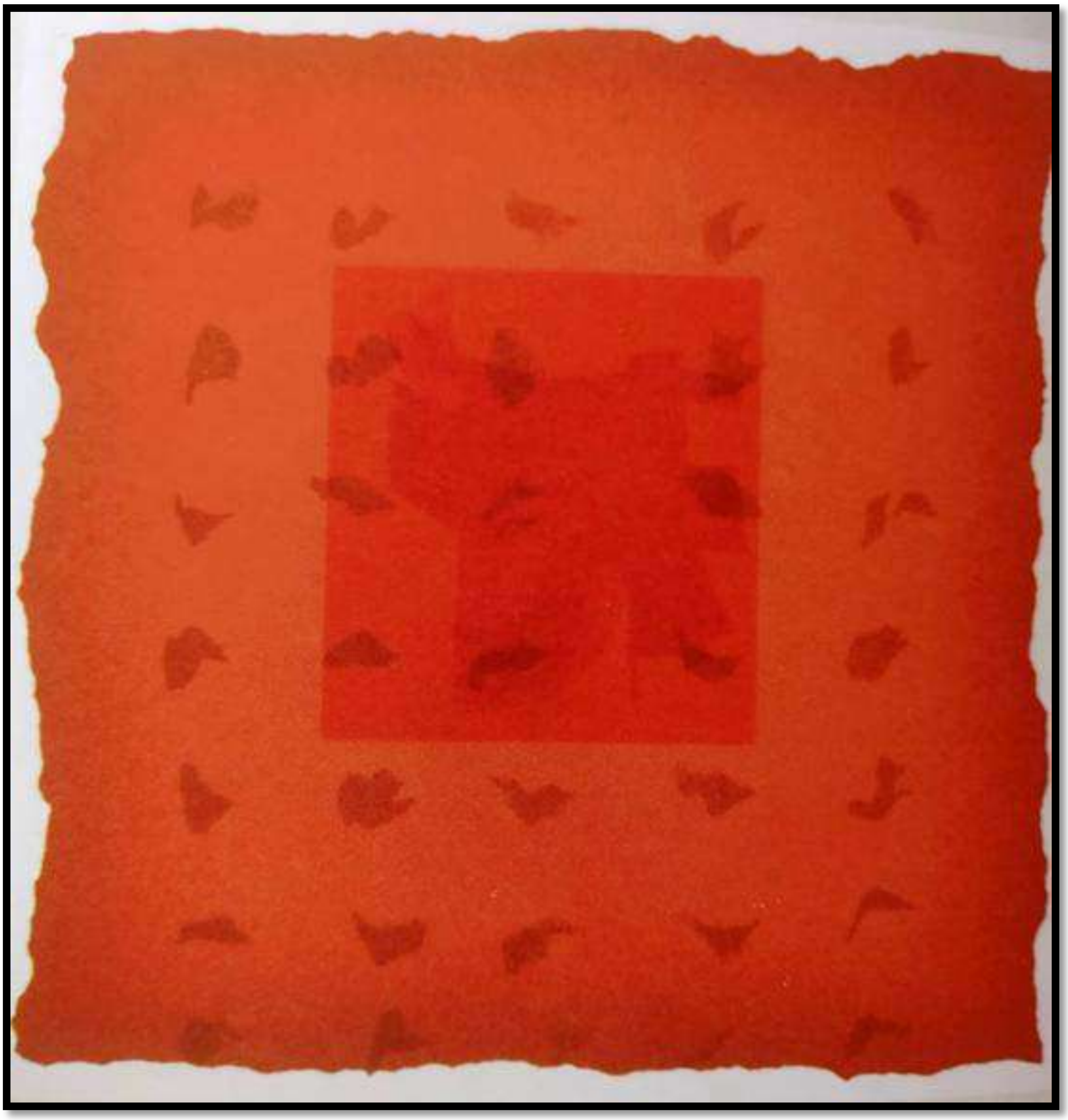

वेन इट वॉज ऑल ऑरेंज

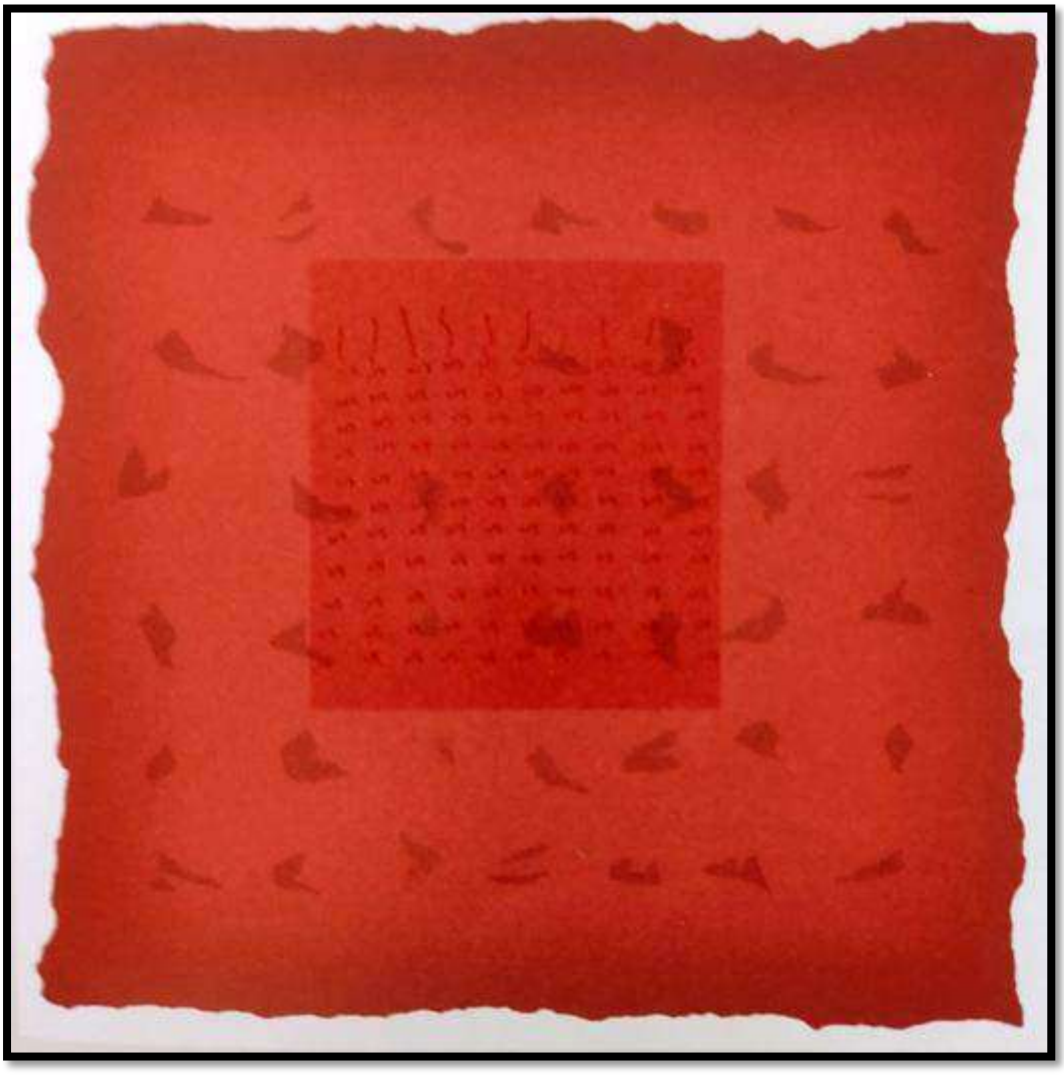

रेड बीलिव इन रेड

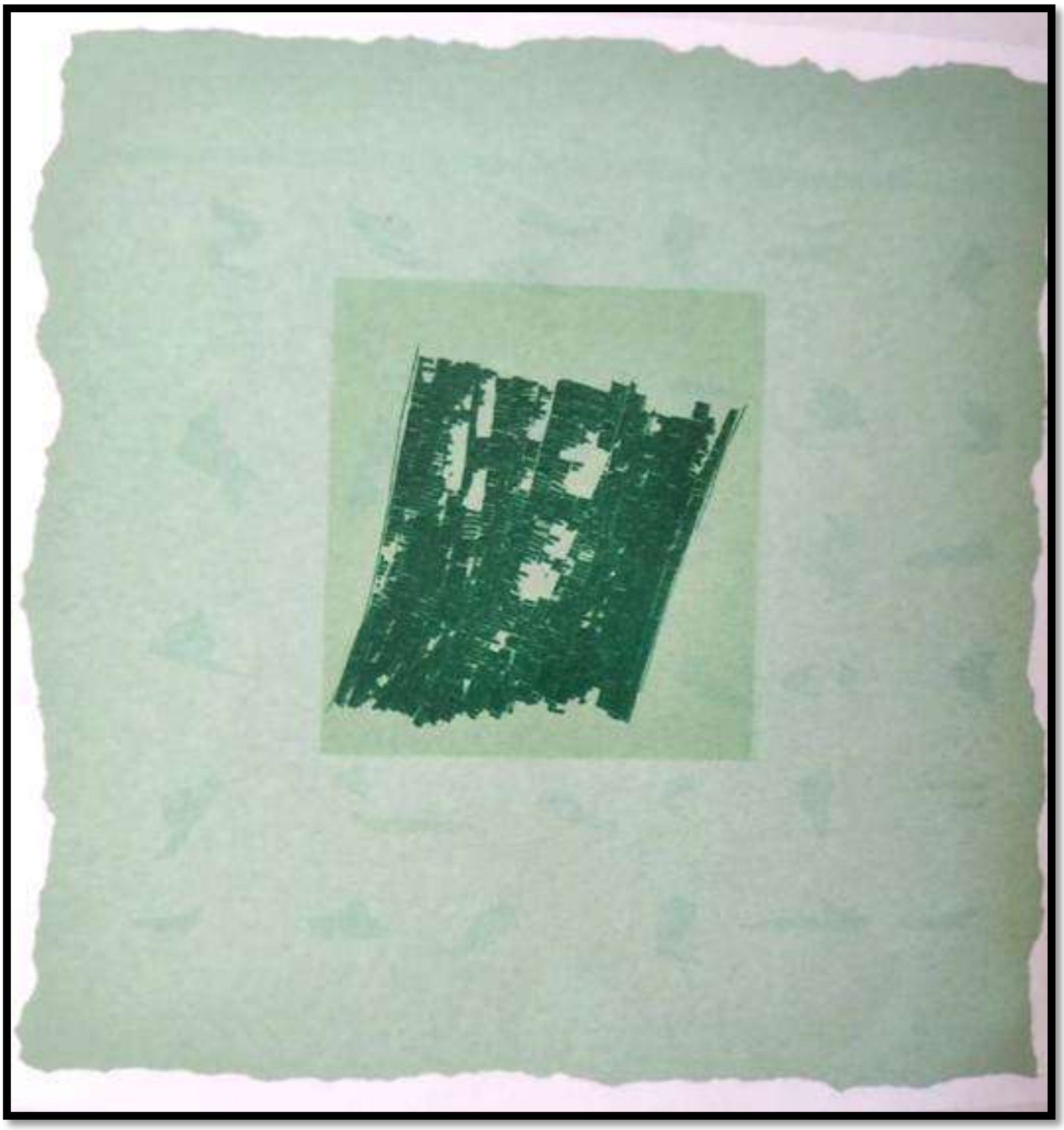

इन द अबसेंस ऑफ रेड

‘‘कर्मचंद प्रजापति का कला संसार’’

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

विभागाध्यक्षा	निर्देशिक	शोधकर्त्री
श्रीमती संतोष	महेश धीमान	छाया देवी
ललित कला विभाग		स्नातकोत्तर
आर्य कन्या महाविद्यालय		(अन्तिम वर्ष)
शाहाबाद (मा0)		

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद (मारकण्ड़ा)

2023–2024

गौरव पट्ट
गांव का नाम - गढ़ शरनाई
खण्ड - पानीपत
जिला - पानीपत
1. श्री शोभा राम पुत्र S/O श्री बक्शीराम प्रजापति
राजकीय पुरस्कार 2 TIMES 2001-2003
कर्मयोगी सम्मान HIFA KARNAL
हरियाणा इंस्टीट्यूट ऑफ फाईन आर्ट
2. रामरती पुत्री श्री बक्शीराम प्रजापति
राष्ट्रीय पुरस्कार 2015 राष्ट्रीय प्रमाण पत्र
राजकीय -1992 DELHI
3. धर्मबीर पुत्र श्री शोभा राम प्रजापति
राष्ट्रीय प्रमाण पत्र– 2001
राजकीय पुरस्कार– 2001-02, 2003 1st 2008, 2010, 2011
4. शशीबाला W/O श्री धर्मबीर प्रजापति
राजकीय पुरस्कार– 2008
5. कर्मचन्द प्रजापति S/O श्री शोभा राम प्रजापति
राजकीय पुरस्कार 2011, 2009, 2006-07 1st
6. निशा W/O श्री कर्मचन्द प्रजापति
राजकीय पुरस्कार 2011 1st
7. दलीप S/O श्री शोभा राम प्रजापति
राजकीय पुरस्कार 2009 2nd, 2010
8. अशोक S/O श्री शोभा राम प्रजापति
राजकीय पुरस्कार 2007-08, 2008-09

ललित कला विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि छाया देवी, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **"कर्मचंद प्रजापति का कला संसार"** शीषर्क पर मेरे निर्देशन से प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इसने पूरी मेहनत और लग्न से उक्त शोध कार्य सम्पन्न किया है। इस महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य पहले नहीं किया गया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ।

मैं इसके उज्जवल भविष्य एंव सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांक :

एसो. प्रोफेसर
श्रीमती, संतोष

प्रमाण पत्र

मैं छाया देवी, यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध "**कर्मचंद प्रजापति का कला संसार**" विषय मेरे स्वंय के प्रयास से किया गया है। आर्य कन्या महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य नहीं किया गया है। मैंने इसे पूरी मेहनत और लग्न से सम्पन्न किया है। यह अप्रकाशित कृति है। जो सामग्री प्रयोग की गई है। उनको दिखाने का प्रयास किया गया है।

निर्देशिक — **शोधकर्त्री**

महेश धीमान — **छाया देवी**

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0)

कुरूक्षेत्र।

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि छाया देवी, अनुक्रमांक न0. 220156010, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **''कर्मचंद प्रजापति का कला संसार''** शीषर्क पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ। इसने पूरी मेहनत और लग्न से यह लघु–शोध कार्य सम्पन्न किया है।

मैं इसके उज्जवल भष्यि एंव सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांकः

प्राचार्या

डॉ श्रीमती आरती त्रेहन

प्राक्कथन

कर्मचंद प्रजापति एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनका जीवन पूर्णता कला के लिए समर्पित हैं। वे जीवन के अस्तित्व का वर्णन तथा जीवन के स्नेह पूर्ण व्यवहार को अपने कलाकृतियों में दिखाते हैं जो हम सभी के जीवन के एक खास हिस्से को दर्शाते हैं।

कर्मचंद प्रजापति बहुत ही सयोग्य, संवेदनशील और शांत हैं और ये अपने व्यवहार को अपनी कला में दिखाने के लिए पूर्णतया सक्षम है। ये अपनी कला में समकालीन रूप में मिट्टी के बर्तन जैसे– घड़े, मिट्टी के गिलास, मटकी और गमले तो बनाते हैं, साथ ही साथ आधुनिकता के साथ चलते हुए अब मिट्टी की बनी चीजों में इलेक्ट्रॉनिक का भी प्रयोग करते हैं।

मैंने कर्मचंद प्रजापति के बारे में अपनी मैडम श्रीमती संतोष जी से सुना था। उन्होंने कर्मचंद प्रजापति के मिट्टी के बर्तनों के बारे में बताया और उनके चित्र मुझे दिखाए, जिससे मैं बहुत प्रभावित हुई। फिर मुझे लघु शोध लिखने का मौका मिला और मैं कर्मचंद प्रजापति पर लघु शोध लिखने के बारे में सोचा और मैं लघु शोध लिखने के लिए कर्मचंद प्रजापति से अनुमति ली और 20 जनवरी 2024 को कर्मचंद प्रजापति से मेरा साक्षात्कार हुआ। जिसमें कर्मचंद प्रजापति से उनके जीवन, काल यात्रा और समकालीन मिट्टी के बर्तनों को लेकर मेरी बातचीत हुई और मुझे कर्मचंद प्रजापति के कामों को समझने का मौका मिला।

➡ प्रथम अध्याय में ''कला और कला का महत्व और भारत में मिट्टी के बर्तनों का संक्षिप्त रूप'' से वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

➡ द्वितीय अध्याय में ''कर्मचंद प्रजापति के जीवन, शिक्षा व कला यात्रा, प्रदर्शनियां व पुरस्कार'' पर प्रकाश डाला गया है।

➡ तृतीय अध्याय में ''कर्मचंद प्रजापति के मिट्टी के बर्तनों की तकनीक और बर्तन बनाने की विधि'' बताई गई है।

➡ चतुर्थ अध्याय में ''कर्मचंद प्रजापति का भारतीय मिट्टी के बर्तनों में योगदान'' के बारे में लिखा है।

➡ पंचम अध्याय में ''कर्मचंद प्रजापति से साक्षात्कार'' लिखा है।

अंत में उपसंहार, संदर्भ ग्रंथ सूची और चित्र संग्रह सूची को प्रस्तुत किया गया है। इसमें लघु शोध प्रबंध के माध्यम से स्थापित की गई मौलिक मान्यताओं को प्रतिपादित किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र को सावधानीपूर्वक प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है, तो भी कुछ अशुद्धियां रह जाना स्वभाविक है। आशा है कि विद्वान समीक्षक उन्हें अलक्ष्य करने की कृपा करें।

इस शोध पत्र में जो त्रुटियां रह गई हैं, उनके लिए मैं ही दोषी हूं । अतः इसके लिए मैं विद्वानजनों से क्षमा प्रार्थी भी हूँ।

छाया देवी

शोधकर्त्री

आभार

मेरे इस लघु शोध कार्य को करने में जिन महानुभावों का सहयोग रहा है उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरे इस शोध कार्य का उलेख संपूर्ण नहीं होगा। मैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझती हूँ जिनकी प्रेरणा, सहयोग और प्रोत्साहन से में इस कार्य को साकार रूप दे पाई।

सर्वप्रथम में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्थित आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा, के ललित कला विभाग की अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती संतोष मैडम के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ , जिन्होंने पूरे शोध कार्य के दौरान मेरा मार्गदर्शन किया। श्री डॉ. राम विरंजन विभागाध्यक्ष, ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र की धन्यवादी हूं कि इस विषय को सफलतापूर्वक चलाने में आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा की सहायता की।

मैं आदरणीय कलाकार कर्मचंद प्रजापति जी का भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने अपना मूल्यवान समय निकालकर अपने विचार सांझा किए तथा शोध की निष्कर्ष राह दिखाई।

मैं अपने गुरू आदरणीय श्री महेश धीमान सर व आदरणीय सहायक श्रीमती अंजली धीमान के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस कार्य के दौरान मेरी शंकाओं और समस्याओं का निदान किया तथा निरंतर प्रोत्साहित करते रहे।

मैं पूर्व प्राचार्य महोदया आदरणीय डॉ0. आरती त्रेहन मैडम जी का भी आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होनें ललित कला विषय में स्नातकोत्तर कक्षाएं प्रांरभ कर हमारे चिरलंवित स्वपन को साकार करने का मौका प्रदान किया ।

इसके साथ–साथ में अपने परिवार जनों का भी हृदय की गहराइयों से आभार प्रकट करती हूँ क्योंकि उनके सहयोग के कारण ही मैं इस शोध कार्य को संपूर्ण करने में सक्षम हो पाई।

इसके साथ टाईपिस्ट अजय प्रजापति का भी दिल से आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने इस कार्य को करने में हमारा पूरा सहयोग दिया और मैं अपनी सहयोगी बहन सुजाता और डॉ. अनमोल और अपने भाई अभिषेक का भी धन्यावाद करती हूँ।

मुझे आशा तथा पूर्ण विश्वास है कि मेरे इस कार्य में महत्वपूर्ण विषय पर पूर्ण उपयोगी जानकारी प्राप्त हो सकेगी व मेरे द्वारा इस लघु शोध कार्य में मैंने कर्मचंद प्रजापति के मिट्टी के बर्तनों का कलात्मक अध्ययन किया है।

मैं अपने सभी गुरुजनों के प्रति श्रद्धेय भाव प्रस्तुत करती हूँ। इन्हीं की प्रेरणा व निर्देशन से ही मुझे इस विषय पर शोध करने का अवसर मिला। और समय–समय पर आगे कार्य करने का उत्साह और प्रेरणा दी। इसके अतिरिक्त मैं सभी सहानुभावों के प्रति श्रद्धा व्यक्ति करती हूँ, जिन जिनसे मुझे सहयोग प्राप्त हुआ और यह शोध कार्य सम्पन्न हो सका। यदि इस लघु शोध प्रबंध में पाठक वर्ग का कुछ भी लाभ पहुंचा, तो मैं इसे अपना सफल प्रयास मानूंगी।

छाया देवी

शोकर्त्री

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन	**पृष्ठ संख्या**
आभार	
प्रथम अध्यायः परिचय	**01 – 19**
– कला का अर्थ	
– कला का महत्व	
– भारत में मिट्टी के बर्तनों का इतिहास	
द्वितीय अध्याय :	**20 – 28**
– जीवन परिचय	
– शिक्षा व कला यात्रा	
– प्रदर्शनियाँ व पुरस्कार	
तृतीय अध्यायः	**29 – 36**
– कर्मचंद के मिट्टी के बर्तनों की तकनीक	
– कर्मचंद की बर्तन बनाने की विधि	
चतुर्थ अध्यायः	**37 – 48**
– भारतीय मिट्टी के बर्तनों में कर्मचंद का योगदान	
– सामग्री	
पंचम अध्याय :	**49 – 56**
– कर्मचंद जी से साक्षात्कार	
– उपसंहार	**57 – 58**
– संदर्भ ग्रंथ सूची	**59 – 59**
– चित्र संग्रह सूची	**60 – 60**
– चित्र सूची	**61 – 86**

प्रथम अध्याय

- कला का अर्थ
- कला का महत्व
- भारत में मिट्टी के बर्तनों का इतिहास

कला का अर्थ

कला :–

किसी भी कार्य को पूर्ण कुशलता या निपुणता से संपन्न करना ही कला कहलाती है।

शास्त्रों के अध्ययन से पता चलता है कि कला शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में हुआ। कला शब्द का यथार्थवादी प्रयोग भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में किया। ऐसा कोई ज्ञान नहीं, जिसमें कोई शिल्प नहीं, विद्या नहीं जो कला न हो।

कला संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसकी उत्पत्ति 'कल्' धातु से मानी जाती है जिसका अर्थ– प्रसन्न करना है। कुछ विद्वान इसकी उत्पत्ति 'कड्' धातु से मानते हैं। कला को अंग्रेजी भाषा में 'आर्ट' कहा है। आर्ट शब्द का प्रयोग 13वीं सदी के प्रथम चरण में हुआ।

आर्ट शब्द प्राचीन लैटिन के आर्स शब्द से बना है। इस शब्द का अर्थ है – क्राफ्ट जैसे– स्वर्णकारी।

➢ **कला की परिभाषा :–**

1 प्लेटों के अनुसार – ''कला सत्य की अनुकृति है''।

2 अरस्तु के अनुसार – ''कला प्रकृति का अनुकरण है''।

3 फ्रायड के अनुसार – ''कला दमित वासनाओं का उभरा हुआ रूप है''।

4 क्रौये ने – कला को ''बाह्य प्रभाव की अभिव्यक्ति'' माना।

5 टॉलस्टॉय के अनुसार – ''अपने भावों को इस प्रकार अभिव्यक्त करना कि प्रेषक में भी वही भाव उत्पन्न हो कला है''।

6 हर्बर्ट रीड ने – कला को क्रीडा माना है''।

7 रविंद्र नाथ टैगोर के अनुसार – ''कला में मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति करता है''।

8 जयशंकर प्रसाद के अनुसार – ''ईश्वर की कर्तव्यशक्ति का संकुचित रूप जो हमको बोध के लिए मिलता है, वही कला है''।

9 मैथिली शरण गुप्त के अनुसार – ''अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति ही तो कला है, जो अपूर्ण कला की पूर्ति है।

✪ https://youtu.be/Fk7aAiEy2mE1si=Jtjt4Ao4vLaAxg6

➢ कला का वर्गीकरण :–

श्रेमेन्द्र ने अपने पुस्तक "कला विलास, में 64 जनोंपयोगी, 64 सुनारों की, 64 वेश्याओं की, 10 भेषज कलाएं, 16 काव्यस्तों की, 100 सार कलाएं, 32 धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष संबंधी कलाओं का वर्णन किया है।

कला का वर्गीकरण दो बिंदुओं के आधार पर किया गया है –

1. उपयोगी कला
2. ललित कला

✓ उपयोगी कला :– जो कला हमारे जीवन की आवश्यकताओं को पूर्ण करती है, उसे उपयोगी कला कहते हैं। जैसे– आभूषण निर्माण, रंगाई, छप्पाई, बढ़ईगीरी, एवं अन्य व्यावसायिक इत्यादि। इस कला से हमें भौतिक सुख मिलता है।

✓ ललित कला :– ललित कलाओं का एकमात्र उद्देश्य केवल मानसिक या आत्मक आनंद प्रदान करना होता है।

➢ ललित कलाओं व उपयोगी कलाओं में असमानताएं व समानताएं:–

असमानताएं :–

1. ललित कलाओं का संबंध मनुष्य के सांस्कृतिक विकास, भावों की सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति व लोकोतर जीवन से है।
2. ललित कलाये हमारी मानसिक आवश्यकताओं की स्पूर्ति करती हैं।
3. ललित कलायें मनुष्य के जीवन को आत्मिक आनंद व सुख से भर देती हैं।
4. ललित कलायें मनुष्य को ऐसी स्थिति से मिलाती हैं जिससे परम सत्य या परमानंद की स्थिति कहा जा सकता है।
5. ललित कलायें आनंद की निधि वह पारलौकिक सौंदर्य की संवाहक हैं, जो लोकोत्तर जीवन को संवारती हैं।
6. ललित कलायें कल्पना के सहयोग से रूप का सृजन करती हैं। सृजन ही इन कलाओं का सार है।

➢ उपयोगी कलाएं :–

1. उपयोगी कलाओं का संबंध सभ्यता के क्रमिक विकास व अलौकिक जीवन से है।
2. उपयोगी कलाएं हमारे दैनिक जीवन को भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। उपयोगी कलाएं मनुष्य के भौतिक जीवन के अभावों की पूर्ति करती हैं।
3. उपयोगी कलाओं का व्यवहार पूर्णतया व्यावसायिक है व केवल भौतिक जगत से ही संबंधित है।
4. उपयोगी कलाएं मनुष्य को भौतिक जीवन को सजाती, संवारती व जीवित रखती हैं।
5. उपयोगी कलाओं का मूल उद्देश्य उत्पादक व उपभोक्ता के मध्य सेतु का कार्य करना है। यह व्यवसाय, उत्पादक एवं बिक्री से संबंधित हैं।

➢ समानताएं :–

1. दोनों ही प्रकार की कलाओं को सौंदर्य व कल्पना के तत्व समान रूप से प्रभावित करते हैं।
2. इन दोनों कलाओं में ही 'रुचि' का विशेष महत्व है।
3. कला, रूप का सृजन करती है और 'अरूप' को रूप प्रदान करती है। अतः रूप निर्माण के सभी तत्व दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं।
4. विशुद्ध कला– सृजन का रूपांतरण आज के युग की आवश्यकता है। 'कला' के लिए कला का नारा आज अपनी प्रासंगिकता को खो चुका है। अब ललित कलाओं ने भी व्यावसायिक गुणों को अपनाना प्रारंभ कर दिया है।
5. आज सर्वत्र प्रचार व प्रसार माध्यमों की धूम है, जिसके फलस्वरुप आधुनिक जीवन में भौतिकवादी दृष्टिकोण तथा उपभोक्ता संस्कृति का जन्म हुआ है। जिनसे प्राचीन मान्यताओं और परंपराओं का खंडन हुआ है। अतः दोनों ही प्रकार की कलायें इन तत्वों से समान रूप से प्रभावित हुई है। आज विश्वविद्यालयों के ललित कला संकायों में व्यावसायिक कला की शिक्षा दी जा रही है।

अतः आनंद और सौंदर्य ग्रहण होने के कारण ललित कलाएं उपयोगी कलाओं की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। उपयोगी कलाओं में उपयोग आता है ये कलाएं पूर्णरूप से व्यावसायिक होती हैं जैसे– काष्ठकला, स्वर्णकारी, दस्तकारी इत्यादि। ये कलाएं हमारे जीवन को सजाती, संवारती और जीवित रखती हैं। ललित कलाएं सौन्दर्यात्मक होती हैं, कुछ विद्वानों ने ललित कलाओं को पांच भागों में बांटा है–

काव्यकला, संगीत कला, चित्रकला, मूर्तिकला और स्थापत्यकला। इस तथ्य से सभी विद्वान सहमत हैं की कलाओं का श्रेणी विभाजन किया जा सकता है और जिस प्रकार में जितने कम मूर्त और स्कूल

✪ डॉ. रीटा प्रताप : भारतीय चित्रकला एंव मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान संसाधन विकास मंत्रालय पृः स. 7, 15, 18

पदार्घ प्रयोग में आते हैं, वही सबसे सही कला है। अतः इस दृष्टिकोण से काव्यकला को सबसे ऊपर और स्थापत्यकला को सबसे नीचे रखा गया है।

कुछ आधुनिक विद्वानों ने कलाओं का वर्गीकरण (**Major Art**) और (**Minor Art**) के रूप में किया है। मूल रूप से मेजर आर्ट ललित कलाओं के लिए और माइनर आर्ट उपयोगी कलाओं के लिए उपयोग किया जाता है। मेजर आर्ट सौंदर्य को अभिव्यक्त करता है, जिससे सत्यम् शिवम् सुंदरम् की अभिव्यक्ति होती है। माइनर आर्ट में उपयोगिता सर्वोपरि है।

➢ कला का शिक्षा के क्षेत्र में स्थान :—

कला का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। यह न सिर्फ आनंद की अनुभूति के लिए प्रयोग की जाती है, इसके द्वारा मनुष्य को अनेकों लाभ भी है। कला शिक्षा के क्षेत्र में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूपों में सदा से मनुष्य की मदद करती आई है। आज से हजारों वर्ष पूर्व जब गुफाओं में रहकर चित्रकारी करता था, चित्रों ने अथवा कला ने अपनी शिक्षा का कार्य वहीं से शुरू कर दिया था। इतिहास विषय में इसके द्वारा सभ्यता ने किस प्रकार पृथ्वी पर अपने कदम रखे और कैसे क्रमिक विकास की ओर बढ़कर वर्तमान युग तक आई, इसका अनुमान एवं प्रमाण हमें कला नमूनो के अवलोकन एवं विश्लेषण द्वारा प्राप्त होता है।

इतिहास का क्रमिक विकास कठिनाइयां, सफलताएं, विभिन्न कलाओं में अलग—अलग रहन—सहन, राजनीति स्थितियां, सामाजिक परिस्थितियाँ, खान—पान, अध्ययन व्यवस्था, व्यापार इत्यादि को पता हमें कला के द्वारा ही लगता है। शिक्षा के क्षेत्र में इतिहास ही नहीं वरन् राजनीतिक शास्त्र में भी कला के द्वारा ज्ञान की वृद्धि होती है।

स्थापत्य कला के अध्ययन से स्थापत्य के नए नियमों की शिक्षा एवं पुराने कीर्तिमान आदि के अध्ययन एवं विश्लेषण में हमें मदद मिलती है। एलोरा की गुफाएं, दक्षिण के मंदिर, प्राचीन भव्य इमारतें, ये सभी शिक्षा के क्षेत्र में स्थापत्य को समझने एवं उसके विकास में मदद करते हैं।

शिक्षा को सुगम और रोचक बनाने में न केवल कला मदद करती है, बल्कि कला के द्वारा शिक्षा को प्रोत्साहन भी मिलता है। मनुष्य की प्रवृत्ति है कि वह नीरस वस्तुओं का चुनाव कम करता है। इस वजह से शिक्षा कला के समावेश से अगर आकर्षक एवं रोचकता का गुण भी ग्रहण कर ले तो पढ़ने में विद्यार्थी को प्रोत्साहन मिलेगा और शिक्षा की जटिलताएं कम अनुभव होगी।

भूगोल, जीव विज्ञान, समाजशास्त्र, भौतिक आदि विषय भी चित्रों के प्रयोग से समझने में आसन होते हैं। शिक्षा की जटिलताओं को कला सरल बना देती है। शिक्षा के क्षेत्र में कला का महत्वपूर्ण योगदान दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

➢ दैनिक जीवन में कला का स्थान :—

कला मनुष्य को उसके हर कार्य में सहायता प्रदान करती है। शिक्षा के क्षेत्र में उसके योगदान को तो आज मनुष्य ने जान लिया है। पर यदि हम देखें तो शिक्षा के अलावा हमारे दैनिक जीवनचर्या में भी यह हमसे जुड़ी है। भारत में ही नहीं वरन् अन्य देशों में भी इसकी उपयोगिता के महत्व को समझा जा रहा है। चाहे वह बर्तन हो या गृह सज्जा, कोई भी दैनिक जीवन में प्रयोग आने वाली वस्तु कला से अलग छटकर नहीं दिखाई देती। तरह—तरह के कपड़े व उन पर की गई चित्रकारी, बुनावट एवं सिलावट यहां तक की उसको रखने की शिक्षा में भी कला का महत्व है। बदलते फैशन एवं समय के साथ होते वस्त्रों में बदलाव सभी कला से अछूते नहीं रहे।

दिनचर्या में प्रयोग होने वाले बर्तन हो या फिर फर्नीचर या कारपेट एवं सजावट का सामान हर वस्तु कला से जुड़ी है। सौंदर्य प्रसाधन हो या फिर केश सज्जा। मानव जीवन की वस्तुओं के साथ क्रियाओं में भी कला का समावेश है। घर की आंतरिक सज्जा हो या घर की बाहरी बनावट कला से हटकर उसका कोई अस्तित्व नहीं है।

विद्यालय हो, कार्यालय या फिर सार्वजनिक भवन, बाग—बगीचे, पार्क या फिर आजकल के मॉल, रिजॉर्ट इत्यादि। कला का योगदान दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। सबसे अधिक आज के युग में कला ने विज्ञापन के क्षेत्र में अपना महत्व प्राप्त किया है। प्रयोग में आने वाली हर वस्तु के कलात्मक विज्ञापनों के बिना हम बाजार में लाने की सोच भी नहीं सकते।

कला मनुष्य के दैनिक जीवन का एक अंग बन चुकी है तथा जीवन में इसका महत्व बढ़ता ही जा रहा है। इसके बिना दैनिक जीवन इस प्रकार होगा जैसे बिना रंगों का इंद्रधनुष।

कला अपने आप में विस्तृत होती जा रही है। दैनिक जीवन में इसका क्षेत्र असीमित है। कला की वजह से मनुष्य के दैनिक जीवन में मानव आत्मा का समावेश हो गया है।

✪ देशवाल डॉ0. सन्तराम : हरियाणा संस्कृति व कला, पृः स. 25, 26

कला का महत्व

हम कला के बारे में बात करें तो जीवन में ऊर्जा का संचार होता है। यानी अतसं चेतना जागृत हो जाती है। हमारे जीवन में कला विशेष महत्व है। हर कला किसी न किसी रूप में हमारे जीवन से जुड़ी रहती है। कला के माध्यम से ही मनुष्य अपने जीवन में शांति व सुख का अनुभव करता है। कला से हम अपने जीवन को सजाते–संवारते हैं। किसी उत्कृष्ट कला कृति देखने से मनुष्य भाव विभोर होकर रसस्वादन में लीन हो जाता है। इसी से मनुष्य ''स्व'' को भूलकर परमानंद की प्राप्ति करता है।

कला मानव जीवन के हर एक क्षेत्र में रस–बस गई है। कलाओं के द्वारा ही मनुष्य शांति व सुख का अनुभव करता है और उसकी सहायता से हम अपने जीवन को सजाते–संवारते और कलामय बनाते हैं। ललित कलाओं के साथ सौंदर्य आवश्यक रूप से जुड़ा हुआ है। किसी अच्छी कलाकृति को देखते ही मनुष्य स्वतः ही भाव–विभोर हो उठता है और उसे कलाकृति के रसास्वादन में लीन हो जाता है।

टालस्टाय के शब्दों में अपने भावों का क्रिया, रेखा, रंग, ध्वनि या शब्द द्वारा इस प्रकार अभिव्यक्ति करना कि उसे देखने या सुनने में भी वह भाव उत्पन्न हो जाए, कला है। हृदय की गहराइयों से निकली अनुभूति जब कला का रूप लेती हैं, कलाकार का अन्तर्मन मानो मूर्त ले उठना है चाहे लेखनी उसका माध्यम हो या रंगों से भीगी तूलिका या सुरों की पुकार या विद्यों की झंकार। कला ही आत्मिक शांति का माध्यम है। यह कठिन तपस्या है, साधना है। इसी के माध्यम से कलाकार सुनहरी और इंद्रधनुषी आत्मा से स्वप्निल विचारों को साकार रूप देता है।

कला में ऐसी शक्ति होनी चाहिए कि वह लोगों को संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर उसे ऐसे ऊंचे स्थान पर पहुंचा दे जहां मनुष्य केवल मनुष्य रह जाता है। कला व्यक्ति के मन में बनी स्वार्थ, परिवार, क्षेत्र, धर्म, भाषा और जाति आदि की सीमाएं मिटाकर विस्तृत और व्यापकता प्रदान करती है। व्यक्ति के मन को उदात्त बनाती है। वह व्यक्ति को ''स्व'' से निकालकर ''वासुदेव कुटुम्बकम्'' से जोड़ती है।

जब यह कला संगीत के रूप में उभरती है तो कलाकार गायन और वादन से स्वयं को ही नहीं श्रोताओं को भी अभिभूत कर देती है। मनुष्य आत्मविस्तृत हो उठता है, दीपक राग से दीपक जल उठता है और मल्हार राग से मेघ बरसाना, यह कला की साधना का ही चरमोंत्कर्ष है। संगीत की साधना, सुरों की साधना है। मिलन है आत्मा से परमात्मा का, अभिव्यक्ति है अनुभूति की।

संगीत केवल मानवमात्र में ही नहीं अपितु पशु–पक्षियों व पेड़–पौधों में भी अमृत रस भर देता है। पशु–पक्षी भी संगीत से प्रभावित होकर झूम उठते हैं, तो पेड़–पौधों में भी संपादन हो उठता है।

तरंगे फूट पड़ती हैं। यही नहीं मानव के अनेक रोगों का उपचार भी संगीत की तरंगों से संभव है। कहा भी है –

संगीत है इस शक्ति ईश्वर की, हर सुर में बसे हैं राम।

रागी तो गावे रागिनी, रोगी को मिले आराम।।

संगीत के बाद ये ललित कलाओं में स्थान दिया गया है तो वह है – नृत्य कला। चाहे वह भरतनाट्यम् हो या कत्थक, मणिपुरी हो या कुचिपुड़ी। विभिन्न भाव भंगिमाओं से युक्त हमारी संस्कृति व पौराणिक कथाओं को ये नृत्य जीवंतम प्रदान करते हैं। शास्त्रीय नृत्य हो या लोक नृत्य इनमें खोकर तन ही नहीं मन भी झूम उठता है।

अजंता, बाघ आदि के गुफा चित्रों की कलाकृतियां पूर्व बौद्धकाल के अंतर्गत आती हैं। भारतीय कला का उज्जवल इतिहास भित्ति चित्रों से ही प्रारंभ होता है और संसार में उनके सामान चित्र कहीं नहीं बने। ऐसा विद्वानों का मत है। अजंता के कला मंदिर प्रेम, धैर्य, उपासना, भक्ति, सहानुभूति, त्याग तथा शांति के अपूर्ण उदाहरण है।

भारत में मिट्टी के बर्तनों का इतिहास

मिट्टी के बर्तन मानव द्वारा निर्मित आविष्कारों में से एक हैं। जिन्हें बनाया, सुखाया और पकाया जाता है। यह प्रक्रिया मिट्टी की एक साधारण ढेर से एक सुंदर आकृति में बदल देती है। यह एक शिल्प नहीं बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत, कलात्मक, संवेदनशीलता और ऐतिहासिक विकास का जीवन संग्रह है।

➢ मिट्टी के बर्तनों की भारत में संस्कृति :–

- भारत में मिट्टी के बर्तनों का विकास समृद्ध भारत से इतिहास तक देखने को मिलता है।
- यह कला सिंधु घाटी की सभ्यता से भी पुराने मानी जाती है।
- भारत की विभिन्न स्थानीय जनजाति जो अलग–अलग स्थान पर रहती है। उनको परंपराओं में विविध तरह के मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं, जिनमें सजावटी टुकड़ों से लेकर उपयोगी बर्तन शामिल होते हैं।
- भारतीय मिट्टी के बर्तन अपने रचनाकारों कि कुशल शिल्प तथा कलात्मक पत्रिका को प्रदर्शित करते हैं।
- आज मिट्टी के बर्तन नए विचारों के साथ बनाए जाते हैं, जिसमें इनका इतिहास उजागर रहता है।

➢ भारतीय मिट्टी के बर्तनों का इतिहास :–

- भारत में मिट्टी के बर्तनों का समृद्ध इतिहास प्रागैतिहासिक युग से जुड़ा है जिनमें दुनिया के सबसे पुराने शिल्पो में से एक बताता है।
- मिट्टी के बर्तन ना केवल मानव कि प्रगति और विकास को दिखाने वाले दर्पण है, बल्कि भारतीय संस्कृति के सामाजिक और संस्कृति में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान है।
- प्राचीन हड़प्पा के युग से लेकर आधुनिक युग में मिट्टी के बर्तनों का दैनिक जीवन धार्मिक संस्कार और व्यापार में उपयोग होता आया है।
- मिट्टी के बर्तनों का संरक्षण और प्रचार – प्रसार भारत की सांस्कृतिक अरूणता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जैसे–जैसे हम आगे बढ़ते हैं, प्राचीन तकनीक को संरक्षण करने और नई तकनीक को अपनाने के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए।

✪ https://testbook.com>Static-gk>Po.....

- भारत में मिट्टी के बर्तनों का भविष्य ढलते हुए अतीत तथा उभरते हुए अपने विकास का हमारी सम्मान करने की शक्ति पर निर्भर करता है।
- भारतीय मिट्टी के बर्तन का इतिहास आधुनिक तकनीकों के साथ अपने जीविंत रहने के क्षण पर है।

➢ प्रारंभिक मिट्टी के बर्तनों की परंपराएं :–

✪ प्रागैतिहासिक और नवपाषाणकालीन युग –

- प्रागैतिहासिक युग में और नवपाषाणकालीन युग में मिट्टी के बर्तनों का आगमन हुआ।
- इस युग में पुरात्तवों से यह पता चलता था कि प्राचीन समय में मिट्टी के बर्तनों का उपयोग भण्डारण करने, खाना पकाने तथा पानी का संग्रह करने जैसे आवश्यक कामों के लिए किया जाता था।
- यह हस्त निर्मित मिट्टी के बर्तनों का युग था जिन्हें हाथ से आकार देकर प्राथमिक भट्ठियों में या आग की खुली भट्ठियों में पकाया जाता था।

✪ हड़प्पा सिंधु घाटी मिट्टी के बर्तन :–

- हड़प्पा काल में तेजी से आगे बढ़ते हुए मिट्टी के बर्तनों का सुधार हुआ। सिंधु घाटी सभ्यता में कुम्हारों ने अब अच्छी तरह अपने कोइल और तकनीक का प्रदर्शन किया और अच्छी तरह पके मिट्टी के बर्तन को पोलिश तथा शानदार चमक के साथ चित्रित किया।
- इनका उपयोग न केवल उपयोगिता के लिए बल्कि सजावट की वस्तुओं के लिए भी किया जाता है।

✪ वैदिक काल के मिट्टी के बर्तन :–

- वैदिक काल में भारतीय मिट्टी के बर्तनों का और भी अधिक विकास हुआ।
- चित्रित घुसर मृदभांण्ड के रूप में जाने जाने वाले इस युग में मिट्टी के बर्तनों की विशेषता एक विशिष्ट घुसर रंग और चित्रित डिजाइन थे।
- इन चित्रों के विषय उस समय के लोकप्रिय तथा किवंदतियों से जन्मे थे जो वैदिक युग के सामाजिक मानदंडों और मान्यताओं के मूल्यवान प्रतिबिंब थे।

➢ प्राचीन भारत में मिट्टी के बर्तनों का विकास :–

✪ मौर्य कालीन मिट्टी के बर्तन :–

- मौर्यकाल में मिट्टी के बर्तन प्राचीन भारत में कला के कुछ बेहतरीन कार्यो का प्रतिबिंब करते हैं।
- यह वह समय था जिसमें उतरीकाले पॉब्लिशदार बर्तनों को जन्म दिया जो अपने चमकदार बनावट और समृद्ध काले रंग से प्रतिष्ठित थे।
- अपने बेहतर गुणवत्ता और कलात्मकता के साथ इन मिट्टी के बर्तनों को वस्तुओं में मौर्य साम्राज्य के जीवंत व्यापार नेटवर्क में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

✪ गुप्तकालीन मृदभांड :–

- गुप्तकालीन में भारत को 'स्वर्ण युग कहा जाता है'। गुप्तकालीन में मिट्टी के बर्तनों को कलात्मक अभिव्यक्ति की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।
- मूर्तिकला तत्वों के साथ मिट्टी के बर्तनों की ओर एक उल्लेखनीय बदलाव आया और नए आकार और डिजाइन की शुरुआत हुई।
- मिट्टी के बर्तनों में अलंकृत, अलंकृत सजावट का बढ़ता उपयोग गुप्त युग की समृद्धि और सांस्कृतिक पुनर्जागरण को दर्शाया है।

✪ दक्षिणी भारत में मिट्टी के बर्तन – संगम काल :–

- समांनतर में, संगम काल ने दक्षिणी भारत में मिट्टी के बर्तनों के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण को चिन्हित किया।
- उच्चगुणवत्ता वाली मिट्टी से बने इस समय के मिट्टी के बर्तन अपने जटिल डिजाइन और जीवंत रंगों के साथ अलग दिखते थे।
- कुम्हारों की असाधरण शिल्प कौशल मिट्टी के बर्तनों से लेकर अलंकृत मूर्तियां तक की वस्तुओं की सुंदरता में स्पष्ट थी।

➢ मध्यकालीन मिट्टी के बर्तनों की परंपराएं :–

✪ मिट्टी के बर्तनों पर इस्लामी प्रभाव :–

- इस्लामी शासन के आगमन से भारत की मिट्टी के बर्तनों की परंपरा में उल्लेखनीय परिवर्तन आया।
- यह सक्षलेषण का काल था, जहां स्वदेशी शैलियां फारसी तकनीक के साथ सहजता से मिश्रित हो गई, जिससे चमकते हुए मिट्टी के बर्तनों के एक नए युग की शुरुआत हुई।

✪ चमकदार मिट्टी के बर्तन :–

- अपनी चमकदार, चिकनी फिनिशिंग के साथ चमकदार मिट्टी के बर्तनों ने मध्ययुगीन काल के दौरान अत्यधिक लोकप्रियता हासिल की।
- इस नई तकनीक ने न केवल मिट्टी के बर्तनों की सुंदरात्मक अपील को बढ़ाया बल्कि इसके स्वामित्व को भी बढ़ाया।
- चमकीले मिट्टी के बर्तन जिन्हें अवसर जटिल पुष्प और ज्यामितीय डिजाइनों से सजाया जाता है। रूप और कार्यों के एक बेहतरीन मिश्रण का प्रतिनिधित्व करते हैं।

✪ मुगलकालीन मिट्टी के बर्तन :–

- मुगल शासको के संरक्षण में भारत में मिट्टी की बर्तन कला अपने चरम पर पहुंच गई।
- इस अवधि में प्रसिद्ध नीली मिट्टी के बर्तन चीनी मिट्टी पर लघु चित्रकला और फारसी और भारतीय रूपांकनों का एक उल्लेखनीय संलयन देखा गया।
- मुगल काल ने, अपनी सौंदर्य समृद्धि के साथ भारत में मिट्टी के बर्तनों की संस्कृति पर एक अमिट छाप छोड़ी।

➢ भारतीय मिट्टी के बर्तनों के प्रकार :–

✪ टेराकोटा मिट्टी के बर्तन :–

- टेराकोटा, या पकी हुई मिट्टी, भारत में मिट्टी के बर्तनों के सबसे पुराने और सबसे व्यापक रूपों में से एक है।
- अपने विशिष्ट भूरे – लाल रंग के लिए प्रसिद्ध इस मिट्टी के बर्तन की जड़े भारत के ग्रामीण इलाकों में है।
- टेराकोटा के बर्तन, रोजमार्ग के बर्तनों से लेकर विस्तृत मूर्तियों तक भारतीय कुम्हारों की स्वदेशी कलात्मक और कौशल का प्रतिनिधित्व करते हैं।

✪ काली मिट्टी के बर्तन :–

- काली मिट्टी के बर्तन भारत की मिट्टी के बर्तनों की परंपराओं में एक अद्वितीय स्थान रखते हैं। उत्तर प्रदेश के निजामाबाद और आजमगढ़ जैसे स्थानों से उत्पन्न काली मिट्टी के बर्तन अपनी धात्विक चमक, गहरे काले रंग और चांदी के डिजाइन के लिए जाने जाते हैं।
- फायरिंग प्रक्रिया के दौरान ऑक्सीजन की आपूर्ति को कम करके अद्वित्य काला रंग प्राप्त किया जाता है, जिससे मिट्टी के बर्तनों की सतह पर प्रकास और छाया का एक आकर्षक खेल होता है।

✪ लाल और काली मिट्टी के बर्तन :–

- लाल और काली मिट्टी के बर्तन, जो मुख्य रूप से गंगा के मैदानी इलाकों जैसे क्षेत्रों में पाए जाते हैं। एक विशिष्ट दोहरी रंग की रंग योजना को दर्शाते हैं।
- इस प्रकार के मिट्टी के बर्तन जो अपने चमकीले लाल आंतरिक भाग और गहरे काले बाहरी भाग की विशेषता रखते हैं। एक अनोखी फायरिंग तकनीक का उपयोग करके बनाए जाते हैं, जो मिट्टी की आक्सीकरण अवस्था को बदल देती है।

✪ नीली मिट्टी के बर्तन :–

- ब्लू पॉटरी, जयपुर का एक विशिष्ट शिल्प, एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन है, जिसमें उल्लेखनीय रूप से मिट्टी का उपयोग शामिल नहीं होता है।
- इसके बजाय, इसे कांच के पाउडर, मुल्तानी मिट्टी, बॉरेक्स, गोंद और पानी के आटे से बनाया जाता है।
- अपनी सुंदर नीली डाई, जटिल डिजाइन और टूटने के प्रति उच्च प्रतिरोध के लिए जाना जाने वाला नीली मिट्टी के बर्तन भारतीय मिट्टी की परंपराओं के मुकुट में एक सच्चा रतन है।

➢ मिट्टी के बर्तन, पत्थर के बर्तन और चीनी मिट्टी के बर्तन :–

- ये तीन श्रेणियां पकाने के तापमान और प्रयुक्त मिट्टी की गुणवत्ता के आधार पर विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तनों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

- मिट्टी के बर्तनों को कम तापमान पर पकाया जाता है और वे अक्सर छिद्रपूर्ण और कम मजबूत होते हैं। पत्थर के बर्तनों को उच्च तापमान पर पकाया जाता है, जिससे यह सख्त और अधिक टिकाऊ हो जाता है।
- चीनी मिट्टी, जो अपनी सफेद परिभाषित गुणवत्ता के लिए जाना जाता है। कओलिन नामक एक विशेष प्रकार की मिट्टी से बनाई जाती है जो उच्चतम तापमान पर पकाई जाती है।

➢ भारत में प्रसिद्ध मिट्टी के बर्तन शैलियों और केंद्र :–

✪ जयपुर की नीली मिट्टी के बर्तन :–

- भारत का 'गुलाबी शहर' जयपुर, अपनी अनूठी नीली मिट्टी के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध है।
- यह कला, रूप जो मूल रूप से मुगलों द्वारा लाया गया था, जयपुर में फला–फूला है। इसकी खूबसूरती से चमकती हुई नीले रंग की मिट्टी के बर्तनों की पर्यटको और संग्राहकों द्वारा अत्यधिक मांग की जा रही है।

✪ विष्णुपुर का टेराकोटा :–

- पश्चिम बंगाल का एक छोटा सा शहर विष्णुपुर अपने टेराकोटा मंदिरों और मिट्टी के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध है।
- शहर के कारीगर स्थानीय रूप से उपलब्ध मिट्टी को खाना पकाने के बर्तनों से लेकर सजावटी वस्तुओं तक की कई प्रकार के उत्पादों में कुशलता पूर्वक ढालते हैं।
- यहां के मिट्टी के बर्तन अपने समृद्ध मिट्टी के रंग और पौराणिक और सामाजिक विषयों के विस्तृत चित्रण के लिए जाने जाते हैं।

✪ खुर्जा पॉटरी :–

- उत्तर प्रदेश के खुर्जा में मिट्टी के बर्तनों का 600 साल से भी अधिक पुराना समृद्ध इतिहास है।
- अपने जीवंत, चमकीले रंग–बिरंगे मिट्टी के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध खुर्जा को अवसर 'सिरेमिक सिटी के रूप में जाना जाता है।
- यहां के कुम्हार कटोरे, फूलदान, प्लेट और सजावटी वस्तुओं सहित मिट्टी के बर्तनों की एक विस्तृत श्रृंखला बनाने के लिए पारंपरिक तकनीकों का उपयोग करते हैं।

✪ मोरबी–वाकानेर मिट्टी का काम :–

- गुजरात राज्य में, मोरबी और वाकानेर शहर अपने पारंपरिक मिट्टी के काम के लिए जाने जाते हैं।
- इस मिट्टी के बर्तन शैली की विशेषता जटिल डिजाइन, गहरी नककाशी और जीवंत रंगों का उपयोग है।
- यहां के मिट्टी कलाकार सदियों पुरानी शिल्प परंपरा को जीवित रखते हुए मिट्टी के खिलौने, बर्तन और सजावटी सामान जैसी विभिन्न वस्तुएं बनाते हैं।

✪ पोकरण मिट्टी के बर्तन :–

- राजस्थान का एक छोटा सा शहर पोकरण अपनी अनूठी मिट्टी के बर्तन शैली के लिए जाना जाता है।
- स्थानीय रूप से उपलब्ध मिट्टी और पारंपरिक मिट्टी के बर्तनों की तकनीक का उपयोग करके, यहां के कारीगर मिट्टी के बर्तनों की एक श्रृंखला बनाते हैं।
- पोकरण मिट्टी के बर्तनों को जो चीज अलग करती है वह है। इसकी विशिष्ट चमक, कच्ची सरसों और कांच का मिश्रण, जो मिट्टी के बर्तनों को इसकी विशिष्ट चमकदार फिनिशिंग देता है।

✪ अन्य उल्लेखनीय मिट्टी के बर्तन केंद्र :–

- भारत में कई अन्य उल्लेखनीय मिट्टी के बर्तन केन्द्र हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी शैली और परंपरा है।
- इनमें निजामाबाद की काली मिट्टी के बर्तन, कारीगिरी के मिट्टी के बर्तन और बस्तर के आदिवासी मिट्टी के बर्तन शामिल हैं।

➢ भारत में मिट्टी के बर्तन बनाने की तकनीक :–

✪ हाथ निर्माण :–

- हाथ से निर्माण, मिट्टी के बर्तन बनाने की सबसे बुनियादी तकनीक में से एक है और इसमें केवल हाथों और सरल उपकरणों का उपयोग करके मिट्टी को ढालना शामिल है।

- यह विधि, जिसमें पिंच पॉटरी, कुंडल निर्माण और स्लैब निर्माण जैसी तकनीकें के शामिल हैं, उच्च स्तर की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और रचनात्मकता की अनुमति देती है।

✪ पहिया फेंकना :–

- पहिया फेंकना एक अधिक उन्नत मिट्टी के बर्तन बनाने की तकनीक है। जिसमें घूमते हुए पहिए पर मिट्टी को आकार देना शामिल है।
- यह विधि जिसमें कौशल और सटीकता की आवश्यकता होती है, समनित और सामान मिट्टी के बर्तनों के निर्माण की अनुमति देती है।

✪ स्लिप कास्टिंग :–

- स्लिप कास्टिंग एक ऐसी तकनीक है जिसका उपयोग जटिल आकृतियां बनाने के लिए किया जाता है, जो अन्य तरीकों से आसानी से नहीं बनाई जाती है।
- इस प्रक्रिया में तरल मिट्टी या "स्लिप" को प्लास्टर मॉडल में डालकर और फिर तैयार टुकड़ों को हटाने से पहले इसे सेट होने देना शामिल है।

✪ फायरिंग तकनीक :–

- मिट्टी के बर्तन बनाने की प्रक्रिया में फायरिंग एक महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि यह नरम, लचीली, मिट्टी को एक कठोर टिकाऊ वस्तु में बदल देती है।
- वंचित फिनिशिंग और उपयोग की गई मिट्टी के प्रकार के आधार पर विभिन्न फायरिंग तकनीकों, जैसे खुली आग, भट्टी फायरिंग और धुआं फायरिंग का उपयोग किया जाता है।

➢ भारतीय समाज में मिट्टी के बर्तनों का महत्व और भूमिका :–

✪ अनुष्ठानों और त्योहारों में मिट्टी के बर्तन :–

- भारतीय रीति–रिवाजों और त्योहारों में मिट्टी के बर्तन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- चाहे वह दिवाली के दौरान जलाए जाने वाले मिट्टी के दीपक हो, ग्राम देवताओं को चढ़ाए जाने वाले टेराकोटा के घोड़े हो या पोंगल उत्सव में इस्तेमाल किए जाने वाले चित्रित बर्तन हो। मिट्टी के बर्तन भारतीय परंपराओं के ताने–बाने में जटिल रूप से बने हुए हैं।

✪ व्यापार और अर्थव्यवस्था में मिट्टी के बर्तन :–

- मिट्टी के बर्तन भारतीय अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, खासकर जमीनी स्तर पर।
- यह हजारों कारीगरों की आजीविका का स्त्रोत प्रदान करता है और स्थानीय व्यापार और पर्यटन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

✪ दैनिक जीवन में मिट्टी के बर्तन :–

- भारतीयों के दैनिक जीवन में मिट्टी के बर्तनों का व्यापक उपयोग होता है।
- खाना पकाने के बर्तनों और भंडारण जार से लेकर सजावटी वस्तुओं और वास्तुशिल्प तत्वों तक मिट्टी के बर्तन भारतीय घरों का एक अभिन्न अंग है।

➢ भारत में मिट्टी के बर्तन उद्योग के सामने चुनौतियां :–

✪ आधुनिकीकरण और बदलती जीवनशैली :–

आधुनिकीकरण के आगमन और बदलती जीवन शैली ने पारंपरिक मिट्टी के बर्तन उद्योग के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। मशीन – निर्मित, मानकीकृत उत्पादों की बढ़ती प्राथमिकता के साथ, हस्तनिर्मित मिट्टी के बर्तनों को कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

✪ औद्योगिक उत्पादों से प्रतिस्पर्धा :–

मिट्टी के बर्तन उद्योग को औद्योगिक उत्पादों से भी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। ये फैक्ट्री निर्मित वस्तुएं, जो अवसर सस्ती और अधिक आसानी से उपलब्ध होती हैं, पारंपरिक मिट्टी के बर्तन शिल्प के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा करती हैं।

✪ संस्थागत समर्थन का अभाव :–

मिट्टी के बर्तन उद्योग के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों में से एक संस्थागत समर्थन की कमी है। बाजारों तक सीमित पहुंच, प्रशिक्षण और विकास के अवसरों की कमी और अपर्याप्त वित्तीय सहायता जैसे मुद्दे अवसर इस पारंपरिक शिल्प के विकास और स्थिरता में बाधा डालते हैं।

➢ भारत में मिट्टी के बर्तनों का वर्तमान रुझान :—

✪ पुनरूद्धार प्रयास और आधुनिक नवचार :—

चुनौतियों के बावजूद, मिट्टी के बर्तन शिल्प को पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने के प्रयास किया जा रहे हैं। डिजाइन और तकनीक में नवाचार, हस्त निर्मित उत्पादों के प्रति बढ़ती जागरूकता और सराहना के साथ मिलकर मिट्टी के बर्तन उद्योग के लिए नए अवसर पैदा कर रहे हैं।

✪ पर्यटन और वैश्विक प्रदर्शन का प्रभाव :—

पर्यटन और वैश्विक प्रदर्शन भारतीय मिट्टी के बर्तनों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पर्यटक, अद्वितीय संस्कृतिक स्मारिका के रूप में मिट्टी के बर्तनों की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। जिससे मांग और बाजार के अवसरों में वृद्धि हुई है।

✪ मिट्टी के बर्तनों की शिक्षा और कार्यशालाएं :—

मिट्टी के बर्तनों की शिक्षा और कार्यशालाएं इस शिल्प को बनाए रखने के लिए शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभर रही है। ये पहल केवल न कारीगरों के लिए कौशल विकास के अवसर प्रदान करती हैं, बल्कि मिट्टी के बर्तनों के शौकीनों और अभ्यासकर्ताओं कि एक नई पीढ़ी तैयार करने में भी मदद करती है।

✪ https://Testbook.com>Static-gk>Po.....

Footnotes :-

1 डॉ. रीटा प्रताप : भारतीय चित्रकला एंव मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान संसाधन विकास मंत्रालय पृ. सं. 6, 7, 18

2 ललित कला के आधारभूत सिद्वान्त मीनाक्षी कासलोवाल 'भारती' राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपूर।

3 http://t.me/Shivaniartclasses

4 http://testbook.com/static-gk7Po.......

5 https://youtu.be/FK7aAlEY2mE?si=Jtjt4hAOyVLAXg6

द्वितीय अध्याय

- जीवन परिचय
- शिक्षा व कला यात्रा
- प्रदर्शनियां व पुरस्कार

जीवन परिचय

आधुनिक कुम्भकारी व समकालीन कुम्भकारी एक बहुत विशाल क्षेत्र है। इस क्षेत्र में कर्मचंद प्रजापति एक निपुण कलाकार हैं। कर्मचंद जी कुम्भकारी को निस्वार्थ भाव से अपनाते हैं। प्रायः कला इनके जीवन का एक अटूट हिस्सा है और इसी से ही उनकी जीविका भी चलती है। वह अपने काम को करते हुए उसमें लीन हो जाते हैं और मिट्टी को तराश कर एक अच्छा आकर, रंग, रूप, प्रदान करते हैं। इनका व्यवहार बहुत ही सयोग्य, संवेदनशील और शांत है और ये अपने व्यवहार को अपनी कला में दिखाने के लिए पूर्णतया सक्षम है।

कला क्षेत्र में इनका बहुत बड़ा नाम तो नहीं है किंतु इससे कुछ कम भी नहीं है। कर्मचंद जी अपने आप को एक बड़ा कलाकार नहीं मानते और सभी कलाकार इनका बहुत सम्मान करते हैं। व ये भी सभी का हौसला अफजाई करते हैं। कला की कुम्भकारी एक बहुत ही विशाल क्षेत्र है, किंतु कर्मचंद जी इस कला को एक विस्तृत पैमाने पर ले जाना चाहते हैं। उनकी जीवन शैली के बारे में जितना लिखा जाए उतना कम है। यह एक ऐसे कलाकार हैं जो अपनी कला के लिए दिन–रात मेहनत करते हैं, जिसके कारण उन्होंने इस समाज में अपनी एक अलग छवि बनाई है। समाज में इनका बहुत आदर और सम्मान किया जाता है।

ये एक बहुत ही साधारण व्यक्ति है, कर्मचंद जी में किसी प्रकार का कोई घमंड नहीं है। कर्मचंद जी अपनी कला को बहुत ही संवेदनशील और गंभीर रूप से करते हैं। ये अपने काम में कभी भी कोताही नहीं बरतते जिससे उनकी कला बहुत ही सुंदर रूप में उभर कर बाहर आती है। लोग और साथ के कलाकार इनकी कला को बहुत पसंद करते हैं। उनकी कला की जितनी सरहाना की जाए उतनी कम है। देखते ही इनके मृदभाण्ड़ (मिट्टी के बर्तन) किसी को भी पसंद आ जाते हैं। ये अपनी कला में समकालीन रूप में मिट्टी के बर्तन जैसे गढ़े, मिट्टी के गिलास, मटकी और गमले आदि तो बनते ही हैं, साथ ही ये आधुनिकता के साथ चलते हुए अब मिट्टी की बनी चीजों में इलेक्ट्रॉनिक का भी प्रयोग करते हैं, जिससे वह चीजें मन को मोहने वाली प्रदर्शित होती हैं। जैसे वह सजावट के समान में इलेक्ट्रिक बल्ब, मोटर इत्यादि का प्रयोग करते हैं।

आधुनिक युग में इन सब चीजों को बहुत ही पसंद किया जा रहा है। उनकी कड़ी मेहनत और कला साधन के कारण ही वह एक सक्षम कलाकार के रूप में उभर कर सामने आए हैं, और धीरे–धीरे कर्मचंद को प्रसिद्ध भी मिल रही है।

कर्मचंद एक कला का प्रतिनिधि, एक ऐसा कलाकार है जो मिट्टी के स्पर्श से सौंदर्य का अनुभव दिलाता है। उनका जन्म 2 फरवरी 1976 को हरियाणा के पानीपत क्षेत्र के गढ़सरनाई गांव में हुआ था।

उनके मूल निवास का कला और संस्कृति से गहरा रिश्ता था, क्योंकि उसके पिता श्री शोभा राम प्रजापति भी एक कला से प्रेरित व्यक्ति थे। माता का नाम बतेरी देवी था। कर्मचंद के परिवार में सात भाई बहन हैं, जो अपनी जिंदगी में एक विशेष स्थान रखते हैं।

बचपन से ही कर्मचंद को मिट्टी का जादू पहले से ही आकर्षित करता था। उनका दादा श्री बख्शी राम प्रजापति जी भी मिट्टी के बर्तन बनाने की कला में माहिर थे। उनकी प्रेरणा से कर्मचंद का रुझान भी इस दिशा में बढ़ा। उनकी शिक्षा के केंद्र में टेराकोटा पोट्री थी, जिसमें मिट्टी के बर्तन बनाने की कला उन्हें सैकड़ो वर्ष पुरानी परंपरा और विरासत का अनुभव प्रदान करती थी।

कर्मचंद की कला का उद्भव उनकी अपनी जिंदगी के अनुभवों से हुआ। उनकी प्रतिभा ने उन्हें मिट्टी से जुड़े रूपों और आकृतियों की खोज में परावर्तित किया। उनकी प्रतिभा की चमक उनके काम से प्रकट होती है, जिसे देखकर लोग हैरान रह जाते हैं। कर्मचंद का प्रमुख उद्देश्य था, मिट्टी को एक नया और अनोखा आकर देना, जिसमें सौंदर्य और संस्कृति का मिश्रण हो। उसके व्यावसायिक सफर में कर्मचंद ने कई प्रकार के बर्तन बनाए जैसे कि – घर के उपहार, कलाकृतियां, विशेष रूप से डिजाइन किए गए बर्तन और आदि उनकी प्रतिभा ने उन्हें देशभर में उन्हें प्रसिद्धि और सम्मान उनका कार्य न सिर्फ उनके क्षेत्र में बल्कि पूरे भारत में प्रसिद्ध है। उनका व्यक्तित्व उनके कार्यं में प्रकट होता है, जिसमें एक विचार, एक भावना और एक अनुभव का प्रतिबिंब छुपा होता है।

कर्मचंद के लिए कला सिर्फ एक व्यवसाय नहीं है, बल्कि एक संस्कृति धरोहर है। उसने मिट्टी के स्पर्श से लोगों की आंखों में अनोखी कहानीयाँ जीवित की। उनका काम उनकी धरोहर है जो आने वाली पीढ़ियां तक पहुंचेगा। एक काल्पनिक अनंतता तक कर्मचंद मिट्टी के सौंदर्य का मसीहा, एक ऐसा कलाकार है जो अपने कार्य से मिट्टी को जीवित करता है। उनका जीवन और काम एक प्रेरणा स्रोत हैं, जो नए कलाकारों को प्रेरित करता है और उन्हें संदर्भ देता है कि कला में सच्चाई और सौंदर्य कैसे मिलते हैं। उनका नाम उनके काम की छाप मिट्टी के सौंदर्य की कहानी एक अनमोल हिस्सा है।

शिक्षा व कला यात्रा

➤ **शिक्षा :–**

कर्मचंद एक अद्वितीय कलाकार हैं, जिनकी कला ने समाज में गहरा प्रभाव छोड़ा है, उनके परिश्रम, संघर्ष और उत्साह से भरे सफर ने उन्हें एक महान कलाकार के रूप में प्रसिद्धि दिलाई है। उनका जीवन कथा एक प्रेरणादायक उद्धरण है, जो संघर्ष और साहस की कहानी को दर्शाती है। उनके बचपन की शिक्षा और संघर्ष से भरी उन्हें उस स्थान पर ले गई जहां वह अब है।

कर्मचंद को गांव के सरकारी स्कूल में उनके माता–पिता उन्हें अच्छी शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे उनका बुद्धि विकास हो सके। वे पंजीकृत विद्यार्थी रहे और अपने अध्ययन को महत्व दिया। उनके प्रेरणादायक अध्यापक उन्हें समझाते रहे और उनकी रूचि को उत्तेजित किया। बचपन में ही उन्होंने अपने रोमांचक कला के प्रति अभिरुचि दिखाई।

जब वह अपनी माध्यमिक शिक्षा के लिए गांव से 10 किलोमीटर दूर गए, तो उन्होंने एक नया अनुभव प्राप्त किया। इससे उनकी नई परिस्थितियों में समर्थकता और संघर्ष की नई कला सीखने की आवश्यकता हुई।

कर्मचंद की यात्रा में अग्रणी शिक्षा संस्थानों में भी उन्होंने अपने दम पर प्रवेश प्राप्त किया। उन्होंने अपनी क्षमताओं का सही दिशा में उपयोग किया और उनके शैली को प्रदर्शित किया। उन्होंने आर्य महाविद्यालय पानीपत से स्नातक की पढ़ाई की है। उन्होंने कालेज के दिनों में कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया और अपनी कला को उन्नत करने के लिए पर्याप्त संदर्भ प्राप्त किया। उनके उत्साह, धैर्य और मेहनत ने उन्हें सफलता की ओर बढ़ाया।

उन्होंने कहा, – "मैंने हमेशा से मिट्टी की मूर्ति कला के प्रति रुचि रखी है, मुझे लगता है कि यह कला मेरी भावनाओं को सटीक ढंग से व्यक्त करती है"।

कर्मचंद की कला में प्रेम, ने उन्हें अनेक महत्वपूर्ण मौके प्रदान किये। उन्हें कहीं संग्रहालयों और उत्सवों में आमंत्रित किया गया, जहां उनकी कला को प्रदर्शित किया गया। उन्होंने अपनी कला को न सिर्फ रोजमर्रा के उपयोग के लिए बल्कि, आदर्श के लिए भी इस्तेमाल किया। उनका संघर्ष, साहस और सहयोग ने उन्हें सफलता की ऊंचाइयों तक ले गया। कर्मचंद ने कहा – "मैं अपने उत्साह और मेहनत को कभी नहीं खोना चाहता। मेरे मन में एक सपना है कि मैं अपनी कला को लोगों के दिलों तक पहुंचाऊ।

आज कर्मचंद का नाम एक महान कलाकार के रूप में उच्च्य स्थान पर है। उनकी कला ने लोगों के दिलों को छू लिया है और उन्हें नई दिशा दी है। उनका संघर्ष, उत्साह और उधमशीलता एक

प्रेरणास्पद उदाहरण है जो हमें यह सिखाता है कि किसी भी स्थिति में हमें अपने सपनों को पूरा करने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए।

- कला यात्रा :—

कर्मचंद की कला यात्रा एक अद्वितीय और प्रगतिशील सफर है, जिसमें उनकी प्रतिभा, मेहनत और दृढ़ निष्ठा ने नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। उनकी कला यात्रा का प्रारंभ एक छोटे से गांव में से हुआ, जहां उन्होंने बचपन में अपने प्रारंभिक शिक्षा का आरंभ किया। उनके पिता ने उन्हें साधारण और मेहनत की प्रमुख महत्वपूर्ण शिक्षा दी। गांव के सरकारी स्कूल में शिक्षा प्राप्त करते समय कर्मचंद ने अपनी कल्पना का प्रयोग करते हुए विभिन्न कलाओं में रुचि दिखाई। उनका प्रारंभिक रुझान मिट्टी से जुड़ी कलाओं की ओर था। जहां उन्होंने अपना पहला कदम रखा।

उनकी कला यात्रा का अगला पड़ाव उनके गांव से 10 किलोमीटर दूर स्थित एक शहर तक था। जहां उन्होंने अपने अध्ययन की प्रक्रिया जारी रखी। वहां के माहौल ने उन्हें नए दृष्टिकोण और नए अवसर प्रदान किये। कर्मचंद की लगन और परिश्रम ने उन्हें पानीपत के प्रमुख आर्य स्नातक स्कूल में प्रवेश दिलाया, जहां उन्होंने अपनी शिक्षा की कक्षाओं को प्रगतिशील बनाया। इस समय उन्होंने अपनी प्रतिभा और कला को विकसित करने के लिए विभिन्न कलाओं में भाग लिया जैसे कि रंगमंच और कला।

आर्य कॉलेज पानीपत में प्रवेश करने के बाद, कर्मचंद को उनकी कला में और भी सुधार की आवश्यकता महसूस हुई। वहां के शिक्षक श्री राम निवास जी ने उन्हें अपने उपदेशों और मार्गदर्शन से सहायता की, जिससे परिणामस्वरुप उनकी प्रतिभा ने ऊंचाइयों को छू लिया। कॉलेज के दिनों में, उन्होंने अनेक कला—संबंधी उपयोगिताओं में भाग लिया और अपने प्रतिभा को सजीव रखा। उनकी लगन और दृढ़ इच्छा ने उन्हें कुंभकारित्व और क्ले मॉडलिंग में प्रथम स्थान प्राप्त करने तक पहुंचाया।

उनकी कला यात्रा का अगला पड़ाव उनके पेशेवर जीवन का था। जब उन्होंने आई — ओसीएल में कंप्यूटर ऑपरेटर के रूप में नौकरी की थी। चार वर्षों तक आई ओसीएल में काम करते समय उन्होंने अपनी क्षमताओं और योग्यताओं का पूर्ण रूप से उपयोग किया। फिर कुछ व्यक्तिगत और पेशेवर कारणों से प्रेरित होकर उन्होंने यह नौकरी छोड़ी और अपने सपनों की ओर बढ़े। उन्होंने अपने दिल की आवाज सुनी और मिट्टी के बर्तन बनाने के क्षेत्र में अपना हुनर प्रदर्शित किया।

कर्मचंद की कला यात्रा एक उत्कृष्ट उदाहरण है जो दिखता है की कठिनाइयों से गुजर कर भी एक व्यक्ति अपने सपनों को साकार कर सकता है। यदि उसपे दृढ़ निष्ठा और मेहनत हो। उनकी कला यात्रा ने उन्हें एक सफल कलाकार के रूप में पहचान दिलाई है और उनका सफर एक प्रेरक उदाहरण है जो दिखता है कि विचार और कठिन परिश्रम से कुछ भी संभव है।

कर्मचंद की कला यात्रा के इस अद्वितीय सफर में उन्होंने सपनों की ओर बढ़ते हुए मेहनत और प्रतिभा के साथ अपने लक्ष्य को हासिल किया। उन्होंने अपने अद्भुत संघर्ष और साहस से हर मुश्किल को पार किया और आज उनकी कला और संघर्ष की कहानी हमारे दिल में प्रेरणा का स्रोत बन गई है।

प्रदर्शनियाँ व पुरस्कार

कर्मचंद ने अपना योगदान और वरिष्ठ सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए हरियाणा सरकार द्वारा 2011 के लिए राज्य पुरस्कार प्राप्त किया। उनके पूर्वतः दी गई प्रशिक्षण और उनके संघर्ष से उन्होंने टेराकोटा पॉटरी कला में अपना अद्वितीय स्थान स्थापित किया है।

उनकी कला को विकसित करने के लिए उन्होंने विभिन्न कार्यालयों और कला प्रतियोगिताओं में भाग लिया। उन्होंने अपनी शैली को समृद्ध करने के लिए समय–समय पर राष्ट्रीय स्तर की टेराकोटा पॉटरी शिक्षा के कार्यशालाओं में भाग लिया। उनका पहला पॉटरी कार्यशाला 2002 में आंध्र प्रदेश के खमम में आयोजित किया गया था। जिसमें उन्होंने 70 पॉटरी परिवारों को प्रशिक्षित किया था।

कर्मचंद ने अपनी कला को बढ़ावा देने के लिए अनेक कला परिषदों के कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लिया है। हरियाणा कला परिषद ने उन्हें अनेक अवसरों पर सम्मानित किया है। जिसमें 2011 में राज्य पुरस्कार भी शामिल है।

उनके प्रयासों ने न केवल उन्हें स्थानीय स्तर पर प्रसिद्ध दी है, बल्कि उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता प्राप्त की है। उनके देशभक्ति और कर्मचारी परिसेवा को भी सम्मानित किया गया है।

कर्मचंद के योगदान और सेवाओं को देखते हुए, सरकार ने उन्हें विशेष प्रतिष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया। उनकी समर्थ्यवान नेतृत्व और कला में उनका उत्कृष्ट योगदान सराहनीय है। उनके प्रतिभावान और उत्साही प्रयासों के लिए उन्हें हरियाणा सरकार द्वारा प्रतिष्ठा प्रदान की गई है। उनके कला क्षेत्र में 27 वर्षों का अनुभव है, जिसमें उन्होंने 75 प्रदर्शनियां और क्राफ्ट बाजार में भाग लिया।

हरियाणा सरकार ने 2011 में उन्हें टेराकोटा पॉटरी कला में योगदान के लिए राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया। कर्मचंद प्रजापति के प्रदर्शन के पीछे एक गहरा संवेदनशीलता और समर्थन की भावना होती है। उनका प्रतिनिधित्व करने का तरीका संसार की समृद्ध और विशाल प्राकृतिक बागवानी की भावना से प्रेरित है। उनके मिट्टी के बर्तन एक कला शैली का प्रतीक है, जो विश्वास को बनाए रखने और इसे प्राकृतिकता के साथ मेल करने के लिए समर्थ हैं।

उनकी प्रदर्शनियों में एक सरलता है जो मानवता के आदिकाल से आती है, और जिसमें सृजनात्मक का अद्वितीय जादू है। उनकी कला के माध्यम से वे मानवता के साथ एक अद्वितीय संबंध स्थापित करते हैं, जो प्राकृतिक और सामूहिक होने के लिए प्रेरित करता है।

कर्मचंद ने 40 राष्ट्रीय स्तर की टेराकोटा बर्तन शिक्षा के कार्यशालाओं में भी भाग लिया है। इनकी कला का महत्व राज्य स्तर पर मान्यता प्राप्त हुआ। करमचंद की प्रदर्शनियों में अमूल्यता छपी है,

जो समाज को समझने और सांझा करने के लिए मदद करती हैं। उनकी कला में सौंदर्य और शक्ति का अद्वितीय संगम है, जो हमें प्राकृतिक जीवन का महत्वता को महसूस कराता है। उनके प्रदर्शन में एक अद्वितीय और साहसिकता की भावना होती है जो हमें सोचने और कल्पना करने के लिए प्रेरित करती है। उनकी कला एक नई दिशा दिखाती है जो हमें मानवता के असीमित और आदित्य स्वरूप का अनुभव करने के लिए मजबूर करती है।

उनके कार्य सामाजिक संदेश और स्वयं का उत्कृष्ट उदाहरण है, जो हमें आत्मप्रेरणा और समर्थन प्रदान करता है। उनकी प्रतिभा का प्रदर्शन हमें अनुभव करने के लिए उत्साहित करता है और हमें एक सकारात्मक दृष्टिकोण की ओर मुख करता है। उनके प्रदर्शन से हमें साक्षात्कार के रंग, जीवन की महत्व और आनंद का महत्व सीखते हैं।

कर्मचंद में अपनी प्रदर्शनियों को अनेक स्थानों पर लगाया है। वे 2002 में खमम, आंध्र प्रदेश में अपना पहला पॉटरी कार्यशाला आयोजित करके आरंभ किया। उन्होंने हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में हरियाणा कला परिषद के साथ कई कला कार्यक्रमों और कला शिवरों में भाग लिया है। जैसे कि – चिका, कठिअल, बड़वाड़ा, हिसार और गुरुग्राम। इसके अलावा उन्होंने 2013 से 2023 तक राष्ट्रीय स्तर कार्यक्रमों में भी भाग लिया है। कर्मचंद ने अपनी प्रदर्शनियों को विभिन्न स्थानों पर लगाया है जिससे उनका कला कर्म और योगदान समाज में व्यापक रूप से पहुंच सके। उन्होंने कई प्रदर्शनियों, कला उत्सवों और कार्यशालाओं में भाग लिया है। कुछ महत्वपूर्ण प्रदर्शनियों की सूची निम्नलिखित है –

1. रवमम आंध्र प्रदेश : 2002 में खमम में एक पॉटरी कार्यशाला का आयोजन किया गया था। जिसमें कर्मचंद ने 70 पॉटरी परिवारों को प्रशिक्षित किया।
2. चिका कठियल, हरियाणा : 2013 में चिका में हरियाणा कला परिषद के अंतर्गत एक कार्यशाला का आयोजन किया गया था।
3. बड़वाला, हिसार, हरियाणा : 2015 में बड़वाला में हरियाणा कला परिषद द्वारा आयोजित किया गया था।
4. गुरुग्राम, हरियाणा : 2015 में गुरुग्राम में हरियाणा कला परिषद द्वारा आयोजित किया गया था।
5. डीसी एच रेवाड़ी, हरियाणा : डीसीएच रेवाड़ी में कई कार्यशालाएं और प्रदर्शनियों में भाग लिया गया है जिसमें 2021 में **HTTP** कार्यशाला और 2022 – 2023 में **GHSP** कार्यशाला शामिल है।

ये कुछ स्थानों का उल्लेख है, जहां कर्मचंद ने अपनी कला को प्रदर्शित किया और अपने अनुभवों को सांझा किया।

कर्मचंद ने प्रदर्शनियां विभिन्न समयों पर विभिन्न स्थानों पर लगाई हैं ताकि वे अपनी कला को विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित कर सकें और कार्यशालाओं में न केवल अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं बल्कि अन्यों को भी इस कला को सीखने और उसमें माहिर बनने का मौका प्रदान करते हैं। इसके अलावा, वे अन्य कलाकारों से भी अपने अनुभवों को सांझा करते हैं और उनसे नए और नवीनतम तकनीकों को सीखने का अवसर प्राप्त करते हैं। इस तरह उनके प्रयास न केवल उनकी खुद की प्रगति में मदद करते हैं, बल्कि कला क्षेत्र में सांझेदारी को और समृद्धि को भी बढ़ावा देते हैं।

तृतीय अध्याय

- कर्मचंद के मिट्टी के बर्तनों की तकनीक
- कर्मचंद की बर्तन बनाने की विधि

कर्मचंद के मिट्टी के बर्तनों की तकनीक

यह एक अद्भुत कला है जो न सिर्फ हुनर को दिखाती है, बल्कि एक सामाजिक और सांकृतिक परंपरा को भी जीवित रखना है। कर्मचंद जैसे कलाकार मिट्टी से न सिर्फ बर्तन बनाते हैं बल्कि, उनकी कला से एक अनुभव और संवेदना भी जुड़ी हुई है। उनकी प्रतिभा और मेहनत उनके हर एक बर्तन में झलकती है, जिससे उनकी पहचान बनती है।

मिट्टी से बर्तन बनाना एक कला नहीं बल्कि एक अनुभव है। इसमें मिट्टी को समझना, उसकी सादगी को महसूस करना और उसे अपने विचारों का प्रतीक बनाना शामिल है। हर कदम में कलाकार की दृष्टि में मिट्टी एक जीवित होते दिखाई देती है, जिससे वह अपने हुनर से सजीव बनाते हैं।

कर्मचंद की तकनीक में मिट्टी का स्पर्श एक अनूठा अनुभव है। जब वे मिट्टी को आकार देते हैं, तो वे उसमें अपने विचारों, संभावनाओं और संस्कृति का प्रतीक भी सजाते हैं। हर एक बर्तन, एक कहानी सुनाता है, एक समय की, एक जगह की और एक कलाकार की।

यह कला संभवतः प्रकृति से प्रभावित है, जिसमें मिट्टी, सूरज और हवा की एक अनूठी सांस होती है। कर्मचंद की कलाकारी कार्य से हमें एक नज़ारा मिलता है। प्रकृति और कला की अनूठी संगम का जो हमें हमेशा याद रहता है।

मिट्टी के बर्तन क्या हैं?

मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए मिट्टी और अन्य सामग्रियों को घड़े, कटोरे, प्लेट और अन्य आकार में ढाला जाता है। फिर, मिट्टी को सख्त और मजबूत बनाने के लिए बर्तनों को उच्च तापमान पर गर्म किया जाता है। मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल रोजमर्रा की जरूरतों जैसे बर्तन, स्टोरेज कंटेनर और खाना पकाने के बर्तनों के लिए किया जा सकता है। इसका इस्तेमाल आमतौर पर फूलदान और छोटी मूर्तियों जैसे सजावटी तत्वों को बनाने के लिए भी किया जाता है। मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल कई तरह के अप्रत्याशित अनुप्रयोगों में किया जाता हैय शौचालय और सिंक अक्सर चीनी मिट्टी के बने होते हैं, जिसका इस्तेमाल आधुनिक विद्युत अनुप्रयोगों में भी किया जाता है।

➡ मिट्टी की तैयारी के लिए निम्नलिखित सामग्री की आवश्यकता होती हैः–

➢ उच्च गुणवत्ता वाली मिट्टी :–

यह मिट्टी नदी के किनारे से इकट्ठा की जाती है और इसमें कोई अशुद्धियां नहीं होती। इसमें हवा के बुलबुले नहीं होने चाहिए और इसमें कठोर या नरम गांठें नहीं होनी चाहिए। भट्ठी में पकाए जाने वाले कार्यात्मक बर्तन बनाने के लिए आपको एक खास तरह की मिट्टी की आवश्यकता होगी। हवा में सूखने वाली मिट्टी, मॉडलिंग मिट्टी और पॉलिमर मिट्टी को इन उच्च तापमानों पर नहीं पकाया जा सकता। अगर आपको पता है कि आप अपने काम को किस तापमान पर पकाएँगे, तो ऐसी मिट्टी चुनें जो उससे मेल खाती हो। ज्यादातर मिट्टी के बर्तनों की आपूर्ति करने वाली दुकानों में अलग–अलग तापमानों पर पकाने के लिए कई तरह की मिट्टी मिलती है। मिट्टी के बर्तनों के लिए लाल मिट्टी एक लोकप्रिय पसंद है क्योंकि इसके साथ काम करना आसान है और यह एक सुंदर, प्राकृतिक रंग पैदा करती है जो देहाती और सुरुचिपूर्ण दोनों है।

➢ पानी :–

मिट्टी को गूथन और पिच तैयार करने के लिए स्वच्छ पानी का उपयोग किया जाता है। अगर हम शुरूआत में ही मिट्टी को गूंथने के लिए गंदा या किसी भी तरह का मिलावटी पानी डाल कर मिट्टी को गूंथ लेते है तो इससे बर्तन की गुणवता पर प्रभाव पड़ता है। कई बार बर्तन सही तरीके से नहीं पकते और खराब हो जाते है। अतः हमें साफ पानी का ही इस्तेमाल करना चाहिए।

➢ लकड़ी की स्टिक :–

मिट्टी को पाउडर में बदलने और उसे समान रूप से गूथनें के लिए लकड़ी की स्टिक का उपयोग किया जाता है। क्योंकि जब हम नदी के किनारे से मिट्टी लेकर आते है तो उसमे मिट्टी की कई प्रकार की गांठे होती है, कुछ छोटी या कुछ मोटी। उसको एक जैसा करने के लिए या फिर उसको पाउडर में बदलने के लिए हम लकड़ी की स्टिफ का इस्तेमाल करते है, और मिट्टी को तब तक पिटते रहते है जब तक मिट्टी की गांठे पाउडर में नहीं बदल जाती है।

➢ चाक (चरखा) :–

यह एक घूमने वाला यंत्र है, जिसे पैरों या हाथों की मदद से घुमाया जाता है। चाक पर मिट्टी रखकर उसे बर्तन का आकार दिया जाता है। चाक पर मिट्टी के बर्तन फेंकना सबसे पहचानने योग्य बनाने की तकनीक लगती है। मिट्टी के बर्तन बनाने का चाक एक ऐसा उपकरण है जो विभिन्न गति से घूमता है। मिट्टी को चाक के सिर पर लगाया जाता है और घूमते समय हाथों या औजारों से आकार दिया जाता है। बर्तन बनने के बाद इसे आमतौर पर सूखने के लिए चाक से काट दिया जाता है।

- हाथ के औजार :–

बर्तन को आकार देने और सजावट करने के लिए विभिन्न प्रकार के हाथ के औजारों का उपयोग किया जाता है जैसे – चाकू, छेनी, स्क्रैपर, धागा और स्पॉब्ज इत्यादि। इन सब औजारों का प्रयोग हम जब चाक पर बर्तन बनाते है, तब इन सब औजारो की अगल–अलग समय जरूरत पड़ती है। इन सबके प्रयोग से ही बर्तन को सही आकार व सजावट मिलता है।

- प्राकृतिक रंग :–

बर्तनों पर डिजाइन और सजावट करने के लिए प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। ये रंग मिट्टी के साथ अच्छी तरह से मिल जाते हैं और पकने के बाद भी चमकदार रहते हैं। पर हमें इन रंगों का उचित प्रयोग ही करना चाहिए। कई बार ज्यादा रंग लगाने से और बाद में बर्तन पर उसका फैलाव ज्यादा हो जाता है जिससे बर्तन पर कई बार धब्बे पड़ जाते है।

- भट्टी :–

यह एक बड़ी ओवन या चूल्हा होती है जिसमें बर्तनों को पकाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। भट्टी का तापमान लगभग 900 सेल्सियस होता है और इसमें बर्तन 6 से 8 घंटे तक पकाए जाते हैं। इसमें एक समय में काफी बर्तन लगाए जाते है, साथ ही साथ उसमें ईंधन भी लगाया जाता है। जब भट्टी में बर्तन रख लिये जाते है, फिर इसको ज्लाया जाता है, और कुछ समय बाद जब बर्तन पक कर तैयार हो जाते है तो इसमें से बर्तन निकाल लिये जाते है।

- लकड़ी और ईंधन :–

भट्टी में आग जलाने के लिए लकड़ी और अन्य इंधनों का उपयोग किया जाता है। यह ईंधन भट्टी को उच्च्च तापमान पर तक पहुंचने में मदद करता है। ईंधन में ज्यादातक कुम्हार गोबर सुखे हुए उपले, गोबर की खाद, घास–फुंस इत्यादि इस्तेमाल करते है।

- मापने के उपकरण :–

बर्तन बनाते समय सही माप और आकर बनाए रखने के लिए मापने के उपकरणों का उपयोग किया जाता है जैसे– मापने वाली पही और कैलीपर। आरंभ करने के लिए, आप मिट्टी के बुनियादी औजारों के अपेक्षाकृत सस्ते सेट पा सकते हैं। इन सेटों में आमतौर पर एक स्पंज, एक सुई उपकरण, एक फेटलिंग चाकू, एक लकड़ी की ट्रिम चाकू, एक रिब और शायद एक ट्रिमिंग उपकरण शामिल होता है। मिट्टी को कई अलग–अलग तरीकों से आकार दिया जा सकता है। मिट्टी को धकेलने, खींचने, दबाने, चपटा करने, या बाहर निकालने के लिए कई अलग–अलग तरह की मिट्टी के औजार उपलब्ध हैं।

- सफाई के उपकरण :–

बर्तनों को बनाने और सजाने के बाद उन्हें साफ करने के लिए ब्रश और अन्य सफाई के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है।

कर्मचंद की यह सामग्री सूची उनकी कला की परंपरागत विधियों और आधुनिक दृष्टिकोण के संयोजन को दर्शाती है। इन सामग्रियों के सही उपयोग से वे उच्च्च गुणवत्ता वाले टिकाऊ और सुंदर मिट्टी के बर्तन बनाने में सक्षम है।

कर्मचंद की बर्तन बनाने की विधि

1. मिट्टी का चयन :–

कर्मचंद बर्तन बनाने के लिए उच्च्य गुणवत्ता वाली मिट्टी का चयन करते हैं। वह नदी किनारे से मिट्टी इकट्ठा करते हैं, जो की साफ और बिना किसी अशुद्धियां वाली होती है। अगर उसमें किसी भी तरह की फिर भी कोई अशुद्धियां रह जाती है तो उसे वे चाक पर लगाने से पहले ही साफ कर लेते है।

2. मिट्टी की तैयारी :–

मिट्टी को ईकट्ठा करने के बाद, उसे धूप में सुखाया जाता है। सूखी मिट्टी को लकड़ी की स्टिक से पीट–पीटकर पाउडर में बदल लिया जाता है। फिर इस पाउडर को पानी में मिलाकर एक समान मिश्रण तैयार किया जाता है।

3. पिच (मिट्टी का मिश्रण तैयार करना) :–

मिट्टी के पाउडर और पानी को अच्छे से मिलाकर पिच तैयार किया जाता है। यह पिच गाढ़ा और एक समान होना चाहिए, ताकि इसे आसानी से आकर दिया जा सके। इसको अच्छी तरह से तैयार करने के लिए मिट्टी को आपस में काफी बार मिलाया जाता है। ताकि यह अच्छी तरीके से बर्तन बनाने के लिए मुलायम व चिकनी हो जाये।

4. मट्टी को चरखे पर रखना :–

पिच तैयार करने के बाद इसे चरखे पर रखा या लगाया जाता है। चरखा घूमाने के लिए हाथों या पैरों का प्रयोग किया जाता है, लेकिन अब यह काम बिजली की सहायता से होने लगा है। इस प्रक्रिया में मिट्टी को घुमाकर बर्तन का आकार तैयार किया जाता है। पहले के समय में कुम्हार अपने हाथों या पैरो से चरखे को चलाता था, उसे अपने हिसाब से उसके घुमने की गति को निश्चित करता था। चरखे को घुमाने के लिए एक लकड़ी की आवश्यकता होती है।

5. आकार देना :–

चरखा घूमते हुए कर्मचंद अपने कुशल हाथों से मिट्टी को विभिन्न आकारों में डालते हैं। वे बर्तन के ऊपरी हिस्से को अपनी उंगलियो और हथेलियों से आकर देते हैं, जिसमें बर्तन का आकार ठीक और सुंदर होता है। आकार देने के साथ ही साथ हाथों की उंगलियो से उसे एक अच्छी फिनिशिंग भी दी जा सकती है।

6. सुखाना :–

बर्तन का आकार देने के बाद उसे चरखे से उतार लिया जाता है व उन्हें कुछ समय के लिए धूप में सुखाया जाता है। यह प्रक्रिया 12 से 17 दिन तक चल सकती है, जिससे बर्तन पूरी तरह सूख जाए और उसमें नमी न रहे। अगर बर्तन पूरे तरीके से नहीं सुखा होता है तो वह पकने के बाद वह खराब हो जाता है और उसकी गुणवता नष्ट हो जाती है। अतः अच्छी गुणवता के लिए उसे अच्छी तरह से सुखाना पड़ता है।

7. सजावट :–

बर्तन सूखने के बाद कर्मचंद उन पर विभिन्न प्रकार के डिजाइन और सजावट करते हैं। इसके लिए वे प्राकृतिक रंगों और हाथ के औजारों का प्रयोग करते हैं। यह सजावट बर्तनों को और भी आकर्षक बनाती है। और पकने के बाद बर्तन बहुत ही अच्छे व चमकदार बनते है।

8. बर्तन पकाना :–

सजावट के बाद बर्तनों को भट्टी में पकाया जाता है। यह प्रक्रिया लगभग 900 सेल्सियस तापमान पर 6 से 8 घंटे चलती है। भट्टी में पकने से बर्तन मजबूत और टिकाऊ बनते हैं। बर्तन पकाने के लिए बहुत ही सावधानी रखनी पड़ती है। क्योंकि आग का तापमान बहुत ही ज्यादा होता है। इसे लोगों व बच्चों की पहुंच से बहुत दुर रखा जाता है। बारिश के दिनों में बहुत ज्यादा सावधानी रखनी पड़ती है। ताकि बर्तनों को कोई नुकसान न हो।

9. अंतिम निरीक्षण :–

बर्तन पकाने के बाद कर्मचंद उनका अंतिम निरीक्षण करते हैं। इस चरण में वे बर्तनों की गुणवत्ता और डिजाइन की जांच करते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि बर्तन में किसी भी प्रकार की त्रुटि न हो और सभी बर्तन त्रुटि मुक्त हो। उसके बाद उन्हे थोड़ा बहुत साफ कर लिया जाता है और उन्हें बेचने के लिए चयन कर के एक स्थान पर रख लिया जाता है।

10. विपणन और बिक्री :–

अंत में तैयार बर्तनों को स्थानीय और राष्ट्रीय बाजारों में बेचने के लिए तैयार किया जाता है। कर्मचंद विभिन्न प्रदर्शनियों और क्राफ्ट बाजारों में अपने बर्तनों को प्रदर्शित करते हैं, जिससे उन्हें अधिक पहचान और ग्राहक मिलते हैं।

कर्मचंद की यह विधि उनकी कला और तकनीक की गहराई को दर्शाती है। उन्होंने पारंपरिक तकनीकों को आधुनिक उपकरणों और दृष्टिकोण के साथ मिलाकर अपनी कला को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है।

चतुर्थ अध्याय

- भारतीय मिट्टी के बर्तनों में कर्मचंद का योगदान
- सामग्री

भारतीय मिट्टी के बर्तनों में कर्मचंद का योगदान

प्राचीन तकनीक का आधार :–

कर्मचंद ने अपने शिल्पकारी के काम में प्राचीन तकनीक का महत्व समझा और उसे अपनी कला में मिट्टी के बर्तन बनाने की प्रक्रिया में शामिल किया जो प्राचीन काल से चली आ रही है।

➡ घर के परंपरा का अनुसरण :–

उनके परिवार में मिट्टी के बर्तन बनाने की परंपरा थी, जिसे कर्मचंद ने अपनाया और उसमें अपना योगदान दिया। उनके माता–पिता भी शिल्पकार थे, जिन्होनें कर्मचंद को भी इस कला में प्रशिक्षित किया।

➡ शिक्षा और प्रदर्शन :–

कर्मचंद ने अनेक प्रदर्शनियों और कला सम्मेलनों में हिस्सा लिया और अपने कार्य को लोगों के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने कला को प्रदर्शित करके व मिट्टी के बर्तन बनाने के क्षेत्र में अपना योगदान दिया।

➡ शिक्षक और मार्गदर्शन :–

कर्मचंद ने अपनी कला को बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों से मार्गदर्शन प्राप्त किया। उनके गुरुओं का साथ और उनका समर्थन उन्हें मिट्टी के बर्तन बनाने की कला में माहिर बनाने में मदद की।

➡ कला शिक्षा का प्रचार :–

कर्मचंद ने अपने क्षेत्र में कला शिक्षा का प्रचार किया और नौजवानों को इस कला में रुचि जगाने और उन्हें बेहतर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

➡ समन्वय और संकलन :–

उन्होंने प्रतिदिन के जीवन में देखी गई छोटी–छोटी वस्तुओं से प्रेरणा ली और उन्हें अपने कार्य में समान्वित किया। कर्मचंद ने विभिन्न समुदायों से मिट्टी के बर्तन बनाने की प्रक्रिया और उसके महत्व को समझा।

➡ राज्य पुरस्कार :–

कर्मचंद को मिट्टी के बर्तन बनाने के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए राज्य पुरस्कार प्राप्त हुआ, जो उनकी कला और महत्व को दर्शाता है।

➡ शिल्प में वृद्धि :–

उनके योगदान से मिट्टी के बर्तन बनाने का शिल्प विकसित हुआ और इस क्षेत्र में एक नया चरण प्राप्त हुआ। करमचंद के कार्य ने मिट्टी के बर्तन बनाने की कला को एक नया आयाम दिया।

➡ प्राचीन तकनीक का आदान प्रदान :–

कर्मचंद ने अपने शिल्प को प्राचीन तकनीक के साथ जोड़कर उसे मोड़ने में अपना योगदान दिया। उन्होंने परंपरागत तकनीक को जीवित रखकर नई उत्पत्ति को समझने का प्रयास किया।

➡ शिक्षा का प्रसार :–

कर्मचंद ने अपने कौशल को सीखने और सीखाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने युवा कलाकारों को प्रेरित किया और उन्हें शिक्षित करने का प्रयास किया।

➡ कला शिक्षा :–

कर्मचंद ने अपनी कला को बेहतर बनाने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया। उन्होंने नवाचारी तकनीक का प्रयोग किया और युवा कलाकारों को संबोधित किया।

➡ प्रेरणा का स्रोत :–

उनकी विद्या और कार्य को देखकर नए कलाकार और राज्य कला संगठनों को प्रेरित मिला। उनके कलाकृतियों की अद्वितीयता और उत्कृष्ट से अनेक लोग प्रेरित हुए।

➡ कला समाज में विशेष स्थान :–

कर्मचंद ने कला को समाज में विशेष स्थान दिया और इसे बढ़ावा दिया। उन्होंने कला की महत्वपूर्णता को बढ़ावा दिया और लोगों को इसके प्रति जागरूक किया।

➡ सामाजिक योगदान :–

उन्होंने अपनी कला को सामाजिक दृष्टिकोण से भी अहम योगदान दिया। जिससे कला को समाज में महत्व और स्थान मिला। उनका योगदान सामाजिक उत्थान को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण साबित हुआ।

➡ संस्कृति की रक्षा :–

कर्मचंद ने अपने काम के माध्यम से भारतीय संस्कृति और तकनीकी रक्षा की। उन्होंने प्राचीन भारतीय शिल्प कला को जीवित रखने का प्रयास किया।

➡ प्राकृतिक धारा का समर्थन :–

उनके काम में प्राकृतिक तत्वों का महत्वपूर्ण समावेश है, जो पर्यावरण की सुरक्षा और प्रदूषण मुक्त को बढ़ावा देते हैं।

➡ सामुदायिक संप्रेषण :–

कर्मचंद ने अपने काम के माध्यम से सामुदायिक संप्रेषण बताया, जिससे कला का सामाजिक संबंध मजबूत हुआ।

➡ विश्वास की स्थापना :–

उन्होंने अपने कौशल और संघर्ष के माध्यम से एक विश्वास योग्यता की स्थापना की, जो कला में सफलता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण है।

➡ सहासिकता और प्रेरणा :–

उनका काम और उनकी कला सहासिकता और प्रेरणा की स्रोत बने, जो युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं।

➡ शिक्षात्मक प्रयास :–

उन्होंने न केवल अपने काम से बल्कि, शिक्षात्मक प्रयासों से भी कला के क्षेत्र में एक आदित्य स्थान हासिल किया है।

➡ कला एवं विज्ञान का मेल :–

कर्मचंद ने कला और विज्ञान का समन्वय किया है, जिससे नए विचार और नए उत्पादों की रचना हुई है।

➡ सामर्थ्य और निर्माणशीलता :–

उनकी कला में समर्थ और निर्माणशीलता का अद्वित्य संगम है जो कला को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान करता है।

➡ परंपरागत संभावनाओं का समर्थन :–

उनकी कला ने परंपरागत संभावनाओं का समर्थन किया है और इसे आधुनिक दृष्टिकोण से उचित रूप में स्थानांतरित किया है।

➡ कला का महत्व :–

उन्होंने कला के महत्व को समझा और इसे समाज में उच्च्व स्तर पर स्थान दिया, जिससे विकास और समृद्धि हुई।

➡ विविधता का समर्थन :–

उनके काम ने विभिन्न कला प्रदर्शनियों के माध्यम से विविधता का समर्थन किया और उन्होंने विभिन्न शैलियों और विचारों को सम्मानित किया।

➡ कला में नई दिशाएं :–

उन्होंने कला में नई दिशाएं स्थापित की हैं जिससे कला का स्तर और गुणवत्ता उच्च हुई है।

➡ समाज को समृद्धि की दिशा में प्रेरित किया :–

उनके योगदान से समाज को समृद्धि की दिशा में प्रेरित किया गया। जिससे विश्वास की शक्ति और सहयोग का संगम होता है।

➡ सांस्कृतिक समृद्धि का अभिवादन :–

कर्मचंद ने अपनी कला के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक समृद्धि का अभिवादन किया है और संस्कृति के मूल्यों को जीवंत रखने का संदेश दिया है।

➡ विश्व कला में नाम का उच्चतम स्तर :–

उनके कार्य ने भारतीय कला को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित किया और उन्हें विश्व कलाकारों की गिनती में उच्च स्थान प्राप्त हुआ है।

➡ साहित्यिक समर्थन :–

उन्होंने कला के माध्यम से साहित्यिक समर्थन भी प्रदान किया है जो विभिन्न कविताओं, किताबों और कहानियों में रंग भरता है।

➡ पारिवारिक योगदान :–

उनके परिवार ने भी उनके साथ योगदान किया है, जिससे उनका कला में और भी महत्वपूर्ण स्थान हासिल हुआ है।

➡ साहसिक प्रयास :–

उनका कला में साहसिक प्रयास और आदित्य का संगम है जो कला के क्षेत्र में नई दिशाओं की ओर ले जाते हैं।

➡ व्यक्तिगत विकास :–

उनकी कला ने उनके व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित किया है और उन्हें अपनी सीमाओं को पार करने के लिए प्रेरित किया है।

➡ समृद्ध संबंध :–

उनके कला के माध्यम से समृद्ध संबंध और दोस्ती का महत्वपूर्ण संदेश दिया गया है जो समाज को एक साथ लाने में मदद करता है।

➡ सामाजिक परिवर्तन :–

उनकी कला ने सामाजिक परिवर्तन को उत्तेजित किया है और समाज को एक सकारात्मक दिशा में बदलने में मदद की है।

➡ विश्वास और आत्मविश्वास :–

उन्होंने अपनी कला के माध्यम से विश्वास और आत्मविश्वास को बढ़ावा दिया है जिससे लोग अपनी क्षमता को पहचानते हैं और उन्हें सहजता से विकसित करते हैं।

➡ प्रेरणादायक प्रदर्शनियाँ :–

कर्मचंद की प्रदर्शनियाँ न केवल कला के क्षेत्र में प्रेरणा स्थापित करती हैं बल्कि उनके द्वारा निर्मित कला के माध्यम से जीवन को नई जीवन को भी आत्मविश्वास और संतुलित्ता की दिशा में प्रेरित करती हैं।

➡ सांस्कृतिक विभिन्नता का समर्थन :–

उनकी प्रदर्शनियाँ सांस्कृतिक विभिन्नता का समर्थन करती हैं और लोगों को विभिन्न संस्कृतियों और आदिवासी जीवन शैलियों के महत्व को समझती हैं।

➡ सामाजिक संदेश :–

उनकी प्रदर्शनियाँ सामाजिक संदेशों को सांझा करते हैं जैसे महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय।

➡ सहयोग और संप्रेषण :–

उनकी प्रदर्शनियाँ सहयोग और संप्रेषण के माध्यम से उनके विभिन्न समुदायों को एक साथ लाती हैं और सामूहिक विकास को प्रोत्साहित करती हैं।

➡ आत्मनिर्भरता का समर्थन :–

उनकी प्रदर्शनियाँ आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करती हैं जिससे लोग अपनी कला के माध्यम से अपने जीवन को स्वयं संचालित कर सकते हैं।

➡ सहज अभिव्यक्ति :–

उनकी प्रदर्शनियाँ सहज अभिव्यक्ति की प्रेरणा प्रदान करती हैं और लोगों को अपने भावों और विचारों को सांझा करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

➡ संस्कृति का संरक्षण :–

उनकी प्रदर्शनियाँ संस्कृति के संरक्षण और उनके महत्व को समझती हैं जिससे इसे नई पीढ़ियों तक पहुंचाने का काम किया जा सकता है।

➡ कला की महत्ता :–

उनकी प्रदर्शनियाँ कला की महत्ता को समझती हैं जो व्यक्ति के जीवन में सुख और समृद्धि का स्रोत है।

➡ साहित्यिक योगदान :–

उनकी प्रदर्शनियाँ साहित्यिक क्षेत्र में भी योगदान करती हैं जैसे कला से संबंधित कहानियों, कविताओं और नाटकों को प्रोत्साहित करती हैं।

सामग्री

मिट्टी का कार्य शुरू करने से पहले हमें बहुत सी बातों पर ध्यान देते हैं। जैसे– मिट्टी का चुनाव, विषय का चुनाव, मिट्टी की तैयारी या उसे कार्य के लिए उपयुक्त कैसे बनाना, औजारों का चयन, मिट्टी को पकाने की तैयारी आदि। मिट्टी कई प्रकार की होती है तथा मिट्टी के कार्य को करने के लिए हम कई प्रकार की मिट्टी का प्रयोग करते हैं। मिट्टी को हमें अपने कार्य के अनुसार बनाना पड़ता है, उसके लिए सर्वप्रथम हमें कुछ विशेष वस्तुओं की आवश्यकता होती है जैसे मुंगरी (लकड़ी का हथौड़ा), जाली, पिसी हुई रेट हुई या बहुत महीन भूसा (मिट्टी की मजबूती के लिए), नांद मिट्टी के लिए पीपा मिट्टी को डूबने के लिए, चाक, पटरा, तार का औजार, पटरी, बत्तियों के लिए मोटा कपड़ा या टाट, पॉलिथीन अथवा प्लास्टिक बैग इत्यादि।

जहां हम काम करते हैं, वहां मुंगरी अथवा लकड़ी के एक बड़े हथौड़े की आवश्यकता होती है। मिट्टी को कूटने के लिए। एक मोटे कपड़े एवं टाट की भी आवश्यकता होती है, क्योंकि जब हम मिट्टी को तैयार करते हैं तो नमी बनाए रखने के लिए उसके ऊपर गिला कपड़ा ढका होता है, क्योंकि गीले कपड़े को ढकने से मिट्टी में नरमाई आती है तथा मिट्टी से कार्य लंबे समय तक होता है। इसके अलावा पटरा, बोर्ड, चौकी या फिर में मेज की भी आवश्यकता होती है। उस पर प्लास्टिक शीट बिछाकर कार्य करने से मिट्टी उस पर चिपकती नहीं है। और इसके अलावा हमें कई प्रकार के औजारों की आवश्यकता होती है जैसे :–

1. कटिंग वाचर :–

इसके दोनों और लकड़ी अथवा प्लास्टिक के हैंडल बंधे होते हैं। इसका प्रयोग मिट्टी को बीच से काटने या धारी बनने के लिए हम प्रयोग करते हैं।

2. प्लास्टिक शीट :–

इसका प्रयोग मिट्टी को ढ़कने के लिए करते हैं। इसके अलावा हम कार्य करने वाली मेज पर भी इसको बिछाकर प्रयोग में करते हैं।

3. लकड़ी की पट्टियां :–

मिट्टी का स्लेब अथवा चपटा आकार देने के लिए एवं नापने के लिए हम लकड़ी की इन पट्टियों को प्रयोग करने में लाते हैं।

4. बेलन :–

बेलन का प्रयोग मिट्टी को चपटा करने के लिए किया जाता है। इसके द्वारा सफाई से हम मिट्टी को अपने अनुसार पतला व मोटा आकर दे देते हैं।

5. जाली की छलनी :–

जाली की छलनी मिट्टी को छानने एवं रंग करते समय एवं मिट्टी के रंगों को छानने के लिए प्रयोग करते हैं।

6. रसोई चाकू :–

रसोई घर में प्रयोग में आने वाला चाकू हम मिट्टी के स्लैब को काटने के लिए भी प्रयोग करते हैं। इसमें हम आग से सपाट वाले चाकू व विभिन्न तरह के चाकुओं को भी प्रयोग कर सकते हैं। चाकू का प्रयोग विशेष कर मिट्टी पर डिजाइन बनाने के लिए किया जाता है।

7. चम्मच :–

चम्मच का प्रयोग मिट्टी को खोखला करके आकार देने के लिए होता है। उसके पीछे की ओर से भी मैं विभिन्न प्रकार के दबाव देकर कार्य करने के प्रयोग में लाता हूँ।

8. स्पंज :–

स्पंज का प्रयोग मिट्टी के ऊपर से अतिरिक्त पानी को सोखने एवं साफ करने के लिए मैं प्रयोग करता हूँ।

9. मॉडलिंग औजार :–

यह एक विशेष प्रकार की लकड़ी का औजार होता है। जिसके किनारे गोलाई में होते हैं। पीछे से गोल एवं आगे से पतला एवं चपटा होता है। इसके द्वारा मिट्टी को दबाकर गहरी एवं हल्के उभार दिए जाते हैं।

10. ब्रश :–

ब्रश का प्रयोग मिट्टी को साफ करने व रंगने के लिए तथा कई जगह चिकनी फिनिशिंग के लिए किया जाता है। इसमें हम गोल अथवा चपटे दोनों तरह के ब्रुश को प्रयोग में लाते हैं।

11. आकार देने वाले औजार :–

इन सब के अलावा मैं अपने हाथ द्वारा बनाए गए औजारों का प्रयोग करता हूँ, जो हम खुद हथोड़ा छेनी से पीट कर बनाते हैं। यह औजार मिट्टी को अलग–अलग तरह के आकार देने के काम आते हैं। इन औजारों में कुछ औजार चपटे, कुछ नोक वाले तथा कुछ अलग–अलग रूप में कटे होते हैं।

इस प्रकार इसके अलावा मिट्टी को रंग करने की विविध प्रकार की सामग्री अपने पास रखते हैं जैसे – मिट्टी के रंग, अलग–अलग प्रकार की मिट्टी, गोंद, सरेस रंगों को प्रयोग होने वाले विभिन्न ऑक्साइड, वाटर कलर, ब्रुश छोटी बड़ी प्यालियां इत्यादि।

पंचम अध्याय

- कर्मचंद से साक्षात्कार

कर्मचंद से साक्षात्कार

प्र01. आपका नाम बताएं ?

उत्तर : कर्मचंद प्रजापति।

प्र02. आपका जन्म कब और कहां हुआ?

उत्तर : मेरा जन्म 2 फरवरी 1976 में हुआ था। मैं गढ़सरनाई गांव का रहने वाला हूं जो जिला हरियाणा, पानीपत में पड़ता है। मेरे गांव का नाम पहले नवाबगढ़ हुआ करता था क्योंकि हमारे गांव में उस समय में कोई भी मोमडन फैमिली नहीं होती थी, तो गांव का नाम अजीब सा लगता था, तो उसका नाम बदलकर गड़सरनाई रख दिया गया।

प्र03. अपने परिवार के बारे में बताएं ?

उत्तर : मैं मध्यम वर्ग प्रजापति परिवार से संबंध रखता हूँ। मेरे परिवार में मेरी माता और हम सात बहन–भाई हैं, जिनमें से मैं तीन नंबर पर आता हूं। मेरे बड़े भाई का नाम धर्मवीर प्रजापति है, जो नेशनल अवार्ड से सम्मानित है और बड़ी बहन का नाम सावित्री देवी है। भाई दिलीप कुमार, बहन परमेश्वरी देवी, राजकुमारी, भाई अशोक कुमार और संदीप कुमार और मेरी पत्नी निशा जो गवर्नमेंट जॉब करती है। मेरे पास तीन बच्चे हैं। एक लड़का जिसका नाम राधेश्याम है और दो लड़कियां एक का नाम कनिष्क और शुभम है। मेरी एक लड़की फाइन आर्ट स्कल्पचर में पढ़ रही है। राजा मानसिंह तोमर यूनिवर्सिटी में पढ़ती है। गुजरात में वहां से लड़का एम.कॉम कर रहा है। दिल्ली से और एक लड़का 10वीं क्लास में पढ़ रहा है।

प्र04. आपका प्रारंभिक जीवन कैसा था और आपने कला की प्रारंभिक शिक्षा कहां से प्राप्त की?

उत्तरः मेरा प्रारंभिक जीवन हरियाणा के गढ़सरनाई गांव में बीता। जहां मैं एक पारंपरिक मिट्टी के बर्तन बनाने वाले परिवार में पैदा हुआ। मैं कला की प्रारंभिक शिक्षा अपने माता–पिता श्री शोभाराम प्रजापति और माता बतेहरी देवी से प्राप्त की। मैं पांचवी तक की पढ़ाई गांव के गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल से की है। गांव से 10 किलोमीटर दूर जाकर दसवीं तक की पढ़ाई की और 12वीं आर्य सीनियर सेकेंडरी

स्कूल पानीपत से की है और मैं आर्य कॉलेज पानीपत से स्नातक की पढ़ाई की है। मैं बहुत सी प्रदर्शनियों में आर्य कॉलेज के साथ भाग लिया और 1992 में मैंने पहली प्रदर्शनी आर्य कॉलेज पानीपत में लगाई थी। मेरे माता–पिता ने हमारी ग्रेजुएशन पर ही फोकस किया था। मेरे पिताजी कहते थे की नौकरी जरूरी नहीं है। नौकरी से ज्यादा जरूरी है ग्रेजुएट, क्योंकि आपके आने वाले टाइम में अपने आपको सार्थक करके दिखाएंगे।

प्र05. आपने किस उम्र में और कैसे टेराकोटा पॉटरी में रुचि विकसित की ?

उत्तर : पानीपत में ट्रैडिशनल वर्क करने के लिए एक ही परिवार था, जो कि मेरे दादाजी करते थे। श्री बख्शी राम जी और उनके पुत्र श्री शोभाराम जी बचपन से ही हमारे घर पर मिट्टी के बर्तन बनाए जाते थे। जब हमारे माता–पिता यह काम करते थे तो हम भी उनके साथ मिट्टी के छोटे–छोटे खिलौने बनाए करते थे और बनाते–बनाते हमारा रुझान कला की और बढ़ गया। मैं 14 साल की उम्र में टेराकोटा पॉटरी में रुचि विकसित की। जब मैं अपने पिता के एक कामकाज को देखकर इस कला में शामिल हुआ।

प्र06. बचपन से इस काम की तरफ रुचि कैसे बड़ी ?

उत्तर : मेरे दादी जी मक्खन के लालच में हमसे काम करवाती थी, तो मैं जैसे दिवाली के टाइम पर दिये बनाना, शादी के लिए सरनाई बनाना, तो मक्खन के लालच में हल्का–फुल्का काम करते–करते वह काम सीख गया। मैं घर पर ही रहता था, तो मेरी दादी हमसे बड़े लेवल का काम करवाने लग गई। हम गांव के रहने वाले हैं तो मक्खन और गुड़ से ज्यादा लगाव था और धीरे–धीरे मैं काम करना सीख गया। मटके बनाना लगभग सातवीं–आठवीं क्लास में सीख गया था। गर्मियों की छुट्टियों में भी मैं मटके बनाने का काम करता था। स्कूल की 4:00 बजे छुट्टी होती थी और 9:00 बजे स्कूल लगता था, तो जितना भी टाइम होता था तो मैं मटके बनाने का काम करता था।

प्र07. कार्य शालाओं में आपकी भागीदारी कैसी रही है? किस प्रकार के प्रशिक्षण और अनुभव अपने इन कार्यशालाओं में प्रस्तुत किए है?

उत्तर : मैंने 40 राष्ट्रीय स्तर की कार्यशालाओं में भाग लिया है जहां मैं 10 पॉटरी परिवारों को प्रशिक्षित किया है। इन कार्यशाला में हमने पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों के शिक्षण सिखाए।

प्र08. अपने 2011 में हरियाणा सरकार से राज्य पुरस्कार प्राप्त किया। इसके बारे में बताएं कि यह पुरस्कार आपको क्यों और कैसे मिला?

उत्तर : मुझे 2011 में टेराकोटा पॉटरी में उत्कृष्ट योगदान के लिए हरियाणा सरकार से राज्य पुरस्कार मिला। यह पुरस्कार मेरे वर्षों के मेहनत और संपूर्ण का सम्मान है।

प्र09. अन्य कौन–कौन से पुरस्कार और सम्मान आपको मिले हैं?

उत्तर : मुझे कई अन्य पुरस्कार और सम्मान मिले हैं जैसे हरियाणा कला परिषद से सम्मान और विभिन्न राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार।

प्र10. इस कला को जारी रखने में आपको कौन–कौन सी चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

उत्तर : मैंनें कई आर्थिक और तकनीकी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। विशेष कर नई तकनीक और बाजार की मांग को।

प्र11. आपने अपने करियर में किन संघर्षों का सामना किया और उन्हें कैसे पार किया ?

उत्तर : मैंने आइ.ओ.सी.एल में कोंट्रेक्शन बेस पर चार–पांच साल कंप्यूटर ऑपरेटर की जॉब की। प्राइवेट जॉब में कई प्रकार की समस्याएं आने पर मैंने वह जॉब छोड़ दी। उन्होंने बताया कि कोई भी काम करने में संघर्ष तो करना पड़ता है। मैंने आर्थिक तंगी और पारंपरिक तकनीकों के संरक्षण की चुनौतियों का सामना किया, जिन्हें मैं समर्पण और मेहनत से पार किया।

प्र12. आपके करियर के दौरान कोई विशेष अनुभव या कहानी जो आपको हमेशा याद रहेगी?

उत्तर : मेरे पिताजी ज्यादातर जल पात्र और गमले बनाते थे। उस समय गमले का प्रचलन था। जैसे आधुनिकता में आए तो उन्हें बाहर का काम भी मिलने लगा। उन्होंने बताया कि एक महिला जापान में रहती थी, जो पानीपत की थी, तो उनके सिनेमा हॉल थे, जो पानीपत में रहती थी, वह जापान में रहती

थी तो उसकी लड़की इंडिया में आई और उन्हें उसे समय गार्डन के लिए गमले चाहिए थे। उनके पिता ने बताया कि उस समय गमले बनते नहीं थे, तो जापान में उनके परिवार में एक माली रहता था। तो उन्होंने उनके जरिए उनके पिता को खोज लिया। तो उनसे उन्होंने गमले बनवाया। वह अपने डिजाइन देते थे और धीरे–धीरे मेरे पिताजी ने गमले बनाने शुरू किया और वहीं से उन्होंने में एक लाइन पकड़ी। 1802 में उनके पिता ने काम शुरू कर दिया था और खम्मम आंध्र प्रदेश में पहले आयोजित पहली पॉटरी कार्यशाला का अनुभव मुझे हमेशा याद रहेगा। जहां मैं 70 पॉटरी परिवारों को प्रशिक्षित किया।

प्र13. क्या कोई ऐसी घटना है जिसने आपके कला जीवन को नया मोड़ दिया हो?
उत्तर : हरियाणा सरकार से 2011 में राज्य पुरस्कार प्राप्त करना, मेरे कला जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने मुझे और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित किया।

प्र14. आपकी दृष्टि में टेराकोटा पॉटरी कला की वर्तमान स्थिति क्या है ?
उत्तर : वर्तमान में टेराकोटा पॉटरी कला धीरे–धीरे पुनर्जीवित हो रही है। जहां पहले यह कला केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित थी, अब शहरी क्षेत्र में भी इसकी मांग बढ़ रही है। इसके साथ ही सरकार और विभिन्न संस्थाओं द्वारा इसे बढ़ावा देने के प्रयास भी किया जा रहे हैं।

प्र15. आपने अपनी कला की प्रदर्शनियाँ कहां–कहां और कब लगाई हैं? क्या इनमें से कोई विशेष रूप से यादगार है?
उत्तरः मैं 75 प्रदर्शनियों और क्राफ्ट बाजारों में भाग लिया है जिनमें से खमम, आंध्र प्रदेश में आयोजित पहली पॉटरी कार्यशाला विशेष रूप से यादगार है।

प्र16. कार्यशालाओं में आपकी भागीदारी कैसी रही है? किस प्रकार के प्रशिक्षण और अनुभव आपने इन कार्यशालाओं में प्रदान किए हैं?
उत्तरः मैंने 40 राष्ट्रीय स्तर की कार्यशालाओं में भाग लिया है, जहां मैंनें 70 पॉटरी परिवारों को प्रशिक्षित किया है। इन कार्यशालाओं में हमने पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों का मिश्रण सिखाया।

प्र17. मिट्टी के बर्तनों के अलावा आपके और क्या शौक थे?

उत्तरः मैं मिट्टी के बर्तनों के अलावा पेंटिंग में भी काम किया है। मेरा पेंटिंग करने में भी शौक था। मैंने एक साल तक पेंटिंग में काम किया और मैं अर्जुन जो पानीपत के थे, उनसे पेंटिंग सीखी है।

प्र18. आप किससे इंस्पायर थे और किससे अपने काम में मदद ली?

उत्तरः हरियाणा परिषद की एक महिला है लीला सैनीदिनकर उससे ज्यादा इंस्पायर हूँ। हरिकृष्ण प्रजापति जी थे जो दिल्ली में नेशनल अवार्डस थे। उनसे मदद लेता था, फोन पर ही हमारी बात होती थी और उनसे बात करके, उनसे काम के बारे में नई जानकारी लेता था। उन्होंने भी मेरी बहुत मदद की।

प्र19. आपने अपनी कला में किस प्रकार के तकनीकी नवाचार किए हैं ?

उत्तरः मैंनें पारंपरिक तकनीकों के साथ–साथ आधुनिक उपकरणों का प्रयोग कर तकनीकी नवाचार किए हैं। इससे मेरी कला अधिक आकर्षक और टिकाऊ हो गई है।

प्र20. आपकी दैनिक दिनचर्या कैसी होती है? जब आप कला पर काम कर रहे होते हैं?

उत्तरः मैं सुबह 8:00 बजे जल्दी उठता हूं और अपनी कला पर काम करने के लिए तैयार हो जाता हूँ। दिन भर मैं मिट्टी के साथ काम करता हूँ। मैं तकनीकों का प्रशिक्षण करता हूँ और अपनी कला को बेहतरीन बनाने की कोशिश करता हूँ।

प्र21. आपने अपनी कला में किस प्रकार के आधुनिक उपकरणों का समावेश किया है?

उत्तरः मैंने इलेक्ट्रिक व्हील, आधुनिक भट्टी और विशेष प्रकार के रंगों का उपयोग करना शुरू किया है, जो मेरी कला को अधिक आकर्षक बनाते हैं।

प्र22. क्या आपने किसी संगठन या संस्थान के साथ मिलकर काम किया है? यदि हाँ, तो उनके साथ आपका अनुभव कैसा रहा?

उत्तरः हाँ, मैंने संगठनों और संस्थाओं के साथ मिलकर काम किया है। इनका अनुभव बहुत ही सकारात्मक रहा है और इससे मेरी कला को और बढ़ावा मिला है।

प्र23. भविष्य में आपकी कला के लिए आपकी क्या योजनाएं हैं?

उत्तरः मैं अपनी कला को और व्यापक बनाने और इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की योजना बना रहा हूँ। इसके अलावा मैं नई पीढ़ी को इस कला में प्रशिक्षित करना चाहता हूँ।

प्र24. आपकी प्रेरणा के स्रोत कौन–कौन से हैं ?

उत्तरः मेरे माता–पिता मेरे सबसे बड़े प्रेरणा स्रोत हैं। इसके अलावा मेरे जीवन में मिले अनुभव और कठिनाइयां भी मुझे प्रेरित करती हैं।

प्र25. क्या कोई विशेष कलाकार या कला शैली है, जिससे आप प्रेरित होते हैं?

उत्तरः मुझे भारतीय पारंपरिक कला शैलियों से प्रेरणा मिलती है। इसके अलावा, आधुनिक कलाओं के कार्य भी मुझे प्रेरित करते हैं।

प्र26. आपने प्रदर्शनियाँ कहां–कहां लगाई है और उनका अनुभव कैसा रहा?

उत्तरः मैंने सिर्फ भारत में ही काम किया है। अगर मुझे आगे मौका मिला तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी काम करूंगा। और हर बार का अनुभव बहुत ही सकारात्मक और प्रेरणादायक रहा। लोगों की प्रतिक्रियां देखकर मुझे बहुत खुशी होती है और यह मुझे बेहतर करने के लिए प्रेरित करती है।

प्र27. आप मिट्टी के बर्तन बनाने की प्रक्रिया के बारे में बताएँ ? यह प्रक्रिया कैसे शुरू होती है और किस तरह से पूरी होती है?

उत्तरः– सबसे पहले हम नदी के किनारे से मिट्टी इकट्ठा करते हैं। फिर उसे धूप में सुखाते हैं। उसके बाद हम मिट्टी को लकड़ी के स्टिक से पीट कर पाउडर बनाते हैं। फिर इसे पानी में मिलाकर एक पिच बनाते हैं। पिच को चरखे पर इस्तेमाल करके विभिन्न वस्तुएं बनाते हैं, जिन्हें 12 से 17 दिन सुखाया जाता है, और फिर आग में 100 डिग्री टेंपरेचर ताप पर 6 से 8 घंटे तक पकाया जाता है।

उपसंहार

कर्मचंद की कला यात्रा एक प्रेरणादायक कहानी है जो हमें परंपरा, नवाचार और समर्पण का महत्व सिखाती है। मिट्टी के बर्तन बनाने की कला में उनकी गहरी निपुणता ने उन्हें न केवल एक कुशल कुम्हार के रूप में प्रतिष्ठित किया है, बल्कि एक ऐसे कलाकार के रूप में भी स्थापित किया है जिसने अपनी कला के माध्यम से समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। उनकी कलात्मक विधियों में पारंपरिक तकनीकों का सम्मान और आधुनिक दृष्टिकोण का समावेश है।

कर्मचंद ने अपनी कला को जीवित रखने के लिए विभिन्न राष्ट्रीय और राज्य प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं में भाग लिया, जिससे न केवल उनकी खुद की पहचान बनी, उनकी कला को भी एक वैश्विक मंच मिला। उनकी प्रदर्शनियों ने कई युवा कलाकारों को प्रेरित किया और उन्हें कला के क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया।

कर्मचंद का जीवन और कार्य एक उदाहरण है कि कैसे कठिन परिश्रम, समर्पण और कला के प्रति प्रेम से कोई भी अपने सपनों को साकार कर सकता है। उन्होंने अपने काम के माध्यम से न केवल अपने परिवार का नाम रोशन किया, बल्कि अपनी कला को एक नई ऊंचाईयों पर पहुंचाया। उनके द्वारा बनाई गई वस्तुएं न केवल सौंदर्य और शिल्प कौशल की मिशाल है, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपरा का प्रतीक भी है।

उनकी कला यात्रा में आने वाली चुनौतियों और संघर्षों का सामना उन्होंने खुद निश्चय और आत्मविश्वास से किया। उनके जीवन की यह यात्रा हमें सिखाती है कि सच्चे कलाकार का संघर्ष कभी व्यर्थ नहीं जाता और अंत में उसे अपनी मेहनत का फल अवश्य मिलता है। कर्मचंद की कहानी उन सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है जो कला के क्षेत्र में कुछ अलग करना चाहते हैं। उन्होंने अपनी कला को एक साधना के रूप में इस्तेमाल करके न केवल अपनी पहचान बनाई, बल्कि उस कला को भी जीवित रखा, जिससे आधुनिकता और औद्योगिकरण की आंधी में खो जाने का खतरा था।

उनकी कला यात्रा हमें यह सिखाती है कि कैसे एक व्यक्ति अपनी दृढ़ता समम्पर्ण और जनून के माध्यम से न केवल अपनी जिंदगी बदल सकता है, बल्कि एवं पूरे समुदाय और संस्कृति को भी प्रभावित कर सकता है। कर्मचंद ने अपनी कला यात्रा के दौरान कई बाधाओं का सामना किया, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी।

उनकी यह यात्रा हमें सिखाती है कि जीवन में कोई भी सपना पूरा किया जा सकता है। यदि हम उसमें पूरा विश्वास और समर्पण रखें। उनके द्वारा निर्मित मिट्टी के बर्तन घरेलू उपयोग की वस्तुएं तो है ही साथ में वे भारतीय कला और संस्कृति का जीवन प्रतीक है। कर्मचंद की कला यात्रा उनके परिवार, समाज और देश के लिए गर्व की बात है। उन्होंने अपनी कठिन परिश्रम और अद्वित्य कौशल के माध्यम से एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है, जिसे देखकर नए कलाकार प्रेरित हो सकते हैं और अपनी कला को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं। कर्मचंद का योगदान भारतीय कला के इतिहास में हमेशा याद रखा जाएगा और उनकी कला आने वाली पीढियों को सिखाती और प्रेरित करती रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 डॉ. रीटा प्रताप : भारतीय चित्रकला एंव मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान संसाधन विकास मंत्रालय पृ. सं. 7, 15, 18

2 https://youtu.be/Fk7aAlEY2mE7Si=5Jtjt4nAO4vLAXg6

3 देशवाल डॉ. सन्तराम : हरियाणा संस्कृति व कला पृ. सं. – 25, 26

4 ललित कला के आधारभूत सिद्वान्त मीनाक्षी कासलोवाल 'भारती' राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपूर।

5 http://t.me/Shivaniartclasses

6 http://testbook.com/static-gk7Po.......

चित्र संग्रह सूची

क्रमांक न0	–	चित्र
01	–	चाक पर तैयार की गई मिट्टी
02	–	सांचे से तैयार कलाकृति
03	–	बर्तन में कलाकारी
04	–	बर्तन बनाना
05	–	मुखोटे कलाकृतियाँ
06	–	सांचे से तैयार कलाकृतियाँ
07	–	गमले पर डिजाईन
08	–	चाक पर बर्तन बनाना
09	–	कच्चे व पक्के बर्तन
10	–	सजावटी कलाकृतियाँ
11	–	सजावटी लैंप
12	–	सजावटी टोकरा कलाकृति
13	–	पकने से पहले व बाद में कलाकृति
14	–	मिट्टी से तैयार कलाकृति
15	–	मिट्टी से तैयार सजावटी बर्तन
16	–	मिट्टी से तैयार कलाकृति
17	–	मिट्टी से तैयार दीपक
18	–	मिट्टी से तैयार कलाकृति
19	–	मिट्टी से तैयार बर्तन
20	–	मिट्टी से तैयार कप
21	–	मिट्टी से तैयार कलाकृति
22	–	सांचे से तैयार कलाकृति
23	–	मिट्टी से तैयार कलाकृति
24	–	मिट्टी से तैयार कलाकृति के साथ कर्मचंद
25	–	मिट्टी से तैयार कलाकृति
26	–	मिट्टी से तैयार कलाकृति

चित्र – 1 (चाक पर तैयार की गई मिट्टी)

चित्र – 2 (सांचे से तैयार कलाकृति)

चित्र – 3 (बर्तन में कलाकृति)

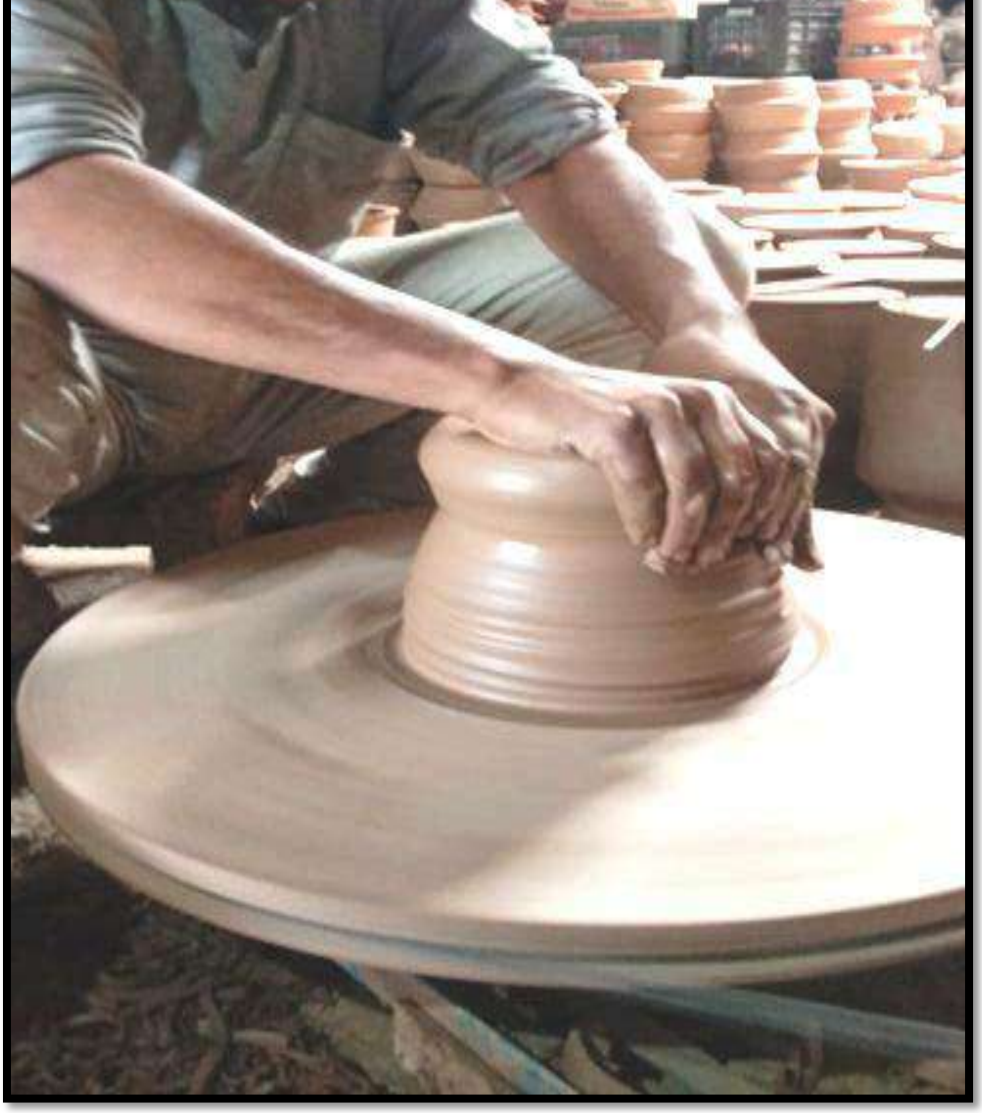

चित्र – 4 (बर्तन बनाना)

चित्र – 5 (मुखोटे कलाकृतियाँ)

चित्र – 6 (सांचे से तैयार कलाकृतियाँ)

चित्र – 7 (गमले पर डिजाई)

चित्र – 8 (चाक पर बर्तन बनाना)

चित्र – 9 (क्च्चे व पक्के बर्तन)

चित्र – 10 (सजावटी कलाकृतियाँ)

चित्र – 11 (सजावटी लैंप)

चित्र – 12 (सजावटी टोकरा कलाकृति)

चित्र – 13 (पकने से पहले व बाद में कलाकृति)

चित्र – 14 (मिट्टी से तैयार कलाकृति)

चित्र – 15 (मिट्टी से तैयार सजावटी बर्तन)

चित्र – 16 (मिट्टी से तैयार कलाकृति)

चित्र – 17 (मिट्टी से तैयार दीपक)

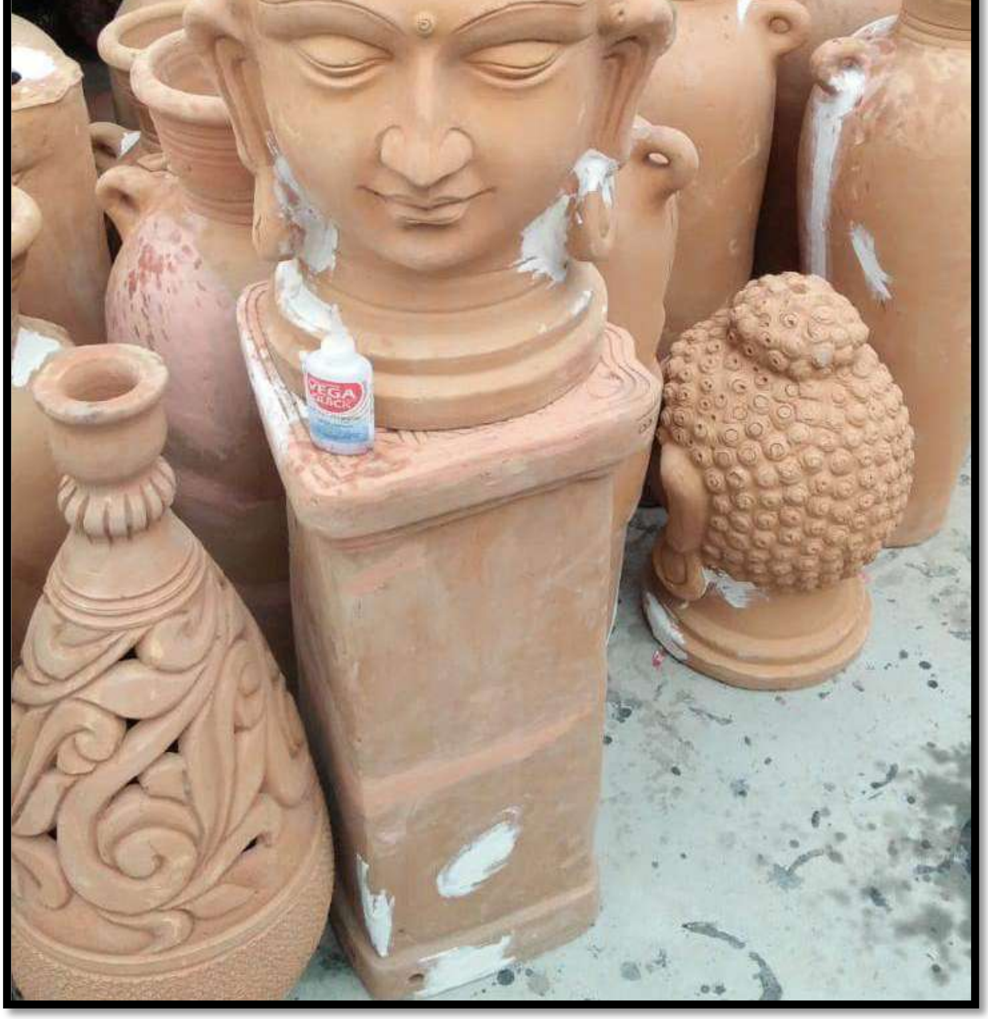

चित्र – 18 (मिट्टी से तैयार कलाकृतियाँ)

चित्र – 19 (मिट्टी से तैयार बर्तन)

चित्र – 20 (मिट्टी से तैयार कप)

चित्र – 21 (मिट्टी से तैयार कलाकृति)

चित्र – 22 (सांचे से तैयार कलाकृति)

चित्र – 23 (मिट्टी से तैयार कलाकृति)

चित्र – 24 (मिट्टी से तैयार कलाकृतियों के साथ कर्मचंद)

चित्र – 25 (मिट्टी से तैयार कलाकृति)

चित्र – 26 (मिट्टी से तैयार कलाकृति)

‘‘कला के सन्दर्भ में विभिन्न लोक कलाऐं’’

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

विभागाध्यक्षा
श्रीमती संतोष
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय
शाहाबाद (मा0)

निर्देशिक
महेश धीमान

शोधकर्त्री
रमन
स्नातकोत्तर
(अन्तिम वर्ष)

Estd. 1968

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद (मारकण्ड़ा)

2023—2024

ललित कला विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि रमन, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **''कला के संदर्भ में विभिन्न लोक कलाऐं''** शीषर्क पर मेरे निर्देशन से प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इसने पूरी मेहनत और लग्न से उक्त शोध कार्य सम्पन्न किया है। इस महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य पहले नहीं किया गया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ।

मैं इसके उज्जवल भविष्य एंव सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांक :

एसो. प्रोफेसर
श्रीमती, संतोष

प्रमाण पत्र

मैं रमन, यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध **''कला के संदर्भ में विभिन्न लोक कलाऐं''** विषय मेरे स्वंय के प्रयास से किया गया है। आर्य कन्या महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य नहीं किया गया है। मैंने इसे पूरी मेहनत और लग्न से सम्पन्न किया है। यह अप्रकाशित कृति है। जो सामग्री प्रयोग की गई है। उनको दिखाने का प्रयास किया गया है।

निर्देशिक | **शोधकर्त्री**

महेश धीमान | **रमन**

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0)

कुरूक्षेत्र।

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि रमन, अनुक्रमांक न0. 220156007, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने "**कला के संदर्भ में विभिन्न लोक कलाऐं**" शीषर्क पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ। इसने पूरी मेहनत और लग्न से यह लघु–शोध कार्य सम्पन्न किया है।

मैं इसके उज्जवल भष्यि एंव सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांकः

प्राचार्या

डॉ श्रीमती आरती त्रेहन

प्राक्कथन

लोक कला का मानव जीवन में बहुत महत्व है। इसका मनुष्य के जीवन से बहुत गहरा सम्बध है। लोक कला की प्रणाली मानव संस्कृति के प्रारम्भ से चली आ रही है। प्रत्येक क्षेत्र की लोक कला अपने ही ढंग की होती है। इसमें मानव जीवन की अभिव्यक्ति बड़े ही सशक्त ढंग से होती है। लोक कला का मानव जीवन के उदभव और विकास की कहानी बहुत लम्बी है। यदि हमे युगदृष्टि से उस पर विचार करते हैं तो हमें लगता है कि विभिन्न युगों पर उसके अस्तित्व की छाप एक जैसी नहीं रही। उसके जो आदर्श प्रतिमान उद्देश्य और प्रयोग वैदिक युग में थे, बाद के युगों में उनका तारतम्य नहीं बैठता और इसी प्रकार आज का लोक कला दर्शन अपने अतीत से कुछ भिन्न है। किंतु इसका यह आश्रय नहीं है कि लोक कला के विकास को दीर्घकालीन परंपरा और परिस्थितियों में कोई क्रमबद्ध है ही नहीं।

लोक कला का विकास बिना किसी आयोजित प्रयास के अपने आप होता रहा है। किंतु आज के युग में मनुष्य लोक कला से कुछ विमुख हो रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्र की लोक कला बहुत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण लोग अपने मन की अभिव्यक्ति अपनी कला द्वारा करते हैं, परंतु धीरे–धीरे लोगों का इस कला के प्रति रुझान कम होता जा रहा है। इसलिए लोक कला के महत्वता को समझने और समझाने के लिए, मैनें इस विषय को लघु शोध कार्य के रूप में चुना, ताकि लोग लोक कला को प्राचीन संस्कृति के रूप में लें और इसे नष्ट होने से बचाया जा सके।

प्रस्तुत विषय मेरी रुचि व स्वभाव के अनुकूल हैं। मैं एक ग्रामीण निवासी हूँ और हमारे गांव तथा आसपास के गांव में स्त्रियां तथा कन्याएं अब भी इस कला को अपनाए हुए हैं। अतः उनकी कला को देखकर मेरी इस विषय के प्रति रुचि बड़ी है। मैं अत्यधिक परिश्रम व मनोयोग से इस विषय का अध्ययन और विश्लेषण किया है। इसमें विषयों को सरल एवं रोचक भाषा में संक्षिप्त रूप से समझने का प्रयास किया है। इस लघु शोध कार्य के लिए सामग्री एकत्रित करना उसको नियोजित करना मेरे लिए उत्साह का कार्य रहा है। मेरी प्रारंभिक कल्पना इसी से सुदृढ़ हुई है।

इस लघु शोध को मैंने पांच अध्यायों में विभाजित किया है।

- प्रथम अध्याय में कला, हरियाणा का परिचय, लोक कला व लोक का अर्थ, हरियाणा में लोक कला का अर्थ बताया है।

- द्वितीय अध्याय में हरियाणा की विभिन्न तरह की लोक कलाओं का विवरण दिया है।

- तृतीय अध्याय में लोक कला के बारे में समाज की अलग–अलग विचारधारा एवं विलुप्त होती जा रही लोक कलाओं पर प्रकाश डाला है।

- चतुर्थ अध्याय में कला में लोक कला का योगदान एवं व्यापारिक स्तर पर लोक कला का प्रभाव डाला है।

- पंचम अध्याय में ग्रामीण लोक कला का महत्व एवं हरियाणा के उत्तरी गांव की लोक कला का वर्णन किया है।

इस लघु शोध का प्रबंध के माध्यम से मैंने लोक कला की महत्वता को समझने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध प्रबंध को सावधानी पूर्वक करने की कोशिश की गई है। तो भी कुछ अशुद्धियां रह जाना स्वाभाविक है। आशा है कि इस शोध प्रबंध में जो त्रुटियां रह गई हैं, उनके लिए मैं दोषी हूँ। इसलिए मैं विद्वानजनों से क्षमा प्रार्थी हूँ।

शोधकर्त्री

रमन

आभार

मेरे इस लघु शोध कार्य को करने में जिन महानुभावों का सहयोग रहा है, उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरे इस शोध कार्य का उलेख संपूर्ण नहीं होगा। मैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझती हूँ, जिनकी प्रेरणा, सहयोग और प्रोत्साहन से में इस कार्य को साकार रूप दे पाई।

सर्वप्रथम में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्थित आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा, के ललित कला विभाग की अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती संतोष के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने पूरे शोध कार्य के दौरान मेरा मार्गदर्शन किया। मैं डॉ. राम विरंजन विभागाध्यक्ष, ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र की धन्यवादी हूँ कि इस विषय को सफलतापूर्वक चलाने में आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद मारकंडा की सहायता की।

इसके साथ–साथ मैं अपने परिवारजनों एवं आस–पड़ोस में रहती महिलाओं का भी ह्रदय की गहराईयों से आभार प्रकट करती हूँ क्योंकि उनके सहयोग के कारण ही मैं इस शोध कार्य को सम्पूर्ण करने में सक्षम हो पाई हूँ।

मैं अपने गुरू आदरणीय श्री महेश धीमान सर व आदरणीय सहायक श्रीमती अंजली धीमान मैडम के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने इस कार्य के दौरान मेरी शंकाओं और समस्याओं का निदान किया तथा निरंतर प्रोत्साहित करते रहे।

मैं पूर्व प्राचार्य महोदया आदरणीय डॉ. श्रीमती आरती त्रेहन का आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने ललित कला विषय में स्नात्तकोतर कक्षाएं प्रांरभ कर हमारे चिरलंबित स्वप्न को साकार करने का मौका प्रदान किया।

मैं सभी गुरुजनों के प्रति श्रधेय भाव प्रस्तुत करती हूँ। इन्हीं की प्रेरणा व निर्देशन से यह शोध कार्य संपन्न हो सका। यदि इस लघु शोध प्रबंध में पाठक वर्ग का कुछ भी लाभ पहुंचा, तो मैं इसे अपना सफल प्रयास मानूंगी।

रमन

शोधकर्त्री

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन	**पृष्ठ संख्या**
आभार	
प्रथम अध्यायः	**01 — 10**
– कला	
– हरियाणा का परिचय	
– लोक कला का अर्थ	
– हरियाणा में लोक कला का इतिहास	
द्वितीय अध्याय :	**11 — 35**
– हरियाणा की विभिन्न तरह की लोक कला	
– सांझी एक लोक कला	
– हरियाणवी लोकगीत	
– लोक कला एवं लोकनाट्य	
– अहोई अष्टमी	
– पेपर मेशी का इतिहास	
तृतीय अध्यायः	**36 — 46**
– लोक कला के बारे में समाज के अलग–अलग विचार	
– विलुप्त होती लोक कला	
चतुर्थ अध्यायः	**46 — 56**
– कला में लोक कला का योगदान	
– व्यापारिक स्तर पर लोक कला का प्रभाव	
पंचम अध्याय :	**57 — 62**
– ग्रामीण लोक कला का महत्व	
– हरियाणा के उत्तरी गांव की लोक कला	
– उपसंहार	**63 — 63**
– संदर्भ ग्रंथ सूची	**64 — 64**
– चित्र संग्रह सूची	**65 — 65**
– चित्र सूची	**66 — 93**

प्रथम अध्याय

- कला
- हरियाणा का परिचय
- लोक कला व लोक का अर्थ
- हरियाणा में लोक कला का इतिहास

कला

मनुष्य जिस माध्यम से अपने विचारों एवं भावनाओं को प्रकट करता है, उसे कला कहते हैं और मनुष्य की रचना जो उसके जीवन में आनंद प्रदान करती है, कला कहलाती है। जैसे– चित्रकला, मूर्तिकला, काव्य कविता, संगीत, नृत्य इत्यादि। कला की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है। कला के संबंध में 'पाश्चात्य कला दृष्टिकोण भी कुछ इसी प्रकार का है– अंग्रेजी भाषा में कला को 'आर्ट' कहा गया है। फ्रेंच में 'आर्ट' और लैटिन में 'आर्टम' और 'आर्स' से कला को व्यक्त किया गया है। इनके अर्थ इस प्रकार हैं, जो संस्कृत भाषा के मूल धातु 'अर' के है। 'अर' का अर्थ है– बनाना, पैदा करना या रचना करना। यह शारीरिक या मानसिक कौशल आर्ट माना गया है। कला शब्द का सर्वोत्तम प्रयोग 'ऋग्वेद' में किया गया है। ''सत्यम् शिवम् सुंदरम्'' की अभिव्यक्ति भी कला कहलाती है। कला शब्द का सर्वोत्तम प्रयोग 'भरतमुनि' ने अपने 'नाट्यशास्त्रम'[1] में प्रथम शताब्दी में किया है।

कला के प्रकार :–

वैसे तो कला को 64 कलाओं में बांटा गया है। कला के कई प्रकार होते हैं। इन प्रकारों का परिगणन भिन्न–भिन्न रीतियों से होता है। जिस वस्तु, रूप अथवा तत्व का निर्माण किया जाता है। उसी के नाम पर इस कला का प्रकार कहलाता है जैसे :–

1 वास्तुकला या स्थापत्य कला :– भवन निर्माण कला जैसे – दुर्ग, प्रसाद, स्तूप, मंदिर, मकबरे। ये सभी वास्तुकला के अंतर्गत आते हैं।

2 मूर्तिकला :– पत्थर या धातु की छोटी–बड़ी मूर्तियों का निर्माण करना मूर्ति कला के अंतर्गत आता है।

3 चित्रकला :– भवन की भित्तियों, छतों या स्तंभों पर अथवा वस्त्र, भोजनपत्र या कागज पर अंकित चित्र।

4 मृद्भाण्डकला :– मिट्टी के बर्तन मृद्भाण्डकला के अंतर्गत आते हैं।

5 मृदाकला :– सिक्के या मोहरे।

पदार्थ :– कभी–कभी जिस पदार्थ से कलाकृतियों का निर्माण किया जाता है, उस पदार्थ के नाम पर भी उस कला का प्रकार जाना जाता है। जैसे –

1 प्रस्तरकला :– पत्थर से गढ़ी हुई आकृतियां [2]।

✪ https://youtu.be/ssE2TzoKkWl?Si=7nvnw3TwFoc914nz
✪ डॉ. रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, संस्करण 2019, पृ. सं. – 3, 5

3 दंतकला :– हाथी के दाँत से निर्मित कलाकृतियाँ।

4 मूर्ति कला :– मिट्टी से निर्मित कलाकृतियाँ या खिलौने।

कला की अवधारणाएं :–

अनेक कालो में बहुत से विद्वानों ने कला पर अपनी अलग–अलग अवधारणाएँ व्यक्त की हैं जैसे–

- 'प्लेटो' :– कला सत्य की अनुकृति की अनुकृति है।
- 'अरस्तु' :– कला अनुकरण है।
- 'हीगल' :– कला आदि भौतिक सत्ता को व्यक्त करने का माध्यम है।
- 'क्रौये' :– कला बाह्य प्रभावों की अभिव्यक्ति है।
- 'टॉल्सटॉय' :– कला भावों की क्रिया, रेखा, रंग, ध्वनि, शब्द द्वारा इस प्रकार अभिव्यक्त करना है। उसे देखने या सुनने वाले के मन में वही भाव जागे।
- 'फ्रायॅड' :– कला दमित भावनाओं का उभरा रूप है।
- 'प्रसाद जी' :– ईश्वर की कर्तव्य शक्ति का मानव द्वारा शारीरिक तथा मानसिक कौशल पूर्ण निर्माण करना है।
- 'मैथिली शरण गुप्त' :– अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति ही तो कला है। (साकेत, पंचम सर्ग)।
- 'डॉ0. वासुदेव शरण अग्रवाल' :– कला भावों का पृथ्वी पर अवतार है।
- 'रविंद्र नाथ टैगोर' :– कला में मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति करता है।

प्रत्येक कलाकृति से कलाकार व दर्शक दोनों को ही यदि एक प्रकार की प्रसन्नता प्राप्त हो, तो उसे सच्चे अर्थों में कला की संज्ञा दी जा सकती है।

✪ डॉ. आरती श्याकद : हरयिाणा, संस्कृति में लोकगीत संस्करण 2012, पृ. सं. – 15, 17

हरियाणा का परिचय

हरियाणा प्रदेश कृषि प्रधान देश है। हरियाणा का अतीत अत्यंत गौरवशाली रहा है। इस देश की उपजाऊ धरती पर ही भारतवर्ष की प्राचीनतम संस्कृति पल्लवित हुई है। मैने हरियाणा की ही गोद में जन्म लिया है। यही पली–बड़ी हुई। इस क्षेत्र के प्रति मुझे विशेष लगाव है। हरियाणा के प्रथम राज्य की स्थापना 1 नवंबर सन् 1966 को हुई। भारत का यह एक छोटा सा राज्य है। इसका वर्तमान क्षेत्रफल 44,212 वर्ग किलोमीटर है। इसकी जनसंख्या लगभग 2,10,8,29,89 है। यहां की जनसंख्या का 71 प्रतिशत भाग गांव में रहता है और 29 प्रतिशत शहरों और कस्बों में रहता है। यहां 21 जिले हैं। जिलों के नाम है– अंबाला, पंचकूला, कुरुक्षेत्र, करनाल, सोनीपत, हिसार, जींद, रोहतक, भिवानी, सिरसा, गुड़गांव, फरीदाबाद, महेंद्रगढ़, यमुनानगर, कैथल, पानीपत, रेवाड़ी, झज्जर।

इस सभ्यता के बहुत से लोग सिन्ध तथा पंजाब से उठकर हरियाणा के इस क्षेत्र में आ बसे थे। ये लोग नगरों में रहते हैं। कृषि व व्यवसाय में रुचि रखते हैं। हरियाणा में मुख्य रूप से तीन ऋतुएँ हैं। मार्च से मध्य जून तक यहां गर्म, कभी तेज हवाएं भी चलती हैं, जिन्हें स्थानीय लोग 'चूलिया' कहते हैं। जून से सितंबर तक यहां गर्म–आर्द्र ऋतु रहती है। कई बार सूखे की समस्या से यहां के लोगों को संघर्ष करना पड़ता है। अक्टूबर से फरवरी तक यहां शरद शुष्क ऋतु रहती है। कुछ दिनों में मौसम इतना ठंडा हो जाता है। इस ऋतु में विविध प्रकार के नृत्य होते हैं।

हरियाणा के उत्तर और दक्षिणी भाग में पहाड़ी क्षेत्र दक्षिणी और पश्चिमी भाग में स्थित रेतीले टीलो के क्षेत्र उपजाऊ हैं। पानी की तरह अधिक गहरी न होने के कारण नलकूपों या नहरों के माध्यम से पानी सरलता से उपलब्ध हो जाता है। इस प्रदेश में रबी और खरीफ दोनों फसलों का उत्पादन सहजता से हो जाता है। गेहूं, चना, सरसों, गन्ना, बाजरा, मूंग आदि। हरियाणा प्रदेशों में खान–पान के साथ–साथ कपड़ों की अच्छी उपलब्धता है।

❖ लोक विश्वास :–

हरियाणा की अधिकांश जनता शताब्दियों से गांव में रहती है। गांव की जनता शिक्षा के अभाव में तथा समुन्नत जनता के संपर्क में होने के कारण अंधविश्वास और जादू टोने के प्रभाव में है।

देवी देवताओं के रूप में यहां वासी, सूर्य, चंद्रमा, गंगा–जमुना से लेकर राम कृष्ण, शीतला माता, दुर्गा पूजा, गौरी या निर्जला एकादशी, गुग्गा पीर, पीपल पूजन, कुआं, तुलसी, जोहड़ आदि में अपना अटूट विश्वास रखते हैं। इसके अतिरिक्त हरियाणा में निम्नलिखित वृतानुष्ठानों को मांगलिक समझा

जाता है– रक्षा बंधन या श्रावणी, जन्माष्टमी, गुग्गा नौमी, अन्नत चौदस, श्राद्ध, दशहरा, दीपावली, सांझी, शरतपूर्णिमा, कार्तिका स्नान, मंडलीया, नौमी, करवाचौथ, अहोई, संक्रांति, शिवरात्रि, एवं भैया दूज आदि।

हरियाणा प्रदेश में उपर्युक्त शब्दों में से रीति–रिवाज शब्द ही अधिक बोला, समझा और लिखा जाता है। इसको नगरों में रहने वाले शिक्षित, अशिक्षित लोगों से लेकर गांव में बसने वाले साधारण स्त्री–पुरुषों तक सभी लोग अपनी बोलचाल के व्यवहार में लाते हैं। व्यक्ति एवं समाज का पारंपरिक संबंध इतना घनिष्ठ है कि इसे अलग नहीं किया जा सकता है।

❖ हरियाणा का लोक जीवनः–

प्रसिद्ध लेखक उदय भानु हंस ने अपनी हरियाणा गौरव गाथा में हरियाणा का जन–जीवन, धर्म–कर्म, लोक परंपरा, संस्कृति, परिश्रम का अद्वितीय समन्वय है। हरियाणा प्रदेश के लोग धरती की परिश्रमी संतान की भांति कर्म–पथ पर अग्रसर होती हुई। प्राचीन रीति–रिवाज, पर्व–त्योहारों एवं नृत्य का भरपूर आनंद लेती हैं। हमारे जीवन का ढंग ही हमारी संस्कृति है। दैनिक जन–जीवन में व्यवस्था स्थल साध–समाज आदि बातों का विशिष्ट ढंग से प्रयोग मिलता है। जैसी यहां चौपाल, गाय–बैल, रेहड़ू, जोहड़, गाबरू छोरा आदि कितने ही नाम लोकजीवन से संबंध कहे या जा सकते हैं। सभी लोक कलाओं के अभिन्न अंग होते हैं।

यहां के लोक जीवन की तस्वीरें हमें गांव में बसे हुए लोगों के जीवन में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती हैं। यहां की स्त्रियां, पुरुषों से भी अधिक श्रमशील होती हैं। हरियाणा के लोगों का रहन–सहन सरल होता है। यहां के अधिकतर लोग गांव में बसते हैं। गांव में वृक्षों से घिरे हुए कुंए तथा सीढियों वाले तालाबों को पनघट कहते हैं। हरियाणा का कर्मठ किसान, मजदूर अपने पिछड़ेपन को समाप्त करने के लिए संघर्ष में जुटा हुआ है। हरियाणा ही भारत का एकमात्र ऐसा प्रदेश है। यह परंपरा प्रेरित लोग परंपराओं, मान्यताओं, विश्वास, लोककलाओं आदि व्यक्त होती रहती हैं। हरियाणा का रहन–सहन, खान–पान बाकी प्रदेशों से उच्च्व है।

✪ https://en.wikipedia.org>Haryana

लोक कला व लोक का अर्थ

लोक कला के संबंध में कुछ लिखने से पूर्व यह आवश्यक है कि हम लोक कला को पहले समझें। ऋग्वेद में लोग शब्द का प्रथम अर्थ 'स्थान' मिलता है। बाद में 'तीन लोक', 'चौदह लोक' आदि अर्थ मिलते हैं। वेद या शास्त्र में भी निम्न के लिए भी लोक शब्द का प्रयोग हुआ है। हिंदी में सूर, और तुलसी और मीरा आदि में लोक शब्द का प्रयोग ''जन–समाज'' मानव मात्र के लिए किया गया है।

सूर – नन्द नन्दन के नेह मेह जिन लोक लीप लोपी।
तुलसी – लोकहु वेद न आन उपाऊ लोक की वेद बडेरो।

❖ लोक कला का अर्थ :–

'लोक' शब्द के अर्थ को लेकर अभी तक पाश्चात्य और भारतीय भाषाविदों में मटैक्य नहीं हो पाया है। ऋग्वेद में प्रयुक्त दहिलोकम् के अनुसार लोक शब्द का स्थान के रूप में प्रयोग हुआ है। लोक, परलोक, मृत्युलोक आदि शब्दों में लोक की अभिव्यक्ति, लोक के संबंध में एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। वेदवेत्ता महर्षि वेदव्यास ने स्वयं लोक धर्म और विधान के प्रति आस्था प्रकट करते हुए कहा है – प्रत्यक्ष – दर्शी लोका ना सर्वदशी भवेन्नर।

लोक के समानार्थी अंग्रेजी शब्द 'फाक' की उत्पत्ति एग्लो सेक्शन शब्द **Fore** से शुरू हुई है। जर्मनी में यह **Volk** के रूप में प्रचलित है। फोक शब्द से असंस्कृत और मूढ़ समाज का बोध होता है। व्यापक अर्थ में इसका प्रयोग सुसंस्कृत राष्ट्र के सभी लोगों के लिए होता है। इस 'फोक' शब्द के लिए हिंदी में लोक जन और ग्राम तीन शब्दों का प्रयोग हुआ है। लोक शब्द को ही उपयुक्त स्थान प्राप्त है।

डॉ0. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी 'लोक' शब्द का अर्थ बताते हुए कहा है कि – 'लोक' शब्द का अर्थ जन पद या ग्राम्य नहीं है, बल्कि गांवों व नगरों में फैली हुई समूची जानता है, जिसके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं है। ये लोग नगर में परिष्कृत रुचि संपन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वालों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन है। परिष्कृत रुचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारता को जीवित रखने के लिए भी जो वस्तुएं आवश्यक होती हैं, उन्हें उत्पन्न करते हैं।

डॉ कृष्ण बिहारी दास ने 'लोक' की सुंदर व्याख्या करते हुए लिखा है – 'लोक' कला उन लोगों के जीवन की अनायास अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत तथा सुसश्य प्रवाहों से परे रहकर काम या अधिक रूप में आदिम अवस्था में निवास करते हैं।

इस लोक का अर्थ वह सरल स्वाभाविक मानव समाज है जिनकी भावनाओं, विचारों, परंपराओं, क्रियाओं एवं मान्यताओं में वास्तविक कल्याण के तत्व विद्यमान रहते हैं। इसी को लोक संस्कृति भी कहा जाता है।

डॉ0. वासुदेव शरण अग्रवाल के शब्दों में लोक हमारे जीवन का महा समुद्र है। उसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहा है। लोक ही राष्ट्र का स्वरूप है। लोक के कृत्यान ज्ञान और संपूर्ण अध्ययन में सब शास्त्रों का पर्यवसान है। लोक समाज में व्याप्त समस्त विचार, आदर्श, मनोभाव, विश्वास, परंपरा, रहन–सहन, रीति–रिवाज, अनुष्ठान, क्रियाओं का रूप लोक की उत्पत्ति है।

लोक शब्द की व्याख्या करते हुए सोफिया बर्न का कहना है कि – यह एक जाति बोधक शब्द की भांति प्रतिष्ठित हो गया है, जिसके अंतर्गत पिछड़ी जातियों में प्रचलित अथवा अपेक्षाकृत जातियों के समुदाय में रीति–रिवाज, कहानियाँ, गीत एवं कहावतें आदि आते हैं।

उपरोक्त विचारों को देखने से ज्ञात होता है कि लोक का अर्थ अधिकांश विद्वानों ने आदिमानव या ग्रामीण मानव के संबन्धित तत्वों के संदर्भ में किया है। पश्चिमी और भारतीय लोक संबंधी विचारधारा को देखते हुए हम कह सकते हैं, लोक से तात्पर्य उस समाज से है जो शास्त्रीय और पांण्डित्य से कोसों दूर है, जिसे नागरिक संस्कृति ने प्रभावित नहीं किया है, जो अनपढ़ और ग्रामीण है। लोक कला स्वाभाविक होती हैं। इसका रूप सरल होते हुए भी हृदय को स्पर्श करने वाला होता है।

लोक का अभिप्राय एक देश के संपूर्ण समाज से हैं। इस प्रकार संपूर्ण समाज में व्याप्त कला को ही 'लोक कला' कहा जा सकता है। लोक कला आंतरिक सौंदर्य का अभिव्यक्त, प्रत्यक्ष तथा सरलतम रूप है, जिसमें न कोई शास्त्रीय बंधन होता है, न कोई बनावटीपन। लोक आकृतियों में प्रकटीकरण की स्वाभिवता इतनी सीधी और प्रकृति सदृश माधुर्य से पूर्ण होती है। सजावट क्या है? लोक कला के कलाकार नहीं जानते। भावों की अभिव्यक्ति, स्वाभाविक और हृदय से निकली हुई जिस प्रकार हरे जंगल में पक्षी स्वतः गा उठते हैं। इस प्रकार लोक आकृतियां स्वाभाविक किए जाने वाले मनुष्य के हर कार्य में देखी जा सकती हैं। रीति से हृदय से फुट निकलती है। लोक कलाकृतियां, कला के तत्वों और नियमों की मुखापेक्षण नहीं है। वे अपने आप में परिपूर्ण है। इस प्रकार लोक कलाकृतियों की वास्तविक दुनिया शहरी चमक दमक से कोसों दूर है। पारदर्शी शीशे की तरह स्वच्छ है। प्रकृति के इन श्रृंगारों को सजाने में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का अधिक हाथ रहा है। देश की तत्कालीन रीति–नीति की जानकारी हमें इन कलाकृतियों से जन्म से लेकर मृत्यु तक संबंध है। जन्म पर सतिये, विवाह पर हल्दी से चौक पूरना, मृत्यु पर आत्मा की शांति के लिए हवन पर बनने वाली आकृतियों आदि एक रिवाज के रूप में प्रचलित हैं।

लोक का अभिप्राय एक देश के संपूर्ण समाज से हैं। इस प्रकार संपूर्ण समाज में व्याप्त कला को ही लोक कला कहा जा सकता है। लोग द्वारा बनाई गई इस कला को अज्ञानता वश प्रायः लोग अविकसित अथवा गवारू या ग्रामीण कला के नाम से पुकारते हैं। लोक कला में एक ताजगी एवं स्थायित्व होता है जो कभी न पुराना पड़ता है न बदलता है। एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में अपने आप हस्तांतरित होता रहता है। लोक कला की कहानी मानव जीवन की सचित्र कहानी है, जो जन्म से मृत्यु तथा सुबह से शाम तक होती है।

✪ वन्दना वर्मा : भारतीय लोक कला एवं हस्तशिल्प वैभव, अकादमिक प्रतिभा संस्करण 2008, पृ. सं. – 5, 6, 7

हरियाणा में लोक कला का इतिहास

किसी भी क्षेत्र की संस्कृति को अच्छी तरह समझने के लिए उस क्षेत्र की लोक कला को जानना जरूरी है। हरियाणा भारत के उत्तर में है जो इसकी अद्वितीय कला और शिल्प में पाया जाता है। ये कलात्मक अभिव्यक्तियों राज्य की संस्कृति का एक बड़ा हिस्सा है और वर्षों से चली आ रही है। हरियाणा की कला और संस्कृति विस्तृत चित्रों से लेकर रंगीन रंगों के मिट्टी के बर्तनों तक का व्यापक उपयोग करते हैं। जो ये दिखाते हैं कि यहां के लोग कितने अनोखे और आकर्षक हैं। राज्य के शिल्पकार बहुत कुशल हैं। वे अपने विभाग के लिए जाने जाते हैं। उनका काम राज्य के बाहर और अंदर भी काफी चर्चा में है और ये कला रूप राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतिबिंब है। उनकी रचनात्मक और सुंदरता के लिए अत्यधिक कीमती है।

लोक कला का मानव जीवन और समाज से अच्छा संबंध है। इन्हें क्षेत्रीय रूपों में बांटना बहुत कठिन है। हरियाणा की कला यहां के लोकनृत्यों, कला–वार्ताओं आदि के माध्यम से देखी जा सकती है। यहां के प्राचीन मंदिरों की छतों तथा दीवारों पर लोककला के अनेक नमूने मिलते हैं। पुरानी हवेलियों, धर्मशालाओं तथा ग्रन्थों आदि पर अंकित चित्र यहां की लोक कला का एक उदाहरण है।

बाणभट्ट द्वारा लिखे गए ''हर्ष चरित्र'' से हमें ज्ञात होता है कि महाराजा हर्षवर्धन के महल को सुसज्जित करने के लिए अनेक लोक कलाओं व चित्रकारों को आमंत्रित किया गया था। कुरुक्षेत्र में बाबा श्रवणनाथ हवेली की डयोठी और दीवार के बाहर छत के निकट अनेक चित्र लोक जीवन पर आधारित हैं। यहां तीज–त्योहारों, विवाहों, देवी–देवता, मानव आकृतियां, अन्य त्योहार आदि अंकित किए जाते हैं। ये सब लोक कला के ही उदाहरण हैं। शरीर पर तरह–तरह के 'गोदना' का अंकन भी लोक कला का ही अंग है। हरियाणा में इसका खूब प्रचलन है। गोदने वाले को 'ललेहरी' तथा गोदने वाली को 'लिलिहारी' कहा जाता है। स्त्रियों में इसके प्रति अधिक रुझान होता है। वे अपने अंगों पर नाना–नाना प्रकार के गोदने गुढ़वाती हैं, जिसमें मोर–मोरनी, तोता, बिच्छू, फुल, ओम् या अपने पति का नाम तथा हनुमान देवों के चित्र भी हरियाणा के पहलवानों की भुजाओं पर देखने को मिलते हैं। कला के अंतर्गत हरियाणा में संगीत के क्षेत्र में भी बहुत रूचि ली जाती है।

हरियाणा प्रदेश सदैव ही सांस्कृतिक चेतना की भूमि रहा है। हरियाणा का अतीत अत्यंत गौरवशाली रहा है। हरियाणा में मनुष्य ने कब बसा प्रारंभ किया, इस प्रश्न को लेकर विद्वानों में अत्यंत मतभेद है। प्रस्तर युग की चर्चा करें तो हरियाणा के इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान डॉ0. के0. सी0. यादव के अनुसार यहां पर मानव निवास को कोई करोड़ों वर्ष पूर्व हुआ बताते हैं, तो कोई लाखों वर्ष, तो कोई 50–60

हजार वर्षों तक पहुंचते हैं, तो कोई हजार वर्षों तक ही। अंत प्रमाणिक सामग्री के अभाव में यह कहना अत्यंत कठिन है कि इनमें से कौनसा मत सही है। अब तक हुई शोध–खोज एवं खनन द्वारा केवल इतना ही सिद्ध हो गया है कि लगभग दो लाख पूर्व गुड़गांव जिले की अरावली पहाड़ियों में और ऊपर शिवालिक की गिरिमालाओं में मानव रह रहा था। उसका रहन–सहन अत्यधिक सादा था।

सरस्वती तथा दृषदवती नदियों के पुराने काठो की पुरातत्विक खुदाईयों में हिसार जिले के एक गांव ''सीसवाल'' में सबसे पहले इस सभ्यता का पता चला। इस सभ्यता के लोग छोटी–छोटी बस्तियों में झोपड़ियां तथा छोटे मकान बनाकर रहते थे। कृषि उनका मुख्य व्यवसाय था। इनका समय 2500 ई0पू0 से पूर्व का माना जाता है।

डॉक्टर शुक्ला के अनुसार इस सभ्यता के बर्तनों पर कुछ ऐसे डिजाइन हैं जो सिन्धु–सभ्यता काल में भी चलते रहे। इस सभ्यता के लोग सिन्ध तथा पंजाब से उठकर हरियाणा के क्षेत्र में आ बसे थे। हरियाणा के लोग कृषि व व्यापार करने में अत्यधिक रुचि रखते थे। हरियाणा की प्रमुख नदियाँ सरस्वती, दृषद्वती विनशन आदि का उल्लेख प्राप्त होता है।

''हे सरस्वती, हमें धन–धान्य युक्त करो– हमें अपने से दूर मत करो, अपने दूध से वंचित न करो। हमारा सख्त और सत्कार स्वीकार करो। हम तुमसे पृथक होकर किसी अन्य देश में न जाए''।

कुरुक्षेत्र में कुरूवंश का नाम ऋग्वेद में नहीं मिलता। कुरुक्षेत्र के अंतर्गत थानेश्वर, कैथल तथा करनाल भूखंड आए। कुरुक्षेत्र उत्तर वैदिक काल तक आर्य सभ्यता का केंद्र बिंदु बन गया था। 335 ई0. के आसपास हरियाणा को गुप्त वंश के राज्य का अंग बना लिया और लगभग 450 ई0. तक यह प्रदेश गुप्तों के अधिकार में ही रहा। व्यक्ति एवं समाज का पारस्परिक संबंध इतना घनिष्ठ है इसे अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि समाज से होकर व्यक्ति स्वयं में मनुष्यत्व एवं गुणों का विकास नहीं कर सकता। समाज में रहकर ही मानव अपने आकांक्षाओं और मान्यताओं को घोषित करता है। हरियाणा में विभिन्न जातियां निवास करते हैं, जिनके अपने–अपने रीति रिवाज हैं। भारत एक ऐसा देश है जहां अनेक जातियों तथा परिवेश से संबंधित लोग रहते हैं।

द्वितीय अध्याय

- हरियाणा की विभिन्न तरह की लोक कला
- सांझी एक लोक कला
- हरियाणवी लोकगीत
- लोक कला एवं लोकनाट्य
- अहोई अष्टमी
- पेपर मेशी का इतिहास

हरियाणा की विभिन्न तरह की लोक कला

भारतवर्ष विभिन्न ऋतुओं का देश है। इसी तरह हमारे ज्यादातर पर्व ऋतु संबंधी है। जिसके चलते गीत, नृत्य, चित्रण, मूर्तिकंठन और अलंकरण अधिक विद्याएँ जो हमें त्यौहारों में देखने को मिलती हैं। भारत की आत्मा गांवों में बसती है और ग्रामीण आंचल में हमारी अर्थव्यवस्था कृषि से जुड़ी हुई है। इसलिए हमारे सभी त्यौहार भी धरती से जुड़े हुए हैं। हर दो मास में बदलती ऋतुओं में कई–कई त्यौहार आते हैं, जिन्हें लोक मानस अपनी–अपनी तरह से मनाता है। बेशक इन अराध्यों में देवी–देवता अलग हैं। उनकी अनुष्ठात्मक पूजा विधि और गीत अलग–अलग हैं। लेकिन उनकी भावना, आत्मा, अध्याय और उद्देश्य एक–सा ही होता है।

सर्वत का भला संपन्नता, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना। मानव जीवन में समाऐ हुए आचार–विचार, व्यवहार और संस्कार कला के बिना फीके हैं। इसलिए कला लोक संस्कृति की छाप निकलते हुए नजर आते हैं। हरियाणा के लोक साहित्य के विविध अंगों के निर्माण में हरियाणा प्रदेश पर्याप्त अग्रणी रहा है। जिस प्रकार बज्र का 'रसिया' और पंजाब का 'भांगड़ा' प्रसिद्ध है। इस तरह हरियाणा में तीज, त्यौहार, लोकगीत, नृत्य आदि सब प्रसिद्ध हैं। हरियाणा के रीति–रिवाज और अनुष्ठान, पशु–पालन, लोक संस्कृति, लोक कहानियां, साके, गीत, पहेलियां तथा लोरियाँ भी इसके विषय हैं। लोक साहित्य के क्षेत्र को समझाते हुए। डॉ0. शंकरलाल यादव ने लोकगीत, लोकगाथा, पहेली आदि को इनमें समाहित किया है।

सांझी एक लोक कला

सांझी एक लोक कला है। यह लोक कला संपूर्ण हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में पितृपक्ष के अंतिम दिन अमावस्या को स्थापित की जाती है। यह कवारी कन्याओं का पर्व है। इस पर्व की तैयारी में कुछ कच्चे व परिपक्व हाथों का सहयोग होता है। सांझी का त्यौहार बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। सांझी शब्द की उत्पत्ति के बारे में कई धारणाएं हैं। लोक साहित्य के शोधकर्ताओं में डॉक्टर वजारा वेदी के अनुसार ऐसी मान्यता है कि – सांझी शब्द संझ से बना, जिसका अर्थ शाम है। सांझी की पूजा श्याम के समय की जाती है। जिससे इसका नाम सांझी प्रचलित हो गया। सांझी को अलग–अलग स्थान पर अलग–अलग नाम से जाना जाता है यथा– सांझी, सांची, संजुली, रिंझा, माई, सांझी माई, संजय भाई के नाम से जाना जाता है।

मुंदेलखण्ड में अमूलिया व महाराष्ट्र में गुला बाई के नाम से सांझी का त्यौहार मनाया जाता है। हरियाणा प्रांत में लोक मानस की खुशहाली, भले, समृद्ध एवं संपन्नता के लिए अश्विन मास के शुक्ल पक्ष के नवरात्रों में सांझी देवी की पूजा की जाती है। अश्विन मास के नवरात्रों में पूजा अर्चना एवं अनुष्ठान के लिए पवित्र माना जाता है। यही समय होता है जब धरती को अनाज बोनें के लिए तैयार किया जाता है।

हरियाणा प्रांत में लोक मानस की खुशहाली, समृद्धि घर की शांति के लिए सांझी देवी की पूजा की जाती है। एकमत के अनुसार पार्वती ने कुंवारे में व्रत और अनुष्ठान करके शिवजी को वर के रूप में प्राप्त किया। इसी मान्यता के चलते सांझी भी एक ऐसा ही अनुष्ठानिक व्रत है जो कवारी कन्याओं द्वारा संयोग्य वर पाने की कामना से बचपन से लेकर विवाह से एक वर्ष पहले तक रखा जाता है, जिसे इस व्रत का अध्यापन करना भी कहा जाता है।

➢ सांझी कला का प्रयोजन :–

सांझी की नौ दिन नवरात्रों की चलती पूजा में हरियाणवी लोक संस्कृति की एक विशिष्ट परंपरा देखी जा सकती है। अश्विन मास के शुक्ला प्रथमा से कुछ दिन पहले एक परंपरा के अनुसार यह त्यौहार मनाया जाता है। सांझी का क्षेत्र व स्वरूप जितना विस्तृत एवं विराट है, उसको बनाने के ढंग भी उतने ही निराले हैं। जहां इसका कन्या रूप प्रचलित है। वहां इसकी मूर्तिधरती पर बनाई जाती है। जहां देवी है। वहां इस दीवार पर निर्मित किया जाता है। मूल रूप से एक होते हुए भी अलग–अलग स्थान पर सांझी की कृतियां अंतर लिए होती हैं।

✪ https://youtu.be/jlruckin5tc?si=Suyasw-5hE38Me61
✪ https://youtu.be/jLruckin5tc?Si=NanyuofRowfu.060

आंचलिक सांझी घर की लज्जाशील बहू के रूप में निखरती है। ऐसी बहुएं जो दशहरे के दिन अपने भाई के साथ ससुराल से पीहर जाती हैं। लाल कपड़े से उनके मुंह का ढाका रहना उसे प्रमाणित करता है। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा आदि में सांझी वर्षों से सर्दी के संध्या काल के समय नई फसल पकने के अवसर भादो की पूर्णिमा की अमावस्या तक मनाई जाती है। गांव में सांझी लगाना एक जुनून सा होता है।

शहरों की अपेक्षा गांव में सांझी अधिक बड़ी बनाई जाती है। वहां के लोग अभी भी काफी हद तक लोक जीवन के नजदीक है। नवरात्रि के प्रारंभ से ही इसकी पूजा अर्चना भी शुरू कर दी जाती है। इसकी पूजा प्रातः काल के बिना कुछ खाए की जाती है। व सांयकाल सूर्यास्त के पक्ष की जाती है। सांझी के गीत गाकर शाम को भीगे चने व पतासे का प्रसाद बांटा जाता है। नवरात्रों में सांझी की पूजा देवी शक्ति का स्वरूप मानकर की जाती है। दशहरे से पूर्व सांझी को आकार दिया जाता है। लोग अष्टमी की पूजा करते हैं। वो अष्टमी की कढ़ाई करके सांझी को उतार देते हैं व लोग नवमी की पूजा करते हैं वो नवमी की कढ़ाई करके सांझी को उतार देते हैं।

सांझी को दो भागों में विभक्त किया जाता है –

1. सांझी को मिट्टी से बनाकर दीवार पर गोबर से चिपकाया जाता है।
2. सांझी को दीवार पर गेरू से लिखा जाता है।

➢ सामग्री बनाने की प्रक्रिया :–

सांझी बनाने के लिए एक लंबी प्रक्रिया से गुजरना होता है, जिसमें क्रमशः मिट्टी से आकृति बनाना, उनकों सुखाना, रंगों को तैयार करना, आकृतियों को रंगना, दीवार को तैयार करना, व इन्हें व्यवस्थित रूप से दीवार पर लगाना इत्यादि।

➢ विधि :–

सांझी को बनाने के प्रथम प्रकार में सांझी को मिट्टी से बनाकर गोबर से दीवार पर लगा दिया जाता है। परंतु इस दीवार पर लगाने से पूर्व एक लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। जिसमें लगभग 15–20 दिन का समय लगता है। जोकि गेरू से लिखी जाती है। अपने रीति–रिवाज एवं परंपराओं के अनुसार ही सांझी लिखते व मानते हैं। मिट्टी की सांझी बनाने के लिए सर्वप्रथम मिट्टी को पीसा जाता है। व छानकर उसमें से कूड़ा निकाल कर साफ कर लिया जाता है। मिट्टी में पानी मिलाकर गूंथा जाता है। मिट्टी को मजबूत बनाने के लिए कुछ लोग इसमें कागज, रूई या भूसी मिलाते हैं, परंतु ऐसा

करने से सांझी के नाक नक्शतीखे नहीं निकाल पाते। अतः अधिकतम लोग मिट्टी में कुछ नहीं मिलाते हैं।

मिट्टी को गूधने के पश्चात चार–पांच घंटे के लिए रख दिया जाता है और फिर उसमें मुक्की मारी जाती है, जिससे आकृतियां बनाने में सहायता मिलती है। मिट्टी तैयार करने के पश्चात इससे आकृतियां बनाई जाती हैं। सांझी की ये आकृतियां दो प्रकार से बनाई जाती हैं। कुछ लोग तो सांझी की एक मूर्ति बनाते हैं। सांझी को उसके शेर के साथ एक मूर्ति के रूप में बनाया जाता है। कुछ लोग सांझी को विभिन्न भागों में बनाते हैं जैसे – सिर अलग, हाथ पैर अलग, बनाए जाते हैं। सांझी की शेष आकृति को टिकड़ियों द्वारा पूरा किया जाता है। सांझी के साथ अन्य आकृतियां भी बनाई जाती हैं। जिन्हें विभिन्न भागों में तैयार किया जाता है जैसे – सांझी का भाई, सांझा, बड़ का पेड़, चांद–तारे, मोर, तोते, शेर, हाथी, सूरज, जूते–चप्पल, चौपट आदि मिट्टी से अलग–अलग भाग बनाए जाते हैं।

- सांझी के लोकगीत :–

किसी भी क्षेत्र की लोक कथाओं में नृत्य तथा संगीत का बहुत बड़ा स्थान होता है। हरियाणा में संगीत लोगों के जीवन में काफी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। घर, त्योहार, शादी, विवाह पर गीत आदि गाए जाते हैं। दरअसल हर एक शब्द के पीछे का सुर इस गीत की आत्मा होती है। लोकगीत पारिवारिक या सामाजिक मामलों, मौसमों, पर्व–त्योहारों, विधि–विधान और कर्मकांड आदि से संबंध होते हैं। लोकगीत सीधे–सीधे मानवीय भावनाओं से संबंधित होते हैं।

लोक मान्यताओं के अनुसार सांझी सिर्फ नौ दिन के लिए अपने ससुराल आती है। शेष 11 महीने 21 दिन अपने मायके चली जाती है। जब यह अपने ससुराल आती है तो इसका इतना भव्य स्वागत होता है। इसकी विदाई पर उतना ही दुख होता है। इसके निवास ससुराल निवास के दौरान गांव में मोहल्ले पड़ोस की औरतें इकट्ठा होकर सांझी के गीत गाती हैं। जिससे वे रोजाना सांझी देवी की आरती और देवी के गीत गाती जाती हैं। कन्या पूजा के समय गीत गाती हैं। कवारी कन्याओं के लिए सांझी पर्व एक वरदान होता है और दसवीं की सांझ को ही गीत गाती हुई अपनी सांझी को विसर्जित करती हैं।

मेरी सांझी के धौरे फूल रही कत्वाई, भान में तन्नै बूझूं संझा के तेरे भाई।
मेरे पांच पचास भतीजे नौ दस भाई, भान कैयां का ब्याह रचाया दसां की सगाई।।
डूगी सी डाबर रे कै फूलां की महकार, लीला सा थोड़ा रे कौन करै असवास।।

✪ https://Kavitakosh.org/kk/%Eo%A4%B8%E0%A4%BE%Eo%A4%82%

के मै सू चंदा है सांझा का लविहार, आ मेरे माई जाए रे कै बैंको तखत बिधाए,
थारे घोड़ियां के दाना रे तमने रस भर खीर।।

सांझी चाली सांझ नै, गैल बसता पूल।
और सब चीज सिर पर धरी, बगल मे मारा सूत।।

हैं मेरी सांझी, तेरी चम्पा फूली आगी कुरबान सांझी हो मेरा सुसरा,
तेरी डाढी लिकडा कचरा कुरबान सांझी है मेरी सासू।
तेरे गिण गिण तोडू पास कुरबान सांझी।।

नीली – पीली मोटर दरवाजे पर खड़ी, आज मेरी संजा ससुराल चली,
मम्मी भी रोये, सखियां भी रोयें, रो–रो के नदियां बह चली।।

✪ https://youtu.be/Ldwndmhzmho?Si=ttEx6KICiBnwykds

हरियाणवी लोकगीत

प्रत्येक प्रदेश के जीवन की अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक अस्मिता हुआ करती है, जो उसके लिखित तथा मौखिक नाना साहित्य रूप में अभिव्यंजित होती है। जहां मौखिक एवं लौकिक लोक–साहित्य में लोक मानस का बिम्ब अपेक्षाकृत अधिक सहज, सरल और सीधा होता है। इन्हें लोकमानस की विविध चितवृत्तियों के कोष कहा जाता है। हरियाणा में लोकगीतों का हरियाणवी लोक–साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन का हर पक्ष किसी न किसी रूप से हरियाणा के लोकगीतों से जुड़ा हुआ है। हरियाणा में विभिन्न अवसरों पर लोकगीत गायन की परंपरा है। विवाह संबंधी लोकगीत अत्यधिक प्रचलित हैं। हरियाणा के लोकगीत उत्तर भारतीय राज्यों में व्यापक रूप से लोकप्रिय हैं। इन वाघ यंत्रों में एकतारा, दोतारा, सारंगी, बीन, बांसुरी, शहनाई और शंख शामिल है। लोकगीतों का निर्माण विभिन्न अवसरों पर हुआ है। हरियाणा के लोकगीतों में लोक जीवन के प्रमुख संस्कारों धार्मिक अनुष्ठानों, ऋतुओं, व्यवसाययों, आजीविका के साधनों आदि का चित्रण हुआ है। समाज के व्यवहार, आचार, विचार, रीति नीति, जीवन दर्शन पर भी पूर्ण प्रकाश डालते हैं। नीति, भक्ति, महापुरुषों के जीवन दर्शन तथा भूरवीरों के गीतों की संख्या भी बेशमुरा है।

हरियाणवी लोकगीतों का वर्गीकरण :–

विषय की दृष्टि से हरियाणवी लोकगीतों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है –

1. ऋतु संबंधी गीत
2. संस्कार गीत
3. शादी विवाह
4. कृषि एवं दिनचर्या के गीत
5. देश प्रेम संबंधी गीत
6. भक्ति नीति संबंधी गीत
7. विविध गीत

➢ ऋतु संबंधी गीत :–

षडऋतुए (ग्रीष्म, ऊर्जा, शरद, शिशिर, और बसंत) समय–समय प्रकृति का श्रृंगार है। प्रकृति की यह लीला यहां के लोक–जीवन को पूर्णतया प्रभावित करती है। वैसे तो सभी ऋतुओं में लोकगीत गाए जाते हैं, परंतु विशेष महत्व सावन और फागुन के गीतों का है। सावन के गीतों से अभिप्राय वर्षा ऋतु में गाए जाने वाले लोकगीतों से है। सावन के महीने में वर्षा की झड़ी लग जाती है। नदियां, कुएं, तालाब से भरकर जल लाये जाते हैं। किसान दिन में खेतों में काम करते हैं। रात को घड़वा–बिन–बांसुरी के साथ रागनियों की गूंज से मस्ती का बंध जाता है। तीज का त्यौहार सावन मास

✪ डॉ. लालचन्द्र गुप्त 'मंगल, हरियाणा का लोक साहित्य, सुमित पब्लिकेशन्स, संस्करंण 1998, पृ. सं. – 31, 32

में ही बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। ससुराल में लड़की सावन मास में आने वाली तीज का बेसब्री से इंतजार करती है।

बाग मै पपैया बोल्या, सामण कदनै आवेगा, नीम की निबौली पाकी सामण कदनै आवेगा।
आवेगा भी आवेगा, मेरी माँ का जाया आवेगा, माँ की तील, बाहण जोड़ा, बहू की झांझण ल्यावेगा।
एक झांझण झूल आया, वापस घोड़ा दौड़ाया, घोड़े आवै छम–छम करदे, सुन्ते लोग लगाए।।

नव नवेली तीज का त्योहार लोकजीवन में अनोखे रंग भर देता है। सावन मास में झूला झूलने का विशेष महत्व है। सर–सरिताओं के लहराते फूलों पर झूल–पंजाली पड़ जाती हैं। सात सखियां हरियल बाग में झूलने जाती हैं। सावन के गीत संयोग और वियोग के दो झोंटो में आंदोलित होते हैं। दोनों पक्षों का हृदयगामी चित्रण यहां देखने को मिलता है। चातक भी पीऊ–पीऊ बोलकर विरहिणी के हृदय में जले पर नमक छिड़कने का कार्य करता है। हरे–भरे नीम की डालों में छिपा हुआ चातक विरहिणी को बैरी की तरह एवं वेदना का मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी चित्रण हुआ है।

कोय पी–पी पपैया बैरी बोलता, कोय बौले से पीऊ–2 बोल, तूमत बौले रे पपीहा, बैरी नीम मैं।
कोय रामण के महीने आवै तीजड़ी, कोच सबके तीजां का मन, तूमत बौले रे पपीहा, बैरी नीम मैं।।

फागण के गीत होली – पर्व के आगमन की सूचना देते हैं। यदि सावन के गीत ग्रीष्मकालीन जड़ता को भागते हैं। फागण के गीत शरद ऋतु की ठिठुरन को दूर करती है। फागुन में होली फाग का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। एक दूसरे को गुलाल लगाते हैं, रंग–बिरंगे बनकर, नाच–कूद कर कोड़ो के साथ इस पर्व का आनंद लेते हैं। बसंत में तो कोयल भी पंचम स्वर में गाती है। फागुन के महीने में ग्रीष्म स्त्रियां एक स्थान पर एकत्रित होकर नाचती–गाती हैं। फागुन के इन गीतों में नया जीवन, नई उमंगे, नय विश्वास अठकेलियां लेते हैं। इस मास में जो प्रकृति एवं प्राणी दोनों के जीवन में निखार आता है। फाग के गीतों में ही फाग – लीला की महिमा पर भी प्रकाश डाला गया है। ऐसे अनोखे मस्त वातावरण में युक्तियों के पैरों में थिरकन पैदा होने लगती है। उनका अंग–अंग नाचने और गाने लगता है।

फागण के दिन चार, री सजनी, फागण के दिन चार। माद जोबन आया फागण मैं,
फागण आया जीवन में झोल उठे मैं मन मैं, जिनका वार न पार की सजनी,

✪ डॉ. लालचन्द्र गुप्त 'मंगल, हरियाणा का लोक साहित्य, सुमित पब्लिकेशन्स, संस्करंण 1998, पृ. सं. – 33, 34

प्यार का चन्दन महकण लाग्या, गात का जोवन लहकण लाग्या, मस्तामा मन बहकण लाग्या, प्यार करण ने प्यार की सजनी। फागण के दिन चार, री सजनी, फागण के दिन चार।।

➢ संस्कार गीत :–

समाज में व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त अवसरयुक्त संस्कार प्रधान देश हैं। हिंदू शास्त्रों में सोलह संस्कारों का विधान है। इनमें जन्म और विवाह अधिक गीत गाए जाते हैं। इन गीतों में पुत्रेषण, पुत्री–अनिच्छा, प्रसव–पीड़ा, कन्या विवाह की चिंता, सुहाग, बारात, कन्या विदाई, बधाई तथा मृत्यु से संबंधित शोक गीत सम्मिलित किया जा सकते हैं। पुत्र–जन्म आनंद और उल्लास का प्रतीक है। पुत्र के जन्म लेते ही पीतल या कांसी की थाली, बजाई जाती है। माता–पिता खुशी से फुले नहीं समाते, पुत्र जन्म की रात्रि को भाग्यशाली माना जाता है। इस संदर्भ में यह लोकगीत गया जाता है–

जिद्दिन लल्ला मेरा जन्म हुआ है, हुई है स्वर्ण की रात।।

हरियाणवी लोकगीतों में 'छठी' के आयोजन की भी झलक है। इस दिन जच्चा से पूजा करवाई जाती है। ऐसा भी विश्वास है की 'छठी' कि रात (विधाता) बच्चे का भाग्य लिखती है। इस विषय में कहावत प्रसिद्ध है – 'बे माता का लिख्या कौन मिटा सकै से'।

इस अवसर पर गाए जाने वाले गीत में सीता की उद्भावना कर, जो वन में है। पुत्र जन्म के दसवें दिन नामकरण संस्कार आयोजित किया जाता है। जच्चा के घर से 'पीलिया' यानी पूरे परिवार के वस्त्र व खाने का सामान आता है। सवा महीने के बाद कुआं–पूजन होता है। इस अवसर पर यह गीत गया जाता है –

पीला तै ओढ़ म्हारी जच्चा पानी चाल्ला जी, सारा सहर सराही जी,
पीला रंग द्यो जी।।

विभिन्न संस्कारों में मृत्यु–संस्कार या अन्त्येजष्टि संस्कार भी अंतिम महत्वपूर्ण संस्कार होता है। मृत्यु शोक और विषाद का समय होता है। इसलिए इस अवसर पर गाए जाने वाले गीत नगण्य हैं। जो व्यक्ति बहुत लंबी आयु के बाद मरता है, उसका 'बड़ा' किया जाता है, और सगे–संबंधियों को मिठाईयां खिलाई जाती हैं। लोकभाषा में इस 'मेल' भी कहते हैं। एक अवसर पर अवश्य कुछ गीत गाए जाते हैं। स्त्री की मृत्यु होने पर। महिला की मृत्यु पर उसके पीहर से आई हुई उसकी मां, ताई, चाची और पड़ोसन आंकड़े ले–लेकर रोती हैं।

हाय–हाय बागां की कोयल, किन्है तेरी बांधी पालकी, बांग की कोयल,

किन्है तेरा करया सिगांर, बांगा की कोयल, हाय–हाय बांगां की कोयल।

इस शोकगीत में स्त्रियों की करूणा, वेदना और पीड़ा का मार्मिक चित्रण हुआ है।

- **शादी – विवाह :–**

शादी–विवाह जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। विवाह गीतों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। एक कन्या पक्ष से संबंधित और दूसरे वर पक्ष से संबंधित। कन्या–पक्ष के गीतों में करुण रस की बहुलता होती है, क्योंकि माता–पिता बड़े लाड–प्यार से जिस बेटी का पालन–पोषण करते हैं, वहीं दूसरे के घर चली जाती है। ससुराल में बेटी खुशी रहेगी या दुखी, यह चिंता भी मां–बाप को सताती है। वर पक्ष के गीतों में आनंदोत्सव, शोभा, सजावट, धूमधाम, नाच–रंग का वर्णन मिलता है, क्योंकि वर के मां–बाप को इस बात की प्रसन्नता होती है कि घर में बहू आएगी, जो उनकी सेवा सुश्रषा के साथ–साथ वंश को भी बढ़ाएगी। विवाह का सर्वप्रथम लोकगीत मंगल गान के रूप में दोनों पक्षों द्वारा गया जाता है जो इस प्रकार है –

पाँच पतासे पानी का बिड़ला, लै सैयद पै पाइयो जी, जिस डाली म्हारा सैयद बैठया,

वा डाली झुक झाइयो जी।

कन्या के हृदय में सहज उत्सुकता जागृत होती है। अपने भावी जीवन–साथी के बारे में जानकारी प्राप्त करने की। उसे चिंता है कि यदि वह बराबर की जोड़ी का न हुआ तो जीवन दुभर हो जाएगा। बान–तेल की सचया 5, 7, 9 बताई जाती है। मोहल्ले में बांन की सूचना दे दी जाती है। चौक पर पेटड़े के ऊपर वर या कन्या को बिठाया जाता है। साथ सुहागिनों द्वारा दूब से वर या कन्या को तेल चढ़ाया जाता है। इस समय का गीत है –

पहला कलस भराइयां तेरी मां हे सुहागण। दूजा कलस भराइयां तेरी ताई ए सुहागण।।

तत्पश्चात मढ़ा बांधा जाता है, और भाती लिए जाते हैं। बहन भातियों को तिलक करती है। भाई जेठे भात में बहन के गले में सोने या चांदी की टूम डालता है। ननद जलपूर्ण लोटा लेकर खड़ी होती है। भाती (मामा) उसे रुपए देता है। इस समय यह गीत गाया जाता है।

आज सीमां मै रे बीरा जगमगी, आया मेरी मां का जाया वीर, हीरेबन्द ल्याया चदूँडी।

ओंढू तै ही रे मोती झड़प डै, डिब्बे मै धंरू है लययैं मेरा जी ए, साद्दी क्यू ंना ल्याया नदूंडी।।

बाजे–गाजे नाच और हर्षोल्लास के सार वर घोड़ी पर बैठकर कन्या के द्वार पर आता है। इसे 'ढकाव' या 'बरौठी' भी कहा जाता है। इस अवसर पर कन्या वर के दर्शन करती हैं। इस अवसर पर बारातियों को सींठने भी दिये जाते हैं। विवाह का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य 'फेरे' या भांवर है। जिसे अग्नि को साक्षी मानकर किया जाता है। इस विधि का प्रथम परिचय वैदिक साहित्य में मिलता है। कन्या का पाणिग्रहण करते समय वर कहता था– "मैं तुम्हारा पाणि सौभाग्य के साथ वृद्धावस्था तक मेरे साथ रहो। पंडित कन्या का हाथ वर के हाथ में देता है और वचन भरवाता है। भाई खील बोता है। सभी लोग बड़ी उत्सुकता से इस मांगलिक अनुष्ठान को देखते हैं। इस अवसर का मुख्य विधान 'कन्यादान' है। वर एवं कन्या अग्नि के चारों तरफ सात चक्कर लगाते हैं। इस सात फेरों की लोकवाणी इस प्रकार है –

पहला फेरा लिजिए दादा कीहे पोती, दूजा फेरा लिजिए ताऊ कीहे बेटी,
तीजा फेरा लिजिए बाबल कीहे बेटी, सातवां फेरा लिजिए लाड़ो हुई पराई।।

विवाह का अंतिम अवसर विदाई का होता है। इस समय का वातावरण बहुत ही मार्मिक और करुणापूर्ण होता है। इस समय सब की आंखें अश्रुओं से भर जाती हैं। इस अवसर का एक गीत है।

ए ओल्यां तै कोल्यां लाड़ो गुडिया ऐ छोड़ी सायण छोड़ो साथ कर।
ए ऊभाणे से पांया तेरा दादा ए भाइया, सजन डोला डाटिए।।

➢ कृषि एवं दिनचर्या के गीत :–

हरियाणा कृषि प्रधान प्रदेश है। हरियाणा के अधिकतर लोग खेती करते हैं। कृषि में किसान मजदूर अपना खून–पसीना एक कर देता है। इसलिए कहा जाता है – "किसान तेरा हाल देख कै मेरा जी रोया'। कृषि से संबंधित गीतों में पशु तथा अन्य संबंधी गीत गाए जाते हैं।

खूँटै तै गऊ खोल दई ए गई जंगल के बीच गऊ का ग्यान सुनो हरे राम।
जंगल में शेरा मिल गया ए, डब बचै लै तरी जान गऊका ग्यान सुनो हरे राम।।

खेत में ईख की खेती बड़ी कठिन है। कृषक महिला ईख नलाने से बड़ी परेशान है, क्योंकि ईख की पाती शरीर पर लगाकर कष्ट पहुंचती है। दिनचर्या के गीतों में चक्की–गीत एवं पनघट गीतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। चक्की का पीसना स्त्रियों के लिए कष्ट का कार्य होता है। इस गीत में लोक जीवन का गहरा चित्रण है। देसी संगीत और खेती के बीच बहुत अंतर है। कुछ कलाकार खेती की पृष्ठभूमि से आते हैं। उनमें से कई का जन्म और पालन पोषण देश के उन क्षेत्रों में हुआ जहां खेती

✪ डॉ. लालचन्द्र गुप्त 'मंगल, हरियाणा का लोक साहित्य, सुमित पब्लिकेशन्स, संस्करण 1998, पृ. सं. – 44

का बड़ा व्यवसाय ही देसी कलाकार कृषि जीवन के बारे में गाने का आनंद लेते हैं। देशी संगीत कृषि जीवन के बारे में जीत से भरा हुआ है।

➢ देश प्रेम के गीत :–

देश प्रेम और देश के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा हर नागरिक में होता है। हिंदी सिनेमा ने भी इस मोहब्बत और जज्बे को बखुबी अभिव्यक्त किया है। आज भी देशभक्त के कई ऐसे कहीं गीत हैं जो लोकप्रिय हैं। भारत–भूमि सदियों तक पराधीन रही। देश को आजादी दिलाने में गांधी जी का अप्रतिम योगदान है। यह सब देश प्रेम के कारण ही हुआ। इन गीतों में समाज में प्रेम की भावना को उत्पन्न किया है। साथ ही विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी का प्रचार किया। इस देश–प्रेम में महिलाएं भी पीछे नहीं हटी। उन्होंने कंधे से कंधा मिलाकर मरदों का साथ दिया। गांधी की मृत्यु पर संपूर्ण राष्ट्र शौक से विह्ल हो गया। सचमुच राष्ट्र अनाथ सा हो गया। एक गीत इस प्रकार से हैं–

काया कुणबा छोड़ पिता जी भुरण लोक नै सेग्ये। हे भारत के नरनारी बिना पिता के होग्यो।
पहली गोली लाग्यी कोन्यां दूजी में घबराए, तीजी गोली में प्राण त्याग दिए, मौत घाट पैआए।
हे नथूराम तनै सरम ना आई किते कुआ जाहड़ ना पाया।।

➢ हरियाणा के लोकगीतों की सामान्य विशेषताएं :–

1. लोकगीतों के रचयिता अज्ञात हैं। लोकगीत में रचयिता का व्यक्तित्व लुटत है। गीत में व्यक्तन होने वाली अनुभूति व्यक्ति विशेष की अनुभूति न रहकर हरियाणवी लोकजीवन की अनुभूति है। भावात्मकता इनकी एक प्रमुख विशेषता है।
2. सभी लोकगीत मौखिक परंपरा से प्राप्त हैं। इन्हें अकेले भी गाया जा सकता है और सामूहिक रूप में भी।
3. इनमें लोक–संस्कृति का यथार्थ चित्रण साहित्य है। ये न कुछ छिपाते हैं और न छिपाने देते हैं।
4. ये लोकमंगल व लोकरंजन के प्रतीक हैं।
5. ये लोकगीत सामाजिक, पारिवारिक एवं सांस्कृतिक पक्षों को उजागर करने वाले महत्वपूर्ण तत्व हैं। यौवन की मांगों के साथ जीवन की सादगी, मस्ती, प्रेम और शिक्षाप्रद बातें आदि इसके प्रमुख गुण हैं।

➢ भक्ति नीति संबंधी गीत :–

✪ https://www.amarujala.com/Kavya/Kavya-charcha/ten-popular-patriotisongs-in-bollywood-movies

हरियाणा, गंगा, जमुना तथा सरस्वती का प्रदेश है। कुरुक्षेत्र के सन्निहित और ब्रह्मसरोवर विश्व प्रसिद्ध है। इसके गांव–गांव में धार्मिक मंदिर और शिवालय हैं। इसलिए इसे 'रामभजनियों का देस' कहा जाता है। इस भूमि की पूज्य चेतना से ओतप्रोत गीत इस प्रकार है –

चालो हे भैणां राममजनियां के देस, लोभ मोह उड़ै दोनों ए कोन्या, धरम तुलै से रोज,
चालो है भैणाँ राम भजनियां के देस। दूध और दही का उड़ै घाटा ए कोन्यां मक्खन तुलै से हमेस,
चालो हे भैणाँ रामजियां के देस।।

नीति विषयक लोकगीतों की भरमार भी इस प्रदेश की मेहती विशेषता है। नीति विषयक गीतों से अभिप्राय पवित्र आचरण और सदव्यवहार से है। हरियाणा के लोक कवि ब्रह्मानंद के विचार दर्शनीय है। माता–पिता और गुरु इन तीनों को जो फटकारे, वे फिरते हैं मारे–मारे। इसी तर्ज पर पंडित लख्मीचंद की एक रागिनी के बोल हैं –

माता –पिता अर संत गुरू जी की सेवा करणी चाहिए।
इन च्यारां के चरण पूज कै सुरग लोक न जाणा चाहिए।।

नीति विषयक गीतों में चरित्र की महत्ता को बड़े सुंदर ढंग से प्रतिपादित किया गया है। परोपकार, दान, दया, सत्य आदि जीवन मूल्यों का संदेश दिया गया है। यह तभी संभव है, जब व्यक्ति का चरित्र उज्जवल हो, वह परनारी के संग न जुड़ा है। हरियाणा के लोकगीत में इस प्रकार की अभिव्यक्ति भी मिलती है –

पर नारी हो सै बुरी जगत मअं, गात बचाणा चाहिए।।

- विविध गीत :–

विविध गीतों में लकड़ी, सुहाग, जीजा–साली के प्रेमगीत, चर्खा कातने के गीत, हास्य–व्यंग, एवं कोल्हू, हास्य–विनोद, कोल्हू के गीत सम्मिलित किया जा सकते हैं। जकड़ी को सभी अवसरों पर गया जा सकता है। जकड़ी में अश्लीलता, श्रृंगारिता और विविधता होती है। जकड़ी का एक उदाहरण है –

पिया तम तै पढ़ण डिगरगे ओ, मनै ओबरे चढ़ा लई खाट, मैं चून्दड़ ताण कै सोगी ए,
निकट आधी रात, कितै चिमकै कितै दमकै सै, देखूं तै मेरा जेठ,
ऊपर तै जेठा पटक्या ए, ऊपर तै पटकी खाट।।

यह संयोगवश सभी बहरे हैं। कोई किसी की सुनता–समझता नहीं, बल्कि सभी अपनी–अपनी हांके जा रहे हैं। प्रश्न कुछ और उत्तर कुछ। नमक–मिर्च की कमी–बेशी से यह मुझे अपशब्द सुन रहा है। आरे वह नाराज हो जाती है। ऐसा ही एक गीत बाल–पति के विषय भी हैं। लोकगीत लोकरंजन व लोकमंगल के महत्वपूर्ण आयाम है। हरियाणवी लोकगीतों का सर्वोत्तम गुण लय या काव्यात्मकता की प्रधानता है। जिसे लोकगीत कला का आधार कहा जाता है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह सहज ही कहा जा सकता है। हरियाणा प्रदेश के लोकगीतों का धरातल बहुरंगी तथा जीवन की करवटों से लहलहाता और छलछलाता है। हरियाणा वासियों की धर्म–कर्म, अर्थ–अनर्थ, काम–निष्काम इतिहास, लीलाओं का स्वतः विवेचन ही तो लोकगीतों के रूप में प्रतिबिंबित होता चला आ रहा है।

लोक कला एवं लोकनाट्य

संस्कृति के विद्वान 'कल' धातु से कला की उत्पत्ति मानते हैं। इसका अर्थ है। प्रेरणा करना, ध्वनि करना आदि। कुछ विद्वान 'कला' की उत्पत्ति 'कड़' धातु से भी करते हैं। आचार्य सीताराम चतुर्वेदी ने 'कं आनंन्द लाति इतिकला के अनुसार कला को आनंद लाने वाली कहा है। ऋग्वेद में यह शब्द सर्वप्रथम दृष्टिगोचर होता है। किंतु इसका उपयोग कौशल के अर्थ में सर्वप्रथम भरतमुनि ने ही अपने नाट्यशास्त्र में किया है।

कला की दो धाराएं सदैव रहे हैं। एक सीमित सम्भ्रानत समाज से संबंध उसके उनके संरक्षण में रही और दूसरी असीम लोकजीवन में परिण्याप्त। यह दूसरे प्रकार की कला ही लोकनाट्य ही शहजात एवं सहधर्मी होने के कारण हमारी हमारा आलोच्य विषय है। सभी कला और संस्कृति संबंधी महान और मौलिक दोनों का उद्गम लोकमानस और लोकप्रतिमा है। लोकनाट्य एवं लोक कला के अंकुर भी वहीं से प्रस्फुटित हुए हैं। नाट्क खेल मानव जीवन को सरस बनाने के लिए बहुत आवश्यक हैं। नाट्य को भरत और कालिदास ने भी ललित कलाओं में अग्रणी माना है।

लोककला और लोकनाट्य केवल मनोरंजन के साधन ही नहीं है। श्री जगदीशचंद्र माथुर का मत है। जिन्हें हम लोकनाट्य कहते हैं, वे परंपराशील कलाएं हैं। इन्होंने दोनों में अंतर करते हुए लिखा है कि लोकननृत्य और लोक चित्रकला भाषागत सीमाओं से मुक्त हैं। लोकनाट्य का सौंदर्य उसके संकेत और बारीक्यिां भाषा पर आधारित है। हमारे देश में कला या नाट्य का प्रयोजन चारुता के साथ–साथ सामाजिक, नियंत्रण, धर्म की माधुर्य उपदेश देना है। दोनों में समानता होने पर भी लोकनाट्य की सम्प्रेषणीयता सहज है। काव्य कला, संगीतकला, नृत्य एवं अभिनय–कला का संयोग रहता है। अतः लोकनाट्य को सर्वकला संग्रहालय कहा जा सकता है, जहां लोकमानस खूब रमता है।

➢ लोकसंस्कृति एवं लोकनाट्य :–

लोकसंस्कृति की विस्तृत परिभाषा देते हुए श्रीरामनाथ 'सुमन' ने लिखा है कि ऐसा हुआ है कि शिक्षामूढ़ वर्ग जब हमारी संस्कृति की उस धारा को छोड़कर पथ भ्रष्ट हो गया है, जब वह धारा से कटकर दूर चला गया। जीवन की गुलकारियां उसके आत्म–ओज पर छा गई है। सामान्य जनता ने अपने युग–युग में संचित आदर्श को अपने ह्रदय के रक्त से सीचंकर जीवित रखा है। डॉ रविंदर भ्रामक का विचार है कि – 'लोकसंस्कृति उन असश्य और अशिक्षित समझे जाने वाले मनुष्यों के प्राणों का स्पन्दन होती हैं। जो वहां की जनसंख्या का विशाल अंग होता है। इसमें सामूहिक और पारिवारिक

✪ डॉ. पूर्णचंन्द्र शर्मा, हरियाणा की लोकधर्मी, हरियाणा साहित्य अकादमी, संस्करण 1983, पृ. सं. – 44

जीवन के बहुरंगी चित्र, अपनी अटूट परंपरा के कारण उन तत्वों का रूप धारण कर लेते हैं। जिन्हें लोकतत्व कहा जाता है। और जिनके योग से लोक–संस्कृति का निर्माण होता है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लोक संस्कृति को सामाजिक परिष्कार के लिए पारस–पथरी माना है। लोकनाट्य की भांति लोकसंस्कृति की आत्मा रीति–रिवाजों, लोकगीतों एवं लोकत्सव में निवास करती है। लोकनाट्य और लोकसंस्कृति को व्यक्त करते हुए डॉक्टर कृष्ण चंद शर्मा ने लिखा है कि "लोकनाट्य हमारी सांस्कृतिक रिक्त जीवंत प्रतिमान है। लोक – संस्कृति के निर्माणक सोलह संस्कार, पर्व–त्यौहार, जादू–टोना, देवी–देवता, भूत–प्रेत लोकनाट्य का ताना–बाना बनाने के लिए भी समान रूप से अपेक्षित हैं। लोक संस्कृति को साकार करने का श्रेय भी लोकनाटकों को ही जाता है। संस्कृति को विकृत करने वाली को कु–प्रथाओं – दहेज प्रथा, बाल–विवाह, बलि–प्रथा, बेमेल–विवाह, सती–प्रथा, आडंबरों की लोकनाट्यों में डटकर उड़ाई जाती है।

लोकनाट्य–साहित्य इतना विशाल और महत्वपूर्ण है कि इसमें भारतीय संस्कृति का सहज रूप देखा जा सकता है। तो लोक संस्कृति उन सबका आधार। किसी भी प्रदेश के लोकनाट्य वहां की संस्कृति के मुंह बोलते चित्र कहे जा सकते हैं। यदि लोकनाट्य का पियूष संस्कृति को न मिले तो वह सिसकती–2 रहेगी तथा संस्कृति के अभाव में लोकनाट्य के अंकुर कुंठित रह जाएंगी।

➢ लोकनाट्य एवं शास्त्रीय नाटक :–

नाट्यकला का अंकुर लोक जीवन की भाव–भूमि से प्रस्फुटित हुआ है। अतः शास्त्रीय नाटक लोकनाट्यों की ही पीढ़ी में आते हैं। इनमें आधार–आधेय या जनिता–जनित का संबंध है। आदि से ही मुनि–मानस लोकप्रचलित मनोरंजनकारी विधाओं को शास्त्रीय सांचे में ढाक कर अपनी छाप लगाता है। ज्ञान–पुंज श्रुति स्मृतियों का प्रतिपाघ भी लोक से ही ग्रहण किया गया है।

श्री जगदीशचंद्र माथुर ने इस तथ्य को उजागर करते हुए लिखा है कि श्री हर्ष के बाद नाटकों में पाण्ज्यि प्रदर्शन की प्रवृत्ति बढ़ गई। अतः लोकनाटकों की वह धारा जो ग्रामीण अंचलों और मेलों तक ही सीमित थी, लोकनाटकों की इस देशव्यापी धारा के अनेक रूप थे। ग्रामीण उत्सवों और धार्मिक कृत्यों के ये अंग थे। रत्नावली में जिस चर्चरी और रास का विवरण मिलता है। वह भी नाटकों के रूप लेने लगा। शास्त्रीय नाटकों के रंगमंच को आकर्षक बनाने के लिए प्रपुर साधनों की अपेक्षा रही है। रंग–बिरंगी व्यवस्था, परदों की भरमार आदि कृत्रिमताएं नाटक के प्रतिपरघ को दबा लेती हैं। जगमग करते मंच को देखकर आंखें चाहे चुंधिया जाए, हृदय तन्त्री निष्पादन ही रहती हैं। तथा कथावस्तु के चयन एवं उसके प्रयोग में लोकनाट्य अधिक स्वतंत्रता है, जबकि शास्त्रीय नाटकों को निर्धारित नियमों

✪ डॉ. पूर्णचन्द्र शर्मा, हरियाणा की लोकधर्मी, हरियाणा साहित्य अकादमी, संस्करण 1983, 2 पृ. सं. – 51

के अनुसार चलना पड़ता है। यह कथा–विधान का बहुत बड़ा गुण है, जिसके कारण नकलों के लिए, हंसी–मजाक और तड़क–भड़क के लिए मंथर गति और विस्तार के लिए काफी छूट रहती है।

शास्त्रीय नाटकों में प्रबंधक एवं प्रदर्शकों का ध्येय अपने बटुए भरना होता है। उनके प्रदर्शन में व्यापार–वृति की प्रधानता होती है। इने – गिने श्रीमान ही टिकट या पास लेकर उनसे अपना दिल बहला सकते हैं। लोकनाट्य का दर्शन टिकट खरीदकर नाटक देखना अपना अपमान समझता है। तैयारी एवं प्रस्तुतीकरण में उनके सैकड़ो रुपए लग जाते हैं।

➢ लोकनाट्य एवं पारसी नाटक :–

कोई भी विद्या समसमायिक प्रभावों एवं परिस्थितियों से निलिप्त नहीं रह सकती। मध्ययुग के बाद जब पारसी–नाटक कंपनियों ने भारत में प्रवेश किया। तो पारसी नाटक कंपनियों के प्रबंधक एवं निर्देशक इन नाट्यरूपों से इतने प्रभावित हुए कि इनके रंजन तत्वों को अपने नाटकों में रचा पाया लिया। प्रदर्शनियों को रंगमंच बनाने, उनमें अतिरिक्त आकर्षण एवं ललित्य को उभारने और दर्शकों को नाच–गानों से मंत्र मुग्ध करने के साथ–साथ संगीत एवं नृत्य संयोजन ने फारसी नाटकों को आधिकारिक रंगमंचीय भी बनाया। पारसी नाटक पर लोकनाट्यों का प्रभाव दर्शाते हैं। डॉ0. लक्ष्मीनारायण लाल ने लिखा है – "इन नाटकों के माध्यम से इन नाटककारों ने यह भी परिवर्तन किया कि उस काल में पारसी–थियेटर से अलग जो रामलीला, रासलीला धारा चल रही थी, उसमें भी महत्वपूर्ण तत्वों को ये लोग अपने नाट्य में इस तरह सम्मिलित कर लेते थे कि दर्शकों को एक और नाटक का आनंद मिलता था।

इस थियेटर की प्रकृति और उद्देश्य के अनुसार संगीत और नृत्य का स्थान काफी महत्वपूर्ण है। इन दोनों परंपराओं में संगीत का बड़ा स्थान था। भारतीय दर्शक संगीत और नृत्य की अपनी बलवती परंपरा से मजे लेने वाला था। पारसी नाटकों ने भी लोकनाट्कों को कम प्रभावित नहीं किया। रासलीला, रामलीला इस समय के प्रतिनिधि नाट्य के रूप थे। इनकी नाट्य मंडलियां पूर्णतः व्यावसायिक स्तर से पूरे हिंदी क्षेत्र में घूम–घूमकर धार्मिक एवं पौराणिक लीलाएं दिखाती फिराती हैं। लीलाओं में व्यवसायिकता की दृष्टि से सस्ते दृश्यों का आना शुरू हो गया था।

कथा चरित्र, उपदेश, गायन, नृत्य और हास्य अधिक बल दिया जा रहा है। वस्त्र और भूषा में चमकीलापन, तड़क–भड़क की प्रधानता थी। पुरुषों को ही स्त्रियों के रूप धारण करने पड़ते थे, जिसमें न कोई नियम था, न कोई मर्यादा थी। भारतेंदु के जीवनकाल में ही सस्ते और भद्दे रंग के पारसी थियेटरों का प्रचार हो गया था। इनका परिणाम यह हुआ की बहुत से नाटककार केवल रुपया बनाने के लोग से जनता की रुचि के अनुकूल रचनाएं करने लगे।

➢ लोकनाट्य एवं नृत्य :–

नृत्य को नाट्य का पूर्णरूप माना गया है। जैसे–जैसे नृत्य अपनी आदिम अवस्था से निकलकर उन्नत और सश्य समाज का श्रृंगार बनने लगा, जुड़ने लगे और व्यवस्थित नृत्य–नाटक तथा गीत नाट्य का प्रादुर्भाव होने लगा। डॉ0. श्याम परमार ने नृत्य एवं नाट्य के संबंधों की प्रगाढ़ता इस प्रकार अभिव्यक्त की है। ''अनुष्ठानिक नृत्यों की परंपरा के परमाणों का अभाव नहीं है। नाटक की उत्पत्ति का बहुत कुछ आधार यही सामग्री है। नृत्य का इतना प्रभाव भरतमुनि के काल में बढ़ गया था। डॉ0. शांति गोपाल पुरोहित ने नृत्य और नाट्य का संबंध इस प्रकार बताया है। कि ''यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता सकती है। कि लोक जीवन में नृत्य में नाट्य से जन्म की उत्पत्ति हुई। दोनों एक दूसरी दोनों एक दूसरे की पुष्टि करती हैं। लोकनाट्य में लोकनृत्य की चटक–मटक, एवं उछाल–कूद को निकाल दिया जाए, तो वह निष्पन्द हो जाएगा। ये दोनों एक दूसरे के सहायक हैं, कोई किसी से ऊन–ल्यून नहीं।

➢ आधुनिक नाटकों पर लोकनाटकों का प्रभाव :–

आधुनिक नाटक लोकनाटकों से अधिकाधिक प्रभावित हो रहा है। चाकचिक्यचचित विविध विद्युत–रश्मियों से दर्शकों की आंखें चुंधियाने लगी हैं तथा ध्वनि–विस्तारक यंत्रों की चिंघाड़ से उनके कान ऊबने लगे हैं। इस विषय में श्रीदेवी लाल सामर के विचार बड़े सागरर्थित है कि– ''आधुनिक नाट्य – तंत्र ने नाटक को इतना जकड़ा लिया है, कि वह एक प्रकार से यंत्र–सा बन गया हो।'' उसमें से प्राण जैसे निकल गए हो। आधुनिक दृश्यविधान तथा यंत्र की चमत्कारिक उपलब्धियों ने दर्शकों को आश्चर्य चकित अवश्य कर दिया है, परंतु उनकी आत्मा से आत्मसात नहीं करती।

यदि समय के अनुसार तथा युग की प्रवृत्तियों को दृष्टि में रखते हुए घटनाटकों को आधुनिक रूपों में परिवर्तित किया जाए तो यह जन–नाटक देश की अंतरात्मा के सच्चे प्रतिनिधि हो सकते हैं। इन जन–नाटकों में हास–परिहास के लिए कहीं दूर नहीं जाना होगा। इसमें हास्य की संभावनाओं के अनेक रूप खोजे जा सकते हैं। आनंद और विनोद को लेकर जननाटकों की ऐसी परंपरा स्थापित हो, जिसमे राष्ट्र को नई स्पूर्ति तथा शांति मिल सके। श्रीदेवी लाल सांभर का कथन है कि – ''लोक नाट्यों के शौकीन दर्शक अपनी तरफ से अधिक से खर्च करके हजारों को निशुल्क दिखने में अपना गौरव समझते हैं''।

शास्त्रीय नाटकों में स्त्री की भूमिका महिलाएं ही निभाती हैं, जबकि लोक–नाट्यों में जानना भूमिका स्त्री–वेश में पुरुष ही निभाते हैं। लोकनाट्यों में स्त्रियों को इसलिए नई चुना जाता है वह शारीरिक दुर्लभ और नाजुक होती हैं। शास्त्रीय नाटकों में नायक एवं नायिकाओं के चयन के लिए

अनेक अनिवार्यता हैं, जबकि लोकनाटकों में साधारण ग्वाला, किसान, जवान, राजकुमारी आदि नायिकाएं हो सकती हैं। यहां तक की प्रेम–प्रेमिका की मृत्यु भी मंच पर दिखा दी जाती है। कभी–कभी दैव संयोग तथा अपने तप–व्रत एवं बुद्धि–कौशल से प्रेमिकाएं या नायिकाएं त्यागपूर्वक अपने प्रेमिका की मौत को मुंह से बाहर निकाल लेते हैं। ये नाटक यथार्थपरक इतने होते हैं। कई बार तो पशुओं की भूमिका में पशुओं को ही उतार लेते हैं। एक बार दनोदा गांव में तत्कालीन मुख्यमंत्री सरदार के स्वागत के लिए एक लोकनाटक खेला गया। माता–पिता, संत गुरु आदि की सेवा का प्रतिपादन एवं सत्य, दान, धर्म आदि रक्षा का प्रदर्शन भी करता है।

- खिलौना थियेटर फॉर चिल्ड्रन, दिल्ली के अंतर्गत आपको 1989–1995 तक पूरे देश में नाटक 'गोल्डन फिश' के 1100 प्रदर्शनों का श्रेय जाता है।
- थिएटर इन एजुकेशन कंपनी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली के लिए एक कलाकार के रूप में कार्य किया।
- 2006–2014 तक आपने राष्ट्रीय बाल भवन, दिल्ली में कलाकार रंगमंच के रूप में कार्य किया।
- 1991 प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़, से शास्त्रीय गायन में संगीत भूषण – 1996 की उपाधि प्राप्त की है।
- 2013 रंगमंच के क्षेत्र में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की सीयिर फेलोशिप 2007–2009 से सम्मानित किया गया।

अहोई अष्टमी

यह त्यौहार कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन मनाया जाता है, जोकि लोक जीवन में इस पर्व को अति उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन महिलाएं अहोई का अंकन करती हैं तथा समस्त दिन उपवास रखकर रात्रि को अहोई देवी की पूजा करती हैं। यह व्रत संतान के दीर्घायु होने की कामना से किया जाता है। जिस दीवार पर अहोई देवी का अंकन किया जाता है, उसी के पास जल की भरी हुई मिट्टी की दो घर रखी जाती है। यह पूर्व पुत्रवती नारियां ही करती हैं।

अहोई अष्टमी का व्रत संतान एवं संतान की दीर्घायु के लिए किया जाता है। यह पर्व माता पार्वती की अराधना का पर्व है। पार्वती जी की महिमा से ही माता को गौरवशाली स्थान मिला है। माता पार्वती ने ही देवताओं का घमंड तोड़ा था। देवी भगवती पार्वती के चरित्र के दो रूप सामने आते हैं, एक ओर वह गर्भ से उत्पन्न कार्तिकेय जी की माता है, दूसरी और मानस पुत्र गणेश की। पार्वती जी के रक्षापाल गणेश जी हैं। यह पर्व माता पार्वती की महिमा एवं उनके पुत्र गणेश, कार्तिकेय के भिन्न परिपेक्ष में माता व पुत्र की रक्षा से संबंधित माना जाता है। इससे जुड़ी एक शिव पुराण में आती है। "देवताओं का अहंकार चूर करने के लिए देवी ने देवताओं को प्रसूता कर दिया था। देवता परेशान हो गए और वे शंकर जी के पास गए और शंकर जी ने देवताओं को पार्वती जी के पास भेज दिया। पार्वती जी की स्तुति करने के पश्चात देवता बोले, हे देवी ! यह कार्य हम नहीं कर सकते। हमने अहंकार बस कह दिया था कि वह कौन सा कार्य है जो हम नहीं कर सकते। यह कार्य केवल स्त्री ही कर सकती है।

- ## अहोई अष्टमी पर प्रचलित लोक कथा :–

एक साहूकार के सात बेटे थे। उसकी सातों बहुएं कार्तिक कृष्ण अष्टमी को अहोई माता के पूजन के लिए जंगल में अपनी ननद के साथ मिट्टी लेने के लिए गयी। धरती खोदकर मिट्टी निकालने के स्थान पर स्याऊ की माँद थी। मिट्टी खोदते समय ननद के हाथ से स्याऊ का बच्चा चोट खाकर मर गया। स्याऊ की माता बोली कि, अब मैं तेरी कोख बांधूंगी अर्थात अब तुझे मैं संतान विहिन कर दूंगी। उसकी बात सुनकर ननद ने अपने सभी भाभियों से अपनी बदल में कोख बधां लेने के लिए आग्रह किया, परंतु उसकी भाभियों ने उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। परंतु उसकी छोटी भाभी ने कुछ सोच–समझकर अपनी कोख बंधवाने की स्वीकृति ननद को दे दी। तदनन्तर उस भाभी को, जो भी जो भी संतान होती वह सात दिन के बाद ही मर जाती। एक दिन पंडित को बुलाकर इसके कारण का पता लगाया गया।

तत्पश्चात पंडित ने उत्तर दिया – तुम काली गाय की पूजा किया करो। काली स्याऊ की रिश्ते में भायली लगती है। वह यदि तेरी को कोख छोड़ दे तो बच्चे जीवित रह सकते हैं। पंडित की बात सुनकर छोटी बहू ने दूसरे दिन से ही काली गाय की सेवा करना प्रारंभ कर दिया। वह प्रतिदिन बहुत सवेरे उठकर गाय का गोबर आदि साफ कर दिया करती थी। गाय ने अपने मन में सोचा कि यह कार्य कौन कर रहा है? आज इसका पता लगाऊंगी। दूसरे दिन गाय माता तड़के उठकर क्या देखती है, उस संतान स्थान पर एक साहूकार की बहू झाडू–बुहारी करके सफाई कर रही है। गाय माता ने उस बहू से पूछा– तो किसलिए मेरी इतनी सेवा कर रही है और तू मुझसे क्या चाहती है। जो कुछ तेरी इच्छा हो वह मुझसे मांग ले। साहूकार की बहू ने कहा – स्याऊ माता ने मेरी कोख बांध दी है, जिससे मेरे बच्चे नहीं जीते हैं। यदि आप मेरी कोख खुलवा दें तो मैं आपका बहुत उपकार मानूंगी। गौ–माता ने उसकी बात स्वीकार कर ली और उसे साथ लेकर सात समुद्र पार स्याऊ माता के पास ले चली। रास्ते में कड़ी धूप से व्याकुल होकर वे दोनों एक पेड़ की छाया में बैठ गयी।

जिस पेड़ की नीचे वे दोनों बैठी थी, उसी पेड़ पर गरुड़ पक्षी का एक बच्चा रहता है। थोड़ी देर में ही एक सांप आकर उस बच्चों को मारने लगा। इस दृश्य को देखकर साहूकार की बहू ने उस सांप को मारकर ढाल के नीचे छुपा दिया और उस गरुड़ पक्षी के बच्चे को मरने से बचा लिया। इसके पश्चात उस पक्षी की माता ने वहां रक्त निकला देकर उस साहूकार की बहू को चोंच से करने लगी।

तब उससे साहूकार की बहू ने कहा– मैंने तेरे बच्चे को नहीं मारा है। तेरे बच्चे को डसने के लिए एक नाग आया था और मैंने उस नाग को मारकर तेरे बच्चे की रक्षा की है। मरा हुआ नाग ढाल के नीचे दबा हुआ पड़ा है। बहू की बातों से वह प्रसन्न हो गई और बोली तो जो कुछ चाहती है मुझसे मांग ले। बहू ने उसे अपने बारे में बता दिया। तब उस गरुड़ पंखनी ने उन दोनों को अपने पीठ पर बैठकर स्याऊ माता के पास सात समुद्र के पार पहुंचा दिया।

स्याऊ माता उन्हें देखकर बोली – आ बहिन, बहुत दिनों बाद आई है। पुनः स्याऊ माता ने कहा, मेरे सिर में जूं पड़ गई है। तू उसे निकाल दे। उस काली गाय के कहने पर साहूकार की बहू ने सलाई के सहारे स्याऊ माता के सिर की जुंओं को निकाल दिया।

इस पर स्याऊ माता तंत्र प्रसन्न हो गई। स्याऊ माता ने उस साहूकार की बहू से कहा – तेरे सात बेटे और सात बहू हो। सुनकर साहुकार की बहू ने कहा – मुझे तो एक भी बेटा नहीं है। सात कहां से होंगे? स्याऊ माता ने पूछा – इसका कारण क्या है? उसने उत्तर दिया – यदि आप मुझे वचन दे, तो मैं इसका कारण बता सकती हूं। स्याऊ माता ने उसे वचन दे दिया। साहूकार की बहू ने कहा, मेरी कोख तुम्हारे पास बंद पड़ी है, उसे खोल दें। स्याऊ माता ने कहा, मैं तेरी बातों में आकर धोखा खा गई। अब मुझे तेरी कोख खोलनी ही पड़ेगी। इतना कहने के साथ ही स्याऊ माता ने कहा– अब तू

घर को जा। तेरे सात बेटे सात बहूएं होगी। घर जाकर तू अहोई माता का उद्यापन करना। अहोई बनाकर साथ कड़ाही देना। उसने घर पर देखा तो उसके साथ बेटे और साथ बहूएं बैठी हुई मिली। वह खुशी के मारे भाव–विभोर हो गयी। उसने सात अहोई बनाकर, सात कड़ाही देकर उद्यापन किया।

इसके बाद ही दीपावली का पर्व आया। उसकी जेठाणिया परस्पर कहने लगी – सब लोग पूज का कार्य शीघ्रपुरा कर लो। कहीं छोटी बहू अपने बच्चों का स्मरण कर रोना–धोना शुरू न कर दें। नहीं तो रंग में भंग हो जाएगा। जानकारी करने के लिए उन्होंने अपने बच्चों को छोटी बहू के घर भेजा। छोटी बहू रुदन नहीं कर रही थी। बच्चों ने घर जाकर बताया कि, वहां पर वह आटा गूंथ रही है। उद्यापन का कार्यक्रम चल रहा है।

इतना सुनते ही सभी जेठाणिया जाकर उससे पूछने लगी कि, तूने अपनी कोख कैसे खुलवाई। उसने कहा स्याऊ माता ने कृपाकर मेरी कोख खोल दी है। सब लोग अहोई माता की जय जयकार करने लगे। जिस तरह अहोई माता ने उस साहूकार की बहू के कोख खोल दिया, उसी प्रकार इस व्रत को करने वाले सभी नारियों की अभिलाषा पूर्ण करें।

- विधि विधान :–

अहोई अष्टमी का अंकन करते समय सर्वप्रथम दीवार धोते हैं। फिर उस पर गोबर का लेप होता है। इसके सूखने के पश्चात चूने का लेप किया जाता है। तत्पश्चात गेरू को घोलकर सींक की कुंची द्वारा अहोई माता की आकृति चित्रित की जाती है। जो पूरी बारीक लाइनों से बनाई जाती है। इन आकृतियों के अंदर भी विभिन्न प्रकार के अंकन किए जाते हैं। सूरज, चांद, हाथी, तारे को जल देती हुई स्त्री, गाय, दो घर, स्याऊ माता की माला, फूल को चित्रित किया जाता है। अहोई माता को गहने भी पहनाए जाते हैं। अहोई माता की आकृतियां बनाने व सजाने के पश्चात पूजा अर्चना का कार्य प्रारंभ किया जाता है। दो घट रखे जाते हैं। स्याऊ माता की माला लगाते हैं। इस दिन बहूओं द्वारा बायना निकालकर सास को देने की मान्यता है। इसी आकृति के सामने सांयकाल में स्त्रियां हाथ में दूब व चावल लेकर अहोई माता की कथा सुनते हैं।

तारों के निकलने पर पूजन करती हैं। पूजन समाप्त करने के पश्चात ही स्त्रियां अपना व्रत खोलती हैं। अहोई अष्टमी के दिन स्याऊ माता की चांदी के टिकड़े के साथ दाने का विशेष महत्व है। पुत्रों की संख्या बढ़ाने के साथ–साथ दानों की संख्या में वृद्धि होती है। माताएं अपने पुत्रों की दीर्घायु की मंगल कामना के लिए व्रत करती हैं। इस माला को पहनती हैं।

✪ वन्दना वर्मा : भारतीय लोक एवं हस्तशिल्प वैभव, अकादमिक प्रतिमा संस्करण 2008, पृ. सं. – 60

आजकल स्त्रियां अहोई माता की आकृति बनाने के स्थान पर बाजार से लाकर अहोई माता का कैलेंडर लगा देती हैं। कहीं—कहीं पर हाथ के द्वारा बनाई तस्वीरों को लगा देती हैं। इस प्रकार अहोई का पर्व मनाया जाता है। यह व्रत माताएं अपने बच्चों की लंबी आयु व संतान प्राप्ति के लिए रखती हैं।

पेपर मेशी का इतिहास

पेपर मेशी का प्रयोग सबसे पहले चीन में हुआ था। हान राजवंश के दौरान चीनी 200 ईस्वी पूर्व के आसपास पेपर मेशी का उपयोग करते हुए दिखाई दिए थे। चीन में डेटिंग करने वाली सभी चीजों के हेलमेट बनाने के लिए किया गया था। चीन से यह रूचि जापान और फ्रांस तक फैली गई थी। चीन के लोग पेपर मेशी इसी से हेलमेट बनाते थे। लैकर **(Lacquer)** की मदद से एक लैकर, जो पेड़ों से निकलता हुआ रस होता है। उसी के इस्तेमाल से हेलमेट तैयार किए जाते थे। चीन से यह रूचि जापान और फ्रांस तक फैल गई थी। इसका उपयोग मास्क, गहने, अन्य त्योहार गतिविधियों को बनाने में किया जाता था। समरकंद में अरबो ने चीनी फारसी युद्ध के दौरान 8वीं सदी में पकड़े गए चीनी कारीगरों से पेपर की तकनीकी सीखी जिन्होंने उन्हें लुगदी बनाने के लिए बेकार कागज का कैसे उपयोग करने का तरीका सिखाया। आखिरकार पेपर मेशी की तकनीक 10वीं वी.सी. के दौरान मोरक्कों फिर स्पेन, फ्रांस और जर्मनी तक फैल गई। इटली से यह भारत और फ्रांस तक फैल गया।

पेपर मेशी का प्रयोग व्यावसायिक माध्यम के रूप में करने वाले 17वीं सदी के फ्रेंच के लोग थे। पश्चिमी यूरोप में पेपर मेशी का हेय दिन 1770–1870 था। फ्रांस से इनोवेशन आया। प्लास्टर और सजावट की नकल करने के लिए पेपर मेशी का उपयोग फ्रांस में सदी के मध्य शुरू हुआ। 5 साल के भीतर इंग्लैंड में अपनाया गया। 1840–1880 के दशक के दौरान फ्रांस में पेपर मेशी बहुत लोकप्रिय हो गया था। 18 वीं सदी की शुरुआत में जर्मनी भी पेपर मेशी से वस्तुएं बनाने के लिए आगे आया। 1765 में बार्लिन में एक कारखाना स्थापित किया।

जर्मनी ने बड़ी मात्रा में पेपर मेशी डॉल्स बनाने में भी विविधता लाई। रूसियों ने 1830 में पेपर मेशी का उपयोग करके अंग्रेजों की नकल करना शुरू कर दिया। 1850 में कनेक्टिकट में पहला कारखाना बनाया गया। मार्टिन ड्रैक्र्स ने अंग्रेजी सनकी डिजाइनर ने 1930 के दशक में अपने चर्च के सामानों के लिए पेपर मेशी का बहुत उपयोग किया गया। 20वीं शताब्दी में मेक्सिको सिटी के कारीगरों पेड्रो लिनारेस और करमेल कैबेली सेविला द्वारा किए गए कार्यों को डिएगो रिवेरा जैसे संरक्षकों के साथ कला के कार्यों के रूप में मान्यता दी गई थी।

पेपर मेशी का प्रयोग सिर्फ विदेशों में ही नहीं बल्कि भारत में भी हुआ है। भारत में पेपर मेशी का प्रयोग सबसे पहले कश्मीर में हुआ था। पेपर मेशी को भारत में 14वीं शताब्दी में फारसी रहस्यवादी मोर सैयद अली हमदानी द्वारा पेश किया गया था। पेपर मेशी की परंपरा का एक लंबा संस्कृतिक वंश रहा है। वह धार्मिक पहचान के गठन से जुड़ा हुआ है।

समकालीन दुनिया में पेपर मेशी तकनीक का उपयोग पेशेवर कलाकारों द्वारा अद्भुत कला कार्यों को बनाने के लिए किया जाता है। जिसमें पेपर मेशी को अपने चुने हुए माध्यम के रूप में चुनते हैं। इन राज्यों के अलावा महाराष्ट्र, दिल्ली, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश आदि शहरों में भी पेपर मेशी से संबंधित कार्य हमें देखने को मिलते हैं। इसका इतिहास बहुत लंबा तथा बहुत पुराना है। पेपर मेशी के इतिहास से हमें यह ज्ञात होता है कि इसकी जड़े केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी है।

तकनीक विश्लेषण :–

पेपर मेंशी से कलाकृति या कोई भी उपयोगी वस्तु का निर्माण करते हैं, जिसका प्रयोग हम आसानी से कर सकते हैं। फ्रेंच में इसका शाब्दिक अर्थ 'चबाया कागज या मसाला हुआ कागज होता है। कागज से कलाकृतियां बनाना इसके नाम से ही स्पष्ट है। इसमें जो भी कलाकृतियां बनाई जाती हैं। कागज से कलाकृतियां बनाना एक लोकप्रिय क्राफ्टिंग तकनीक है, जो विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को बनाने के लिए कागज और पेस्ट का उपयोग करती हैं। पेपर मेशी एक सस्ती और सरल गतिविधि है। यह पुराने कागज जो उपयोगी न हो, उसका इस्तेमाल करके यह गतिविधि की जा सकती है।

पेपर मेशी का उपयोग घर की सजावटी वस्तुओं के रूप में भी किया जाता है। पेपर मेशी का प्रयोग लोग घरों को सजाने, खिलौने बनाने के लिए किया जाता है। जो व्यक्ति औद्योगिक क्षेत्र में रहते हैं, वह कागज, गत्ता का प्रयोग करके बच्चों के लिए खिलौने तैयार करते हैं। यह व्यवसाय का एक बहुत अच्छा साधन है। लोग अपनी आजीविका के लिए इस माध्यम का प्रयोग कर सकते हैं। पेपर मेशी का प्रयोग करके अन्य प्रकार की चीजें बनाकर बेच सकते हैं। इसे बेचकर अपनी आय कमा सकते हैं। पेपर मेशी का संबंध हस्तकला से है। हस्तकला एक प्रकार का कौशल है जो कि मनुष्य के दिमाग की एक उपज है। इसी प्रकार पेपर मेशी भी हस्तकला है। इसमें भी मनुष्य के दिमाग से चीज बनाई जाती हैं।

यह एक मिश्रित सामग्री है, जिसमें कागज के टुकड़ों को शामिल किया जाता है। इसे गोंद या मुलतानी मिट्टी के साथ और कागज के टुकड़ों को मिलाकर तैयार किया जाता है और उसका सांचा तैयार करना पड़ता है। इस मिश्रण को सांचे में डालकर अपने मुताबिक तैयार किया जाता है और उसे सुखा दिया जाता है। रंगों के द्वारा उन पर सजावट कर दी जाती है।

✪ https://youtu.be/uHRFtfubw6QSi=U-ekk4MzQjidckkf

तृतीय अध्याय

- लोक कला के बारे में समाज के अलग–अलग विचार
- विलुप्त होती लोक कला

लोक कला के बारे में समाज के अलग–अलग विचार

- **सांझी :–**

सांझी के बारे में लोगों की यह मानता है की सांझी एक जुलाहे की लाडली बेटी थी। उसके पति ने उसे एक लड़का होने पर घर से निकाल दिया। वह रातों जाग कर सूत कातती व बुनती उसे बेचकर अपना व अपने बेटे वसंता का पेट भरती। वह कुंवारी लड़कियों को अपना ज्ञान बनती जो उसने विद्वानों की संगत में सीखा था। सांझी एक स्त्री आकृति नहीं बल्कि विभिन्नता की एक व्यवस्था विभिन्न उद्देश्यों के संयोजना है।

इनके अतिरिक्त सांझी में बनने वाली प्रत्येक आकृति प्रतीकात्मक होती है। प्रत्येक आकृति, वस्तु का कोई तात्पर्य आवश्यक है। समृद्धशाली बनने के उद्देश्य से लाल, योग्य व हरे शरीर के साथ तोते को बनाया जाता है। हरा रंग समृद्धि का प्रतीक होता है। अतः तोते की संख्या अधिक होने से घर में समृद्धि बने रहने की लोक मान्यता है। अन्य आकृतियां बनाई जाती हैं। जहां की जैसी रीति–रिवाज परंपरा होती है, वहां वैसा ही सांझी का चित्र बनाया जाता है। नवरात्रों के दौरान पूरे नौ दिन सांझी के गीत गाए जाते हैं। दशहरे के दिन उतारकर, जल, तालाब में विसर्जन कर दिया जाता है। सांझी को देवी का रूप माना जाता है। सांझी को जब दीवार पर लगा दिया जाता है। मुंह को ढक दिया जाता है, जो कि हरियाणा में पर्दा प्रथा की और संकेत करता है।

यह माना जाता है कि दशहरे के दिन सुबह की सांझी की विदाई की योजना बनाई जाती है। औरतें सज–धज कर गीत गाते हुए गांव के तालाब पर जाती थी। इस मौके पर गाए जाने वाले गीत इस तरह के होते थे –

सांझी चाली बाप कै, नौ सौ रथ जुड़ा हो राम ,
म्हारै............. पालता म्हारी सांझी, बहिए हो राम।।

इसके बाद शुरू होता था, हाडियां फोड़ने का सिलसिला। गांव के नौजवानों में उन्हें फोड़ने की होड़ लग जाती थी। जिसकी हांडी अंत में फोड़ती थी वह अपने आप को धन्य समझती थी। आज बढ़िया मिट्टी की कमी के कारण कुछ महिलाएं रूई से भी सांझी बनाती हैं। युक्तियां तो बाजार से रेडीमेंट कागज की सांझी से काम चलाती हैं। कुछ बालिकाएं अपनी मटकी के ऊपर जलता हुआ चिराग भी रख लेती हैं। बालिकाओं का कहना है कि अगर जलता हुआ चिराग नदी के दूसरी तरफ पहुंच जाए तो अकाल पड़ेगा। सामने यह प्रश्न उभर कर आता है। सांझी को कुंवारी कन्याओं का अनुष्ठानिक व्रत ही क्यों कहा गया है? कि पार्वती ने कुंवारेपन में शिव को प्राप्त करने के लिए व्रत किए

थे। 1500 वर्ष पहले वाराहमिहिर ने अपनी कृति विवाहपतल में बालिकाओं द्वारा सांझी पूजन का जिक्र किया था। सांझी लगाते समय नृत्य तथा संगीत का बहुत बड़ा स्थान होता है। समय के साथ ही अलग–अलग तरह के गीत गाए जाते हैं।

आज के त्यौहार मानो बस नाम के त्यौहार बनकर रह गये हैं। आज नई पीढ़ी के इन त्योहारों को याद रखने के लिए रजिस्टर या डायरी लगानी पड़ती है ताकि वह समय पर इन त्योहारों को मना सके। पहले कच्चे घर होते थे तो लोग सांझी को बड़ा आकार देने की कोशिश करते थे। फिर लोगों ने कच्चे घरों की जगह पर पक्के मकान बना लिए हैं। आज देश इतनी तरक्की कर गया है कि चारों तरफ पैसे का बोलबाला है। लोगों को गोबर से बदबू आती है। इसलिए वह गोबर को घरों में लाना पसंद नहीं करते और वह बाजार से सांझी का कैलेंडर ले आते हैं, जिसका परिणाम यह है की सांझी कला एवं अन्य कहीं त्यौहार भी समाप्त होते जा रहे हैं। लोगों में इस लोक कला के प्रति जागरूकता पैदा की जाए ताकि हम अपनी इस लोक कला के अस्तित्व को बचा सके।

- लोकगीत :–

लोकगीत किसी भी देश की प्राचीन संस्कृति, सभ्यता और विचारों से अवगत कराते हैं। इन्हीं लोकगीतों के माध्यम से अपने देश, समाज, रीति–रिवाजों, रहन–सहन की पहचान करते हैं। इस पहचान के माध्यम से हम अपने वर्तमान जीवन को भी सुधार सकते हैं। लोकगीतों से हम प्राचीन इतिहास, घटनाओं, मनोभावों की पहचान कर लेते हैं। हमारे समाज में कुछ त्यौहार ऐसे भी हैं जिसमें लोग एकजुट होकर गीत गाते हैं। हमारे जीवन का हर एक हिस्सा लोकगीतों से प्रभावित होता है। जन्म से मृत्यु तक लेकर 16 संस्कारों पर गीत गाए जाते हैं। गीतों के माध्यम से ही अपने भावों को व्यक्त करते हैं। जैसे जन्म के समय पर बच्चों के आवागमन पर गीत गाए जाते हैं। होली के त्योहार पर ऊंची आवाजों पर गाने लगाए जाते हैं। कुछ त्यौहार ऐसे होते हैं, जिनमें समूह का होना जरूरी है। इन गीतों को अकेला नहीं गाया जा सकता। शादी, विवाह अन्य त्योहारों पर एकजुट होकर गीत गाए जाते हैं। लोकगीतों से मनुष्य की व्यवहारिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति होती है जैसे– काम, बोझ हल्का करना। सामान्य जनता का मनोरंजन करना। लोकगीत मनुष्य के स्वाभाविक भावनाओं स्पंदनों से जितना जुड़ा हुआ है, उतना वाणी के किसी रूप से भी नहीं। लोकगीत ही लोकजीवन की वास्तविक भावनाओं को प्रस्तुत करता है।

- लोकनाट्य :–

भारत के विभिन्न सामाजिक और धार्मिक अवसरों के दौरान पर वृहद पारंपरिक नाटक या लोकनाट्य किया जाता है। जिसको ग्रामीण या गांव का रंग मंच बोला जाता है। यह पारंपरिक नाटक या लोकनाट्य भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक धारणाओं को दर्शाता है। भारत के पारंपरिक नाटक या लोकनाट्य बहुत प्रसिद्ध हैं। लोकनाट्य का हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है जैसे– रामलीला, रासलीलाएं, नाटक किए जाते हैं जो कि व्यक्ति के मनोरंजन के लिए होते हैं। हंसी का माहौल बनाते हैं। कुछ नाटक इस तरह किए जाते हैं जिनका असर मनुष्य के दिल दिमाग पर पड़ता है और हृदय की भावनाएं कोमल हो जाती हैं। चेहरे पर उदासी का भाव झलकने लगता है। लोक नाटकों की भाषा सरल, सहज तथा सीधी–सादी होती होती हैं, जिसे कोई भी व्यक्ति बड़ी आसानी से समझ लेता है। ये लोग अभिनय करते समय गद्य का प्रयोग करते हैं। बीच–बीच में गीत गाए जाते हैं।

लोकनाट्य का संवाद बहुत छोटा तथा सरस होता है, लेकिन ग्रामीण लोगों के संवादों को सुनने के लिए ग्रामीण लोगों में धैर्य नहीं होता। लोकनाटक व्यक्ति की कृति न होकर पूरे समूह है कृति होती है। इन नाटकों को पूरे समूह के साथ तैयार किया जाता है। फिर लोगों के सामने प्रस्तुत किया जाता है। लोकनाटक में लंबे कथोपकथनों का अभाव होता है। कथनाक ऐतिहासिक, पौराणिक या सामाजिक होता है।

अहोई अष्टमी :–

अहोई अष्टमी नादर पुराण के अनुसार सभी मासूम में श्रेष्ठ कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को प्रकाष्टमी नामक व्रत का विधान बताया गया है इस लोक भाषा में होई आते या अहोई अष्टमी भी कहा जाता है होई का शाब्दिक अर्थ है अन होने को होने में बदलने वाली माता इस संपूर्ण सृष्टि में अनहोनी या दुर्भाग्य को टालने वाले आदिशक्ति देवी पार्वती हैं इस दिन माता पार्वती की पूजा अर्चना अहोई माता के रूप में की जाती है इस दिन अहोई अष्टमी का व्रत रखा जाता है इस योग में रखे गए व्रत का दुगना फल मिलता है आईए जानते हैं अहोई अष्टमी के व्रत का महत्व क्या है अहोई अष्टमी का व्रत माताएं अपने बच्चों की रक्षा और तरक्की के लिए माताएं यह व्रत रखती हैं धार्मिक मान्यता है कि अहोई अष्टमी के दिन विधि विधान से किए गए व्रत के प्रभाव से माता और संतान दोनों के जीवन में सुख समृद्धि आती है और उनकी सभी परेशानियां समाप्त हो जाती हैं अहोई अष्टमी की पूजा का विधान सैया कल प्रदोष मेला में करना श्रेष्ठ रहता है दिनभर उपवास रखने के बाद संध्या काल में सूर्यास्त होने के उपरांत जब आसमान में तारों का उदय हो जाए तभी पूजा आरंभ करें और रात्रि में चंद्रोदय होने पर चंद्रमा को अध्ययन करना चाहिए इस दिन व्रत रखने वालों को सुबह जल्दी उठकर स्नान करना चाहिए इसके बाद घर को एक दीवार को अच्छे से साफ करें और इस पर होई

माता की तस्वीर बनाएं इस तस्वीर को बनाने के लिए गोरू या कुमकुम का उपयोग करते हैं इसके बाद घी का दीपक अहोई माता की तस्वीर सामने जलाएं फिर पकवान जैसे हलवा पूरी मिठाई आदि को भोग हुई माता को लगाया जाता है इसके बाद अहोई माता की कथा पढ़ी जाती है उसके उनके मित्रों का जाप करते हुए प्रार्थना करती हैं कि अहोई माता आपके बच्चों की हमेशा रक्षा करें।

अहोई अष्टमी से 45 दिनों तक ओम् पार्वतीप्रियनंदनाय नमः का 11 माला जाप करने से संतान से संबंधित सारे कष्ट मिट जाते हैं। पूजा करते समय माताएं अपने पुत्र या पुत्री को अपने साथ बिठाकर और भगवान को भोग लगाने के बाद सबसे पहले बच्चों को प्रसाद खिलाती हैं। साथ ही इस दिन जरूरतमंदों या गाय को भोजन करना भी बहुत ही शुभ फलदाई माना जाता है। अहोई अष्टमी के दिन महिलाओं को मिट्टी से जुड़े कार्य करने से बचना चाहिए। इस दिन जमीन या मिट्टी से जुड़े कार्यों में खुरपी का इस्तेमाल नहीं किया जाता है, जिससे मिट्टी की खुदाई के वक्त एक साहूकारनी से सेई के बच्चे की मौत हो गई थी, जिससे उसका पूरा परिवार उजड़ गया। अहोई माता और सेई की पूजा करने के बाद ही उसे संतान की प्राप्ति हुई। तभी से यह व्रत रखने की परंपरा चली आ रही है।

अहोई अष्टमी के दिन व्रत रखने वाली औरतों को काले, नीले या गहरे रंगों के कपड़े नहीं पहनने चाहिए। भगवान श्री गणेश का नाम लिए बगैर यह पूजा शुरू नहीं की जाती। अहोई पर तारों की छांव में अर्ध्य देने के लिए कांसे के लोटे का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। इस दिन महिलाएं धारदार या नुकीली चीजों का बिल्कुल इस्तेमाल नहीं करती हैं। इस दिन चाकू, छुरी, कैंची या सुई जैसी चीजों का प्रयोग नहीं करती है। यह व्रत करवा चौथ की तरह ही होता है जिस तरह करवे का व्रत पत्नी अपने पति की लंबी आयु के लिए रखती है। इसी तरह अहोई अष्टमी का व्रत माताएं अपने बच्चों की सुख शांति एवं आयु के लिए रखती हैं। व्रत में चाकू, छुरी, कैंची, सब्जी काटना इनको व्रत में इस्तेमाल करना अशुभ माना जाता है। इस दिन स्टील से बने बर्तनों का इस्तेमाल किया जाता है। यह व्रत महिलाएं अपने बच्चों के लिए रखती हैं, ताकि उनके जीवन में खुशहाली रहे। कष्ट न उत्पन्न हो। माताएं बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए व्रत रखती हैं। कहते हैं अहोई अष्टमी का व्रत निर्जला रखा जाता है, जो महिला निर्जला अहोई अष्टमी का व्रत करती हैं, उसे शुभ फल की प्राप्ति होती है।

- पेपर मेशी :—

पेपर मेशी का शाब्दिक रूप चबाया हुआ कागज, इसे अक्सर पेपर माछ के रूप में लिखा जाता है। यह एक मिश्रित सामग्री है, जिसमें कागज, अखबार के छोटे—छोटे टुकड़े फाड़ कर बनाया जाता है। जिसे कभी—कभी वस्त्रों के साथ किया जाता है और गोंद, स्टार्च जैसे चिपकाने वाले पदार्थ से बांधा जाता है। पेपर मेशी का प्रयोग बहुत सारी वस्तुएं बनाने के लिए किया जाता है। इससे अलग—अलग

वस्तुएं तैयार की जाती हैं। जिस तरह छोटे–छोटे टुकड़े फाड़कर पानी में भिगो दिया जाता है। उन्हें पहले ओखली द्वारा कूटकर तैयार किया जाता था। लेकिन अब इन्हें मशीनों में तैयार किया जाता है। इनमें गोद डाल दी जाती है, ताकि ये चिपक कर मजबूत तैयार हो जाए। इसे जिस डिजाइन में बनाना होता है, पहले उसका सांचा तैयार कर लिया जाता है। फिर पेपर मेशी की सहायता अनुसार मुल्तानी मिट्टी में गोंद से मिक्स करके बनाया जाता है। इसे चिड़िया, तोता, बोईये, मूर्ति, बर्तन अन्य तरह के बर्तन एवं वस्तुओं को बनाया जाता है।

दूसरी तरह इन्हें गोंद के साथ चिपकाई गई कागज की पट्यिों का उपयोग किया जाता है। इसमें गुदे को सीधे वंछित आकार में आकर देना संभव है। दोनों ही तरीकों में तार, चिकन तार, हल्के आकर, गुब्बारे या वस्त्रों की आवश्यकता होती है। कागज को कम से कम रात भर पानी में भिगोने के लिए छोड़ दिया जाता है। लेकिन पहले के लोग पेपर मेशी से घर के लिए बोईये तैयार किया करते थे। ताकि वह घर का कुछ सामान उसमें डालकर रख सकें। विवाह, शादियों में इनका काम लड्डू, ड्राई फ्रूट्स अन्य चीजों के लिए इस्तेमाल करते थे। लेकिन आज के युग में इन्हें बहुत ही कम से कम इस्तेमाल किया जाता है। आजकल लोग स्टील या कांच के बर्तनों को अधिक महत्व देने लगे हैं। गांव के कुछ लोगों के घरों में यह आज भी पाए जाते हैं। भाव यह है कि पेपर मेशी द्वारा देवी देवताओं की मूर्तियां भी बनाई जाती हैं। लेकिन आजकल लोग इन मूर्तियों को न लेकर पत्थर द्वारा बने मूर्तियों को खरीदना पसंद करते हैं।

इंग्लैंड में 1700 के दशक में पेपर मेशी का उपयोग मुख्य रूप से सजावटी आभूषण बनाने के लिए किया जाता था। जैसे छोटे बक्से, दीवार ब्रैकेट, सजावटी छत, कार्ड इत्यादि। जैसे–जैसे समय बीतता गया पेपर मेशी वस्तुओं को बनाने की विधियां समय लेने वाली, हाथ से दबाने की बजाय, मशीनों में स्थानांतरित हो गई थी। मशीनों से नरम करने के लिए भांप का प्रयोग किया जाता था। कागज की लुगदी का प्रयोग फर्नीचर बनाने के लिए भी किया जाता है। इसके अलग तरह के मास्क बनाए जाते हैं। आखिर में सूख जाने के बाद इन पर रंग रोगन कर दिया जाता है। यह माना जाता है कि यह एक सस्ती एवं सरल तकनीक है जिसे गांव की कई औरतें इन्हें बेचकर पैसे कमा सकती हैं।

विलुप्त होती लोक कला

भारत का जिक्र आते ही एक एकीकृत मानसिक चित्र सामने आता है। देश के हर कोने में एक अनोखी कला है। कुछ ऐसी है जो समय की कसौटी पर खड़ी उतरी हैं और हाल के वर्षों में समृद्ध हुई हैं, लेकिन दुखद वास्तविकता यह है कि भारत के विभिन्न प्रकार की कलाएं आधुनिकीकरण की मार झेल रही हैं और धीरे–धीरे भारत की लुप्त होती कलाओं की श्रेणी में आती जा रही हैं। इस दौरान डॉक्टर बनवारी लाल ने कहा है कि नाटक एवं लोक कला जिनमें से कुछ कलाएं देश में लुप्त होती जा रही हैं, यदि इन्हें गंभीरता से नहीं लिया तो समय के साथ–साथ यह लुप्त हो जाएगी। कहने का भाव यह है कि देश में कलाएं विलुप्त होती जा रही हैं। जिस तरह सांझी हो या अहोई अष्टमी अन्य विभिन्न प्रकार के त्यौहारों पर लोग घरों में न बनाकर, कैलेंडर ले आते हैं। उन्हें ज्यादा मेहनत न करनी पड़े। सभी त्यौहार नाम–नाम के रह गए हैं।

पहले के लोगों में काफी प्रेमभाव, दयालुता उत्पन्न होती है, लेकिन आज के समय में सभी लोग अपना ही फायदा कमाने पर तुले हैं। सभी लोग पहले गांव में मिलकर त्यौहारों का समारोह करते थे, मिल बांटकर खाते थे, लेकिन अब यह सब समाप्त होता जा रहा है। चारों तरफ पैसा कमाने की आड़ लगी हुई है। रिश्तो को रिश्ता नहीं समझा जाता। हमारे देश में त्यौहारों की संस्कृति को जल्द से जल्द समाप्त करने पर लगे हुए हैं। लोगों का कला के प्रति कोई लगाव नहीं है। शास्त्रीय नृत्य, लोक नृत्य, एकांकी, नाटक इन्हें सब व्यर्थ मानते हैं। लोक कलाकार ने बातचीत के दौरान इस बात का खुलासा किया कि हरियाणा प्रदेश में कुछ ही कलाकार बचे हैं जो बीन, तुंबा, ढोलक, खंजरी बजा कर जोगी नाथ बीन सपेरा परंपराओं को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं। कुछ लोग कलाओं को लुप्त होता देख रहे हैं। समाज में कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जो इन्हें विलुप्त होने से रोक लगा रहे हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों के विभिन्न अंचलों में विभिन्न समुदायों का अलग–अलग अंदाज में मनोरंजन प्रतिनिधित्व करने वाली लोक कलाएं इस समय आधुनिक, कानफोडू व हाईटेक मनोरंजन की चमक दमक के आगे दम तोड़ते हुए नजर आ रही है। इन कलाओं के संरक्षक इन्हें शादी–विवाह व पूजा जैसे पारंपरिक आयोजनों में भी इन कलाओं की कोई पूछ नहीं है और न ही उनकी प्रस्तुतियों की धूम। हालांकि आज भी फारूआही, हुड़किया, कहरनयवा, धोबी नाथवा नाथ की मिठास अभी भी पुराने लोगों के दिलों दिमाग में रची–बची है।

उल्लेखनीय यह है कि पहले विभिन्न जातियों, वर्गों के मनोरंजन की अलग–अलग टोलियां बनती थी, इनके नाम भी समुदायों के नाम से जाने जाते थे। समाज के एक बड़े भाग में जहां मृदंग की थाप पर लोगों को मनोरंजन किया करते थे, वहीं गहगो– गहगें की धुन पर थिरकने वाला हुड़किया

नाच भी कहरनयवा के नाम से प्रसिद्धि पा चुका था। शादी विवाह तथा पारंपरिक पूजा पाठ में खुद के मनोरंजन से लगायत देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए कार्यक्रम बनाए जाते थे। कुछ वाद्ययंत्रों के सहारे दर्जन भर नाचते गाते लोग वाकई में समा बांध देते थे। फरुनाही नृत्य की बात करें तो धोती और बनियान पहने व पांव में मोटा घुंघरू बांधे नर्तक डफली व नगाड़े की थाप पर कूद–कूद कर लोगों का मन मोहते थे। इन नृत्य पर बजने वाले धुन की अलग ही मिठास हुआ करती थी। दूसरी तरफ समय के साथ इन लोक कलाओं की प्रस्तुतियां अब गुजरे जमाने की बात हो गई हैं। आधुनिकता की चकाचौंध एवं पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण एवं हाईटेक मनोरंजन के चलते इन लोक कलाओं पर ग्रहण लग गया है।

लोक कलाओं से जुड़े स्थानीय कलाकार खूबलाल, राजाराम पासवान, सुनील पासवान, लोक कलाओं की घटती पूछ पर चिंतित नजर आते हैं। उनका कहना है कि यदि स्थिति यही हो तो नई पीढ़ी इन कलाओं से अनजान ही रह जाएगी। इन लोक कलाओं की जगह पर अपनाए जाने वाले मनोरंजन के दूसरे साधन गंवई संस्कृति से विमुख रूप से प्रभावित होते हैं।

लोक कला एवं संगीत महाविद्यालय चला रहे प्रख्यात शहनाई नायाब हुसैन का कहना है कि लोक कला का तिरस्कार का ही परिणाम है कि आज की पीढ़ी लरिकाईन, फरू–आही, हुड़का व अंयरा नाय को जानती ही नहीं। उन्होंने कहा कि जब तक परंपराओं की चासनी में डुबोकर लोक कलाओं को परोसा नहीं जाएगा। तब तक हम अपनी लोक कलाओं का संरक्षण नहीं कर सकते। कुल मिलाकर विलुप्त होती जा रही लोक कलाओं की स्थिति चिंता का विषय बनती जा रही है। भारतीय संस्कृति खासकर यूपी और बिहार में प्रचलित लोक कलाएं इस समय कहीं देखने को नहीं मिलती और किसी मन्नत के पूरा होने पर देवी स्थानों पर होने वाले अचंरा नृत्य भी इतिहास के पन्नों में स्थान लेते जा रहे हैं।

आज आधुनिकता ने कई पीढ़ी को लोक कलाओं से दूर कर दिया है। उन्हीं लोक कलाओं में एक सांझी भी है, जिसे पहले सभी घरों में 9 दिन के लिए स्थान दिया जाता था और पूजा अर्चना की जाती थी, पर अब दिखाई नहीं देती। अश्विन अमावस्या को घर की दीवार पर बनाई जाने वाली इस लोक कला की कृति को पहले हर घर में स्थान मिलता था। सावन के समापन के बाद लड़कियां पोखर व तालाबों से मिट्टी एकत्रित कर सांझी को विभिन्न हिस्सों में रूप देती थी। इन कलाकृतियों को धूप में सुखाकर विभिन्न रंग कर घर की दीवार पर गोबर के सहारे सजाया जाता था। सांझी की 9 दिन तक पूजा की जाती थी। आसपास की महिलाएं सांझी के गीत एकत्रित होकर गाया करती थी। प्रदेश में कभी बड़ी धूमधाम से बनाए जाने वाला त्यौहार राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश व पंजाब में भी

मनाया जाता रहा है। लेकिन इन त्योहारों को आज के युग में हरियाणा में भी सही ढंग से नहीं बनाया जाता है।

रामायण में सांझी का जिक्र होने के साथ ही यह भी बताया गया है कि रावण पर चढ़ाई करने से पहले भगवान ने भी सांझी माता की पूजा की थी। रावण पर अपनी विजय प्राप्त करने के बाद दशहरे के दिन सांझी माता का विसर्जन कर दिया जाता है। शादी व घर के बच्चा होने पर सांझी माता के गीत गाए जाते हैं। वर्तमान में तेजी से बदलती जिंदगी के साथ ही शहरीकरण को पिछड़ने में बराबर का भागीदार है, शहर में तो कला खत्म हो चुकी है। जहां घर में सांझी को सजाया जाता था, गांव में भी इससे दूरी बनाई जाने लगी है।

ऐसा कहा जाता है कि विदेशों में टैटू यानी गुदना कला, सौंदर्यता की चकांचौध को देने व अपने को जो अच्छा लगे, उन प्रतीकों चिन्हों को शरीर पर बनाए जाने का चलन जोरों से चल रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में गुदना कला को लोग वर्षों से बनवाते आ रहे हैं। किंतु वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में इस कला का चलन धीरे–धीरे कम होता दिखाई दे रहा है। विदेश में यह फैशन का रूप ले चुकी है। विदेश में यहां भी पुरुष और महिलाएं बच्चे भी टैटू बनवाते हैं। फिल्मों में भी कई हीरो–हीरोइन ने अपने शरीरों पर बनवाना, इस सौंदर्य का रूप मानते हैं। गुदना कला यानी सौंदर्यता के वे चिन्ह, जिससे स्थाई रूप से सजने–संवरने हेतु रोजाना से निजात मिलती है। कई गुदना वाले कलाकार गुदना के चलन कम होने से काफी दुखी हो उठते हैं। विदेशों में इनका प्रभाव बरकरार है। किंतु यहां पर यह धीरे–धीरे कम होता दिखाई दे रहा है। एक उदाहरण के तौर पर ऐसा कहा जाता है। बड़े पैमाने पर प्लास्टिक, फाइबर व अन्य मिश्रित धातुओं से निर्मित वस्तुओं का उत्पादन और घर तक उनकी पहुंच से जहां एक और कुम्हार समुदाय के कारण कारोबार को पिछले कुछ वर्षों से भारी क्षति का सामना करना पड़ा है, वहीं दूसरी और निर्मित वस्तुओं का आयात और बड़े पैमाने पर भारत के बाजारों में उनका व्यवसाय भी उनके पिछड़ेपन का एक प्रमुख कारण रहा है। सामाजिक, राजनीतिक स्तर, माटी कला, काम के प्रति अनिछा, महंगाई, वस्तुओं की मांग में भारी कमी, तकनीकी शिक्षा की कमी, उन्हें उनके पैसे से दूर करता रहा है।

पहले जिस तरह कुम्हार समुदायों में दुर्गापूजा, दीपावली और छठ जैसे व्रतों में मिट्टी से निर्मित वस्तुओं में जो खुशी दिखाई पड़ती थी, अब उनमें जमीन–आसमान का अंतर हो चुका है। जैसे सामान बनाने के लिए मिट्टी की कमी, कच्ची मिट्टी की वस्तुओं को पकाने के लिए कोयला तथा बाजार तक वस्तुओं की पहुंच बनाने के लिए इस व्यवसाय के विरुद्ध एक बड़ा संक्रमण काल रहा है। शादी–विवाह जैसे दीपावली, जन्म–मृत्यु जैसे अवसरों पर मिट्टी की सामग्री की भरपूर मांग हुआ करती थी। देवी–देवताओं की हर प्रकार की मूर्तियां हाथी, घोड़ा, गमला, पानी पीने का बर्तन, कुल्हड़ आदि सब

पहले बहुत महत्व था। सुरेंद्र पंडित के अनुसार पहले का जमाना काफी अच्छा था। मिट्टी के सामानों की हमेशा मांग रहती थी। छोटी–छोटी चीजों के लिए महीना पहले लोग ऑर्डर दे दिया करते थे। सीमेंट की छोटी बोरी भारत कोयला मात्र पांच रूप्ये में उपलब्ध हो जाया करता था। अभी उसी उस सीमेंट बोरी कोयला के लिए इन दिनों भारी कीमत चुकानी पड़ती है। इस तरह एक ट्रेलर मिट्टी के लिए अभी बाजार से 1500रू का भुगतान करना पड़ता है। मिट्टी लगाने से लेकर, कच्चे माल को पकाने तक की मेहनत अलग से।

कुम्हारपाडा, दुमका के सुखी पंडित का कहना है कि वैसे तो कोई भी व्यवसाय बुख नहीं है। इन पेशे से जुड़े रहने के लिए तन, मन, एवं धन तैयार रखने की जरूरत है। यह अलग बात है कि आज की युवा पीढ़ी अपने पेशेवर व्यवसाय से प्रतिदिन दूर होती जा रही है। वह अपने बड़े बुजुर्गों के कार्यों को अब फिजूल माना करते हैं। तत्पश्चात इस समाज के बड़े बुजुर्गों को कहना है कि कुम्हार ही सृष्टि के प्रथम राजा हैं, किंतु वर्तमान स्थिति यह है कि दूसरों के घरों को रोशन करने वाला यह समाज आज खुद अंधेरे में जीवन जीने को अभिशप्त है। समाज में इतना बदलाव आ चुका है, वह अपनी सभी हरियाणा की प्रसिद्ध लोक कलाओं को भूलकर बैठे हैं। अपने में व्यस्त रहते हैं।

पहले लोग अपने घरों में ज्यादा से ज्यादा हाथों के द्वारा बनाए गए सामान को ज्यादा पसंद किया करते थे, लेकिन अब वह फैशन के जमाने में जीना पसंद करते हैं। अपनी कलाओं को वह आगे बढ़ाने की बजाय उन्हें समाप्त करते जा रहे हैं। इस पर रोकथाम लगाना आवश्यक है। मिट्टी के बर्तनों की बजाय, घरों में स्टील, कांच का प्रयोग किया जाने लगा है। समय के साथ–साथ परिस्थितियां काफी बदलती जा रही हैं। लोक कलाएं भी काफी समाप्त हो चुकी हैं, विलुप्त होती चली गई है। उनकी कारीगरी विलुप्त–सी होती जा रही है।

चतुर्थ अध्याय

- कला में लोक कला का योगदान
- व्यापारिक स्तर पर लोक कला का प्रभाव

कला में लोक कला का योगदान

हमारे समाज में कला में लोक कला का महत्वपूर्ण योगदान है। लोक कलाओं के संरक्षण का संस्कृतिक और सामाजिक स्तरों पर व्यापक महत्व है। गांव – समाज के ताने–बाने के बने रहने में लोकगीतों व नृत्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक संचार के इस युग में भी देर रात तक चलते रहने वाले लोकगीत – संगीत या नाटक के कार्यक्रम में विभिन्न समुदायों के लोग एकत्रित होते हैं। इन कलाओं में लोक कला का संरक्षण दो कारणें से काफी अहम मुद्दा है। एक तो यह हमारी सांस्कृतिक पहचान भी है और दूसरा यह है कि यह सभी लोक कलाएं जो ग्रामीण जनजीवन के यथार्थ से बहुत गहराई से जुड़ी हैं। इनसे कई निर्धन, दलित व आदिवासी परिवारों की आजीविका जुड़ी हुई है। इन कलाओं के कारण उन्हें सामाजिक समाज भी मिलता है और महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका भी है, जिन्हें हम पूरी तरह निरक्षर मानते हैं। ऐसे कलाकार रात भर गीत – कथा सुनाते हुए पूरी निपुणता के साथ नृत्य कर लेते हैं।

लोक कलाओं में कला के संरक्षण का अर्थ देश की परंपरागत सांस्कृतिक पहचान बनाए रखना है। साथ ही कलाओं की आजीविका और सामाजिक सम्मान को बरकरार रखना भी है। वैसे तो लोक कलाओं के संरक्षण के लिए केंद्र व राज्य स्तर पर जो योजनाएं बनाई जाती हैं, उनका मकसद भी अवसर यही होता है, लेकिन ज्यादातर मामलों में यह योजनाएं कामयाब नहीं होती। सबसे बड़ी बात यह है कि इसके लिए धन के जो प्रावधान होते हैं वे अक्सर बहुत कम होते हैं। यह धन उन जगहों पर पहुंच नहीं पता जहां पर धन की सख्त जरूरत होती है। यह जरूर है कि लोक कला कलाकार जो अपनी कला को शहरी मंचों तक ले जाने में कामयाब रहे, काफी लोकप्रिय हैं और अक्सर इन्हें ही सरकारी प्रयासों की सफलता के उदाहरण के रूप में पेश किया जाता है। वे लोक कलाकार जो अपने परंपरागत परिवेश से बाहर नहीं निकले, वे अपेक्षित भी हैं और निर्धन भी। ज्यादातर कलाकार अपनी पारंपरिक विद्या को छोड़कर दूसरे काम धंधों में हाथ आजमाने लगे हैं। लेकिन देश की तमाम लोक कलाओं के सामने संकट कई स्तरों पर है। सामाजिक ताना–बाना टूट रहा है, जो लोक कलाओं को प्रोत्साहित व संरक्षित करता था।

ऐसा माना जाता है कि मनुष्य का जीवन कला और लोक कलाओं दोनों के बिना अधूरा है। यह व्यक्ति को बेहतर जीवन जीने की कला सिखाती है। जीवन में रंग भरने का काम करती है। हर किसी के जीवन में लोक कला का महत्व होना चाहिए। कला के बिना व्यक्ति का जीवन व्यर्थ है। लोक संस्कृति, लोक कलाओं का संरक्षण इसलिए आवश्यक है। यह मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनने के लिए उपयोगी है। लोक कलाओं के बिना मनुष्य का जीवन निरस्त है। हमारा देश लोक कलाओं में समृद्ध है।

✪ https://www.livehindustan.comnews/article/article/-story-280511.html

पौराणिक काल से यह लोक जीवन को आनंदित एवं आंदोलित करती रही है। हमारी लोक कलाएं बहुमुखी और बहुरूपी हैं। व्यक्ति के जीवन में कला और लोक कला कितनी आवश्यक है, यह बताने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि समाज को जागृत करने की जरूरत है, ताकि हम अपनी कला संस्कृति की रक्षा कर सके। लोक कलाएं केवल मनोरंजन का साधन मात्र नहीं है, बल्कि इतिहास, विज्ञान और जीवन के दर्शन भी होते हैं। कला एवं लोक कला संस्कृति, लोक कला हर देशवासी की आत्मा होती है। भारतीय परंपरा के अनुसार कला सारी क्रियाओं को कहते हैं, जिनमें कौशल उपेक्षित हो। यूरोपीय शास्त्रियों ने भी कला में कौशल को महत्वपूर्ण माना है। कल एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण होता है, जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है। देश में कुछ गिने चुने जिओ लोग इससे बच निकलते हैं। तो वे अपने बुद्धि का सही उपयोग भी सीख लेते हैं, और वह अपनी कला को अलग–अलग रूपों में सामने लाते हैं। जैसे कुछ संगीत के रूप में, कुछ मूर्ति एवं शिल्प कला के रूप में, तो कुछ चित्रकला के रूप में।

"कला" एक ऐसी बहुमूल्य संपत्ति है होती है जो सभी के पास है, पर इसका आभास हर किसी को नहीं होता है और हो भी जाए तो कभी–कभी अपनों के द्वारा या कभी परायों के द्वारा दबा दिया जाता है। उसके साथ नियमित रूप से कुछ वक्त बिताते हैं तो निश्चित ही आपकी कला आपको बहुत ऊपर तक लेकर जाएगी। कला हमें शारीरिक और भावनात्मक कल्याण में योगदान करती हैं, जिनसे कल मानव जीवन में महत्वपूर्ण है।

1. भावनाओं को व्यक्त करना :–

कला व्यक्तियों का खुद को ऐसे तरीकों से व्यक्त करने की अनुमति देती है जो केवल शब्दों के माध्यम से संभव नहीं हो सकता है। चाहे वह पेंटिंग, मूर्तिकला, संगीत या नृत्य हो। कला हमें अपनी भावनाओं और भावनाओं को दूसरों तक संप्रेषित करने की अनुमति देता है।

2. रचनात्मकता को बढ़ाना :–

कला गतिविधियों में भाग लेने से रचनात्मकता को बढ़ाने और कल्पना को उत्तेजित करने में मदद मिलती है। इससे नवीन सोच, समस्या, समाधान, कौशल और लोक से हटकर सोचने की क्षमता पैदा हो सकती है।

3. मानसिक स्वास्थ्य में सुधार :–

कला गतिविधियों से मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। तनाव, चिंता, अवसाद कम होता है। कला चिकित्सा का उपयोग अक्सर व्यक्तियों को आघात से निपटने, आत्म–सम्मान में सुधार करने और आत्म–जागरूकता को बढ़ावा देने में मदद करने के लिए किया जाता है।

4. संस्कृति और इतिहास का संरक्षण :–

कला का उपयोग अक्सर सांस्कृतिक परंपराओं और इतिहास को संरक्षित करने के लिए किया जाता है। इसमें पारंपरिक संगीत, नृत्य और दृश्य कला के रूप शामिल हैं, जो पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होती है।

5. समुदायों को जोड़ना :–

कला का उपयोग समुदायों को एक साथ लाने और सामाजिक एकजुट को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है। कला कार्यक्रम, त्योहार और विभिन्न लोक कलाओं को एक साथ अपने विचार सांझा करने के अवसर प्रदान होते हैं।

कहने का भाव यह है कि हर प्रकार की कला किसी न किसी रूप में हमारे जीवन से जुड़ी रहती है। इसका हमारे जीवन से गहरा नाता व बहुत बड़ा योगदान इस प्रकार कला में लोक कला का महत्वपूर्ण योगदान है। कला के क्षेत्र में लोक कला का प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लोक कला को नारी शक्ति का संरक्षण प्राप्त होता है। नारी ही धार्मिक सभाओं में इस चित्रकला की गुरु व शिष्या दोनों हैं। मां गुरु है, तो पुत्री शिष्या। इन्हीं दो गुरु – शिष्य परंपरा से ही यह चित्रकला प्रगति कर रही है। कला भारत के अन्य भागों में भी दिखाई देने लगी है।

शरीर गोदने की कला से लेकर घर आंगन की साज–सजा, धार्मिक पर्वों व तीज – त्योहारों में यह कला प्रचुर दिखाई देती है। वर्तमान में यहां की चित्रकला का एक और आदित्य रूप दिखाई देता है। देवी–पूजा के लिए पट्टा बनाया जाता है, जिस पर राम–लखन, सीता, भोलेनाथ, गणपति अपने वहां शीर्ष बनाये जाते हैं। पिछले सात–आठ वर्षों में नवदुर्गा की भव्य मूर्तियां भी विजयदशमी के लिए बनाई जाने लगी हैं।

लोक कलाओं से हमारा तात्पर्य यह है कि लोक कलाएं काफी लंबे अर्से से अपनत्व व आत्मीयता की अनुभूति होती रही हैं। हालांकि मैं हरियाणा में जन्मी और ग्रामीण परिवेश में पली–बढ़ी, जिससे बचपन से लेकर अब तक के सफर में धार्मिक पूजा–पाठ में हवन कुंड की अलंकृत वेदी व आटे की बनी चौक पूरना से स्वतः ही संबंध गहराता गया। उस समय लोक कलाओं से अनभिज्ञ अभिज्ञ होते हुए

भी शादी ब्याह में बनने वाले कोहबर, दीवार पर बनने वाले हाथ के छापे जैसी कलात्मक गतिविधियों में मेरी सक्रिय भागीदारी रही।

मुख्यतः यह कार्य घर की बड़ी महिलाओं के हुआ करते थे। हरियाणा प्रदेश में लोक परंपराओं में चौक पूरना, अहोई अष्टमी, सांझी लगाना बहुत लोकप्रिय माना जाता है। कला चाहे तो आदिकाल की हो, या आधुनिक यह सदैव मानव जीवन को ऊपर उठती है। लोक कलाओं की अगर बात की जाए तो यह कुछ सभ्यता प्रागैतिहासिक काल से रखती हैं। सामान्य अर्थों में किसी विशिष्ट क्षेत्र के लोगों से जुड़ी हुई कला ही लोक कला कहलाती है। लोक कलाओं में समाहित बिम्ब, अभिप्राय तथा प्रतीक आम लोगों की निजी अभिव्यक्ति होती है, जो उनके सादे, सरल एवं सादगी भरे जीवन को प्रतिबिंबित करती हैं। यह कहा जाता है कि लोक कलाओं से समाज के लोग काफी प्रेरणा लेता है। आज इस प्रेरणा से ही लोक कलाएं नए मुकाम तक पहुंचती जा रही हैं।

कहने का भाव यह है कि लोक कलाएं बुद्धिवादी नहीं बल्कि स्वाभाविक होती हैं जो कि सीधे ही हृदय को आकर्षित करती हैं।

कलाओं के विकास का पहला चरण लोक–भावना और सामुदायिक चेतना से अनुप्रेरित रहा। कला सृजन और उपभोग दोनों में सामुदायिक स्पष्ट रूप दिखाई पड़ता था, समूह में निवास करते थे। समूह में मिल–जुलकर नाचते गाते थे, उत्सव मनाते थे और वस्तुओं को कलात्मक ढंग से सजाया–संवारा करते थे। समुदाय में कोई विशिष्ट व्यक्ति कलाकार नहीं होता था, तनिक भी अंतर न था की कौन सा व्यक्ति नर्तक है, कौन सा दर्शक है, और कौन श्रोता, अक्सर भूमिकाएं मिली जुली होती थी। एक ही व्यक्ति नर्तक है, तो कभी वह दर्शक बन जाता था, वह कभी नर्तक, सजर्क, गायक हुआ करते थे।

मानव की आत्मिक अभिव्यक्ति का सहज व सरल रूप होने के कारण लोक कला संस्कृति को लोकप्रिय संस्कृति कहना गलत ना होगा, क्योंकि यह संस्कृति व सभ्यता को समेटे हुए हैं। उसके वातावरण की प्रस्तुति करती हैं।

आदिम युग से लेकर आधुनिक युग तक सभ्यता ने जो भी मोड लिए हैं, वे लोकसंस्कृति अपने स्वाभाविक प्रवाह में उनके इतिहास को समेटे हुए हैं। प्रत्येक युग, काल में मानव किसी विशेष क्षेत्र में निवास करता था और जो भी कलात्मक गतिविधियों करता था वह उसे क्षेत्र की कला संस्कृति के रूप में जानी जाती हैं, जिसका प्रचलित नाम लोक कला है। हरियाणा के ग्रामीण इलाकों में मिट्टी की दीवारों पर उत्कीर्ण सांझी, अहोई एवं अन्य त्योहारों से संबंधित तरह–तरह की लोक कलाएं इनमें सम्मिलित हैं। हरियाणा में त्योहारों पर किए जाने वाले भूमि अलंकरण, मिट्टी या काष्ठ की मूर्तियां, खिलौने प्रचलित हैं।

लोक कलाओं में निहित सच्ची अभिव्यक्ति सरल रेखा, प्राकृतिक रंग कला की सहजता की वकालत करते हैं। ग्रामीण भारत में सृजनात्मक प्रवृत्ति का जोश के साथ प्रचलन बड़ा। कला की दुनिया में एक हलचल हुई, भारतीय जीवन मूल्यों एवं संस्कृति का गुणगान पश्चिम में शुरू हुआ, जिसके परिणाम स्वरुप भारतीय कलाकारों में अपने परंपरा, अपने परिवेश के लोगों से जुड़ी कलाओं से प्रेरणा लेने का उत्साह बढ़ा। लोक कला में विषय–वस्तु, धार्मिक उत्सवों पर व संस्कारों व लोक मनोरंजनों से जुड़ी होती हैं। लोक कलाकार जो कुछ भी परिवेश में घटित होते देखता है चाहे संस्कृतिक या सामाजिक सबका सफूर्ति के साथ अंकन करता है। कला इनकी आत्मा में रची–बसी होती है।

जनजाति कलाएं एक लोक–कलाएँ केवल धरोहर ही नहीं अपितु भारतवर्ष की समृद्ध परंपरा, संपन्न सभ्यता एवं जीवन संस्कृति की कहानी है। ये कलाएँ असल में किसी भी समाज के जनमानस का आईना होती हैं। सदियों से एनम अनाम–अंजाने हाथों से रचित होती हुई एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी हस्तांतरित होती रही हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। समय बदला, नए मुहावरे आए। नई परिभाषाओं का दौर आया, नए परिवेश में कलाओं का दाखिला हुआ जिससे कला की जातीय चेतना के स्तर में बदलाव आया।

देश के आजाद होने के बाद लोक कलाओं ने कुछ तरक्की अवश्य की। हरियाणा में सांझी हो या अन्य शहरों की सभी लोगों की आत्मा अपने त्योहारों में रची होती हैं, लेकिन कुछ लोककला बहुत पीछे छूट गई और कई कलाएँ तो लुप्त हो गई और कई विकृत हो गई। हरियाणा का संगीत मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है जैसे – शास्त्रीय लोक संगीत और देसी लोक संगीत। हरियाणा देश में अद्वित्य राज्यों में से एक है। किसी भी राज्य के विकास में कला का महत्वपूर्ण योगदान होता है। हरियाणा राज्य की संस्कृति व लोक नृत्य बहुत प्रसिद्ध है। खास तौर पर हरियाणा राज्य का संगीत व हरियाणा की रागनियां पूरे भारत देश में प्रसिद्ध हैं। बहुत से स्थान पर हरियाणा की संगीत कला छाई हुई है।

आज भारतीय आदिवासी एवं लोक कलाओं को विश्व में जो पहचान मिली है, उसमें वेरिचर एल्विन, स्टेला क्राम्रिश, कमला देवी चटोउपाध्याय एवं पुपुल जयशंकर जैसे विद्वानों का बहुत बड़ा योगदान है।

आधुनिक भारतीय कला का यह सुखद एवं स्वस्थ काल है। आधुनिक कलाकार भारतीय लोक कला, लघु चित्रों एवं जनजातीय कला के प्रति सजग हो गए हैं, जिनका प्रभाव आधुनिक कला में किसी ने किसी रूप में दिखाई देता है। एक समय ऐसा भी था जब इन लोक कलाकृतियों, लघु चित्रों एवं जनजातीय कला की अपेक्षा की गई थी। आज के नागरिक व सभ्यता मनुष्य के अचेतन मस्तिष्क में परंपरागत कला का गुणात्मक प्रभाव दिखाई देता है। भारतीय लोक कला के तत्व किसी ने किसी रूप में आधुनिक काल में विद्यमान है। आधुनिक भारतीय कला की गहनता को समझना है तो यह अनिवार्य

है कि हमें लोक कला की गहनता को समझाना पड़ेगा, क्योंकि आधुनिक काल के विकास में लोक कला का महत्वपूर्ण योगदान है।

आज भी बहुत से चित्रकार किसी न किसी रूप में लोक कला से प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। भारतीय कला को ग्रामीण जनमानस ने लोक कला की धरोहर की तरह संभाले रखा। इसी लोक कला से 19वीं सदी की बाजार चित्रकला का जन्म हुआ। ये सभी कलाकार किसी न किसी रूप से लोक कला से प्रेरित रहे हैं। कलाकारों में सर्वप्रथम यामिनी राय का नाम आता है। उन्होंने अपने रचना संसार को लोक कला के साथ जोड़ दिया। यामिनी राय के चित्रों में लोक कला के रंग, रेखाएं, सभी नजर आता है। वे पूरी तरह से लोक कला पर सम्मोहित हो गए। यामिनी राय लोक कला से इसलिए भी प्रभावित हुई क्योंकि लोक कला कोमलता, विविधता, एकता एवं सावजनीता के गुणों से संपन्न होती है।

नंदलाल और यामिनी राय एवं विनोद बिहारी मुखर्जी लोक कला से प्रभावित रहे। प्रोफेसर के. एस. भारतीय कला के प्रमुख कलाकार थे। इन्होंने हरियाणा के तीज–त्यौहार आधुनिक संदर्भ में लोग चित्र शैली में चित्रित कर प्रस्तुत किया।

डॉक्टर एच. एन. मिश्रा एक ऐसे आधुनिक कलाकार हैं जिन्होंने परंपरागत रीति–रिवाज से प्रेरणा ग्रहण की है। इन्होंने लोक तत्वों को आधुनिक शैली में प्रस्तुत किया है। सांझी इनका प्रिय विषय रहा है। ये सभी कलाकार किसी ने किसी तरह लोक कला से प्रेरित रहे हैं। कई कलाकार स्वयं ग्रामीण परिवेश से जुड़े होते हैं। आधुनिक कला एवं लोक कला में कुछ तत्व समान रूप से विद्यमान रहते हैं। प्रत्येक देश की कला का अपना स्थानीय एवं विकसित रूप होता है, तो उसे राष्ट्र विशेष के परिवेश में फल फूल सकती है। किसी भी राष्ट्र की कला अपने राष्ट्र में उच्च स्थान प्राप्त कर सकती है।

व्यापारिक स्तर पर लोक कला का प्रभाव

व्यापार का अर्थ है क्रय और विक्रय। दूसरे शब्दों में एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को सामानों का स्वामित्व अंतरण ही व्यापार कहलाता है। स्वामित्व का अंतरण सामान सेवा व मुद्रा के बदले में किया जाता है, जिस संरचना में व्यापार किया जाता है उसे 'बाजार' कहते हैं। व्यापारिक वह व्यक्ति कहलाता है जो व्यापार का कार्य करता है। एक व्यापारी वह जो किसी अन्य वस्तुओं के द्वारा उत्पादित सेवाओं और वस्तुओं का विक्रय करता है। उसके बदले में उसे धन की प्राप्ति होती है। कला का रूप लोक कलाओं एवं संस्कृति विरासत से जुड़ा हुआ है। सभी मनुष्यों की वे जहां भी हो उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता होती है। यदि हम चारों ओर देखे तो हम पातें हैं कि लोगों को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के उत्पादों और सेवाओं की आवश्यकता होती हैं। वे उन्हें कैसे खरीदते हैं, वे स्वयं या इंटरनेट पर इलेक्ट्रॉनिक बाजार में जाते हैं, जहां वे आवश्यक वस्तुओं को पेश करने वाली विभिन्न प्रकार की दुकानों और विक्रेताओं को पाते हैं। वे अपनी आवश्यकता अनुसार वस्तुओं को प्राप्त करते हैं।

क्या आपने कभी सोचा है कि इन उत्पादों और सेवाओं को बाजार में कैसे उपलब्ध कराया जाता है। इन वस्तुओं को बाजारों एवं विभिन्न मेलों में बेचने के लिए लगाया जाता है, ताकि ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। व्यवसाय एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि है जो लोगों के लिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और बिक्री से संबंधित है। व्यवसाय हमारे जीवन के लिए प्रमुख है, व्यवसाय का हमारे दैनिक जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव है। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यवसाय का प्रभाव लोक कला पर अत्यधिक पड़ता है। वस्तुओं का देश और विदेश दोनों जगह व्यापार किया जाता है। लोग विभिन्न आर्थिक गतिविधियों जैसे की सूती कपड़ा बनाना, कपड़े रंगना, मिट्टी के बर्तन, अन्य प्रकार के अलग–अलग डिजाइनों में बर्तनों को तैयार करना।

मिट्टी के बर्तन बनाना, मिट्टी की मूर्तियाँ, कणों के द्वारा टोकरियों को बुनना और उन्हें तैयार करके मेलों में एक बाजारों में भी उन्हें बेचना। यह कार्य घरों में किए जाते हैं। बहुत सी औरतें यह काम हाथों के द्वारा करती हैं। उन्हें शहरों में बेचती हैं जिससे उनका भी एक छोटा सा व्यापार चलता रहता है। वहीं वस्तुओं को बाजारी व्यक्ति उच्च कीमत पर बेचकर धन प्राप्त करते हैं और लाभ कमाते हैं, जिससे उनके व्यापार में वृद्धि होती रहती है।

कला के विषय आमतौर पर भव्य नाटक किया परिदृश्य के बाजार क्षेत्रीय या व्यक्तिगत रूप से महत्वपूर्ण लोक विषय होते हैं। कुछ व्यक्ति रासलीला, रंगमंच या नाच–गाना, नाटक करके लोगों का मनोरंजन भी करते हैं, जिससे धन कमाते हैं। लोक कला तब शुरू हुई जब जब राष्ट्र का निर्माण हुआ।

भारत एक अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला एक वार्षिक आयोजन है जो दुनिया भर के व्यवसाययों को अपने उत्पादों और सेवाओं का प्रदर्शन करते हैं। लोक कला वह कला है जो स्व–प्रशिक्षित कलाओं द्वारा बनाई गई है। यह कला आमतौर पर उपलब्ध सामग्रियों से बनाई जाती है। एक प्रसिद्ध लोक कलाकार ग्रैडमा मोसेस थी। उनकी पेंटिंग्स में ज्यादातर ग्रामीण परिदृश्य थे। उन्होंने उनका इस्तेमाल रोजमर्रा के जीवन को दर्शाने के लिए किया। लोक कला की एक व्यापक विशेषता यह है कि इसमें निर्माता स्व–प्रशिक्षित होते हैं, उन्हें पेशेवर रूप से कलाकार नहीं माना जाता है, क्योंकि लोक कला का तात्पर्य उन लोगों द्वारा बनाई गई वस्तुओं से है जो औपचारिक ललित कला परंपरा में प्रशिक्षित नहीं है।

इन्हें प्रशिक्षित कलाकारों के द्वारा नहीं नहीं सीखा। यह कला व्यक्तियों में पहले से ही विद्यमान होती है। वह अपनी सूझबूझ के साथ विभिन्न–विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को बनाते हैं। लोग अक्सर ग्रामीण क्षेत्र से हाथ से वस्तुएं बनाते हैं। वह स्वयं करना सिखाते थे या अपने आसपास के लोगों को देखकर सीखते थे। बहुत सारी लोक कलाएं लकड़ी, धातु, मिट्टी या मिली हुई घरेलू सामग्री कपड़े के स्क्रेप या धातु के कबाड़ जैसी बेकार चीजों से बनी होती हैं। लोक कलाकारों ने ऐसी वस्तुएं बनाई जो उपयोगी तो थी, साथ ही देखने में दिलचस्प थी। जिस तरह कुछ पुरुष, महिलाओं को बाहर व्यवसाय करने की इजाजत नहीं देते तो वे घरों में छोटे–छोटे कार्य करके घर का गुजारा कर लेते हैं। वे छोटे–छोटे कागज के टुकड़ों को फाड़कर पानी में भिगोकर रात को रख देती हैं। फिर उसे मुल्तानी मिट्टी को पीसकर कागज के टुकड़ों को मिलाकर गुंथ कर तैयार करती हैं, जिससे वे बहुत सारे डिजाइन के बोईये, टोकरे, टोकरियाँ बनाते हैं। खिलौने एवं मूर्तियां भी बनाती हैं। ये विवाह एवं अन्य अवसरों पर प्रयोग में लाया जाती है। वे उन्हें बनाकर व्यवसाय करती है जिससे वह घर पर ही व्यवसाय शुरू कर लेती है। पैसा कमाने का एक अच्छा साधन है। फटे–पुराने कपड़ों से गलीचे तैयार किए जाते हैं। कुछ ऐसी चीज तैयार की जाती हैं जिसे मेलों में भी बेचा जाता है।

मेलों में आए हुए लोग कई वस्तुओं की ओर स्वयं आकर्षित होने लगते हैं। मेलों में लोगों की भीड़ जमा होती है जिस तरह हरियाणा में कुरुक्षेत्र में सबसे बड़ी गीता जयंती का मेला बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। गीता ही एकमात्रिक ऐसा मिला है जिसकी हर साल जयंती मनाई जाती हैं। गीता जयंती जयंती का मेला कैलेंडर के हिसाब से मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाई जाती है। दूर–दूर से लोग इन मेलों को देखने आते हैं और आनंद लेते हैं। मेले में बहुत सी दुकान लगी होती हैं। जिसे लोग आकर्षित होते हैं और सामान खरीदते हैं। मेले का आनंद उठाते हैं।

इसके पश्चात मेले में घूमने का शौक हर किसी को होता है और जब सस्ते में अच्छा सामान खरीदने का मौका मिलता है तो महिलाएं और पुरुष दोनों ही मेले से खरीदारी करना पसंद करते हैं।

मेले में घूमने के लिए दूर–दराज से लोगों का हुजूम उमड़ रहा है। मेले में ट्रेडिशनल, संस्कृतिक, हस्तशिल्प, विविध पकवान के साथ–साथ प्रदेश के कई शहरों के व्यापारी भी अपने यहां के खास उत्पादन का प्रदर्शित करते हैं। इन मेलों में बच्चे एवं बड़े खूब आनंद लेते हैं। साथ ही साथ खरीदारी भी करते हैं। सभी लोगों का मन मुनाफे कमाने पर टिका होता है। यह बात काफी हद तक सच है कि कोई भी कार्य की शुरुआत करने से पहले व्यापारी को छोटा कार्य करना चाहिए। जब उन्हें लाभ की प्राप्ति होने लगे तब उन्हें छोटी शुरुआत से इन कामों को बड़ा बना लेना चाहिए। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें कम समय ही व्यापार करते हुए हो तो नुकसान होने के कारण वह तुरंत ही अपना कार्य बंद करते हैं।

कोई भी व्यवसाय शुरू करने से पहले व्यक्ति को धन लगाना पड़ता है। ऐसा कहा जाता है जो लाभ कमाने के लक्ष्य के साथ पैसे के बदले में समुदाय को सामान और सेवाएं प्रदान करता है। व्यवसाय बचने के लिए वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करके लाभ कमाने और समाज की किसी विशेष आवश्यकता को पूरा करने पर केंद्रित होता है। व्यवसाय में सभी व्यक्ति समान लक्ष्यों की ओर मिलकर काम करते हैं। ऐसा मान लिया जाता है की मार्केट रिसर्च के बाद आपके व्यापार का प्लान बनाना होगा। आपको सबसे पहले अपनी पॉकेट की ओर देखना होगा। आप अपने पास उपलब्ध पूंजी से ही व्यापार करना चाहते हैं या व्यापार करने के लिए आपको पैसे की जरूरत होगी। आपका व्यापार लंबे समय तक चल सके और उससे अच्छा खासा मुनाफा कमाया जा सके।

हर कोई व्यापारी अपनी राशि के अनुसार ही व्यवसाय शुरू करता है। वह व्यवसाय छोटा हो या बड़ा। ऐसा भी कहा जाता है कि कई व्यक्ति जोश–जोश में व्यापार तो शुरू कर देते हैं लेकिन उनमें से 60 प्रतिशत व्यापारी होते हैं जो एक ही साल में दम तोड़ देते हैं। इसके अलावा 30 प्रतिशत ऐसे व्यापारी भी होते हैं जो थोड़ी बहुत सावधानियां से अपना बिजनेस चलते हैं। लेकिन कई व्यापारी अपने नियमों पर कार्य कायम न रहने के कारण वह 3 साल में ही दम तोड़ देते हैं। 10 प्रतिशत कुछ ऐसे व्यापारी भी पाए जाते हैं जो सभी तरह की चेतावनियों को ध्यान में रखते हुए व्यवसाय को लंबे समय तक बनाए रखने में कामयाब होते हैं।

कुछ व्यापारी मुनाफा नहीं होने पर ही तुरंत व्यवसाय को बंद कर देते थे, लेकिन कुछ पक्के व्यापारी भी होते हैं जो लंबे समय तक अपना व्यापार चलाएं रखते हैं। यही कहा जाता है कि सभी व्यापारी को सारी सावधानियां बरतें, जो की एक व्यापार को चलाने के लिए जरूरी होती हैं। यह जानकारी देने का प्रमुख उद्देश्य आपको उन 10 प्रतिशत लोगों में शामिल करना है। तभी व्यापारी अपने कार्य में कामयाबी की बुलंदियों तक पहुंचेंगे और अपने व्यवसाय को बढ़ाने में सफलता हासिल करेंगे।

कुछ व्यवसाय ऐसे भी होते हैं जिनमें छोटे–छोटे व्यापार व्यक्ति अकेले कंधे पर सब कुछ करना चाहता है। ऐसा व्यवसाय भी जो की पार्टनरशिप में भी होते हैं। इनके प्रकार के अलावा ऑनलाइन प्रचार पर जोर दिया जा रहा है। कई कंपनियां अपनी वेबसाइट बनवाकर भी अपने माल का उत्पादन कर रहे हैं। आज के समय में सभी के पास मोबाइल फोन उपलब्ध है। अधिक से अधिक लोग मोबाइलों पर ही ऑर्डर करने लगते हैं। घर बैठे ही सामान की प्राप्ति हो जाती है। यह व्यवसाय चलाने का एक अच्छा ढंग है। आप अपने ग्राहकों को आसानी से इस माध्यम से ब्राउज कर सकते हैं। आपको अपने व्यवसाय के लिए महत्वपूर्ण काम यह है की सबसे पहले अपने फार्म का नाम पसंद करना है। यह नाम ऐसा हो जो बहुत छोटे एवं सरल शब्दों में हो जो लोगों की जुबान पर आसानी से चढ़ जाए। यदि कंपनी कोई प्रोडक्ट तैयार करती है, उसका नाम यह सोच कर रखना चाहिए ताकि आगे चलकर इसे ब्रांड बनाना है, ताकि उनकी पहचान बने। लोग उन्हें नाम से पुकारे।

पंचम अध्याय

- ग्रामीण लोक कला का महत्व
- हरियाणा के उत्तरी गांव की लोक कला

ग्रामीण लोक कला का महत्व

किसी भी क्षेत्र की संस्कृति को अच्छी तरह समझने के लिए उस क्षेत्र की लोक कला को जानना जरूरी है। लोक जीवन की सच्ची झांकी उस क्षेत्र की लोक कलाओं में देखने को मिलती है। प्रत्येक जगह के लोगों का रहन–सहन, धर्म, संस्कार एक दूसरे से भिन्न होते हैं। यह भिन्नता उनके दैनिक जीवन के क्रियाकलापों में व्यक्त होती है। यह लोक कला का ऐसा पक्ष है, जिससे क्षेत्रीयता की पहचान बनती है। कोहबर, रंगौली, सांझी आदि ऐसी लोक परंपराएं हैं, जिसमें एक निश्चित क्षेत्र की लोक कला का बोध होता है।

लेकिन लोक कला में ऐसी परंपराएं हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाती हैं जैसे – थापें या चॉक को पूजने की परंपरा भिन्न–भिन्न जातियों या जनपदों के थापों और चौकी की तुलना से हम थापों के ही संबंध को नहीं बल्कि उन लोगों के संबंध को भी जान सकते हैं, जिनके यहां ऐसी परंपरा प्रचलित है।

लोक कला कुछ हद तक पदार्थों की क्षेत्रीय उपलब्धता पर निर्भर करती है। हरियाणा में दीवारों पर सांझी माता लगाई जाती है। गेरू व चावल पीसकर उस पर चित्रकारी की जाती है। गोबर से दीवार पर चिपकाए जाता है और चेहरे पर घूंघट औढ़ा दिया जाता है। शाम के समय पूजा की जाती है।

लोक कला को जीवित रखने और व्रतों, त्योहार और उत्सवों पर आंगनों, दिवाली अन्य कई त्योहारों एवं भारतीय साहित्यकारों की विशेषता कलापण्डितों ने आज से कई सौ वर्ष पूर्व अपने ग्रंथों में इस सश्य का एकाधिक बार उल्लेख किया है कि घर में सुख, शांति और समृद्धि आदि की प्रतिष्ठा के लिए घरों के बाहर – भीतर चित्रों से सुसज्जित होना चाहिए।

हमारी नारियों द्वारा घरों के बाहर – भीतर देवी, देवताओं की आख्यानो, नीति–कथाओं, जातकों और पुराणकथाओं से संबंध चित्रों को अंकित किए जाने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। आज भी प्रत्येक त्योहार पर उसके अधिष्टा देवता और उस देवता के अन्य देवताओं में बहुधा लक्ष्मी और गणेश की प्रमुखता होती है। कुछ सामाजिक विषयों से भी संबंध होते हैं। धार्मिक विषयों की अधिकता ज्यादा होती है।

पशु–पक्षियों की छवियाँ अंकित करना मनुष्य की आदिम प्रवृत्ति रही है। प्रागैतिहासिक युग से लेकर मध्य युग तक की जितनी भी चित्र शैलियां हैं, उन सब में पशु–पक्षियों को व्यापक रूप से

मनोरंजन चित्रण देखने को मिलता है। मध्ययुगीन चित्रों में इस प्रकार का पशु–पक्षी चित्रण, प्रणय, विरह और मिलन आदि के विविध प्रतिकों के रूप में प्रयुक्त किया गया है। लोक कला की यह पुरातन धाली भारत के विभिन्न जनपदों एवं जातियों में विभिन्न रूपों में सुरक्षित एवं सम्मानित होकर आज भी हमारे लोक जीवन का अंग बनी हुई है।

चित्र – विचित्र, फूल – पत्तियों, बेल–बूटों की भावात्मक आकृतियां अंकित करके उनके द्वारा सुख – समृद्वि का आवाहन किया जाता है। यह प्रथा वहां के लोक जीवन में प्राचीन काल से चली आ रही है, जिसके प्रमाण हमें वहां के पुरातन राज प्रधान, घरों और मंदिरों के मूर्ति शिल्प में दिखाई देते हैं। कुछ त्यौहार यहां मौसम के द्वारा बनाए जाते हैं। हरियाणा में सांझी का त्यौहार बड़े उल्लास के साथ कई दिनों तक मनाया जाता है। इस उत्सव पर गोबर की एक बड़ी प्रतिमा बनाई जाती है। जिसको सुंदर आभूषणों एवं वस्त्रों से सुसज्जित करने के उपरांत उस पर सुनहरी रूपहली पत्तियां, चांद, सूरज, सितारे चिपकाए जाते हैं। इस सज्जा के कारण गोबर की यह निर्जीव प्रतिमा मानो सजीव हो उठती है।

प्रत्येक क्षेत्र की सामान्य क्रियाकलाओं में जो लोक कला बनाई जाती है, उसकी जानकारी उस क्षेत्र में रहकर ही प्राप्त हो सकती है। कारण लोक कलाओं के अनेक रूपों को बनाने का एक निश्चित समय होता है। वह इस समय बनाई जाती है। शहरों की अपेक्षा गांव में सांझी बड़ी बनाई जाती है तथा निश्चित समय बाद उन्हें नष्ट कर दिया जाता है। जैसे – सांझी, गोवर्धन पूजा, दशहरा पूजा, अहोई अष्टमी प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशेषता होती है, जो वहां के लोग की व्याख्या करने पर सामने आती है।

इस लोक की व्याख्या से उस समाज के रहन–सहन, सभ्यता तथा संस्कृति की व्याख्या होती है, जिसमें वह जीता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी क्षेत्र के जनजीवन का अध्ययन वहां के लोक कला के अध्ययन के बिना अधूरा है। लोक कला किसी भी क्षेत्र के धर्म के लिए पूजा–पाठ विशेष महत्व रखती है। ये सब लोक कलाएं आदिवासी परिवारों से जुड़ी हुई होती हैं। लोक कलाओं के संरक्षण का सांस्कृतिक और सामाजिक स्तरों पर व्यापक महत्व है।

गांव–समाज के ताने–बाने के बने रहने में लोकगीतों में नृत्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक संचार के इस युग में भी देर रात तक चलते रहने वाले लोकगीत, संगीत या नाटक के कार्यक्रम में विभिन्न समुदायों के लोग एकत्रित होते हैं। इन लोक कलाओं का संरक्षण दो कारणों से काफी अहम मुद्दा है, एक तो यह हमारी सांस्कृतिक पहचान भी है और हमारे ग्रामीण जनजीवन के यथार्थ से बहुत गहरे तक जुड़ा है। दूसरा इससे कई निर्धन, दलित व आदिवासी परिवारों की

आजीविका जुड़ी है। इन कलाओं के कारण उन्हें सामाजिक सम्मान भी मिलता है और महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका भी निभाते हैं, जिन्हें हम पूरी तरह से निरक्षर मानते हैं। ऐसे कलाकार रात भर गीत, कथा सुनाते हुए पूरी निपुणता के साथ नृत्य करते हैं। लोक कला के संरक्षण का अर्थ देश की परंपरागत सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखना है। साथ ही कलाकारों की आजीविका और सामाजिक सम्मान की बरकरार रखना भी है।

हरियाणा के उत्तरी गांव की लोक कला

हमारे देश में लोक कला प्राचीन समय से प्रचलित रही है। आज भी गांव में लोक कला से ओत–प्रोत संस्कृति व लोगों की वेशभूषा में देखी जा सकती है। हमारा विश्वास है कि जो व्यक्ति जिस क्षेत्र का होता है, उसे इस क्षेत्र के बारे में विशेष जानकारी होती है। वह व्यक्ति उसी देश में चल रहे वस्त्र, खान–पान, रहन–सहन सभी वह जिस देश में रहते हैं, उसी हिसाब से चलते हैं। गांव में लोक कला का अधिक महत्व होता है। इन गांवों के लोगों को यह कला एक विरासत के रूप में मिली हुई है।

लोक कला पहले बड़े बुजुर्गों के द्वारा बनाई गई थी, लेकिन पूर्वजों ने लोक कला अपने वंशजों के हाथ में सौंप दी है। अभी इस लोक कला का प्रचलन इन गांव में देखने को मिलता है। लेकिन शहरों की अपेक्षा गांव में लोक कला अधिक होती है। इन गांव की लोक कला में सांझी, अहोई अष्टमी, पेपर मेशी अथवा अन्य लोक कलाएं भी आती हैं। कई जगहों पर हाथ से बनी वस्तुओं को बाजारों में बेचा जा रहा है, परंतु इन गांवों में आज भी इस कला को बेचा नहीं जाता, बल्कि इसे एक संस्कृति के रूप में माना जाता है। मां अपनी बेटियों के विवाह उत्सव पर हाथ में निर्मित वस्तुओं को भेंट स्वरूप देती हैं तथा इस कला के गुरु भी सीखती हैं। इसलिए यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ती जा रही है। इस कला की सृजना अनोखे ढंग से की जाती है, जो देखने में सुंदर तथा मोहिनी लगती है।

यह कला जो कि मनुष्य की सौंदर्य अनुभूति का मानदंड एवं प्रतिबिंब रही है, अपने अतीत की अपेक्षा अपने वर्तमान में सदा ही नई दिखाई देती रही है। सांझी को तैयार करने के लिए गांव के लोग कुछ दिन पहले ही तैयारी शुरू कर देते हैं। दीवारों को गोबर से लिप दिया जाता है। सूर्य एवं चांद, तारे, टिकडे बनाकर चिपकाए जाते हैं। वे जोरों–शोरों से ही तैयारी में लगे होते हैं। शाम के समय सांझी माता की पूजा में लग जाते हैं। गांव के लोग इस त्यौहार को सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। कुंवारी कन्याएं सांझी का व्रत भी रखती हैं। गांव के लोग बहुत सी मिट्टी से बनी वस्तु भी बनाते हैं जैसे– चूल्हे, खिलौने, मूर्तियां बनाई जाती हैं।

इनको बनाने के लिए पहले मिट्टी में पानी डालकर गूंथा जाता है। इन सब की अलग–अलग विधि होती है। चूल्हे बनाने के लिए गूंथी हुई मिट्टी में घास– भूंस डाला जाता है। गूंथी हुई मिट्टी को आकार देने शुरू कर देते हैं। एक दिन के लिए सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है। सूखने के बाद उसमें डिजाइन डाले जाते हैं। इस तरह मिट्टी द्वारा चूल्हा निर्मित किया जाता है।

खिलौने तैयार करने के लिए सबसे पहले गूंथी हुई मिट्टी में रूई मिलाई जाती है ताकि मिट्टी में दरारें न आएं। मिट्टी द्वारा कई तरह के खिलौने बनाए जाते हैं जैसे – हाथी, घोड़े, चिड़ियाँ, बस, बत्तख इत्यादि मूर्तियां तैयार करने के लिए मिट्टी द्वारा कई तरह की मूर्तियां निर्मित की जाती हैं। गूंथी हुई मिट्टी को जिस वस्तु की मूर्ति बनानी है, वैसा ही आकर दे दिया जाता है। मूर्ति देखने के बाद उस पर अलग–अलग तरह के रंगों का प्रयोग किया जाता है, जिससे मूर्ति देखने में सुंदर लगती है।

गांव में लोग अधिकतर बैल, घोड़े, मनुष्य, भगवान इत्यादि मूर्तियां बनाते हैं। भगवान की बनाई हुई मूर्ति को लोग घरों में रखते हैं और उनकी पूजा भी की जाती है। इस प्रकार ऐसा मानना है कि दीपावली के त्योहार पर दीपावली मिट्टी की बनाई जाती है। रंग–रोगन से वह आकर्षक लगती है, जिसे दीपावली पर घरों में पूजा के लिए रखा जाता है।

गांव के लोग काम करने में अधिक चतुर माने जाते हैं। वह घरेलू कार्यों पर विश्वास रखते हैं। यह लोक कला किसी भी क्षेत्रीय स्थान की जातियों व जनजातीय में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। पारंपरिक कलाओं को लोक कला कहते हैं। आने वाली पीढ़ी भी लोक कला को पालन कर रही है और लोक कला को आगे बढ़ा रही है। गांव के लोग अपनी लोक कला को समाप्त नहीं होने दे रहे। उसे पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ाने में लगे हुए हैं। शहरों की अपेक्षा गांव में लोक कला को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

उपसंहार

लोक कला मानव जाति की कला है। मानव जीवन से इसका गहरा संबंध है। प्रत्येक क्षेत्र की लोक कला अपने–अपने ढंग की होती है। लोक कला केवल कलाकार कि कला नहीं होती उसमें लोगों का प्रत्यक्ष या उसके सरल बीवगय स्वीकृत रूप से हुए भावनिक वादालय से सहयोग होता है। यह सामाजिक परंपरा का भी एक अंग है। लोक कला की कहानी मानव जीवन की चित्र कहानी है जो जन्म से मृत्यु तक, सुबह से शाम तक किए जाने वाले मनुष्य के हर कार्य में देखी जा सकती है।

यह यह हमारे प्रतिदिन के जीवन में समाहित है जिसे हम अपने घरों में, त्योहारों में व उत्सव पर विवाह, शादी के समारोह पर लोग अपने हाथों से बने हुए बोइये, मिट्टी के बर्तन को हाथों से बनाते हैं। इन्हें विवाह के समय पर इस्तेमाल करते हैं। तभी देश के लोगों के त्यौहार, रहन–सहन अलग–अलग ढंग के होते हैं।

कहने का भाव यह है लोक कला की प्रणाली मानव संस्कृति के प्रारंभ से चली आ रही है। गांव के हरियाणवी लोग इन सभी त्योहारों में विश्वास रखते हैं। शहरों की अपेक्षा गांव में सांझी बड़ी बनाई जाती है। इसमें घर की महिलाएं एवं बेटियां मिलकर इस कार्य को संपन्न करती हैं।

इस शोध का उद्देश्य गांव में बनी लोक कला पर प्रकाश डालना है। मशीनीकरण का युग होने के कारण लोक कला धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है परंतु कोई कई अभी भी गांव में लोग कला का अस्तित्व अभी भी मौजूद है।

इस शोध का उद्देश्य यह है कि लोक कला का स्थान मशीनीकरण न ले सके और हमारी लोक कला की आभा का प्रकाश इसी तरह प्रचलित रहे। हमें अपनी संस्कृति और लोक कला से जुड़े रहना चाहिए। मशीनीकरण को न चला कर हाथों के द्वारा काम किया जाना चाहिए क्योंकि बिना कला के कोई राष्ट्र व समाज उन्नति नहीं कर सकता।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. रीता प्रताप, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, संस्करण – 2019, पृ. सं. – 3 , 5
2. डॉ. आरती श्योकंद, हरियाणा संस्कृति में लोकगीत संस्करण 2012, पृ. सं. – 15, 17
3. वन्दना शर्मा, भारतीय लोक कला एवं हस्तशिल्प वैभव, अकादमिक प्रतिभा, संस्करण – 2008, पृ. सं. –5, 6, 7
4. डॉ. लालचंद गुप्त 'मंगल' हरियाणा का लोक साहित्य, सुमित पब्लिकेशन, संस्कण – 1998, पृ. सं. – 31, 32
5. डॉ. लालचंद गुप्त 'मंगल' हरियाणा का लोक साहित्य, सुमित पब्लिकेशन, संस्कण – 1998, पृ. सं. – 33, 34
6. डॉ. पूर्णचन्द शर्मा, हरियाणा की लोकधर्मी, हरियाणा साहित्य अकादमी संस्कण – 1983, पृ.सं. – 60

Youtube :-

1. **https://youtu.be/SSE2Tzokkwl?=7nvw3twFocq**
2. **https://youtu.be/jlruckin5tc?si=suyASW-5he3BMEb/**
3. **https://youtu.be/jlruckin5tc?si=Nanxuofrowfu-060**
4. **https://youtu.be/Ldwndmhzmhho?si=ttEx6kiciBnwykds**

Website :-

1. https://en.wikipedia.org>Haryana
2. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/Eo%A4%B2%A5%8B%E0%A4%95%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%9F%E0%A5%8D%14%AF
3. https://www.livehindustan.com/news/article/article-story-280511.html
4. https://www.whindiustean.com/news/articles/articles/-story-280511.html

Youtube:

1. https://youtube/uHRftF46w6Qsi=u-ekkym=Qjidckkf

चित्र संग्रह सूची

क्रमांक न0	–	चित्र
01	–	सांझी के लिए मिट्टी तैयार करती हुई महिलाएँ
02	–	सांझी बनाते हुए महिलाओं का समूह
03	–	सांझी के टुकड़ों पर रंग लगाती हुई महिलाएँ
04	–	दीवार पर गोबर के साथ सांझी का रूप देती महिला
05	–	दीवार पर सांझी लगाती महिला
06	–	सांझी का पूजन करती महिला
07	–	सांझी पर किया गया श्रृंगार
08	–	सांझी के गीत गाते हुए
09	–	लोकगीत व नृत्य करती महिला
10	–	गीत गाती एवं घुमर नृत्य करती महिला
11	–	शादी विवाह पर गीत गाते हुए
12	–	हरियाणवी गीत – संगीत का समारोह
13	–	गीत गाती महिला
14	–	अभिनय में लोक देवता प्रणवीर तेजाजी पर आधारित गाथा चित्र
15	–	नाट्यलोक संस्था के नाटक रानी अंवती बाई का चयन
16	–	पुराणिक ग्रंथों पर आधारित नाट्य
17	–	पुराणिक ग्रंथों पर आधारित नाट्य
18	–	हाथों द्वारा बनाई गई अहोई अष्टमी
19	–	पूजन सामग्री
20	–	कथा करती हुई महिला
21	–	तारों को देखकर वर्त को सम्मपन्न करती महिला
22	–	अहोई अष्टी पूजन कलैंडर
23	–	कागज के टुकड़ों को गुंधते हुए
24	–	मुलतानी मिट्टी को पीसकर तैयार करना
25	–	मिट्टी के सांचे में डालते हुए
26	–	बोईए तैयार करती हुई महिला
27	–	पेपर मेशी के दवारा बनाए गए मखौटे
28	–	मुखोंटों पर रंगों का लेप

चित्र – 1 (सांझी के लिए मिट्‌टी तैयार करती हुई महिलाएँ)

चित्र – 2 (सांझी बनाते हुए महिलाओं का समूह)

चित्र – 3 (सांझी के टुकड़ों पर रंग लगाती हुई महिलाएँ)

चित्र – 4 (दीवार पर गोबर के साथ सांझी का रूप देती महिला)

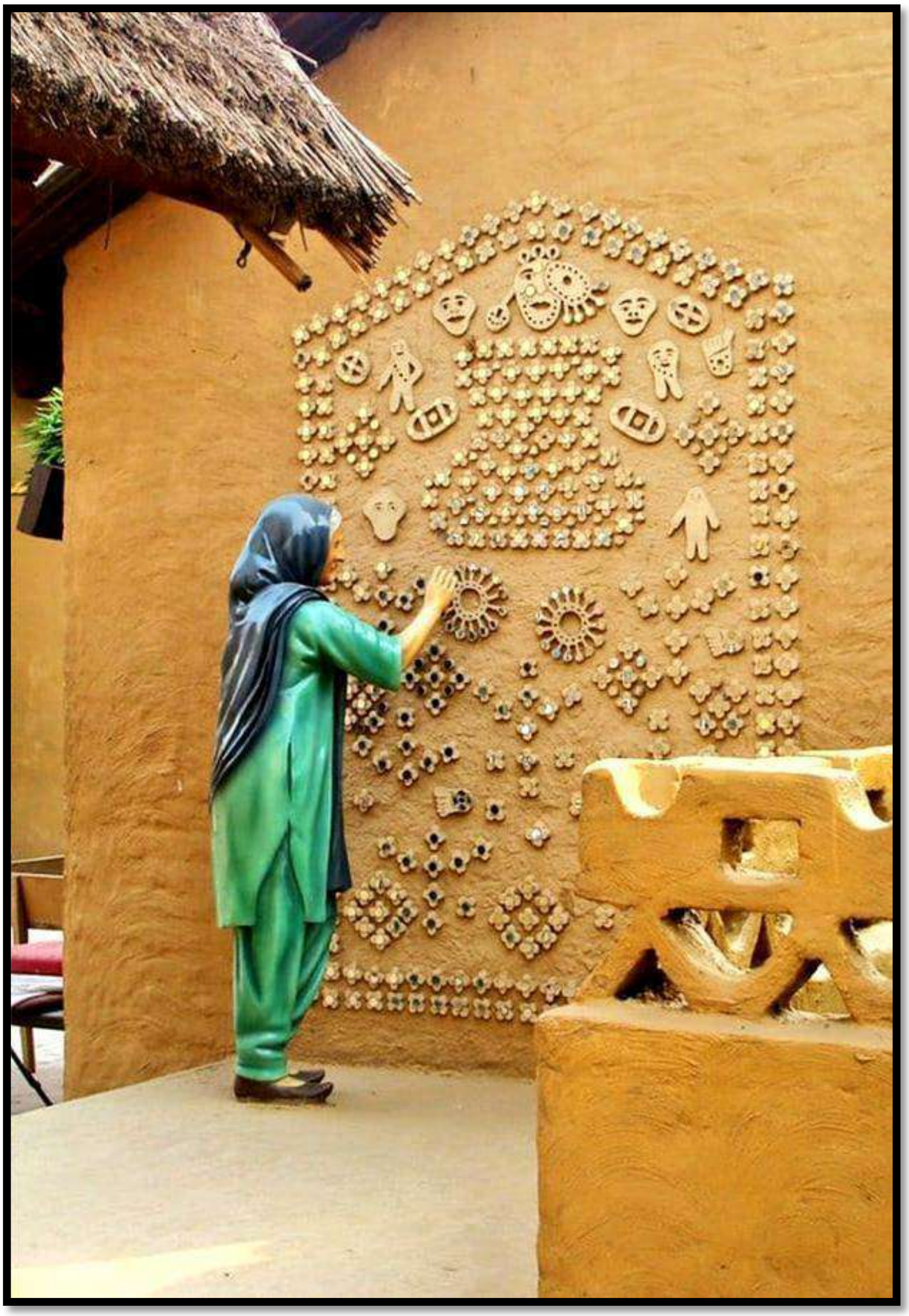

चित्र – 5 (दीवार पर सांझी लगाती महिला)

चित्र – 6 (सांझी का पूजन करती महिला)

चित्र – 7 (सांझी पर किया गया श्रृंगार)

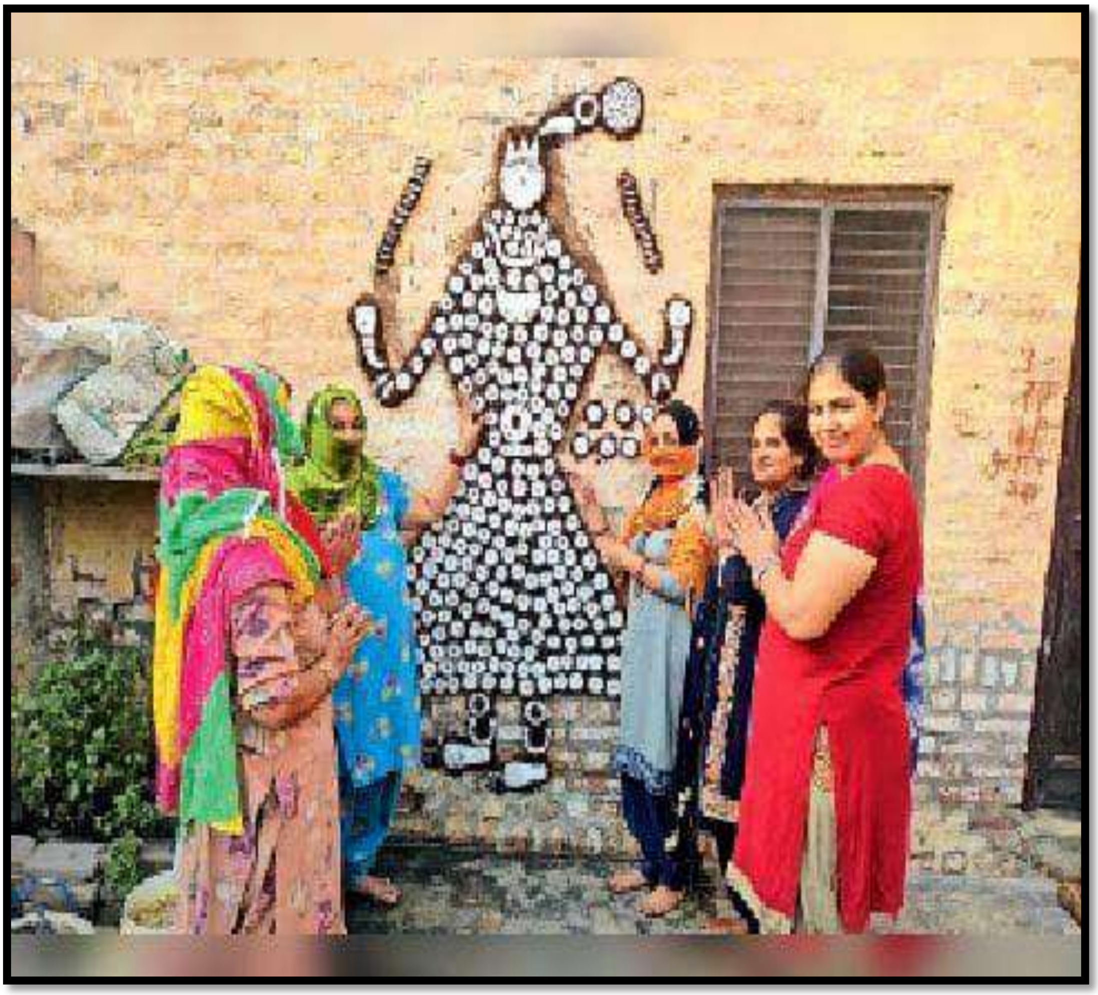

चित्र – 8 (सांझी के गीत गाते हुए)

चित्र – 9 (लोकगीत व नृत्य करती महिला)

चित्र – 10 (गीत गाती एवं घुमर नृत्य करती महिला)

चित्र – 11 (शादी विवाह पर गीत गाते हुए)

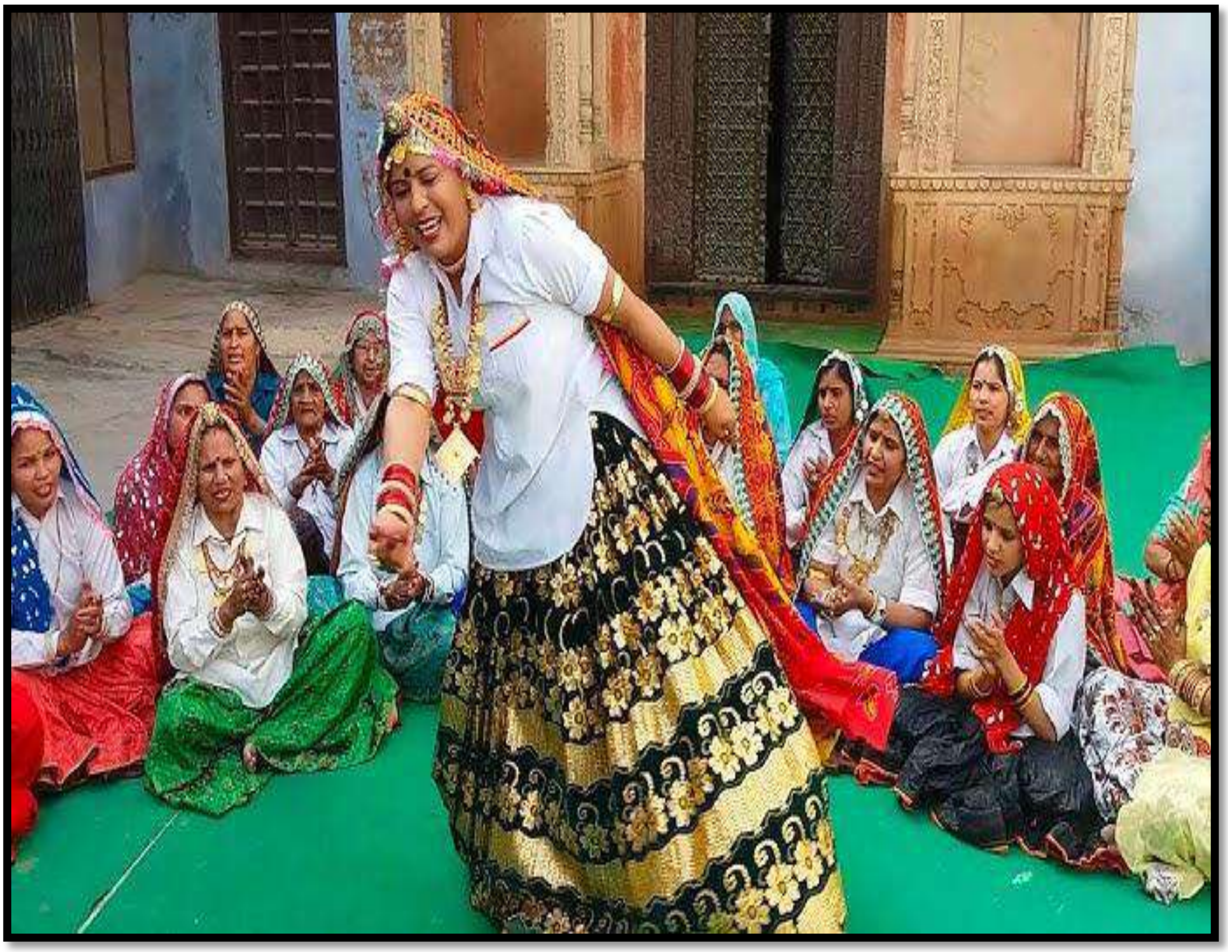

चित्र – 12 (हरियाणवी गीत – संगीत का समारोह)

चित्र – 13 (गीत गाती महिला)

चित्र – 14 (अभिनय में लोक देवता प्रणवीर तेजाजी पर आधारित गाथा चित्र)

चित्र – 15 (नाट्यलोक संस्था के नाटक रानी अंवती बाई का चयन)

चित्र – 16 (पुराणिक ग्रंथों पर आधारित नाट्य)

चित्र – 17 (पुराणिक ग्रंथों पर आधारित नाट्य)

चित्र – 18 (हाथों द्वारा बनाई गई अहोई अष्टमी)

चित्र – 19 (पूजन सामग्री)

चित्र – 20 (कथा करती हुई महिला)

चित्र – 21 (तारों को देखकर वर्त को सम्मपन्न करती महिला)

चित्र – 22 (अहोई अष्टी पूजन कलैंडर)

चित्र – 23 (कागज के टुकड़ों को गुंधते हुए)

चित्र – 24 (मुलतानी मिट्टी को पीसकर तैयार करना)

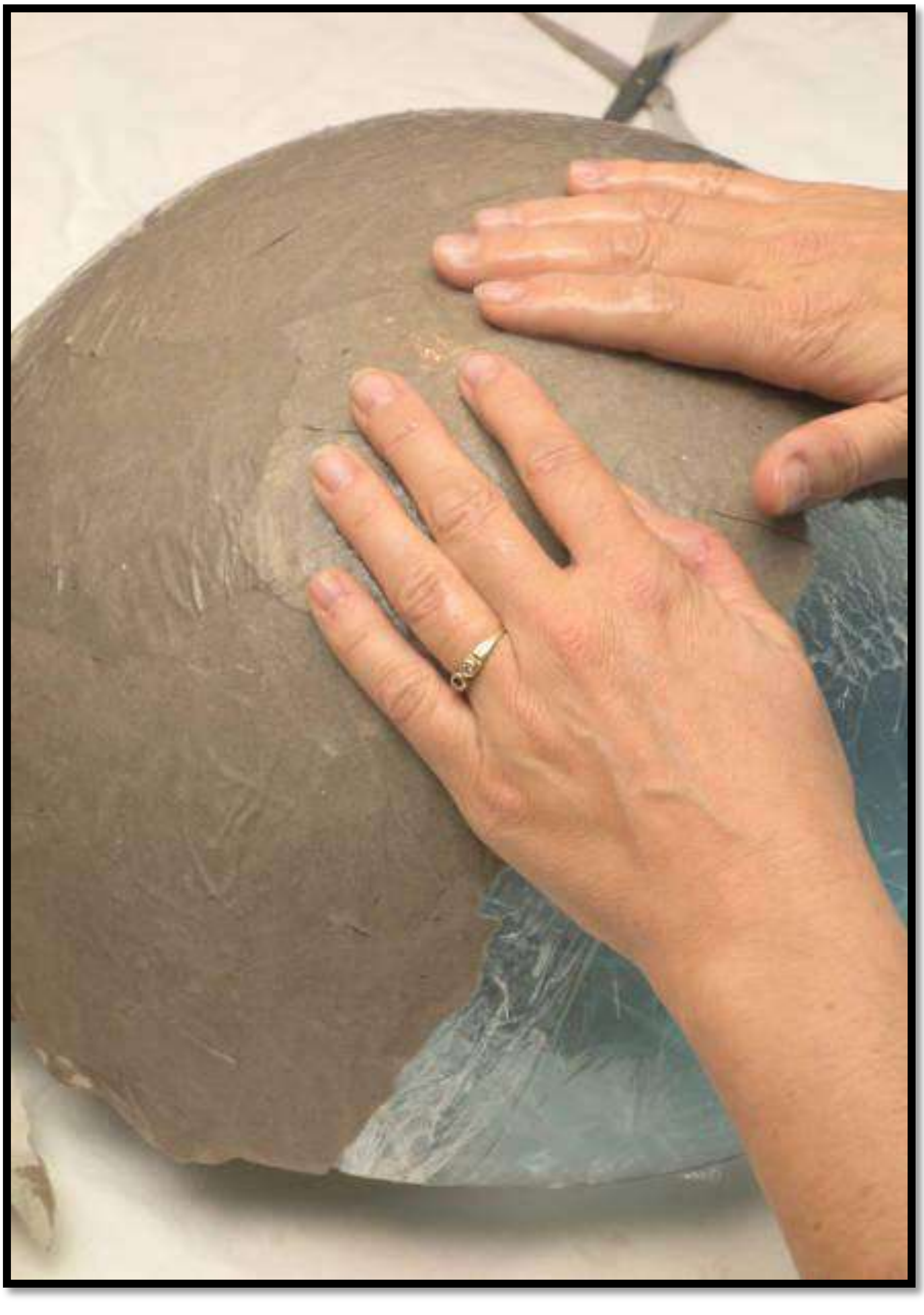

चित्र – 25 (मिट्टी के सांचे में डालते हुए)

चित्र – 26 (बोईए तैयार करती हुई महिला)

चित्र – 27 (पेपर मेशी के दवारा बनाए गए मखौटे)

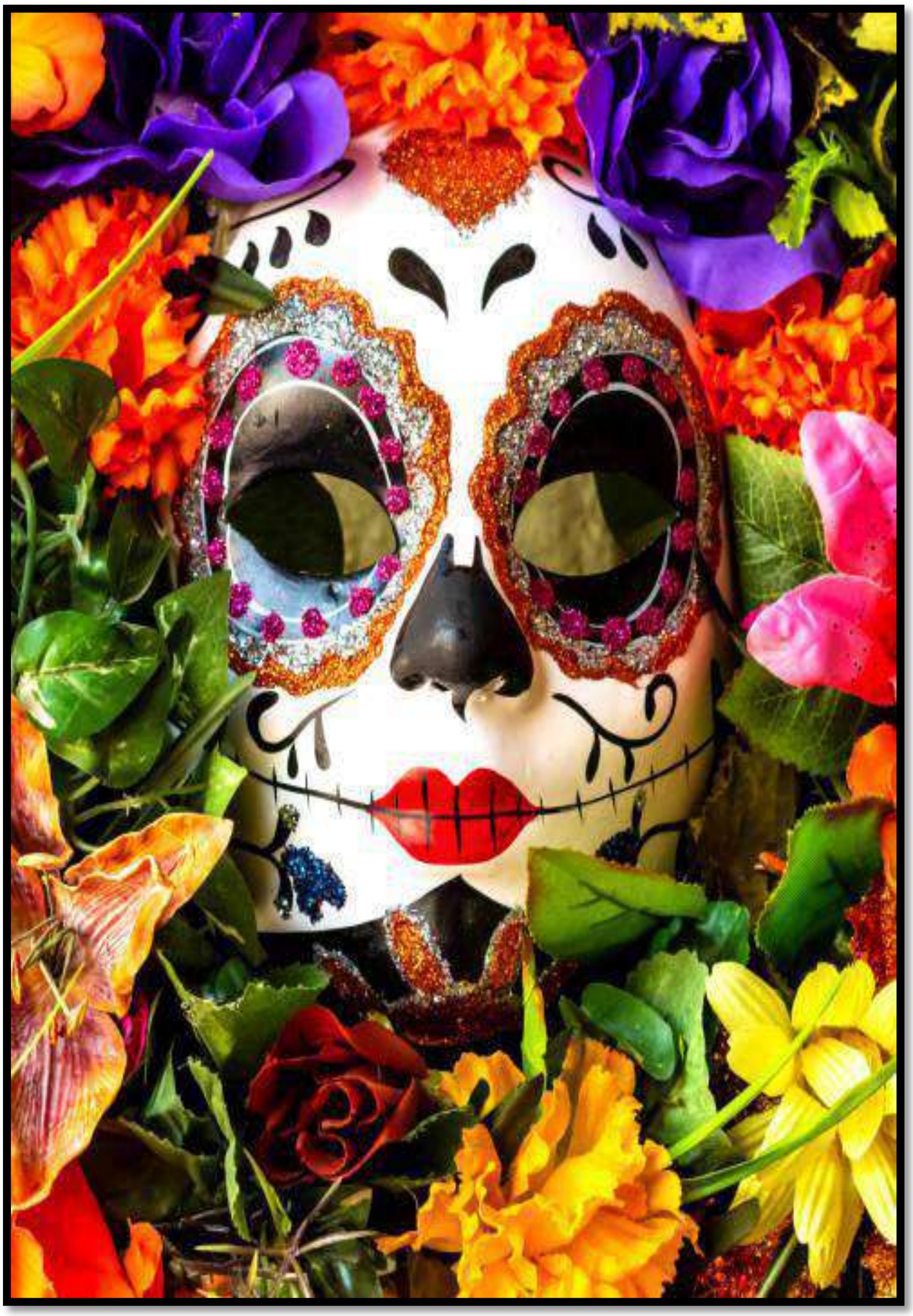

चित्र – 28 (मुखोंटों पर रंगों का लेप)

‘‘हिन्दी सिनेमा के भित्तिचित्रों में रंजीत दहिया’’

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु – शोध प्रबन्ध

विभागाध्यक्षा
श्रीमती संतोष
ललित कला विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय
शाहाबाद (मा0)

निर्देशिक
महेश धीमान

शोधकर्त्री
श्वेता शर्मा
स्नातकोत्तर
(अन्तिम वर्ष)

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद (मारकण्ड़ा)

2023–2024

MTNL
st+art
india
foundati
umbai.org

ललित कला विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय,
शाहाबाद (मा0)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्वेता शर्मा, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **''हिन्दी सिनेमा के भित्तिचित्रों में रंजीत दहिया''** शीषर्क पर मेरे निर्देशन से प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इसने पूरी मेहनत और लग्न से उक्त शोध कार्य सम्पन्न किया है। इस महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य पहले नहीं किया गया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ।

मैं इसके उज्जवल भविष्य एंव सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांक :

एसो. प्रोफेसर
श्रीमती, संतोष

प्रमाण पत्र

मैं श्वेता शर्मा, यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध **''हिन्दी सिनेमा के भितिचित्रों में रंजीत दहिया''** विषय मेरे स्वंय के प्रयास से किया गया है। आर्य कन्या महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य नहीं किया गया है। मैंने इसे पूरी मेहनत और लग्न से सम्पन्न किया है। यह अप्रकाशित कृति है। जो सामग्री प्रयोग की गई है। उनको दिखाने का प्रयास किया गया है।

निर्देशिक — **शोधकर्त्री**

महेश धीमान — **श्वेता शर्मा**

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद (मा0)

कुरूक्षेत्र।

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्वेता शर्मा, अनुक्रमांक न0. 220156001, ललित कला स्नातकोत्तर (ड्राइंग एंड पेंटिग) द्वितीय वर्ष की छात्रा ने **''हिन्दी सिनेमा के भितिचित्रों में रंजीत दहिया''** शीषर्क पर लघु शोध प्रबन्ध को पूरा किया है। इस प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूँ। इसने पूरी मेहनत और लग्न से यह लघु–शोध कार्य सम्पन्न किया है।

मैं इसके उज्जवल भष्यि एंव सफल जीवन की कामना करती हूँ।

दिनांकः

प्राचार्या

डॉ श्रीमती आरती त्रेहन

प्राक्कथन

रंजीत दहिया एक ऐसे व्यक्ति है जिनका जीवन पूर्णता कला के लिए समर्पित हैं। वे जीवन के अस्तित्व के वर्णन तथा जीवन के स्नेह पूर्ण व्यवहार को अपने भित्तिचित्रों में दिखाते हैं। जो हम सभी के जीवन को एक खास हिस्से को दर्शाते है।

रंजीत दहिया खुशमिजाज, विनम्र और मिलनसार कलाकार हैं। इन्होनें अभिनेताओं के भित्तिचित्र बनाए है। रंजीत दहिया अब बनाए गए भित्तिचित्रों को साड़ी, कैलेंडर, कोस्टर पर भी प्रिंट करते है।

मैंने रंजीत दहिया के भित्तिचित्र इंस्टाग्राम पर देखे थे। जिनसे में बहुत प्रभावति हुई। फिर मुझे लघु शोध लिखने का मौका मिला। और मैंने रंजीत दहिया पर लिखने का सोचा और मैंने लघु शोध लिखने के लिए रंजीत दहिया से अनुमति ली और 1 अप्रैल 2024 को रंजीत दहिया से मेरा साक्षात्कार हुआ और जिसमें रंजीत दहिया से उनके जीवन, कला यात्रा और भित्तिचित्रों को लेकर मेरी बातचीत हुई और मुझे रंजीत दहिया के कामों को समझने का मौका मिला।

- प्रथम अध्याय में 'कला और भित्तिचित्रों का इतिहास' का संक्षिप्त रूप से वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

- द्वितीय अध्याय में 'रंजीत दहिया के जीवन, शिक्षा व कला यात्रा' पर प्रकाश डाला है।

- तृतीय अध्याय में 'बॉलीबुड आर्ट प्रोजेक्ट के संस्थापक रंजीत दहिया, व 'इंडियाज बेस्ट डांसर सीजन – 3 में रंजीत दहिया का अनुभव' और 'देश और विदेश में रंजीत दहिया द्वारा भित्तिचित्रों का अनुभव का वर्णन किया गया है।

- चतुर्थ अध्याय में 'रंजीत दहिया के भित्तिचित्रों का कला में योगदान' के बारे में लिखा है।

- पंचम अध्याय में 'रंजीत दहिया से साक्षात्कार' लिखा है।

- षष्टम अध्याय में 'समाचार पत्र सूची व भित्तिचित्रों का अध्ययन' किया गया है।

अंत में उपसंहार, संदर्भ सूची, और चित्र संग्रह सूची को प्रस्तुत किया गया है। इसमें लघु शोध प्रबंध के माध्यम से स्थापित की गई मौलिक मान्यताओं को प्रतिपादित किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र को सावधानीपूर्वक प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है, तो भी कुछ अशुद्धियां रह जाना स्वभाविक है। आशा है कि विद्वान समीक्षक उन्हें अलक्ष्य करने की कृपा करें।

इस शोध पत्र में जो त्रुटियाँ रह गई हैं, उनके लिए मैं ही दोषी हूँ । अतः इसके लिए मैं विद्वानजनों से क्षमा प्रार्थी भी हूं।

श्वेता शर्मा

शोधकर्त्री

आभार

मेरे इस लघु शोध कार्य को करने में जिन महानुभावों का सहयोग रहा है, उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरे इस शोध कार्य का उल्लेख संपूर्ण नहीं होगा। मैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझती हूँ, जिनकी प्रेरणा, सहयोग और प्रोत्साहन से में इस कार्य को साकार रूप दे पाई।

सर्वप्रथम में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंतर्गत स्थित आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा, के ललित कला विभाग की अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती संतोष के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने पूरे शोध कार्य के दौरान मेरा मार्गदर्शन किया। मैं डॉ. राम विरंजन विभागाध्यक्ष, ललित कला विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र की धन्यवादी हूँ कि उन्होनें इस विषय को सफलतापूर्वक चलाने में आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहबाद मारकंडा की सहायता की।

मैं आदरणीय कलाकार रंजीत दहिया जी का भी ह्रदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने अपना मूल्यवान समय निकालकर अपने विचार सांझा किए तथा शोध की निष्कर्ष राह दिखाई। इसके साथ–साथ में अपने परिवार जनों का भी ह्रदय की गहराइयों से आभार प्रकट करती हूँ क्योंकि उनके सहयोग के कारण ही मैं इस शोध कार्य को संपूर्ण करने में सक्षम हो पाई हूँ।

मैं अपने गुरू आदरणीय श्री महेश धीमान सर व आदरणीय सहायक श्रीमती अंजली धीमान मैडम के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने इस कार्य के दौरान मेरी शंकाओं और समस्याओं का निदान किया तथा निरंतर प्रोत्साहित करते रहे।

मैं पूर्व प्राचार्य महोदया आदरणीय डॉ. श्रीमति आरती त्रेहन का आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने ललित कला विषय में स्नात्तकोतर कक्षाएं प्रांरभ कर हमारे चिरलंबित स्वप्न को साकार करने का मौका प्रदान किया।

मैं सहायक प्रोफेसर सीमा जैन (महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय जगाधरी) व प्रिंस शर्मा (मूर्तिकार) की भी हार्दिक आभारी हूँ, जिन्होनें प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता की। मैं अपनी सहयोगी बहन अनुपमा शर्मा, आंचल शर्मा, मोनिका शर्मा का भी धन्यावाद करती हूँ।

मैं सभी गुरुजनों के प्रति श्रद्धा भाव प्रस्तुत करती हूँ। इन्हीं की प्रेरणा व निर्देशन से यह शोध कार्य संपन्न हो सका। यदि इस लघु शोध प्रबंध में पाठक वर्ग का कुछ भी लाभ पहुंचा, तो मैं इसे अपना सफल प्रयास मानूंगी।

श्वेता शर्मा

शोधकर्त्री

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन	पृष्ठ संख्या
आभार	
प्रथम अध्यायः	**01 – 18**
– कला	
– भित्तिचित्र कला का इतिहास	
द्वितीय अध्याय :	**19 – 31**
– जीवन परिचय	
– शिक्षा व कला यात्रा	
– प्रदर्शनियाँ	
तृतीय अध्यायः	**32 – 41**
– बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट के संस्थापक रंजीत दहिया	
– इंडियाज बेस्ट डांसर सीजन 3 में रंजीत दहिया का अनुभव	
– देश और विदेश में भित्ति चित्र बनाने का अनुभव	
चतुर्थ अध्यायः	**42 – 44**
– भित्ति चित्रकला में रंजीत दहिया का योगदान	
पंचम अध्याय :	**45 – 56**
– रंजीत दहिया के साथ साक्षात्कार	
षष्टम अध्याय :	**57 – 62**
– समाचार पत्र सुची	
– भित्ति चित्रों का अध्ययन	
– उपसंहार	**63 – 64**
– संदर्भ ग्रंथ सूची	**65 – 66**
– चित्र संग्रह सूची	**67 – 67**
– चित्र सूची	**68 – 92**

प्रथम अध्याय

- कला
- भित्तिचित्र कला का इतिहास

परिचय

कला :–

कला संस्कृत भाषा का शब्द है। 'कल' धातु से कल की उत्पत्ति मानी जाती है, जिसका अर्थ प्रसन्न करना है। कुछ विद्वान इसकी उत्पत्ति 'कड़' धातु से मानते हैं। संस्कृत में कला शब्द का प्रयोग अनेक रूपों में किया गया है। इसका व्यावहारिक अर्थ है 'किसी भी कार्य को पूर्ण कुशलता के साथ करना है'। और 'आर्ट' शब्द का प्रयोग 13वीं शताब्दी के प्रथम चरण में हुआ। आर्ट शब्द लैटिन भाषा के आर्स (ARS) शब्द से बना है। इस शब्द का अर्थ क्राफ्ट है जैसे– स्वर्णकारी।

कला (आर्ट) शब्द इतना व्यापक है कि विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएं केवल एक पक्ष को छूकर रह जाती हैं। कला का अर्थ अभी तक निश्चित नहीं हो पाया है। यद्यपि इसकी हजारों परिभाषाएं की गई हैं। भारतीय परंपरा के अनुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते हैं जिनमें कौशल अपेक्षित हो। अगर देखा जाए तो कला इस ब्रह्मांड की उत्पत्ति के साथ शुरू हुई है। हम यह भी कह सकते हैं कि इस ब्रह्मांड में पहला कलाकार खुद भगवान है, जिसने इस ब्रह्मांड को रचा है। जिसमें भगवान ने वृक्षों, पशुओं, सूर्य, चंद्रमा आदि की रचना की है।

आदिमानव, पक्षियों और जानवरों द्वारा उत्पादित प्राकृतिक चलने वाले संगीत, हवाओं, ध्वनि से संतुष्ट था। भगवान ने इंसान को बनाया। किसी भी कार्य को पूरी कुशलता या निपुणता से संपन्न करना। जिससे हमें आनंद की प्राप्ति हो वह कला कहलाती है। जैसे– मूर्ति बनाना, चित्र बनाना, गीत गाना, कविता पढ़ना आदि। गीत गाना कला तभी कहा जा सकता है जब गीत मधुर, लय और ताल के साथ गाया जाए। इसी प्रकार नाटक, चित्र, मूर्ति आदि कला के घेरे में तभी आएगी जब इसमें अर्थ, रस, भाव और रूप की सुंदर निष्पत्ति होगी।

मनुष्य शुरू से ही खुबसुरती और सौंदर्य का पुजारी रहा है। हमें सुंदर वस्तुएं पसंद है और सुंदर वस्तु हमारा ध्यान आकर्षित करती है। प्रत्येक इंसान हमेशा सुंदर वस्तुओं की मन में कामना करता है और इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर मनुष्य ने विभिन्न रचनाएं की जैसे– संगीत का निर्माण, काव्य का निर्माण, सुंदर इमारत का निर्माण इत्यादि। इन सुंदर वस्तुओं के निर्माण की प्रक्रिया और काबिलियत को ही कला का नाम दिया गया है।

यूरोपीय शक्तियों ने भी कला में कौशल को महत्वपूर्ण माना है। कला एक प्रकार का निर्माण है, जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है। सीधे शब्दों में कहें तो आमतौर पर मानव द्वारा उसके दिमाग में चल रही हजारों प्रकार की कल्पनाओं को समाज के सामने दिखाने की क्रिया को कला या "आर्ट" कहते हैं। क्रिया के जिस रूप में कार्य करने या होने के समय का बोध होता है, उसे कला कहते हैं।

कला ही है जिसमें मानव मन में संवेदनाएं उभारने, प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिंतन को मोड़ने, अभिरुचि को शिक्षा देने की अद्भुत क्षमता है। मनोरंजन, सौंदर्य, प्रवाह, उल्लास न जाने कितने तत्वों से यह भरपूर है। जिसमें मानवीयता को सम्मोहित करने की शक्ति है। वह अपना जादू तत्काल दिखाती है और व्यक्ति को बदलने में लोहा पिघलाकर पानी बना देने वाली भट्टी की तरह मनोवृतियों में भारी रूपांतरण प्रस्तुत करती हैं। एक कलाकार अपनी आवाज नहीं उठाता, संदेश प्रसारित करने के लिए उसकी कला की अभिव्यक्ति काफी है।

कला मनुष्य के अन्तरभावों की सहज अभिव्यक्ति है। जब यह अभिव्यक्ति रेखा, रूप, रंग द्वारा साकार रूप से अभिव्यक्त होती है, तब एक चित्र का निर्माण होता है, जिसे हम चित्रकला कहते हैं। कलाओं में चित्रकला को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। अतः भारत में कला को योग साधना माना जाता है। कला शब्द मानव जीवन में इतना घुला–मिला हुआ है कि कला के बिना मानव जीवन की संभावना शून्य हैं। स्वयं मनुष्य अपने आप में एक कलात्मक कृति है।

किसी भी दक्षता का प्रयोग जब सुंदरता उत्पन्न करने के लिए किया जाता है तो उसे कला कहते हैं। नागरिक के उचित निर्माण में कलाएं सबसे अधिक प्रभावशाली सिद्ध होती हैं। अतः कला का सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य यही है, एवं यह केवल शिक्षा द्वारा ही संभव हो सकता है। कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। चित्रकला एक श्रेष्ठ कला है। रंगों भरी तुलिका से चित्रकार अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है।

कला मनुष्य को भगवान की ओर से मिला एक ऐसा तोहफा है जो सभी प्राणी, पशु और जीव के पास भी है। कला से मनुष्य अपने जीवन में अनेक सफलता प्राप्त कर अपने जीवन को एक नए मुकाम पर ले जा सकता है। सिर्फ जरूरत है मनुष्य को अपने अंदर की छिपी कला को पहचान कर उसे निखार कर समाज के सामने प्रस्तुत करने की।

❖ भारत की कलाएँ [1] :–

अगर अपने भारत को कला की दृष्टि से देखा जाए तो भारत कला का खजाना है। यह हर क्षेत्र, कस्बे, गाँव, हर राज्य की एक नई कला और पहचान है।

भारत में अनेक कलाएं मौजूद हैं जैसे– हस्तकला, चित्रकला, नृत्य, संगीत, ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, अभिनय अनेक विश्व विख्यात कलाएं हैं, जो भारत में देखी जा सकती हैं। बिहार की मधुबनी चित्रकारी, गुजरात का डांडिया, उड़ीसा के पटचित्र चित्रकारी, आंध्र प्रदेश की निर्मल चित्रकारी, पंजाब का भांगड़ा, असम का बिहू, भरतनाट्यम्, कथकली नृत्य, अजंता एलोरा की भित्तिचित्र, इसके उपरांत अनेक राग, विराग, अभिनय शैली जैसे– महाभारत, रामायण, संगम साहित्य इसके भी अलग–अलग रूप

1. Studyglob.com

हैं। ये सब भारत का मान–सम्मान और गौरव का अनुभव देता है, और भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक गौरवशाली विरासत का अनुभव करवाता है।

कला जीवन में प्राण डाल देती है कला जीवन को एक नई ऊंचाइयों पर ले जाती है। नए आदर्शों की स्थापना कर उसका प्रचार करती है और जीवन को प्रकाशमय बना देती है।

वास्तव में हमने देखा है कि एक सिक्के के दो पहलू होते हैं– सकारात्मक और नकारात्मक। एक सच्चा कलाकार हमेशा अपने जीवन का उद्देश्य कला को अच्छे से प्रदर्शित करने में समझता है। कला जीवन का दायित्व है। कला के बिना जीवन का कोई लक्ष्य नहीं है। कला में सुखद, उन्नत, भविष्य और समाज की स्थापना होती है। कला समाज के लिए एक उच्च माध्यम है, जो नवयुवक के जीवन को नई दिशा देकर उनके जीवन को उत्साह और उमंग से भरने का काम करती है। इसलिए हमेशा कला के महत्व को समझ कर अपने अंदर की कला का सम्मान कर उसे निकालने का प्रयास करना चाहिए।

❖ परिभाषाएं [2]:–

- राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त ने कला के लिए अपना मत कुछ इस तरह दिया है– कि ''अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति कला है''।

  इटली के महान विद्वान तो कला को अभिव्यक्ति का साधन मानते हुए कहा हैं– कि 'कला का संबंध केवल स्वानुभूति से प्रेरित प्रक्रिया से है।
- कला शब्द का प्रयोग ललित कला हेतु किया जाता है। श्री रविंद्र नाथ टैगोर के अनुसार– ''कला में मनुष्य अपने मन की अभिव्यक्ति करता है, न की ब्राह्रय रूप की।
- मार्कंडेय मुनि द्वारा रचित विष्णुधर्मोत्तर पुराण में कलाओं में चित्रकला को सर्वोच्च स्थान दिया गया है।

  कला शब्द का प्रयोग 'ऋग्वेद' में हुआ। कला शब्द का यथार्थवादी प्रयोग 'भरतमुनि' ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में प्रथम शताब्दी में किया। ऐसा कोई ज्ञान नहीं, जिसमें कोई शिल्प नहीं, कोई विद्या नहीं, जो कला न हो।

1 जयशंकर प्रसाद के अनुसार :– ''ईश्वर की कर्तव्य शक्ति का संकुचित रूप जो हमको भाव–बोध के लिये मिलता है– कला है।

2 हीगेल के अनुसार :– ''कला आदि भौतिक सत्ता को व्यक्त करने का माध्यम है''।

2. मीनाक्षी : कासलीवाल 'भारती', ललित कला के आधारभूत सिद्वान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी संस्करण – 2003 पेज न0. – 3

3 रस्किन के अनुसार :– "कला में मनुष्य अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है"।

4 क्रोचे के अनुसार :– "हर एक महान कला ईश्वरीय कृति के प्रति मानव – अहलाद की अभिव्यक्ति है।

5 फ्रायड के अनुसार :– "कला दमित वासनाओं का उभरा हुआ रूप है"।

6 अरस्तु के अनुसार :– "कला प्रकृति का अनुकरण है"।

7 प्लेटो के अनुसार :– कला सत्य की अनुकृति है"।

8 पिकासो के अनुसार :– कला एक ऐसा सत्य है जिसमें हमें सत्य का बोध होता है"।

❖ कला के प्रकार [3] :–

कला के कई प्रकार होते हैं और इन प्रकारों का परिगणन भिन्न–भिन्न रीतियों से होता है।

1 मोटे तौर पर जिस वस्तु, रूप अथवा तत्व का निर्माण किया जाता है, उसी के नाम पर इस कला का प्रकार कहलाता है। जैसे–

- वास्तुकला या स्थापत्य कला :– अर्थात भवन निर्माण कला जैसे– दुर्ग, प्रसाद, मंदिर, स्तूप, चैन्य, मकबरे आदि।
- मूर्तिकला :– पत्थर या धातु की छोटी बड़ी मूर्तियां।
- चित्रकला :– भवन की भित्तियों, छतों या स्तंभों पर अभाव वस्त्र, भोजपत्र या कागज पर अंकित चित्र।
- मृदभांड कला :– मिट्टी के बर्तन।
- मुद्राकला :– सिक्के या मुहरे।

2 कभी–कभी जिस पदार्थ से कलाकृतियों का निर्माण किया जाता है, उसे पदार्थ के नाम पर उस कला का प्रकार माना जाता है। जैसे –

- प्रस्तर कला :– पत्थर से गढ़ी हुई आकृतियां।

3. Studyglob.com

- धातुकला :– कांसे तांबे अथवा पीतल से बनाई गई मूर्तियाँ।
- दंतकला :– हाथियों के दांत से निर्मित कलाकृतियां।
- मृतिका कला :– मिट्टी से निर्मित कलाकृतियां या खिलौने।

✓ कला को मुख्य दो भागों में बांटा गया है।

1. उपयोगी कला
2. ललित कला

    1. उपयोगी कला मानव समाज के घरेलू उपयोग में आती है जैसे– आभूषण कला, काष्ट कला।
    2. ललित कला सौंदर्य प्रधान होती है। मानव के मस्तिष्क को आनंद प्रदान करने वाली होती है।

✓ भरतमुनी ने कला को ललित कला के रूप में माना है तथा 8 रसों को बताया है। भरत मुनि ने कला के दो प्रकार बताए हैं :–

1 मुख्य कला 2. गौड़ कला

✓ हीगल ने भी कला को दो भागों में बांटा है :–

1 दृश्य कला (चित्र, वास्तुकला, मूर्तिकला)।

2 श्राव्य कला (संगीत सुनने वाली, काव्य)।

✓ हिगल के अनुसार उच्च पद पर काव्य को रखा है तथा निम्न पद पर वास्तु कला को रखा है। परंतु हिंगल ने कलाओं को तीन ने मानकर पांच माना है।

1 चित्रकला :– इस अत्यंत, उत्कृष्ट एवं सूक्ष्मकला के रूप, रंग, आकार तथा लंबाई एवं चौड़ाई होती है। यह मनोभावों को अत्यधिक स्पष्ट करने में समर्थ होती है।

2 मूर्तिकला :– इस कला के अंतर्गत किसी वस्तु का रूप, रंग, आकार आदि निर्मित किया जाता है। यह कला उत्कृष्ट मनभावों को व्यक्त करने में सक्षम होती है।

3 संगीत कला :– 'नाद' तथा 'स्वर' पर आधारित इस कला के द्वारा व्यक्त भाव अत्यधिक सूक्ष्म, स्पष्ट तथा ह्रदय ग्राही होते हैं।

4 काव्य कला :– शब्द एवं अर्थ पर आधारित इस उत्कृष्ट कला में 'स्वर' एवं 'व्यंजन' दोनों प्रयुक्त होते हैं। इसका प्रभाव भी चिरस्थाई होता है।

5 स्थापत्य कला या वास्तुकलाः– इस कला के अंतर्गत भवन, मंदिर, मस्जिद, चर्च, पुल तथा बांध आदि का निर्माण कार्य होता है।

✓ अरस्तु के दार्शनिक ने भी कला को दो भागों में बांटा है :–

1 ललित कला   2. उदार कला

❖ भित्तिचित्र का अर्थ [4] :–

भित्ति चित्र का अर्थ है ऐसा चित्र जो दीवार पर बनाया गया हो। इनकी शुरुआत नव प्रस्तर मानव के उन प्रयासों के साथ शुरू हुई जब उसने गुफाओं की दीवारों पर प्राकृतिक रंगों से अपने जीवन से जुड़े चित्र बनाएं।

'म्यूरल' शब्द लैटिन भाषा से लिया गया है, जो की 'म्यूरस' से बना हैं। जिसका अर्थ है– दीवार। सटीक होने के लिए इस दीवार, छत या अन्य बड़ी स्थायी सतहों, सपाट, अवतल या उत्तल पर सीधे चित्रित या लागू कलाकृति के लिए किसी भी टुकड़े के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। भारत में भित्तिचित्र संपदा के समृद्ध परंपरा रही है। भारत भर में 20 से अधिक स्थान ज्ञात हैं। जिसमें इस कला के भित्तिचित्र हैं, जिनमें मुख्य रूप से प्राकृतिक गुफाएं और चट्टानों को काटकर बनाए गए कक्ष हैं। इस समय की सर्वोच्च उपलब्धियां अजंता की गुफाएं, एलोरा गुफाओं में कैलास नाथ मंदिर है। बाध की गुफाएं, सित्तनवासल की गुफाएं।

जो कला आप सड़क की आस–पास दीवारों पर या पार्कों में देखतें है, वह एक प्रकार की भित्तिचित्र के अलावा कुछ भी नहीं है। कला प्रागैतिहासिक काल से अस्तिव में है, और प्रत्येक प्रसिद्व चित्रकार ने अपने जीवनकाल में कम से कम एक या दो भित्तिचित्र बनाए है। जैसे–जैसे समय बीतता गया भित्तिचित्रों ने अपना महत्व खो दिया। लेकिन मैक्सिन भित्तिचित्र आंदोलन की घटना के कारण, कलाकारों ने कला के इस रूप में रूचि दिखानी शुरू कर दी, और वर्षों से कला जगत ने विभिन्न प्रकार के भित्तिचित्र देखें, जिनमें भित्तिचित्र जैसे प्रमुख चित्र भी शामिल थे।

भित्तिचित्र बनाने का तरीका बदल गया है। लेकिन यह कला अभी भी व्यवस्था को हिलाने और कलाकार के विचारों को जनता के सामने व्यक्त करने की क्षमता रखती है। और भित्तिकला बहुत कुछ कर सकती है। स्थानीय परिषदे और संपत्ति के मालिक अक्सर यह तर्क देते है कि यह कलात्मक

4. https://www.bbc.com

अभिव्यक्ति के बजाय बर्बरता का एक रूप है। हालांकि, भित्तिचित्र कला समाज के हाशिए पर रहने वाले उन सदस्यों को आवाज देती है जिनकी मुख्याधारा मीडिया तक पहुँचती नहीं है। कला का रूप पारंपरिक शक्ति संरचानाओं को नष्ट कर सकता है और उन लोगों के व्यक्तिगत और राजनीतिक संदेशों को संप्रेषित कर सकता है जिनकी बात नहीं सुनी जाती है।

भित्तिचित्र का इतिहास

भारतीय[7] चित्रकला के उज्जवल इतिहास की शुरुआत भित्ति चित्रों से ही आरंभ होती है। यदि मानव ने सर्वप्रथम अपनी अभिव्यक्ति के लिए जिस साधन अथवा फलक को चुना, वह गुफाओं की भित्तियाँ थी। जिस पर उसने गेरू अथवा कोयले के द्वारा कला को निरूपित किया। स्पेन, फ्रांस, दक्षिण, रोडिशिया, पेरू, अलास्का तथा भारत आदि विविध देशों में आदिमानव युग की ऐसी चित्रंकित गुफाएं प्राप्त हुई। जिनका समय विद्वानों ने 50,000 ई0पूर्व से 10,000 ई0 पूर्व के बीच स्वीकार किया है। भारत में इस प्रकार के चित्र मिर्जापुर, मानिकपुर, सिंघनपुर, होशंगाबाद, रायगढ़ क्षेत्र, पंचमढ़ी, भोपाल, रायसेन, ग्वालियर आदि विविध क्षेत्रों में स्थित गुफाओं की भित्तियों पर देखे जा सकते हैं। इन चित्रों का निर्माण मुख्यतः खनिज रंगो यथा–गेरू, रामरज, हिरौली, कोयला आदि के माध्यम से संपन्न हुआ है। भारत की इस समृद्ध भित्ति चित्रकला परंपरा का रूप, जोगीमारा, अजंता, बाघ, बादामी, सित्तनवासल, एलोरा, एलीफेण्टा, कार्ले, भाजा व पीपल खोरा की गुफाओं में उपलब्ध है। इन गुफाओं में चित्रण का कार्य मौर्य, शुंग, कुषाण गुप्त आदि अनेक राजवंशों के राज्यकाल में (200 ई0 पूर्व से 700 ई0 तक) संपन्न हुआ। दुनिया के किसी भी क्षेत्र में उनके मुकाबले के चित्र नहीं बने।

भारतीय चित्रकला के संदर्भ में 9वीं सदी के पश्चात भित्तिचित्रों का स्थान छोटे–छोटे लघु चित्रों, ताड़पत्र, भोजपत्र, अगरूबल्कल, पटचित्र, काष्ठफलक आदि को ग्रहण कर लिया। 14वीं शती में कागज के प्रचलन के फलस्वरुप– कागज की पोथियों का पर्याप्त विकास हुआ। चूँकि, भित्ति चित्रों की अपेक्षा कागज पर चित्रण कार्य बड़ी सुगमता से होता था। अतः भित्ति चित्रों का स्थान 15वीं शती तक पूर्ण रूप से कागज की पोथियों ने ग्रहण कर लिया। अतः अब भित्ति चित्रण कार्य लगभग पतनोन्मुख हो रहा था। सिर्फ महलों, मंदिरों तथा हवेलियों की सजावट हेतु मुगलों, सम्राटों तथा हिंदू शासको ने भित्ति चित्रों की परंपरा को कायम रखा। इनमें महाराणा कुंभा के राज्य काल (1443 से 1464 ई0) में निर्मित कुभंलगढ़ के भित्तिचित्र, चित्तौड़ दुर्ग में भामाशाह के हवेली के चित्र, जोधपुर, जयपुर, उदयपुर के किलों में स्थित भित्ति चित्र एवं अकबर कालीन फतेहपुर सीकरी के राज प्रसादो की दीवारों तथा छतों पर बनाए गए हैं भित्ति चित्र या कलाकृति इतिहास के पत्रों से परे समझ की है।

यह प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक के जीवन की बहुमूल्य गवाही का एक रूप है। यह आधुनिक मनुष्य से जुड़ा है, जो पहली बार 2,00,000 ईसा पूर्व के आसपास अफ्रीका में दिखाई दिया और 10,00,000 ईसा पूर्व के कुछ समय बाद उत्तर की और यूरोप और एशिया में प्रवेश करना शुरू कर दिया और ऋग्वेद में चर्म पर अग्नि देव के चित्र को अंकित किए जाने का उल्लेख है।

✪ डॉ. प्रेमशंकर द्विवेदी : भारतीय चित्रकला के विविध आयाम, संस्करण – 2007 पेज न0. – 116

इसके अतिरिक्त अन्य कई स्थानों पर भी चित्रों का उल्लेख किया गया है। इसी प्रकार भित्ति चित्रों का उल्लेख रामायण, महाभारत, भारत के नाट्यशास्त्र, कालिदासकृत, रघुवंश एवं मेघदूत आदि ग्रन्थों में, हर्षचरित्र, वान्स्यायन के कामसूत्र, निषेध चरित्र, हरिवंश पुराण, अग्नि पुराण, पद्म पुराण, जैन एवं बौद्ध कृतियों में मिलते हैं। इस प्रकार उपरोक्त साक्ष्यों से स्पष्ट है कि भारत के भित्तिचित्रों की परंपरा अति प्राचीन है, जो भारतीय कला में भित्ति चित्रकला परंपरा की प्राचीनता को प्रमाणित करती है। जिसका निर्वाह वाराणसी की भित्ति चित्रकला परंपरा में भी किया गया है। वाराणसी भारत की सांस्कृतिक राजधानी है। अतः यहां की कला में संपूर्ण भारतीय संस्कृति को एक साथ देखा जा सकता है। यहां घर–घर, गली–गली, भित्ति चित्रों का अंकन विद्यमान है।

वाराणसी की यह पुरातन भित्ति चित्रकला, परंपरागत कला, शैलियों को अपने में सम्मानित किए हुए लोक जीवन के काफी सात्रिकट है। इन चित्रों में वाराणसी की स्थानीय विशेषताओं के साथ–साथ अजंता परंपरा के नयनाभिराम चित्रों का आभास सहज में ही मिल जाता है, साथ ही साथ स्थानीय लोककला, राजधानी, मुगल पहाड़ी एवं कंपनी शैली के समन्वयात्मक स्वरूप का साक्षात्कार यहां के भित्ति चित्रों में द्रष्टव्य है। यही इन चित्रों की सबसे बड़ी विशेषता है।

यद्यपि वाराणसी के संस्कृति उत्थान की कहानी मानव के विकास के साथ ही प्रारंभ होती है। लेकिन सारनाथ और राजघाट की खुदाई के पूर्व, बनारस की कला का क्या स्वरूप था, इसका कोई भी स्पष्ट विवरण हमें नहीं प्राप्त होता है। कला इतिहासकारों ने आज तक ''वाराणसी शैली'' का नामकरण अलग से नहीं किया है, जबकि ''सारनाथ और राजघाट'' को खुदाईयों से प्राप्त अवशेषों के आधार पर काशी के प्राचीनतम कला का केंद्र होने का प्रमाण सिद्ध हो जाता है।

❖ भारत में विविध भित्तिचित्र परंपराएँ [5]:–

भारत की भित्ति चित्र परंपराएं सदियों से चली आ रही हैं, जो कलात्मक विविधता की समृद्ध टेपेस्ट्री को दर्शाती हैं। प्राचीन अजंता की गुफाओं की बौद्ध कथाओं से लेकर एलोरा के हिंदू, जैन और बौद्ध विषयों के संश्लेषण तक, प्रत्येक क्षेत्र कैनवास में अद्वितीय रंग जोड़ता है। तमिलनाडु में सित्तनवासल अजंता की सुंदरता की प्रतिध्वनि देता है, जबकि मध्य प्रदेश में बाग धर्मनिरपेक्ष प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है और मलाई जैन कथाओं को दर्शाता है, और उड़ीसा में रावण छाया शाही जुलूसों को चित्रित करता है। आंध्र प्रदेश में लेपाक्षी धार्मिक महाकाव्यों को उजागर करता है, जबकि छत्तीसगढ़ में जोगीमारा प्राचीन प्रेम कहानियों को बताता है। बदामी की चालुक्य विरासत से लेकर नायक भित्तिचित्रों तक प्रत्येक परंपरा भारत की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को जटिल पच्चीकारी में योगदान करती है।

5. https://www.studyiz.com

➢ अजंता गुफा चित्र :–

1 चौथी शताब्दी ईस्वी पूर्व की अजंता की गुफाएं, ज्वालामुखी चट्टानों से बनी हुई हैं, जिनमें घोड़े की नाल के आकार की 29 गुफाएं शामिल हैं।

2 शुंग काल से गुप्त काल तक के संक्रमण को प्रदर्शित करने वाले भित्तिचित्रों को पूरा होने में चार से पांच शताब्दियाँ लगी।

3 गुफाओं एक और दो में सबसे हालिया पेंटिंग है, जो मानवीय आदर्शों, सामाजिक ताने–बाने और विस्तृत काल शैलियों को दर्शाती हैं।

4 भत्ति चित्र जातक गुफाओं से लेकर बुद्ध के जीवन तक विविध विषयों को चित्रित करते हैं, जिसमें टेम्परा शैली और जैविक रंगों की एक समृद्ध प्लेट का उपयोग किया जाता है।

➢ एलोरा गुफा चित्र :–

1 एलोरा की पांच गुफाएँ, विशेष रूप से कैलासा मंदिर, सहस्त्राब्दियों से दो चरणों में बनाई गई भित्तिचित्र प्रदर्शित करते हैं।

2 पहला चरण गुफाओं की नक्काशी के दौरान हुआ। जिसमें विष्णु, लक्ष्मी और शैव पवित्र पुरुषों के साथ पुरानी कलाकृतियां शामिल थी।

3 बाद में चित्रों में गुजरती शैली में बौद्ध धर्म, जैन धर्म और हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व करने वाले शैव पवित्र पुरुषों के जुलूस को दर्शाया गया है।

4 एलोरा की गुफा चित्रों में देवी लक्ष्मी और भगवान विष्णु की छवियां प्रमुख हैं।

➢ सित्तनवासल गुफा :–

1 अजंता और बाघ पेंटिंग से मिलते–जुलते सित्तनंवसाल गुफा के भित्ति चित्र या तो पल्लव या 7वीं शताब्दी के पांड्य काल के हैं।

2 जैन समवसरण का विषय चित्रों को प्रेरित करता है, जिसमें भिक्षुओं को कमल के साथ तालाब में फूल इकट्ठा करते हुए दिखाया गया है।

3 यह दृश्य समवसरण को दर्शाता है, जो एक महत्वपूर्ण जैन धार्मिक कार्यक्रम है, जिसमें दर्शक कक्ष में जानवर, दिव्या प्राणी और देवता शामिल हैं।

➢ बाघ गुफा चित्र :–

1 अजंता स्कूल का विस्तार, मध्य प्रदेश में बाघ की गुफाएं डिजाइन, निष्पादन और आंकलन में तुलनीय भित्ति चित्र प्रदर्शित करती है।

2 बड़े करीने से तैयार की गई आकृतियाँ बौद्ध और जातक कथाओं को चित्रित करती हैं, जो दैनिक जीवन से जुड़े धार्मिक विषयों को दर्शाती हैं।

3 वर्तमान विरल और बिगड़ती परिस्थितियों के बावजूद, बाघ गुफा चित्र एक धर्मनिरपेक्ष प्रस्तुत करते हैं।

➢ अरमामलाई गुफा चित्र :–

1 तमिलनाडु में प्राकृतिक गुफाएं जिन्हें 8वीं शताब्दी के जैन मंदिर में परिवर्तित किया गया है, अस्ताथिक पालक और जैन धर्म को दर्शाते जीवत भित्ति चित्र हैं।

2 रंगीन आख्यान आठ कोनों की रक्षा करने वाले देवताओं की प्रदर्शित करती है, जो अरमामलाई गुफा की कलात्मक समृद्धि में योगदान करते हैं।

➢ जोगीमारा गुफा चित्र :–

1 छत्तीसगढ़ में कृत्रिम रूप से निर्मित गुफा, जोगीमारा गुफा 1000–3000 ईसा पूर्व की है, जिसमें बाहरी लिपि में चित्र और शिलालेख हैं।

2 एक प्रेम कहानी को दर्शाती और नाचते जोड़ो, हाथियों और मछलियों से सजी, जोगीमारा गुफा प्राचीन कलात्मक अभिव्यक्तियों में अंतदृष्टि प्रदान करती है।

➢ बादामी भित्ति चित्र :–

1 पश्चिमी चालुक्य राजवंश की राजधानी में स्थित, बादामी गुफाओं के भित्ति चित्र महल के जीवन के दृश्यों को प्रदर्शित करते हैं, जिनमें राजा कीर्तिवर्मन और रानी शामिल हैं।

2 बाद की भित्ति परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हुए, ये पेंटिंग चालुक्य की कलात्मक तकनीक को प्रदर्शित करते हुए अजंता से बदामी तक कलात्मक विरासत को जारी रखती है।

➢ पल्लव, पांण्डय और चोल भित्ति चित्र :–

1 तमिलनाडु के पल्लवो, पांड्यों और चोलों ने क्रमिक रूप से भित्तिचित्रों को संरक्षण दिया जिनमें महावीर के जीवन, दिव्य अप्सराओं और भगवान शिव की अभिव्यक्तियों की कहानी को दर्शाया गया है।

2 चोलो ने 9वीं से 13वीं शताब्दी तक अपने प्रभुत्व के दौरान बृहदेश्वर मंदिर में भगवान शिव की कथाओं पर जोर देते हुए महत्वपूर्ण भित्ति चित्र छोड़ें।

➢ विजयनगर भित्ति चित्र :–

1 चोल युग के बाद, विजयनगर राजवंश ने शासन किया और थिरूपनकड्रंम में राजवंशीय इतिहास, महाभारत और रामायण के चित्रण के साथ भित्ति चित्र छोड़ें।

2 विजयनगर की पेंटिंग्स लचीली लेकिन स्थिर गुणवत्ता प्रदर्शित करते हैं, जो लोगों, घटनाओं और वस्तुओं को अद्वितीय विशेषताओं के साथ चित्रित करती हैं।

➢ नायका भित्तिचित्र :–

1 विजयनगर शैली का विस्तार करते हुए, थिरूपरनकुड्रम और तिरुवरूर जैसे स्थानों पर नायक भित्ति चित्र महाभारत, रामायण और कृष्ण लीला के प्रसंग को चित्रित करते हैं।

2 पतली कमर और अभिव्यंजक चेहरों को प्रदर्शित करते हुए, नायक पेंटिंग्स आकृतियों और भावनाओं के चित्रण में एक विशिष्ट विकास दर्शाती है।

➢ केरल भित्ति चित्र :–

1 नायक और विजयनगर शैलियों को एकत्रित करते हुए, केरल के भित्तिचित्र कथकली और कलांय एजुथु परंपराओं से प्रेरणा लेते हैं।

2 तीर्थस्थलों मंदिरों और महलों की दीवारों पर ये त्रि–आयामी पेंटिंग्स हिंदू पौराणिक कथाओं महाकाव्यों की स्थानीय व्याख्याओं और मौलिक कहानियों का वर्णन करती हैं।

➢ वाराणसी भित्ति चित्र [6] :–

1 18वीं शती से पूर्ण वाराणसी से चित्रकला का कोई भी प्राचीनतम अवशेष हमें नहीं प्राप्त होता है। इसका मूल कारण यह है कि हमारे देश पर मुगलों के अधिपत्य के फलस्वरुप, वाराणसी सदैव अन्य राज्यों के अधीन रहा। अतः इसका सांस्कृतिक उत्थान मुगल राजधानियों की अपेक्षा

6. डॉ प्रेमशंकर द्विवेदी : भारतीय चित्रकला के विविध आयाम, संस्करण – 2007 पेज न0. – 118

कम रहा। वैसे यहां भित्तिचित्रों का काफी प्राचीनतम प्रमाण मिलना चाहिए था, लेकिन मुगलों की धर्मान्धता का शिकार वाराणसी को भी होना पड़ा। शाहजहां ने अपने शासन में गुजरात में तीन मंदिर, वाराणसी में चार मंदिर गिरवाए थे। इसी प्रकार औरंगजेब ने सन 1969 ईस्वी में जयपुर और बनारस के मंदिरों को गिराने का आदेश दिया था। बनारस में गोपीनाथ और जंगमबाड़ी का शिव मंदिर भी नष्ट कर दिया गया।

❖ शैली की दृष्टि से :–

1 स्थानीय शैली :– राजस्थानी की प्रेरणा प्राप्त।

2 स्थानीय शैली :– मुगल शैली से प्रभावित।

3 स्थानीय शैली :– कंपनी शैली से प्रभावित।

- राजस्थानी शैली से प्रभावित स्थानीय शैली के चित्र भारत कला भवन वाराणसी में उपलब्ध हैं। जिनमें मुख्य रूप से सबसे पुराना उदाहरण ग्वाल दास साहू की शवीह है। भित्ति चित्रों में सबसे पुराना उदाहरण भोंषले घाट के चित्र हैं। उसके बाद देवकीनंदन की हवेली, शीतल दास का मठ, बागेश्वरी देवी का मंदिर तथा ब्रह्म घाट के आसपास के भवनों में कतिपय भित्ति चित्रों के उदाहरण जो विविध धार्मिक व सामाजिक विषयों से संबंधित है।
- यहां के मुगल शैली की स्थानीय भाषा में निर्मित सबसे प्राचीनतम उदाहरण – भारत कला भवन स्थित "मीर की होली" तथा उस्ताद मूलचंद, उस्ताद बटुक प्रसाद व उस्ताद राम प्रसाद और शारदा प्रसाद द्वारा बनाए गए कतिपय चित्र, भारत कला भवन संग्रह व अन्य कला प्रेमियों के निजी संग्रहों व मंदिरों की भित्तियों पर आज भी उपलब्ध हैं।
- कंपनी शैली से निर्मित यहां के स्थानीय शाखा के चित्रों के उदाहरण के रूप में महाराज विभूति नारायण सिंह के संग्रह में स्थित रामायण की चित्रावली, भित्ति चित्रों में चकिया काली मंदिर तथा रामनगर किले में स्थित काली मंदिर के चित्रों को प्रस्तुत किया जा सकता है। इन चित्रों के ऊपर स्थानीय राजस्थानी मुगल तथा कंपनी शैली का प्रभाव दर्शनीय है। इन चित्रों के चित्रण में तैल रंगों का अधिक प्रयोग किया गया है। इसकी रंग योजना आकर्षक एवं चटकीली है, तथा रेखांकन स्पष्ट तथा परंपरागत है, जो कंपनी शैली की विशेषता है।

❖ भारतीय भित्ति चित्रों में राम कथा :–

भारतीय भित्ति चित्रों में राम कथा विषयक उदाहरणों में राजस्थान के जयपुर, उदयपुर, कोटा, किशनगढ़ एवं नागौर के किले से अनेकानेक उदाहरण मिले हैं। ये चित्र दीवारों पर मोटे पलस्तर पर चित्रित किए गए हैं। इनके रंग पक्के व सतह खूब चिकनी है। इन चित्रों में राम कथा के अनेक अंशों का नयनाभिराम चित्रण हुआ है। इन अंशु में बालकांड, सीता स्वयंवर, बारात शोभा, राक्षसों का वध, वन गमन, सीता हरण, जटायु का कष्ट हरण, बालि वध, सेतु बंधन, राम–रावण युद्ध, अहिल्या उद्धार तथा राजगद्दी के दृश्य प्रमुख हैं।

❖ भारतीय भित्ति में श्री राधा :–

श्रीराधा विष्यक विशाल भित्ति चित्रों का विवरण हमें कांगड़ा जिले के नूपुर, तीरासुजानपुर एवं धर्मशाला आदि स्थानों से प्राप्त होते हैं। श्रीराधा विषयक अनेक चित्रों का विवरण चंबा जिले के देवी की कोठी एवं रंग महल से प्राप्त होते हैं। चंबा स्थित रंग महल के भित्ति चित्र जब दिल्ली के नेशनल म्यूजियम में स्थानांतरित हुए तो उन्होंने कला प्रेमियों का ध्यान अपनी और आकृष्ट किया था। रंग महल राजा उमेद सिंह (1748 से 64 ई0) के समय बनना आरंभ हुआ था। लेकिन जीवन काल में पूरा नहीं हो सका। राजा उमेद सिंह के बाद राज सिंह, जीत सिंह, महाराज चढ़त सिंह अपनी रुचि के अनुकूल इस महल का निर्माण करते रहे। अंतिम रूप में यह महल राजा चढ़त सिंह के समय बनकर तैयार हो गया था। कुछ एक भित्ति चित्र राजा श्री सिंह (1844 से 70 ई0) के वक्त भी बने। रंग महल के अतिरिक्त चंबा में देवी की कोठी, लक्ष्मी नारायण मंदिर एवं अखंड चंडी महल में श्रीराधा अभिषेक चित्र प्राप्त होते हैं। ये चित्र बहुत ही सुंदर और आकर्षक हैं।

❖ भित्ति चित्रों की विशेषताएं [7] :–

मानव जीवन में घर की दीवारों का अपरिमित महत्व होता है। वह केवल ईंट, पत्थर, चूना वह अन्य निर्जीव पदार्थ का ढांचा मात्र नहीं होती। वे उसकी सुरक्षा, शांति, पारिवारिक सुख भोग के लिए सुविधा संपन्न स्थान में व्यक्ति साधना के लिए एकांत प्रदान करती हैं। सहवास के कारण उनका उससे व परिवार के अन्य सदस्यों से वैसा ही आत्मीय संबंध बन जाता है जैसा कि परिवार के सब सदस्यों का एक दूसरे से। अतः भित्ति चित्रण में व कला की अन्य विधाओं में मौलिक भिन्नताओं का होना स्वाभाविक है।

कलाकृति कलाकार की आत्मिक अभिव्यक्ति होती है, किंतु दर्शक के लिए वह तभी कोई महत्व रखती है जब उसमें दर्शक का निजी जीवन प्रतिमित हो या वह उसके लिए आत्मिक अनुभूति प्राप्त करने में सहायक हो रही हो। कोई भी व्यक्ति अपने घर की दीवार पर, सजावट के हेतु, कभी विशेष

7. र.वि. साखलकर : कला के अर्न्तदर्शन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, संस्करण – 2008 पेज न0. – 117

विचार किए बिना, कैसा भी चित्र टांग सकता है, किंतु यदि दीवार पर ही स्थायी रूप से चित्र बनवाना हो तो वह ऐसे ही चित्र बनवाएगा जो उसकी निष्ठाओं, भावनाओं व विचारों के अनुरूप हो।

ॐ ऋद्धि–सिद्धि, नमः शिवाय, स्वास्तिक, नाग, शिवलिंग आदि पवित्रता दर्शक शब्दों व प्रतीकों को दीवार पर अंकित करने से घर के वातावरण में जो एकात्मकता व प्रसन्नता आती है, वैसी उन शब्दों में प्रतिकों कागज पर अंकित कर के ऊपर से चिपकाने पर नहीं आती।

त्योहार पर एवं जब घर में कोई मंगल कार्य संपन्न होता है तथा हम इस तथ्य को विशेष रूप से अनुभव करते हैं। हालांकि आकृतियों को छोड़कर घर की दीवारों पर बने हुए चित्रों का उद्देश्य ब्राह्य सजावट की अपेक्षा भावात्मक वातावरण निर्माण करना होता है। दीवार पर बने चित्र में व ऊपर से टंगे चित्र में कुछ वैसा ही अंतर रहता है जैसा कि परिवार के सदस्य में व आंगन्तुक में।

जहां निजी घरों के भित्ति चित्रण में निवासियों के जीवन को अर्थपूर्ण बनाने का विचार प्रमुख होता है। वहां मंदिर, विद्यालय, अस्पताल सभागृह आदि सार्वजनिक स्थानों के भित्तिचित्रण में सामाजिक जीवन को महत्व रखता है, व ऐसे चित्रण पर भी निजी घरों के बारे में ऊपर व्यक्त किए गए विचार मिलते–जुलते रूप में लागू होते हैं।

"**Architecture is the mother of all Art**". कुछ विद्वानों का यह मत है कि "वास्तुकला समस्त कलाओं की जननी है" यानी कलाओं का जन्म तब हुआ जब मानव ने वन्य जीवन को छोड़ स्थाई निवास बनकर रहना शुरू किया। मानव का प्रारंभिक निवास गुफाएं था। सबसे प्राचीन कलाकृतियाँ गुफाओं में मिली। इससे इस मत की पुष्टि होती है विवाह, त्यौहार, मेला जैसे आनंद उत्सव में संगीत, काव्य, नृत्य, चित्रकला का समन्वित प्रयोग देखने को मिलता है। तात्पर्य यह है कि सभी कलाओं का मानव जाति के आरंभ से ही मानव जीवन से घनिष्ठ संबंध व आपसी सहयोग रहा है।

व्यक्ति की महत्वाकांक्षा व जीवन शैली के बीज उस पर बचपन में घर पर हुए संस्कारों में बोये जाते हैं। बच्चे की चित्रकला का आरंभ भी वह है जब वह घर की दीवारों पर कोयले या खड़िया से इतस्ततः घसीटे मारता है और इसके लिए उसको अक्सर डांट खानी पड़ती है। किंतु फिर भी वह शायद ही इस आंरभिक मुक्त, सर्जन को छोड़ पता है। कागज, रंग आदि सामान देकर बच्चे को दीवारों को खराब करने से रोका जा सकता है। कागज या कपड़े की सीमित पृष्ठभूमि पर चित्र बनाने में और भित्ति चित्रण में यह एक प्रमुख भिन्नता है। वास्तव में चित्रकला का उचित स्थान तो संग्रहालय न होकर घर की या सार्वजनिक सम्मेलनों के स्थान की दीवारें हैं। संग्रहालयों का उद्देश्य कला संबंधी ज्ञान का प्रसार होता है। अतः चित्रकला का स्थानकुल होना व मानव जीवन से वास्तविक रूप से जुड़ जाना आवश्यक है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो भी ज्ञात होगा कि भित्तिचित्रण को उसकी प्रयोजनशीलता को ध्यान में रखकर सबसे अधिक महत्व दिया गया है।

विद्वानों के मतानुसार प्रागैतिहासिक कलाकारों के चित्रण का उद्देश्य मनोरंजन या सजावट नहीं हो सकता। अपने मत के समर्थन में उनका कहना है कि ये चित्र गुफा के प्रवेश द्वार के निकट होने के बजाय अंधेरे भाग में है। कई जगह एक के ऊपर दूसरे ऐसे चित्र भी बने हैं और चित्रों के विषय शिकार के दृश्य या ऐसे जानवर हैं जिनके मांस पर वे उदरनिर्वाह करते थे। इसके अतिरिक्त और भी प्रमाण है जिसे प्रतीत होता है कि यह भित्ति चित्रण उन गुफावासियों के शिकार प्राप्त करने में सहायक जादू टोने का एक अंग था।

जादू–टोना व तांत्रिक विधियों में विश्वास उनके लिये धर्म था। अतः यह सोचने की बात है कि कला व धर्म दोनों का जन्म उदरनिर्वाह के साधन के रूप में हुआ। उसके पीछे न कोई कलात्मक उद्देश्य था, न परमार्थ साधना का विचार और निष्ठा से किया हर कार्य स्वाभविकतः सौंदर्य से ओतप्रोत होता है। इस प्रकार कला का जन्म भित्तिचित्रण से हुआ।

इसके पश्चात मानव गुफाओं को छोड़ एक जगह मकान बनाकर खेती–बाड़ी करने लगा और मानव सभ्यता का आरंभ हुआ। वह अनुभव करने लगा कि अलग–अलग परिवारों में पृथक रहने से टोली बना कर रहने में अधिक सुरक्षा व समृद्धि है। अब सामाजिक जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए नियम निबंध बनाए गए व राजनीतिक का जन्म हुआ। मानव के धार्मिक विश्वासों में भी परिवर्तन आया यद्यपि जादू–टोना में मंत्र–तंत्र का विश्वास पूर्ण रूप से नष्ट नहीं हुआ। यह कला प्रमुखतया धर्म से संबंधित है व सब चित्र पिरामिडों की भित्तियों पर अंकित है। धर्म एक ऐसी शक्ति है जो समाज को सुगठित करती है। इस विचार से साम्यवाद, समाजवाद ये भी धर्म के आधुनिक रूप हैं।

संक्षेप में, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अवलोकन करने पर भित्तिचित्रकला की निम्नलिखित विशेषताएं सामने आती हैं :–

1 एक बार बन जाने के पश्चात भित्तिचित्र स्थाई रूप से भवन से जुड़ जाते हैं। अतः भित्तिचित्रण की विद्या, धर्म, संस्कृति, सामाजिक ध्येय, परंपरागत साहित्य, इतिहास जैसे दीर्घकालीन महत्व के विषयों के लिए उपयुक्त है। तात्कालिक महत्व के विषय को लेकर भित्तिचित्र बनवाने का विचार कोई नहीं करेगा।

2 भवन को अनुरूप वातावरण से आपूरित करने की भित्तिचित्रण की जैसी प्रभावी सामर्थ्य किसी अन्य चित्रकला पद्धति में नहीं है।

3 स्थानबद्ध होने के कारण भित्तिचित्र क्रय विक्रय की दोषयुक्त भावना से मुक्त रहते हैं। उनका वाणिज्यिक दृष्टि से विचार नहीं किया जाता, जिससे कलाकार व आश्रयदाता की कला के प्रति स्वस्थ मानसिकता, आर्थिक प्रलोभव से दूषित या विचलित नहीं होती।

4 जहां रामायण, महाभारत, जातक कथा जैसे ग्रंथ के या ऐतिहासिक घटना के अनेक प्रसंगों का क्रमबद्ध अंकन करना है, वहां भित्तिचित्रण बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

5 विशाल आकार के होने से सामूहिक प्रचार के – खास तौर से अशिक्षित व अल्पशिक्षित वर्ग में, तथा भिन्न भाषियों में उपयुक्त माध्यम के रूप में भित्तिचित्रों का महत्व निर्विवाद है।

6 भित्तिचित्रण में कलाकार के व्यक्तिवाद को कोई अवसर नहीं है।

अब ईश्वर, धर्म, शाश्वत जीवन, आदर्शवाद जैसे चिंतन पर पहले जैसी निष्ठा नहीं रही, यहां तक कि जिन ऐतिहासिक वीर पुरुषों व महात्माओं ने देश के लिए बलिदान किया, उनकी निंदा करने से भी लोग नहीं चूकते अर्थात ऐसी परिस्थिति में सामाजिक ध्येय से प्रेरित भित्तिचित्रण का प्राचीन महत्व भी नहीं रहा। किन्तु भित्तिचित्रों के ऐतिहासिक अध्ययन से जो संदेश मिलता है, उस पर कला की सार्थकता के विचार से ध्यान देना आवश्यक है।

द्वितीय अध्याय

- जीवन परिचय
- शिक्षा व कला यात्रा
- प्रदर्शनियाँ

जीवन – परिचय

भारतीय भित्ति चित्रकला में रंजीत दहिया एक ऐसे चित्रकार हैं जिनका जीवन पूर्णतः कला के लिए समर्पित है। रंजीत दहिया कल्पनाशील होते हुए भी काफी गंभीर स्वभाव के कलाकार हैं। इन्होंने अपने कार्य में पूर्णता प्राप्त की है। ये एक उत्कृष्ट चित्रकार है जो अपनी प्रतिभा और गुणवत्ता के आधार पर प्रसिद्ध होते जा रहे हैं। व्यापक रूप से ये बॉलीवुड में आदर्श कलाकार के रूप में सम्मान पाते नजर आ रहे हैं। रंजीत दहिया एक ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने बॉलीवुड में अपनी पहचान बनाने के लिए दिन–रात बहुत परिश्रम किया है। वह निःस्वार्थ भाव से ही भित्तिचित्र बनाते हैं। इनमें किसी भी प्रकार का कोई घमंड नहीं है। उनका कहना है कि भगवान ने सभी को एक जैसा बनाया है। अतः उनके बारे में जितना लिखा जाए उतना ही कम है। आज के कलाकार जिनमें नाम और पैसे की होड़ लगी हुई है, ये इन सबसे दूर हैं। आजकल चित्रण केवल आनंद के लिए ही नहीं बल्कि पैसों के लिए हो रहा है। लेकिन रंजीत दहिया एक ऐसे कलाकार है जो आनंद एवं संतुष्टि के लिए भित्ति चित्र बनाते हैं, पैसों के लिए नहीं। इनकी कड़ी कला साधना के प्रमाण स्वरूप वह एक सक्षम कलाकार के रूप में उभरकर सामने आए हैं।

रंजीत दहिया का जन्म 19 अगस्त 1978 को सोनीपत के घड़ी ब्राह्मण गांव में हुआ था। इनके पिता कृष्ण दहिया हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड में सरकारी नौकरी पर थे, अब इनके पिता नौकरी से सेवानिवृति **(Retire)** हो चुके हैं। व माता प्रकाशो देवी एक ग्रहिणी है। ये चार भाई–बहन हैं। इनके बड़े भाई का नाम कुलदीप है, वह हरियाणा में एक सरकारी ड्राइंग अध्यापक **(Govt Drawing Teacher - in Haryana)** है। उससे छोटे भाई का नाम बलजीत है। उनकी एक फैक्ट्री है। जसमें अलमारियां बनती हैं। उनकी बड़ी बहन का नाम दिनेश है। उनकी शादी हो गई है। वह एक ग्रहिणी है। रंजीत दहिया के पिता जी ने इन्हें कभी भी खाली नहीं बैठने दिया था। जब भी ये खाली बैठे दिखते थे, तब उनके पिताजी इनसे काम करवाने लग जाते थे जैसे – जमीन में खड्डा खुदवान लग जाते थे और फिर उस मिट्टी को इधर से उधर गिरवाने के लिए बोलते थे। इनका बचपन काफी अच्छा रहा था।

दसवीं कक्षा के बाद इन्होंने आखाड़े में जाना शुरू कर दिया था और जब 11वीं कक्षा में हिंदू कॉलेज सोनीपत में गए, इन्होंने वहां पहलवानी करनी शुरू कर दी थी। घर पर भी इनकी शिकायतें आने लग गई थी। इन्होंने 11वीं की कक्षाएं बहुत कम लगाई थी। जब घर वाले इनको फीस के पैसे देते थे, उन पैसों से दोस्तों के साथ घेवर, रसगुल्ले खाने चले जाते थे। जब कॉलेज में प्रधान के इलेक्शन होते थे तब इनके कॉलेज में लड़ाई झगड़ा भी होते थे। यह बात उनके घर वालों को नहीं

पता थी। जब 11वीं के अंतिम वर्ष के पेपर थे, तब कॉलेज वालों ने इनसे 700 रू मांगे थे, क्योंकि इन्होंने फीस नहीं भरी थी। और इनको पेपर में बैठने से मना कर दिया था। फिर उनके घर पर फीस न भरने का पत्र आ गया था, इसलिए इनके पिता ने रंजीत दहिया का स्कूल जाना बंद करवा दिया था। फिर इन्होंने 3 महीने भैंसें चराई थी, उसके बाद ही **White Wash** करना शुरू कर दिया था। इन्होंने अपने जीवन में बहुत मस्ती की है। अपने जीवन को बिना किसी चिंता के साथ व्यतीत करते हैं।

रंजीत दहिया आखिरकार 2009 में मुंबई आए ताकि बॉलीवुड के जादू को मुंबई की सड़कों पर लाया जा सके। क्योंकि, जैसा कि रंजीत दहिया कहते हैं, ''यह (मुंबई) एक बॉलीवुड शहर है और मेरा मिशन इसे अमर बनाना है'' एक इंटरनेट फर्म में यूआई डिजाइनर की नीरस नौकरी में फंसे रंजीत दहिया को 'नवाचार' की चाहत थी और वह सिर्फ ब्रांड लोगो डिजाइन करने से बढ़कर कुछ करना चाहते थे। वह खुद को बॉलीवुड का दीवाना मानते हैं, और उन्होंने अपनी बिल्लियों का नाम भी फिल्मी पात्रों के नाम पर रखा है। वह इस बात से भी हैरान थे कि भारत की मनोरंजन राजधानी में फिल्मों या फिल्मी सितारों का सार्वजनिक प्रदर्शन लगभग नहीं होता है रंजीत दहिया इस स्थिति को सुधारना चाहते थे। इसलिए, उन्होंने अपने पेशे (कला) और शौक (फिल्मों) को मिलाकर 2012 में बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट **(BAP)** शुरू किया। शहरी कला परियोजना का उद्देश्य शहर के शानदार सिनेमाई इतिहास को पुनर्जीवित करना और इसके कई सांस्कृतिक प्रतीकों को श्रद्धांजलि देना है।

वे कहते हैं, ''जब आप शहर में प्रवेश करते हैं, तो आपको कुछ ऐसा देखना चाहिए जिससे लगे कि 'ओह! तो, हम मुंबई में हैं'।''रंजीत दहिया द्वारा 2012 में स्थापित (संयोग से भारतीय सिनेमा के शानदार 100 साल पूरे होने से एक साल पहले), **BAP** ने बॉलीवुड के दिग्गज कलाकारों जैसे दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन, आशा पारेख, वहीदा रहमान, धर्मेंद्र, श्रीदेवी, ऋषि कपूर और इरफान खान को मुंबई की सड़कों पर उतारा है। इन महान हस्तियों के हमारे भित्तिचित्रों में पुरानी यादें और इतिहास बसा हुआ है। **BAP** इसी भावना का प्रतीक है। हमारा मिशन बॉलीवुड के समृद्ध सिनेमाई इतिहास को समेटकर मुंबई के क्षितिज को सुंदर बनाना है। दादा साहब फाल्के (जिन्हें भारतीय सिनेमा का जनक कहा जाता है) से लेकर राज कपूर, नरगिस, मधुबाला , गुरुदत्त और देव आनंद से लेकर राजेश खन्ना, शशि कपूर, अमिताभ बच्चन और स्मिता पाटिल से लेकर अमरीश पुरी, श्रीदेवी और हाल ही में दिवंगत हुए इरफान खान तक – बीएपी ने हिंदी सिनेमा के 100 साल से अधिक का सफर तय किया है।

शिक्षा व कला यात्रा

- **शिक्षा :–**

रंजीत दहिया ने दसवीं तक की शिक्षा एस. एम. हिंदू वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सोनीपत से प्राप्त करने के पश्चात 11वीं की शिक्षा हिंदू कॉलेज सोनीपत हरियाणा से प्राप्त की थी। 11वीं के बाद इनका स्कूल जाना बंद हो गया था और ये लिपाई–पुताई का काम करने लग गए थे। फिर ये अपने एक स्कूल मित्र से मिले थे। उनके मित्र ने इन्हें बताया कि आप फाइन आर्ट्स क्यों नहीं कर लेते? उसके बाद इन्होंने फाइन आर्ट के बारे में जानकारी प्राप्त की और यह जाना की फाइन आर्ट की क्या योग्यता होनी चाहिए। फिर इनको पता चला कि फाइन आर्ट में आवेदन लेने के लिए 12वीं में 55% अंक होने चाहिए और उसके बाद टेस्ट होता है। 11वीं के 3 साल बाद रंजीत दहिया ने 12वीं की शिक्षा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (Indira Gandhi National Open University - IGNOU) से प्राप्त की थी और इसके साथ–साथ ही फाइन आर्ट के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय और चंडीगढ़ विश्वविद्यालय के लिए आवेदन किया था, और दोनों विश्वविद्यालय की दाखिला सूची (Admission List) में इनका नाम आ गया था। लेकिन इन्होंने चंडीगढ़ विश्वविद्यालय को चुना था और चंडीगढ़ विश्वविद्यालय से 4 साल में प्रिंटमेकिंग से स्नातक (Graduation) के अंतिम वर्ष (Final Year) में थे। तब इनके जो सीनियर (Senior) थे। वे स्कूल में फाइन आर्ट शिक्षक की नौकरी ढूंढ रहे थे तब रंजीत दहिया सोचने लगे थे की फाइन आर्ट करने के बाद प्रोफेसर की नौकरी मिलती है जब इन्होंने 4 साल की प्रिंट मेकिंग में स्नातक की डिग्री हासिल करने के पश्चात इनका नेशनल इंस्टीट्यूट आफ डिजाइन (National Instuture Design - NID) के बारे में बताया गया, जो दिल्ली में है।

फिर रंजीत दहिया ने नेशनल इंस्टीट्यूट आफ डिजाइन के लिए आवेदन किया था, लेकिन इनका टेस्ट पास नहीं हुआ था। जैसे फाइन आर्ट में प्रिंटमेंकिंग से स्नातक की थी तब इनके पास सूची पत्र (Prospectus) थे। फिर इनके पास शांति निकेतन से प्रस्ताव (offer) आया कि शांति निकेतन से शिक्षा प्राप्त करो। लेकिन रंजीत दहिया के दिमाग में सिर्फ नेशनल इंस्टीट्यूट आफ डिजाइन का टेस्ट ही पास करना था। फिर इन्होंने अपने आप को देखा कि क्या समस्या है, जिसकी वजह से इनका टेस्ट पास नहीं हुआ था। इनको अंग्रेजी की समस्या थी। प्रश्न पत्र में Colleague लिखा था और इन्होंने Collagate पढ़ लिया था, जिसकी वजह से इनका टेस्ट पास नहीं हुआ था।

फिर यह घर आ गए थे और एक साल तक अच्छे से तैयारी की। दूसरी बार इन्होंने NID का टेस्ट दिया जिसमें यह पास हो गए थे। टेस्ट पास करने के बाद साक्षात्कार (Interview) के लिए अहमदाबाद गए थे। इनका साक्षात्कार बहुत अच्छा गया था क्योंकि NID का टेस्ट पास करने पर इनमें

आत्मविश्वास आ गया था। 2003 में **NID** में वापस आ गए थे और **NID** में दाखिला लेने के बाद इनको पता लगा की **NID** की सारी किताबें अंग्रेजी में थी और इनको अंग्रेजी की समस्या बहुत थी, क्योंकि इनका अंग्रेजी में आधार **(Base)** नहीं बना हुआ था। जब **NID** में अनुसंधान **(Research)** का कार्यक्रम था तो **NID** वालों ने रंजीत दहिया को बोला कि आपसे नहीं हो सकता और आप इसे छोड़ दो। इन्होने बोला मैं ऐसे नहीं छोड़ सकता। फिर रंजीत दहिया को एक मौका और मिला था। यह मौका उनके लिए बहुत अच्छा था।

एक साल में रंजीत दहिया ने अंग्रेजी का मूल रूप से अभ्यास पूरा कर लिया था। 2007 में इन्होंने नेशनल इंस्टीट्यूट आफ डिजाइन – अहमदाबाद से स्नातकोत्तर **(Post Graduation)** की डिग्री हासिल की थी।

➢ कला यात्रा :–

जब रंजीत दहिया पांचवी कक्षा में थे तब इन्होंने सबसे पहले तोते की पेंटिंग बनाई थी। उनके द्वारा बनाई गई तोते की पेंटिंग को देखकर सर ने रंजीत दहिया को बोला – यह पेंटिंग तुमने बनाई है, रंजीत दहिया ने कहा, हां सर मैंने बनाई है। सर ने रंजीत दहिया को बोला कि दोबारा बना कर दिखाओ। इन्होंने दोबारा तोते की पेंटिंग बना कर दिखाई थी। लेकिन दोबारा बनाने पर भी सर को विश्वास नहीं हुआ था, क्योंकि तोते की पेंटिंग बहुत अच्छी बनी थी और पांचवी कक्षा से उनके हाथ का काम बहुत अच्छा था।

जब ये सातवीं कक्षा में थे, तब उनके घर पर एक समतल सतह क्षेत्र **(Surface Area)** था जो उनके घर का दरवाजा था। इन्होंने दरवाजे पर राजकुमार, किशोर कुमार, सरस्वती माता, हनुमान जी की पेंटिंग बनाई थी। रंजीत दहिया ने 40रू में लिपाई–पुताई **(White wash)** का काम करना शुरू कर दिया था। जैसे घरों में सफेद पेंट करना, स्कूलों में, स्टेशनों पर भी सफेद पेंट किया था। जब स्कूल के प्रिंसिपल ने रंजीत दहिया से पूछा, क्या तुम किसी पेंटर को जानते हो? जो सरस्वती माता की पेंटिंग बना सके। तब रंजीत दहिया ने बोला सर मैं बना सकता हूं। क्योंकि इनकी स्कूल के समय से ही पेंटिंग बहुत अच्छी थी। फिर रंजीत दहिया ने स्कूल में सरस्वती माता की पेंटिंग बनाई थी और वह पेंटिंग बहुत अच्छी बनी थी। तब रंजीत दहिया को महसूस हुआ था कि अब मैं लिपाई–पुताई नहीं करूंगा। क्योंकि रंजीत दहिया अच्छे चित्रकार हैं। उसके बाद ये पानीपत में चित्रकारी का काम सिखने चले गए थे और एक साल बाद वापस सोनीपत आ गए थे। इन्होंने पेंट की दुकान पर **Spray Painter** काम करना शुरू कर दिया था। उसने रंजीत दहिया को पूछा कि क्या तुम्हें स्प्रे करना और लिखना आता है। रंजीत दहिया ने बोला – हां, मुझे बहुत अच्छे से स्प्रे करना और लिखना आता है।

उसके बाद दुकान पर कोई भी ट्रैक्टर, ट्राली आती थी, तब रंजीत दहिया ट्रैक्टर–ट्राली पर स्प्रे और लिखाई लिखते थे और साथ में वाहनों पर फूल, पत्ती, तोता आदि ये सब भी बनाते थे।

रंजीत दहिया ने एक साल तक ऑटो, रिक्शा, ट्रक, जो भी वाहन **(Vihicle)** दुकान पर आते थे उन सब पर पेंट करते थे। जब रंजीत दहिया ने नेशनल इंस्टीट्यूट आफ डिजाइन से स्नातकोत्तर **(Post Graduation)** की डिग्री हासिल करने के बाद इनको दिल्ली में **Federation of Indian Chamber and Industry (FICCI),** में नौकरी मिली थी, जिसमें **India Branding** के **Project** होते थे। रंजीत दहिया की **India Branding** में विशेषता डिजाइन की थी। इन्होंने **(FICCI)** के साथ एक साल तक काम किया था। लेकिन इनको नौकरी करने में मजा नहीं आया था।

रंजीत दहिया के अनुसार दिल्ली में या तो हरियाणवी खिलाड़ी रह सकते थे या पहलवान रह सकते थे। उसके बाद रंजीत दहिया को मुंबई में **Mouthshut.com** से फोन आया था। रंजीत दहिया का कंपनी के साथ 16 दिन का प्रशिक्षण **(Internship)** था। 2005 में इन्होंने प्रशिक्षण किया था और कंपनी वालों ने बोला आप हमारे साथ ही नौकरी करना। लेकिन रंजीत दहिया ने नौकरी करने से मना कर दिया था। फिर 2008 में **Mouthshut.com** कंपनी वाले रंजीत दहिया को ढूंढ रहे थे। जब रंजीत दहिया कंपनी वालों को मिले तब कंपनी वालों ने बोला आप हमारी कंपनी में शामिल क्यों नहीं हो जाते। रंजीत दहिया ने सोचा खाली बैठने से अच्छा है, कंपनी वालों के साथ ही घूम आता हूं। वैसे तो प्रशिक्षण 45 दिनों का था, लेकिन रंजीत दहिया की चाचा की लड़की की शादी थी, जिसकी वजह से रंजीत दहिया प्रशिक्षण में नहीं जा सके थे। इसलिए रंजीत दहिया ने यह प्रशिक्षण 15 दिन का ही किया था।

रंजीत दहिया की **Publication** के साथ पहले ही प्रशिक्षण तय थी और रंजीत दहिया 10 दिन पहले ही लेट थे। तब रंजीत दहिया ने जाकर देखा तो वह मुंबई से बहुत दूर था और रंजीत दहिया को वहां जाकर मजा नहीं आया था। वहां **Navneet Book** के नाम की बहुत बड़ी फैक्ट्री थी। तब रंजीत दहिया को **Harun Rober** मिला था जो **NID** का ही दोस्त था। उस समय **Harun Rober** ने टीवी पर शो **(Show)** शुरू किया था। फिर रंजीत दहिया और हारुन रोबर दोनों साथ में रहने लग गए थे। वहां रहकर मुंबई की सभी कंपनी में जाकर आवेदन किया था। फिर **Mouthshut.com** कंपनी से फोन आया था। रंजीत दहिया कंपनी में गए थे। कंपनी वालों ने रंजीत दहिया से पूछा – आप हमारे लिए क्या कर सकते हो? रंजीत दहिया पहले से ही **Mouthshut.com** कंपनी के बारे में खोज **(Search)** करके गए थे। फिर रंजीत दहिया को थोड़ा समय चाहिए था और कंपनी वालों सोमवार को मिलने के लिए बोला था। फिर रंजीत दहिया बताएंगें कि कंपनी के लिए क्या कर सकते थे। चार दिन रंजीत दहिया ने पार्टी की थी और सोमवार की सुबह 4 बजे इनको याद आया कि रंजीत

दहिया का सुबह 9 बजे साक्षात्कार था। फिर रंजीत दहिया ने गहराई से खोज की थी। कंपनी को आगे बढ़ाने के लिए क्या करना चाहिए था।

संचार की रणनीति क्या होनी चाहिए थी? रंजीत दहिया के पास तीन – चार रणनीति थी। जिसमें उन्होंने अफवाह फैलाओं रणनीति को चुना था।

उदाहरण :–

मल्लिका शेरावत स्पाइडर–मैन से शादी करने जा रही है और दोनों भारतीय पोशाक पहने हुए है। इस तरह का रंजीत दहिया ने चित्र बनाया था, उसमें ऊपर लिखा था **Don't go with romours** (अफवाहों पर ध्यान मत दें) और नीचे लिखा था **Loging Mouthshut.com Company.** जब रंजीत दहिया ने यह चित्र कंपनी वालों को दिखाया था कि इस तरह से प्रस्तुत किया जा सकता है, तब कंपनी वाले हैरान हो गए थे और रंजीत दहिया को कंपनी के साथ काम करने के लिए बोला था।

कंपनी वाले रंजीत दहिया को किसी दूसरी कंपनी के साथ काम करने के लिए मना कर रहे थे क्योंकि रंजीत दहिया के काम को देखकर कंपनी वाले बहुत खुश हुए थे। कंपनी वालों ने रंजीत दहिया को कॉलेज छोड़ने के लिए बोला था, लेकिन रंजीत दहिया का 16 दिन का प्रशिक्षण पूरा हो गया था और वह कॉलेज की पढ़ाई को पूरा करने के बाद वापस जाकर कंपनी में शामिल हो गए थे। रंजीत दहिया को नौकरी भी अच्छी लगी थी, वेतन भी अच्छा था और रहने के लिए घर भी दे रहे थे, लेकिन रंजीत दहिया ने घर के लिए मना कर दिया था, क्योंकि रंजीत दहिया अपने अनुसार कंपनी वालों का काम करना चाहते थे और **NID** वाले दोस्तों के साथ रहना चाहते थे, क्योंकि इनके लिए वातावरण बहुत जरूरी था। इसलिए इनको **NID** वाले दोस्तों के साथ रहना अच्छा लगता था।

रंजीत दहिया के अनुसार डिजाइन के लिए एक अच्छे वातावरण की जरूरत होती है, जिससे रंजीत दहिया लोगों के साथ बातचीत करते थे और नए–नए डिजाइन के साथ विचार प्राप्त करते थे। जब यह **NID** से निकले थे तब इन्होंने यह बात सोची थी कि यह दुनिया बदल डालेंगे। रंजीत दहिया के पास बहुत सारे विचार थे जिनमें वह काम करना चाहते थे और रंजीत दहिया प्रिंट से पहले ही बहुत काम कर चुके थे। फिर इन्होंने **Digital** में काम करना शुरू कर दिया था क्योंकि ये गांव से आए थे इनको कोई भी चीज सुलझाने में अलग ही प्रतिक्रिया **(Feedback)** चाहिए थी।

उसके बाद इन्होंने 2010 में **Mobile Application** बनाई थी और उनकी पहली **Application Noteworthy** थी। नौकरी के साथ–साथ अपना भी काम कर रहे थे क्योंकि ये सोचते थे कि वह समय मेहनत करने का था, इनको खुद पर थोड़ा शक हुआ था कि ये सही रास्ते पर जा रहे थे या गलत रास्ते पर जा रहे थे, क्योंकि मुंबई में रहना इतना आसान नहीं था और उनके सारे दोस्त मुंबई **Digital** में काम करते थे।

रंजीत दहिया अपनी नौकरी से संतुष्ट नहीं थे। रविवार की सुबह 4 बजे उठकर रंजीत दहिया घूमने के लिए निकले थे। इन्होंने देखा एक लड़की प्रक्षेपक **(Projector)** लेकर दीवार पर कुछ **draw** कर रही थी। वह रंजीत दहिया की **NID** दोस्त थी, जिसका नाम **Diana Pallo** था।

Diana Pallo ने **Wall Project** शुरू किया था। और वह पेंटिंग बना रही थी, और लोगों को भी पेंटिंग करने के लिए आमंत्रित कर रही थी। रंजीत दहिया भी पेंटिंग करना चाहते थे। लेकिन **Diano Pallo** ने मना कर दिया था। क्योंकि रंजीत दहिया ने फेसबुक पर रजिस्टर्ड नहीं किया हुआ था। उसके बाद रंजीत दहिया को दूसरी दोस्त मिली थी जिसका नाम नीतिया था। नीतिया रंजीत दहिया से मदद मांग रही थी, फिर रंजीत दहिया ने नीतिया की मदद की थी। नीतिया, रंजीत दहिया से पेंटिंग करवाना चाहती थी, लेकिन रंजीत दहिया ने मना कर दिया, क्योंकि डायना पालो ने कहा था कि रंजीत दहिया ने फेसबुक पर रजिस्टर्ड नहीं किया था। इसलिए रंजीत दहिया पेंट नहीं कर सकते थे। लेकिन बिना रजिस्टर्ड किए नीतिया ने रंजीत दहिया से पेंटिंग बनवाई थी। वहां पर पेंटिंग करने और भी व्यक्ति आए हुए थे। उन सब ने भी प्रोजेक्टर लगाए हुए थे। रंजीत दहिया ने बिना प्रोजेक्टर से ही ब्रश और रंग के साथ पेंटिंग बना दी थी। रंजीत दहिया ने 10 मिनट में पेंटिंग बना दी थी बाकी सब तब तक ड्राइंग ही कर रहे थे, क्योंकि रंजीत दहिया को पेंटिंग करने का बहुत अनुभव था।

इसके बाद रंजीत दहिया वापस घर आ गए थे और 3 महीने बाद रंजीत दहिया को दानिया का फोन आया था। दानिया ने रंजीत दहिया को पेरिस जाने के लिए पूछा था। क्योंकि दानिया को कोई कलाकार नहीं मिला था जिसके पासपोर्ट हो, लेकिन रंजीत दहिया के पास पासपोर्ट था और फिर रंजीत दहिया पेरिस जाने के लिए तैयार हो गए थे। पेरिस में **Sekonda Cinema Show** होने वाला था। जिसमें पूरे विश्व के कलाकार आए हुए थे और वहां सभी कलाकारों ने अपने–अपने अनुभव से काम किया था। जब पेरिस में रंजीत दहिया को कुछ भी पेंट करने के लिए बोला जाता था तब रंजीत दहिया ने अमिताभ बच्चन की फिल्म 'सरकार राज' का पहला भित्तिचित्र 2010 में बनाया था जो **32 x 12 feet** का था। यह बहुत अच्छा बना था।

रंजीत दहिया पेरिस में 7 दिन के लिए गए थे लेकिन यह भित्तिचित्र उन्होंने चार दिन में बना दिया था और पेरिस में ही रंजीत दहिया की मुलाकात अमिताभ बच्चन से हुई थी। भारत से पेरिस के शो में अमिताभ बच्चन और रंजीत दहिया ही गए हुए थे। रंजीत दहिया का पेरिस में बहुत अच्छा अनुभव रहा था और अमिताभ बच्चन से मुलाकात के बहुत अच्छे पल थे, क्योंकि मुंबई में रहकर रंजीत दहिया अमिताभ बच्चन से नहीं मिले थे और पेरिस में अमिताभ बच्चन से पहली बार मुलाकात हुई थी। फिर रंजीत दहिया वापस भारत आ गए थे। उनकी नौकरी भी थी, लेकिन नौकरी में इनका मन नहीं लग रहा था क्योंकि वह नौकरी आसान थी, चुनौती पूर्ण नहीं थी। उस समय फोन का डिजाइन शुरू हुआ

था तो रंजीत दहिया **Mouthshut.com Company** का डिजाइन बनाना चाहते थे, लेकिन कंपनी वाले डिजाइन के लिए मना कर रहे थे। फिर भी रंजीत दहिया ने डिजाइन बना दिया था। उसके बाद रंजीत दहिया ने नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। कंपनी वालों ने वह इस्तीफा स्वीकार नहीं किया था। क्योंकि रंजीत दहिया ने 3 साल के अनुबंध **(Contract Sign)** पर हस्ताक्षर किया हुआ था।

फिर रंजीत दहिया कंपनी में दोपहर के 12 बजे जाते थे और शाम को 4 बजे वापस आ जाते थे। वे अपना काम जल्दी खत्म कर लेते थे और खाली बैठ जाते थे। रंजीत दहिया को खाली बैठे देखकर कंपनी के प्रबंधक **(Manager)** ने उनको बुलाया और पूछा था कि तुम क्या कर रहे हो? रंजीत दहिया ने दोबारा उनको बोला कि वह नौकरी छोड़ना चाहते हैं। लेकिन कंपनी वालों ने रंजीत दहिया को नौकरी छोड़ने से मना कर दिया था। फिर रंजीत दहिया अपने समय के अनुसार कंपनी जाते थे और जल्दी वापस घर आ जाते थे। ऐसा करने से रंजीत दहिया के वेतन पर भी प्रभाव पड़ता था।

रंजीत दहिया को समय का पालन न करते देखा कंपनी में काम कर रहे लोगों पर भी प्रभाव पड़ने लगा था। उसके कंपनी वाले भी रंजीत दहिया से परेशान हो गए थे, क्योंकि बाकी लोग जो काम करते थे वे सब भी अपने समय अनुसार कंपनी में आने लग गए थे। ऐसा देखकर कंपनी के प्रबंधक ने रंजीत दहिया को बुलाया और रंजीत दहिया को नौकरी छोड़ने के लिए बोल दिया था। लेकिन रंजीत दहिया को अनुभव प्रमाण पत्र देने से मना कर दिया था और रंजीत दहिया को समय का पालन न करने पर नौकरी छोड़ने का बहाना मिल गया था। इनको अनुभव प्रमाण पत्र नहीं चाहिए था। इनको सिर्फ नौकरी छोड़ने थी। इनके दोस्तों ने भी इनको नौकरी छोड़ने से रोका था।

रंजीत दहिया का नौकरी में मन नहीं लगा था, इसलिए उन्होंने नौकरी छोड़ दी थी और रंजीत दहिया किसी भी तरह की नौकरी नहीं करना चाहते थे, क्योंकि इनको ऐसा लगा कि ये नौकरी करने के लिए नहीं बने हैं। फिर रंजीत दहिया ने **Digital Moustache Platform** शुरू किया था और ज्यादातर उस पर **Mobile Application** बनाते थे और **Freelance Project** भी शुरू कर दिया था जैसे ही कोई अवधारणा **(concept)** आते थे उस अवधारणा को शुरू से लेकर अंतिम तक रंजीत दहिया ही पूरा करते थे। वह सब रंजीत दहिया को करना अच्छा लगा था। उसके बाद फ्रांस में जाने के लिए दोबारा मौका मिला था। पहले जब ये पेरिस गए थे, तब इन्होंने देखा कि वहां के लोग बॉलीवुड के दीवाने हैं। (निम्बुडा–निम्बुडा–निम्बुडा) जब रंजीत दहिया के साथ फ्रांसीसी लड़की काम कर रही थी और साथ में वह गाना गा रही थी। रंजीत दहिया को लगा कि उस लड़की को अंग्रेजी बोलना नहीं आता और न हिंदी बोलना आता। फिर ये हिंदी गाना कैसे गा रही थी। क्योंकि फ्रांसीसी लड़की को बॉलीवुड के गाने बहुत अच्छे लगते थे।

तब रंजीत दहिया को लगा कि वह बॉलीवुड का इतिहास पेरिस के लोगों को बताना चाहते थे और **Bollywood** की शुरुआत कैसे हुई थी यह सब दिखाना चाहते थे। रंजीत दहिया को 1 साल बाद **South France** के लॉ रोशेल शहर में भित्तिचित्र बनाने का मौका मिला था। जिस इमारत पर भित्तिचित्र बनाना था, उस इमारत को एक साल बाद तोड़ने वाले थे और वह भित्ति चित्र इमारत में रहने वाले लोगों के लिए बनाना था। फिर रंजीत दहिया ने बॉलीवुड के इतिहास की प्रदर्शनी **(Exibition)** लगाई, जिसमें **6 x 10 / 6 x 4** की 31 पेंटिंग लगाई थी। रंजीत दहिया ने सारे पैसे अपनी प्रदर्शनी पर लगा दिए थे। दो महीने से फ्रांस में रह रहे थे लेकिन ज्यादा पेंटिंग नहीं बिकी थी, फिर वापस मुंबई में आ गए थे और अपने काम की शुरुआत शून्य से की थी। उस समय इनके पास नौकरी भी नहीं थी और रहने के लिए घर भी नहीं था।

रंजीत दहिया एक महीना अपने दोस्त के साथ रहे थे और साथ–साथ घर भी ढूंढ रहे थे। जो इनको घर मिला था उसका किराया 8000 था। पैसे न होने की वजह से काफी दिन बिना खाए पिए भी निकाल देते थे। फिर दोबारा से **Freelance Project** शुरू कर दिया था। रंजीत दहिया हमेशा संघर्ष के लिए तैयार रहते हैं क्योंकि ये सकारात्मक सोच रखते हैं। जब रंजीत दहिया मुंबई में नौकरी कर रहे थे, तब ये मुंबई शहर के लिए कुछ अलग करना चाहते थे। फिर इन्होंने बॉलीवुड भित्ति चित्र बनाने के लिए सोचा था। इनके अनुसार मुंबई है तो सही, लेकिन मुंबई में बॉलीवुड का प्रतिनिधित्व वहां नहीं था।

फिर इन्होंने बहुत सारे प्रस्ताव काफी लोगों को दिए थे। क्योंकि इनके पास पैसे नहीं थे। इन सब काम के लिए अनुदान होना जरूरी था। फिर इन्होंने डायनापालों को भेजा और रंजीत दहिया को प्रयोजना दिलवाई थी। जब रंजीत दहिया ने प्रस्ताव दिए थे। तब किसी व्यक्ति का इनके पास फोन आया था। रंजीत दहिया से पेंट करने के लिए पूछा था, रंजीत दहिया पेंट करने के लिए मान गए थे, लेकिन उस व्यक्ति ने एक शर्त रखी थी कि ये सब उनके अंतर्गत होना था। यह बात सुनकर रंजीत दहिया को असुरक्षा **(Insecurity)** की भावना उत्पन्न होने लग गई थी, क्योंकि परियोजना का विकास रंजीत दहिया ने ही किया था। फिर भी रंजीत दहिया ने उस व्यक्ति की शर्त को स्वीकार कर लिया। इसके अलावा रंजीत दहिया के पास कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

फिर रंजीत दहिया को **Freelance Project** करने के 25000 रुपए मिले। पैसे मिलने के बाद इन्होंने अपने दोस्तों के साथ पार्टी की थी। फिर रंजीत दहिया ने एक घर की मालकिन से उसके घर की दीवार पर भित्ति चित्र बनाने के लिए पूछा था और इनको दीवार पर भित्ति चित्र बनाने की मंजूरी मिल गई थी। इन्होंने रात के 2 बजे तक अपने दोस्तों के साथ मिलकर दीवार को पूरी तरह से साफ कर दिया था। इन्होंने उस दीवार पर ''अनारकली'' भित्तिचित्र बनाया था। वह रंजीत दहिया द्वारा बनाया गया पहला भित्ति चित्र था जो पूरे शहर में प्रसिद्ध हो गया था। अनारकली भित्ति चित्र को देखने

के लिए बहुत सारे पत्रकार आए थे। सभी पत्रकारों ने भित्ति चित्र को देखकर बोला कि रंजीत दहिया बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। इन्होंने अपनी परियोजना 2012 में शुरू की थी और इनका मुख्य उद्देश्य बॉलीवुड के 100 साल का उत्सव मनाना था, क्योंकि 2013 में बॉलीवुड को 100 साल पूरे होने वाले थे।

अनारकली भित्ति चित्र बनाने के बाद इनको भित्तिचित्र बनाने के लिए एक और दीवार मिल गई थी। उस दीवार पर इन्होंने अमिताभ बच्चन का भित्ति चित्र बनाया था। जब अमिताभ बच्चन का भित्ति चित्र बना रहे थे, उस समय राजेश खन्ना की मृत्यु हो गई थी। फिर इन्होंने राजेश खन्ना का भी भित्ति चित्र बनाया था और यह भित्ति चित्र न्यूज पर भी दिखाया गया था। लेकिन एक व्यक्ति राजेश खन्ना का बहुत बड़ा प्रशंसक था और वह तीन दिन से रंजीत दहिया को ढूंढ रहा था और उस समय रंजीत दहिया बांद्रा के बैडंस्टैंड क्षेत्र में रहते थे। उसका परिचर जो था वह भी **NID** से ही था। उस व्यक्ति ने रंजीत दहिया के बारे में पूछा फिर **NID** वाले व्यक्ति ने बोला कि रंजीत दहिया तो उसका दोस्त है। फिर रंजीत दहिया का नंबर लिया था और रंजीत दहिया के पास बहुत बड़ा फूलों का गुलदस्ता लेकर आए थे, क्योंकि वह व्यक्ति राजेश खन्ना को बहुत पसंद करता था। गुलदस्ता देते समय वह रो रहा था और रंजीत दहिया द्वारा राजेश खन्ना का भित्ति चित्र बनाने पर धन्यवाद किया था।

लेकिन रंजीत दहिया के लिए यह भित्ति चित्र था, बल्कि इसके साथ लोगों की बहुत सारी यादें जुड़ी हुई थी और इनके ऐसे काफी सारे अनुभव रहे थे, क्योंकि जब रंजीत दहिया अमिताभ बच्चन का भित्ति चित्र बना रहे थे तब एक व्यक्ति ने इनको बोला कि – अमिताभ बच्चन का भित्ति चित्र क्यों बना रहे हो?, अमिताभ बच्चन बहुत बुरा व्यक्ति है। रंजीत दहिया कहते हैं कि सबके अपने–अपने विचार होते हैं और हम किसी को रोक नहीं सकते। रंजीत दहिया के मन में सिर्फ एक ही बात थी कि वह मुंबई शहर को वापसी शुरुआत देना चाहते थे। रंजीत दहिया के मन में यह मुख्य विचारधारा है जिसकी नियत अच्छी होती है, उसके काम अच्छे होने लगते हैं और इन सब में रंजीत दहिया विश्वास भी रखते हैं। ऐसे ही इन्होंने बहुत सारे भित्ति चित्र बनाए थे। फिर 2014 में **Street Art** वाले आये थे। यह एक **St + Art** संगठन है। ये भित्ति चित्र का आयोजन करते हैं। लेकिन रंजीत दहिया 2013 में स्ट्रीट आर्ट वालों के साथ दिल्ली में काम कर चुके थे। यह बहुत बुरे लोग थे, क्योंकि विदेशी कलाकारों के साथ अच्छे से पेश आते थे और भारत के कलाकारों को ज्यादा महत्व नहीं देते थे। रंजीत दहिया भित्ति चित्र में खुद का ही पैसा लगा रहे थे। वह भित्ति चित्र बहुत बड़ा था, उनको लेबर चाहिए थी और मजदूर का एक दिन का खर्च डाई, तीन हजार होता था।

रंजीत दहिया को कोई प्लैटफार्म नहीं मिला था। वह लटके हुए झूले पर बैठकर भित्ति चित्र बना रहे थे। फिर भी इनको लगा था कि पैसा दिखाई नहीं देगा। सिर्फ काम दिखाई देगा और वह भित्तिचित्र बना दिया था। उसके बाद स्ट्रीट आर्ट वाले मुंबई आए थे। उन्होंने रंजीत दहिया को बताया

कि **12 Floor / 154 Feet** की एक इमारत थी जिसमें बहुत सारे खड्डे थे। उस पर भित्तिचित्र बनाना था, तो रंजीत दहिया ने भित्ति चित्र बनाने के लिए बोला था। लेकिन **Street Art** वाले उस इमारत पर ब्राजील के कलाकार से भित्ति चित्र बनाना चाहते थे। लेकिन सब कलाकार उस इमारत को देखने के बाद भित्ति चित्र बनाने के लिए मना कर देते थे, क्योंकि वे सब कलाकार समतल सतह वाले क्षेत्र पर ही भित्ति चित्र बना सकते थे, लेकिन उस इमारत पर भित्ति चित्र बनाना रंजीत दहिया के लिए एक चुनौती पूर्ण था।

ऐसा नहीं था कि वह इनके लिए आसान था, क्योंकि वह चुनौती रंजीत दहिया के लिए भी थी। लेकिन रंजीत दहिया को अपने आप पर 100 प्रतिशत विश्वास था कि वह भित्ति चित्र बना देंगे। उनके लिए कोई बड़ी बात नहीं थी। फिर **Street Art** वाले रंजीत दहिया के पास आए थे और भित्ति चित्र बनाने के लिए बोल रहे थे। रंजीत दहिया ने पहले ही बोल दिया था कि वह भित्ति चित्र बना देंगे। फिर इन्होंने उस इमारत पर दादा साहेब फाल्के का भित्ति चित्र बनाया। वह भारत का सबसे बड़ा और सबसे ऊंचा भित्ति चित्र था। वह भित्ति चित्र बहुत अच्छा बना था। वह भित्ति चित्र देखने के बाद दादा साहेब फाल्के के पड़पोते ने रंजीत दहिया से संपर्क किया था और रंजीत दहिया को अपने घर की दीवार पर दादा फाल्के का भित्ति चित्र बनाने के लिए बोला था और अपने दादा साहेब फाल्के का भित्ति चित्र देखने के बाद तह दिल से धन्यवाद बोला था।

उसके बाद रंजीत दहिया द्वारा बनाए गए भित्ति चित्र का श्रेय **Street Art** वाले ले रहे थे और जब फिल्म बनाई गई थी तो फिल्म में रंजीत दहिया का **Logo** नहीं डाला था। उसके बाद रंजीत दहिया के पास बहुत सारे **Commerical Project** आते थे। बड़ी–बड़ी इमारतों पर भित्ति चित्र बनाने शुरू कर दिए थे। जब अमिताभ बच्चन का 75वां जन्मदिन था तब रंजीत दहिया ने भारत का सबसे ऊंचा **(25 Floor)** अमिताभ बच्चन का भित्ति चित्र बनाया था। उस भित्ति चित्र का प्रयोजक **Zee Clasic Channel** द्वारा किया गया था। उसके बाद रंजीत दहिया को भित्ति चित्र और प्रचार गतिविधियों के काफी सारे प्रोजेक्ट मिलते रहते हैं। **Netflixe** के साथ भी इन्होंने बहुत काम किया है। अब जिसको भी भारत में बड़ा भित्ति चित्र बनवाना होता है, तो वह रंजीत दहिया से ही संपर्क करते हैं। अभी भी रंजीत दहिया भित्तिचित्र बनाते हैं और साथ में बनाए गए भित्ति चित्रों को साड़ियों पर प्रिंट करवाते हैं। रंजीत दहिया आज भी जैसा सोचते हैं, वैसा ही करते हैं।

➢ प्रदर्शनियाँ :–

1. लॉ रोशेल (2010) :–

सबसे पहले रंजीत दहिया की प्रदर्शनी 2010 में फ्रांस के लॉ रोशेल शहर में लगी थी। उस समय शहर में 32वें अंर्तराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का जश्न मना रहे थे। अपनी प्रदर्शनी में इन्होंने **6 x 10, 6 x 4** की 31 पेंटिंग्स लगाई थी। उस प्रदर्शनी में रंजीत दहिया ने बॉलीवुड का इतिहास दर्शाया था।

2. डरबन (2011) :–

2011 में डरबन के एलाइंस फ्रांस के सहयोग से रंजीत दहिया की **Bollywood Art Project** पेंटिंग को डरबन के तीन स्थानों पर प्रदर्शित किया गया था।

3. नई दिल्ली (2013) :–

भारत में रंजीत दहिया की पहली प्रदर्शनी 2013 में दिल्ली में इंडियन इंटरनेशनल सेंटर के सहयोग में लगाई गई थी।

तृतीय अध्याय

- बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट के संस्थापक रंजीत दहिया
- इंडियाज बेस्ट डांसर सीजन 3 में रंजीत दहिया का अनुभव
- देश और विदेश में भित्ति चित्र बनाने का अनुभव

बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट के संस्थापक रंजीत दहिया

Bollywood Art Project (**BAP**) की शुरुआत बांद्रा के रणवार गांव से हुई, जो एक विचित्र क्षेत्र है, जहां 17वीं शताब्दी की विरासत वाली इमारतें हैं, जो उस समय की हैं जब बॉम्बे एक पुर्तगाली उपनिवेश था। बड़े लकड़ी के बरामदे, बाहरी सीढ़ियाँ, त्रिकोणीय छतें और लोहे के गेटों के साथ, ये घर न केवल एक अलग औपनिवेशिक प्रभाव दिखाते हैं, बल्कि गगनचुंबी इमारतों से भरे शहर में भी अलग दिखते हैं। वे रंजीत दहिया के कला कैनवस के रूप में भी काम करते हैं। बीएपी ने रणवार गांव की सुस्त गलियों को जीवंत स्ट्रीट आर्ट केंद्र में बदल दिया है , जिसकी तुलना न्यूयॉर्क के ग्रीनविच विलेज, लंदन के विनवुड आर्ट डिस्ट्रिक्ट, दिल्ली के हौज खास और दुनिया के अन्य प्रमुख कला केंद्रों से की जा सकती है।

- बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट ने बॉलीवुड को जीवंत कर दिया :–

रंजीत दहिया ने जब से देखा कि मुंबई में बॉलीवुड का वह आकर्षण नहीं है , तब से उन्होंने शहर को रंगना शुरू कर दिया है । इसके बाद, उन्होंने घरों की दीवारों पर पेंटिंग करके उन्हें पुराने जमाने के अभिनेताओं और पंथ क्लासिक्स की यादों में बदलना शुरू कर दिया। उन्होंने अभिनेताओं और पंथ क्लासिक्स के चित्रों को प्रदर्शित करने वाली एक प्रदर्शनी भी लगाईय उन्होंने इसे “ फिल्मनगरी का सफर ” नाम दिया। यह प्रदर्शनी हिंदी सिनेमा के लिए एक श्रद्धांजलि थी और हिंदी सिनेमा के 100 साल पूरे होने का जश्न था।

BAP द्वारा बनाया गया पहला भित्ति चित्र अनारकली का था । इस परियोजना का दुनिया भर के बॉलीवुड प्रेमियों पर बहुत प्रभाव पड़ा है। इतना कि **BAP** ने एक कवर स्टोरी के रूप में न केवल भारतीय राष्ट्रीय दैनिकों के पन्नों पर सुर्खियाँ बटोरीं, बल्कि द ट्रिब्यून और द वॉल स्ट्रीट जर्नल जैसे अखबारों में भी इसे प्रमुखता से दिखाया गया।

द वॉल प्रोजेक्ट रंजीत दहिया के लिए प्रेरणा का स्रोत था। द वॉल प्रोजेक्ट के तहत शहर की दीवारों को सार्थक भित्तिचित्र पेंटिंग के साथ जीवंत किया गया। हालाँकि रंजीत दहिया ने यह कला सोनीपत के एक छोटे से गाँव में सीखी थी, जहाँ उन्हें दुर्व्यवहार के लिए स्कूल से निकाल दिया गया

था, लेकिन उन्हें कभी नहीं लगा कि घरों की सफेदी करना और उन्हें रंगना भविष्य में कभी काम आ सकता है।

वह जो भी भित्तिचित्र बनाते हैं, उस पर उन्हें 30,000 से 40,000 रुपये तक का खर्च आता है। यह लगभग 10 दिनों में बनकर तैयार हो जाता हैय लेकिन अक्सर मालिकों को भित्तिचित्र बनाने के लिए अपने घर की दीवार उधार देने के लिए मनाना मुश्किल होता है। इसके बावजूद वह सकारात्मक हैं, वह सपनों के शहर की हर दीवार को अपने भित्तिचित्रों के लिए "संभावित दीवार" के रूप में देखते हैं।

➢ स्ट्रीट आर्टिस्ट रंजीत दहिया बॉलीवुड सिटी में नाम कमा रहे हैं:–

रंजीत दहिया एक कलाकार, उद्यमी, प्रेरक, वक्ता और कला एवं डिजाइन प्रोफेसर हैं। इन्होंने **Bollwood Art Project (BAP)** की शुरुआत की है। उन्होंने सोचा था कि यह भित्तिचित्र मुंबई के बांद्रा उपनगर के लोगों के घरों की दीवारों पर बनाए जाएंगे। इनके द्वारा बॉलीवुड के लोकप्रिय हिंदी सिनेमा के संस्मरण में 2012 में मुंबई भारत में शुरू की गई परियोजना है।

यह कलाकार रंजीत दहिया के दिमाग की उपज है और इनका उद्देश्य पिछले शताब्दी में बॉलीवुड के सिनेमाई इतिहास का मानचित्र करना है। इनके पास उद्योग में विभिन्न प्रकार के संचार डिजाइन परियोजनाओं के साथ–साथ अपने स्वयं के स्टार्टअप, डिजिटल मूछों में 8 वर्षों से अधिक का अनुभव रहा है। इनको हमेशा से स्ट्रीट आर्ट और हाथ से पेंट किए गए बॉलीवुड पोस्टर का शौंक रहा है। अब तक का बनाया गया पहला भित्ति चित्र 1953 की फिल्म 'अनारकली' है, जो 20 फीट 6.1 मीटर का है। रंजीत दहिया 18 वर्षों से इस विषय पर काम कर रहे हैं।

मुंबई – इसे सपनों का शहर यूं ही नहीं कहा जाता। जैसे ही आप यहां कदम रखते हैं, यह आपको एक जादू में बांध लेता है क्योंकि आप इसकी कई अनोखी खूबियों से प्रभावित हो सकते हैं। वड़ा पाव और लोकल ट्रेन, अंतहीन बारिश और बिल्लियाँ, ऊंची इमारतें और चमक–दमक मुंबई से प्यार हो जाना बहुत आसान है और इस छोटे से हलचल भरे द्वीप की पृष्ठभूमि में हमेशा जीवन से बड़ी सिल्वर स्क्रीन बॉलीवुड होता है। मेटो और मधुबाला का घर, यह शहर रोमांस, सपनों और किस्मत का एक मादक मिश्रण है।

मुंबई की यही रोमांटिक उदासी रंजीत दहिया को उनके सपनों के शहर और बॉलीवुड की और खींच लाई। जिनकी खुद की जीवन कहानी किसी ब्लॉकबस्टर से कम नहीं है। दीवारों पर सफेदी करने

से लेकर बॉलीवुड के चहेते सितारों की बड़ी–बड़ी भित्तिचित्र बनाने तक, रंजीत को उनकी पेंटिंग्स से अलग करने वाली एक सीढ़ी है।

➢ बॉलीवुड कला परियोजना :–

रिश्ते में तो हम तुम्हारे **BAP** लगते हैं !

एक खास तरह के दर्शक गैलरी में जाएंगे, लेकिन सड़क पर एक करोड़पति भी कला देख सकता है और एक भिखारी भी। कोई सीमा नहीं है। – रंजीत दहिया

सार्वजनिक स्थानों पर कला लोगों को एक साथ लाने की शक्ति रखती है। यह इस अर्थ में वास्तव में लोकतांत्रिक है कि यह सभी प्रकार के लोगों को एक साथ लाता है और उन्हें इस प्रक्रिया में भाग लेने का मौका देता है, चाहे वे दर्शक के रूप में हों या खुद कलाकार के रूप में। इसी तरह, बॉलीवुड वह महत्वपूर्ण कड़ी है जो सभी क्षेत्रों के लोगों को जोड़ती है। यह सचमुच एक भावना है, जिसे मुंबई की तेज–तर्रार जिंदगी बहुत खूबसूरती से कैद करती है। बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट (**BAP**) इन दोनों पहलुओं को जोड़ता है।

यह एक शहरी कला परियोजना है जिसका उद्देश्य मुंबई की सड़कों को बॉलीवुड के जीवंत स्मारक में बदलना है। तब से हमने मुंबई, दिल्ली और चेन्नई की लगभग हर प्रमुख इमारत को रंगा है। हमने फ्रांस और अमेरिका में भी भित्ति चित्र बनाए हैं, जिससे 3 देशों में हमारे द्वारा चित्रित बॉलीवुड भित्ति चित्रों की संख्या 70 हो गई है।

बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट के संस्थापक और सदस्य ने सोहो हाउस मुंबई में अभिनेता और पार्श्व गायक किशोर कुमार की याद में उनकी एक शानदार भित्तिचित्र बनाई। यहाँ, उन्होंने अपनी कलात्मक प्रक्रिया, पुरानी यादों की शक्ति और अपनी शहरी कला पहल की स्थापना के बारे में बताया हैं।

मुंबईः भारत का विशाल महानगर, जहाँ चमचमाती गगनचुंबी इमारतें सूरज की ओर ऊपर की ओर फैली हुई हैं और राजधानी के निवासी किसी और जगह से अलग असाधारण चहल–पहल से भरे हुए हैं। यह बॉलीवुड का घर भी है, एक सौ साल पुराना फिल्म संस्थान जहाँ – वे कहते हैं – भारत के सपने बनते हैं। इसके अच्छे दिखने वाले अभिनेताओं, जीवंत रंगों, विस्तृत नृत्य और समृद्ध कहानी कहने की कला (चाहे वह यथार्थवाद हो, दिल को छू लेने वाली करुणा हो या एक अच्छी पारिवारिक गाथा) ने दुनिया भर के दर्शकों को आकर्षित किया है। फिर भी, सिनेमा में इतने निवेश वाले शहर के

लिए, कला के रूप में सार्वजनिक प्रशंसा शायद ही कभी मिलती है। रंजीत दहिया कहते हैं – 'मैं इन भित्ति चित्रों को बड़े पैमाने पर बनाता हूं क्योंकि मैं चाहता हूं कि लोग उन्हें देखें।

बॉलीवुड़ आर्ट प्रोजेक्ट के पीछे दिमाग और आत्मा रंजीत दहिया को स्कूल के दिनों से ही पेंटिंग का शौक रहा है। वे याद करते हैं, "ये अपने भाई के कलेक्शन से पेंट चुराते थे।" "ये अपनी गणित की किताब में पेंटिंग बनाते थे और अपने भाई और शिक्षक दोनों से डांट खाते थे। लेकिन इन्होंने कभी पेंटिंग करना बंद नहीं किया। इनको समस्या समझ में नहीं आई। इनको लगता है कि कभी–कभी जिद और दृढ़ संकल्प ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं।"

पेरिस में, उन्होंने दुनिया भर के कई कलाकारों से मुलाकात की और पाया कि उन सभी में बॉलीवुड के प्रति प्रेम और आकर्षण था। यहीं पर उन्होंने फिल्म सरकार राज का पोस्टर बनाया था, जिस पर बाद में अमिताभ बच्चन ने खुद हस्ताक्षर किए थे। यह उनकी सफलता की पराकाष्ठा थी जिसे उन्होंने कई सालों बाद हासिल किया।

पेरिस में अपनी सफलता और बॉलीवुड के बारे में जानकारी फैलाने की अपनी इच्छा से प्रेरित होकर, उन्होंने अपने द्वारा चित्रित 31 पोस्टरों की एक प्रदर्शनी आयोजित की, जिसमें बॉलीवुड़ के इतिहास और आज इसे जो दर्जा मिला है, उसे दर्शाया गया। इससे उनका जुनून और बढ़ गया और बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट (बीएपी) के माध्यम से मुंबई को बॉलीवुड के शहर के रूप में और अधिक आकर्षक बनाने का विचार उनके मन में आया।

इसके प्रति अपने जुनून के बारे में बात करते हुए वे कहते हैं, "हम बॉलीवुड के साथ बड़े हुए हैं। रंजीत दहिया लगता है कि 70– 90 प्रतिशत लोग ऐसे ही हैं। यह समाज से चीजें लेता है और उन्हें वापस

देता है, हालाँकि कुछ अतिशयोक्ति और मसाला के साथ । रंजीत दहिया भी शहर को कुछ वापस देना चाहते था।" 1970 के दशक के चमकीले मूवी पोस्टर्स से प्रेरित होकर, दहिया बॉलीवुड के पुराने आकर्षण को

चित्रित करना पसंद करते हैं – क्लासिक बॉलीबुड के अभिनेता और अभिनेत्रियाँ।

बीएपी के साथ उनकी यात्रा भी अप्रत्याशित रूप से शुरू हुई। वे कहते हैं, "कुछ भी योजनाबद्ध नहीं था।" उन्होंने इस विचार को तब और बल दिया जब 2013 में बॉलीवुड अपनी प्रसिद्धि और अस्तित्व के 100 साल पूरे होने का जश्न मना रहा था।

निश्चित रूप से उनके पेशे में कई तरह के खतरे हैं। दहिया मानते हैं कि उन्हें ऊंची इमारतों से गिरने का डर है, जिनकी दीवारों पर पेंटिंग करने के वे आदी हैं।

हालांकि, वे अपने डर को एक तरफ रखते हैं। और चुनौतीओं का सामना करते हैं। ''डर सिर्फ दिमाग में है। पेटिंग शुरू करने के बाद रंजीत दहिया सब कुछ भूल जाते हैं। इसमें उन्हें मज़ा आता है और जब चुनौतियां पूरी हो जाती हैं, तो इनके अंदर एक तरह की खुशी और संतुष्टि होती है।'' जब उनसे दीवारों पर पेंटिंग करने के पीछे की वजह पूछी गई, तो उन्होंने बताया कि उनके अनुभवों ने उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित किया, यानी उनके शुरुआती करियर में सफेदी करना और विज्ञापनों के पोस्टर पेंट करना।

रंजीत दहिया का मानना है कि कला की चिंगारी हमेशा से ही रही है। उनके जीवन में आई सभी परिस्थितियों ने उन्हें उस चिंगारी पर भरोसा करने के लिए प्रेरित किया। इनके लिए कला ध्यान की तरह है। ये दीवार को देखना, क्या रंगना है यह तय करना, सभी रंगों का इस्तेमाल करना पसंद है। रंजीत दहिया बस इसे अलग–अलग तरीकों से देखते रहते हैं। वे आगे बताते हैं कि कैसे पेंटिंग उनका सबसे बड़ा हुनर और ताकत बन गई है। ''लोग इन्हें रंजीत की जगह बीएपी कहते हैं। इनका काम इनकी पहचान बन गया है।''

इनकी रचनात्मक प्रक्रिया इनकी सहजता का प्रतिबिंब है। ये दीवारों को अपने कैनवास के रूप में देखते हैं और तुरंत काम पर लग जाते हैं और घर के मालिकों से अनुमति लेते हैं, अपने विचार विकसित करते हैं, आवश्यक धनराशि अलग रखते हैं और अपने विचार को वास्तविकता में बदलना शुरू करते हैं। पूरी पेंटिंग प्रक्रिया में लगभग 10 दिन लगते हैं। ये सड़कों की दीवारों पर पेंटिंग करने के विचार को भी पसंद करते हैं, क्योंकि यह बड़े दर्शकों को आकर्षित करता है और इसलिए इनका प्रभाव बहुत अधिक होता है। ये कहते हैं, ''कला दीर्घाओं में आपको बहुत सीमित दर्शक मिलते हैं, लेकिन जब कला सड़कों पर आती है, तो हर कोई दर्शक बन जाता है।''

इतने बड़े उपक्रम के कई निहितार्थ रहे होंगे। इस पर विचार करते हुए, उन्हें दिल्ली में 1953 की फिल्म श्री 420 की अभिनेत्री नादिरा की अपनी पेंटिंग याद आती है, जिसमें वह सिगरेट पी रही हैं और हाथ में वाइन का गिलास थामे हैं। इस पेंटिंग का उद्देश्य धूम्रपान और शराब पीने वाली महिलाओं की छवि को सामान्य बनाना था, न कि उस पर नाराजगी जताना और इस तरह महिलाओं को सशक्त बनाना। इस आधार पर इन्हें काफी मान्यता मिली। एक और व्यापक प्रतिक्रिया विस्मय की थी। मुंबई

की दीवारें कभी नीरस या दाग– धब्बों से भरी हुई थीं। अब वे भितिचित्रों और चित्रों की भरमार में दिखाई देती हैं। इस बदलाव में रंजीत दहिया को बहुत बड़ा हाथ रहा है।

जब कोई एमटीएनएल बिल्डिंग की दीवार पर सजे उनके दादा साहब फाल्के भितिचित्र या बांद्रा के चौपल रोड पर अनारकली के पास से गुजरता है, तो वह शहर में इनसे जुड़ी भव्यता की विशालता को महसूस करता है।

रंजीत दहिया की योजना अपनी पेंटिंग में बॉलीवुड को दर्शाना जारी रखने की है। वह जीवन में आने वाली हर चीज का बेसब्री से इंतजार करते हैं और अपने हुनर को पूरी तरह से हासिल करने की भूख रखते हैं। वह विनम्रता से कहते हैं, ''मैं शायद अपनी क्षमताओं का 70 प्रतिशत हासिल कर चुका हूं। मैं अभी भी 100 प्रतिशत हासिल करने की कोशिश कर रहा हूं।''

इसके अलावा, मेहनती चित्रकारों और कलाकारों को सलाह देते हुए, वे किसी भी क्षेत्र में कड़ी मेहनत के महत्वपर जोर देते हैं। उनका मानना है कि ''लोग कड़ी मेहनत से डरते हैं और भागते हैं।'' वे प्रतिभा, जुनून और प्रयास के साथ–साथ खुद को और दूसरों को समझने में अनुभव की शक्त के संयोजन पर भी जोर देते हैं।

रंजीत दहिया वास्तव में कला की शक्ति में बदलाव लाने के साथ– साथ कला की निरंतर बदलती प्रकृति में भी विश्वास करते हैं। अपने विचारों पर काम करने और भारतीय संस्कृति के सबसे लोकप्रिय पहलुओं में से एक को एक अनूठा और नया रूप देने की,उनकी विशिष्ट क्षमता उन्हें इस उद्यम में अग्रणी बनाती है। रंजीत दहिया कला और ज्ञान को अधिक से अधिक लोगों तक फैलाने के लिए निरंतर काम करते हैं और जैसा कि वे कहते हैं, ''कला का उद्देश्य भावनाओं को जगाना है। कला हम सभी के लिए है।''

असल में, बीएपी अभी भी एक व्यक्ति की टीम है, जिसमें कभी–कभी ठेका मजदूर रंजीत को पेंट लाने, उपकरण लाने और ले जाने में मदद करते हैं। वित्तीय समस्या भी एक बड़ी समस्या है।
रंजीत दहिया ने बताया, ''अगर मैं कंपनियों को प्रस्ताव भेजता हूं, तो वे फंड देने के लिए तैयार हैं। लेकिन वे कलाकृतियों में प्रायोजक लोगो की मांग करेंगे । व्यावसायिक व्यवस्थाओं में यही समस्या है। मुझे ये सब टेंशन ही नहीं चाहिए। यह मेंरे लिए एक जुनूनी प्रोजेक्ट है। इसलिए, मैं अपनी जेब से भुगतान कर रहा हूं।'

इंडियाज बेस्ट डांसर सीजन 3 में रंजीत दहिया का अनुभव

- **India's Best Dancer Season – 3 :-**

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन का घरेलू डांस रियलिटी शो, 'इंडियाज बेस्ट डांसर 3, सिनेमा के 10 साल, बेमिसाल का जश्न मना रहे थे, जिसमें भारतीय सिनेमा की सफलता में सितारों जितना ही योगदान देने वाले परदे के पीछे के लोगों का सम्मान करते हुए इस शो में मुंबई के (जी 7) मल्टीप्लेक्स बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट के संस्थापक रंजीत दहिया नजर आए थे।

बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट के रंजीत दहिया मुंबई की सड़कों को विभिन्न पीढ़िया के फिल्मी सितारों के विशाल चित्रों से सुशोभित करते रहे हैं और इंडियाज बेस्ट डांसर में इन्होंने बॉलीवुड के प्रति अपने प्रेम के बारे में बात की थी।

इन्होंने बताया कि उनकी यात्रा आसान नहीं थी, इनको बहुत संघर्ष करना पड़ा था। रंजीत दहिया बताते हैं कि जब इन्होंने प्रोजेक्ट शुरू किया तो उनके पास पर्याप्त पैसे नहीं थे। लेकिन इनका सपना था कि ये मुंबई में कुछ करें। ताकि लोग मुंबई शहर में बॉलीवुड को देखने आए।

रंजीत दहिया ने आगे बताया, कि बॉम्बे को 'सिनेमा की नगरी' के नाम से जाना जाता है। लेकिन वहां बॉलीवुड का कोई प्रतिनिधित्व नहीं था, इसलिए रंजीत दहिया इसे बदलना चाहते थे और कुछ बनाना चाहते थे।

जब रंजीत दहिया इंडियाज बेस्ट डांसर के शो में आए थे तब इनको बॉलीवुड के भित्ति चित्र बनाते हुए 11 वर्ष हो गए थे। तब तक ये भारत भर में 40 से अधिक भित्ति चित्र बना चुके थे।

रंजीत दहिया के जुनून की सराहना करते हुए बॉलीवुड स्टार और तीन जजों में से एक सोनाली बेंद्रे ने कहा था – पहले फिल्म के पोस्टर पेंट किए जाते थे, लेकिन अब बदलते समय के साथ पेंटिंग का चलन फीका पड़ गया और डिजिटल पोस्टर तस्वीर में आ गए। लेकिन अब रंजीत दहिया ने वो दिन याद दिला दिए। फिर सोनाली बेंद्रे ने रंजीत दहिया से कहा – आप बहुत भाग्यशाली कलाकार हैं और आपका काम सचमुच अद्‌भुत है।

फराह खान ने कहा जब भी मैं सी लिंक से गुजरती हूँ और रंजीत दहिया द्वारा बनाए गए भित्ति चित्रों को देखती हूँ तो हमेशा यही चाहती हूँ कि रंजीत दहिया फराह खान की किसी फिल्म का भित्ति चित्र बनाएं।

विशेष मेहमानों के लिए शाम को यादगार बनाते हुए, 'टेरेंस लुईस, प्रतियोगी और रंजीत दहिया प्रतिष्ठित गीत ''खाईके पान बना रसवाला' गाने पर नृत्य किया था। और इंडियाज बेस्ट डांसर सीजन–3 में इनका बहुत अच्छा अनुभव रहा है।

देश और विदेश में रंजीत दहिया द्वारा भित्तिचित्र बनाने का अनुभव

यह बहुत व्यावसायिक है। भारत और विदेश की सामग्री बहुत अलग–अलग है। भारत और विदेश के रंगों में और ब्रश में बहुत अंतर है। भारत में रंजीत दहिया का भित्तिचित्र बनाने का अनुभव बहुत अच्छा रहा है, लेकिन विदेश में रंजीत दहिया का भित्तिचित्र बनाने का अनुभव ज्यादा अच्छा रहा है।

रंजीत दहिया का कहना है कि विदेश में इंसान की सुरक्षा का अधिक ध्यान रखा जाता है। जब रंजीत दहिया भित्तिचित्र बनाने के लिए दुबई में स्थित **Yas Island** गए, तब वहां पर **Bollywood** के **IIFA Award Program** के दौरान रंजीत दहिया को एक **Wall Paint** करना था।

विदेश में भित्ति चित्र बनाने के लिए सीढ़ी तह **(Stair Folding)** का प्रयोग किया जाता है।

विदेश में भित्ति चित्र बनाने वालों की सुरक्षा को मुख्य आधार माना जाता है और विदेश में काम करने वाले व्यक्ति की सुरक्षा का बहुत ध्यान रखा जाता है।

चतुर्थ अध्याय

- भित्ति चित्रकला में रंजीत दहिया का योगदान

भित्ति चित्रकला में रंजीत दहिया का योगदान

भित्ति चित्रकला के इतिहास में कुछ ऐसा माना जाता है कि भित्ति चित्रकला की उत्पत्ति पूरा पाषाण युग के दौरान हुई थी, जो ये भित्ति कला की जाती थी। वे चित्र गुफाओं, कब्रों या छतों पर पत्थरों पर चित्रित किए गए थे। कई भित्ति चित्र, कई तरह की कथाओं पर चित्रित किए जाते थे। पर समय के साथ–साथ भित्ति चित्र में कुछ बदलाव देखने को मिलते गए और कला में कई कलाकारों ने भित्ति कला में अपना बढ़–चढ़कर योगदान दिया, जो की बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसी प्रकार रंजीत दहिया भारतीय भित्ति चित्रकार के रूप में अपना अहम स्थान रखते हैं।

भारतीय भित्ति चित्रकला और उनके विकास में उनकी अहम भूमिका रही है। उन्होंने देश व विदेश में कई तरह के भित्ति चित्र बनाकर अपना बहुत बड़ा योगदान दिया है। रंजीत दहिया ने भित्ति चित्र की शुरुआत माता सरस्वती के भित्ति चित्र से की थी और फिर मुंबई में बॉलीवुड को लेकर कई विशाल भित्ति चित्र बनाएं और भीति चित्र को एक नए मोड़ पर लेकर आए, और रंजीत दहिया ने अपनी कला प्रदर्शनियों की शुरुआत 2010 में लॉ रोशेल में 32 वें अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में की थी और फिर 2011 में डरबन शहर के तीन स्थानों पर प्रदर्शित किया और 2013 नई दिल्ली में लगाई थी।

इस प्रकार से रंजीत दहिया ने भारतीय भित्ति चित्रकला में अपना योगदान दिया और कला की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने कला के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाई। रंजीत दहिया ने कई कलाकारों को लेकर विभिन्न भित्ति चित्र बनाएं और जिन कलाकारों का भित्ति चित्र अच्छा होता था तो रंजीत दहिया उनको अपने साथ कार्य करने के लिए साथ रखते थे।

रंजीत दहिया ने अपने जीवन काल में भित्ति चित्रकला के साथ विभिन्न कलाओं में भाग लिया था। इन्होंने नुकड़ कला में भी कार्य किया और रंजीत दहिया ने छापा चित्रकला में भी कार्य करके छापा कला में भी अपना अहम योगदान दिया और **NID** में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात, कई शुरुआती भित्ति चित्र में अपने कार्य को सबके सामने लेकर गए और रंजीत दहिया ने बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट को लेकर बहुत कार्य किया और बॉलीवुड जगत को सबके सामने लाने में अहम भूमिका निभाई और इन्होंने सरकार फिल्म के पोस्ट को बनाया और कई फिल्म अभिनेताओं के भित्ति चित्र बनाए जैसे अमिताभ बच्चन के भित्ति चित्र, और मधुबाला के भित्ति चित्र बनाएं और इरफान खान, राजेश खन्ना आदि अभिनेता के भित्ति चित्र बनाए थे।

रंजीत दहिया एक बार सात दिन के लिए पेरिस गए थे, जो कि पेरिस में एक **Sekonda Cinema Show** होने वाला था। भारत में से दो कलाकार गए थे। जो रंजीत दहिया और अमिताभ बच्चन गए थे और वहां पर रंजीत दहिया ने पेरिस में सरकार राज फिल्म का भित्ति चित्र बनाकर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

रंजीत दहिया ने कई कंपनी में भी काम किया था और कई डिजिटल कार्य भी किया था। रंजीत दहिया ने बॉलीवुड में **BAP** प्रोजेक्ट शुरू किया और जिनके वह संस्थापक रहे। रंजीत दहिया ने **Freelance Project** शुरू करके कला के जगत में नई क्रांति का उदय किया था और अपना योगदान दिया था। रंजीत दहिया ने देश से विदेश तक भित्ति चित्रकला का परचम लहराया और अपनी व अपने देश की कला को विदेश तक लेकर गए और रंजीत दहिया ने बड़ी–बड़ी इमारतों पर चढ़कर कई भित्ति चित्र को बनाया और अपना व अपने देश का नाम पूरे विश्व में दिखाया और अमिताभ बच्चन के 75 में जन्मदिन पर अमिताभ बच्चन का 25 फ्लोर का भित्ति चित्र बनाया था, जिसको पूरे बॉलीवुड ने देखा। व **South France** में भित्ति चित्र बनाने का मौका मिला और फिर रंजीत दहिया ने भित्ति चित्र को बनाया था।

रंजीत दहिया ने भारतीय भित्ति चित्रकला को बहुत आगे तक लेकर गए और कई बार उनको सम्मानित किया गया और भित्ति चित्रकला में रंजीत दहिया का बहुत बड़ा योगदान रहा। भारतीय कला में रंजीत दहिया आज भी भित्ति चित्रों को लेकर बहुत कार्य कर रहे हैं और आज भी रंजीत दहिया किसी न किसी इमारत की खोज में लगे रहते हैं, जिस पर वह भित्ति चित्र को बना सके।

अतः हम कह सकते हैं कि रंजीत दहिया भारतीय भित्ति चित्रकारों में से एक है। कला के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान है और कला जगत में उनका भी अलग से नाम लिया जाने लगा है, और कला को बढ़ाने में भी उनका योगदान अहम स्थान रखता है।

पंचम् अध्याय

- रंजीत दहिया के साथ साक्षात्कार

प्र01. आपका जन्म कहां हुआ? और अपनी शिक्षा के बारे में बताएं?

उत्तरः— मेरा जन्म 19 अगस्त 1978 को सोनीपत के घड़ी ब्राह्मण गांव में हुआ। मैंने अपनी दसवीं तक की शिक्षा एस.एम. हिंदू वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सोनीपत से प्राप्त की। 11वीं की शिक्षा हिंदू कॉलेज, सोनीपत से की। 11वीं की शिक्षा प्राप्त करने के 3 साल बाद मैंने 12वीं की शिक्षा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (**IGNOU**) इग्नू से प्राप्त की। इसके साथ—साथ फाइन आर्ट के लिए चंडीगढ़ और दिल्ली विश्वविद्यालय में आवेदन किया। दोनों विश्वविद्यालय की दाखिला सूची में मेरा नाम आ गया था। लेकिन मैंनें चंडीगढ़ विश्वविद्यालय को चुना और 4 साल में प्रिंटमेकिंग से स्नातक की डिग्री हासिल की। फिर मुझे नेशनल इंस्टीट्यूट आफ डिजाइन (**NID**) के बारे में बताया, जो दिल्ली में है। मैंने पहली बार **NID** के लिए आवेदन किया जो पास नहीं हुआ। फिर मैंने एक साल तक अच्छे से तैयारी की, दूसरी बार मेरा **NID** टेस्ट पास हो गया और अहमदाबाद में नेशनल इंस्टीट्यूट आफ डिजाइन से स्नात्ताकेत्तर की डिग्री प्राप्त की थी।

प्र02. अपने माता—पिता और परिवार के बारे में बताएं?

उत्तरः— मेरे पिता का नाम श्री कृष्णा दहिया है, जो हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड में सरकारी नौकरी करते थे और अब सेवानिर्वित (**Retire**) हो चुके हैं। माता का नाम श्रीमती प्रकाशो देवी है, जो शुरू से ग्रहिणी है। हम चार भाई—बहन हैं। मेरे सबसे बड़े भाई का नाम कुलदीप है जो स्कूल में सरकारी ड्रांइग अध्यापक है। उससे छोटे भाई का नाम बलजीत है। उनकी एक फैक्ट्री है जिसमें अलमारियां बनती हैं। मेरी बड़ी बहन का नाम दिनेश है और उसकी शादी हो चुकी है। वह भी ग्रहिणी है।

प्र03 पढ़ाई खत्म होने के बाद काम की शुरुआत कहां से की?

उत्तरः— मैंनें दिल्ली में ऑन **(Confederation of India Industry (CII)** और **Federation of Indian chambers of Commerce and Industry (FICCI)** के साथ अपने काम की शुरुआत की, इसमें ज्यादातर प्रकाशन परियोजना होती थी। मैंने एक साल तक इनके साथ काम किया। भारत के जो भी अलग—अलग सेक्टर हैं उनमें — **Automobile Industry, Call Industry, Entertainment Industry** इनकी अलग—अलग रिपोर्ट बनानी पड़ती थी। शुरुआत में मैंने ये काम बहुत किया। इस काम को अकृतज्ञ कार्य (**Donkey Work**) बोलते हैं। ये सब जरुरी होता है, सॉफ्टवेयर को संभालने के लिए। अगर हम इसमें कोई भी अवधारणा बनाते हैं तो उसको निष्पादित

करना बहुत जरूरी होता है। निष्पादित करने के लिए औजार होना जरूरी है और औजारों को कैसे प्रयोग किया जाना चाहिए और ये सब मुझे एक साल के अंदर बहुत अच्छे से आ गया था।

प्र04. क्या आपके परिवार में कोई कला से संबंधित है?

उत्तर :– हां, मेरा बड़ा भाई, सरकारी चित्रकारी शिक्षक है। जब वह चित्र बनाते थे तब मैं भी उनके ब्रश और रंग उठाकर चित्र बनाने लग जाता था। लेकिन गुस्से में मेरे से रंग और ब्रश छीन लेते थे और मुझे बहुत डांटते थे। मैंने उनको बोला कि मैं भी एक अच्छा कलाकार बन कर दिखाऊंगा। तब से ही मैंनें इस कला को एक चुनौती के रूप में स्वीकार कर लिया था और आज मैं एक भित्तिचित्र कलाकार बन गया हूँ।

प्र05 कला के बारे में प्रेरणा कहां से मिली ?

उत्तरः– प्रेरणा मुझे शरावणी (लोगों को देखकर) से मिली। उनको देखकर मेरे अंदर जुनून पैदा हो गया। जब मैं प्रतियोगिता में जाता था तो उसके लिए ज्यादातर अभ्यास करना होता था। अभ्यास करने के लिए मुझे क्लास छोड़नी पड़ती थी। क्लास छोड़ने पर कभी विज्ञान वाले अध्यापक और कभी गणित वाले अध्यापक से डांट सुननी पड़ती थी। हाथ से बनाने की प्रक्रिया में मुझे बहुत मजा आता था, क्योंकि वो एक दुआ की तरह लगती थी जैसे की बहुत शानदार। मुझे अंतिम परिणाम से लेना देना नहीं था। मुझे सिर्फ शुरू से अंतिम तक की प्रक्रिया तक काम करना बहुत अच्छा लगता था। जिसमें मुझे अपनी संतुष्टि ज्यादा प्रिय थी। मैं खुद ही अपनी बनाई पेंटिंग या चित्र का विश्लेषण कर लेता था कि वह अच्छी बनी है या इसमें कोई कमी है। जब तक किसी भी चित्र में मेरी संतुष्टि नहीं होती थी तब तक मैं चित्र की कमियों को दूर करता रहता था। 100 प्रतिशत कोई भी चित्र अच्छा नहीं होता, 80प्रतिशत, 90प्रतिशत तक ही अच्छा चित्र बन पाता है।

प्र06 पेंटिंग करने का ख्याल कहां से आया ?

उत्तरः– ब्रश चलाना तो शुरू से ही आता था, जब चंडीगढ़ विश्वविद्यालय में फाइन आर्ट में गए। तब वहां अलग–अलग अभ्यास होते थे जैसे – **Life study, Naturestudy, Serigraphic Gink Plate,** करना। **Wood cut** प्रिंट मेंकिंग में तकनीक ज्यादा महत्वपूर्ण होती थी, जो पेंटिंग वाले विद्यार्थी होते थे तब मैं उनके साथ पेंटिंग कर लेता था।

प्र07 सबसे पहले आपने किसकी पेंटिंग बनाई ?

उत्तर :– जब मैं पांचवी कक्षा में था तब मैंने तोते की पेंटिंग बनाई थी। मेरे द्वारा बनाई गई तोते की पेंटिंग देख कर सर ने मुझे बोला ये तुमने बनाई है। मैंने कहा– हां, सर मैंने बनाई है। सर ने मुझे कहा दोबारा बना कर दिखाएं। दोबारा बनाकर दिखाने पर भी सर को विश्वास नहीं हुआ था, क्योंकि तोते की पेंटिंग बहुत अच्छी बनी थी और पांचवी कक्षा से ही मेरे हाथ का काम बहुत अच्छा था। जब मैं सातवीं कक्षा में था उसे समय मेरे घर पर एक समतल सतह क्षेत्र **(Surface Area)** था, जो मेरे घर का दरवाजा था। उस पर मैंने राजकुमार, किशोर कुमार, सरस्वती माता, हनुमान जी की पेंटिंग बनाई थी।

प्र08 सबसे पहले पेंटिंग की शुरुआत कैसे की ?

उत्तरः– जब स्कूल के प्रधानाचार्य ने मुझे किसी पेंटर के बारे में पूछा कि तुम किसी पेंटर को जानते हो जो सरस्वती माता की पेंटिंग बना दे। फिर मैंने बोला – सर, मैं पेंटिंग बना सकता हूं क्योंकि मेरी स्कूल के समय से ही ड्राइंग अच्छी थी। फिर मैंनें सरस्वती माता की पेंटिंग बनाई। वह बहुत अच्छी बनी थी। तब से मैंने पेंटिंग बनाना शुरू कर दिया था।

प्र09 पेंटिंग से संबंधित कोई अपना काम शुरू किया है ?

उत्तर :– हां, **Bollywood Art Project** ये पेंटिंग से संबंधित है।

प्र10. क्या किसी कलाकार से प्रभावित हुए हो ?

उत्तर :– एम.एफ. हुसैन से मैं काफी प्रभावित हुआ, क्योंकि एम.एफ हुसैन ऐसे ही एक कलाकार के रूप में सामने आए थे। एम.एफ. हुसैन ने भी बहुत सारे पोस्टर बनाए थे। इन्होंने अपने जिंदगी में बहुत संघर्ष किया था और बहुत सारे **Bollywood** के भी पोस्ट पेंट किए थे और मैंनें भी **Bollywood** के बहुत सारे पोस्ट पेंट कर रहा हूँ।

प्र11. आपने सोनीपत से बाहर जाकर करियर कैसे शुरू किया ?

उत्तर :– मैंने सोनीपत से स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद मैं 1998 में चंडीगढ़ गया और 2002 में मैंने स्नातक की डिग्री हासिल की। फिर अहमदाबाद में **NID** पास करने के बाद मुझे दिल्ली **Federation of Indian Chambers of Commerce and Industry (FICCI),** में नौकरी मिली। जिसमें **India Branding Project** होते थे। और मेरी **Branding** में विशेषता डिजाइन की थी। मैंने एक साल तक **(FICCI)** के साथ काम किया। फिर मुझे मुंबई में **Mouthshut.com company** से फोन

आया और मेरा उनके साथ 16 दिन का प्रशिक्षण था। उसके बाद मैंने अपना काम **Digital Moustache** का काम शुरू किया। फिर मैंने बांद्रा में जाकर अपने करियर की शुरुआत की।

प्र12. बांद्रा में करियर की शुरुआत का अनुभव बताएं ?

उत्तर :– बहुत अच्छा रहा और अब मैं बांद्रा में अभी भी आनंद ले रहा हूँ। मेरे लिए बांद्रा बहुत शानदार है। वहां मुझे बहुत सारे लोग जानते हैं। बांद्रा में ज्यादातर कैथलिक **(Fisher Men)** तरह के लोग रहते हैं।

प्र13. **Bollywood** के भित्तिचित्र किस तरह से प्रभावित होकर बनाने शुरू किए?

उत्तरः– **Bollywood** से ही प्रभावित होकर बनाने शुरू किए थे। अभिनेता और अभिनेत्री की कहानियों से और उनके संघर्षों से प्रभावित होकर मैंने **Bollywood Art Project** शुरू किया। जैसे – अमिताभ बच्चन ने अपनी जिंदगी में बहुत संघर्ष किया और अब उन्हें **Big - B** के नाम से भी जानते हैं। जब मैंनें दादा साहब फाल्के की पेंटिंग बनाई थी तब उसका उद्घाटन अमिताभ बच्चन ने किया था और तब अमिताभ बच्चन के साथ मेरी दूसरी बार मुलाकात हुई थी। अमिताभ बच्चन ने मुझे पहचान लिया था कि हम पहले पेरिस में मिल चुके हैं। मीडिया वाले चाहते थे कि अमिताभ बच्चन के साथ मेरा अकाल फोटो **(Solo Photo)** हो। फिर अमिताभ बच्चन के साथ मेरी फोटो हुई।

प्र14. भित्तिचित्र में आपकी दिलचस्पी कैसे बनी ?

उत्तरः– पेरिस में जब मैं पेंट करके आया था। उसके बाद ही मेरी भित्तिचित्र में दिलचस्पी बनी। जब मैंनें पानीपत से पेंटिंग का काम सीखा था। तब मैंनें 6 महीने ढाबों पर हाथ से पेंट करने का काम किया। मुरथल के ढाबों पर मैंने बहुत सारे भित्तिचित्र बनाएं।

प्र15. भित्तिचित्र में कौन से रंगों का प्रयोग किया ?

उत्तरः– वैसे तो जल रंगों का प्रयोग करता था, लेकिन आकार **(Size)** पर निर्भर करता है कि कौन से रंग का प्रयोग करना चाहिए और कौन से रंग का प्रयोग नहीं करना चाहिए। मैं तो हमेशा तेल रंगों का ही प्रयोग करना चाहता हूं क्योंकि तेल रंग काफी अच्छे से मिल जाते हैं और जल रंग धूप की वजह से जल्दी उड़ जाते हैं। तेल रंगों में मैंनें सबसे ज्यादा भित्तिचित्र बनाए हैं।

प्र16. आपने कौन–कौन से भित्तिचित्र बनाए हैं ?

उत्तरः– सरकार राज, अनारकली, आशा पारेख, वहीदा रहमान, हेलन, अमिताभ बच्चन, धर्मेंद्र, इरफान खान, ऋषि कपूर, दादा साहब फाल्के, किशोर कुमार, मधुबाला, दिलीप कुमार, अमरीश पुरी, सचिन तेंदुलकर, नादिरा, रणवीर सिंह और भी बहुत सारे भित्तिचित्र बनाए हैं, अभी भी बना रहा हूं।

प्र17. **Bollywood** में जो भित्तिचित्र बनाएं उनमें से आपका सबसे पसंदीदा चित्र कौन सा है?
उत्तरः– मेरा पसंदीदा भित्तिचित्र अनारकली रहा है। लेकिन अब सारे भित्तिचित्र पंसदीदा है।

प्र18. आप कैसे तय करते हैं कि आपके प्रोजेक्ट के लिए किस इमारत को प्रयोग करना है ?
उत्तरः– मैं बस सबसे अधिक दिखाई देने वाले स्थान पर और सबसे अधिक दिखाई देने वाली इमारतों की तलाश करता हूं। जब मुझे अनुमति मिलती है, तब मैं उन्हें रंगना शुरू कर देता हूं। प्रमुख कारक यह है कि कितने लोग इमारत को देख सकते हैं।

प्र19. क्या आपके चित्रों के लिए अनुमति प्राप्त करना कठिन है ?
उत्तरः– हां, हां, यह मेरे लिए एक बड़ी चुनौती है। लोग सोचते हैं कि मैं उनकी इमारत पर पेंटिंग करके पैसे कमा लूंगा या ये किसी चीज का विज्ञापन है। मैं उनसे कहता हूं कि यह कोई विज्ञापन नहीं है। यह सिर्फ बॉलीवुड के प्रति मेरा प्यार है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हां कहते हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो ना कहते हैं। इसलिए अनुमति प्राप्त करना बहुत बड़ी चुनौती हैं। लोगों को समझाने के लिए मैं उन्हें अपने कुछ पुराने काम दिखता हूं और कहता हूं कि मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूं क्योंकि यह बॉलीवुड का शहर है। कुछ आश्रस्त्त हो जाते हैं, कुछ नहीं होते।

प्र20. मान लीजिए कि आपने दसवीं मंजिल ऊंची इमारत पर भित्तिचित्र बनाने का निर्णय लिया है। इसे रंगने में आपको कितना समय लगेगा ?
उत्तरः– मैं आपको अमिताभ बच्चन की पेंटिंग का उदाहरण देता हूं। मुझे अमिताभ बच्चन की पेंटिंग बनाने में 14 दिन लगे। मैं वास्तव में इस पेंटिंग को 10 दिनों में समाप्त करना चाहता था। लेकिन मौसम अनुकूल 10 दिन में समाप्त नहीं कर सका। अमिताभ बच्चन के भित्ति चित्र के 10 दिन पहले मैंने दादा साहेब फाल्के का भित्ति चित्र बनाया था। यदि कोई बड़ा प्रोजेक्ट होता है तो उसमें कुछ अधिक समय लग जाता है। इसलिए हमें मौसम पर भी अधिक ध्यान रखना पड़ता है।

प्र21. आप कैसे तय करते हैं कि किस इमारत पर कौन सा भित्ति चित्र बनाना है ?

उत्तरः— मैं पहले ही तय कर लेता हूं कि किस इमारत पर कौन सा भित्ति चित्र बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए बांद्रा में पेम्बर्टन बिल्डिंग बहुत ऊंची है और लोग अमिताभ बच्चन को लंबू भी कहते हैं। इसलिए मैंने पेम्बर्टन बिल्डिंग पर अमिताभ बच्चन का भित्ति चित्र बनाने का निर्णय लिया था और इसी तरह में तय कर लेता हूं कि किस इमारत पर कौन सा भित्ति चित्र बनाना है।

प्र22. क्या आप केवल निजी इमारतों या सरकारी स्वामित्व वाले इमारत पर ही भित्तिचित्र चित्र बनाते हैं? मैं इसलिए पूछ रही हूं क्योंकि सरकारें इन चीजों को लेकर बहुत सख्त हो सकती हैं ?

उत्तरः— फिलहाल सरकार स्ट्रीट आर्ट को लेकर और शहर को खूबसूरत बनाने के लिए काफी उत्साहित है। पिछले दिनों इलाहाबाद में कुंभ मेले के दौरान सरकार ने वहां भित्तिचित्र का प्रस्ताव रखा था। इसलिए वर्तमान में केंद्र सरकार कलाकारों और शहर के चारों ओर से और अधिक सुंदर चीजों को लेकर चित्रित करने के लिए उत्साहित कर रही है।

प्र23. क्या आपको लगता है कि बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट के कारण मुंबई में लोग अब सार्वजनिक कला के बारे में अधिक जागरूक या चिंतित हैं ?

उत्तरः— हां, मुझे ऐसा लगता है जब अमिताभ बच्चन का भित्तिचित्र (जो बांद्रा में रंजीत दहिया के सबसे प्रसिद्ध भित्तिचित्रों में से है), देखते हैं, तो वे उत्सुक हो जाते हैं। लोग समझते हैं कि स्ट्रीट आर्ट ऐसा माध्यम है जो हर किसी के लिए सुलभ है। एक खास तरह के दर्शन गैलरी में जाएंगें। लेकिन मेरा मानना है यह है कि सड़क पर एक करोड़पति भी कला देख सकता है, और एक भिखारी भी कला को देख सकता है। कला की कोई भी सीमाएं नहीं है।

प्र24. एक भित्ति चित्र बनाने में कितने दिन लगते हैं ?

उत्तरः मैंने दिवगंत अभिनेता ऋषि कपूर का भी चित्र बनाया था जिसे बनाने में मुझे 6 दिन लगे थे। मैंने ऋषि कपूर के जन्मदिन के मौके पर 4 सितंबर को अपने सोशल मीडिया पर इसे शेयर किया था। मैंने ऋषि कपूर को श्रद्धांजलि देना चाहता था। उसे भी मुझे अपने तरीके से एक न्यूरल को पेंट करने में मेरे लगभग 10 से 14 दिन लगे थे। इसके लिए कई वॉलेटियर भी आए थे। फिर हम निवासियों से उनकी दीवारों पर उपयोग करने की अनुमति लेते हैं और एक बार जब हम उसे पेंट कर देते हैं, तो वह अपने आप लैंडमार्क बन जाता है। जब लोग आते हैं और इन भित्ति चित्रों के साथ सेल्फी खींचते हैं, तो मुझे खुशी होती है। मैंने ने अमिताभ बच्चन के म्यूरल को जब बनाया तो उन्होंने इसके बारे में ट्वीट किया, ‘‘जैसे दीवार पर किसी ने दीवार बना दी है’’।

प्र25. क्या आपने केवल मुंबई में ही भित्ति चित्र बनाए हैं या फिर आप अपना प्रोजेक्ट दूसरे शहरों और देश में भी ले गए हैं ?

उत्तरः— मैंनें दिल्ली, चेन्नई, अमेरिका, फ्रांस, दुबई में भित्तिचित्र बनाए हैं। जहां भी बॉलीवुड प्रेमी होते हैं, मैं वहां जाता हूं और बॉलीवुड के भित्ति चित्र बनाता हूं।

प्र26. क्या आपके काम की कोई प्रदर्शनी **(Exhibition)** हुई है ?

उत्तरः— हां, सन 2010, फ्रांस में हुई थी। वहां मैंने 31 पेंटिंग लगाई थी। वह पेंटिंग बाद सन 2011 में, डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में लगी। फिर वह 2013 में दिल्ली में इंडियन इंटरनेशनल सेंटर में लगी।

प्र27. विदेश में काम करने का मौका कैसे मिला ?

उत्तरः— बॉम्बें में अमेरिका से कोई व्यक्ति आया हुआ था। उसको टहलने का बहुत शौक था। वह हैदराबाद का रहने वाला है और अनिवासी भारतीय **(Non-Resident Indian - NRI)** है। हैदराबाद में भी उसका ऑफिस है। जब उस व्यक्ति ने मेरा मधुबाला, भित्तिचित्र देखा, तब वह हैरान हो गया था। फिर उस व्यक्ति ने मुझे ढूंढने के लिए एक व्यक्ति को भेजा और बोला कि जब रंजीत दहिया मिले तब उनको मेरा नंबर दे देना और कहना कि मेरे घर अमेरिका में आए और मधुबाला का भित्तिचित्र बनाए। पहले मैंने मना कर दिया था, लेकिन वह मुझे बार–बार फोन कर रहा था कि मेरे घर मधुबाला का भित्तिचित्र बनाओ। फिर मैंने फैसला लिया कि मैं आ जाऊंगा। लेकिन मेरा पासपोर्ट गुम हो चुका था। इसलिए पहले मैंने पासपोर्ट बनवाया और 10 साल का आगंतुक वीजा **(Visitor Visa)** लगवाया। अमेरिका से उस व्यक्ति ने मेरी टिकट करवा दी थी। फिर मैं अमेरिका चला गया। वह व्यक्ति बहुत अमीर था। मैंने उसके घर पर मधुबाला का भित्तिचित्र बनाया। इसके लिए उसने मुझे बहुत सारे पैसे दिए और बाद में वह व्यक्ति मेरा बहुत अच्छा दोस्त बन गया। आज भी हम एक दूसरे के संपर्क में हैं। जब भी वह मुंबई आता है, मुझे फोन करता है और बोलता है कि रंजीत मुझसे मिलने आ जाओ। यह अमेरिका जाने का मौका मुझे किसी की सिफारिश से नहीं बल्कि अपनी कला के माध्यम से मिला।

प्र28. विदेश में काम करने का अनुभव बताएं ?

उत्तरः— विदेश में काम करने का अनुभव बहुत अच्छा रहा। क्योंकि विदेश में इंसान की सुरक्षा का अधिक ध्यान रखा जाता है। जब मैं दुबई काम करने गया था, दुबई में स्थित **Bollywood Yas Island** में **IIFF Award Program** के दौरान मुझे एक **Wall Paint** में काम करना था। वहां मैं 10

दिन के लिए गया था। मैंने 6 दिन में पेंटिंग का काम समाप्त कर दिया था और चार दिन मौज मस्ती की थी। वहां काम करने के लिए सीढ़ी तह **(Stair Folding)** का प्रयोग किया जाता है।

विदेश में काम करने वालों की सुरक्षा को मुख्य आधार माना गया है। जब मैं पेंटिंग करता था तब एक इंस्पेक्टर जांच करने के लिए आता रहता था। जब हम ऊपर पेंटिंग करने का काम करने जाते थे, तब नीचे एक व्यक्ति जांच करने के लिए खड़ा रहता था कि कोई भी बिना हेलमेट के ऊपर काम करने न जाए। यदि कोई व्यक्ति बिना हेलमेट के जाता था तो नीचे खड़े व जांच करने वाले व्यक्ति पर जुर्माना लगा दिया जाता था। इसलिए वह बार–बार बोलता रहता था कि हेलमेट पहनकर ही ऊपर पेंटिंग करने जाना है। विदेश में व्यक्ति की सुरक्षा का बहुत ज्यादा ध्यान रखा जाता है।

प्र29. भारत और विदेश में काम करने का अंतर बताएं ?

उत्तरः– यह बहुत व्यावसायिक है। दोनों जगह की सामग्री **(Material)** अलग–अलग है। रंग और ब्रश भी बहुत अलग हैं।

प्र30. कला से संबंधित आपके कौन–कौन से प्रोजेक्ट **(Project)** आए हैं ?

उत्तरः– इंडियन एक्सप्रेस **(The Indian Express)** मुंबई के बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट ने बांद्रा के चैपल रोड में गुजरे जमाने की अदाकारा आशा पारेख, वहीदा रहमान और हेलन को चित्रित करते हुए मैंने एक सुंदर भित्तिचित्र बनाया है।

नए भित्तिचित्र के बारे में **Indianexpress.com** से बात करते हुए मैंने कहा, ''हमने पहले इस दीवार पर श्रीदेवी और मधुबाला की एक खूबसूरत पेंटिंग बनाई थी। हालांकि, बडवाइजर (लियोनेल मेस्सी वाले विज्ञापन के लिए)। के खिलाफ हंगामा के बाद, उन्होंने हमसे एक नई पेंटिंग मंगवाई। फिर मैंने सोचा कि इस दीवार को बॉलीवुड की जीवंत सदाबहार सुंदरियों आशा जी, वहीदा जी और हेलन जी को समर्पित करने से बेहतर क्या ही होगा। क्योंकि वे अभी भी दोस्त हैं और वे बताते हैं कि बॉलीवुड का क्या मतलब है।''

मुझे इस प्रोजेक्ट को पूरा करने में लगभग 17 दिन लगे। सामाजिक दूरी बनाए रखने और कम लोगों के साथ काम करने जैसे सभी कोविड–19 मानदंडों का पालन करना था। इस भित्ति चित्र को बनाते समय हमें चक्रवात ताउते का भी सामना करना पड़ा, लेकिन अंतिम परिणाम संतुष्टिदायक है। मुझे खुशी है कि इस भित्तिचित्र के साथ, ये तीन वीर महिलाएं सभी मुंबईकरो के दिलों को प्यार और सम्मान से भर देगी।

ABP News Live:-

साल 2012 में बांद्रा के इसी इलाके में हो रही 'लंच बॉक्स' की शूटिंग के दौरान मुझे इरफान खान को साक्षात देखने का मौका मिला था, जिसकी यादें आज भी मेरे जेहन में ताजा है।

मुंबई के बांद्रा पश्चिम इलाके में वारोडा रोड नामक एक संकरी–सी सड़क किनारे बने एक दो मंजिला मकान की दीवार पर दिवगंत अभिनेता इरफान खान की एक बेहद खास तस्वीर उकेरी है। यह महज एक तस्वीर ही नहीं बल्कि मेरे द्वारा इरफान खान जैसे दिग्गज अभिनेता को खास तौर पर दी गई एक श्रद्धांजलि है।

ए.बी.पी न्यूज से खास बातचीत करते हुए मैंने कहा – मैं इरफान खान की अदाकारी का फैन रहा हूं। उनकी मौत की खबर सुनकर मुझे बहुत बुरा लगा। लेकिन मैंने सोचा कि इरफान को चाहने वालों के लिए मैं कुछ करूं। मैं चाहता था कि लोगों को इरफान की तस्वीर के सामने खड़े होकर अपनी तस्वीर खिंचवाने का मौका मिले, यही वजह है की श्रद्धांजलि के तौर पर मैंनें इस तस्वीर को बनाने का फैसला लिया।

इरफान की यह तस्वीर यहां से गुजरने वाले लोगों का ध्यान बहुत आकर्षित कर रही है। वैसे मैं इरफान का यह भित्तिचित्र जिस गली की दीवार पर बनाया है, वहीं से कुछ कदमों की दूरी पर साजन फर्नांडिस रहते हैं। वहीं साजन फर्नांडिस जिसे इरफान की फिल्म 'लंच बॉक्स' प्रेरित थी और खुद इरफान ने इस फिल्म में साजन फर्नांडिस का मुख्य किरदार निभाया था।

The Times of India (द. टाइम्स ऑफ इंडिया) के साथ साक्षात्कार

इरफान खान का भित्तिचित्र :– यह श्रद्धांजलि मेरे लिए बहुत मायने रखती है। 'रंजीत दहिया कहते हैं – मुंबई के बांद्रा की सड़क पर इरफान खान का प्रसिद्ध भित्ति चित्र बनाया था। प्रशंसक इसे 'व्यक्तिगत क्षति' के रूप में भी संदर्भित करते आ रहे हैं। इनमें से कई दिवगंत अभिनेता को अपने अनूठे तरीकों से श्रद्धांजलि दी है। इसी तरह सपनों के शहर – मुंबई में काले, सफेद और पीले रंगों में एक ऐसा मंत्रमुग्ध कर देने वाला गीत देखा गया जो, मुंबई के बांद्रा के रनवार गांव में एक विचित्र सड़क की दीवार पर लंबा और उज्जवल खड़ा था। जबकि यह अब शहर के आकर्षणों में से एक बन गया है। ई टाइम्स ने बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट से कलाकार जोड़ी रंजीत दहिया और विकास बंसल को फोन किया– वह मास्टरमाइंड जिसने इरफान को हर किसी के दिल में अमर कर दिया।

प्र31. आपके भित्तिचित्रों के पीछे क्या प्रेरणा थी ?

उत्तरः— मुंबई बॉलीवुड का शहर है और मैंने सोचा कि चलो इसे इसके नाम के अनुरूप बनाया जाए। क्योंकि लोग उद्योग के प्रति जिज्ञासा से यहां आते हैं। यही वह समय है जब हमने बॉलीवुड से प्रेरित भित्ति चित्र बनाना शुरू किया।

प्र32. जब आपको इरफान के निधन के बारे में पता चला तो आपकी प्रतिक्रिया कैसी थी ?

उत्तरः— उनके प्रशंसक होने के नाते जब मैंनें उनके निधन के बारे में सुना तो मैं घंटों तक सदमे में रहा और बाद में मुझे एहसास हुआ कि मुझे इसके बारे में कुछ करने की जरूरत है और मैं उनकी भित्ति चित्र बनाने का फैसला किया।

प्र33. उनके निधन के कुछ दिनों बाद ही भित्ति चित्र बनाया गया था। महामारी के बीच इसे पूरा करना कितना कठिन था ?

उत्तरः— जैसा कि मैंनें अभी बताया, मुझे जानकर बहुत दुख हुआ कि इरफान खान अब नहीं रहे। वह मेरे पसंदीदा अभिनेता होने के साथ—साथ एक बेहतरीन इंसान भी थे। जबकि यह लॉकडाउन के दौरान हुआ। विकास पहले से ही मुंबई में थे। इसलिए हम दोनों ने अपने घर पर जो भी पेंट छोड़ा था, उससे भित्तिचित्र बनाकर श्रद्धांजलि देने का फैसला किया।

प्र34. बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट के लिए आगे क्या है ? आप बॉलीवुड से अगला किरदार किसे बनना चाहेंगे?

उत्तरः— मेरी बिकेट लिस्ट में कई सिलेबस है। मैं आगे हेलन जी का भित्ति चित्र बनाना चाहता हूं।

षष्टम् अध्याय

- समाचार पत्र सूची
- भित्ति चित्रों का अध्ययन

समाचार पत्र सुची

➡ इंडियन एक्सप्रेस :–

मुंबई के बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट ने बांद्रा के चौपल रोड में बीते जमाने की मशहूर अदाकारा आशा पारेख, वहीदा रहमान और हेलेन की एक खूबसूरत भित्तिचित्र बनाई है।

➡ फर्स्टपोस्ट :–

बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट ने मुंबई के बांद्रा में आशा पारेख, वहीदा रहमान और हेलेन की एक भित्तिचित्र बनाई

➡ जोश टॉक्स :–

कैसे हरियाणा का यह शख्स विश्व प्रसिद्ध चित्रकार बना, रंजीत दहिया, जोश टॉक्स

➡ शोशा :–

एक अंतरराष्ट्रीय स्ट्रीट आर्टिस्ट के तौर पर दहिया के करियर की शुरुआत मामूली रही। उन्होंने हरियाणा के सोनीपत नामक एक छोटे से शहर के खेतों में भैंसों का दूध दुहते हुए अपनी यात्रा शुरू की।

➡ द क्विंट :–

मुंबई के 'बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट' के नवीनतम अपग्रेड के साथ बॉलीवुड के दिग्गजों की भित्तिचित्र जीवंत हो उठे हैं।

➡ ए.बी.पी. लाईव :–

दीवार पर इरफान खान की पेंटिंग बनाकर उन्हें श्रद्धांजलि देने वाला यह कौन चित्रकार है?

➡ रेड बुल :–

रेडबुल डॉट कॉम से बातचीत में रंजीत दहिया ने स्ट्रीट आर्ट की बढ़ती लोकप्रियता और भित्ति चित्र के लिए सही इमारत खोजने की चुनौतियों के बारे में बात की।

➡ द बेटर इंडिया :–

कभी घर के चित्रकार रहे इस कलाकार के शानदार बॉलीवुड भित्ति चित्र मुंबई में देखने लायक हैं।

➡ दैनिक भास्कर :–

दीवार के अमिताभ से मि. इंडिया के मोगैम्बो तक की पेंटिंग्स बना चुके हैं रंजीत

➡ हिंदुस्तान टाइम्स :–

चमकीले रंगों और बहुत ही रेट्रो स्टाइल में पुरानी हिंदी फिल्मों और सिनेमा के सितारों के भित्ति चित्र बनाए गए हैं।

➡ सोहो हाउस :–

बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट के संस्थापक और सदस्य ने सोहो हाउस मुंबई में अभिनेता और पार्श्व गायक किशोर कुमार को याद किया

➡ स्थानीय समोसा :–

बॉलीवुड के जादू को मुंबई की सड़कों पर लाने का एक तरीका है। यह सितारों को सड़कों पर लाता है, एक बार में एक भित्ति चित्र।

➡ द टाइम्स ऑफ इंडिया :–

काले, सफेद और पीले रंग में एक मंत्रमुग्ध कर देने वाली कविता, मुंबई के बांद्रा की एक अनोखी गली की दीवार पर ऊंची और चमकदार खड़ी है

भत्तिचित्र चित्रों का अध्ययन

मुंबई में बॉलीवुड के प्रसिद्ध और खूबसूरत भित्तिचित्र :–

मुंबई ने बॉलीवुड को बनाया है, लेकिन कई मायनों में, बॉलीवुड मुंबई को भी बनाता है। इसका जश्न मनाने के लिए, ग्राफिक डिजाइनर और कलाकार रंजीत दहिया ने बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट शुरू किया, जहाँ एनामेल पेंट्स के साथ पेंटिंग की ट्रक–आर्ट शैली का उपयोग करते हुए, उन्होंने अकेले ही देव आनंद, मधुबाला, अमिताभ बच्चन और यहाँ तक कि मोगैम्बो जैसे चरित्र जैसे प्रतिष्ठित अभिनेताओं की दीवार भित्ति चित्र बनाना शुरू कर दिया। हमने कलाकार से बात की, और उन जगहों की सूची तैयार की है जहाँ आप बॉम्बे में बॉलीवुड की हर झलक पा सकते हैं,

1. अनारकली :–

अनारकली और उसके प्रेमी की यह भित्तिचित्र बॉलीवुड कला परियोजना की शुरुआत का प्रतीक है। अप्रैल 2012 में, जब रंजीत सिंह ने बॉलीवुड शहर में और भी बॉलीवुड का तड़का लगाने की इच्छा जताई, तो वह चौपल रोड पर चले गए और एक अजनबी के दरवाजे पर दस्तक दी। उनका अनुरोध निश्चित रूप से अपरिचित था, अगर अजीब नहीं था – वह उसकी दीवार उधार लेना चाहता था। एक कैथोलिक महिला ने उसे अपने घर के बाहर एक ऐसे किरदार से रोशनी करने की अनुमति दी, जिसे वह नहीं जानती थी, एक ऐसे सिनेमा से जिसे उसने नहीं देखा था। जिस शाम उसे उसकी 'हां' मिली, उसने रात में 23 फीट ऊंची दीवार तैयार करना शुरू कर दिया, और तब से, अनारकली की यह पेंटिंग बनी हुई हैं

2. अमिताभ बच्चन :–

अगर आप कभी बांद्रा में हों, तो परेरा रोड पर टहलते हुए आप किसी और से नहीं बल्कि एंग्री यंग मैन से आमने–सामने होंगे। एक मजबूत दीवार पर अमिताभ बच्चन अपनी पूरी मस्ती के साथ लेटे हुए हैं और पीटर के आने और उनसे लड़ने का इंतजार कर रहे हैं।

कहानी के अनुसार, जैसे ही कलाकार ने अमिताभ बच्चन को पेंटिंग बनाने की प्रक्रिया के बारे में ट्वीट किया, तो उन्होंने पाया कि उनके कैनवास के पास एक फोटोग्राफर था जो तस्वीरें खींच रहा था और शटरिंग कर रहा था। जब उनसे पूछा गया कि वह कहां से आए हैं, तो उन्होंने बस इतना ही कहा, 'बंगले से।' उनके जैसे स्टार के लिए शायद यही स्पष्टीकरण काफी है।

3. राजेश खन्ना :–

2012 में अमिताभ बच्चन की पेंटिंग पूरी होने के सात दिन बाद राजेश खन्ना के निधन की खबर रंजीत दहिया के कानों तक पहुंची, जिससे उनका दिल भारी हो गया। वह उनकी छवि को एक ऐसी दीवार पर उकेरना चाहते थे, जहां लोग अपने पसंदीदा सुपरस्टार को हर दिन देख सकें, लेकिन उनके पास पेंटिंग बनाने के लिए पैसे नहीं थे।

एक दयालु मित्र ने उन्हें कुछ किताबें उधार दीं और इस तरह काम शुरू हुआ। लोग इसे उनकी सबसे बेहतरीन कृतियों में से एक मानते हैं, क्योंकि यह अक्सर आपको ऐसा एहसास कराती है जैसे कि लीजेंड धीरे से सीधे आपकी ओर देख रहे हैं। यह तस्वीर राजेश खन्ना की फिल्म अंदाज से ली गई है।

4. दादा साहब फाल्के :–

बांद्रा में प्रवेश करते ही दादा साहब फाल्के की पेंटिंग वाली इस बड़ी पीली इमारत पर हर कोई ध्यान देता है, लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि इसे बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट ने दिल्ली के स्टार्ट प्रोजेक्ट के सहयोग से बनवाया था। 126 फीट ऊंची और 159 फीट चौड़ी एमटीएनएल बिल्डिंग एक ऐसी चुनौती थी जिसे स्वीकार करने में ज्यादातर लोग आनाकानी करते थे। टूटी हुई, खिड़कियों वाली सतह ने भी मामले में कोई मदद नहीं की।

रंजीत ने यह कार्य अपने हाथ में लिया और तीन सहायक कलाकारों के साथ मिलकर 10 दिनों के भीतर भारतीय सिनेमा के पितामह का चेहरा शहर के लिए चित्रित कर दिया, ताकि लोग उसे देखें, आश्चर्यचकित हों और याद रखें।

5. अमरीश पुरी :–

जैसा कि कलाकारों ने सही कहा है, बॉलीवुड में खलनायकों की संख्या उतनी ही है जितनी कि नायकों की। उन्होंने 20'20 फीट की दीवार पर मिस्टर इंडिया के विरोधी मोगैम्बो को चित्रित किया, जिसमें बॉलीवुड के सबसे यादगार खलनायकों में से एक अमरीश पुरी को उनके सबसे बेहतरीन संवादों के बीच में दिखाया गया है। मोगैम्बो खुश हुआ। और आप?

6. मधुबाला :–

जब मधुबाला को चित्रित करने की इच्छा मन में आई तो कलाकार के कदम उसी घर पर पहुंचे जहां बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट अनारकली की शुरुआत हुई थी।

बॉलीवुड की दिलों की धड़कन में से एक की यह पेंटिंग 25 फीट ऊंची है, और आज भी घर की मालकिन ने अपने घर का पर्दा खुला रखा है, ताकि वह तस्वीर लेने के लिए आने वाले आगंतुकों को देख सके। हालाँकि इस तस्वीर बरसात की रात में मधुबाला की प्रासंगिकता उनके लिए बहुत मायने नहीं रखती, लेकिन वह इसे इसलिए पसंद करती हैं क्योंकि यह पड़ोस और उनके घर में रंग भर देती है।

7. देव आनंद :–

देव आनंद की दीवार पर बनी यह तस्वीर एक प्रशंसक के अनुरोध पर बनाई गई थी। रंजीत कहते हैं कि बॉलीवुड के निर्माता की यह तस्वीर उनकी फिल्म टैक्सी ड्राइवर से ली गई है।

8. नवाजुद्दीन सिद्दीकी :–

समकालीन बायोपिक को दर्शाने वाले कुछ चित्रों में से एक, यह फिल्म मांझी – द माउंटेन मैन पर आधारित एक दीवार भित्तिचित्र है। पात्रों में नवाजुद्दीन सिद्दीकी और राधिका आप्टे शामिल हैं, और कहानी बिहार के एक ऐसे व्यक्ति की सच्ची कहानी पर आधारित है जो एक खतरनाक पहाड़ को छेनी और हथौड़े से तोड़ता है।

उपसंहार

रंजीत दहिया जैसे समर्पित कलाकार कभी–कभी इस दुनिया में जन्म लेते हैं, या यूं कहें की अवतार लेते हैं, तो गलत न होगा। वह शीर्ष ख्याति के कलाकार होने पर भी बिल्कुल सादे हैं। कला जगत में उनकी भूमिका एक मील के पत्थर की तरह बनी रहेगी।

बेशक रंजीत दहिया के भित्तिचित्रों को समझने के लिए हम रंजीत दहिया के व्यक्तित्व के अलग–अलग रूप मान सकते, अन्यथा मुलतः तो वह एक भित्तिचित्र ही हैं। अगर हम उनको एक डिजाइनर कहें तो यह कहना बिल्कुल भी गलत न होगा। बुनियादी तौर पर वह एक भित्तिचित्रकार हैं और बात करते वक्त वह शब्दों के भी चित्र बना देते हैं।

रंजीत दहिया ने इस बात पर भी जोर दिया है, कि एक कलाकार के लिए संवेदनशील होना बहुत आवश्यक है, जो दूसरों के दुख को देखकर दुखी हो और सुख में मुस्कुराए, वही एक संपूर्ण कलाकार है। उनका मानना है कि कैनवास पर जो भी कुछ हम बनाते हैं, वह हमारे भावों की अभिव्यक्ति होती है। इन्होंने कभी भी बंधनों में बंध कर कार्य नहीं किया। यह हमेशा स्वतंत्र और चुनौती पूर्ण रूप से कार्य करते हैं और जैसे कि आजकल कलाकारों में पैसे की होड़ लगी है। रंजीत दहिया ने कभी ऐसा कुछ नहीं किया। वह हमेशा आनंद एवं संतुष्टि के लिए भित्तिचित्र बनाते हैं, ना कि पैसे के लिए।

वे हमेशा दूसरों के हित की बात सोचते हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपनी बॉलीवुड आर्ट प्रोजेक्ट के नाम से कंपनी बनाई है, जिसमें उन्हें संजीव कार्य करते हुए देखा जा सकता है। इन्होंने लगभग सभी माध्यमों में कार्य किया है। इनकी अपनी खुद की भित्ति शैली है, जिसमें वह कार्य करते हैं। इनकी अधिकतर भित्तिचित्रों में गतिशील आकृतियां होती हैं, जो किसी न किसी खोज में रहती हैं। यह इनके चंचल मन को प्रदर्शित करती हैं और उनकी बचपन की घटनाओं से जुड़ी है।

रंजीत दहिया के कला कार्य पर शोध करके अंत में मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूँ कि रंजीत दहिया ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने कला जगत में अपनी अलग पहचान बनाई। उनके कार्य करने का तरीका बहुत अनोखा है। इनकी रचनाओं को देखने से पता चलता है कि वे स्वतंत्र होकर कार्य करना पसंद करते हैं। कला के क्षेत्र तथा अध्यापन के क्षेत्र में उनके अनुभव के कारण कला तथा दर्शन के प्रति उनके विचार अत्यंत स्पष्ट हैं। चित्रकार होने के साथ–साथ एक अच्छे डिजाइनर भी हैं।

रंजीत दहिया निरंतर इस प्रयास में है कि इसमें आगे भी और कुछ नवीनता लाई जा सके। इनकी अनेकों कला, कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों में सहभागिता रही है। अनेकों चित्रकला प्रतियोगिताओं में वह निर्णायक की भूमिका निभा चुके हैं तथा वर्तमान में भी वह इस क्षेत्र में सक्रिय हैं। कला जगत में रहते हुए रंजीत दहिया ने इतने भित्ति चित्र बनाए हैं और अभी भी बना रहे हैं, कि भावी कलाकारों के लिए वे निश्चय ही मार्गदर्शन बनेगें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. र.वि. साखलकर, कला के अन्तदर्शन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, संस्करण : 2008
2. डॉ. प्रेमशंकर द्विवेदी, भारतीय चित्रकला के विविध आयाम, कला प्रकाशन, संस्करण : 2007
3. मीनाक्षी कासलीवाल 'भारती', ललित कला के आधारभूत सिद्वान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, संस्करण : 2003
4. डॉ. राकेश कुमार सिंह, आधुनिक भारतीय चित्रकला का इतिहास, अनु बुक्स मेरठ, संस्करण : 2012
5. डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, आधुनिक भारतीय चित्रकार के आधार स्तम्भ, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी संस्करण : 2007

Youtube :-

1. https://youtu.be/hlobLSV5JUY?Si=yfRmkr164ZQAiJQm
2. https://t.me/bednotes2M
3. https://youtu.be/NYKMfwbgDwA?Si=BKUfyyGV9exKLrMyJ
4. https://t.me/Shivaniartclasses
5. https://.me/artgyankala
6. https://studyglob.com
7. https://www.studyiq.com
8. https://www.bbc.com

Web Site :

1. https://www.bollywoodart.com
2. https://en.wikipedia.org
3. https://www.Sohohouse.com
4. https://www.redbull.com
5. https://bb.in
6. https://streetartchennai.com

7. https://audiogyan.com
8. https://blog.artlounge.in
9. https://web.alkhaleejnews.net
10. https://medium.com
11. Yourstory.com
12. https://suitcaseofstories.wordpress.com
13. https://www.kerosene.digital

Newspaper Link :-

1. https://indianexpress.com
2. www.firstpost.com
3. https://www.indiatoday.in
4. https://www.thebetterinida.com
5. Timesofindia.indiatimes.com
6. https://www.thenationalnews.com
7. https://www.localsamosa.com
8. https://www.thequint.com
9. https://www.abplive.com

चित्र संग्रह सूची

क्रमांक न0	–	चित्र का नाम	–	विवरण
01	–	अनारकली का भित्ति चित्र	–	भित्ति चित्र
02	–	अमिताभ बच्चन	–	भित्ति चित्र
03	–	राजेश खन्ना	–	भित्ति चित्र
04	–	दादा साहेब फालके	–	भित्ति चित्र
05	–	मोगैम्बो	–	भित्ति चित्र
06	–	मधुबाला	–	भित्ति चित्र
07	–	देवानंद	–	भित्ति चित्र
08	–	नवाजुद्दीन सिद्दीकी	–	भित्ति चित्र
09	–	कल्पना चावला	–	भित्ति चित्र
10	–	ऋषि कपूर	–	भित्ति चित्र
11	–	मनी हीस्ट नेटाफ्लिक्स	–	भित्ति चित्र
12	–	लता मंगेश्कर	–	भित्ति चित्र
13	–	श्री देवी	–	भित्ति चित्र
14	–	आशा पारेख, हेलन, वहीदा रहमान	–	भित्ति चित्र
15	–	अभिताभ बच्चन	–	भित्ति चित्र
16	–	धर्मेन्द्र	–	भित्ति चित्र
17	–	रनवीर सिंह	–	भित्ति चित्र
18	–	टाटा स्काई	–	भित्ति चित्र
19	–	अमीर खान	–	भित्ति चित्र
20	–	किशोर कुमार	–	भित्ति चित्र
21	–	दिलीप कुमार	–	भित्ति चित्र
22	–	सुशांत सिंह राजपुत	–	भित्ति चित्र
23	–	साड़ी पर प्रिंट किया गया आशा पारेख का भित्ति चित्र	–	भित्ति चित्र
24	–	कैंलेंडर पर छापे गये भित्ति चित्र	–	भित्ति चित्र
25	–	कोस्टर पर छापे गये भित्ति चित्र	–	भित्ति चित्र

चित्र – 1 (अनारकली का भित्ति चित्र)

चित्र – 2 (अमिताभ बच्चन)

चित्र – 3 (राजेश खन्ना)

चित्र – 4 (दादा साहेब फालके)

चित्र – 5 (मोगैम्बो)

चित्र – 6 (मधुबाला)

चित्र – 7 (देवानंद)

चित्र – 8 (नवाजुद्दीन सिद्दकी)

चित्र – 9 (कल्पना चावला)

चित्र – 10 (ऋषि कपूर)

चित्र – 11 (मनी हीस्ट नेटाफिलक्स)

चित्र – 12 (लता मंगेश्कर)

चित्र – 13 (श्री देवी)

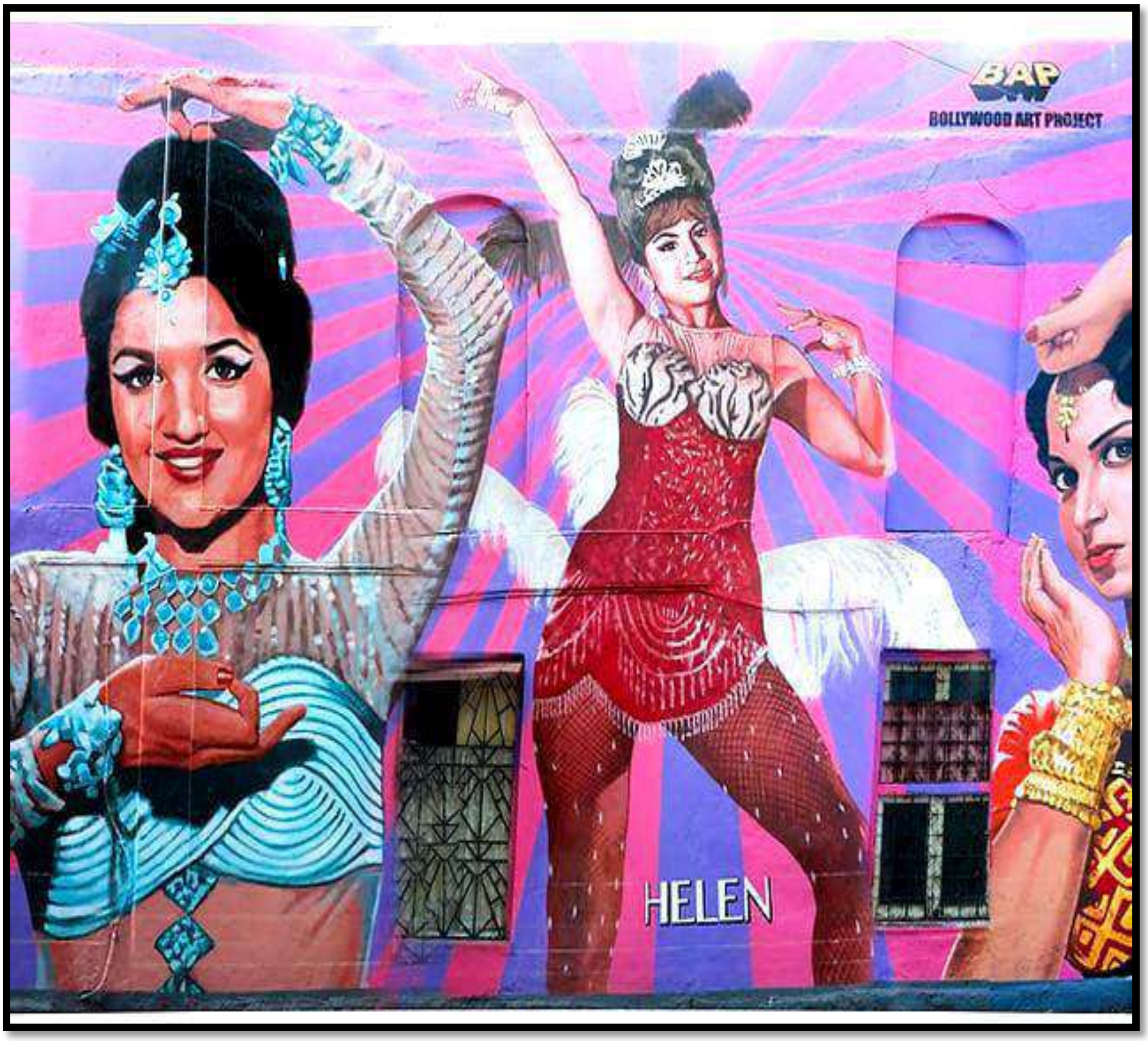

चित्र – 14 (आशा पारेख, हेलन, वहीदा रहमान)

चित्र – 15 (अभिताभ बच्चन)

चित्र – 16 (धर्मेन्द्र)

चित्र – 17 (रनवीर)

चित्र – 18 (टाटा स्काई)

चित्र – 19 (अमीर खान)

चित्र – 20 (किशोर कुमार)

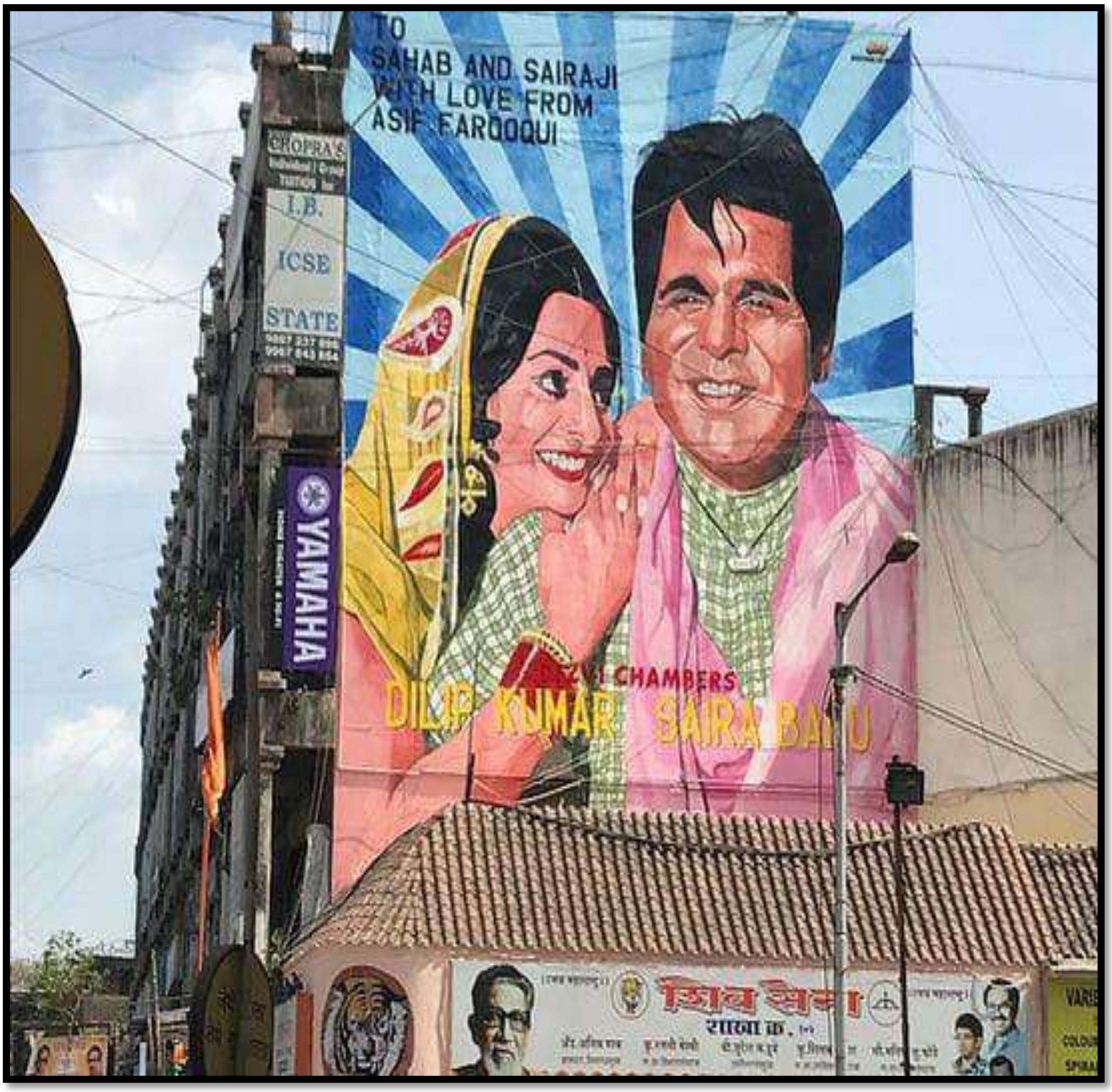

चित्र – 21 (दिलीप कुमार)

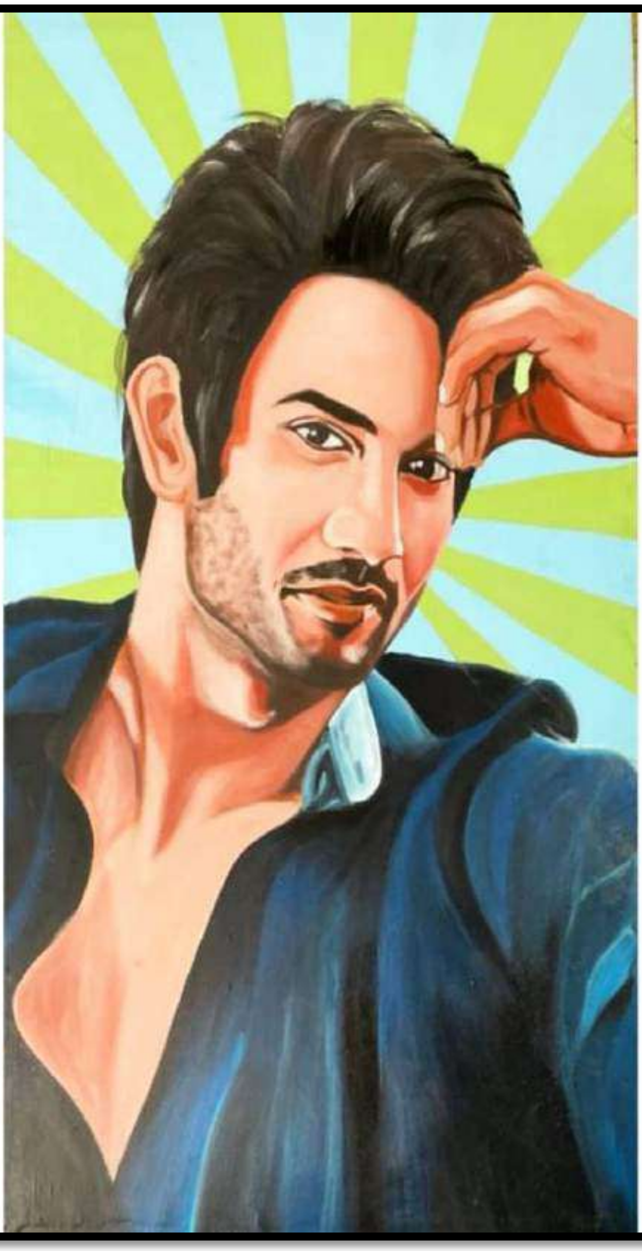

चत्र – 22 (सुशांत सिंह राजपुत)

चित्र – 23 (साड़ी पर प्रिंट किया गया आशा का भित्ति चित्र)

चित्र – 24 (कैंलेंडर पर छापे गये भित्ति चित्र)

चित्र – 25 (कोस्टर पर छापे गये भित्ति चित्र)

Indian Contemporary Artist

Dr. Kavita Singh

KURUKSHETRA UNIVERSITY KURUKSHETRA

Dissertation Submitted for the Degree

of

Master of Art in Fine Arts

Estd. 1968

Head of Department
& Supervisor
Mrs. Santosh
Department of Fine Art

Researcher
Simranjeet Kaur
M.A. Final Year

Department of Fine Arts

Arya Kanya Mahavidyalya,

Shahabad (Markanda) - Haryana

2023-2024

Dr. Kavita Singh

To whom it may concern

This is to certify that Simranjeet Kaur, Roll No. – 220156005 of M.A. Fine Arts (Drawing & Painting) of 2nd year in my college carried out the project work entitled "Indian Contemporary Artist – Dr. Kavita." It is her original work. She has completed this project with full devotion and hard work.

We wish for her successful and bright future.

Date:

Principal

Dr. Aarti Trehan

Arya Kanya Mahavidyalya,

Shahabad (Markanda)

CERTIFICATE BY SUPERVISOR

It is certify that Ms. Simranjeet Kaur student of M.A. Fine Art of final year has completed a dissertation under my guidance on the title "Indian Contemporary Artist – Dr. Kavita Singh." I recommend to submit this project for evaluation.

Date: -

Mrs. Santosh
Associate Professor
Head of the Fine Art Department
Arya Kanya Mahavidyalya,
Shahabad (Markanda)

CERTIFICATE

I certify that the work presented in the project report entitled "Indian Contemporary Artist – Dr. Kavita Singh" for the award of degree of M.A. Fine Arts (Drawing & Painting) is an independent study carried out by me under the guidance of Associate professor Mrs. Santosh head of dept of Fine Arts. Before this no one has chosen this topic for dissertation in this department. I hereby declare that I have constituted and written this dissertation through my own research to pursue M.A. (Drawing and Painting) degree.

Date:-

Simranjeet Kaur

M.A. Final Year

PREFACE

I have endeavoured in the dissertation titled "Indian Contemporary Artist Dr. Kavita Singh" all the details regarding this artist that I carried out. The whole process of writing this dissertation was very exciting and I learned a lot.

In the first chapter I have described about Art, contemporary art and the contemporary art influence to Dr. Kavita ie – about her father Satwant Singh. He is also a very great contemporary artist. In second chapter I have written about the early life of the artist, her study and career, about her art journey.

The Third chapter is about her artworks in which I have written about her paintings, her prints and black & white drawings etc. I have explained the themes of her work, her awards & exhibitions. The fourth chapter is about the contribution of the artist in contemporary art and her publications. In fifth chapter I have mentioned the interview of Dr. Kavita taken by me for this dissertation.

All the details I have studied and told by Dr. Kavita to me are written in this dissertation.

I have chosen this topic because I personally love artworks and like Dr. Kavita, I also do every medium. I have been very impressed by the works of Dr. Kavita. Her awards, workshops, exhibitions motivated me a lot and this has increased my interest in this field.

ACKNOWLEDGMENT

The writing of this dissertation has been one of the most challenging part of academic session that have faced. I have learned a lot and really enjoyed while working on this research. I am really thankful to all of them, who helped me with their valuable support during the entire process of research and would like to take this opportunity to express my deep sense of gratitude to all those people without whom this dissertation could have never been completed.

Its an honor for me to work under the guidance of honorable Associate Prof. Mrs. Santosh, head of Fine Arts department of - Arya Kanya Mahavidyalaya, Shahabad (M). I am really thankful to her for providing me with all necessary information and her valuable guidance. Her guidance, motivation, immense knowledge and worthy experience helped me in my research and dissertation writing.

I am thankful to Dr. Ram Viranjan, Head of the Department Kurukshetra University Kurukshtra, who is running this subject successfully in Arya Kanya Mahavidhalya Shahabad.

I want to thank Dr. Kavita who gave me her valuable time and share her thoughts with me and make my way easy for this work.

I am heartly thankful to my teachers Mr. Mahesh Dhiman and Miss Anjali Dhiman, who guided me very well during this work.

Also, I am very thankful to Dr. Gurcharn Singh Sir (Department of Fine Arts Kurukshetra University Kurukshetra) who gave me his precious time to make my doubts clear.

I also thanks to the Principal of my college Dr. Arti Trehan who is giving opportunity for the students every year.

It is my privilege to thank my parents and family for the constant encouragement and emotional support throughout my research.

I am extremely thankful to my friends and all the non-teaching staff in the department for providing me necessary suggestions during my research.

Simranjeet Kaur

INDEX

CHAPTER	Page no.
▪ **Preface**	
▪ **Acknowledgement**	
Chapter-1 :	01 – 20
○ Art	
○ Contemporary Art (India)	
○ Contemporary Art Influence (Satwant Singh)	
Chapter-2 :	21 – 31
○ Early life of Dr. Kavita Singh	
○ Study and Career	
○ Art Journey	
Chapter-3 :	32 – 50
○ Art Works	
○ Themes of her work	
○ Exhibitions and Awards	
Chapter-4 :	51 – 63
○ Contribution in Contemporary Art	
○ Publications	
Chapter- 5 :	64 – 74
○ Interview with Dr. Kavita Singh	
Conclusion :	75 – 76
Bibliography :	77 – 77
List of Images :	78 – 78
Images:	79 – 103

CHAPTER – I

- **Art**
- **Contemporary Art (India)**
- **Contemporary Art Influence**

ART

Art is a diverse range of human activity and resulting product that involves creative or imaginative talent generally expressive of technical proficiency, beauty, emotional power or conceptual ideas. There is no generally agreed definition of what constitutes art. In the Western tradition, there are classical branches of visual arts painting, sculpture and Architecture. Theatre, dance, other performing arts as well literature, music film are included in a broader definition of arts.

Until the 17th century, art referred to any skill or mastery and was not differentiated from crafts and sciences. In modern usage after the 17th century, where aesthetic considerations are paramount, the fine arts are separated and distinguished from acquired skills in general such as the decorative applied arts.

The nature of art and related concepts, such as creativity and interpretation, are explored in a branch of philosophy known as aesthetics.

If we talk about visual arts, it consists of forms such as painting, drawing, crafts, sculpture, photography, videography, design and architecture.

Applied arts such as industrial design, graphic design, fashion design, interior design are visual arts.

Basically, Art is human work. It is a manipulation of objects, words events in some way, and for some human purpose.

The word ART originates from the Latin term ARS meaning a craft or specialized skill. In nineteenth century art came to be generally accepted as fine art.

Defining art has been a perennial challenge, and the age-old question. Many artists have given different definitions of art according to there are their own point of view. There are some of the definitions -

According to Socrates "Art is inner beauty" Socrates is known as the father of Sculpture "He believed in questioning philosophy.

According to Plato[1] "Art is false knowledge of reality”. An Artist’s' imitation can deceive common people, not the philosopher who knows the essence of reality. He belived in Absolute Beauty.

According to Aristotle[2] **“**Art is the realization of a true idea in physical form”. He explains that humans naturally love imitation and that we feel pleasure whenever we can recoginize similarities between what we observe and what we already know.

According to Alexander Baumgarten[3] "Aesthetics is a particular kind of knowledge by means of sensitivity". "At the beginning of his aesthetics , he gives a definition of the term.

According to Immanuel Kant[4] "A work of art typically has not only a form but also content which is associated with a concept but precisely in such a way that both form jointly”. Kant argued that the moral law is a truth of reason and hence that all rational creatures are bound by the same moral law. Thus in answer to the question "What should we do? Kant replies that we should act rationally, in accordance with a universal moral law.

According to Clive Bell[5] "There is a certain uniquely aesthetics emotion, and that aesthetics qualities in an object that evoke this emotion". "Bell's most important, contribution to art was the theory of 'Significant form’. He asserted that purely formal qualities ie- the relationships and combinations of lines and colours are the most important elements in the work of art.

According to Sigmund Freud[6] "Art stemmed from the sublimation of unsatisfied Libido" In simple words, Freud's theory suggests that human behavior is influenced by unconscious memories, thoughts and urges.

- ✪ 1, 2, 3, 4, 5, 6, Aesthetics , Nupur Sharma & Prakas Veereshwar, first edition-2001, Publisher: Satyendra Rastogi for Krishna Prakashan media Pvt. Ltd page-19,106

According to Rabindranath Tagore[7] "Art the response of man's creative soul to the call of the real.

According to Bharatmuni[8] "Arts are painting, music, instrument playing and dance.

According to Abhinavgupta[9] "When an ideal spectator gifted with emotional maturity and the aesthetic sensitivity witnesses a good play on the stage enriched by fine acting, music, dance, costumes, decorations etc. He graps the theme of the play not in a particular but in general context.

✪ 7, 8, 9 - Aesthetics , Nupur Sharma & Prakas Veereshwar, first edition-2001, Publisher: Satyendra Rastogi for Krishna Prakashan media Pvt. Ltd page- 24, Part - II

CONTEMPORARY ART (India)

Indian contemporary art is the art that has been and continues to be created during our lifetimes. This is a form of art that originated near around the 1960s or 1970 and continues to exist till date. This art is emerging day by day. Both established and upcoming artiste are coming up with innovative ideas. It depicts how Indian artists are no more confined to a particular medium of oil on canvas or water colour on paper as they no more have fear to lose their inherent strength and willingness to experiment.

Indian contemporary art is a vibrant and diverse artistic movement that emerged in India after its independence in 1947. It encompasses a wide range of artistic practices including painting, sculpture, installation art, photography and new media. One of the key characteristics of Indian Contemporary art is its ability to reflect the rich cultural heritage and the dynamic social and political landscape of country. Artists often draw inspiration from traditional Indian art forms such as miniature painting, folk art and classical dance, while incorporating contemporary themes and techniques.

Many Indian contemporary artists, explore identity globalisation, gender and social issues through their artwork. They use a variety of mediums and styles to express their ideas and challenge societal norms. Some artists focus on the exploration of personal narratives and emotions while others engage with broader social and political issues.

The art scene in India has witnessed significant growth and recognition on the global stage. Indian artists have been showcased in prestigious international exhibitions. Galleries and art institutions across the country provide platforms for artists to exhibit their work and engage with a wider audience.

Indian contemporary art has also been influenced by the rise of digital technology and social media. Artists are exploring the possibilities of virtual reality, interactive installation to reale immersive experiences for the viewers. In recent years,

✪ Brill.com

there has been a growing interest in Indian contemporary art among collectors, both in India and abroad.

Art fairs, auctions and galleries play a crucial role in promoting and selling art workers, providing a platform for artists to sustain their practice.

Overall, Indian contemporary art is a dynamic and evolving field that reflects the cultural, social and political landscape of India. It showcases the immense talent and creativity of Indian artists, while also engaging with global artistic trends and discourses. The diversity and richness of Indian contemporary art make it a fascinating and vibrant part of the global art scene. Several prominent Indian contemporary artists have gained international acclaim. Name like Subodh Gupta, Bharti Kher, Jitish Kallat, and Nalini Malani have made a significant impact with their thought provoking and visually striking artworks. These artists have pushed the boundaries of traditional artistic practices and experimented with new mediums and techniques.

One famous Indian contemporary artwork is "My Mother and Me" by Bharti Kher. It is a captivating sculpture that depict a life-sized female figure covered in bindis made from traditional Indian materials like resin and fiberglass. The artwork explores themes of identity femininity and the complex relationship between mother and child. It’s a visually striking and thought provoking piece that has gained international recognition.

- **Features of Contemporary Art :-**

1. **Experimentation :-**

Contemporary artists often push the boundaries of traditional artistic practices and experiment with new mediums techniques and concepts. They embrace innovation and are not bound by conventional rules or styles.

2. **Conceptual Focus:-**

Contemporary art places a strong emphasis on ideas and concepts. Artists use their work to explore and express complex themes, social issues, personal narratives, and

philosophical concepts. The concept behind the artwork is often as important as its visual representation.

3. **Multiple mediums:-**

Contemporary artists work with a wide range of mediums including paining, sculpture, installation art, photography, video performance, digital art and more. They freely mix and combine different mediums to create unique and multidimensional artworks.

4. **Diversity and Plurality:-**

Contemporary art celebrates diversity and embraces a wide range of artistic practices, styles and perspectives. It reflects the multicultural and global nature of our society.

5. **Audience Interaction:**

Contemporary art encourages active engagement and participation from audience. It often invites the viewers to interact with the artwork, whether through physical interaction, Immersive experiences.

- **How does Contemporary art Challenge Traditional artistic Practices?**

Contemporary art challenges traditional artistic practices in several ways. One of the main
ways is through experimentation with new mediums, techniques and concepts. Contemporary art encourage artists to break free from those conventions and explore new possibilities.

Contemporary artists often push the boundaries of what is considered 'art' by incorporating unconventional materials technology and performance elements into their work.

Contemporary art places a strong emphasis on conceptual focus. It prioritizes the ideas and concepts behind the artwork rather than solely focusing on technical

✪ https://www.jstor.org

skill or aesthetic beauty. Another way contemporary art challenges traditional practices is though its engagement with current social and cultural issues. Traditional art often depicted historical events, religious themes. In contrast, contemporary art address the complexities of the modern world, including topics such as globalization, identity, gender environment concerns and technology.

➢ Impact of Contemporary Art in India:-

Contemporary art in India has had a significant impact on the art scene both within the country and internationally. It has brought fresh perspectives, devise voices, and new artistic practices to the forefront.

One of the key impacts of contemporary art in India is its role in challenging societal norms and addressing important social issues. Many contemporary Indian artists use their work as a platform to comment on topics such as gender identity, caste, religion, politics and environmental concerns. Also, it played a crucial role in promoting cultural diversity and inclusivity. It celebrates the rich heritage and traditions of India while embracing global influences and contemporary terms.

The rise of contemporary art in India has led to the establishment of numerous art galleries, museums and art festivals across the country. These platforms provide opportunities for artists to showcase their work, connect with a wider audience and contribute to the growth of Indian art market.

Internationally, contemporary Indian artists have gained recognition and acclaim. Their work are exhibited in prestigious galleries and museums worldwide, contributing to the global dialogue on contemporary art. This exposure has not only elevated the status of Indian art but also fostered cultural exchange and cross cultural understanding.

➢ Impact on global art Trends:-

Contemporary Indian art has had a significant influence on global art trends in several ways. Indian artists have brought unique perspectives, innovative techniques and diverse cultural references to the global art scenes, enriching and expanding the dialogue around contemporary art. One of the ways contemporary Indian art has

influenced global art trends is though its exploration of identity and cultural hybridity. Indian artists often navigate the complexities of their own cultural heritage while embracing global influences, resulting in artworks that challenge traditional notions of identity and cultural boundaries. The use of vibrant colours and rich symbolism in contemporary Indian art has captivated the global art community.

The success and recognition of contemporary Indian artists on the international stage have paved the way for increased visibility and representation of artists from other regions of the world. It has encouraged a more inclusive and diverse art world where artists from non-western backgrounds are given greater opportunities and recognition.

➢ Styles and Mediums used by Contemporary Artists:-

Contemporary art in Indian encompasses a wide range of styles and mediums, reflecting the diversity and creativity of Indian artists. There isn't singular style that defines contemporary Indian art, as artists often explore various approaches based on their individual vision and concept. In terms of mediums, contemporary Indian artists employ a variety of materials and techniques. Traditional mediums such as painting, sculpture and drawing are still prevalent but artists also embrace new and unconventional mediums.

Some artists incorporate digital technology video and installation art into their practice, blurring the boundaries between different art forms. Mixed media is another popular approach in contemporary Indian art, where artists combine multiple materials and techniques to create layered and textured artworks.

Additionally, performance art has gained prominence in contemporary India Art. Artists use their bodies and actions to convey messages, provoke reactions and engage with the audience. Collaborative and community based art practices have also emerged in contemporary Indian art.

➢ History of Indian Contemporary Art:-

✪ https://iep.utm.edu

Contemporary art in India emerged in the post-independence era, around the 1950s and 1960s. This period marked a significant shift in artistic practices as artists sought to break away from the dominant narrative of traditional and colonial art.

The Progressive Artists Group, formed in 1947, played a crucial role in shaping the early years of contemporary art in India. Artists like F.N. SOUZA, MF. HUSAIN, S.H. RAZA and others sought to create a new artistic language that reflected the social and political realities of a newly independent India. They drew inspiration from both western modernism and Indian traditions, blending them to create a unique visual vocabulary. During 1970 and 1980s artists in India began to explore more experimental and conceptual approaches to art making. This period saw the rise of Baroda school led by artists like Bhupen Khakhar and Nalini Malini. They challenged traditional artist norms and delved into themes of identity, gender and socio political issue.

In the 1990s, globalization and the liberalization of the Indian economy had a profound impact on contemporary art. Artists began to engage with new media, installation art, performance art and video art, reflecting the changing social and cultural landscape of the country. This period also witnessed the emergence of prominent Indian artists like Subodh Gupta, Jitish Kallat and Shilpa Gupta, who gained international recognition for their innovative and thought provoking artworks.

Today, contemporary Indian art continues to evolve and thrive. Artists are exploring diverse themes, from environmental concurs to the impact of technology on society. They are also pushing boundaries and experimenting with different mediums and techniques. Indian artists are actively participating in international exhibition, biennales, and art fairs further cementing their place in the global art scene.

The history of contemporary art in India is a fascinating journey of artistic exploration, cultural identity and social change. It reflects the dynamic and diverse nature of Indian society and its ongoing engagement with global art trends.

➢ Art styles of India before Contemporary Art:-

Before contemporary art, India has a rich history of various art styles that have evolved over centuries, there are a few notable ones:-

✪ https://academic.oup.com

1. Indus Valley Civilization Art:-

Dating back to around 2500BC, the art of the Indus valley civilization showcased intricate pottery, seal carvings, and sculptures depicting animals and human figures.

2. Bhudhist Art:-

During the Mauryan empire (322 – 185 BCE), Buddhist art flourished. This art style is characterized by the depiction of Budha in various forms, such as sculpture paintings and cave art, like the famous Ajanta and Elora caves.

3. Mughal Miniature Painting:-

In the 16th century, Mughal rulers introduced Persian inspired miniature paining to India. These intricate paintings depicted scenes from royal courts, religious stories and portraits, often characterized by rich colours and fine details.

4. Rajput Painting:-

Rajput painting emerged in the 17th century and was influenced by Mugal art. It depicted themes of love, mythology and religious stories. The paintings were known for their vibrant colours and delicate brushwork and intricate patterns.

5. Tanjore Painting:-

Tanjore painting originated in 16th century in the southern state of Tamil Nadu. It involved the use of gold foil, vibrant colours and precious stones to create religious and mythological paintings on wooden panels.

6. Bengal school:-

After the Tanjore painting style some prominent art styles emerged in India. One such style is the **Bengal School** of art which originated in the late 19th and early 20th centuries. Led by artists like Abanindranath Tagore and Nandalal Bose, this art movement aimed to revive traditional Indian art forms and techniques. The Bengal School emphasized the use of natural pigments, bold lines and a focus on Indian subjects and themes.

✪ https://www.britannica.com

7. **Progressive Artists Group:-**

This group was formed in Mumbai 1947, sought to break away from the traditional art practices and explore new artistic expression. Artists like F.N. Sauza, M.F. Hussain and S.H. Raza were part of this movement, which embraced modern and abstract styles, often depicting social and political themes.

In recent years, contemporary Indian art has witnessed a diverse range of style and mediums from installations and performance art to digital and mixed media, contemporary Indian artists continue to push boundaries and explore new artistic frontiers.

➢ Style under contemporary Art:-

Contemporary art in India encompasses a wide range of artistic practices and mediums. Some of the prominent art forms that fall under contemporary art in India include:

1. **Painting:-** Contemporary Indian painters explore various styles, techniques and subjects ranging from abstract and figurative to conceptual and narrative.

2. **Sculpture :-** Artists create sculpture using traditional materials like stone and metal, as well as unconventional materials like found objects and mixed media.

3. **Installation Art:** This form of art involves creating immersive and interactive installations that often incorporate various elements and materials to convey a specific concept or message.

4. **Performance Art:-** Artists use their bodies and actions as a mediums of artistic expression, often incorporating elements of theater, dance and multimedia.

5. **New Media Art:-** Artists utilize digital technologies, video and interactive media to create innovative and experimental artworks.

6. **Photography:-** Contemporary Indian photographers explore diverse themes and styles, ranging from documentary and street photography to conceptual and experimental approaches.

7. **Street Art:-** Artists create public artworks on walls, buildings and other urban spaces, using various techniques like a graffiti, stenciling and murals to engage with the community.

➢ Drawbacks of Indian Contemporary Art :-

1. **Limited international exposure:-** Indian contemporary art may not always receive the same level of global recognition and exposure as art from other countries which can limit its reach and impact.

2. **Lack of Institutional Support:-** Some artists in India may face challenges in accessing institutional support, such as funding resources and platforms to showcase their work, which can hinder their artistic growth and development.

3. **Limited Diversity in representation:-** While Indian contemporary art is diverse and rich in its themes and styles, there may still be a need for greater representation and inclusion of marginalized voices and perspectives within the art community.

4. **Commercialization and market pressures:** The art market can sometimes prioritize commercial success over artistic experimentation and innovation, which may lead to artists feeling pressured to create works that cater to market demands rather than pursuing their own artistic vision.

5. **Limited accessibility:** Art galleries and exhibitions in India may not always be easily accessible to everyone, especially those in remote areas or with limited

✪ https://www.studiobinder.com

resources, which can limit the audience and appreciation for Indian cotemporary art.

Its important to note that these are general observations and not definite drawbacks for every artist or artwork. Indian contemporary art continues to evolve and thrive and these challenges can also be seen as opportunities for growth and change.

➢ Modern Art V/S Contemporary Art:-

A lot of people logically think CONTEMPORARY ART AND MODERN ART are the same thing – but that isn't the case:-

1. **Contemporary Art**[10] is produced during our time which is usually cited as 1970 to the current day.
2. **Modern Art**[11] refers to art produced between the 1860s to the 1970s. Modern art was significant because it represented a global shift from realism to abstractionism.

The terms contemporary and modern are synonymous, especially with reference to the present styles and trends in art. The concept contemporary or modern is not geographical, it is not fashion, it is not materialism. Nor a theory of social reconstruction. It cannot even completely circumscribe what is existing in the present.

To some, modern is synonymous with the machine and therefore something decadent and indicant. To yet others modern stands for material civilisating of the west and is therefore to be looked down upon from the spiritual heights of India. The element of the modern is a character of consciousness. It is a particular state of tension or concentration which accompanies human will and effort when it grapples with the changed aspect of form, when it battles and strains to grasp the new.

It is that which gives a passionate and vigorous direction to the human activity of a period. The operation of this character of consciousness is like the undying force of the universe itself which surges forth at every fresh creation of civilization.

✪ 10, 11, Contemporary Art In India -A perspective , Prannath Mago , First edition - 2001, Publisher: The Director Nation Book Trust India , Page-7

➢ European Origins:-

Contemporary art exists at many levels, in many media, and is very complex. The beginnings of modern art cannot be pin pointed to any single date. It is, however, generally believed that is became a serious movement shortly after the middle of the 19th century.

Art has the power to captivate, inspire, and evoke emotions in ways words often can't so art history and art education should be freely accessible to anyone. "If we talk about the styles evolution of art, many years ago in 4,000 BCE the art style called **Prehistoric Art**. In which cave paintings, carving on rocks and early sculptures with stone were made. After this during 3,000 BC to 400 it was the time of **Ancient art**. Mesopotamia, Persia, Egypt, Greece, Rome, China were more indulge in this style. Naturalistic images of human beings and written texts for explaining some stories, Earthen sculptures were made during this era. Then **Medieval Art** came into existence during 500 BC in Europe. This art style grew out of the artistic heritage of the Roman Empire and the iconographic traditions of the early Christian Church. Medival artists convey religious messages to the people through their art. They decorate their iconographic images with gems and gold.

An art movement named, **Renaissance Art** from 14th to 17th century take place in which artists start doing cultural subjects like art, music and theatre. The term 'ren-ais-sance' came from Italian word 'RINASCIMENTO' which means rebirth. Artists of this period started classical art and started making figure drawings & anatomical sculptures and symmetrical architecture. Printing press also have been started by this time.

After this **Baroque Art** during 1600 to 1730s get started after the end of renaissance art movement. This style depicts the styles and emotions of the figures. This work done in that period was full of dramatic expressions and the images were realistic. Sculptures and architecture were also on the peak of style and beauty. Domes on the top of buildings nourished new style in architect sculptures.

When the Baroque Art movement was diminishing, In 1700s **Rococo Art** movement started following the baroque style of expressions and emotions of the figures. Artists develop nude figures. A clear definition of figures and symmetry.

The 18th century all over the world was dominated by **Romanticism** (1800 to 1850s), Romantic artists valued the individuality and worked on nature around them with their imagination. This movement looks into the spiritual side of humanity.

French Revolution 1848 led to the start of art movement called **Realism** (1850 – 1880s). These artists worked on realistic subject matter and rejects the imaginative idealization. They focused on people with their everyday life. Realistic artists depicts the contemporary life and nature and their paintings looks like photographs.

Separating from Realism, **Impressionism** (1860s to 1880s) started artists doing academic traditions by doing painting outside. The artist did on the spot paintings rather than in studio from sketches. Main subjects were landscapes and senses of everyday life.

Post Impressionism (1880s to 1905s) was the expansion of impressionism. This art movement emerged as a reaction against impressionist concern for the naturalistic depiction of light and colour.

Meanwhile, in other neighbor countries an artist movement called **expressionism** (1905 to 1920). Portraits and paintings representing the world from subjective point of view. Artists directly disorted the scenes on the canvases to aline with their motion & their mood and ideas.

In 20th century, Pablo Picsso found a most important art movement known as **Cubism**. Artists show different point of view of subject on same plane. They paint in such a way that suggested 3 Dimensional. Which shows different point of views in same painting.

At the same time cubism was going in France, another movement was going to start at the early. The energy and dynamism of the modern world excited many artists for future. They started an art movement called **futurism** (1909 – 1914).

World war - I (1914 – 1918) changed the landscape of world drastically. An anti war movement called **Dadaism** (1916 – 1924) was started in negative reaction to

the horrors to folly of the war. The art, poetry, and performance produced by Dada artists is often nonsensical in nature.

When the Dadaism art movement was diminishing, a new movement named **Surrealism** (1920s to 1960s) exploring the inner working of mind Realistic art shows the imaginary world surrealist works challenged the perception & reality of the world.

A new movement for experimental European artists going with surrealism named **Bauhaus** (1920s to 1930s). Its goal was to merge all artistic mediums into one unified approach, that of combining an individual's artistry with mass production and function. Bauhaus design in often abstract, angular & geometric with little ornamentation.

Abstract Expressionism take place in 1940 to 1950. It was first American movement to became popular internationally following world war – II, this movement incorporated the dark trauma of the world. Artists were divided in two groups – action painters and colour field painters.

In 1950s a movement, in which artists incorporated common place objects – comic strips, soup cans, newspapers and more into their work. This movement was named as **Pop Art.**

After world war II – **Minimalism** – an art movement began in western art. This is a design or style in which the simplest and fewest elements are used to create the maximum effect.

The art of today's artists in respond to a global environment that is culturally diverse, technologically advancing. Which we call as **Contemporary Art.** The art is a dynamic combination of materials, methods, concepts and subjects.

✪ https://www.gety.edu

S. Satwant Singh

CONTEMPORARY ART INFLUENCE

Satwant Singh is one of the famous contemporary artist of 21^{st} century. He was born on 13 August, 1948 in Shimla. His father name is S. Sadhu Singh and his mother name is Beant Kaur. He was just 2-3 years old when he developed interest in painting. There was a coal room in his house, where he used sit alone and do his paintings. He is introvert by nature, so he often sit alone at his place. His parents told him later that if they have to find him they state way go to coal room.

Near the fire place he used coal to make drawings on the walls. He speaks less and express his thoughts by his drawings. As he was born in Shimla, he loved to roam around the hills. He spent his most of time with nature. He got attached with animals and birds there. Its impact can be seen on his work. He often use animal figures and bird images, in his work. The subject matter of his work is goat. He use goats, hens, rabbits, mushrooms. In one of his interview he said that he make drawings on every single sheet in his house. His father was music lover. They have a piano at their home. Due to art environment in his home, his family supports him in drawing.

After matrices he was interested in medical stream but he observed, he spend his 90% of time in drawing, even in exams too. So, he decided to do fine arts. His father, often buy drawing books for him. Some of these books contain famous artist's work like – Pablo Picasso, Leonardo da Vinci and Delacroix.

Satwant Singh used to copy them and this improved his drawings specially figurative. His work consists of trees leaves which shows his more interaction with nature and not with humans.

He did five years diploma in Applied Arts from Govt. College of Art, Chandigarh. After that he did his graduation. He got a chance to visit palace of Maharaja Patiala. He saw so many artworks there (during his school time) many portraits were also displayed there. After going home he used to copy them.

He made a painting on a poem which was based on the them 'widow'. He made it in oil colours first time. He was 8 – 9 years old that time. There was an art gallery in Shimla on mall road. There was a famous book store also they bought his painting for Rs.60. His father's friends often visit there home. They were artists and suggested his

family “Your child is doing very well in this field, and put him to any art college for further studies.” Then he joined art college in Chandigarh. It was totally a new world for him. As he lived in Shimla this place was so much moist and hot.

At that time the Art college was incomplete. He wasn’t interested there. He and his friends go to classroom very rare. They were all from different mediums and make each other learn new things.

His principal was Mr. Shushil, one of the famous artist from Bengal. When he saw his work, he liked it very much. He did exhibition of his paintings in the corridors. Even he exhibited his paintings four times there.

The subject matter of his works are human relations, fear of unknown, man & women life, cycle of life, mindscapes. He started his work from, birds, waterfalls, rocks, rivers, rainbows. He read mythology and conclude that the deities are in form of symbolism as Durga sitting on lion symbolize power.

He likes reading books. Harry Potter is one of his favourite novel. He like J.K. Rowling writings. He likes fiction.

Not only reading but he write stories and poems also. He wrote & illustrated a story book for children. This book got national award for stories and illustrations. At present he is 76 years old. He has given his contribution as a cartoonist, painter, author and poet also. He did a job of teacher in his career in Chandigarh.

His daughter ‘Dr. Kavita Singh’ is also a very famous contemporary artist. At present she is working as professor and head of department at S. Sobha Singh Department of Fine arts, Punjab University, Patiala (Punjab). She was inspired by his father ‘Satwant Singh’. He was his first teacher who motivates her. Due to artistic environment in her house. She get attracted towards fine arts.

✪ https://youtu.be/Vp9tTix-8FA?si=xKtn4KKZjHS14jdv

CHAPTER – II

- **Early Life of Dr. Kavita Singh**
- **Study and Career**
- **Art Journey**

EARLY LIFE OF DR. KAVITA SINGH

Dr. Kavita Singh was born on 15th Nov, 1980 at Shimla, Himachal Pradesh. Her father name is S. Satwant Singh, who is also a very well known contemporary artist of 21st century. Her mother name is Mrs. Harjeet Kaur. Her father is her first teacher. He was working in Chandigarh at that time. At the age of one year, she came to Chandigarh. Here she completed her schooling. Dr. Kavita started doing art when she was three years old. She often watched her father (Satwant Singh) doing paintings and drawings. She said, "If I sit near by the fire, I will definitely get its heat". She was not forced by her family to enter in this field. She is inspired by her father. She always watch her father and copy his work and style when her father leave the room.

Once she was copying her father's work in the room. Her mother told her father that when he leaves the home, Kavita started doing drawing, even she showed her work to him father Kavita's father was surprised to see his daughter's work. He appreciated her as she drew very well at a very little age. Her family always supported her.

Her father loved reading books. Dr. Kavita said, "The things which your family do, you will definitely adopt them". Dr. Kavita also write poems. She started drawing at the age of 3 years. Like her father, she draw on all the sheets in the house. She is also inspired by the nature. The hills of Shimla, the trees, the birds and animals have a different space in her life. After moving to Chandigarh, she missed the greenery and the peace of Shimla. It was very difficult for her to adjust in a smart city.

After completing her school, she got admission in Punjabi University, Patiala (Punjab) in fine arts. When she started painting, She worked on Masks first. With the changing of time, the themes of her work changed. She worked on current social issues of current time period. She always depicts a hidden message in her work by using symbols.

At the age of 16, her drawing got selected in all India fine art exhibition and won AIFACX award, Delhi. She was the youngest artist who won this award at a very young age. During vacations, they often visit Shimla. They came to Panchkula due to her father's job. There, she still miss her childhood in Shimla. Her artworks depicts these memories in the form of mushrooms, hills, fishes, boats, birds etc. She often recalls the memories of holidays, when she went to Shimla.

STUDY AND CARRIER

Dr. Kavita Singh did Masters in Fine Arts (Painting and Graphic Print Making) from Punjabi University, Patiala. Even she was the Gold Medalist of her university. She was always a brilliant student either in school or university. When she started her university she did work on ‘Masks’. She searched on every type of masks in India. She has searched in detail about Tribal and Folk masks of India. She even made some paper mache masks. She searched Asian countries like Japan, China, Srilanka, African, Thialand and Cambodia and find different styles of masks. She did exhibition of papermache masks. She worked in Drawings. She did black and white works with Red combinations.

Her most of work depicts woman. She showed woman desires, win loss and difficulties in the life of a woman. She loves reading books, she said that once she read some lines written by Rabindranath Tagore in which he described that “Every child do not have more toys but every child have paper boats to play with”. During rainy seasons every child made some paper boats and play with it. She take it as a source of inspiration and make paintings on boats. Also she did an exhibition of these paintings.

Then a book named – “An Ode to a Paper Boat” was published, depicting her paintings on boat. French Embassy sponsored her exhibition of this work. She won Lalit Kala award, AIFACX State award for these artworks at the age of 20 years.

She tried Indian folk art, Tribal art, Madhubani art in Poster colours. After this she made masks in metal with metal sheets and Greece. She was doing masters in painting. From the beginning, she was more interested in black and white drawings. This thing attracted her towards print making. She loves textural works. At that time she starts print making in her university. She made 80-90 prints while studying there. She worked in so many mediums of print making like Chinecolle, relief on woodcut, colourful and black & white, drypoint, linocut, intaglio.

She loves texture work on canvas in mix media, oil colours, pastels, charcoal paper forms and cloths. She experiment new textures with different mediums she often worked on females. She said that she don’t work on female as a feminist, instead

she worked on female, because being a female, she can depict a woman desire, dreams, fantasies much more efficiently and she is not a feminist. Even she uses a girl image in her most of her work. It is a kind of face form of a girl. It is her signature style she said that girl face is her own face which she use in her work. When she depicts any other women in her work, she skip eyes in the face. She skip the lips, when she have to show voiceless woman or mute women who can't raise her voice. Also, to show blindness of the world she skips eyes in the face which give message that the world is blind who never see the social issues related to woman.

Dr. Kavita develop this signature style while she was studying in the university. Here, her hairs were short and she looks like that face form. She developed this face from sketching and this sketching take a form of signature.

She used crow, pigeons as a sign of messenger . A parrot as a symbol of love. In an exhibition, her father's friends came and advised that her paintings tell poems. There is some hidden poetry in her paintings and she should write poems on each of her paintings. In this context, she made 32 paintings and wrote poems on each of them. She made them black and white because these were on her childhood and to show the blur effect of old memories (childhood memories).

Also she is the only one who worked on Amrita Pritam's poetry. Firstly, she read the poem and understand it then drew paintings with ink and charcoal. On every two lines of the poem "Ajj Akhan Waris Shah Nu". This was totally a sorrowful work. Which depicts the pain, sorrow of the people during the time of independence.

After this, she divert herself towards God and did some colorful work in which she read and understand the Gurbani 'Barah Maha' written by Guru Nanak Dev Ji.

She tried different mediums. Sometimes she did textural work on canvas, sometimes she did print making and many more. She believe in trying each and every medium and technique. She got bored while doing work in a single medium for a long time period. She depicts an indirect message in her paintings.

She rise the current social issues with her artwork. She use symbols and other forms in her work to correlate the work's theme with a social message. After completing her masters in painting and print making. She did Ph.d in Fine Arts from Punjabi Univeristy, Patiala (2014). She did research on Sikh calendars art in her Ph.d.

She did research on contemporary painting and sculptures. She wrote 85 research journals and around 150 publications can be seen of her own.

There is a very important role of her parents in her study and carrer Dr. Kavita said that if there is anyone who helped her during her life time is only her parents after the God. Her mother always go with her everywhere. Even during her exams her mother sat outside the room. Dr. Kavita always found her mother behind her. She belives that the real motivation came from our own family. Many artists choose one medium or technique for their work but she did work in so many mediums and techniques.

She never bounds herself in one thing. She did whatever, she wanted in her life. She observe every little thing surrounds her. She said that "We learned from our observation". By observing things we can experience and learn so many new things in our life. She believed that some people says that the earlier time was best and today they don't get much chance to explore themselves. But in her opinion, there is no specific time and topic or medium to do art. We paint our thoughts and memories.

Her father said that if you want to draw a tree, firstly saw a tree and observe it from very close. Sit behind the tree. You should talk with it and observe it for at least 2 – 3 days. After this deep observation draw it. But today's generation, want to draw a tree sitting inside the room. Also want to draw nature without feeling it.

During her university, she did so many experiments and tried a lot of mediums and techniques also she had participated in so many exhibitions and won many awards.

She completed her graduation in 2001 and Masters in 2003. She topped the university in graduation and Post Graduation. She got Trilok Singh Chitarkar Award 2003.

She was awarded 'Le Corbusier Scholarship' by Chandigarh Lalit Kala Akademi, Chandigarh for 2009-2010. She completed her Ph.d from same University in 2014.

Presently, she is working as Professor and head, in S. Sobha Singh Department of Fine Arts and incharge of Museum and Art Gallery, Punjabi University Patiala.

ART JOURNEY

Art journey of Dr. Kavita begins from her childhood. The artistic environment of her family gave a push to her artistic life. She born in an artistic environment. She adopt the thing which she saw near by her. She was born in Shimla, the capital town of Himachal Pradesh. The beautiful environment, chipping of birds, starry nights attracts her towards the beauty of nature.

At the age of one year she moved to Chandigarh with her family because of her father's job. During holidays she often come to Shimla. Her first inspiration is her father. She always saw her father doing painting and developed interest in art but never showed her father. At the age of 3, she started doing drawings.

Her mother saw her doing drawings just after her father leaves home, she started to do copying his work in his room. One day, her mother took her drawings and showed to her father and tell him that when he leave home, she enter to his room and copy his work. Her father appreciated her drawings and supported her. Dr. Kavita got this talent from her father. She just adopt the artistic things from her family's environment. She did her schooling from Chandigarh. During her schooling, she participated in so many competitions. She was good in studies. Here, in a smart city she always missed her childhood memories.

She depicts her childhood memories in her works. Her art get feathers to fly over the sky when her father (Satwant singh) submit her drawing in all India Art exhibition. She won AIFACX award for this drawing at the age of 16 years. She was the youngest artist who won this award. After the completion of her schooling, she got admission in BFA in Punjabi University Patiala. She starts here with masks. She worked on masks. She participated in exhibition of Masks at Indus Ind Bank Art Gallery, Chandigarh in 1998 and exhibition of paintings and masks organized by Indian council for child welfare, Chandigarh on World Disabled Day 1998. She searched on different styles of masks.

After working on masks, she started doing work on paper boats. She loves reading books. She often read Rabindranath Tagore's writings. She got influenced by his written lines in which he said that every child don't have so many toys to play but

each child have a paper boat. She did so many paintings on paper boats. One of her father's friend adviced her to write poems on her paintings, because her paintings tell poems. After this, she stated writing poems on her paintings. In her first book titled "An Ode to a Paper Boat", She drew drawings with charcoal and ink also she wrote poems on each of the paintings. She exhibit these drawings and release that book and this extinction was sponsored by French Embassy. She made the paintings black & white to show the blur effect of childhood memories.

She loves doing textural work. She used to make textures with cloth, paper, ink, charcoal. She also worked in mix media. She did back & white drawings mostly. This shifted her interest towards print making. While studying in this University she made around 80 – 90 prints. She tried chinecolle, relief on woodcut, coloured ink and black & white, dry point, linocut, intaglio. She depicts social issues in her work specially. She showed the condition of women in the society. She developed her signature style while studying.

At that time her hairs were short and she depict her own sketch as her signature style. She always recalls the childhood memories. But when she showed silence of the woman, she skipped the lips in the face form (her signature style) when she showed the blind women she skipped the eyes in the face.

Dr. Kavita loves poetry. She read a poem by Amrita Pritam named "Ajj Akhaan Waris Shah Nu". This poem is about the conditions of India during Independence. The pain, anger, grief, sorrow in the public was depicted by Dr. Kavita through her drawings. She made drawings on every two lines of that poem. Her grandmother used to sing this poem. She got inspired by this memory and she is the only one who worked on this poem in the whole world. She inaugurate this book and exhibit her drawings on 70th anniversary of the poem "Ajj Akhaan Waris Shah Nu" by Amrita Pritam.

Her name is totally matched with her personality and qualities. Not only in drawing but relating her drawings with poems is a very unique thing in her art journey. She never worked on only a single theme or technique.

After working on this sorrowful poem, she divert her mind towards God. She did black & white work that time but now she changed her black & white style into

colourful medium. She shifted herself towards God. She started reading Gurbani and she read the 'Barah Maha' written by Guru Nanak Dev Ji. This gurbani is about how one can meet god in all the seasons. She made two colourful drawings on each of the season. After completion of her work she published them all in a book named "The Divine Manifestations" in seasons. She described – how Guru Nanak Dev ji described the nature in Gurbani. She made this book bilingual.

Again she moved towards poetry. They celebrated 300 years of Waris Shah in University. In that context, she participated in exhibition there. Shiv Kumar Batalvi is her one of the favourite poet. He use symbols in his poems. He is known as Viraha Sultan. She made paintings on his 20 poems in charcoal. It took 6 months to prepare them.

From 1995, she is participating in workshops and exhibitions organized by Chandigarh Lalit Kala Akademi. She conducted so many workshops on Masks in Chandigarh. There is no doubt in saying that her wok, exhibitions, workshops and awards are much more than her age. Not only in India, she participated in international exhibitions also. While doing study in university, she started participating in exhibitions on international level.

In 2012, she was invited to participate and represent Indian Art in 15th Asian Art Biennale, Dhaka (Bangladesh).This was orgnaised by Bangladesh Shilpakala Academy. It is a National Academy of fine and performing arts in Bangladesh. Not only in workshops and exhibitions but also she got invited to present her research papers. In 2010, she was invited to present a research paper titled "Grow More Good" – Art and Philosophy of Sardar Sobha Singh at a prestigious National Seminar titted 'Chitrakar Sardar Sobha Singh : Shaksiat Seminar organized by department of fine Arts, Punjabi University, Patiala in connection with 110th Birth Anniversary of Saint, Philospher and Artist Sardar Sobha Singh. Next year (2011) she was invited to Kanpur to present a research paper on "Current and Undercurrents of Social Concerns in Art. Same year she got invited to present a research paper titled "The Journey Between Inspiration and Expression on Canvas" in Shimla.

She has presented about 20 research papers through out India. In 2013, she was invited to present Research paper titled 'Janam Sakhis' – The splendor of Sikh

Miniature art at International conference on Miniature paintings titled – Timeless miniature paintings organized by SADAA and Department of drawing and painting, University of Rajasthan Jaipur from 29 Dec, 2013 to 31 Dec, 2013.

In 2014, she present a research paper titled – "Women Artists" organized by department of fine Arts, K.U.K. and same year (2014) she presented a research paper titled – "Unfair Portrayal of Women in Popular Culture in Patiala.

In 2014, she completed her Ph.d. from Punjabi University, Patiala. In 2015, she presented 2 research papers one in Nainital and other in Kurukshetra. In 2016, she was invited to present a research paper titled 'Research Methodology a Road Map to research in fine arts: An analytical study of Sikh Calendar Art at National seminar organized by Indira Gandhi National Centre for the Arts in collaboration with Museum & Art Gallery and S. Sobha Singh Department of Fine Arts, Punjabi University, Patiala on 28th March, 2016.

Not only this, she presented many more research papers. She has written 85 research papers in her Ph.d. if we talk about her exhibitions, she has participated in more than 200 exhibition till now. She has participated in solo exhibitions, group shows, and international exhibitions also. She was invited to participate in Ratnawali – 2022 "A folk painting workshop" as part of Haryana Day State Level Festival organized by Department of youth & cultural Affairs, Kurukshetra Univeristy, Kurukshetra from 28th – 31th October, 2022. On the occasion of '300th Birth Anniversary' of legendary Sufi Poet of Punjab and creator of Qissa Heer Ranjha – Waris Shah' organized by S. Sobha Singh Department of Fine Arts, Punjabi University, Patiala at Museum & Art Gallery, Punjabi Univeristy, Patiala from 22nd Nov, 2022 to 30th Nov, 2022.

She has coordinated so many workshops, seminars and conferences. She has coordinated national painting workshop titled – "Sau Kyun Manda Akhiye Jit Jamme Rajaan" – A salute to womanhood' organized by S.Sobha Singh Department of fine Arts, Punjabi University, in 2013. If we saw her lectures, workshops and exhibitions, she depicts woman's situation in the world. She said that she is not a feminist as she always raise her voice for woman through her art.

She depict woman in her work because she is also a woman and can easily understand a woman’s situation. In one of her painting she showed the burden of work on a woman by making more than 2 arms carrying utensils, files. laptops etc. showing that it doesn’t matter either the woman is doing any job or not but she have to do all the household works.

Also some of her work depicts the social condition of woman as a lady walk outdoor, the people around her keep their eyes like crows on her.

She depicts the win – loss, desires in the life of woman in her work. She used textures and geometrical shapes in her early works.

So many articles in newspapers and magazines can be seen regarding the works of Dr. Kavita. Around 40 – 50 magazines were published about her. Also she has published about 150 publications. Not only this can tell about her journey because still she is working and creating herself.

At present she is working as professor & Head, S. Sobha Singh Department of Fine Art and Incharge of Museum & Art Gallery, Punjabi University, Patiala.

Dr. Kavita is still on her journey and exploring herself. She continue to explore experiment and evolve her artistic expression, always ready for new inspiration and learning. The art journey continue as long as the artist’s passion and creativity endure.

CHAPTER – III

- **Art Works**
- **Themes of her works**
- **Exhibitions & Awards**

ART WORKS

Dr. Kavita is a well known contemporary artist. She did a lot of work in her career till now. At the age of 44, she is contributing a great role in the field of fine arts. She is not bounded in one category or medium. She tried a lot of mediums like – charcoal, ink, graphic prints, acrylic colours, oil colours, pastels and mixed media.

Her works, exhibitions, workshops and awards are much more than her age. Here we have description of some of her artworks.

➢ BLAK AND WHITE DRAWINGS:

1. The Germination of Emotions (Image – 1):-

This is a black and white drawing made in 2018. She used charcoal in this drawing. This drawing depicts a lady (herself) holding a mobile phone in one hand and a paper boat in other. As a lady runs the society, five babies are shown, which symbolize the five ‘vikaars’ of human ie – lust, anger, ego, greed and attachment. The lady in the drawing is lying on mushrooms.

Dr. Kavita use mushroom in her work as a childhood memory. The snakes on her head are shown as the society and the people who speaks about her. In the background, she made some buildings which denotes the urban area. This artwork is a beautiful combination of the old memories of her childhood and the modern technology with style as the lady is wearing necklace and goggles.

2. Urban Shopper (Image – 2) :-

This drawing is also made in charcoal. This drawing depicts a chimpanzee. She drew Chimpanzee as a gentleman coming from shopping. She choosed chimpanzee because we all developed from them. This drawing is also depicts a deep message. The Chimpanzee is carrying a lady in his carry bag with a price tag. This artwork was made in 2019. Buildings are shown in the background with dark clouds.

Dr. Kavita showed – how the man keeps his eyes on woman and treats a woman like a thing, whom he bought from market. She gave a message – every man either she is literate or illiterate, the thinking regarding a woman is same.

3. **The Three Sisters (Image – 3) :-**

In this drawing Dr. Kavita showed three ladies. She made this drawing in 2012, She showed Amrita Shergill, Amrita Pritam and Frida Kahlo as three sisters. She correlate their lives with each other as their lives are full of pain and difficulties. She beautifully made images of their works with them.

She made "The Three Woman" named painting on right side of Amrita Shergill and she made a image showing Amrita Pritam's poem "Ajj Akhaan Waris Shah Nu". She has shown Frida Khalo's portrait combining with her theme of work.

Frida Kalo – a Mexican artist often use heart, scissor cutting the vain, as her work is mostly on pain and complications of her life. Also Dr. Kavita has connected these three ladies with Veins. Background is covered with clouds.

4. **Frida Khalo – The Empress of Pathos (Image – 4) :-**

Dr. Kavita made this drawing in 2018. She portrayed Frida Khalo (a Mexican Artist) with tears in her eyes. Her body is shown of a deer. Dr. Kavita tried to tribute Frida Khalo by her drawing. She used Frida Khalo's symbols which she often use in her works.

Frida Khalo mostly showed herself in a deer with arrows on the body, a child, sperms in her works. Her life was full of pain and challenges, disease, accidents. She was very brave, she did painting even when she was on stretcher. Frida often featured her own body in her work presenting female body in unconventional manner, such as during miscarriages and child birth or cross dressing.

5. **Inner Illuminations (Image – 5) :-**

This is a charcoal drawing made in 2009. In this drawing, Dr. Kavita depicts herself in a lanterns with an idea of finding herself, enligthing herself. She showed her head as upper part of lantern because she want to give a message of lightening the

knowledge. In background, she made dragonflies. She gave a message “Man Jeete Jag Jeet” – a line written in Gurbani which means if we win our own self, we can win the whole world. We have to find our self first.

6. Selfie Avatara (Image – 6) :-

This is also a charcoal and ink work made in 2015. In this drawing Dr. Kavita showed a lady in mobile phone’s screen. The lady is holding different things in her 6 hands. She is holding a pen, a rolling pin, a key, globe, a flower and a cell phone in which she is taking selfies with a smiley face. The lady is looking stylish as wearing a sling bag and a locket in neck which is basically a symbol of woman.

She is wearing heels, Dr. Kavita gave a beautiful message by using these symbols. She showed that a lady do so many works even with a job too. She is a ubar woman. She keeps smiling in front of the world. The back ground is reflecting an urban area.

7. The Panorama of My World (Image – 7) :-

This is a beautiful detailed work made in 2016. This artwork shows the face of the world of Dr. Kavita. She showed masks in this painting which tells us that she did work of masks. At left upper corner she made herself trying to catch the moon. She made figures in different positions which shows the ups and downs in the life but all are enjoying it. At the right corner she made apple with human features. Apple is a symbol of Adam & Eve.

8. Carnation of Urban Eve (Image – 8) :-

This is a charcoal drawing made in 2018. In this, Dr. Kavita showed a lady wearing crown of forky cactus. This symbolize the harsh reality of the world. A book, handbag, cell phone, goggles are her daily life things. These indicate her busy schedule. Some birds are there and listening her because nobody else care what she say. The face is drawn in miniature style and a locket (a symbol of woman) is also made around her. The lower body of this lady is of an animal. And the background is full of clouds. Some buildings are also made which shows the urbanization and a woman is updated with time.

➢ COLOURFUL DRAWINGS IN INKS:

1. Between Myth and Reality (Image – 9):-

In this painting she showed a face of girl child with the body of cow. She made lower body of cow because people worship cow and girls with the feet of cow she made her sown feet too. Today's girl use mobile phone and other gadgets and she being in a connection with the world. The lotus in the hand symbolize the romance and beauty. This painting was made in 2015.

2. Mermaid in Urban Jungle (Image – 10) :-

This painting was maid in 2015. Dr. Kavita think that she is a mermaid and stuck in a jungle which symbolize a urban city. She depict the urban city as a jungle.

Where she came for study and job. She never wanted to leave Shimla and come to a city but she came there due to some reasons. She showed a woman in the form of mermaid which can swim and go anywhere. Mermaid is an imaginary creation and a fantasy based creature. She wants to swim like a mermaid. She do multitasks and showed that the mermaid is holding 6 different things in her 6 hands. The Pen in her hand shows that she do poetry. The gun shows that she can defend herself. The Mobile phone shows her connectivity with the world. The Rolling pain showed that the she also do household works. The Lotus and parrot symbolize the romance and love. She is wearing a sling bag. This symbolize that she is also a working woman.

3. Timeless Clock (Image – 11) :-

In this paintings, Dr. Kavita showed herself in the form of a clock. This clock is timeless and don't run according to the time. It is running in a flow a like a river. She made city life in the background. This painting also gives a beautiful message that a woman works whole day and the clock also run timelessly ie – it runs rapidly and the woman also work without thinking of the time.

She do multitasks and as a clock don't stop, woman also don't stop and follow a busy schedule whole day.

➢ COLOURED PAINTINGS (Acrylic on Canvas) :-

1. **The Island of Self Revelation (Image – 12) :-**

Self revelations means finding our own self. She made herself in an Island because she wants to live in an area where she can feel her thoughts. She is recalling her old memory in the form of boat. A lantern is showed on the head of a girl (herself). The lantern symbolize the lighting of knowledge Dr. Kavita gave a message of self enlightenment through this theme.

She gave message to know own self not others. The moon and stars in the sky, the lotus in the water is her memories of childhood. As she is too much attached with nature from her childhood. She used them symbolically. This artwork was made in 2010.

2. **The Paper Boat Seller (Image – 13) :-**

Dr. Kavita showed herself as a paper boat seller. This artwork was made in 2010. She showed herself as a seller because she thinks that she can go anywhere in her paper boat (a memory of childhood). She asked others to buy boats from her and go wherever they want and enjoy it.

She made the face without lips and eyeballs. She take elements of nature (lotus) as the design of her cloths. In background she made some trees very softly in a style and symbolize them in just an expression.

3. **Crows in the City (Image – 14) :-**

Dr. Kavita used a textural sheet in work. She made a girl child in painting who is dreaming. This girl child is her own image. Dr. Kavita showed herself dreaming and the crows are sitting and their eyes are very sharp and they are keeping their eyes on her.

The crows symbolize the cruel world. The people keeps their eyes on her in a society. She symbolize the crows as spectators. Background is red and some buildings are shown in an expression. The girl child is made in a very soft style and she has not made her eye balls because she is dreaming with close eyes. She wants to live in her dreamy world.

4. Mermaid in the Bowl (Image – 15) :-

Dr. Kavita showed herself as a golden fish in the form of mermaid. And she is in her own world. She showed the fish in a bowl which is her world. The birds around her is the people who are watching her from outside and they are waiting for her to come outside and they can peak at her. The bowl is kept on a table which symbolize that the people often keep that bowl as a decorative piece in their home.

She relate this with the condition of woman because people also think that woman is a kind of object and the woman don’t get the respect which she disserve from the world.

5. Pixie near the lotus Pond (Image – 16) :-

In this painting she made a baby fairy sitting near the pond. She showed herself in the form of pixie. She used textural sheet to give a 3D view. She depicts a message that sometimes we want peace and want to sit near a pond and enjoy the beauty of nature. The water is a symbol of life and purity.

She wants to sit near a pond and watch the fishes in the pond and the lotus near pond. At the lower side of pond, she made some flames which depicts a message that there are so many things a person face side by side.

6. Messengers (Image – 17) :-

In this painting, she showed herself in a starry night. She made a scene of Shimla. The sky is full of stars and the lights on the hills. These lights are also looking like stars. The birds come to listen her and they talk with her. The lotus in her hand is a symbol of love and her childhood memory. The fireflies are flying in the sky.

7. Monsoon Melody (Image – 18) :-

In this painting she showed monsoon which is a symbol of emotions. She showed herself on a swing which symbolize that she wants a gust of wind to come and take her with itself. She made paper boats and lotus in the water because it is her memory and an inspiration. She made clouds in the background in miniature style. Moon, stars are also symbolize her childhood memories.

8. My Co – Travelers (Image – 19) :-

She depicts herself in the painting in lying position. She is sleeping in the sea. A boat over the sea is moving and 5 crows are sitting over the boat. These 5 crows symbolize the five Vikaaras ie – anger, lust, greed, attachment and ego. These crows are trying to catch the boat so that, they can take it with them. The lotus and the boat symbolize her childhood memory and dreamy life.

She had not made the eye balls because she leaves the theme open for every woman. The girl in the painting can be any girl and this can be anyone's inspiration.

9. Spring Symphony (Image – 20) :-

She showed herself sitting in a room during spring season with her cat. Butterflies are flying in the background. She is reading the book in peace. With the change in season, the moods also change with it. She created a texture in the background. A river, sunlight and landscape beautifies the season of monsoon in her painting.

➢ GRAPHIC PRINTS:-

1. Locked Senses (Image – 21) :-

It is a linocut on which she did etching with casting soda. She depicts a message that the human senses ie – taste, sight, hearing, touch and smell are locked today for most of the people. She made a lock in center of the sheet which shows that the senses of people are locked, they can't feel the pain of others.

People don't take stand for others, they even keeps their mouth shut and don't speak for others. She convey a message that if we don't have senses than we are not humans and we are much more lower than animals.

2. Nostalgia (Image – 22) :-

It is an intaglio print, made in 2003. In this print, she showed a window form which the other view is visible. She showed herself sitting on a chair nearby her cat. She is seeing the city form her window. The cactus in front of her which symbolize the difficulties of life and the challenges in front of her. She made the window in

brown colour because she is seeing this city in her dreams and she is thinking about the time when she was in Shimla.

3. **Stree (Image – 23) :-**

She made a iron which we use for pressing our cloths. The handle of the iron is made in the form of a lady. She gave a message that a lady do household works whole day but nobody values her work. She is in working condition whole day. In the background she made a goddess. Because many people says that woman is a goddess, but the reality is different, nobody cares for her.

4. **The Kitchen Katha (Image – 24) :-**

This work is done in dry point on acrylic sheet in which she depicts the material of kitchen. As the crist was hanged on cross even after doing a lot of work. This is the same condition of woman. A woman do each of the household work. Dr. Kavita made the cross in the back with the rolling pin. And the kitchen material is shown in the background.

While doing a job she is not relaxed form any household work. She have to do whole work of kitchen by herself. When she come to home no matters how much tired she is, she have to enter the kitchen and do work.

The lady in the print is wearing a clock in her neck which shows that there is no time limit for her works. This print was made in 2006.

5. **Urban Dragonfly (Image – 25) :-**

Dr. Kavita made this print in dry point technique in 2017. She showed some dragonflies flying over the urban city. The dragonflies are her childhood memories.

The one dragonfly is depicting Dr. Kavita who is flying over the city having a cell phone in her hand and wearing a sling bag. She is working whole day and night. She symbolize her condition with the dragonflies. The moon in the sky also symbolize her childhood memory.

THEMES OF HER WORKS

Dr. Kavita is an artist who worked in various mediums and themes. After inspired form her father she started painting. As the lived in Shimla, she loves the nature. Her childhood memories are always in her heart and mind. No matter wherever she live in present but her childhood memories are always with her and she miss that time.

Her memories can be seen in most of her work in the forms of symbols. She believes in conveying her thoughts in form of symbols. She use her face form as her signature style. During her graduation, she did work on masks and later her themes get changed with the changing time. The themes of works are mentioned below :-

1. Face Mask :-

When she was doing her graduation, she worked on masks. After researching a lot she worked on different styles of mask. She made paper mache masks. Even she did exhibition of these masks first time in 1998.

2. Paper Boat:-

Once she read some lines written by Rabindranath Tagore which gives a message that every child don't get expensive toys but every child have played with paper boats in their childhood.

Most of her work depicts paper boats around her. She did a series on paper boat. She published a book named "AN ODE TO A PAPER BOAT" in which she made 32 drawings and wrote poems on each of the drawing.

3. Woman :-

She showed the condition of woman in the world. She depicts herself in the form of girl child. She often use her signature style ie – a face form. She works on women because she can better understand and express the condition of woman because she is also a woman. In many of her works, she expressed the busy schedule of women.

Sometimes she made many arms of woman to show that a woman do multi-tasks in her everyday life.

Sometimes she showed clock in the neck of woman and give a beautiful message that as a clock never stops and run whole day, the woman also do works not her job only but household works also. She often depicts herself in her artworks but when she wants to depicts the other woman, she don’t make the eyes. She works on social current issues.

4. Nature Elements :-

Dr. Kavita is deeply connected with nature stars, moon, hills, river, flowers, fishes, trees etc. can be seen in her works. She use these elements to symbolize her memories and thoughts. She always recall her childhood memories of Shimla. The starry nights of Shimla are mostly found in backgrounds of her work. Sometimes she made clouds in miniature style.

5. Childhood Memories :-

After coming to a remote city she always recalls her childhood memories. She has a different level of connectivity with her childhood. The beauty and peace of Shimla has always a different space in her heart. She always made a girl child which shows her childhood. In some of her works she made her memories in black and white medium to show the blur efect of memories as they are diminishing with the time. In one of her work, she made herself in a starry night of Shimla.

6. Dreams and Fantasies :-

Dr. Kavita depicts dreamy life in her works and showed herself dreaming. In most of her works she showed herself dreaming. She lives in her own dreamy world. In one of her work she showed herself in a bowl in the form of a golden fish which is in her own dreamy life. But the cruel world is waiting for her to come out of her dreamy world so that they can catch her.

EXHIBITIONS AND AWARDS

Dr. Kavita is a very talented artist. She has participated in so many extinctions till now. She has participated in around 200 exhibitions and won many awards.

She has started to participate in exhibitions since 1995. She has started to participate in workshops and exhibitions organized by Chandigarh Lalit Kala Akademi. She was just 15 years old that time when she has participated for the first time. She won AIFACX award, Delhi in all India Fine Art exhibition at the age of 16 years. She was the youngest artist who won the award.

She is participating in exhibitions from last 29 years. Every year she participate in different exhibitions. Even she has participated in solo exhibitions too. The number of exhibitions and awards are much more than her age. Some of her exhibitions and awards are listed below:-

- **Exhibitions:-**

(i) Solo Art Exhibitions:

➡ In 1998, Dr. Kavita participated in Solo Art Exhibition of Masks of Indus Ind Bank Art Gallery, Chandigarh and exhibition of paintings and masks organized by Indian Council for Child Welfare, Chandigarh on World Disabled Day.

In the exhibitions of Masks, she displayed different kind of masks which she made form paper mache. She made tribal and folk masks.

In 2000, She has participated in exhibition of masks and paintings at Banasar Art Gallery, Sheesh Mehal, Patiala.

In 2001, She has participated in exhibition of masks and paintings at Museum and Art Gallery, Punjabi University, Patiala. Also she has participated in exhibition of Masks and Paintings at Punjab Lalit Kala Akademi Galleries at Punjab Kala Bhawan, Chandigarh.

➡ She made a series on paper boat and did an exhibition named “An Ode to A Paper Boat” – this exhibition was sponsored by ‘French Embassy in India’ and ‘The

Indian Express' inaugurated by Eminent poet, Art Critic and Editor 'The Sunday Indian' in 2011.

These paintings were made in ink and charcoal. She made them black and white to show the diminishing of childhood memories by the passing time. After getting advised by her father's friend in the exhibition, she wrote poems on her each painting of this series.

Her father's friend told her that her paintings sings the poems. She should write poems on her paintings. She wrote poems on each of the paintings and publish a book named 'An Ode To a Paper Boat'.

She did Book release and exhibition of drawings and paintings inaugurated by Eminent costume Designer & Bollywood Actor – Dolly Ahluwalia Tiwari at Flamme Bois Bistro , Sector – 7, Chandigarh in 2015.

➡ In 2017, She has participated in an exhibition and Book Release "Ajj Akhaan Waris Shah Nu" - A Tribute to AN IMMORTAL POEM inaugurated by Eminent Author and Chairman, Chandigarh.

In this exhibition, she displayed her paintings which she made on a poem "Ajj Akhaan Waris Shah Nu" written by 'Amrita Pritam' She has depicted the pain, sorrow of the public at the time of independence in her paintings. She made drawing on each two lines of the poem.

Not only this she has participated in some other Solo Exhibitions also.

(ii) GROUP ART EXHIBITIONS:-

- ➡ In 1995, she was participated in workshop and exhibition organized by Chandigarh Lalit Kala Akademi for young Artists.

- ➡ In 1996, She has participated in All India Exhibition of Art Organized by Himachal state Museum, Shimla and Department of languages and culture, Himachal Pradesh - Shimla.

Also she has participated in a ceramics workshop and exhibition organized by Chandigarh Lalit Kala Akademi named – 'Bowels of The Earth'.

- In 1997, She has participated in an Exhibition of paintings, drawings graphics and sculptures organized by All India Fine Arts and Crafts society New Delhi and Chandigarh Lalit Kala Akademi, on the occasion of 50 years of Art in Independent India.

- In 1998, she has participated in an All India Exhibition of Art, organized by Bank of Punjab, Chandigarh named , "Colours of Heritage".
  Every year she do participate in Lalit Kala Akademy Art exhibition.

- On the occasion of Platinum Jubilee (75th) AIFACS (2002 – 2003) All India Art Exhibition of Chandigarh Artists, organized by Chandigarh Lalit Kala Akademi.

- In 2007, she has participated in Art Exhibition organized by creativity connect foundation, New Delhi in collaboration with Punjab Lalit Kala Akademi Chandigarh.

- In 2008, she has participated in All India Exhibition of Art organized by department of languages and Culture, Himachal Pradesh in collaboration with Himachal State Museum Shimla.

- In 2009, She has participated in Annual Art exhibition organized by Chandigarh Lalit Kala Akademy.

- In 2011, she has participated in Nostalgia - A contemporary Art of India a national exhibition of Drawing, Painting, Prints and Sculpture at Jawahar Kala Kendra, Jaipur.

- In 2012, She has participated in National Exhibition of Drawing, Painting, Photography Print Making and Sculpture titled - "Untilled - An Initiative Of AATA" at Punjab Kala Bhavan Art Gallery, Rose Garden , Chandigarh.

- She has participated in 2nd Haryana Contemporary Art Exhibition at Lalit Kala Akademi, Rabindra Bhawan, New Delhi organized by Haryana, Institute of Fine Arts, Karnal.

- She has participated in All India Painting, Exhibition titled 'Paint for Justice' organized by Nijh World Society, New Delhi in 2012.

- In 2014, she was invited to participate in National Exhibition of Paintings titled – 'Brij Utsav' - Festival of Eternal Bliss organized by Peacock Art Gallery, Gurgaon.

- She has participated in All India Women Artists Contemporary Art exhibition so many times.

- Not only state and national exhibitions, she has participated in International exhibitions also.
  She was invited at International Art Exhibition as part of exchange programme between India and maldvies inauguration by High commissioner of India Sh. Akhilesh Mishra Organized by Saksham Sparsh, Art Foundation (SSAF). A group of contemporary Artists, Chandigarh at National Art Gallery, Male City, Maldives in 2016.

- In 2017, she was invited to participate in 'finext' (Fine Artworks of Next Generation) Award & National Exhibition of Mini – Artwork – 2017 in association with Canarys National Art Foundation organized by yashasvini Education and public welfare foundation, Bhopal (M.P) at Canarys Art Gallery, Indore.

- ➡ In 2018, she was invited to participate in 'UNTITLED' – An International Art Exhibition - 2018 inaugurated by Smt Kirron Kher Member of Parliament Chandigarh at the galleries of Punjab Art Council, Punjab Kala Bhawan, Chandigarh.

- ➡ She was invited to participate in 'Finex'(Fine Artworks of Next Generation) Award and International Exhibition of Mini – Artworks – (2018 – 2019) orgnised by Yashsvini Education and Public Welfare Foundation, Bhopal (MP) at Swaraj Kala Vithika, Bhopal.

- ➡ 2019, on the occasion of 150 years of celebrating the Mahatma, She has participated in 3 exhibitions on ' The learning Curve' An National Art exhibition of paintings curated by Kvian Soni Gupta (IAS) organized by Indira Gandhi Centre for Arts, New Delhi under Ministry of Culture, Govt. of India.

i) At Exhibition Hall, IGNCA, New Delhi from 08/04/2019 to 22/04/2019.
ii) At Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration, Mussoorie form 17/06/2019 to 28/06/2019.
iii) At Govt. Museum and Art Gallery, Chandigarh in association with Chandigarh Lalit Kala Akademi from 03/09/2019 to 07/09/2019.

- ➡ In 2020, She was participated in 'Finext' (Fine Artworks of Next Generation) Award to International Exhibition of Mini Artworks – (2019 – 2020) organized by Yashasvini Educational, Bhopal at Dev Lalikar Kala Vithika, Bhopal.

- ➡ In 2020, she was invited in online Art Exhibition in the time of COVID – 19, - Group Show of Tricity Artists (Works created during the Lockdown) organized by Chandigarh Lalit Kala Akademi, Chandigarh.

- ➡ She has participated in National Online Art Exhibition – 2020 on the theme of – COVID – 19 (during & after lockdown period) organized by Department of Fine Arts, Kurukshetra University, Kurukshetra – Haryana.

- ➡ On 5th July, 2020, She has participated in International Art Exhibition on COVID – 19 organised by Indian Royal Academy of Art & Culture, Kalaburagi (Gulbarga), Karnataka, India.

- ➡ On 15th August 2020, she has participated in International Art Exhibition on "A Tribute - who died cause COVID – 19" during Covid Pandemic organized by world art community the Artist Community, Canada.

- ➡ She was invited in 4th Rajeshwari Kala Mahotasava' 20 to participate in International Online Art Exhibition organized by Apeejay College of Fine Arts, Jalandhar (Punjab).

- ➡ She was invited to participated in Annual online Art exhibition 2020 but students, Research Scholars, Staff and Faculty Celebrating Silver Jubilee - 25 Glorious years of the foundation Day organized by S. Sobha Singh Department of Fine Arts, Punjabi University, Patiala on 20th August 2020.

- ➡ She was invited to participate in open hand Art exhibition dedicating art to the Masters 'Online International Art Exhibition' organized by ARTFORT, India Chanrigarh, India in collaboration with Verman Cultural Celebrations, Jammu, India supported by CLKA Chandigarh World Architecture community, Chandigarh International Island Country Artists, Turkey and SMD Foundation, Guawahti - India.

- ➡ She was invited to participate in Prof. BL. Kamboj Memorial – International Online Art Exhibition titled - 'Vasundhra – The Mother Earth' organized by

Himprasth – A society for the Art and Eco – cultural Heritage of the Himalayas, Uttarkahand in collaboration with Sanskar Bharti, Uttrakhand.

- She was invited to participate in 8th International Exhibition of Art by Women Artists (online) 2020 organized by Jammu and Kashmir centre for creative Arts, Jammu.

- She was invited to participate in ‘Centennial – An Online International Visual Art Exhibition’ commemorating the university of Lucknow Centennial Celebration – 1920 to 2020 organized by college of Arts and Crafts, Lucknow, India.

- In 2021, she was invited to participate in International Online Painting Exhibition ‘Resurgence – Restyling the Art’ orgniased by Chithrakutam Painting Community, Kerala, India.

- She has participated more than 15 International exhibitions in 2021 in different states of India and outside India.

- She was invited to participate under 150 selected Artist International and 100 Eminent Artist Online Art Exhibition from 1st Jan, 2021 to 31st Jan, 2021 organized by Bindas Art Group India.

- During the Farmer’s Protest, She was invited to participate in Farmer Protest – An International Online Art Exhibition – An International Online Art Exhibition 2021 orgnaised by Pargati Kala Kender (Regd) Landhra, Jalandhar, Punjab and Pargati Artists Group, India from 7th March 2021 to 26th March 2021.

- She was invited to participate in Annual Online Art Exhibition 2021 by Students, Research Scholars, Staff and Faculty dedicated to 400th Birth

Anniversary of Sri Guru Teg Bahadur Sahib Ji organized by S. Sobha Singh Department of fine Arts, Punjabi University Patiala on 24th March, 2021.

- She was invited to participate in an International Woman's Day Art Exhibition organized by ARTFORT, India , Chandigarh – India Collaboration with Verman Cultural Celebration Jammu, India supported by World Architecture Community, Chandigarh – International Island County Artists Turkey and SMD Foundations, Guawahati, India, May 2021.

- In 2022, she was invited to participate in prestigious Art Exhibition on 300th Birth Anniversary of Legendary Sufi Poet of Punjab & Creator of Kissa Heer Rangha – 'Warish Shah' organized by S. Sobha Signh department of fine Arts, Punjabi University, Patiala at Museum & Art Gallery, Punjabi University Patiala from 22 Nov, 2022 to 30 Nov, 2022.

She presented her work which she has named – "Ajj Akhaan Waris Shah Nu". It is a poem written by Amrita Pritam on the time period of Independence. Dr. Kavita made paintings on each 2 lines of that poem and published it on the 70th anniversary of the poem.

Not only the above exhibition but she has participated in more than 200 exhibition till now. Still she is working in this field and nourishing herself. Her works, workshops, exhibitions and awards tells us about her hard work and creative mind. She is doing a very well performance in the field of Fine Arts, And she is an inspiration for all the girls and woman to feather their art on not only National level but on International level also.

CHAPTER – IV

- **Contribution in Contemporary Art**
- **Publications**

CONTRIBUTION IN CONTEMPORARY ART

Dr. Kavita is playing an important role as an Indian Contemporary Artist. She has played an important role in Indian Contemporary art and its development. In contemporary time, she has taken up the art very deeply. Apart from being a good artist, she is also a good poet.

She has shown art in a different form. Her style has given her a different identity. From a very little age, she is doing art. Not only within a nation but she has showed her talent throughout the world. She has done a lot of work not only in painting, but also in graphic prints.

In her 44 years, she has participated in more than 200 exhibitions. So many of her work is in collections of different art galleries in India and other countries around 20 art galleries at different places have bought her work to keep them in their collection.

Her work can be seen at different places of India – Chandigarh, Patiala, New Delhi, Jaipur, Nagpur, Shimla. Also her one painting of the boat series is in collection of French Embassy, Paris. She has represented India in International Art Exhibition and competitions. Her connectivity with her childhood inspires us to stay connected with our childhood. Her detachment from history inspires us to stay connected to our roots.

In the field of contemporary art she has worked in different mediums. She said that "If she do one medium only, she will loss her interest." This message encourage every young artist to try each and every medium and explore theirselves day by day. Today's generation is far from reading books, poems and literature. And the works of Dr. Kavita gives a motivation to this generations as she did artworks on the many poems. Which gave a new direction to the artist, Not only artworks but she has done so many research projects.

She has delivered 16 educational video lecture programmes in the capacity of Resource person in the subject of performing Art and “Educational Multi – Media Research Centre” Punjabi University, Patiala. She has also did collaborative project – UGC – MMRD E-PG Pathshata Project on Visual Art under its National Mission on Education through ICT being executed by the UGC.

She was appointed as ‘Content writer’ in 2 core papers (PG level) comprising of 70 e-content modules under UGC – MHRD E-PG Pathshata Project on Visual Arts with Dayalbagh Educational Institutre, Agra. She was appointed as faculty member for creation of creative course in Visual arts for World’s largest MOOC, platform developed by MHRD and AICTE, New Delhi, under Prof. Ragini Roy, Principal investigator, SWAYAM MOOCs on Visual Art, Head Department of Drawing & Painting, Dayabhagh Educational Institute, Agra.

She has also attended orientation course at different states of India. She has worked on female. She showed the reality of women in the society. She delivered the social message of the woman’s status in a society to the people. Her work on woman showed her kindness of feeling the pain of other women.

She is teaching at Patiala in Punjabi University and contributing a great role as a teacher in this field. By doing art in different mediums like acrylic colours, charcoal and ink, oil colours, pastels, mix media and graphic prints. She has contributed a very big contribution in the field of art.

In many of her works she tried new techniques by mixings different colour mediums on different textures. She made textures with cloths, paper on canvas. She also tried ink on canvas and love to create layers of different colour shades.

She has made a very large number of art works. She is working in this field from a very long period. Now she is inspiring so many children by organizing workshops and lectures in different colleges and other places.

It would be absolutely fair to say that she is playing an important role in the field of art.

She has been participating in exhibitions organized by Lalit Kala Akademy since 1995. It has been 29 years of her participations in art exhibitions at different levels. She has proved that the age of any person can’t decide his journey in a field.

She is just 44 and have won so many awards and have participated in so many conferences, workshops, exhibitions. Her works and records speaks everything about her talent.

She did research on “Sikh Calendar Art”. She has worked on the development of art done in time period of Maharaja Ranjit Singh. She has contributed a full fledged research on the ancient photographs of Sikh Gurus made by Sardar Sobha Singh.

Currently, she is giving her contribution as a teacher – Professor and Head of S. Sobha Singh Department of Fine Art and she is also the Incharge of Museum and Art Gallery, Punjabi University, Patiala.

She is invited to present research papers. Till now she has gone to many places to present research papers. Even during the time of Corona Pandemic, She was invited to attend Webinars, Workshops, Exhibitions (both online & offline). Not only nationally but internationally too.

Also, during the time of ‘Farmer’s Protects’, She was invited to participate in an international online Art Exhibition 2021. She has participated in exhibitions on the occasion of Woman’s Day so many times.

Really, She is an ideal for every woman and a motivation to feather our wings by our own self. She gave a beautiful message to us “We should get motivation and inspiration from our surroundings and we should observe each and every thing nearly us”.

PUBLICATIONS

When we talk about publications, there are more than 200 publications in newspapers, journals and magazines. Many articles has been published about her many times in newspapers and magazines like – Hindustan Times, Tribune like + Style, The Sunday Express, Amar Ujala, Dainik Jagran, Rojana Spokes Man, Dainik Tribune, Ajit Samachar and many more.

These are the publications about Dr. Kavita which were published by magazines and newspapers. Now lets talk about the works which are published by her in the form of books, Journals, research papers. Her publications are mentioned below:-

- **RESEARCH PAPER PUBLICATIONS IN REFEREED JOURNALS:-**

* Research paper titled "Grow More Good"- Art and Philosophy of Sobha Singh in 'Artistic Narration - Peer Reviewed & Refereed International Journal for Visual and Performing Arts', Vol. III

* Research Paper titled "The Sikh Calendar Art's Voyage" published in Daily Post Newspaper on 11 November, 2012.

* Research Paper titled "S.G. Thakur Singh's Brush with Femininity" published in Daily Post
Newspaper on 18 November, 2012.

* Paintings published in 'Best of Aha Zindagi – Afsane Zindagi ke', First Edition-2013, Art
Magazine of Danik Bhaskar newspaper, Jaipur.

* Research paper titled "The Enigmatic Imagery in Tagore's Doodles" published in 'Artistic
Narration - Peer Reviewed & Refereed International Journal for Visual and Performing Arts', Vol. IV

* Research paper titled "Le Corbusier-A Visionary of Social Innovation in Design" in 'DESCRIPTIO- An International Refereed Journal of Design', Vol. No. 2, Annual, 2014,

* Research paper titled “Essence of Maladies and Melodies in Contemporary Indian Art” in ‘Artistic Narration - Peer Reviewed & Refereed International Journal for Visual and Performing Arts, Vol. VI, Dec. 2014,

* Research paper titled “Bhagvad Gita- The Reservoir of Inspiration for Creative Expression” in ‘Artistic Narration– Peer Reviewed & Refereed International Journal for Visual and Performing Arts’, Vol. VII, Dec. 2016,

• Research paper titled “Projection of new trends in Indian contemporary art by women artists” in ‘Artistic Narration - Peer Reviewed & Refereed International Journal for Visual and Performing Arts’, Vol. VI, Dec. 2015

* Research paper titled “The Glorious Saga of Sikh Calendar Art” in ‘The Sikh Review– Peer Reviewed & Refereed International Journal’, Vol. 64:12, Dec. 2016,

* Research paper titled “Janam Sakhis- The Splendour of Sikh Miniature Art” in ‘Artistic Narration– Peer Reviewed & Refereed International Journal for Visual and Performing Arts’, Vol. VIII, No.1, June 2017

* Research paper titled “Sikh Calendar Art Ki Yashasvi Gatha” in ‘Shodhmanthan– Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi (Multi-disciplinary)’, Vol. VIII, No. 2 June 2017

* Research paper titled “Bhartiya Calendar Art Mein Bharatmata Ki Mahima Ka Gungaan” in ‘Shodhmanthan– Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi (Multi- disciplinary)’, Vol. VIII, No. 3 Sept 2017

* Research paper titled “Samkaleen Kala Mein Bhartiya Mahila Chitrakaron Ka Agarniya Sthaan” in ‘Shodhmanthan– Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi (Multi-disciplinary)’, Vol. VIII

* Research paper titled “Nature- The Cradle of Tribal Arts and Crafts” in ‘Artistic Narration– Peer Reviewed & Refereed International Journal for visual and performing art .

* Research paper titled “Fragmented Portrayal of Women in Popular Culture” in ‘Artistic Narration- Peer Reviewed & Refereed International Journal for Visual and Performing Arts’, Vol. IX, No.1, April

* Research paper titled "Bhartiya Samkaleen Kala Mein Manviya wa Amanwiya Awegon Ka Chitran" in 'Shodhmanthan– Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi (Multi-disciplinary)', Vol. IX, No. 2 June 2018,

* Research paper titled "Chitrakar Frida Kahlo- Vedna Ki Mallika" in 'Shodhmanthan– Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi (Multi-disciplinary)', Vol. IX, No. 2 June 2018

* Research paper titled "Chitrakar Satwant Singh ke Rekhachitron ka Adbhut Sansar" in 'Shodhmanthan– Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi (Multi-disciplinary)', Vol. IX, .

* Research paper titled "Flora and Fauna- The Eternal Muse" in 'Artistic Narration- Peer Reviewed & Refereed Journal for Visual and Performing Arts', Vol. IX, No.2, December 2018

* Research paper titled "Mountain Muse- An Exploration to Human Consciousness and Eternity" in 'Gyankosh: An Interdisciplinary e-Journal', Peer Reviewed, Vol. I, December 2018, published by Guru Gobind Singh College for Women, Chandigarh

* Research paper titled "Satish Gujral- The Phoenix Who Rose From The Ashes of Partition" in 'Artistic Narration- Peer Reviewed & Refereed Journal for Visual and Performing Arts', Vol. X, No.1, January-June 2019,

* Research paper titled "Prakhayat Photography Surinder Mohan Dhami ki Kala Yatra" in 'Shodhmanthan– Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi (Multi- disciplinary)', Vol. X, No. 1, Part-2, March 2019

* Research paper titled "Sikh Kala Mein Sri Guru Nanak Dev Ji Ki Mahima Ka Kalatmik Chitran" in 'Shodhmanthan– Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi (Multi-disciplinary)', Vol. X, No. 2, Part-3, April-June 2019,

* Research paper titled "Bhartiya Samkaleen Kala Ke Sandharbh Mein Tantric Abhivayakti" in 'Shodhmanthan– Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi (Multi- disciplinary)',

* Research paper titled "An Insight into the Iconic Portraits of Guru Nanak" in 'Gyankosh: An Interdisciplinary e-Journal', Peer Reviewed, Special Volume to Commemorate the 550th Birth Anniversary of Guru Nanak Dev Ji, November 2019, published by Guru Gobind Singh College for Women, Chandigarh

* Research paper titled “Metamorphosis of Mind, Matter and Lines” in ‘Gyankosh: An Interdisciplinary e-Journal’, Peer Reviewed, Vol. II, December 2019, published by Guru Gobind Singh College for women Chandigarh

* Research paper titled “Sudhir Patwardhan: A Painter’s X-Ray of Indian Society” in ‘Artistic Narration- Peer Reviewed & Refereed Journal for Visual and Performing Arts’, Vol. X, No.2, July-December 2019,

* Research paper titled “Himalaya ke Laghu Chitron ke Rachaiyta Bireswar Sen” in ‘Shodhmanthan– Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi (Multi-disciplinary)’, Vol. XI,

* Research paper titled “Hind ki Chaddar- Sri Guru Tegh Bahadur ji ki Sikh Kala Mein Jiwan Darshan” in ‘Shodhmanthan– Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi (Multi-disciplinary)’, Vol. XI, No.3, July-September 2020, published by Journal Anu Books,

* Research paper titled “A Study of Visual Narratives on the Life of Guru Tegh Bahadur” in

‘Gyankosh: An Interdisciplinary e-Journal’, Peer Reviewed, Vol. III, December 2020, published by Guru Gobind Singh College for Women, Chandigarh

* Research paper titled “An Epoch-making Crusade for Gender Equality through Arts and Media” in ‘Artistic Narration- Peer Reviewed & Refereed Journal for Visual and Performing Arts’, Vol. XI, No.2, July-December 2020,

* Research paper titled “Punjab Ke Kala Sartaj- Prof. S.L. Parasher” in ‘Shodhmanthan– Peer Reviewed & Refereed International Journal in Hindi (Multi-disciplinary)’, Vol. XIII, No.2, April-June 2021,

* Research paper titled “Holistic Health of Women: Awareness Through Visual Arts” in ‘Review Journal of Philosophy and Social Science (RJPSS)- Peer Reviewed & Refereed International Journal’, Vol. XLVII, No.1, Jan-June 2021,

* Research paper titled “Metamorphosis of Inspiration, Exploration and Celebration in the Genre of Drawing” in ‘Review Journal of Philosophy and Social Sciences (RJPSSs)- Peer Reviewed & Refereed International Journal’, Vol. XLVI, No.2, April-Sept.2021,

* Research paper titled “Sohan Qadri- A Painter in Search of Seed of Spirituality” in Shodhkosh: Journal of Visual and Performing Arts- Peer Reviewed UGC Care Listed National Journal’, Vol. 3 Issue 2, July- December 2022,

* Research paper titled “Unveiling the Mystic Realms of Nature- Artist Prem Singh” in Shodhkosh: Journal of Visual and Performing Arts- Peer Reviewed UGC Care Listed National Journal’, Vol. 3 Issue 2, July- December 2022,

* Research paper titled “Sculptor Shiv Singh- An Ode to Frozen Symphonies in Nature” in ‘Rabindra Bharti Journal of Philosophy- Peer Reviewed UGC Care Listed National Journal’, Vol. XXIII, No.12, 2022,

* Research paper titled “An Ode to Human Body by Contemporary Sculptors” in ‘Naad-Nartan Journal of Dance & Music- Refereed & Peer Reviewed UGC Care Listed National Journal’, Vol. 10, Issue: II, 2022

RESEARCH PAPER PUBLICATIONS IN BOOKS / CHAPTERS IN BOOKS / SEMINAR PROCEEDINGS

* Art-work (Painting) published in the Book titled: ‘The Journey from Inspiration to Expression on Canvas’ edited by Prof. Him Chatterjee, Chairman, Department of Visual Arts, Himachal Pradesh University, Shimla, First Edition-2013,

* Research Paper titled “Currents and Undercurrents of Social Concerns in Art” published in the Book titled: ‘Modern to Post Modern: Changing Perspectives in Indian Art’ edited by Prof. Shubham Shiva, Head, Department of Drawing and Painting, Dayanand Girls P.G. College, Kanpur, First Edition-2013,

* Research Paper titled “Essence of Life in Tribal and Folk Art’ published in the Book titled: ‘Importance of Art and Its Inter-relationship with Other Subjects- International Seminar Proceedings’ edited by Prof. Shekhar Chandra Joshi, Dean Faculty of Visual Art, Kumaun University, SSJ Campus, Almora & Dr. John Antione Labadie, Professor of Visual Art, University of North Carolina Pembroke, USA, First Edition-2014,

* Research Paper titled “Symbols and Metaphors in Tagore’s Doodles” published in ‘Gurudev Rabindranath Tagore- A Multi-disciplinary Perspective- A National

Seminar' Ist Seminar Proceedings 2012-13, First Edition-2015 by S. Sobha Singh Department of Fine Arts, Punjabi University, Patiala,

* Research Paper titled "Research Methodology A Road-Map to Research in Fine Arts: An Analytical Study of Sikh Calendar Art" published in 'Research Methodology In Art- A Multi- Disciplinary Perspective- A National Seminar' IInd Seminar Proceedings-2016, First Edition-2016 organised by Indira Gandhi National Centre for the Arts in collaboration with Museum & Art Gallery and S. Sobha Singh Department of Fine Arts, Punjabi University, Patiala,

* Chapter titled "A Brush with Savage Passion" published in a Book titled "Contemporary Art North India" Edited by Rajesh Chadha, Nonika Singh and Dr. Guneeta Chadha

* Chapter titled "A Brush With Memories- Sweet and Sour" published in a Book titled "History & Heritage- Government College of Art"

* Art-work (Painting) titled 'Celebration of Life' published in the Book titled: "Untitled- An International Art Exhibition-2018" edited by Dr. Anand Kumar Sharma & Dr. Vishal Bhatnagar.

* Research Paper titled "Role of Women Painters in Changing the World through Visual Arts" published in 'International Conference on Women in the Changing World of Work Planet 50-50 by 2030' Seminar Proceedings-2018, organised by Women Studies Centre, Punjabi University, Patiala

* Research Paper titled "Abstract and Tantric Expressions in Context of Indian Contemporary Art" in Conference Proceedings of "Indian Art History Congress- 28th Annual Conference" on 'Abstract and Tantric Expressions in Indian Art' with Financial Assistance from Indian Council of Historical Research, New Delhi hosted by S. Sobha Singh Department of Fine Arts and Museum & Art Gallery, Punjabi University, Patiala on 15th -17th November, 2019,

* Research Paper titled -'Transforming the lives of Women: Role of Art and Visual Publicity' published in 'International Conference on 'Transforming the lives of Unreached Women through Collective Activism' Seminar Proceedings-2019, organised by Women Studies Centre, Punjabi University, Patiala

* Research Paper titled “Abstract and Tantric Expressions in Context of Indian Contemporary Art” in Proceedings of “Indian Art History Congress, XXVIII, Session 2019 Patiala”

‘Abstract and Tantric Expressions in Indian Art’, Editor: Preeta Nayar,
* Research Paper titled “Resonance of Mystic Jaina Philosophy in Jain Manuscript Painting” in Conference Proceedings-2021, First Edition of prestigious National Seminar on ‘Jain Art and Cultural Heritage’ organised by S. Sobha Singh Department of Fine Arts and Museum & Art Gallery, Punjabi University, Patiala with Financial Assistance from All India Diagmber Jain Heritage Preservation Organisation, New Delhi on 13th-14th March, 2020 at Science Auditorium, Punjabi University, Patiala,
* Chapter titled “The Art of Printmaking- Contribution of Punjabi Contemporary Printmakers” published in a Book titled Kala Sanskriti “Kal Aur Aaj” (2021) Edited by Dr. Vandana Verma, Associate Professor, Department of Visual Arts, J.K.P. (PG) College, Muzaffarnagar (U.P.).
* Artwork (Miniature Painting titled: ‘Bani Thani-2021) Published in Calendar of ‘National Contemporary Miniature Painting Online Workshop- November 2021’ in Memory of Kalaguru Dr. Sumahendra organised by Kalavritt- A Creative Artists Forum in Association with Rajasthan Lalit Kala Akademi, Jaipur from 2nd to 12th November, 2021.

- **BOOKS PUBLISHED :- (Four)**

1. Title of the Book:
“AN ODE TO A PAPER BOAT- POEMS, PAINTINGS & DRAWINGS” by Dr. KAVITA SINGH – Sept. 2015 Total Pages: 68

2. Title of the Book:
“A TRIBUTE TO AN IMMORTAL POEM- AJJ AKHAAN WARIS SHAH NU- DRAWINGS & PAINTINGS” by Dr. KAVITA SINGH – Dec. 2015 Total Pages: 60

3. Title of the Book:

"BARAHMAHA- DIVINE MANIFFESTATIONS IN SEASONS" by Dr. KAVITA SINGH – 2021 Total Pages: 46.

4. Title of the Book:

"BIRAHA DA SULTAN- SHIV KUMAR BATALVI NU CHITRAAN RAHI SHARDHANJALI" by Dr. KAVITA SINGH – 2022

- **RESEARCH PAPERS IN ENGLISH LANGUAGE IN MAGAZINES:**

1. Contributed article for 'Art and Culture column' in Haryana Review (an English language monthly) published by Director, Information and Public relation, Haryana. Title of the article- 'Saga of Haryana's Contemporary Art', Dated- March, 2010, Vol. 24, Issue (3) Pg. 38-39,
2. Contributed article for 'Art and Culture column' in Haryana Review (an English language monthly) published by Director, Information and Public relation, Haryana. Title of the article- 'Women Painter's Palette - For Girl Child' Dated- May 2010, Vol. 24, Issue (5) Pg 33-34,
3. Contributed article for 'Art and Culture column' in Haryana Review (an English language monthly) published by Director, Information and Public relation, Haryana. Title of the article- 'Jai Ho !' Dated- July 2010, Vol. 24, Issue (7) Pg 46-47,
4. Contributed article for 'Art and Culture column' in Haryana Review (an English language monthly) published by Director, Information and Public relation, Haryana. Title of the article- 'Let The Buds Bloom' Dated- August 2010, Vol 24, Issue (8) Pg 44-45,
5. Contributed article for 'Art and Culture column' in Haryana Review (an English language monthly) published by Director, Information and Public relation, Haryana. Title of the article- 'Haryana: The Land of Vibrant Folk Culture' Dated- December 2010, Vol 24, Issue (12) Pg 46-47

6. Contributed article for ‘Art and Culture column’ in Haryana Review (an English language monthly) published by Director, Information and Public relation, Haryana. Title of the article- 'Monsoon Musings’ Dated- July 2011, Vol 25, Issue (7) Pg 56-57,
7. Contributed article for ‘Art and Culture column’ in Haryana Review (an English language monthly) published by Director, Information and Public relation, Haryana. Title of the article- 'A Tribute to Shakti- The Divine Energy’ Dated- May 2011, Vol 25, Issue (5) Pg 54-55,

- **RESEARCH PAPERS IN PUNJABI LANGUAG**E:

1. Contributed article in Haryana Samvad (a Punjabi language monthly) published by Director, Information and Public relation, Haryana. Title of the article- ‘Baal Mazduri De Khatme Layi Kala Rahi Koshishne’ Dated- July 2010, Vol: 1, Punjabi Issue (4), Pg 38-39,

2. Contributed article in Haryana Samvad (a Punjabi language monthly) published by Director, Information and Public relation, Haryana. Title of the article – ‘Jado Calendar Hathiyar Bane’ Dated- August 2010, Vol: 1, Punjabi Issue (5), Pg 20-21,

3. Contributed article for ‘Art and Culture column’ in Ubharta Haryana (an Punjabi language monthly) published by Director, Information and Public relation, Haryana. Title of the article- 'Chitrakar John Constable’ Dated- July 2013, Vol 2, Issue (14) Pg 40-41,

T.V.INTERVIEWS/TALKS: -

* Interviewed on Zee Alpha T.V. Punjabi in the program titled ‘Excuse me Please’ gave on
Mask Making and Painting.
* Appeared in Interview on Zee T.V. National Network about an Exhibition of Art Heritage
and Punjabi Artists.

CHAPTER – V

- **Interview with Dr. Kavita Singh**

Interview with Dr. Kavita Singh

INTERVIEW WITH DR. KAVITA SINGH

Q1. Mam, tell me about yourself.

Ans: I am Dr. Kavita singh, born in Shimla, Himachal Pradesh. My Father is a very famous artist not only in Punjab but in all over the country. His name is S. Satwant Singh. Today am working here in Punjabi University, Patiala as Professor and Head, S.Sobha Singh Department of Fine Arts and Incharge of Museum and Art Gallery.

Q2. As you said your father is also an artist, tell me about him and about the impact of his art on your life?

Ans: My father is an artist. He never forced me or asked me to do art. It is my own interest in art. I was three years old, when I started art. My father never asked me to adopt his profession. I developed this in myself by watching him doing painting. You can say it is in my blood. My most of habbits match with him. If I sit near fire, its heat will definitely reach me. So the environment of your family definitely effect you. My father write poems and I also have interest in poetry.

Q3. When you started your art, what theme did you work on?

Ans: When I started doing art, I worked on face masks. That time I did research on different types of masks in India. I searched about tribal and folk masks. Other than this I searched about masks of nearby countries of Asia like – Japan, China, Sri Lanka, African countries, Thailand and Cambodia and find a different variety of masks.

After this, I made paper mache masks. I did solo exhibitions and group exhibitions on masks. I enjoyed a lot while doing work on masks. Later, I made masks with metal.

Q4. Mam, tell me about your awards & exhibitions.

Ans: I have participated in more than 50 group shows. I have won around 200 awards. I was the youngest artist whose drawing got selected in AIFACX at the age of 16.

I am participating in exhibitions of Lalit Kala Akademi since 1995. It has been 29 years, I am participating in exhibitions. After the AIFACX award I started doing drawings in black and white. I have participated in more than 200 exhibitions, workshops and seminars. I have participated in so many international exhibitions also.

Q5. After winning AIFACX award at the age of 16, you started black & white work. What kind of work it is?

Ans: After this award, I started doing my work in drawings. I like to do work in black & white with red combinations. I made a series in black and white with ink and charcoal. I am mostly inspired by woman – the desires of woman, the win-loss and difficulties a woman face.

In my most of paintings and drawings, you can see a girl face. It is my own portrait. I am the one in that form. You can see my inspirations, thoughts with the girl face. I made a paper boat series in black & white drawings in charcoal & ink. I made them black & white to show the diminishing effect of childhood memories.

Q6. As you said 'Paper Boat Series' What was it about and how the theme come to your mind?

Ans: In our childhood I often made paper boats and play with them in rain. Once I read some lines written by Rabindranath Tagore which gives a message that every child play with paper boats in his childhood. Not every child got expensive toys but they all have played with paper boats.

These lines inspired me and I made a series on paper boats and I exhibited them in solo art exhibition. In this exhibition, one of my father's friend advice me to write poem on the paintings. After this I wrote poems on each of my drawings and published it later. The book was named "An Ode To A Paper Boat". It has 32 drawings with poems on each of them. I have made these drawings with charcoal and ink one painting of this series is in Paris as a collection of French Embassy.

I showed them black & white to give a blur effect to the childhood memories of Shimla. I don't feel like it here. I still miss my city Shimla and its memories.

Q7. What changes did changing city bring to your life?

Ans: In my childhood I have seen the endless nature in Shimla. When I came to Chandigarh a metro city, We often fell like where we have come in a concrete jungle. I didn't feel like it here, even I still don't feel like it. My childhood memories when I used to go there in my holidays can be seen in my works in the form of mushrooms, fishes, boats – (which we often make there during rain) which I just told you about. This change in city changed my life style and many more.

I never wanted to leave Shimla but due to study and job, I had to come here. I did my Graduation, Post – Graduation, Ph.d from Punjabi University Patiala. Today am teaching here. I learned a lot from here.

Q8. How was your education in Punjab?

Ans: I did my schooling from Chandigarh then I took admission in Punjabi University for my Graduation. Here I first worked on masks. I made different kinds of mask. After paper mache, I made masks in metal. After working on masks, I became interested in folk art and tribal arts like Madhubani Paintings.

I did most of these paintings in the poster colours. Then when I came here for my post graduation, I saw that there was a subject of print making along with painting. I got interested in print making because I liked black & white work. I loved the texture that we created with ink. I made 80 prints when I studied here.

I tried different techniques like linocut, woodcut, relief and many others. Then I worked on canvas, with acrylic colours. I love to do textural work. Then I did Ph.d and now am teaching here.

Q9. What mediums have you worked in and as you like textural work, How do you create them?

Ans: I have done a lot of black & white work in charcoal and ink. I worked in acrylic. My works are all about textures. I don't like to work on planes, I like to work on a

little texture. I mostly do work in mix media. I use oil, pastels, inks, charcoal, enamel paint in my works.

Sometimes I use cloth, sheets to create texture on canvas. I also used textural sheets for my work. Many of my work is on women, some of them were made on textural sheets.

Q10. What kind of themes have you worked on?

Ans: My most of the work is on woman. I think that being a woman I can better understand a woman's desires, her dreams and fantasies, the difficulties she faces in her life. I am not saying that I faced such things in my life.

By difficulties, I mean that being a girl we face so many things in our life. We have to face so many obstacles. I have featured crows in my works. Because they seems to be like the cruel world. Sometimes I showed the parrots as messenger as it is a symbol of love. I have worked on dreams to show the desires and fantasis of woman.

In one of my exhibition my father's friend who was poet asked me that "Your paintings recite poems to the views. You should write poems on your paintings." Then I wrote poems on each of my paintings of the boat series and publish them in a book named " An Ode To A Paper Boat".

I have deliberately done this work in black & white, so that I can show old memories. I have worked on my childhood memories. Often, I used to go to Shimla during holidays. And I recall these memories in my works. As I said, "I work on female", I showed the busy schedule of a lady.

Like a clock runs whole day without any pause, a female also do household works whole day. Even, if any woman do job she have to do work at home also. I have showed a woman in a kitchen in one of my painting. Sometimes I show some crows over a lady which symbolize the people who are spectators and keeps their eyes on woman. I often work on the current social issues.

I use a face from in my work, you can see it.

Q11. This face form that you have created in your work, did you create it as a reflection of yourself?

Ans: This is my own form. When I studied here, I developed it after a lot of sketching. This form became a signature style. This is my own face with short hairs. I too had short hair like that, at that time. In this form, I did not make eye balls in many of my works and sometimes I did not make lips. I did not make lips because there is no voice or to show the silence.

If I had made eyes, she would have become me. And sometimes I represent the all ladies and the eye ball are the identity which shows me. So whenever I represent any other woman, I do not make eyes in the face. Many times I represent other woman's thoughts or struggles by this form.

Q12. Can you say yourself as a feminist artist?

Ans: No, am not a feminist artist. I do work on woman only to show the struggle of a woman. And I think I can better understand any lady because I am also a woman.

Q13. Some artist work in the same medium, so what do you think about this?

Ans: I think doing work in the same medium can lose our interest in the work. I have tried so many mediums. I never bound myself in one particular medium or theme. I have worked in oil colours, acrylic colours, pastels, graphic prints, inks, charcoal, mix media. I love to create textures in my works.

Q14. Mam, as you like poetry, have you did any work on poems?

Ans: Yes, I did. A Punjabi poetess "Amrita Pritam" wrote a Poem – Ajj Akhaan Waris Shah Nu, Waris Shah was a Sufi poet of 17^{th} century. He was born in Pakistan. That time it was in Punjab. He wrote the famous Qissa – Heer Rangha.

Amrita Pritam wrote a poem on Waris Shah. This poem is about the partition of India and Pakistan. Amrita Pritam is saying to Waris Shah that when a girl named Heer cried, you wrote a full Qissa on her but now lakhs of woman are crying and now please come out of the grave.

It is very sad poem. Then I made drawings on each two lines of the poem. These drawings were made in charcoal and ink. I am the only one who worked on this poem in the whole world.

An other poet named "Shiv Kumar Batalvi" is one of my favourite poet. He use symbols in her poems. He is known as Viraha Sultan. I made paintings on his 20 poems in charcoal. It took 6 months to prepare these paintings.

Q15. How did you choose this poem "Ajj Akhaan Waris Shah Nu" for your artwork?

Ans: My grandmother used to sing this poem a lot. Even most of the people used to sing this poem after independence because it is about the separation of India and Pakistan. Specially those people who came here after plunder. This poem based on Punjab.

Some one told me that 70th anniversary of the poem "Ajj Akhaan Waris Shah Nu" is coming. So dedicated to this occasion I made drawings on each 2 lines of the poem. I had already read this poem. This inspired me and I did work on it. It took 1 year to complete this book.

Q16. How many of your books have been published?

Ans: About 2 books, I have told you :

i) An Ode To A Paper Boat

ii) Ajj Akhaan Waris Shah Nu

Apart from these, my two books have also been published. There are:

"Barahmaha – Devine Manifestations in Seasons" And

"Biraha Da Sultan – Shiv Kumar Batalvi Nu Chitraan Rahi Shardhanjali."

Q17. How did you get attention towards 'Barahmaha' and what kind of work did you do in it?

Ans: After the painful work "Ajj Akhaan Waris Shah Nu", I did colourful work. "Barhamaha" is written by Guru Nanak Dev Ji. After doing emotional work, I divert my mind towards Gurubani because when any person is sad, he automatically start to find God. Then I read Gurubani 'Barh Maha' and I understand it. Then I made 2 coloured paintings in water colours on each season. I wrote the name of book –

“Barahmaha – Devine Manifestation In seasons” which means ‘Barahmaha is not only 12 season but it is about how you can meet the God in the 12 months.

It is about how to connect with God. When you connect with God, you will not feel hot or cold. I have only paid attention to devotion and how Guru Nanak Sahib Ji explains the nature. An Artist is always inspired by nature. I have been a nature child since the beginning.

Still my heart is in Shimla. Open sky, air, hills of Shimla always have a special corner in my heart.

I made this book bilingual. I have written Gurbani in this book with explanation in English and Punjabi. So than the public can easily understand the meaning of Gurbani.

Q18. What was your research during Ph.d as a scholar?

Ans: I did Ph.d on “Analytical study of Sikh calendar Art”. Calender Art’s another name is popular art. As we see so many deities and photos in temples as Raja Ravi Verma made them in the form of calendars.

This was first made by S. Sobha Singh ji. He made Guru Nanak Devji, Guru Gobind Singh Ji calendar art. I worked on “How this art developed”. At the earlier the pictures were made on Janam Sakhis of Guru Sahib. Later, they were changed into murals. Then Maharaja Ranjit Singh invited foreign artist and they worked in oil colours. Then they were made in water colurs.

Then Sobha Singh ji made the painting of Guru Nanka Sahib Ji and this painting was approved for printing by SGPC. When we develop any painting in the form of print is a calendar art it means to have multiple reproduction of an artwork. This is what we called calendar art or popular art.

Popular art means the very famous art which can easily be afforded by the people. Sobha Singh ji never watched Guru Nanak Sahib ji but after seeing his painting but we feel like they will be like this. Even we also worship them how great is this work.

Q19. What role did your teachers play in your art life?

Ans: The main teachers of my life is my father, Satwat Singh ji. He is a great man. I worked very hard myself. I have tried a lot of mediums.

Q20. Which artist are you inspired by?

Ans: The artist whom I have been inspired by are Amrita Shergill, Vincent Ven Gogh, Pablo Picasso, Salvador Dali. I am very inspired by the life of Amrita Shergill.

Q21. Tell me about some of your research papers.

Ans: I have researched a lot on contemporary paintings and contemporary sculptures. I have done about 85 research publications in Journal About 40-50 journals have been published in different magazines.

Q22. Share your experience of international exhibitions and visits.

Ans: I have participated in a lot of international exhibitions. My paintings are in Japan, China, America, Thailand. I had presented India at Dhaka in 15th Asian Art Biennale. My paintings are in collections at many museums. One painting form boat series is in collection of French Embassy, Paris.

Q23. Highlight some of your awards.

Ans: I have participated in so many exhibitions workshops and competitions. I won so many Lalit Kala Awards, AIFACX awards Jaipur Art Festival, Gita Kala Parv, I have participated in about 400 workshops.

Q24. According to you, what is the role of your family in your life?

Ans: According to me, there is a very important role of my parents in my life. Whatever I am, is because of my parents. For me, my parents are only one who supported me after the God. My father inspired me a lot. He gave me a lot of freedom. They never forced me for anything. I think, if there is any form of God on this earth then it is our parents only.

I am inspired by nature but there is a very big role of my parents in my life. My mother always come with me form my schooling to the interview for a professor. She

used to sit outside the room even in hot. Every single thing of our life inspire us. Both female and male saw the world differently.

Q25. It is said that girls get less opportunities, what do you think about this?
Ans: Everyone get inspiration from every single thing in life. It depends on how a female saw her surroundings. If we talk about a flower, a girl will see it differently and a boy will see it in different way. Their emotions are different from each other.

Q26. Briefly explain about your style of art?
Ans: I do symbolic art works. I use symbols to deliver any message. I don’t work in realism. I work in contemporary style. Whatever I paint, is made from my heart. I am emotionally attached with my memories, my childhood and my parents. An artist should observe everything in her surroundings. My art always dipicts childhood memory, nature and a deep message in the form of symbols.

Q27. As you told me that you worked on masks. Why you choosed masks as a theme of your work?
Ans: I choosed masks because masks are expressive. The eyes of masks are too big. Every person have a mask on his face which is invisible. From my childhood I loved tribal and folk art. And the masks are a part of them. I made them in paper mache because it was easy to afford.

I used waste newspaper and boxes. The masks shows the human tendencies. Sometimes we wear fake smile on our face. It is a human tendency. From my childhood I get inspired by Folk & tribal art and today I reach to contemporary art. The origin of contemporary art is tribal and folk art.

The all arts are branches of a tree. And the tree is tribal and folk art. The base of art is form Adivasi art. After, the art forms get developed into other forms. We should know about our Indian art culture. I started from tribal and fold and then reach to modern art and contemporary art.

CONCLUSION

From the provided search results, I conclude that an art is a diverse range of human activities or imaginative talent generally expressive of technical proficiency, beauty, emotional power or conceptual ideas. Many artists have defined ‘Art’ in different ways according to their opinion. Contemporary art is one of the art style of 21st century. Contemporary art in India emerged in the post – independence era, around the 1950s and 1960s.

The Progressive Artist Group formed in 1947, played a crucial role in shaping the early years of contemporary art in India. In the 1990s, globalization and the liberalization of the Indian economy had a profound impact on contemporary art.

Today contemporary Indian Art continues to evolve and thrive. Artists are exploring diverse themes from environmental concurs to the impact of technology on society. They are also pushing boundaries and experimenting with different mediums and techniques.

Indian Artists are actively participating in international exhibitions, biennales and art fairs further cementing their place in the global art scene. Before the contemporary art there were various styles that have evolved over centuries.

Painting, Sculpture, Installation Art, Performance Art, New Media Art, Photography, Street Art are some prominent art forms that fall under contemporary art in India.

Dr. Kavita Singh, a contemporary Indian Artist born in Shimla is doing a great job as an artist in this field. Her father is her influencer. He is also a very famous Indian Contemporary Artist. Her father is her first teacher. She often watch her father doing drawings and paintings. From the age of 3 years, she is doing painting. She is influenced by the artistic environment of her family.

After her father, she is influenced by the nature – birds, hills, rivers, ponds, lotus, starry nights of Shimla. She recalls her childhood memories of Shimla.

These nature related elements can be easily seen in her works. She has done her schooling from Chandigarh. At the age of 1 year, she moved to Chandigarh with her family due to her father’s job here.

After completing her school, she did her Graduation, Post Graduation and Ph.d from Punjabi University, Patiala. She did work on different themes. During her starting days, she did work on masks. Later she did work on boats. Then she worked on poetry. Writing poems related to her paintings and drawings is her quality which makes her unique from others.

She doesn’t consider herself a feminist. She did a lot of work on woman. She has showed current social issues in her works. She has depicted dreams and fantasies in her drawings. She showed the busy schedule of a female who works whole day and never get a pause like a clock. She showed how a woman do multitasks in her daily life. She use symbols in her works. She convey her message to the society by using symbols in her work.

She do work in different mediums. She has tried inks, acrylic colours, oil colours, pastels, ink and charcoal, mix media. She loves to do work on textures. She create textures on canvas by using different mediums. By the age of 44, she has participated in more than 200 exhibitions and workshops and won so many awards both national and international.

So many articles in newspapers & magazines can be seen regarding the works of Dr. Kavita. Arounds 40 – 50 magazines have published about her. She has published 4 books of her won and more than 80 journals, and research papers. Not only this can tell about her art life because still she is working and exploring herself.

At present she is working as professor and head in S. Sobha Singh Department of Fine Arts and Incharge of Museum & Art Gallery, Punjabi University, Patiala.

BIBLIOGRAPHY

➢ Links:-

- Brill.com
- https://www.jstor.org
- https://iep.utm.edu
- https://academic.oup.com
- https://www.britannica.com
- https://www.studiobinder.com
- https://www.gety.edu.
- Mapacademy.iv
- In.linkedin.com
- https://lnkd.in/erZ39ss
- https://youtu.be/Vp9tTix-8FA?si=xKtn4KKZjHS14jdv

➢ Books:-

- **Name of Book : Aesthetics**

  Author : Nupur Sharma & Prakash Veereshwar

  First Edition : 2001, Page No. 19, 24, 106

  Publisher : Satyendra Rastogi for Krishna Prakashan Media Pvt. Ltd.

- **Name of Books : Contemporary Art in India – A Perspective,**

  Author : Pran Nath Mago

  First Edition : 2001, Page no. 7

  Publisher : The director, National Book Trust India

LIST OF IMAGES

Sr. No.	-	Name of Image
01	-	The Germination of Emotions
02	-	Urban Shopper
03	-	The Three Sisters
04	-	Frida Khalo – the Empress of Pathos
05	-	Inner Illuminations
06	-	Selfie Avatara
07	-	The Panorama of my World
08	-	Coronation of Urban Eve
09	-	Between mytha and reality
10	-	Mermaid in Urban Jungle
11	-	Timeless clock
12	-	The Island of Self Revelation
13	-	The Paper boat seller
14	-	Crows in the city
15	-	Mermaid in the bowl
16	-	Pixie near the lotus pond
17	-	Messengers
18	-	Monsoon Melody
19	-	My Co – Travelers
20	-	Spring Symphony
21	-	Locked senses
22	-	Nostalgia
23	-	Stree
24	-	The Kitchen Katha
25	-	Urban Dragonfly

Image – 1 (The Germination of Emotions)

Image – 2 (Urban Shopper)

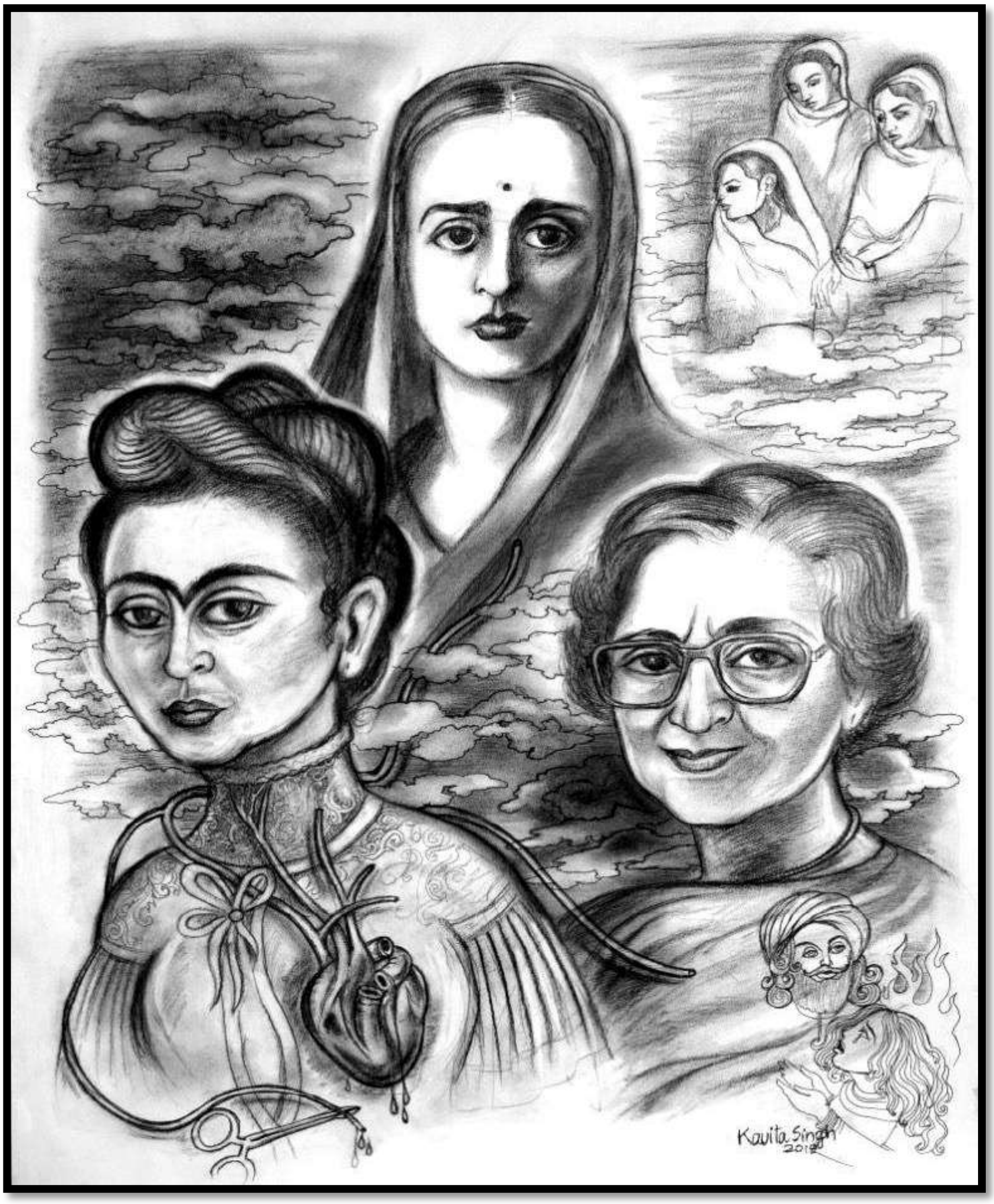

Image – 3 (The Three Sisters)

Image – 4 (Frida Khalo – the Empress of Pathos)

Image – 5 (Inner Illuminations)

Image – 6 (Selfie Avatara)

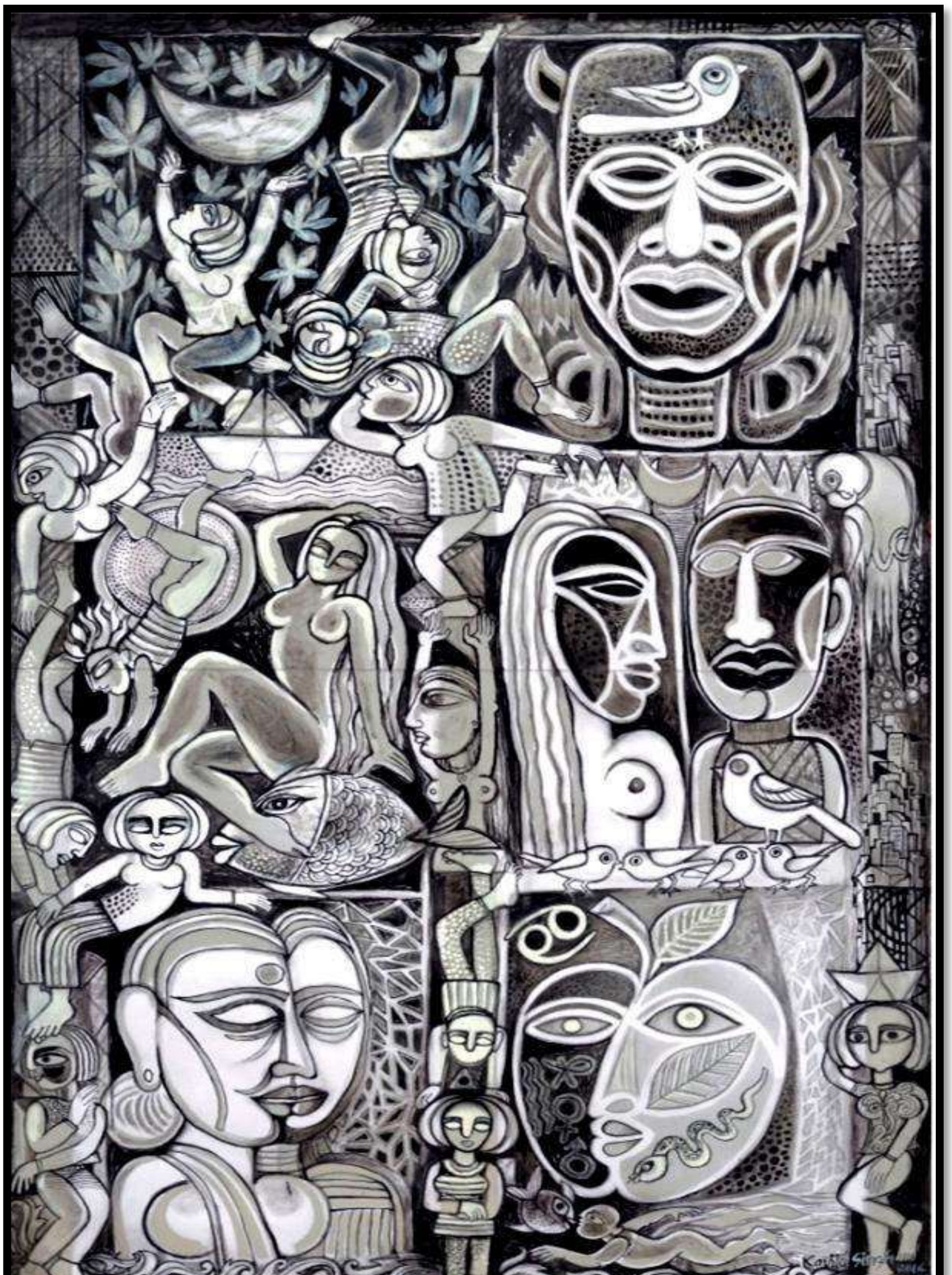

Image – 7 (The Panorama of my World)

Image – 8 (Coronation of Urban Eve)

Image – 9 (Between myth and reality)

Image – 10 (Mermaid in Urban Jungle)

Image – 11 (Timeless clock)

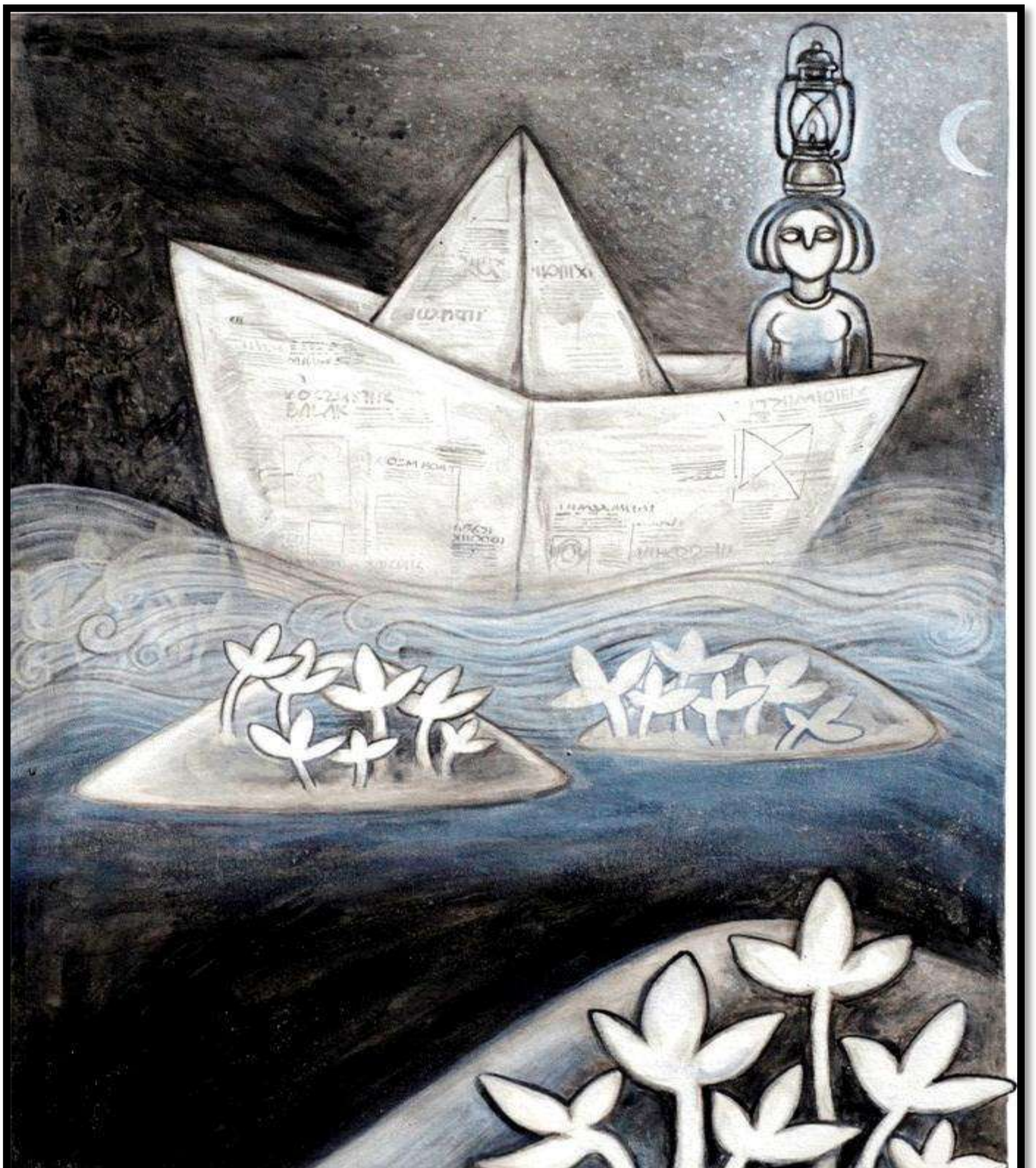

Image – 12 (The Island of Self Revelation)

Image – 13 (The Paper boat seller)

Image – 14 (Crows in the city)

Image – 15 (Mermaid in the bowl)

Image – 16 (Pixie near the lotus pond)

Image – 17 (Messengers)

Image – 18 (Monsoon Melody)

Image – 19 (My Co – Travelers)

Image – 20 (Spring Symphony)

Image – 21 (Locked senses)

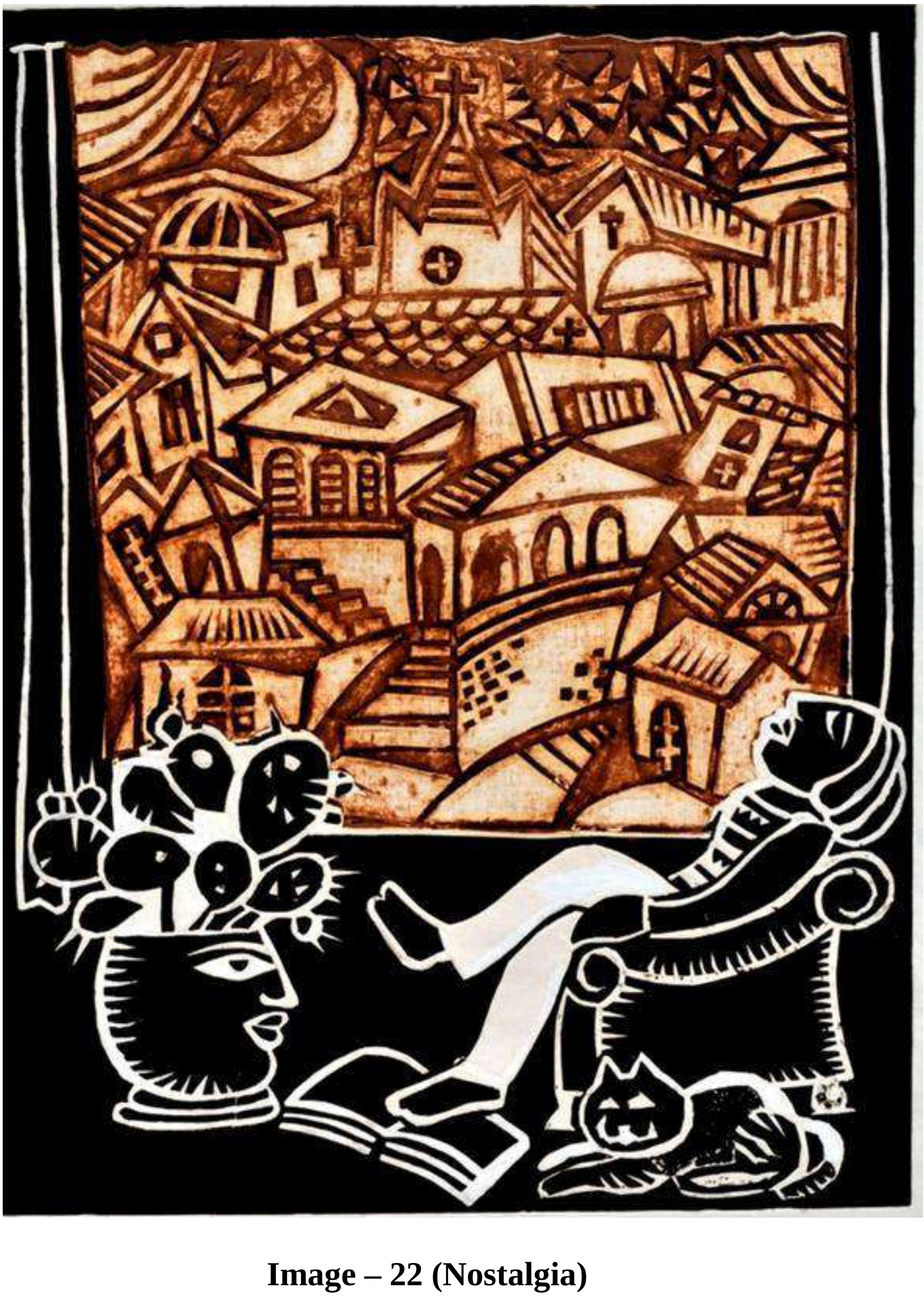

Image – 22 (Nostalgia)

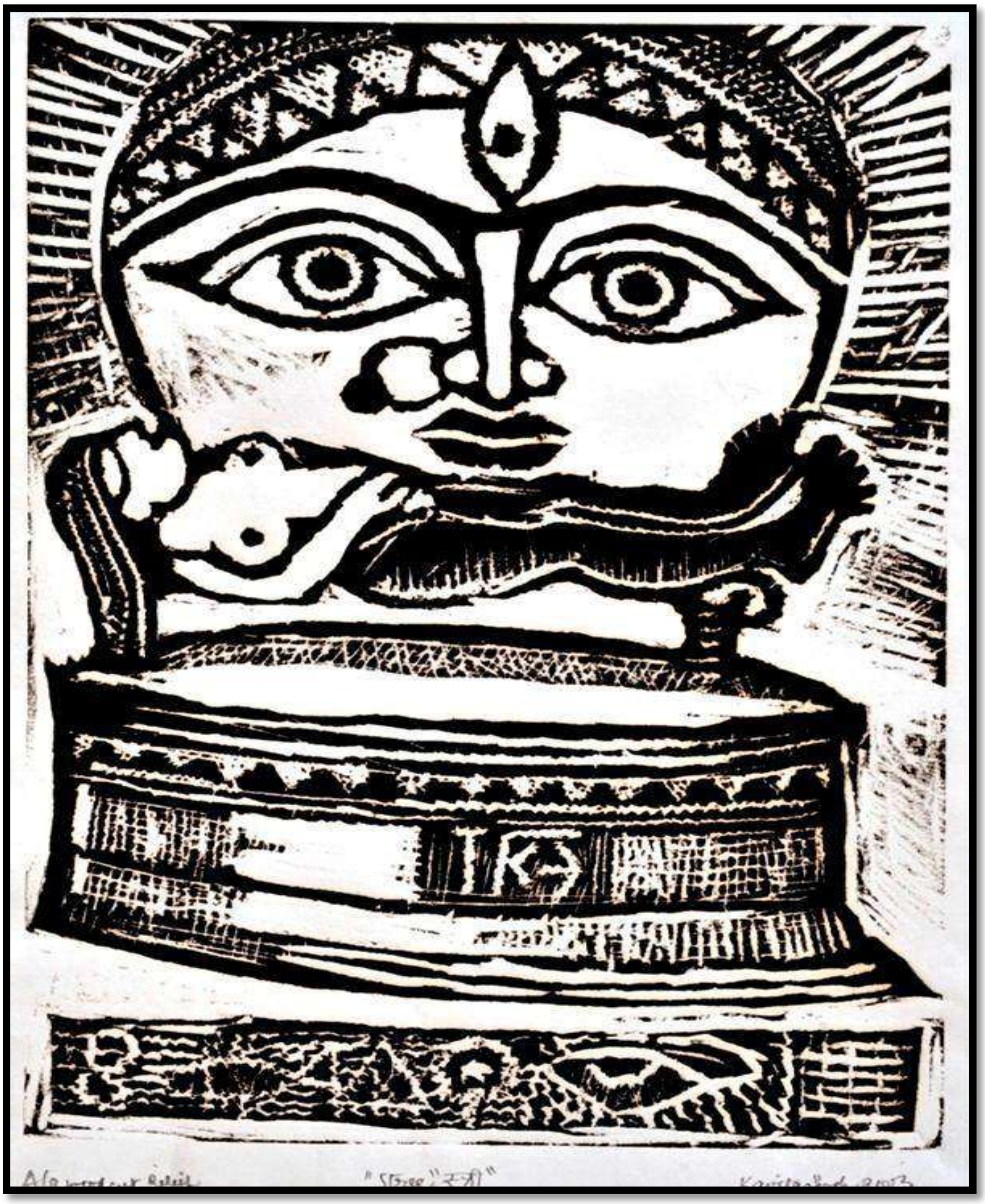

Image – 23 (Stree)

Image – 24 (The Kitchen Katha)

Image – 25 (Urban Dragonfly)

वॉश तकनीक के समकालीन कलाकार पंकज सरोज

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

की

ललित कला स्नातकोत्तर

उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु - शोध प्रबंध

विभाग अध्यक्ष एवं निर्देशिका

श्रीमती संतोष

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय

शाहाबाद (मारकंडा)

शोधार्थी

अंजलि

स्नातकोत्तर

(अंतिम वर्ष)

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय शाहाबाद (मारकंडा)

2023-2024

आदरणीय पंकज सरोज

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद मारकंडा

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि अंजलि ललित कला स्नातकोत्तर ड्राइंग एवं पेंटिंग द्वितीय वर्ष की छात्रा ने ***वॉश तकनीक समकालीन कलाकार : पंकज सरोज*** शीर्षक पर मेरे निर्देशन से प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को पूरा किया है इसने पूरी मेहनत से और लगन के साथ लघु शोध कार्य को पूरा किया है इस महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध पहले कभी नहीं किया गया है इस प्रबंधन को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूं मैं इसके उज्जवल भविष्य के साथ-साथ सफल जीवन की कामना भी करती हूं

दिनांक:

एसो .प्रोफेसर

श्रीमती, संतोष

प्रमाण पत्र

मैं अंजलि यह प्रमाणित करती हूं कि प्रस्तुत लघु शोध ***वॉश तकनीक समकालीन कलाकार : पंकज सरोज*** विषय मेरे स्वयं के प्रयास से किया गया है आर्य कन्या महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध कार्य पहले नहीं किया गया मैं अपनी मेहनत एवं लगन से इसे संपन्न किया है यह अप्रकाशित कृति है

निर्देशिक **शोधार्थी**

श्रीमती **अंजलि**

ललित कला विभाग

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद मारकंडा

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि अंजलि ललित कला स्नातकोत्तर ड्राइंग एवं पेंटिंग द्वितीय वर्ष की छात्रा ने ***वॉश तकनीक समकालीन कलाकार : पंकज सरोज*** शीर्षक पर मेरे निर्देशन से प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को पूरा किया है इसने पूरी मेहनत से और लगन के साथ लघु शोध कार्य को पूरा किया है इस महाविद्यालय में इस विषय पर लघु शोध पहले कभी नहीं किया गया है इस प्रबंधन को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की संस्तुति प्रदान करती हूं मैं इसके उज्जवल भविष्य के साथ-साथ सफल जीवन की कामना भी करती हूं

दिनांक: **प्राचार्य**

डॉ श्रीमति आरती त्रेहन

प्राक्कथन

ईश्वर ने इस संसार में सबसे सुंदर कृति मानव को बनाया है तथा कहा जाता है कि संसार ईश्वर का एक अत्यंत सुंदर अद्भुत व अद्वित्य निर्माण है जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की अनेकों कृतियां प्रकृति के साथ इसे संजोय हैं तथा इस सुंदर संसार में श्रेष्ठ कृति मानव है जिसमें अपने-अपने ढंग से कार्य कर रहे लोगों को परमात्मा ने अत्यंत असीम कृपा से बनाया जिसमें कुछ व्यक्तियों ने अपने व्यक्तित्व को निखारने में पूरा प्रयास किया और सफलता हासिल की स्वतंत्रता आत्मा वाले कला प्रेमी ***पंकज सरोज*** भी उन्हीं में से एक है

पंकज सरोज जी ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं जिनका पूर्ण जीवन काल के लिए समर्पित है पंकज जी एक ***दृश्य कलाकार*** और ***व लैंडस्केप*** बनाते हैं जिनमें उनके उनके माध्यम अलग-अलग होते रहते हैं लेकिन प्रकृति दृश्यों का अत्यंत सुंदर चित्रण करने का तरीका वही रहता है पंकज जी एक बहुत अच्छे कलाकार हैं उनका स्वभाव शांत है तथा व्यवहार से समझता का स्पष्टीकरण उन्हें देखते ही हो जाता है

मैंने अपने पाठ्यक्रम में वॉश तकनीक के बारे में पढ़ा तथा समझा था और जानकर भी काफ़ी खुशी हुई थी कि इस तरह की भी कोई तकनीक होती है जो अलग से दिलचस्पी पैदा करती है और इत्तेफाक से मैंने अपनी दोस्त के साथ लघु शोध के बारे में बातचीत की जहां मुझे *वॉश तकनीक के समकालीन कलाकार पंकज सरोज जी* के बारे में जानने का मौका मिला तथा मुझे और ज्यादा इस वॉश तकनीक की तरफ़ रुचि होने लगी मैंने पंकज सरोज जी पर लघु शोध लिखने का सोच और आदरणीय श्रीमती संतोष जी से अनुमति ली और पंकज सरोज जी से भी मैंने अनुमति लेने के पश्चात

13 .1. 2024. को पंकज जी से मेरा साक्षात्कार हुआ जिसमें मुझे उनके जीवन के साथ-साथ उनके कार्य को जानने का भी मौका मिला तथा कार्य को लेकर काफी बातचीत हुई

- प्रथम अध्याय में कला और कला का परिचय बताया है
- द्वितीय अध्याय में वॉश तकनीक का इतिहास

वास तकनीक के भारतीय कलाकारों का संक्षेप में परिचय लिखा है

- तृतीय अध्याय में वॉश तकनीक के समकालीन कलाकार पंकज सरोज जी के जीवन के बारे में लिखा गया है
- चतुर्थ अध्याय में प्रदर्शनियों ,उनके पुरस्कारों तथा कलाकृतियों का वर्णन भी किया गया है
- पंचम अध्याय पंकज जी के साथ साक्षात्कार लिखा गया है
- अंत में उपसंहार
- संदर्भ सूची

अंत में उपसंहार संदर्भ सूची और चित्र सूची को प्रस्तुत किया गया है इसमें लघु शोध प्रबंध के माध्यम से स्थापित की गई मौलिक मान्यताओं को प्रतिपादित किया गया है प्रस्तुत शोध पत्र को सावधानी पूर्व प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है तो भी कुछ अशुद्धियां रह जाना स्वाभाविक है क्योंकि यह मैंने पहली बार खुद से ही की है जिसमें अभी मैं पूर्ण रूप से अभ्यस्त नहीं रही किंतु आशा है कि विद्वान समीक्षक उन्हें अलक्ष्य करने की कृपा करें

इस शोध पत्र में जो त्रुटियां रह गई हैं उनके लिए मैं ही दोषी हूं अतः इसके लिए मैं विद्वान जनों से क्षमा प्रार्थी भी हूं

अंजलि

शोधार्थी

आभार

मेरे इस लघु शोध कार्य को करने में जिन महानुभवों का साथ रहा है उनके प्रति आभार व्यक्त किए बिना मेरे इस शोध कार्य का आलेख संपूर्ण नहीं होगा मैं उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझती हूं जिनकी प्रेरणा सहयोग तथा प्रोत्साहन से इस कार्य को साकार कर सकी ।

सर्वप्रथम मैं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंतर्गत आर्य कन्या महाविद्यालय शाहबाद मारकंडा के ललित कला विभाग की अध्यक्ष आदरणीय श्रीमती संतोष मैडम के प्रति आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने पूरे ही शोध कार्य हैं के दौरान मेरा मार्गदर्शन किया।

मैं आदरणीय श्री महेश धीमान सर तथा आदरणीय अंजलि रानी मैडम के प्रति भी कृतज्ञ हूं जिन्होंने इस कार्य के दौरान मेरी शंकाओं तथा समस्याओं का निदान किया तथा हर समय प्रोत्साहित किया और समय-समय पर मदद भी की।

इसके साथ में अपने परिवार जिनमें अपने बड़े भाई का भी आभार व्यक्त करना चाहूंगी जिनके कारण लघु शोध प्रबंध कार्य आरंभ से अंत तक संपूर्ण हो पाया ।

मैं आदरणीय कलाकार पंकज सरोज जी का भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने अपना कीमती वक्त निकाल कर अपने विचार सांझा किया तथा लघु शोध को पूरा करने में मूल्यवान सहयोग दिया क्योंकि पंकज जी ने लघु शोध के दौरान साक्षात्कार होने के बाद भी पूछने पर हर संभव मदद की जिसे मैं हृदय से दोबारा आभार प्रकट करती हूं क्योंकि उनके ही सहयोग से लघु शोध का कार्य संपूर्ण हो पाया ।

अंत में अपनी दो मित्रों की दिल से आभारी हूं जिन्होंने मुझे अपना पूर्ण कीमती समय देकर इस लघु शोध को संपूर्ण करने में सहायता की ।

अंत में मैं प्राचार्य महोदया आदरणीय डॉ आरती त्रेहन मैडम जी का भी आभार प्रकट करती हूं जो ललित कला विभाग को सुचारू रूप से चलने में ललित कला विभाग का सहयोग कर रही है मैं अपने सभी गुरुजनों के प्रति श्रद्धा भाव प्रस्तुत करती हूं इन्हीं की प्रेरणा से यह शोध कार्य संपन्न हो सका यद इस लघु शोध प्रबंध में पाठक वर्ग को कुछ भी लाभ पहुंचा तो मैं इसे अपना सफल प्रयास मानूंगी ।

अंजलि

शोधार्थी

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन	***पृष्ठ संख्या***
आभार	
प्रथम अध्याय-	**1 - 4**
-कला, कला का अर्थ एवं परिभाषा	
द्वितीय अध्याय -	**5-20**
- वॉश तकनीक का इतिहास	
- वॉश तकनीक के भारतीय कलाकारों का संक्षेप में परिचय	
तृतीय अध्याय-	**21-30**
- वॉश तकनीक के समकालीन कलाकार - पंकज सरोज	
चतुर्थ अध्याय -	**31-74**
- पंकज सरोज की कला यात्रा	
- माध्यम (वॉश तकनीक)	
- प्रदर्शनियां व पुरस्कार	
- कलाकृतियों की जानकारी	
पंचम अध्याय-	**75-80**
- पंकज सरोज के साथ साक्षात्कार	
– उपसंहार	**81**
– संदर्भ ग्रंथ सूची	**82**
– चित्र संग्रह सूची	**74**
– चित्र सूची	**44**

प्रथम अध्याय

➢ कला , कला का अर्थ एवं परिभाषा

प्रथम अध्याय

कला :-

हम सभी को पता है कि हर चीज में क्लात्मक है और कला का इतिहास उतना ही पुराना कला है जितना कि मानव का खुद का इतिहास ।अगर ध्यान से समझा जाए तो ,चित्र बनाने की प्रवृत्ति (कला) हमेशा हमारे पूर्वजों में विद्यमान रही हैं मनुष्य ने जब से सांस लिया ,तभी से कुछ ना कुछ हर सांस में "नया" सीखा है जिसमें शुरू से लेकर मानव ने अपनी मूक विचारों को किसी न किसी माध्यम से, कैसे ना कैसे करके भावनाओं को वयक्त किया है, इसी वयक्त की गई चीज जो हमें "देखने" "सुनने" वह "समझने" वाले को सुंदर लगे, वही कला है कला में वस्तु कुछ भी हो सकती हैं या ऐसा कहे कि बनाने का माध्यम, जिसे बनाया जा सकता है या जिसके ऊपर बनाया जाता है वह कुछ भी हो सकता है जैसे:-

मिट्टी ,लकड़ी, पत्थर, रंग ,कागज, दीवारें ,या अन्य कोई सामग्री ।

मानव की प्रवृत्ति है "व्यक्त करना" और सीखना वह सीखना और ग्रहण करना, वह जो ग्रहण करता है चाहे वह "प्रकृति" से हो या "समाज" से उसको व्यक्त करने को चाह रखता है ,और साथ में चल रही भावनाओं व विचारों को सामने रखता है यही सब कला है।

कला को हम "एक पेज" पर या कुछ लाइनों में व्यक्त तो नहीं कर सकते लेकिन, अपने खुद की समझ से एक बहुत छोटा सा प्रयास कर सकते है ताकि हम सभी अपने विचारों को व्यक्त कर सके ,जो कि कला के लिए कला का रूप है सामान्य, शब्दों में जो एक सरल साधारण रूप में स्पष्ट हो जाए- मनुष्य व्यक्ति को जो उसके जीवन में आनंद प्रदान करती हैं "कला" वही है और - सत्यता तो "आत्मिक शांति" प्रदान करने वाले कला ही कला है। कला "परमात्मा" ने हर जीव में दी है जिसमें छोटा सा उदाहरण- चिड़िया के तिनका तिनका जोड़कर घर बनाने से लेकर मानव की बढ़ती तरक्की को लिया जा सकता है।

अन्य उदाहरण -

वही एक छोटा सा चूहा जो अपना घर मिट्टी खोदकर नीचे जमीन में बनता है यह सभी कला का एक रूप है जो कला को व्यक्त करते हैं अंत्यत साधारण व स्पष्ट रूप में।

भारत में कला:-

भारत में "कला" और "सौंदर्य शास्त्र" "धर्म और दर्शन" की गहराइयों में से उपजे। इन्हें न तो कभी सांसारिक माना गया और न ही महत्वहीन, क्षणिक सुख का साधन। कला के अंदर ,जीवन को जीने के मूल तत्व निहित है इसमें , "कल्पना" आदर्श प्राचीन परंपरा और अन्य जीवन को जीने के तरीके छिपे हैं। यहां ध्यान दिया जाए तो,

भारतीय व्यंग्य में शब्द "कला" का पहला प्रयोग "भारतीय वेद ऋग्वेद" में मिलता है(ऋग्वेद 8.47 / 16) इसके बाद "शतपथ", ब्राह्मण और तैत्रीय ब्राह्मण,और इसके अलावा- अथर्ववेद में भी (कला) शब्द का प्रयोग है। यह बात महत्वपूर्ण है कि यूनानियों की "भांति कला" का प्रयोग "शिल्प" के रूप में कभी नहीं पाया गया, भारतीय अवधारणा "दर्शन" के अधिक नियुक्त रही है, लौकिक के नहीं। [5]

"कला का शाब्दिक निरूपण": -

कला "संस्कृत शब्द है इसके उद्भव पर संस्कृत विद्वानों मतभेद हैं यह कुछ इस प्रकार है।शब्द "कला " "ला" धातु से लिया उसमें "क" जोड़ा ला=देना ,क=सुख, ***'काम्मलाति इति कला'*** जो आनंद देता है वही कला है।कुछ विद्वान "कला" शब्द के निरूपण में कल उद्धव कल" धातु से मानते हैं जिसका अर्थ - प्रेरित करना है मतलब -कला प्रेरित क्रिया है।[7]

"कला के विभिन्न उल्लेख":-

ऋग्वेद के "उषा उपासना" प्रसंग में उपासना मंत्रो में शब्द "कला"आता है। यहां कला का अर्थ "अंश" से लिया गया है अंश का अर्थ- परमात्मा" का कला में निहित अंश भी हो सकता है।और देखा जाए तो 'कलाकार परमात्मा'- कला संसार में निहित हर सुंदर वस्तु और वह सब चीजों जो अपने आप में पूर्ण है।

* ब्राह्मणों में भी कल का उल्लेख है पर यहां- कलाकार" लिया गया है- कलाकार कला द्वारा ही "परमात्मा की सृष्टि" का "अनुकरण" करता है उसमें 'अपनी कल्पना' भी मिलता है कला में कुछ भी व्यक्त करने से पहले उसे अपनी कला चेतन को 'सांसारिक 'उलझन से 'मुक्त' कर लेना होता है

* उपनिषदों में 'कला" को सृष्टि माना गया है यह संसार एक 'कलाकृति' है, जिसमें विराट ब्रह्म कलाकार के रूप में उपस्थित है, उसे परमात्मा के रूप चारों दिशाएं भी हैं , ज्ञानी जन इन्हें इसी रूप में मानते हैं।

* आज जिस रूप में करना शब्द का प्रयोग होता है उसे रूप में "भरत मुनि" ने सर्वप्रथम इस शब्द का उपयोग किया था। इस अर्थ में कला में सभी (ललित कलाएं, चित्रकलाएं, मूर्तिकलाएं, संगीत, गायन , वाघ, काव्य नृत्य) आते हैं यूरोप में पहले प्लेटों" ने कलाकारों कलाओं को 'ललित कला और उपयोगी' के दो वर्गों में बांटा था।अनुकरण वाली कला'और 'कुछ बनाने वाली कला' जो कुछ ऐसे हैं -

* व्यावसायिक कलाएं (vocational art) :-रंगना, छापना , बढ़ाई

* उदार कलाएं : (Liberal arts)

संगीत ,व्याकरण , तर्क, शिक्षा आदि।

विलियम ने "वात्स्यायन -के कामसूत्र में दी 64 कलाओं को दो भागों में बांटा है

1.बाहम या प्रकट कलाएं :-

जो प्रकट की जाए (चित्रकला) (मूर्ति कला) बढ़ाई या सुनार ,भवन निर्माण आदि

2 . भीतरी या निजी कलाएं:-

जो व्यक्ति अपने लिए आमतौर पर करता है (काम , कला, श्रृंगार) [7]

कला का वर्गीकरण :-भारतीय

1. भारतीय भरत मुनि के अनुसार:- ललित कला, काव्य में सुख देने वाली, शिल्प कला :- उपयोगी कलाए

2. पाणिनी के अनुसार:-

शब्द शिल्प (ललित कला) व (शिल्प कला) दोनों के लिए प्रयोग किया कोई क्रिया - जो वस्तु को सुंदर बना दे वही कला" हैं।

3. वात्यस्यान के कामसूत्र :- 64 कलाएं मानी गई ,ये अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति में सहायक है कला के दो वर्ग हैं :- अपरा कला -(जो सीमाओं से बंदी है) पराकला -(जो सीमाओं से मुक्त हैं) आध्यात्मिक सौंदर्य का आनंद।

4. शुक्र नीति :-

मुक भी जिसका रसवादन कर ले, वह कला है ।इस प्रकार भारतीय अवधारणा के अनुसार - कला परम ब्रह्म को 'निराकार' से 'साकार' रूप में लाने का एक माध्यम या साधन है।

कला व्यक्ति के मन में छपी रूप सौंदर्य की राशि को किसी भी रूप में आकर में बाहर अभिव्यक्त करने का साधन कला है

कला ***(सत, + चित+आनंद)*** का योग है।

कला का क्षेत्र व विस्तार:- भारतीय सौंदर्य शास्त्र के अनुसार कला के 6 अंग हैं।

1.रूप भेद

2. प्रमाण

3. भाव

4. लावण्या योजना

5.सादृश्य

6.वर्णिका भंग और इसी के साथ:- ***"रूप भेदा प्रमाणनि भावनालावण्य योजनम।***

सदृश्य वर्णिका भंग इति चित्रम षड़गकम" ।।

कला का उद्देश्य :-

कला (इस) विषय में अन्य को मत है और अनेकों भेद हैं, यह मत समय और स्थान के साथ बदलते भी हैं। प्राचीन यूनानियों विचारों के अनुसार कला का उद्देश्य 'प्रकृति का अनुकरण' करना था ,जबकि भारतीय मत के अनुसार "कला परम आनंद " की प्राप्ति का साधन है,

किंतु कला का एकमात्र उद्देश्य है जो हर समय, हर स्थान की कला का मूल है -वह है "सौंदर्य की रचना" जैसे:- कलाकार उसे देखा है यह भी कहा, जाता है कि कल है कि कल का उद्देश्य जीवन को, मानवता को चित्रित करना या जीवन जैसा है वैसा, भी हो सकता है और जैसा कलाकार उसे दिखता है, वैसा भी हो सकता है ।[9]

द्वितीय अध्याय

- वॉश तकनीक का इतिहास
- वॉश तकनीक के भारतीय कलाकारों का संक्षेप परिचय

द्वितीय अध्याय

वॉश तकनीक का इतिहास :-

हम सभी अपनी भावनाओं को विभिन्न माध्यम से व्यक्त करते हैं यह तो हम सभी बेहतर तरीके से जानते हैं लेकिन उसमें भी एक खास और बहुत ही खूबसूरत तरीके को अपनाए जाएं तो कला में 'चार चांद' लगने वाली बात होगी, यहां हम बात कर रहे हैं वह तकनीकी जो कि अपने आप में एक अत्यंत सुंदर माध्यम है।लेकिन सबसे अलग जो दिलचस्पी पैदा करें वह है जल रंग अर्थात् (वॉश तकनीक)। बंगाल स्कूल जो कि भारत में है वहां से विकास शुरू हुआ , वॉश तकनीक वह विधि है जिसमें चित्रांकन के लिए रेखाओं रंगों और पारदर्शिता ही" चित्र को आकर्षित" बनती हैं वह तकनीक को (अवनी बाबू) 'अवनींद्रनाथ टैगोर' ने शिखर तक पहुंचा।

लघु शोध का महत्व :-

इस लघु शोध पत्र का एक मुख्य बिंदु (वॉश पद्धति) की जानकारी से लेकर अब तक के पीछे रह चुके 'कलाकार' तथा आज के जो कलाकार इसमें कार्य कर रहे हैं उनसे रुबारूब करवाना या जानकारी देना है ताकि जाना जा सके कि (वॉश तकनीक)भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण तकनीक रही है। आधुनिक भारतीय चित्रकला में यह पद्धति बंगाल स्कूल में फली फूली है और आज भी कुछ कलाकार जो इसे संजोए हुए हैं। जैसे :- "किसी घर में अमूल्य गहनों से घर की लक्ष्मी की शोभा बढ़ाती रहती है वैसे ही यह तकनीक (वॉश पद्धति)की गहनों से कम नहीं है।"

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भारत का गहना उसकी संस्कृति है जो उसे अन्य से अलग कर, सुंदर बनाता है जो "संस्कृति का गौरव है" तथा चारों दिशाओं में विद्यमान है। मानव संस्कृति में 'कलात्मक' तथा 'आध्यात्मिक विकास' का उतना ही महत्व है जितना "वैज्ञानिक उपलब्धियां" का । कलात्मक विकास में प्रमुख रूप से ;- 'साहित्य कला'

'स्थापत्य कला'

'संगीत कला'

'मूर्ति कला'

‘नृत्य या नाटक’ है।

चित्र बनाने के लिए आदिकाल से आज तक मानव ने अलग-अलग प्रकार की तकनीक का प्रयोग किया है चित्र बनाने के लिए (जल रंग), (तेल रंग), (एक्रेलिक) का प्रयोग किया जाता है जिसमें "जल रंग "तकनीक में रंगों की 'पारदर्शिता' का उपयोग प्रमुख है। इनमें से 'इंक' और 'स्याही' (वॉश पद्धति) चीन से कोरिया, कोरिया से जापान आई इस विधि का उद्भव 'तांग राजवंश ' (618 से 906) सांग वंश और (960 से 1279)तक में हुआ था। "ink wash painting" जापान में चित्रकला का आरंभ बौद्ध धर्म के आगमन के साथ-साथ हुआ। जापानी कलाकार स्याही के माध्यम से चित्रण

करना पसंद करते थे। भारत में वह चित्रण को ('ओकोकुरा,याकोयाम, हिशिदा') के आने से प्रोत्साहन मिला। इन सभी के भारत आने पर "बंगाल स्कूल" के छात्रों को नई शैली सीखने का मौका मिला।उन्होंने (कोलकाता कॉलेज) के "विद्यार्थियों" को वॉश तकनीक के बारे में बताया। जिसमें धीरे-धीरे सीखना शुरू हुआ और खासकर इसको प्रमुख कलाकार- "अवनिंद्रनाथ टैगोर" ने 'चीनी', 'जापानी', व भारतीय चित्रण के मिश्रण में (वॉश पद्धति) के अंतर्गत काफी सारे चित्र बनाएं। वॉश तकनीक - एक परंपरागत तकनीक है और यह बंगाल में बहुत लोकप्रिय हुई।

बंगाल स्कूल का उद्भव और भारत में "वॉश पद्धति" का आगमन:-

भारत में अंग्रेजों का आगमन और ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना पुर्तगाली व्यापारियों का परिणाम थी। ब्रिटिश इंडियन कंपनी ने समस्त राजनीतिक आर्थिक व अन्य कार्यों में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। उन्होंने भारतीयों को पढ़ना शुरू कर दिया उसके लिए भारत में अलग-अलग स्थान पर कॉलेज स्थापित किए गए ।

भारत में सबसे पहले "मद्रास" "कोलकाता और मुंबई " में स्कूल स्थापित किए गए, जहां भारतीय कलाकारों को शिक्षित किया जाता था। 1885 ईस्वी में 'भारतीय राष्ट्रीय ' की स्थापना और स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव "बंगाल स्कूल" पर स्पष्ट रूप से देखा जान गया। 1884 में ईवी "ई. वी. हैवल" को प्रधानाचार्य के रूप में मद्रास कॉलेज आफ आर्ट्स में नियुक्त किया गया । जिसके बाद 'ई. वी. हैवल ' ने भारत में भ्रमण किया जहां (अजंता में भारत की कला) को जाना तथा को सबके सम्मुख रखा,(ई.वी. हैवल) ने स्वदेशी आंदोलन में अवनी बाबू, रविंद्र नाथ टैगोर , सिस्टर निवेदिता और ए. के. कुमार स्वामी का साथ दिया तथा इन्होंने मिलकर बंगाल स्कूल को शिखर दिया।

विदेशी कलाकारों और कला इतिहासकारों के साथ-साथ "लेडी हैरिंगम" ने भारत में आगमन किया तथा उनका परिचय' टैगोर परिवार 'से हुआ। उसके बाद अवनिंद्रनाथ टैगोर ने अपने शिष्य "नंदलाल बोस" ,"असित कुमार हालदार" एस.एन गुप्ता को हरिंघम के साथ "अजंता" और (बाघ के चित्रों) की 'प्रतिलिपियां' बनाने के लिए भेजा था।भारतीय कला कोअग्रसारित करने के लिए ई.वी. हैवल औरए. के. कुमार स्वामी, सिस्टर निवेदिता, ओकाकुरा और अन्य शिष्यों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

जिनके प्रयास से भारत को एक नई पहचान मिली ,जिसमें सभी कलाकार स्वतंत्र रूप से कार्य कर सके ।बंगाल स्कूल में (1895 से 1910)बंगाल शैली से जुड़ा रहा है जिसमें बंगाल पद्धति के मुख्य कलाकार "अवनिंद्रनाथ टैगोर" का योगदान मुख्य रहा है तथा जिससे यह शैली लोगों से अभिमुख हुई है तथा इसकी वजह से यह शैली शीघ्र ही - "शांति निकेतन एवं गवर्नमेंट कॉलेज आफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट" कोलकाता के विद्यार्थियों के माध्यम से भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में प्रचलित हुई। भारतीय पुनर्जागरण काल जिनका 'नव्य संस्थान' बंगाल में - रविंद्रनाथ टैगोर , अवनींद्रनाथ टैगोर की प्रेरणा तथा 'नंदलाल बोस' विनोद बिहारी मुखर्जी आदि ।

कलाकारों ने (वॉश तकनीक) को अन्य कला महाविद्यालय के प्रांगणों(प्रांगण) में बोने या (रोपने) व पुष्पित व पल्लवित करने के लिए भेजा।भारत का पहला स्कूल (मद्रास 1850 ई), (कोलकाता 1854), (मुंबई 1857) में स्थापित हुआ था ।19वीं शताब्दी के आरंभ 1901 और 1902 के लगभग ओकाकुरा भारत के जापानी यात्री यात्रा के दौरान आए थे काफी सारे स्थान का भ्रमण किया ताकि जापानी व भारतीय कला को जोड़ने के लिए वह भारत में लगभग 2 वर्ष भारत में ही रहे ,जिनका नाम "ताइक्वान" और "हीशिदा "था।

उन्होंने भारत में कोलकाता स्कूल में (वॉश पद्धति) की शिक्षा दी ।जहां अवनिंद्रनाथ टैगोर ने उनसे इस तकनीक को ग्रहण कर-अपने शिष्यों तक पहुंचाया तथा उनके शिष्य ने इस वर्ष पद्धति को ,अपने (आगे) शिष्य तक स्थानांतरित किया।जिस शिल्पकला कार्य पद्धति को विद्यार्थी ने अपनाया उसके उसको बाद में नव्य बंगाल स्कूल के कलाकार कहा जाने लगा।यह विधि आने वाले समय में प्रसिद्ध हो गई।

वॉश पद्धति को उसे समय में कुछ कल कॉलेज में पल्लवित किया गया :-

1.नंदलाल बोस :- इंस्टीट्यूट आफ फाइन आर्ट्स, (कला भवन) शांतिनिकेतन।

2.डी.पी राय चौधरी :- गवर्नमेंट कॉलेज आफ फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट, (चेन्नई)

3.क्षितिन्द्र नाथ मजूमदार:- इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

4. सुमेंद्रनाथ गुप्त, एम.ए. आर चुगताई:- गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड क्राफ्ट, (लाहौर)

5. असित कुमार हालदार:- कॉलेज आफ फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट (लखनऊ)

6. शैलेंद्र नाथ डे:- राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स ,(जयपुर)

7. शारदा चरण उकील:- शारदा उकील स्कूल आफ आर्ट्स ,(दिल्ली)

8. मुकुल चंद्र डे:- गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड क्राफ्ट,(कोलकाता)

नोट:-

खासकर इन कलाकारों ने वह तकनीक को "सुधीर रंजन खस्तगीर", "वीरेश्वर सेन", "राम जयसवाल", "बद्रीनाथ आर्य", "सुखबीर सिंह" " सनत चटर्जी" और नित्यानंद महापात्र आदि को 'वॉश पद्धति' में कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

वॉश पद्धति :-

बंगाल के विदेशी कलाकारों के आगमन से देश के विद्यार्थियों को (नव्य शैली) नईं शैली और तकनीक को सीखने का अवसर प्राप्त हुआ।

"वॉश पद्धति "जल रंग की एक विधि है इसमें पारदर्शी रंग का प्रयोग किया जाता है तथा रंग को तूलिका या (ब्रश) के साथ "निष्पादित" लगाया जाता है।

वैसे- तो इस विधि को करने के लिए लगभग 2 से 6 महीने लग जाती या करते थे ,लेकिन बढ़ते समय के साथ में अन्य आधुनिक उपकरणों के माध्यम से अब इस प्रक्रिया को कुछ ही समय में प्राप्त/ (समाप्त) किया जा सकता है

"इसमें रंगों का प्रभाव खासकर धुंधला दिखाई देता है जिसे वॉश तकनीक कहते हैं"

जिसमें "ओपके" (गाड़े)रंग का प्रयोग किया जाता था। वह भारतीय कलाकारों द्वारा (टेंपरा) तकनीक कहा जाता है जो की थोड़ी-थोड़ी मिलती-जुलती तकनीक है । जबकि "अवनींद्रनाथ टैगोर" ने इस पद्धति को 'जापानी' कलाकारों से सीखा था ,लेकिन उन्होंने इसे भारतीय मिश्रण के करके **,"नवीन पद्धति** " को सबके सामने लाकर रखा है।

जिनका विशेष रूप से प्रयोग- 'दृश्य चित्र' तथा अन्य प्रकार के विषयों को चित्रित करने के लिए किया जाने लगा था।

वॉश पद्धति की तकनीक:-

वॉश पद्धति" की तकनीक बंगाल स्कूल की विशेषता है । बंगाल के चित्रकारों ने अपने चित्रों को "जल रंग", "टेंपरा रंग" इंक' का ही प्रयोग किया था, लेकिन चित्र पद्धति में - भारतीय, चीनी जापानी ,पद्धति का अनुकरण देखने को भी मिलता है।

चित्रकार को 'वॉश पद्धति' में चित्र बनाने के लिए सबसे अच्छी गुणवत्ता वाले पेपर की आवश्यकता होती है ताकि पेपर प्रक्रिया के दौरान पानी को अंदर ले सके तथा अधिक कार्य करने के लिए तैयार हो वह जल्दी गले ना या किसी कार्य की वजह से कार्य को खराब ना कर दे।

मुख्यता:- रूप से (कैंसन कागज), (फबियानो) ,कैंट पेपर "जर्मन स्कॉलर पेपर "का ही प्रयोग करें।

व्यक्ति

प्रक्रिया:-

**** सबसे पहले कागज पर चित्र बनाया जाता है जिसमें रेखाएं एकदम सही सटीक होनी चाहिए।***

**** फिर उसके बाद पानी के साथ बनाए गए , चित्र को गिला करें ।***

**** फिर उसके ऊपर रंग फैलाकर उसे सूखने के लिए छोड़ दें***

**** फिर उसके पश्चात चित्र आकृतियों को भरने के लिए रेखांकन को पुनः अन्य रंग से उभर दिया जाता है***

**** यह प्रक्रिया बारंबार दोहराने के पश्चात चित्रण पूर्ण होने पर सफेद रंग तथा छाया का भी प्रयोग किया जाता है***

**** "लाल तथा काले" रंग का प्रयोग रूपरेखा बनाने के लिए करते हैं वह पद्धति में "धुंधलापन" प्रभाव ही चित्रों को आकर्षक बनाता है आकर्षित बनता है यह पोत एक "रहस्यमयी" 'वातावरण' का निर्माण करता है।***

"बॉकिंगफोर्ड"

आर्चिस पेपर

फाइन ब्रश

वॉश ब्रश

कत्सुता शौकीन :-

कत्सुता शौकीन' एक प्रसिद्ध "जापानी" कलाकार हैं उन्होंने भारत और जापान की संस्कृति और कलात्मक संबंधों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जापान से -हीषिदा,याकोयामा ,के अतिरिक्त कलाकार "शोकिन्" ने "टैगोर" परिवार को (इंक वॉश पद्धति)सीखने में सहायता की है। "शोकिन् हाषिमातो " गाहो के शिष्य थे -(1905 से 1907 ई)के लगभग ही भारत में आए थे, लेकिन जब वह भारत आए तो यात्रा वक्त उनके काफी सारे "कार्य नष्ट" हो चुके थे ,लेकिन भारत में आने पर -शोकिन्' ने अपने "अजंता"की यात्रा के दौरान "बुद्ध धर्म" से संबंधित चित्र बनाएं, इसके साथ-साथ उन्होंने भारतीय चित्रों को भी चित्रित किया।

जिनमें -राम, सीता और लक्ष्मण। -राम चित्र

-बुद्ध और सुजाता आदि।

चित्र–1, हिशिदा शूंसो, सरस्वती, 1903, जलरंग वॉश पद्धति

बंगाल स्कूल

बंगाल स्कूल ऑफ़ आर्ट्स जिसे आमतौर पर बंगाल स्कूल कहा जाता है। एक कला आंदोलन और भारतीय चित्रकला की एक ऐसी शैली कोमलता थी, जिसकी उत्पत्ति बंगाल मुख्य रूप से कोलकाता और ,"शांतिनिकेतन" में हुई थी और 20वीं शताब्दी में ब्रिटिश राज्य के दौरान पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फली फूली अपने शुरुआती दिनों में पेंटिंग की भारतीय शैली के रूप में जाना जाता है यह भारतीय राष्ट्रवाद स्वदेशी से जुड़ा था ।और इसका नेतृत्व अभिनंदन नाटक और ने किया ,1871 से 1951 लेकिन 1896 से गवर्नमेंट कॉलेज आफ आर्ट एंड क्राफ्ट कोलकाता के प्रिंसिपल (E.V. havell)जैसे ब्रिटिश काल का कलश प्रशासन द्वारा इस बदलाव और समर्थन दिया जा रहा था अतः इसे आधुनिक भारतीय चित्रकला का विकास हुआ इतिहास बंगाल स्कूल का अमाउंट गोंद और राष्ट्रवादी आंदोलन के रूप में उभरा जो पहले भारत में राजा रवि वर्मा और ब्रिटिश काल विद्यालय जैसे भारतीय कलाकार द्वारा प्रसारित अकादमी क शैलियों के खिलाफ

प्रतिक्रिया करता था पश्चिम में भारतीय आध्यात्मिक विचारों के प्रभाव के बाद ब्रिटिशकला शिक्षा। अर्नेस्ट विन वर्ल्ड हैवल के छात्रों ने मुगल को मुगल लघु चित्रों की नकल करने के लिए प्रोत्साहित करके कोलकाता और आर्ट शिक्षक वीडियो में सुधार करने का प्रयास किया यह विवाद का कारण बना जिसके कारण सभी छात्रों की हड़ताल हुई और स्थानीय प्रेस से शिकायतें आई जिनमें राष्ट्रवाद भी शामिल थे उन्होंने इसे एक प्रतिगामी कदम माना हवेली की कमी रविंद्र नाथ के भतीजे कलाकार अभिनंदन नाथ टैगोर ने समर्थन दिया था टैगोर ने मुगल काल से प्रभावित कई कृतियों को चित्रित किया एक ऐसी शैली जिसे केवल पश्चिम के भौतिक गुप्ता वार्ड के विपरीत भारत के विशिष्ट अधिक आध्यात्मिक गुना कोअभिव्यक्त करने वाला मानते थे टैगोर की सबसे प्रसिद्ध पेंटिंग भारत माता मदर इंडिया एक युवा महीना को दर्शाया गया है जिसमें हिंदू देव देवता के रूप चार भुजाओं के साथ चित्रित किया गया है जो भारत के राष्ट्रीय आकांक्षाओं के प्रतीत हैं टैगोर के ने बाद में कला एशिया मॉडल के निर्माण की आकांक्षा के तहत जापानी कलाकार के साथ संबंध विकसित करने का प्रयास किया भारत माता के चित्रों के माध्यम से और इंद्रनाथ ने देशभक्ति के पैटर्न की स्थापना की वह बंगाल स्कूल के चित्रकार और कलाकार के नंदलाल बोस अवनिंद्रनाथ नाथ टैगोर की बहन सन्नी देवी मनीष डी मुकुल दे आशीष कुमार हलदर सुधीर खस्तगीर जितेंद्र मजूमदार आदित्यबंगाल आधुनिक भारत के कुछ बेहतरीन कलाकार को पैदा करता है गवर्नमेंट कॉलेज आफ आर्ट एंड क्राफ्ट में एक विभाग है जो छात्र लगभग एक साड़ी से टेंपोरल और वोट पद्धति प्रारंभिक शैलियों का प्रशिक्षण दे रहा है यह छात्र बंगाल स्कूल के कलाकार की विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं जो शुरू में कलाकारों का स्मूथ है वह अभिनंदन नाटक और की शैली का अनुसरण करते थे और सौंदर्य दृष्टि का सांचा करते थे उनमें से धीरेंद्र तथा ब्रहम बंगाल स्कूल आफ आर्ट्स के जीवित की वृद्धि है कि वह लेकर मास्टर हैं और अन्य असम के छात्र हैं जो बंगाल स्कूल आर्ट पेंटिंग की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं जिनमें से चौधरी गोपाल सान्याल गणेश पाइन मुकुल दे आशीष कुमार हलदर और वीरेश्वर सेन और बद्रीनाथ आर्य जैसे शिष्य शामिल है

भारत माता (1950)

अवनिंद्रनाथ टैगोर द्वारा, आंदोलन के प्रवर्तक और रवींद्रनाथ टैगोर के भतीजे के रूप

अिसत कुमार हल्दार

बंगाल स्कूल के अग्रदूतो तथा अवनींद्रनाथ के प्रारंभिक शिष्यों में से एक "असित कुमार हल्दार " जिनका जन्म (1890) में 'कोलकाता' में हुआ।मामा अवनिंद्रनाथ की छत्रछाया एवं परिवार का कला प्रेम आपकी कलात्मक अभिरुचि को जागृत करने में पूर्ण रूप से सफल हुआ।प्रारंभ में आपकी रुचि "ग्रामीण पट चित्रों" की ओर ज्यादा थी। 1906 में गवर्नमेंट कॉलेज आफ आर्ट्स कोलकाता में अवनिंद्रनाथ, के निर्देशन में चित्रकला तथा कोलकाता के प्रवासी लंदन के (वास्तु शिल्पी) "लियोनार्डो जेनिग्स" Leonard Jeannigs से शिल्प कला प्रशिक्षण लेने का अवसर प्रदान हुआ।हल्दार मूर्तिकार शिल्पकार और दार्शनिक भी बने।

"ई.वी. हैवल तथा आनंद कुमार स्वामी" जैसे 'कला मनीषीयो' के सानिध्य में तत्कालीन राष्ट्रीय कला आंदोलन की गतिविधियों को समझते हुए, आप कला सृजन करने लगे।

असित कुमार हल्दार (1890)

1911 में कला शिक्षा पूर्ण होने पर आप शांतिनिकेतन आ गए, जहां (1912 से 1923) तक प्राचार्य पद पर बने रहे।1910 ईस्वी में "लेडी हैरिंगम"(Lady Harrigham) के आमंत्रण पर "नंदलाल बोस" के साथ 'अजंता भीत्ति' चित्रण करने का मौका मिला।इसके पश्चात भारत सरकार के "पुरातत्व विभाग" हेतु समरेंद्रनाथ गुप्त' के साथ आप जोगामीरा (1914 ई) गुफा में तथा 'सुरेंद्रकार' के साथ 'बाघ गुफा' में प्रतिकृतियां तैयार करने पहुंचे।

1923 ईस्वी में आप कल के विशेष अध्ययन के लिए (इंग्लैंड, फ्रांस, में इटली,) में भी गए वापिस लौट के बाद 1925 ईस्वी में आपको- गवर्नमेंट स्कूल आफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट,(जयपुर) में प्रधान शिक्षक नियुक्त किया गया। बाद में, 1925

में आपको गवर्नमेंट स्कूल आफ आर्ट्स, (लखनऊ) में प्राचार्य के पद पर नियुक्ति मिली, जहां आप लगभग 1945 ई तक रहे ।1959 में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के कलाकार सदस्य निर्वाचित हुए। समय के साथ-साथ अपने (तेल रंग), (टेंपरा), (जल रंग) तथा अन्य विधि प्रयोग किया।'काष्ठ पर लाख की वार्निश'का कर (टेंपरा पद्धति) से चित्रण की एक विशिष्ट तकनीक भी विकसित की जिसे ***"Lecquner Technique"*** तकनीक भी कहा जाता है।

असित कुमार हल्दार -चित्रकार होने के साथ-साथ एक साहित्यकार ,समीक्षक, चिंतक मूर्तिकार, हस्तशिल्पी, शिक्षक तथा संयोजक भी थे।

आपके चित्रों में शुरू में शुरू से महात्मा गांधी तक अनेक ऐतिहासिक घटनाओं को आपने अपने चित्रण का आधार बनाया। "इंडिया एट ए ग्लांस" ग्रंथ में इस प्रकार के 30 चित्र प्रकाशित किया हैं।

प्रारंभिक चित्रों में;

-सीता,

-नृत्यागना,

-यशोदा मां ,उल्लेखनीय है।

- रविंद्रनाथ ने लिखा था- "तुम केवल चित्रकार ही नहीं , कभी भी हो।

यही कारण है कि तुम्हारी तूलिका से रसधारा बहती हैं।

उसकी बपौती में ,

-एकाकी साधु की छवि,

-नए पुराने,

-ताल व प्रकाश,

-असीम जीवन,

-संथाल लोक

-नृत्य

-कच्छ देवयानी

-रासलीला

-अशोक व पुत्र कुणाल,

-बसंत विहार आदि , में आत्मा की गहनता उत्तर आई है।

ए मिस्ट्री (1940)

ब्लैक प्रिंसेस

लेडी सीटेट अंडर दा थ्री

कॉलेज ऑफ़ आर्ट एंड क्राफ्ट (लखनऊ)

व्यावसायिक कला ,वास्तु शिल्प रेखांकन,(अभियांत्रिकी) धातु धुलाई, कास्ट शिल्प ,क्ले मॉडलिंग ,आदि कलाओं के परीक्षण हेतु, इस महाविद्यालय की स्थापना(1911 ईस्वी) में "स्कूल आफ डिजाइन" के नाम से की गई थी।

इसमें प्रथम प्राचार्य "नैथेनियल हार्ड" थे, उसके बाद 1925 ईस्वी में "असित कुमार हल्दार"यहां के प्राचार्य बने।

उनके प्रयासों से कला शिक्षा पद्धति में परिवर्तन किए गए। असित कुमार हल्दार" उनके समकालीन "एल.एम. सेन" बी. सी. सेन" तीनों ने अपने अध्यापन काल में अनेकों वर्षों तक (लखनऊ)कला परिषद तथा कलाकारों को प्रभावित किया।

वॉश तकनीक तथा अकादमी की शैली - दोनों यहां लोकप्रिय रही।

1956 में सुधीर रंजन खासगीर ने प्राचार्य पद पर रहे और पाठ्यक्रम की नवीन रूपरेखा तैयार की ।इसमें उन्होंने "सेरेमिक", होम क्राफ्ट तथा (प्रिंट मेकिंग) के तीन विषय और सम्मिलित किया। इसी समय यह कला विद्यालय स्कूल स्तर से कॉलेज स्तर पर पहुंच गया।

1968 में चित्रकार "आर. एस. बिष्ट" प्राचार्य नियुक्त हुए और आपके कार्य इस महाविद्यालय के लिए अंतिम महत्वपूर्ण स्थान रहा। इस ऐतिहासिक गवर्नमेंट कॉलेज आफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट 1973 ईस्वी में लखनऊ विश्वविद्यालय में विलीन कर दिया तथा प्रयोगात्मक शिक्षा के अतिरिक्त कला इतिहास तथा आलोचना जैसे विश्व में भी डिग्री' स्तर पर सम्मिलित किया गया। लखनऊ का यह महाविद्यालय देश की कला शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया और यहां के कलाकार जो की जे.एम.अहिवासी ,ए .के. हल्दार, एल.एम.सेन,.बी. सेन सुधीर खस्तगीर ने लखनऊ कला प्रदेशों को बहुत प्रभावित किया। अब लखनऊ विश्वविद्यालय में "ललित कला संकाय" की स्थापना हो चुकी हैं।

कॉलेज ऑफ़ आर्ट एंड क्राफ्ट (लखनऊ) (1911)

बद्रीनाथ आर्य

"वॉश तकनीक" भले ही "जापान" से होते हुए (कोलकाता) पहुंची और उसके बाद देश के विभिन्न हिस्सों में अनेक कलाकारों ने इसे अपनाया।

लेकिन उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध चित्रकार "बद्रीनाथ आर्य" ने 1936 से लेकर 2013 तक अपने चित्रों में इस शैली का प्रयोग करके अद्भुत प्रयोग किया और अपने किसी प्रयोग के कारण और दुनिया भर में जाने जा रहे हैं,। महानतम और चित्रकार बद्रीनाथ आर्य का निधन 17 सितंबर 2013 को हो गया।

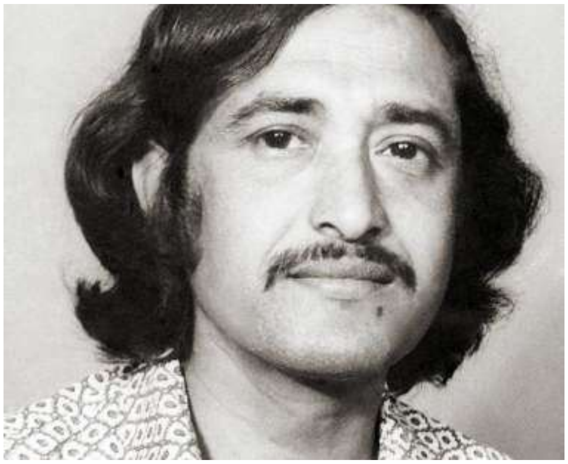

बद्रीनाथ आर्य (1936)

जीवन परिचय

बद्रीनाथ आर्य का जन्म 1936 में अविभाजित ,भारत के शहर (पेशावर) में हुआ था 1951 में उन्होंने कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ में कला शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रवेश लिया और अध्ययन के उपरांत वहीं शिक्षक नियुक्त हो गए। बद्रीनाथ आर्य 1994 से 1996 तक" कला एवं शिल्प महाविद्यालय" (लखनऊ) के प्राचार्य भी रहे ,और सेवा मुक्त होकर(फैजाबाद) रोड स्थित अपने आवास, रविंद्र पल्ली लखनऊ में अंतिम समय तक वहीं रचना करते रहे। उन्होंने (ललित कला अकादमी) फेलोशिप" कला रत्न और राष्ट्रीय पुरस्कार "सहित देश-विदेश के अनेक कलश संस्थाओं और कला अकादमी से पुरस्कारों सम्मान प्राप्त हुए ।राष्ट्रीय स्तर पर जब कभी भी समकालीन कला के स्थान स्तंभ कलाकारी की चर्चा होगी तो अनुभव के शहर लखनऊ में समय-समय पर विकसित हुई विभिन्न शैलियों केप्रावधानों की चर्चा होगी उनमें से श्री "बद्रीनाथ आर्य" जी की "कला" को विशेष रूप से देखा जाता है ।आप के कार्य की तुलना किसी भी कलाकार से नहीं की जा सकती।बद्रीनाथ आर्य जी पेशावर पाकिस्तान में जन्मे अनुसूचित्य के व्यावसायिक परिवार में हुए जहां ना तो कला का वातावरण था ना ही कोई परिवार का प्रोत्साहन।परिवार के सदस्य भी यही चाहते थे, कि वह

आर्य जी कला के अतिरिक्त कुछ और करें और कोई ऐसा व्यवसाय करें जो "आजीवन आय "का कमाने का साधन हो ।लेकिन इसके विपरीत होने के कारण है ,न तो आप तो आपका मन किसी निजी व्यवसाय में था ,और ना ही खास गंभीर रूप से पढ़ाई लिखाई में।आप तो सिर्फ प्रारंभ से कल्पना आकृतियां, दीवार और भूमि पर चित्र करने प्रकृति के रूपकारों को गंभीरता से देखने और अनुभव करने से ऋण आत्मक अभिव्यक्ति प्रवृत्ति बनाने लगी।

1947 के विभाजन के पश्चात बद्री नाथ को भारत में (लखनऊ) आना पड़ा ।

बद्रीनाथ जी के पिता के दोस्त जो लखनऊ में रहते थे ,यहां की सलाह दी, (गुरदासपुर) में आते ही गोली बारिश शुरू हो गई। दंगा भड़क गया ऐसी हालत में आप अपने "परिवार से बिछड़ गए" किंतु" ईश्वर की कृपा" से आपको गाड़ी में बिछड़े हुए ,पिताजी दिखाई दिए और दंगा थमते ही आप लोग (लखनऊ)के लिए रवाना हो गए ।इस घटना का उल्लेख- इस लिए जरूरी है, क्योंकि वह अवस्थाओं से आपको किन-किन, कौन-कौन सी छवि और परिस्थितियों का सामना करना पड़ा ,जो समय के साथ-साथ आपके मानस पटल पर बन बन गई ।जिसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। लखनऊ बद्रीनाथ जी का परिवार "हिवेट रोड" पर रहने लगे जहां, पर प्रसिद्ध लेखक "यशपाल "रहते थे ।एक यह संयोग ही था, कि प्रोफेसर "रणवीर सिंह बिष्ट" भी (बद्रीनाथ) के ठीक सामने रहते थे आपको अपनी कल्पनाओं को रूप देने के लिए वातावरण में अवसर खोजना पड़ा "फोटोग्राफी" में रुचि होने के कारण "हजरतगंज स्थित सेट" फोटोग्राफर के स्टूडियो में रोजाना फोटो देखने जाने लगे ।

आपकी रुचि और उसे समर्पण को देखकर कला गुरु (ललित मोहन सेन) ने जो की" प्रधानाचार्य" थे कला शिल्प के महाविद्यालय जो इस स्टूडियो में आया करते थे। बहुत प्रभावित हुए और सर बद्रीनाथ को -आर्ट्स कॉलेज बुलाया ।जहां आर्य जी की कला अभिरुचि की छोटी सी परीक्षा और परीक्षा ली और प्रवेश की अनुमति दे दी ।सन 1951 में बद्रीनाथ जी ने कला एवं शिल्प महाविद्यालय (लखनऊ)में कला शिक्षा के लिए प्रवेश लिया ।इसके बाद आर्य जी चित्रकला तथा मूर्ति कला के दोनों विषय के ज्ञानी बन गए ।क्योंकि इन दिनों इन दोनों विधाओं में उनके हर तरह की पकड़ रखने वाले कला गुरु थे, श्री "ललित मोहन सेन" प्रधानाचार्य

"वीरेश्वर सेन

हरी लाल मेढ

श्री रामेश्वर वैश्य

बद्रीनाथ आर्य का व्यक्तित्व चित्रकला में वॉशतकनीक में कार्य करने वाले समकालीन कलाकारों में से श्री बद्रीनाथ आर्य जी का नाम सर्वप्रथम आता है। जैसा- कि हम सब जानते हैं कि आपको(वॉश तकनीकी)में महारत हासिल थी, जल रंग पर आप का जो नियंत्रण था, अन्यत्र देखने को नहीं मिलता।आपके (वॉश तकनीक) में जो विषय वस्तु का प्रयोग किया है उसमें यही ज्ञात होता है कि वह शक्ति आपकी अंतरात्मा में बस चुकी थी।लखनऊ की वॉश पद्धति को बुलंदियों तक पहुंचाने का कार्य अपने ही किया है यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा।सिर्फ एक अच्छा कलाकार कह देना, यह मान लेना या उनके व्यक्तित्व का अधूरा बताना होगा। वह अच्छे कलाकार के साथ-साथ अच्छे व्यक्तित्व वाले महान व्यक्ति

भी थे ।उनमें अहंकार नहीं था ,न हीं दिखवा।उनका कहना था,- कि मेरा उद्देश्य है ***"कि मैं नियंत्रण काम करूं, या काम करता रहूं। यदि एक दिन काम रुक गया तो, "समझो जीवन का अंत" हो गया।"***

मुख्य चित्र-

सांवरी 1962 वर्ष (इलाहाबाद संग्रहालय)

गंगा "1963

खेत की ओर 1960

पेड़ की छांव में 1965

उत्पीड़न 1973

घुटन 1965

एक शहर एक चेहरा 1975 उदास शहर

1980 प्रलय

सम्मान

अखिल भारतीय मैसूर दशहरा प्रदर्शनी के दौरान(रजत पदक)- 1959

उत्तर प्रदेश राज्यपाल पुरस्कार- 1965

अकैडमी आफ फाइन आर्ट्स (कोलकाता)-1963

अखिल भारतीय प्रदर्शनी ललित कला अकादमी (लखनऊ)- 1977

ऑल इंडियन फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट सोसायटी(न्यू दिल्ली)- 1977 से 1980

कला रत्न सम्मान -1990

भित्ति चित्रण

1967 -में महाभारत

1974 -में उम्र खयाम

1975- में गीत गोविंद

(1977- 1980)-में एक कंपनी में उत्तर प्रदेश के पवेलियन के लिए भीटी चित्रण किया।

अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनीयां

15 अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनीया- जापान (1987)

द्वितीय अंतरराष्ट्रीय एशियाई यूरोपीय कला प्रदर्शनी अंकारा (तुर्की)-1988

एकल प्रदर्शनी

कश्मीर में -1953

लखनऊ में -1975

नई दिल्ली में -1980 आदि लगे।

संग्रह

राज्य ललित कला अकादमी (लखनऊ),

राज्य भवन(हरियाणा),

नेशनल गैलरी आफ एडमिनिस्ट्रेशन मंसूरी।

सांवरी (1960)

फिलॉस्फर

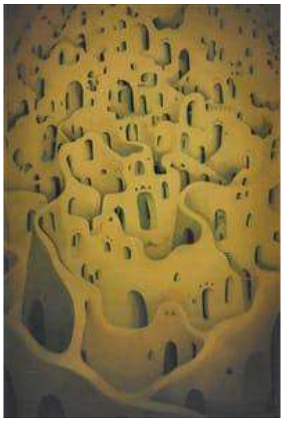

घरौंदे(1980)

पैराडाइज

तृतीय अध्याय

- वॉश तकनीक समकालीन कलाकार ***पंकज सरोज***

वॉश तकनीक समकालीन कलाकार पंकज सरोज

संसार ईश्वर का एक अद्भुत आदित्य निर्माण है जिसमें प्रकृति ने अलग-अलग नए-नए ढंग से अपनी मोह के कृति द्वारा इस संसार को हमेशा से ही सजा रखा है सुंदरता में चार गुना सुंदरता बढ़ाने का कार्य सुंदर कृति ने किया है वह मानव है जो अलग-अलग सोच रखते हैं तथा अपने कार्य को अपने ढंग से करते हैं कुछ लोगों को भगवान ने अनंत असीम कृपा से बनाया है तथा उन लोगों ने समय के साथ-साथ अपने व्यक्तितत्व को निकालने का पूर्ण विकास किया है जिनमें परमात्मा ने उनके साथ भी दिया है।

स्वतंत्र आत्मा वाले कला प्रेमी " पंकज सरोज "की भी उन लोगों में से एक है कला एक ऐसा विषय है जिसमें किसी पहचान की जरूरत नहीं यह अपनी पहचान अपने आप में समेटे हुए हैं कला को हम किसी बंधन में कैद नहीं कर सकते पुरानी होने से कला का महत्व कम नहीं हो जाता बल्कि दुगुना उसका महत्व बढ़ता ही जाता है उसे से हमें अपने प्राचीन कला एवं संस्कृति का पता चलता है कला का कोई वास्तविक स्वरूप नहीं होता वह अपना नया रूप ग्रहण करती है

इसी प्राचीन या पुरानी कला को गहने की तरह बचकर संजोए हुए यह संभाल कर रखे हुए हमारे वॉश तकनीक के समकालीन कलाकार "पंकज सरोज "है

जो बंगाल स्कूल विशेष रूप से 1905 से चल रही वॉश तकनीक को अपने गुरुओं के बाद आगे ले जाते हुए हैं।

जो बोलकर लिखकर बयां नहीं किया जा सकता है वह उसे अपने चित्रों की संजीविता के द्वारा पेश करते हैं ।

स्वतंत्र आत्मा के साथ-साथ स्वतंत्र स्वतंत्रता से" प्राकृतिक दृश्य" का चित्रण कर रहे प्राकृतिक छटा को वॉश तकनीक के माध्यम से चित्रित कर रहे पंकज सरोज जी के बारे में आइए जानते हैं

पंकज सरोज का जन्म 24 सितंबर 1979 उत्तर प्रदेश के मथुरा गांव में हुआ था। आपके पिता का नाम ***"श्री राजेंद्र कुमार सरोज"*** जो की उच्च व्यक्तित्व के सरकारी नौकरी करने वाले परिवार के मुख्य हैं तथा माता ***"श्रीमती शीला सरोज"*** एक विनम्र व्यक्तित्व वाली ग्रहणी है पंकज सरोज के दो भाई हैं जिनमें बड़ा भाई *“अरविंद कुमार सरोज”* पेशे से डॉक्टर हैं तथा छोटे भाई *"अतुल सरोज"* जो कि पेशे से इंजीनियर है।

माता- पिता के साथ पंकज सरोज

आज के समय में कला शब्द के विभिन्न वर्गों के अलग-अलग अर्थों में प्रचलित है जनसाधारण में कला को अत्यंत व्यापक अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है ।

लेकिन(चित्रकला) जन सामान्य ज्ञान में सही अर्थ में प्रयुक्त होता है कल अभिव्यक्ति है ***परंतु क्रोचे" कहते हैं यह अभिव्यक्ति मनुष्य के अंदर में होती है बाहर नहीं ।*** जो भाव अनुभूति से उत्पन्न होते हैं उन्हें की अभिव्यक्ति होती है तथा बाहरी जगत को देखकर तथा संस्कारो से भाव उत्पन्न होते हैं यह आत्मा अनुभूति की अभिव्यक्ति ही कला है ।

एक कलाकार की चाहत उसके मन,कल्पना की अभिव्यक्ति है

इसी तरह पंकज सरोज भी अपने आसपास के प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित होकर उठी भावनाओं को कई तरह से व्यक्त करते हैं जिनमें वॉश तकनीक, तेल रंग तथा जल रंग, जापानी इंक , एक्रेलिक कलर तथा पेंसिल स्केच शामिल है

शिक्षा

पंकज सरोज जी का बचपन तो गांव में ही बीता है लेकिन कुछ समय पश्चात वह अपने परिवार के साथ अपने दादाजी के पास रहने चले गए जहां उनकी शिक्षा भी हुई कला के क्षेत्र में आपके घर में कला का शुरू से ऐसा कोई माहौल नहीं था।

कि जिससे वह कला की शिक्षा प्राप्त कर सके उसे समय तो गांव में इस प्रकार की कला शिक्षा के बारे में कोई खास जानता भी नहीं था, क्योंकि उसे समय या तो सरकारी नौकरी किया करते थे या फिर अन्य दूसरा कोई काम जो कि गांव में खेती वगैरा यह दुकान है या अन्य कोई कार्य लेकिन इस प्रकार की कला शिक्षा के बारे में दूर-दूर तक किसी ने खास सुना नहीं था

जब सरोज जी स्कूल में पढ़ते थे तो कला का थोड़ा बहुत कार्य अपने आप किया करते लगभग 10 वर्ष की उम्र तक उनके द्वारा कहीं ***कुछ लाइन _ जब बच्चा होता है तो वह बोलने से पहले कुछ बनता है जो कुछ चित्र होते हैं ड्राइंग उसको उनका कुछ मतलब पता भी नहीं होता लेकिन वह फिर भी करता है चाहे फिर वह दीवारें, मिट्टी पर हो या कागज या अन्य कोई भी साधन हो ।***

लेकिन उसे समय से वह अपने भाव व्यक्त करने लगता है क्योंकि व्यक्ति के मन में अभिव्यक्त करने की जो अनूठी कला है वह जन्म से ही व्यापक होती है।

जिसको वह अपनी उम्र में अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत करने लगता है कला का आरंभ तो वहीं से शुरू हो जाता है पता नहीं वह लाइन क्या होती है , लेकिन दिमाग में चल रही भावना और विचारों को अभिव्यक्त करने लगता है जो कि कला का ही स्वरूप है ।

पंकज जी जब स्कूल गए तो उसे समय से वह कुछ ड्राइंग क्या करते और तब उनके अध्यापक उनका प्रोत्साहन बढ़ाने के लिए उनकी प्रशंसा किया करते थे और उनको बढ़ावा दिया करते थे कि तुम बहुत अच्छा कर रहे हो बहुत बढ़िया और सुंदर बना आपके दोस्त का घर परिवार भी उससे मैं आपको आगे बढ़ाने की सहानुभूति दिया करते थे लेकिन उन लेकिन उसे समय तब आपको पता नहीं था कि बड़े होकर ऐसा कुछ करें करेंगे

पंकज पंकज सरोज की स्कूली शिक्षा सहारनपुर नामक गांव से ही पूर्ण हुई है आपने मैट्रिक तक की शिक्षा आपने यही से प्राप्त की तथा 12वीं की शिक्षा अपने सोलन जाकर जो कि हिमाचल प्रदेश में स्थित है वहां से प्राप्त की तथा आगे की शिक्षा प्राप्त करने के लिए आप लखनऊ चले गए जहां जाकर आपने अपनी सनथ को उत्तर की डिग्री प्राप्त की बढ़ते समय के साथ अपने कार्य क्षेत्र में मन बनाए रखा तथा मां की डिग्री भी लखनऊ कला विद्यालय से ही प्राप्त की

बचपन की यह घटना

जिसे उनकी जिंदगी में मुख्य रूप से कला के बारे में जानकारी का मौका मिला जिससे उनके जीवन रूपी रेल को नई पटरी पर उतरा गया तथा एक नया मार्ग खुला।

जब सरोज जी आठवीं कक्षा में थे तब उनके एक दोस्त ने उन्हें पूछने पर बताया कि उनके घर में एक युवती art classes कला कक्षाएं लेती है तब उन्होंने कहा की ठीक है मैं उनसे जाकर मिलता हूं तथा कला के बारे में जानकारी प्राप्त करूंगा तब उनसे मिलने के लिए वह वहां पहुंचे। वहां आपको आपकी टीचर ने कहा कि आप इवनिंग क्लास से यानी कि शाम की कक्षाएं लगाया करें।

क्योंकि उसे समय स्कूल की वजह से सुबह की कक्षाएं लेना अत्यंत मुश्किल था ,तो उन्होंने सरोज जी को तेल चित्रण ऑयल पेंट्स के बारे में बताया कि कैसे शुरू किया जाते हैं तथा तकनीक क्या है कैसे हैंडल किया जाता है कैसे संभालते हैं कितना तेल प्रयोग करते हैं रंगों के माध्यम से क्या परिणाम आते हैं मतलब हर चीज तेल तकनीक के विषय में ज्ञान दिया

इसके साथ-साथ उन्होंने बढ़ती लग्न व उत्तेजना को देखते हुए जल रंग के विषय में समझाया उनको तेल रंग व जल रंग दोनों माध्यमों के चित्रण की जानकारी दी तथा बेसिक आधारभूत चीज उन सब की जानकारी दी उन सभी को सिखाते समय पंकज रोज जी का कला की ओर ध्यान आकर्षण होने लगा तथा रुचि भी बढ़ने लगी जो कभी बचपन में चित्र बनाया करते समय हुआ करती थी पंकज सरोज की बचपन की अध्यापिका जिन्होंने कला का आधार सिखाया उनका नाम ***अमित शर्मा***था

लेकिन उसे समय वह पूर्णतया art classes न होकर एक तरह से घर में खोली गई hobby classes का रूप था जो कि अक्सर लोग घरों में खोल लिया करते थे उन कक्षाओं में वह चित्रकला के साथ-साथ वहां सीखने आई लड़कियों को क्राफ्ट का तथा सिलाई का कार्य भी सिखाया करती थी जो कि उसे समय बहुत अच्छा चल रहा था

पंकज सरोज की कला में दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही रुचि को देखते हुए अमित शर्मा ने उन्हें आर्ट कॉलेज कला महाविद्यालय के बारे में बताया जो कि उसे समय लखनऊ में था पूछने पर उन्होंने पंकज जी को प्रॉपर आर्ट्स कॉलेज के बारे में बताना शुरू किया कि आर्ट कॉलेज क्या होता है कैसे डिग्री होती है तथा कैसे दाखिला लिया जाता है जो कि उसे समय दसवीं के बाद की हो जाते थे

लेकिन हर व्यक्ति के बढ़ते कदम एक बार जरूर रुकते हैं इसी तरह पंकज जी ने दसवीं के बाद वहां जाने के विषय में अपने घर पर परिवार जनों से इस विषय में बात की तो उसे समय छोटी उम्र तथा अन्य कारण की वजह से उन्होंने वहां जाने से मना कर दिया जिसकी वजह से पंकज जी मन मार कर रह गए लेकिन मन में लगी लगन की चिंगारी कहां बुझी थी पंकज जी ने 12वीं कक्षा के बाद अपने परिवारजन को थोड़ा जोर देकर कहा और वहां जाने के लिए पूछा जिसको वह रोक न पाए तथा मंजूरी मिलते ही वह लखनऊ चले गए

पंकज जी ने 12वीं की पढ़ाई आर्ट से ही सोलन से ही की क्योंकि पंकज जी बचपन से ही कलाकार बनना चाह रहे थे इसी वजह से अन्य किसी विषय में कोई खास रुचि नहीं होती थी जबकि उससे पहले की पढ़ाई आपने विज्ञान क्षेत्र (साइंस साइड) से की फिर आपने लखनऊ में एंट्रेंस दिया जिससे आप आपका पहली बारी में ही क्लियर हो गया और उसके बाद 1995 लखनऊ में आर्ट्स कॉलेज में दाखिला ले लिया जिसमें उन्होंने लगभग 5 वर्ष का समय लगा तथा मास्टर की डिग्री गवर्नमेंट कॉलेज आफ फाइन आर्ट्स लखनऊ से ही पूर्ण की

कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स एंड क्राफ्ट लखनऊ (1911)

अपने शिक्षा पूरी करने के बाद सरोज जी कुछ समय तो वही रहे क्योंकि 7 सालों का सफर तय किया था जिसमें उनका मन नहीं लग गया था लेकिन आपने समय को देखते हुए और समझते हुए वह वहां से *सोलन* की ओर चले गए क्योंकि वहां से उन्हें एक नौकरी मिल गई थी

सोलन में उन्हें बोर्डिंग स्कूल में नौकरी मिली सरोज जी को वैसे खासकर पहाड़ों से ही लगाव था क्योंकि जब कभी भी उनके पास समय होता या खाली समय में वह पहाड़ों की ओर चला जाया करते थे सोलन में नौकरी करने का मुख्य मकसद पहाड़ों के पास ही रहना था लेकिन एक समस्या यह भी थी कि उसे समय नौकरी 24 घंटे की होती थी जिसमें कार्य करने का समय कुछ खास मिल नहीं पा रहा था कार्य करने में समस्या आ रही थी वह वहां जो भी कार्य किया करते थे वह सब स्कूल की प्रॉपर्टी के अंदर आता था जो कि उसे समय परेशानी बने लगा था और उन्होंने इस वजह से अपने पद से इस्तीफा दे दिया

लेकिन अच्छी बात यह है थी कि उन्होंने वहीं पर कसौली में ही आप अपना स्टूडियो लिया हुआ था जिसमें एक व्यक्ति पूरे आराम से अपना कार्य कर सकता था अब इसका फायदा यह हुआ कि जो पीछे एक से डेढ़ साल तक के समय में उनसे कार्य नहीं हो पा रहा था अब उन्होंने उसे अंदर चल रही लगन व बरस को निकलना शुरू किया और वहीं रहकर खूब सारा औकात देखिए उनका कहना है कि जिंदगी में सबसे ज्यादा कार्य उन्होंने वहां रहकर किया क्योंकि नौकरी करते समय खूब सारी से बचत हो गई थी

जिससे उनका काम करने में अब किसी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं थी उसे समय सरोज जी ने सबसे ज्यादा कार्य किया तथा वह ऑयल कलर में ही था क्योंकि कहीं ना कहीं बचपन में सीखी गई चीज और बातें आगे काम आ रही थी उन्होंने कार्य उनके कार्य में स्पष्टता रूप से देखा भी जाता है

सोलन से चंडीगढ़ का सफर तय करने से पहले पंकज जी ने पहाड़ों पर खूब सारा कार्य किया उनका कहना है कि उसे वक्त से मेरे कार्य में अंत्यंत स्पष्ट आने लगी क्योंकि काफी समय से अच्छे से कार्य न कर पाने की वजह से मन से खुशी नहीं था लेकिन अवसर मिलने पर पूरी लगन से कार्य किया जब कसौली में पंकज जी कार्य कर रहे थे

पंकज सरोज की पत्नी गुरप्रीत धीमान जो की गवर्नमेंट कॉलेज आफ आर्ट्स चंडीगढ़ में आर्ट्स अध्यापक हैं तथा उनकी एक अंत्यंत सुंदर सी एक प्यारी सी लड़की आलिया सरोज है

पंकज सरोज की पत्नी गुरप्रीत धीमान चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स में असिस्टेंट प्रोफेसर है जो कि वहां पर आर्ट (इतिहास) विषय को पड़ती हैं अध्यापक होने के साथ-साथ वह भी एक सफल कलाकार है जो कि स्वयं भी बहुत सुंदर चित्रकारी करती हैं तथा उनका अधिकतर किताबें पढ़ना और कैलीग्राफी का अत्यधिक शौक रहा है अध्यापन के कार्य

में गुरप्रीत धीमान सहज एवं सफल व्यक्तित्व वाली महिला है जिसे कक्षा के विद्यार्थी पढ़ने में अत्यधिक रुचि रखते हैं क्योंकि उनका विनम्र स्वभाव है पंकज सरोज की एक छोटी सी लड़की जो की आलिया सरोज है वह भी बचपन से ड्राइंग और पेंटिंग कर रही है सरोज जी कभी अपनी बेटी को किसी तरह की एक पेंटिंग या किसी स्टाइल को फॉलो करने के लिए नहीं बोलते वह उन पर किसी तरह का दबाव नहीं डालते क्योंकि उनका मानना है कि एक स्वतंत्र कलाकार अपनी भावनाओं को अत्यधिक अच्छे ढंग से प्रस्तुत करता है इसलिए वह उनको अपने मनमर्जी से पेंटिंग करने की आजादी देते है

पंकज सरोज अपनी पत्नी गुरप्रीत धीमान और बेटी आलिया सरोज के साथ

कला हमे जीना सिखाती है कला को एक कलाकार ही समझ सकता है वह अपनी अभिव्यक्ति को कला के द्वारा ही सभी के सम्मुख रखता है एक कलाकार कल्पनाशील होना चाहिए ,कल्पना तो हर इंसान कर सकता है परंतु एक खास बात कलाकार में होती हैं क्योंकि कला सृजन करके बाहर तो उसे एक कलाकार ही निकल सकता है तथा

इसी के साथ वह चेतनशील भी होना चाहिए उसे यह भी पता होना चाहिए कि वह क्या सृजन कर रहा है यह सभी गुण पंकज सरोज में मिलते हैं वह तीव्र बुद्धि वाले कलाकार तथा सफल व्यक्ति हैं

पंकज सरोज एक ऐसे व्यक्ति हैं जो हर पल नया सीखने की अभिलाषा या रूचि रखते हैं उन्हें कला से जुड़ा हर कार्य करना पसंद है खासकर जब वह प्राकृतिक वातावरण से जुड़े हो उनके व्यक्तित्व से शांति स्पष्ट रूप से झलकती है अब परिवार में कला का माहौल बन गया है क्योंकि उनकी पत्नी गुरप्रीत धीमान भी एक कला शिक्षक है जो कि उनके साथ-साथ चंडीगढ़ आर्ट्स कॉलेज में पढ़ती है वह भी मृदुभाषा एवं व्यवहार में कुशल व्यक्तित्व वाली महिला है क्योंकि जब पंकज जी अपनी पेंटिंग बनाते हैं तो वह उनके साथ देती है तथा कार्य भी करती हैं लेकिन बीच-बीच में परेशान नहीं करती

सोलन से चंडीगढ़ का सफर तय करने से पहले पंकज जी ने पहाड़ों पर खूब सारा कार्य किया उनका कहना है कि उसे वक्त से मेरे कार्य में अंत्यंत स्पष्टता आने लगी क्योंकि काफी समय से अच्छे से कार्य न कर पाने की वजह से मन में खुशी मन से खुशी नहीं था लेकिन अवसर मिलने पर पूरी लगन से कार्य किया जब कसौली में पंकज जी कार्य कर रहे थे

तो उनका सामान खत्म हो गया जिसकी वजह से वह पुरानी दुकान जो कि चंडीगढ़ आर्ट्स कॉलेज में मशहूर थी वहां पहुंचे तथा जानकारी से पता चला कि वहां टीचर के लिए वैकेंसी निकली है तो आप भर सकते हैं और वह उसे दिन का एक अंतिम दिन था भगवान जब साथ दे तो हर संभव कार्य असंभव कार्य संभव हो जाता है तथा उनकी वैकेंसी अप्लाई हो गई जो की 2004 की बात है तब से अब तक पंकज जी अपनी सेवाएं कॉलेज आफ आर्ट्स चंडीगढ़ में दे रहे है

शैक्षिक योग्यता:

2002 - कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, लखनऊ विश्वविद्यालय से मास्टर ऑफ फाइन आर्ट्स

2000 - कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, लखनऊ विश्वविद्यालय से ललित कला में स्नातक

2002 - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण की

पेशेवर अनुभव:

2004 - आज तक - गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ़ आर्ट, सेक्टर 10-सी, चंडीगढ़ में कार्यरत

सहायक प्रोफेसर, चित्रकला विभाग

2003 - 2004 - सोलन (हिमाचल प्रदेश) में पाइनग्रोव स्कूल में ललित कला के शिक्षक के रूप में कार्य किया।

चतुर्थ अध्याय

- पंकज सरोज की कला यात्रा
- माध्यम (वॉश तकनीक)
- प्रदर्शनिया व पुरस्कार
- कलाकृतियों की जानकारी

पंकज जी की कला यात्रा तो उनके बचपन से शुरू हो गई थी क्योंकि जब उन्होंने यह जानने की कोशिश की की कला शिक्षा कैसे प्राप्त की जाती हैं।

उनका दसवीं कक्षा से किया गया प्रबल संघर्ष कला शिक्षा की ओर खिंचे लेते चला गया पंकज जी अपनी अंदर चल रही भावनाओं को वैसे तो एक छोटे बच्चों की उम्र में ही व्यक्त करने लगे थे लेकिन निखार उन्हें (कला संकाय) के वह मेहनत वह सीखने की अत्यंत रुचि से ही मिला। घर पर माहौल के बिना इतना आगे बढ़ाना एक नई राह पर चलने के बराबर ही था जहां अभी तक परिवार जन से कोई नहीं गया था लेकिन पंकज जी उसे राह पर चले तथा आगे चलकर देखा तो काफी संघर्षों के बाद मंजिल बड़ी ही खूबसूरत खड़ी थी

पंकज जी ने अपनी कला यात्रा कॉलेज से शुरू की जोकि दिलचस्प थी क्योंकि उन्होंने अपनी मंजिल के रास्ते को स्वयं चुना था तथा रास्ते को तय किया लखनऊ आर्ट्स कॉलेज में दाखिला लेने के पश्चात पंकज जी ने विभिन्न तरह की कला से अपनी कला यात्रा शुरू की जैसे ड्राइंग पेंटिंग वॉश तकनीक जल रंग तथा जापानी इंक ऑयल पेंट्स आदि के सहयोग से वह आगे बढ़ते रहे पंकज जी की कला ने इन्हें काफी उपलब्धियां मिली है जिनमें कहीं पुरस्कार प्रदर्शनियां भी हैं

वह अपने कार्यों को ही कला समझते हैं जब भी किसी कार्यशाला में चित्र बनाते देखा जाए तो उन्हें देखकर समझ यह ऐसा एहसास होता है कि वह पूरे हृदय से अपनी कलाकृति को पूरा करते हैं साथ ही अन्य कलाकारों की भांति अलग से अलग प्रयोग भी किया करते हैं उन्होंने प्रत्येक कार्य को बहुत सफाई में सुंदर ढंग से बनाया है

पंकज जी बड़े-बड़े शहरों में अपनी कलाकृतियों की प्रदर्शनी भी लगाई है पंकज जी चित्रांकन के एक अपारशिक्षित कलाकार है तथा एक निश्चित प्रदर्शन लैंडस्केप के बेहतरीन अलंकारिक चित्रकार है

विविध मिजाज के प्रदर्शन लैंडस्केप में उन्होंने अपनी विश्व डिशूनशीलता और निपुणता के सभी कौशलताओं में रेखाओं और रंगों के चित्रकार में रंग डाला है

उनके चित्रकार हमें आंतरिक तथा बाहरी वास्तविकता के साथ प्रकृति दृश्य के अंतिम समीप ले जाती हैं

पंकज जी अनेकों प्रदर्शन लैंडस्केपों के निर्माण कर चुके हैं जिनके माध्यम अलग-अलग होते हैं हर मध्य में कार्य करने का प्रयास भी किया है उनके अनेकों कार्य शालाएं प्रदर्शनियां कला शिवरों में भी उनकी भागीदारी रही है पंकज जी ने अनेकों चित्रकला प्रतियोगिताओं में निर्णायक की भूमिका भी निभाई है और वर्तमान में भी वह क्षेत्र में सक्रिय है

कला जगत में रहते हुए पंकज जी ने इतना इतने काम किया और आगे भी कर रहे हैं और बाकी कलाकारों के लिए निश्चय ही मार्गदर्शन बनेंगे।

छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं:

2006 - मानव संसाधन विभाग, पर्यटन मंत्रालय द्वारा जूनियर फ़ेलोशिप प्राप्त हुई

संस्कृति, भारत सरकार

2000 - मानव संसाधन विभाग, पर्यटन मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त हुई

और संस्कृति, भारत सरकार

2000 - कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा मेरिट छात्रवृत्ति प्रदान की गई

1999 - कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा मेरिट छात्रवृत्ति प्रदान की गई

1998 - कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा मेरिट छात्रवृत्ति प्रदान की गई

1997 - कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा मेरिट छात्रवृत्ति प्रदान की गई

पुरस्कार:

2015 - अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, शिमला (हि.प्र.)

2012 - पंजाब ललित कला अकादमी द्वारा प्रशंसा प्रमाण पत्र

2000 - द्वारा आयोजित 14वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी में सर्वश्रेष्ठ जलरंग लैंडस्केप का पुरस्कार दिया गया

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर

2000 - विश्व आतंकवाद दिवस पर लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा सर्वश्रेष्ठ चित्रकला पुरस्कार दिया गया

1998 - लोक कला संग्रहालय, लखनऊ द्वारा आयोजित टेराकोटा शिविर में सर्वश्रेष्ठ टेराकोटा का

एकल प्रदर्शनियाँ:

2020 - आर्ट कॉटरी द्वारा विविड विस्टा वर्चुअल सोलो आर्ट प्रदर्शनी

2019 - जहांगीर आर्ट गैलरी, मुंबई

2016 - रवीन्द्र भवन, राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली

2016 - पंजाब ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन

2015 - सरकार द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन। संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़

2002 - त्रिवेणी आर्ट गैलरी, नई दिल्ली

2001 - राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ (उसी द्वारा प्रदत्त)

2001 - कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ

2000 - राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ

समूह प्रदर्शनियाँ

2023 - जेएलपीएल, मोहाली पंजाब में ग्रुप शो।

2023 - कदंब आर्ट चंडीगढ़ द्वारा ग्रुप शो का आयोजन

2022 - इंफोसिस बैंगलुरु और भारतीय विद्या भवन चंडीगढ़ द्वारा ग्रुप शो का आयोजन।

2022 - सरकार द्वारा फोटोग्राफी का फैकल्टी ग्रुप शो आयोजित किया गया। कॉलेज ऑफ आर्ट, चंडीगढ़।

2021 - सरकार द्वारा फैकल्टी ग्रुप शो का आयोजन। कॉलेज ऑफ आर्ट, चंडीगढ़।

2020 - "निरंतर समूह" द्वारा अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन कला प्रदर्शनी

2021 - चंडीगढ़ ललित कला अकादमी के सहयोग से तीसरी वार्षिक कला प्रदर्शनी नियो आर्ट

2020 - "स्काई ब्लू" शैडोज़ ऑफ़ नागासाकी ऑनलाइन राष्ट्र प्रदर्शनी कला

2020 - "विभिन्न रंग" ऑनलाइन समूह शो

2019 - डॉ. शकुंतला मिश्रा पुनर्वास विश्वविद्यालय लखनऊ द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी का आयोजन

2019 - चंडीगढ़ ललित कला अकादमी द्वारा भारत भवन भोपाल, गुजरात में ग्रुप शो का आयोजन किया गया

2018 - एनजेडसीसी, पटियाला (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा कला ग्राम में ग्रुप शो का आयोजन किया गया। चंडीगढ़

2018 - सरकार में "विभिन्न रंग" समूह शो। संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़

2018 - चंडीगढ़ ललित कला अकादमी द्वारा ललित कला अकादमी क्षेत्रीय कला केंद्र में समूह शो का आयोजन किया गया

लखनऊ

2018 - पंजाब कला भवन, चंडीगढ़ में एक ग्रुप शो 'अनटाइटल्ड'

2018 - एनजेडसीसी द्वारा कला ग्राम, चंडीगढ़ में ग्रुप शो का आयोजन किया गया

2017 - सरकार में "विभिन्न रंग" समूह शो। संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़

2017 - आर्टस्केप्स, चंडीगढ़ द्वारा ग्रुप शो का आयोजन।

2017 - रोटरी क्लब, चंडीगढ़ के 100 वर्ष पूरे होने पर 100 कलाकारों की पेंटिंग प्रदर्शनी

2017 -जवाहर कला केंद्र में चंडीगढ़ ललित कला अकादमी द्वारा ग्रुप शो का आयोजन किया गया जयपुर, राजस्थान।

2017 - सांस्कृतिक कार्य विभाग चंडीगढ़, हरियाणा

2016 - पंजाब कला भवन, चंडीगढ़ में एक ग्रुप शो 'अनटाइटल्ड'

2016 - चंडीगढ़ ललित कला अकादमी द्वारा राष्ट्रीय ललित कला अकादमी में ग्रुप शो का आयोजन किया गया रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली।

2015 - पंजाब कला भवन, चंडीगढ़ में मूर्तिकला शिव सिंह को श्रद्धांजलि

2015 - गैलरी आर्ट पोर्टफोलियो, चंडीगढ़।

2014 - पंजाब कला भवन, चंडीगढ़ में एक ग्रुप शो 'अनटाइटल्ड'

2013 - मेहरानगढ़ किले, जोधपुर, राजस्थान में 'कोवे'।

2012 - 'दिव्य प्रतिबिंब', होटल एक्वामरीन, चंडीगढ़ में परिदृश्यों की समूह प्रदर्शनी।

2012 - 'बीटिंग पल्स' (रवींद्र भवन) ललित कला अकादमी, दिल्ली में एक ग्रुप शो

2012 - पंजाब कला भवन, चंडीगढ़ में एक ग्रुप शो 'अनटाइटल्ड'

2011 - पंजाब कला भवन में 'आर्टस्केप्स' द्वारा इंडो कैनेडियन ग्रुप शो

2010 - 'विज़ुअल लैंग्वेज' पंजाब कला भवन, चंडीगढ़ में एक समूह शो

2008 - 'इंडियन रेड' का आयोजन सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़ में किया गया

2005 - ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ द्वारा 'सुनामी राहत कोष' का आयोजन

2003 - 'उत्तर प्रदेश कलाकार संघ', राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ

2002 - 'उत्तर प्रदेश आर्टिस्ट एसोसिएशन', लखनऊ

2002 - 'ललित कला अकादमी', रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली

2001 - 'उत्तर प्रदेश आर्टिस्ट एसोसिएशन', लखनऊ

2001 - 'एबीसी आर्ट गैलरी', बनारस

2001 - 'राज्य ललित कला अकादमी', लखनऊ

2001 - 'कला वीथिका', कानपुर

2000 - राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ द्वारा 'कारगिल राहत कोष' का आयोजन

2000 - 'उत्कर्ष' - दिल्ली और बरेली में एक यात्रा समूह शो

1997 - 2001 - 'कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स' द्वारा आयोजित समूह प्रदर्शनियों में भाग लिया लगातार 5 वर्षों तक

भागीदारी:

2023 - अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, अमृतसर

2022 - वार्षिक कला प्रदर्शनी, ललित कला अकादमी, चंडीगढ़

2020 - ऑनलाइन कला प्रदर्शनी, ललित कला अकादमी, चंडीगढ़

2018 - तीसरी वार्षिक अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी और कला प्रतियोगिता, जयपुर-राजस्थान

2017 - वार्षिक कला प्रदर्शनी, ललित कला अकादमी, चंडीगढ़

2016 - पंजाब ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ की वार्षिक राज्य प्रदर्शनी

2015 - अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, अमृतसर

2015 - हिमाचल प्रदेश संग्रहालय, शिमला द्वारा अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी का आयोजन

2015 - पंजाब ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ की वार्षिक राज्य कला प्रदर्शनी

2014 - पंजाब ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ की वार्षिक राज्य कला प्रदर्शनी

2012 - पंजाब ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ की वार्षिक राज्य कला प्रदर्शनी

राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ की 26वीं वार्षिक कला प्रदर्शनी

राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ की 24वीं वार्षिक कला प्रदर्शनी

राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ की 23वीं वार्षिक कला प्रदर्शनी

राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ की 22वीं वार्षिक कला प्रदर्शनी

राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ की 21वीं वार्षिक कला प्रदर्शनी

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर की 12वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर की 14वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी

2010 - अखिल भारतीय ललित कला एवं शिल्प सोसायटी

2009 - अखिल भारतीय ललित कला एवं शिल्प सोसायटी

2009 - वार्षिक कला प्रदर्शनी, ललित कला अकादमी, चंडीगढ़

2008 - वार्षिक कला प्रदर्शनी, ललित कला अकादमी, चंडीगढ़

2008 - कला मैत्री, गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट, चंडीगढ़ के पूर्व छात्र संघ

2006 - विश्व फोटोग्राफी दिवस, पंजाब ललित कला अकादमी, चंडीगढ़

2006 - हिमाचल प्रदेश संग्रहालय, शिमला द्वारा अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी का आयोजन

2006 - अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, अमृतसर

2006 - अखिल भारतीय ललित कला एवं शिल्प सोसायटी, राष्ट्रीय स्तर

2005 - वार्षिक कला प्रदर्शनी, ललित कला अकादमी, चंडीगढ़

2003 - अखिल भारतीय ललित कला एवं शिल्प सोसायटी, राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ

2002 - क्षेत्रीय कला प्रदर्शनी, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ

2002 - क्षेत्रीय कला प्रदर्शनी, लखनऊ राज्य ललित कला अकादमी, कानपुर द्वारा

2002 - बैंक ऑफ पंजाब, चंडीगढ़ द्वारा प्रदर्शनी

2002 - अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, अमृतसर

2002 - अखिल भारतीय ललित कला एवं शिल्प सोसायटी, राष्ट्रीय स्तर

2001 - क्षेत्रीय कला प्रदर्शनी, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ

2001 - अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, लखनऊ

2001 - अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, अमृतसर

2000 - बैंक ऑफ पंजाब, चंडीगढ़ द्वारा प्रदर्शनी

2000 - राज्य ललित कला अकादमी द्वारा आयोजित यात्रा प्रदर्शनी 'प्रतिभा उजागर',

लखनऊ, नई दिल्ली, बरेली

2000 - अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, अमृतसर

1998 - बैंक ऑफ पंजाब, चंडीगढ़ द्वारा प्रदर्शनी

1998 - अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, लखनऊ

1998 - अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, अमृतसर

आमंत्रित कलाकार:

2022 - पंजाब कला भवन, चंडीगढ़ में "विविध रंग" समूह शो

2018 - पंजाब कला भवन, चंडीगढ़ में "विभिन्न रंग" ग्रुप शो।

2018 - सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़ में "निरंतर" समूह शो।

2017 - सरकारी संग्रहालय और आर्ट गैलरी, चंडीगढ़ में "निरंतर" समूह शो।

2017 - पंजाब कला भवन, चंडीगढ़ में "विभिन्न रंग" ग्रुप शो।

2001 - राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ द्वारा प्रदर्शनी

2001 - कला वीथिका, कानपुर द्वारा राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ में प्रदर्शनी का आयोजन

1998 - डॉ. रेखा निगम की स्मृति में प्रदर्शनी, राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ

शिविर/कार्यशाला/संगोष्ठी में भाग लिया:

2021 - भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ- ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ द्वारा चित्रकला शिविर

2020 - प्राचीन कला केंद्र और आर्ट कॉटरी के सहयोग से अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन शिविर और प्रदर्शनी

2019 - प्राचीन कला केंद्र और आर्ट कॉटरी, चंडीगढ़ के सहयोग से "बैक टू रूट्स" संगोष्ठी

2018 - 18 का कोलिजन आर्ट एंड हेरिटेज फेस्टिवल, ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ द्वारा पेंटिंग कैंप

2017 - रोटरी क्लब, चंडीगढ़ के 100 वर्ष पूरे होने पर 100 कलाकारों का पेंटिंग शिविर

2017 - सांस्कृतिक कार्य विभाग चंडीगढ़, हरियाणा

2015 - ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ द्वारा चित्रकला शिविर

कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षण देते पंकज सरोज सर

2009 - ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ द्वारा चित्रकला शिविर

2008 - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा जालंधर में राष्ट्रीय चित्रकला शिविर का आयोजन

2005 - ललित कला अकादमी, चंडीगढ़ द्वारा जल रंग कार्यशाला

2002 - कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, लखनऊ में आतंकवाद पर कार्यशाला

2001 - दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर द्वारा मदिकेरी, कर्नाटक में लैंडस्केप शिविर

2001 - सांस्कृतिक संगठन 'नाटयोग', राज्य कला अकादमी, लखनऊ

2001 - कला वीथिका, कानपुर

2000 - देहरादून में चित्रकला शिविर

2000 - बहुयामी कला शिविर, राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ

2000 - राज्य ललित कला अकादमी द्वारा रंग-ए-महफ़िल (लखनऊ महोत्सव) का आयोजन

2000 - राष्ट्रीय ललित कला केंद्र, लखनऊ में लिथोग्राफ कार्यशाला

1999 - टेराकोटा कैंप, लोक कला संग्रहालय, लखनऊ

1999 - राष्ट्रीय युवा महोत्सव, लखनऊ

कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षण देते पंकज सरोज सर

वेबिनार:

2020 - महामारी के दौरान कला

कमीशन किया गया कार्य:

2016 - निदेशक जनसंपर्क, चंडीगढ़ प्रशासन।

2016 - गृह सचिव कार्यालय चंडीगढ़ प्रशासन, चंडीगढ़

2015 - गृह सचिव कार्यालय चंडीगढ़ प्रशासन, चंडीगढ़

संग्रह:

कुलपति पंजाब विश्वविद्यालय - 2018

गवर्नर हाउस पंजाब -2017,चंडीगढ़

मेयर, चंडीगढ़-2018

अपर सचिव गृह- 2017

सांस्कृतिक कार्य विभाग चंडीगढ़, हरियाणा

यू.टी. सचिवालय चंडीगढ़ प्रशासन, चंडीगढ़

गृह सचिव कार्यालय, चंडीगढ़ प्रशासन, चंडीगढ़

बी.बी.के.डी.ए.वी. कॉलेज अमृतसर

राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ

ललित कला अकादमी, चंडीगढ़

बी.एन.आर्य (प्रख्यात कलाकार एवं पूर्व प्राचार्य, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ)

दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, नागपुर

डी.ए.वी. कॉलेज, कानपुर

कला वीटिका, कानपुर

माउंट व्यू होटल, चंडीगढ़

देव समाज कॉलेज फॉर वुमेन, चंडीगढ़

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर-31, चंडीगढ़

इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर्स कोऑपरेटिव लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय उदयपुर, राजस्थान

प्रेम चंद मारकंडा एस.डी. महिला कॉलेज, जालंधर

भारत और विदेश में कई निजी संग्रह

पंकज जी की कला को विभिन्न ***माध्यमों को*** कुछ इस प्रकार दिखाया गया है

- **ड्राइंग**

- **वॉश तकनीक**
- **तेल रंग**
- **जल रंग**
- **जापानी इंक (कार्य आदि)**

पंकज जी ने अपने सफल में विभिन्न तरह की ड्राइंग की है और आने वाली अपनी कला को आगे बढ़ाया है ड्राइंग जो कि यह कला का मूलभूत आधार है जिसमें पंकज जी का कहना है कि अभ्यास इतना होना चाहिए कि कोई कमी ना रहे तथा कोई डर ना रहे पेंटिंग करते समय उनका कहना है कि अभ्यास रियाज इतना करो की अंतिम कार्य में सोचा ना पड़े हर दृश्य को चित्रित कर सके जिसमें उन्होंने एक अच्छा उदाहरण दिया है अगर आप निरंतर अभ्यास करते हैं तो हाथ में सफाई रहेगी जिसमें आप रोजाना देखकर अभ्यास करते हैं दृश्य बनाने में तो कोई दिक्कत नहीं आती जैसे ***उदाहरण के तौर पर*** **:-**

किसी पेड़ को रोजाना चित्रित किया करें इतनी बार क्या करें की अंतिम में सिर्फ दो लाइन और दो लाइनों के माध्यम से इतना जबरदस्त तरीके से चित्रांकन हो की पेड़ की अनुभूति होने लगे तथा स्पष्टीकरण हो कहने का तात्पर्य है कि जब तक रियाज़ नहीं किया जाए तब तक आप हमेशा डरते ही रहोगे उनका कहना है कि रियाज़ से हर असंभव कार्य संभव हो सकता हैं

कार्य जानकारी

वॉश तकनीक लखनऊ में कला शिक्षा प्राप्त करने में पंकज जी सफल हुए उन्होंनो वहा हर कार्य को सीखने का पूर्ण प्रयास किया जिनमें जल रंग वॉश पद्धति तेल रंग तथा म्यूरल और सेरेमिक तथा कॉलेज में सिखाई गई अन्य तकनीक शामिल है वॉश् तकनीक के समकालीन कलाकार पंकज जी महान कलाकार वॉश पद्धति के महान कलाकार ***बद्रीनाथ आर्य*** के शिष्य रहे हैं जिन्होंने वॉश तकनीकी मुख्य रूप से शिक्षा के साथ-साथ अन्य सभी कलाओं को भी सीखा है

पंकज जी हर कार्य में पूर्ण रूप से सफल रहे उनके बाद उन्होंने ***राजेंद्र प्रसाद*** जो उनके अध्यापक रहे हैं जो लखनऊ कला संकाय की वह तकनीक को आगे लेकर गए हैं उनसे भी सीखा तथा इसी के साथ-साथ ***जय कृष्ण अग्रवाल*** जो कि वहां के प्रिंसिपल भी रहे हैं उनसे भी कला के गुणों को प्राप्त किया है तथा उनकी इस तकनीक को समझ कर आगे लेकर चल रहे हैं

पंकज जी का कहना है कि लखनऊ आर्ट्स कॉलेज मे वास तकनीक वहां की (ट्रेडिशनल)पारंपरिक पंकज जी का कहना है लखनऊ (कला संकाय) में वॉश तकनीक और एक लैंडस्केप यह हमेशा जरूरी रहे हैं चाहे फिर तकनीक तेल हो, तेल रंग, जल रंग, या सब्जेक्ट कुछ भी हो लेकिन वह तकनीक और एक दृश्य लैंडस्केप जरूरी है वहां हर बच्चा यह कार्य जरूर करता है बेशक मध्य कुछ भी हो लेकिन हर बच्चे को यह कार्य करना होता था तब वहां पर विद्यार्थी तेल रंग और जल रंग में ही कार्य किया करते थे क्योंकि अन्य कोई तीसरा मध्य होता नहीं था अगर होता भी था तो कोई करता नहीं था और ऐक्रेलिक और वह टेम्पराां तो बिल्कुल भी नहीं

मुख्यता वास तकनीक की जाती थी क्योंकि जब कोलकाता से असित कुमार हल्दार यहां के प्रिंसिपल बने तो कॉलेज आफ आर्ट लखनऊ तब वह अपने साथ वास तकनीक लेकर आए जिनमें अब तक चल रहे कलाकारों मे करने के

जिन्होंने महारत हासिल की है **बद्रीनाथ आर्य** थे जिससे पंकज जी ने खुशनसीब से एक करीबन 1 वर्ष तक कला शिक्षक ग्रहण की जिसमें वह तकनीक के गुना को प्राप्त किया तथा जब रिटायर हुए तो उनसे पंकज जी बाद में भी अपने कार्य के बारे में सही गलत व गलतियां तथा नए-नए विचारों के बारे में पूछा करते थे सेवानिवृत हो जाने के बाद हालांकि बद्रीनाथ का उनसे कोई लेना-देना नहीं था लेकिन यह, उनकी अच्छाई थी कि वह इतनी बड़ा कलाकार होने के बावजूद भी चाहते थे कि लोग उनसे सीखे मिले पूछे वह हर कार्य हर कमी को बताया करते उनकी हर तकनीक उनको हर तकनीक आई थी हर चीज में महारत हासिल थी तथा वह कभी किसी से नाराज नहीं होते थे लोग अक्सर उनसे अपनी गलतियां पूछने जाया करते थे अभ्यास करने के बाद हासिल हुई महारत से वह उनके पास गए बच्चों को काफी कमियां बता दिया करते थे ताकि वह उनको ठीक करें और चित्र सुंदर बना सके लखनऊ कॉलेज में मास्टर में विकल्प होते थे

म्यूरल का, लैंडस्केप का, पोर्ट्रेट का, तथा सेरेमिक का, विकल्प होते थे तब, पंकज जी ने लैंडस्केप को विकल्प के रूप में चुनाव तथा सबसे अब तक वह उसी रूप में कार्य कर रहे हैं जिसमें माध्यम बदलते रहते हैं जैसे कि जल रंग तेल रंग वॉश तकनीक आदि

पंकज जी ने वह तकनीक में अंत्यंत ही सुंदर काम किया है उन्होंने खासकर पहाड़ों के दृश्य को बहुत ही खूबसूरती से चित्रित किया है उनके हल्के रंगों का प्रयोग और कहीं-कहीं इतनी अच्छा रंगों का प्रयोग इतनी सावधानी से किया है कि हर व्यक्ति मोहित हो जाए या फिर देखता रह जाए वह तकनीक के माध्यम को अभी तक लेकर चल रहे पंकज सरोज जी इतने शांत व्यवहार के व्यक्ति हैं कि हर व्यक्ति उनसे सीखने की चाह रखता है और वह कभी मना भी नहीं करते अगर किसी को इस तकनीक को सीखना है तो वह इसके लिए हमेशा तत्पर रहते हैं हमेशा सीखने के लिए तैयार रहते हैं लेकिन उनका कहना है कि वह तकनीक एक बहुत लंबी प्रक्रिया है इसमें धैर्य रखना पड़ता है क्योंकि एकदम से आपको उसका रिजल्ट नहीं मिल जाता इसमें धीरे-धीरे धीरे-धीरे स्टेप बाय स्टेप आपको रिजल्ट मिलता है जितना धैर्य से आप काम करेंगे उतना ही आपको संतुष्टि पूर्ण फल मिलता है

चित्र सूची

वॉस तकनीक माध्यम

चित्र संख्या	शीर्षक	माध्यम
1	पर्वत दृश्य	वॉश तकनीक
3	झरना	वॉश तकनीक
4	पहाड़ी पर आवास	वॉश तकनीक
5	बहती नदी	वॉश तकनीक
6	पर्वत दृश्य	वॉश तकनीक
7	झरना	वॉश तकनीक
8	टहनी पर पक्षी	वॉश तकनीक
9	पेड़ पर गिलहरी	वॉश तकनीक
10	पक्षियों के साथ हिरण	वॉश तकनीक
	तेल रंग माध्यम	
11	प्लेन एयर	ऑयल ऑन hdf बोर्ड
12	लड़कों का छात्रावास	तेल ऑन कैनवस
13	नैनीताल	तेल ऑन कैनवस
14	श्याम का दृश्य फ्रॉम कसौली स्टूडियो	तेल ऑन कैनवस
15	आर्ट्स कॉलेज एंट्रेंस गेट्स	तेल ऑन कैनवस
16	सुखना जंगल(चंडीगढ़)	तेल ऑन कैनवस
	जल रंग माध्यम	
17	लैंडस्केप	जलरंग ऑन पेपर
18	लैंडस्केप	जलरंग ऑन पेपर
19	लैंडस्केप	जलरंग ऑन पेपर
20	झरना 15/11 इंच	जलरंग ऑन पेपर
21	इतिहास प्रिंटिंग साइज 22/11	जलरंग ऑन पेपर
22	लैंडस्केप	जलरंग ऑन पेपर

पंकज सरोज का वॉश तकनीक में कार्य

पंकज सरोज का वॉश तकनीक में (चित्र1)

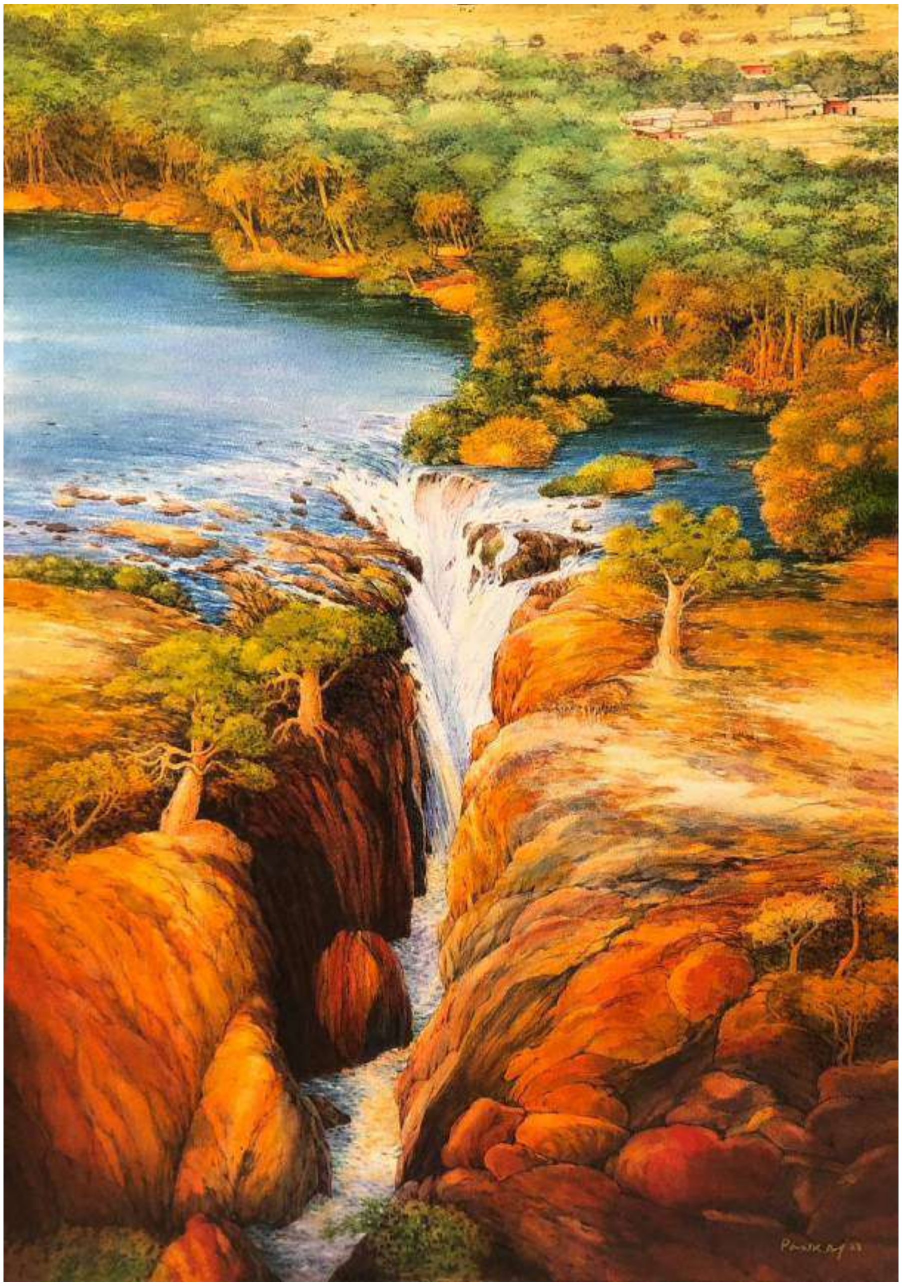

पंकज सरोज का वॉश तकनीक में(चित्र)

पंकज सरोज का वॉश तकनीक में (चित्र3)

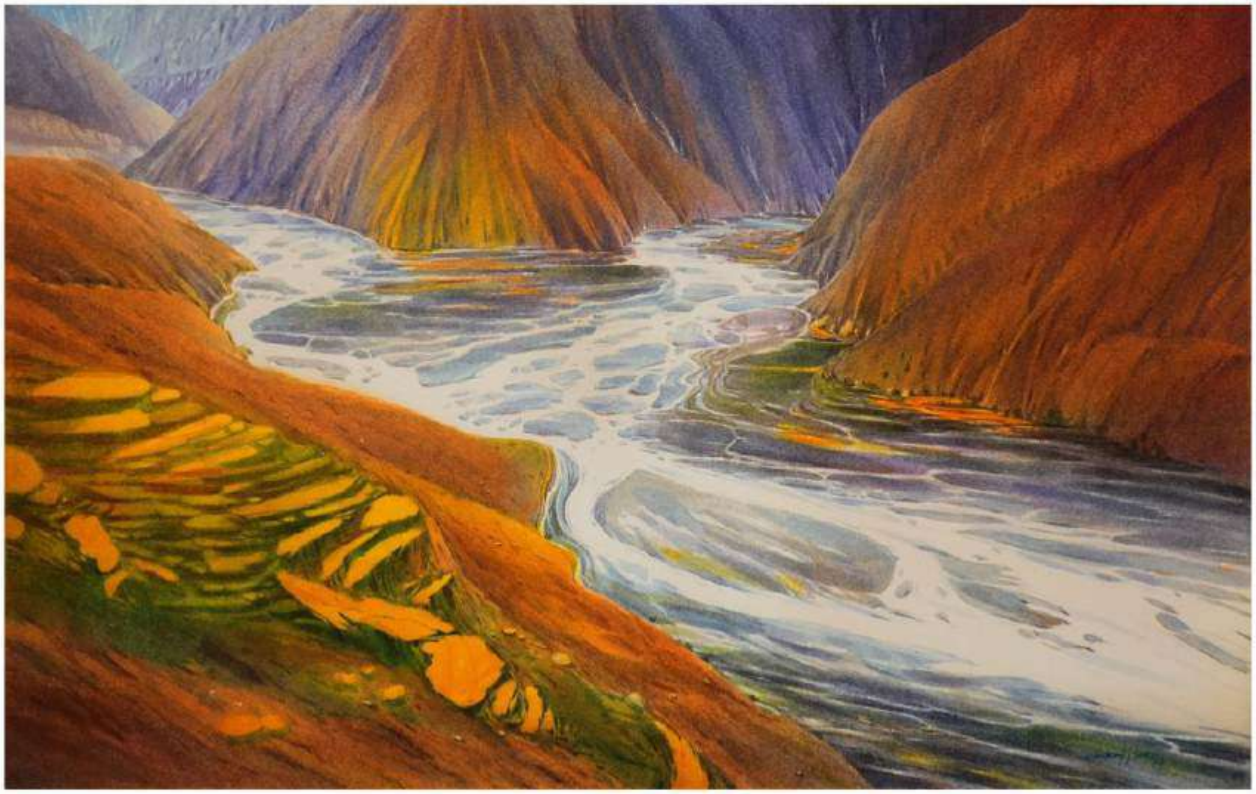

पंकज सरोज का वॉश तकनीक में (चित्र 4)

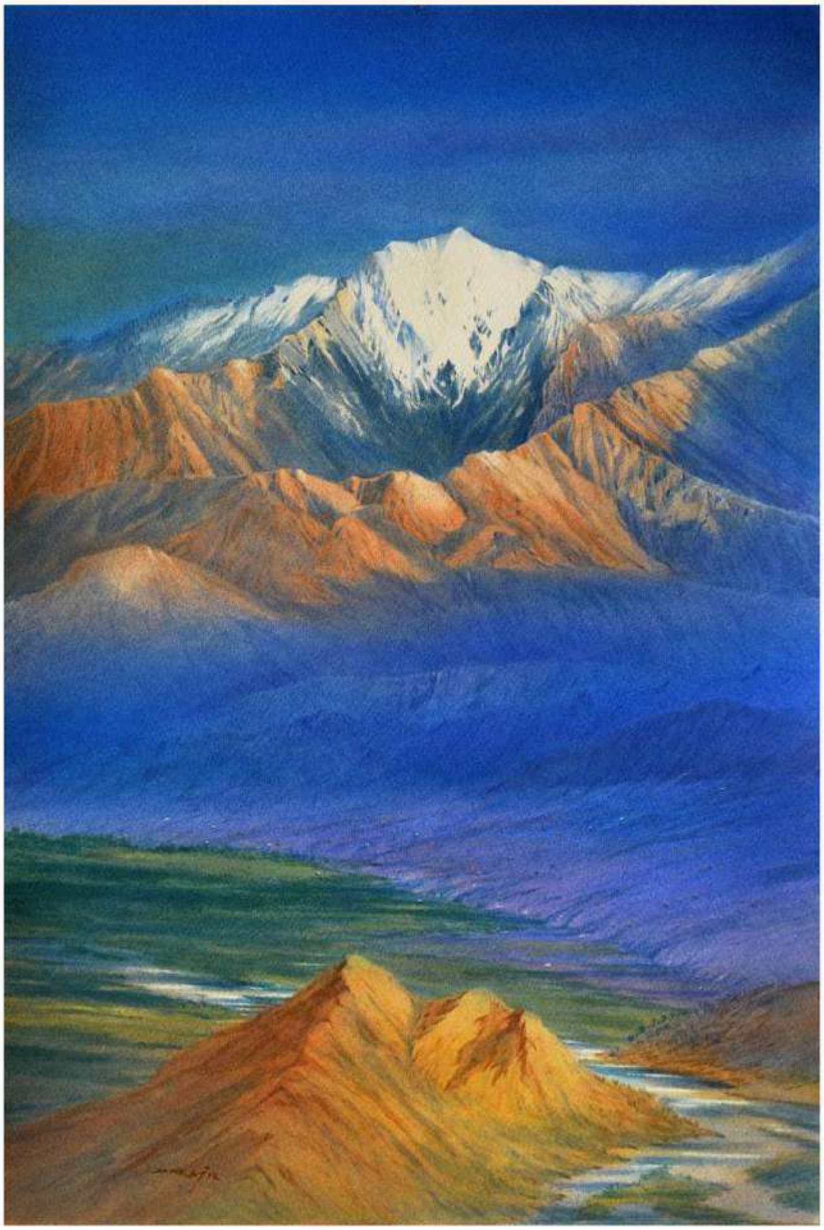

पंकज सरोज का वॉश तकनीक में (चित्र5)

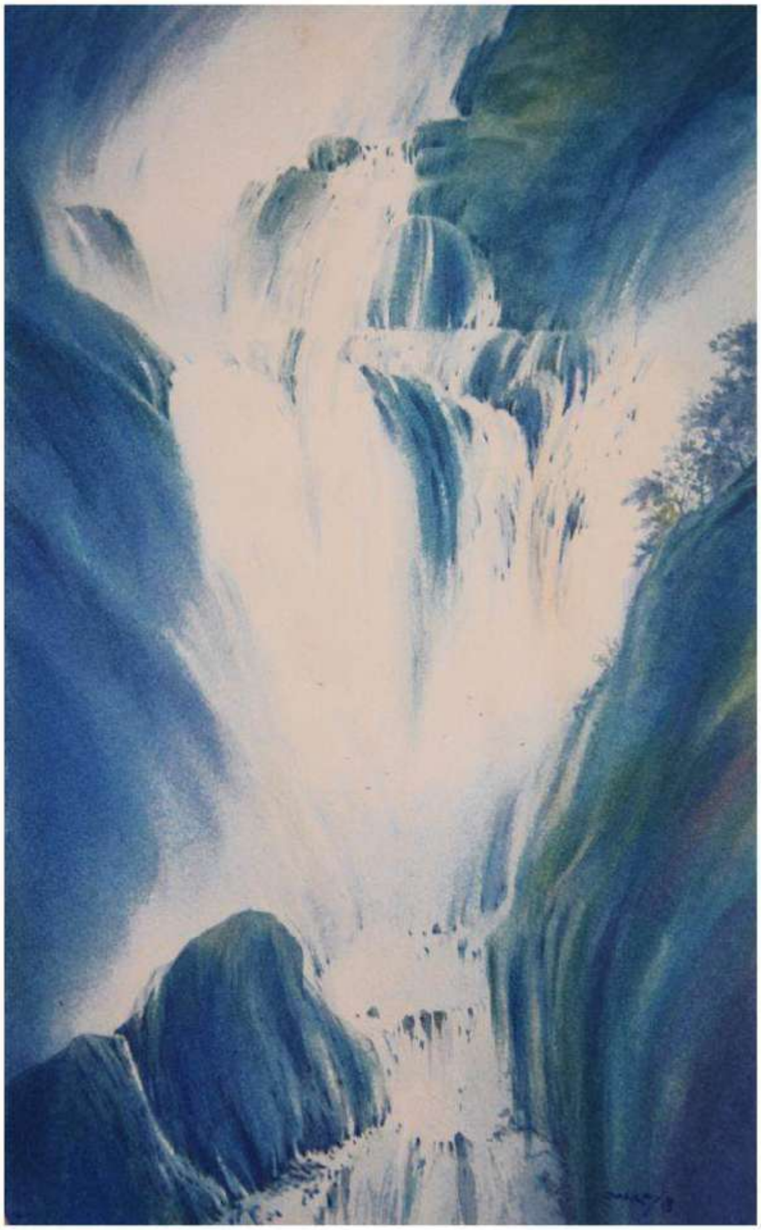

पंकज सरोज का वॉश तकनीक में (चित्र 6)

पंकज सरोज का वॉश तकनीक में (चित्र 7)

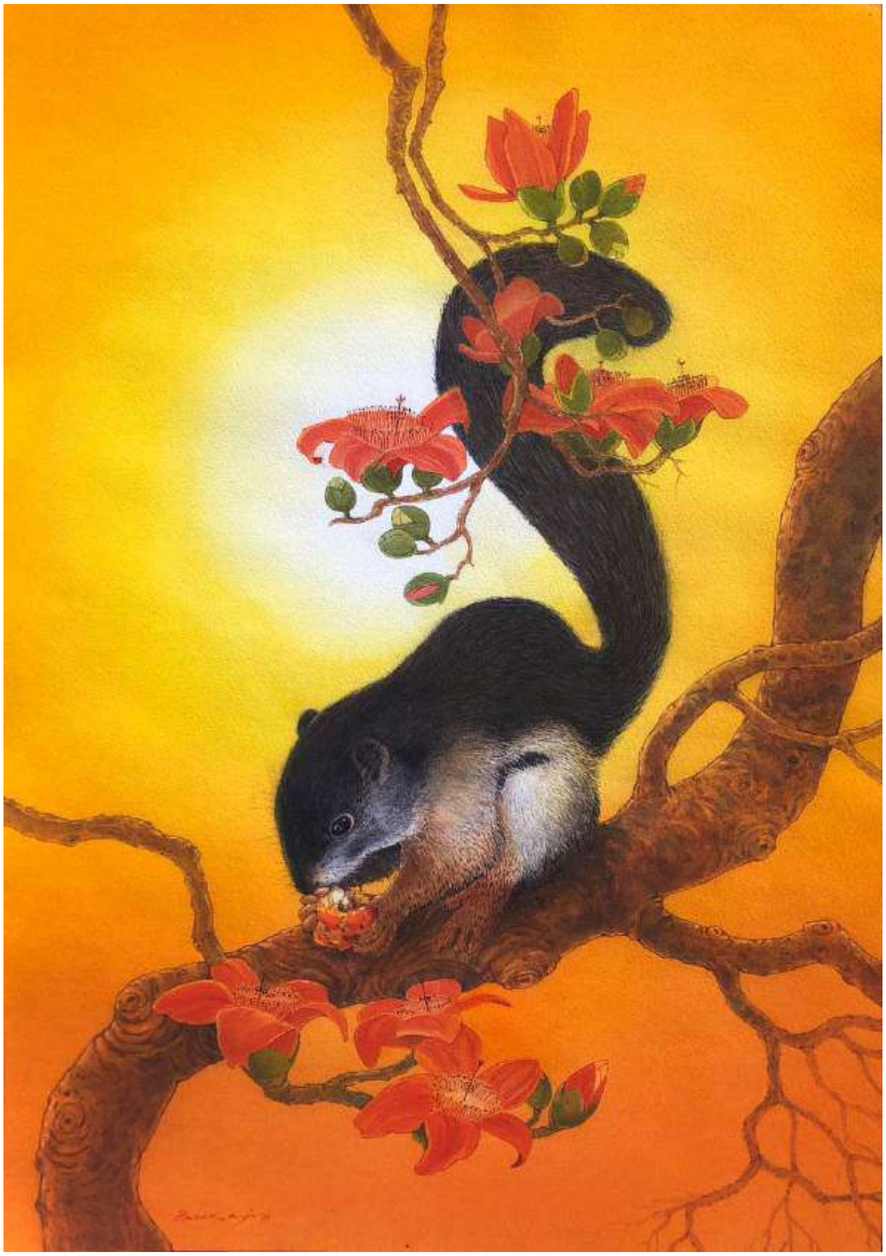

पंकज सरोज का वॉश तकनीक में (चित्र 8)

पंकज सरोज का वॉश तकनीक में (चित्र 9)

उन्होंने इस इस प्रक्रिया के बारे में बताया था कि कि पहले वॉश पैंटिंग में बिल्कुल सिटीक ड्राइंग सिंगल लाइन ड्राइंग होनी चाहिए जो भी बनाएं बिल्कुल साफ स्पष्ट क्लियर हो ए टू ज प्रॉपर हो थिन लेयर में वाटर कलर अप्लाई करना जब वह सूख जाते हैं तब आउटलाइन करना इसके दो फायदे होते हैं एक तो वह सुंदर लगते हैं दूसरा वह पानी में डालते हैं तो लाइन से एरिया पता चल जाता है पहली बार जब हम उसको पानी में डालते हैं तो उसमें जो एक्स्ट्रा कलर होता है वह निकल जाता है फिर आप उसकी सुख लेते हैं फिर पानी में डालते हैं जिससे एक ऐसे एटमॉस्फेयर क्रिएट होता है बिल्कुल ठीक ऐसे ही बद्रीनार्थ आर्य का कार्य कि ही पेंटिंग है फिर हम दूसरी लेयर में काम करते हैं दूसरी बार हम उसमें कलर देते हैं ऐसा तब तक करते हैं जब तक हमें अपने अनुसार एक रिजल्ट नहीं मिल जाता ठीक इसी तरह से 3 से 4 बार और चार से काफी बार जब तक आप अपने मन के अनुसार रिजल्ट चाहते हो तब तक बारंबार यह है तरीका बनाया जाता है इस तरीके से उन्होंने मुझे वॉश तकनीक के बारे में काफी कुछ बताया

पंकज जी रंगों के माध्यम से अपनी भावना और विचारों को व्यक्त करते हैं उनका कहना है कि जरूरी नहीं जो रंग असल में है वही किया जाए आप अपने विचारों को व्यक्त कीजिए चाहे फिर वह कोई और रंग क्यों ना हो जैसे एक अच्छा

उदाहरण

उन्होंने यह भी दिया था कि जब पंकज जी पढ़ा करते थे तब उनके अध्यापक से वह पूछा करते थे कि आप आसमान लाल पीला कैसे बना दिया करते हैं तब उनके अध्यापक ने उन्हें उत्तर दिया था कि आप बहुत सारा खूब सारा कार्य करो आप भी वैसा बनाना सीख जाओगे उसे समय के उसे समय तो पंकज जी बहुत छोटे थे लेकिन इतना कार्य करने के बावजूद आज उनको इस प्रश्न का उत्तर मिल ही गया है कोई मुश्किल से कोई एक ऐसा दिन होगा जिस दिन पंकज जी आसमान को नीला बनाया करते हैं

वह हमेशा अपने ही मन से रंग देते हैं उनका मानना है कि अगर आप आकाश को जैसा आपको दिखाई दे रहा है वैसा ही बना दोगे तो उसमें कलाकार कहां छुपा है क्योंकि कलाकार ने अपना किरदार अदा नहीं किया यह तो सिर्फ एक कॉपी करना ही हो गया या तो कोई फोटो ले लो यह इसे हुबाहुब कॉपी कर दो इसमें कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन अपना कुछ नया डालना कलाकार को इन सबसे अलग बनाता है जब तक कलाकार अपनी विचारों को उसमें नहीं डालता तब तक वह कृति अधूरी ही रहती है

तेल रंग माध्यम

दूसरा मध्य आता है तेल रंग तेल रंग जो की बचपन में पंकज जी को सिखाया गया था जिसका उन्हें जिंदगी भर अभ्यास याद है उन्होंने तेल रंग में काफी सारा कार्य किया है तथा उनको पसंद भी है जो की ट्रेडीशनल पारंपरिक तरीका से उन्हें तेल रंग करना बहुत ही पसंद है जैसे कि कांस्टेबल और टर्नर किया करते थे

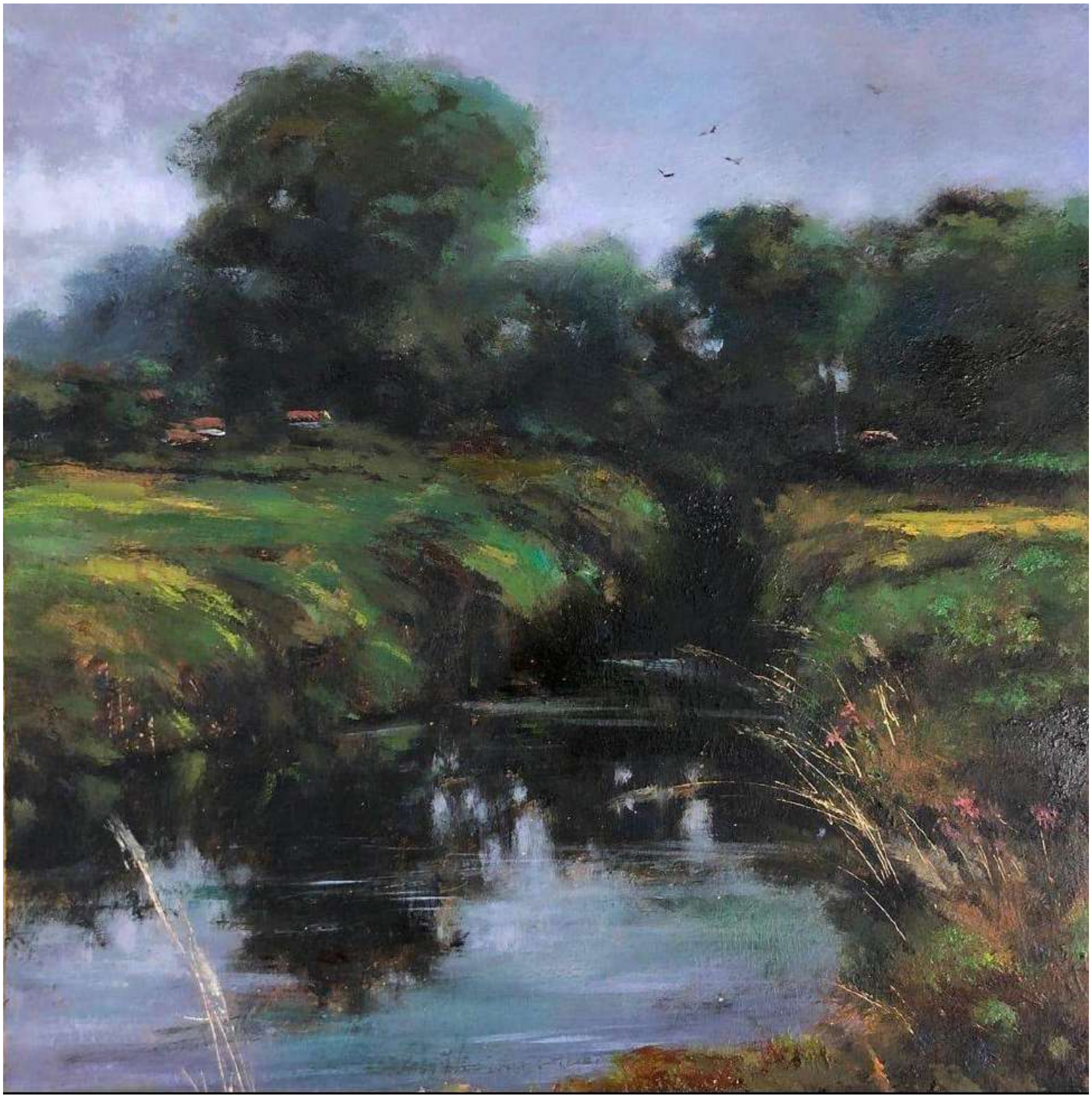

प्लेन एयर (oil on HDF board)10/8 inches

लड़को का छात्रावास (लखनऊ)

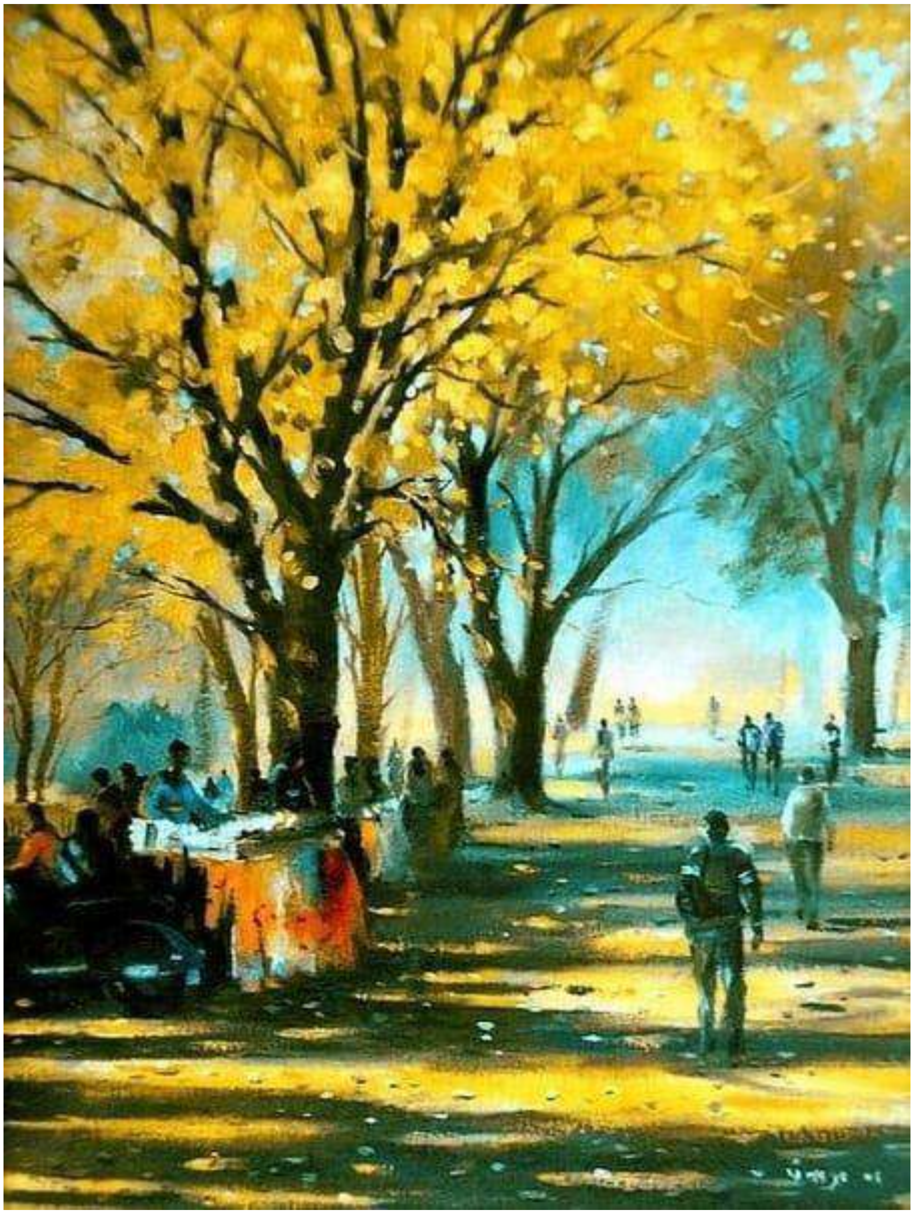

नैनीताल

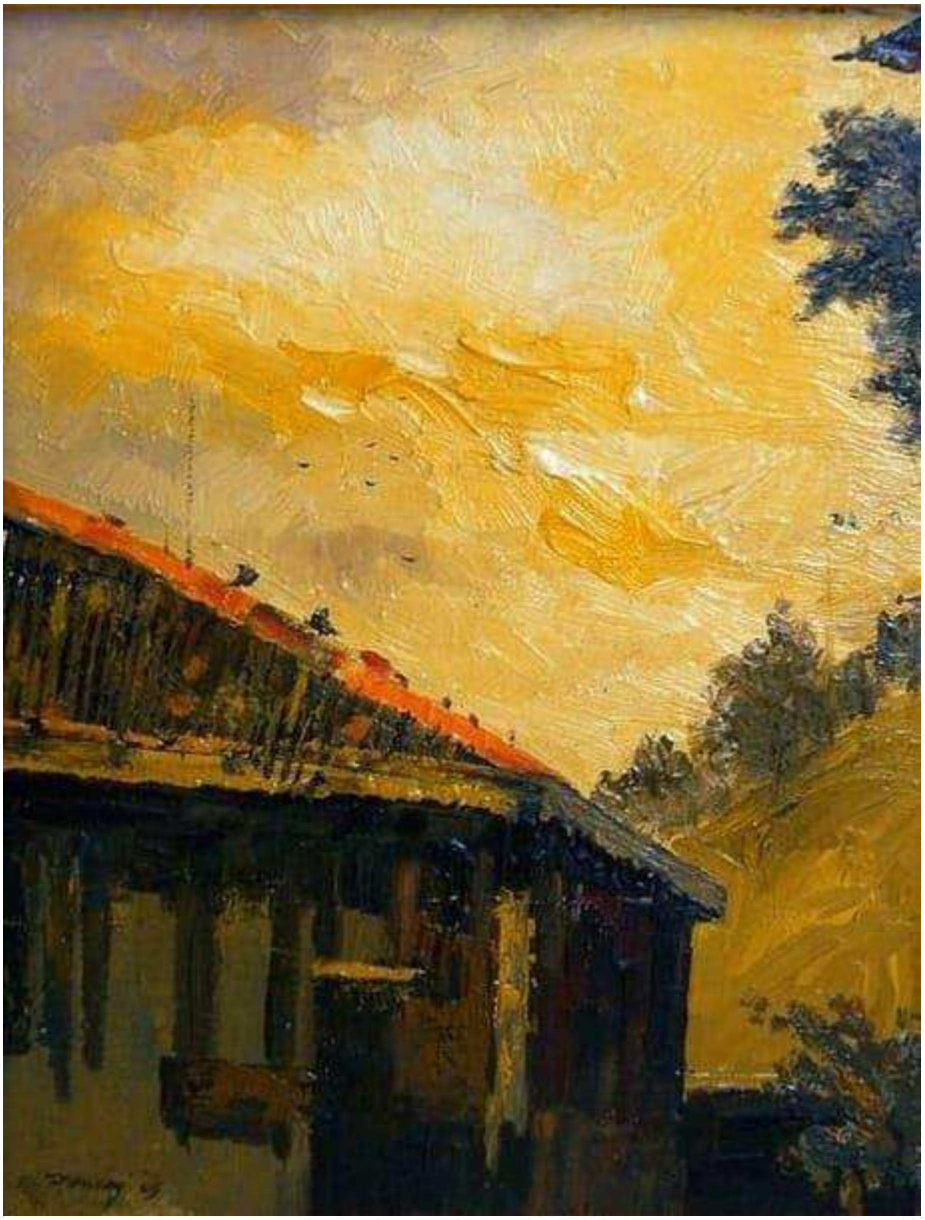

शाम का दृश्य फ्रॉम कसौली स्टूडियो

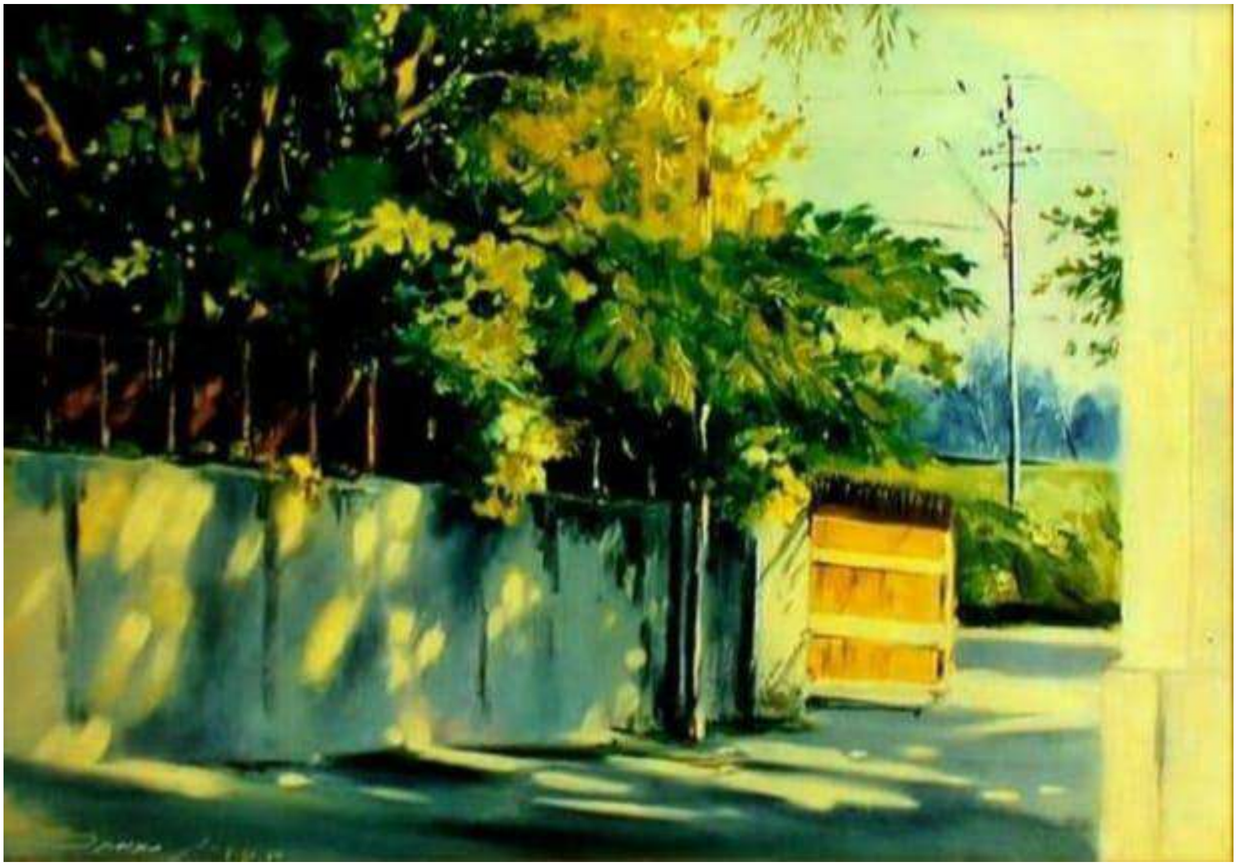

आर्ट्स कॉलेज लखनऊ एंट्रेंस गेट ऑयल ऑन पेपर

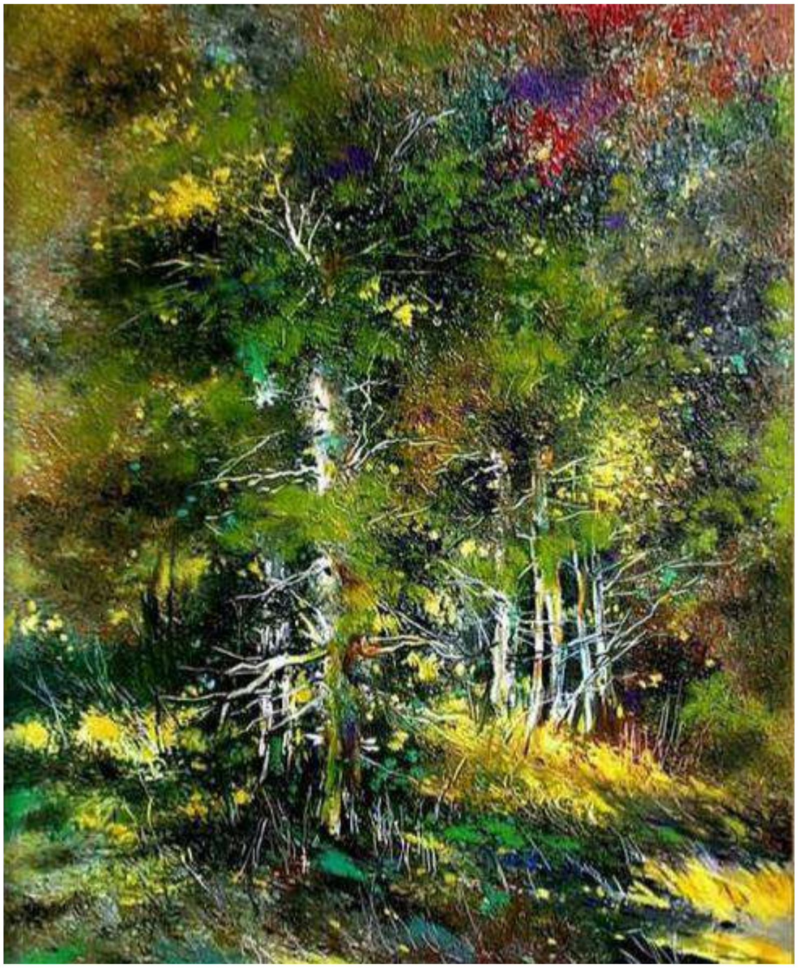

सुखना जंगल चंडीगढ़ (इंडिया) ऑयल ऑन कैनवस

जल रंग को भी पंकज सरोज जी ने अंत्यंत से ही सुंदर तरीके से चित्रण किया है पंकज जी खासकर या तो वॉश तकनीक में काम करते हैं या ज्यादातर जल रंग में वैसे तो उनका कहना है कि उनका हर तकनीक अच्छी लगती है लेकिन अधिकतर समय वह जल रंग में ही चित्रण चित्रण करते हैं

पंकज जी लखनऊ आर्ट कॉलेज में गए तो वहां हॉस्टल में रहा करते थे जिसके साथ बहुत सारे उनके सीनियर भी हुआ करते थे उसे समय इनकम इतनी खास अच्छी होती नहीं थी कि बड़े-बड़े महंगे महंगे रंग लिए ले लिए जाए इसलिए वह एक माध्यम अपनाना चाहते थे कि जिससे उनकी कला शिक्षा में कोई बाधा ना पड़े

जल रंग एक अच्छा और सस्ता माध्यम है इस माध्यम से हर व्यक्ति अपने कार्य को पूर्ण कर सकता है पंकज जी अपने सीनियर के साथ रहा करते थे तथा उनके हर एक कार्य में मदद कराया करते थे और तुम बहुत कुछ सीखते थे वह अपने सीनियर को मार्केट का काम करते हुए बड़े-बड़े प्रोजेक्ट करते हुए देखा करते थे जिसे उन्होंने हर एक उसे चीज को सिखा जो उनके काबिल बना सकती थी

जल रंग एक ऐसा माध्यम है जिसको हर व्यक्ति खरीद और उसका कागज जो की बहुत सस्ता हुआ करता था वह एक ऐसा पेपर है जिसमें आम व्यक्ति खरीद कर काम कर सकता है उसे समय में कार्टेज पेपर जो की करीबन ₹2 का मिला करता था उसे समय में पेपर इतना अच्छा होता था कि वॉश तकनीक भी की जा सकती थी

दूसरा यह था कि अगर सीखना है तो चारों तरफ वर्क किया जा सकता है जो कि पंकज जी ने पूरी लगन और मेहनत से सीखा और उसमें निकले भी जल रंग में आप कितनी भी पेंटिंग कर लो आपका डर निकल सकता है

जल रंग में स्टाइल की बात करें तो पंकज जी का एक सिटिंग में वर्क कंप्लीट करने का स्टाइल रहता है फिर चाहे वह 1 घंटे का हो 2 घंटे का या फिर 4 घंटे का क्यों ना हो वाटर कलर में उन्होंने प्लेन और वर्क करना ज्यादा पसंद है साथ में लेयर में काम करना भी

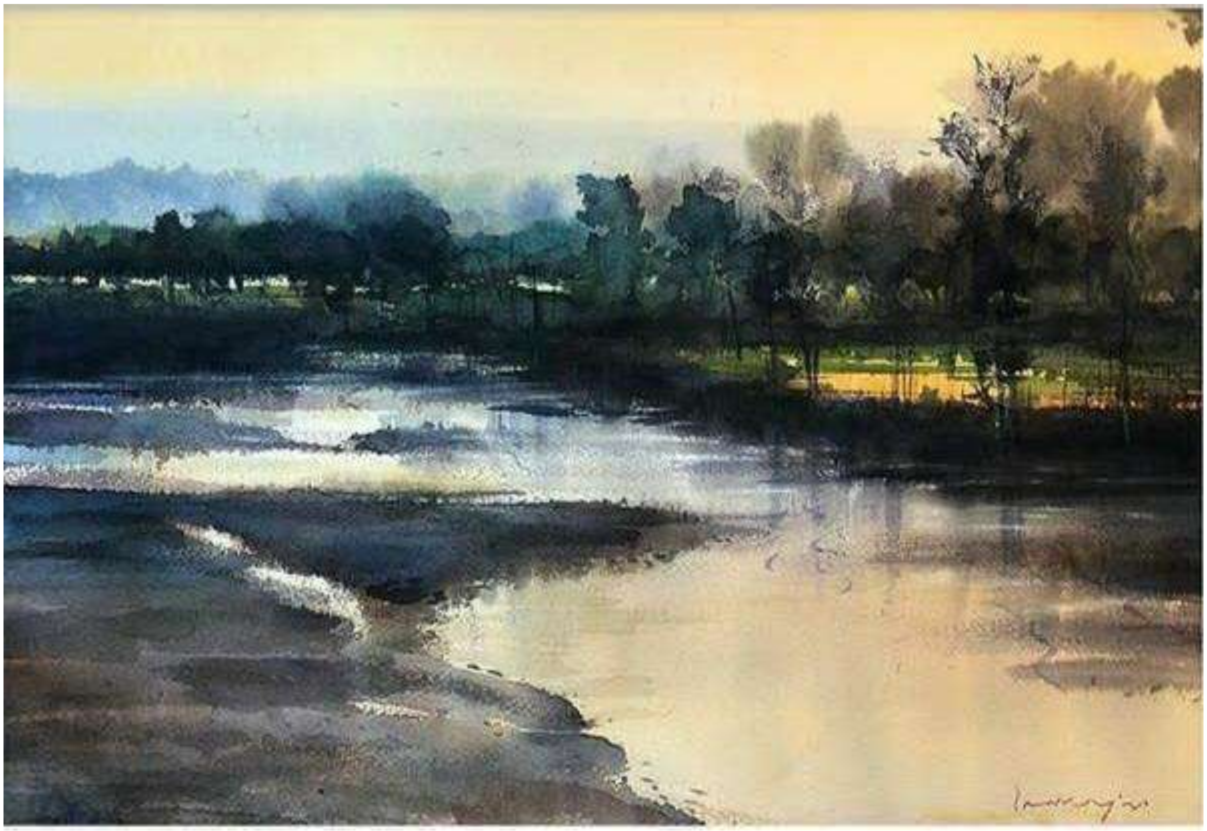

जल रंग लैंडस्केप

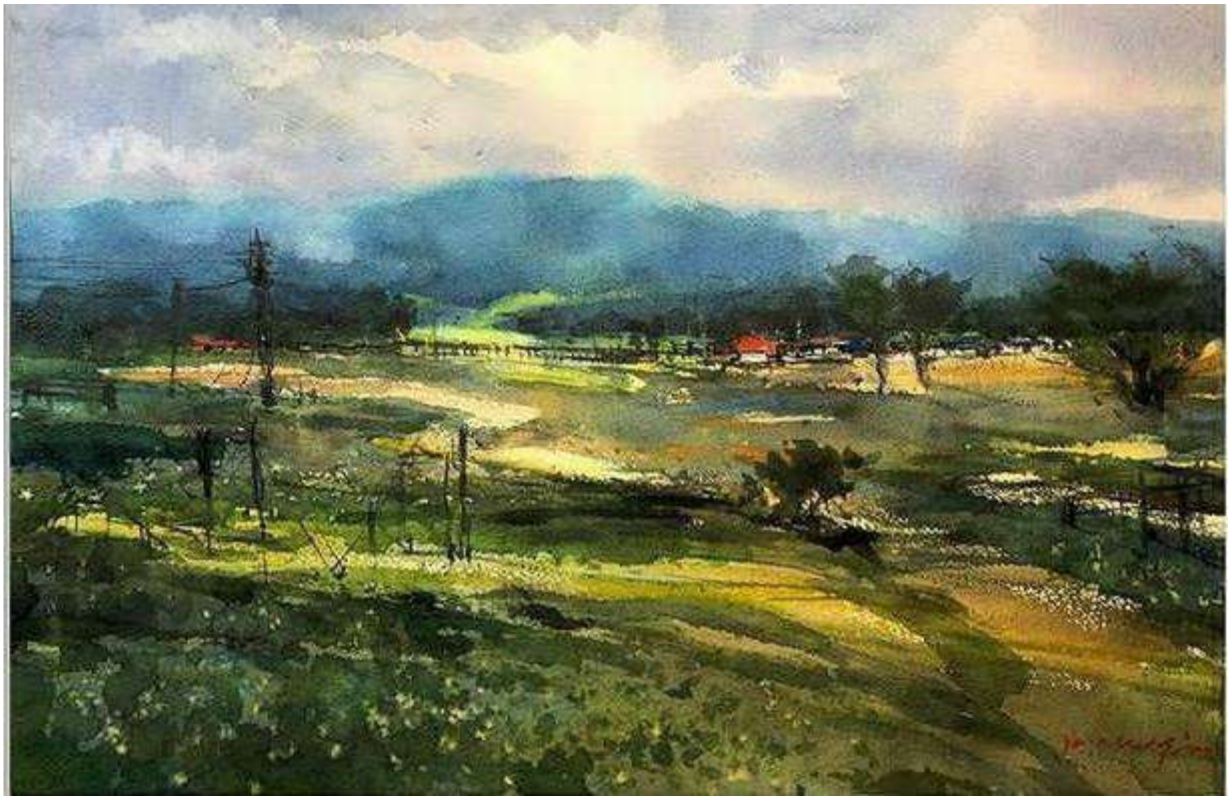

जल रंग लैंडस्केप

जल रंग लैंडस्केप

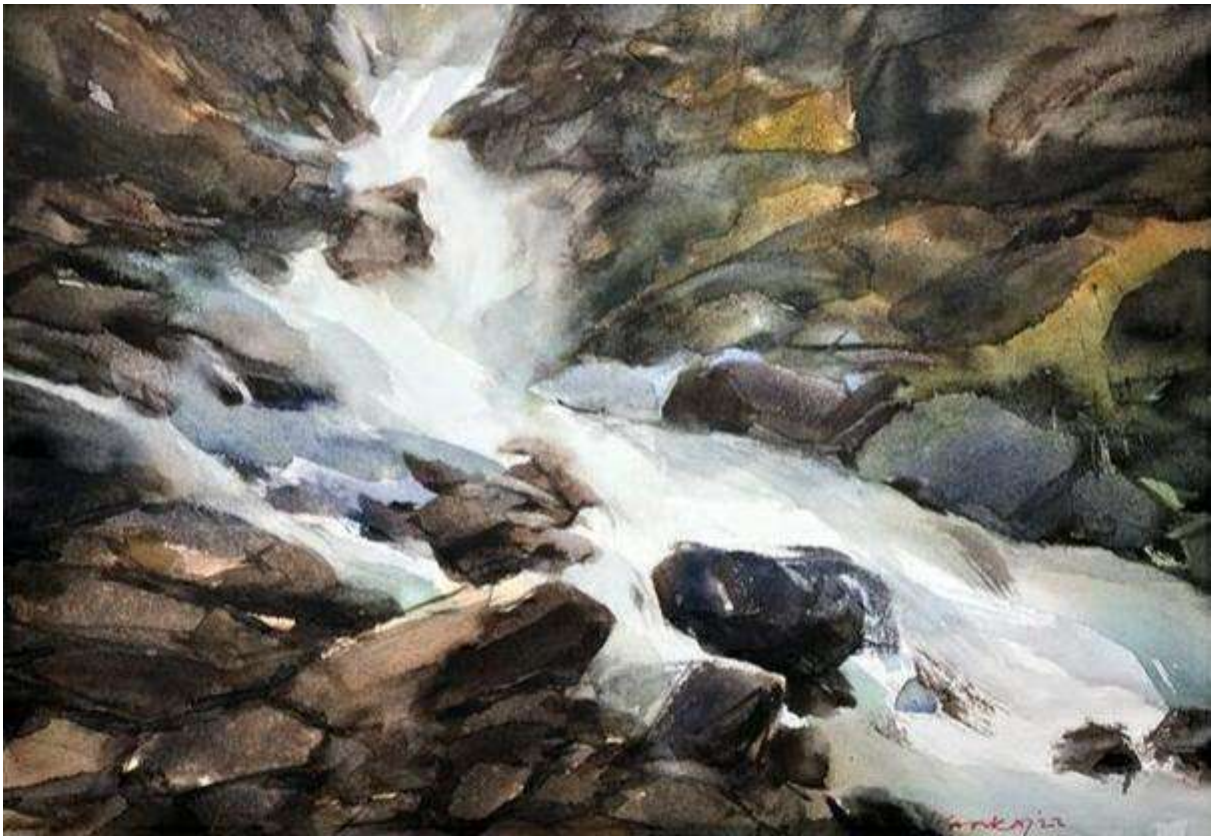

झरना (जल रंग)15//11इंच

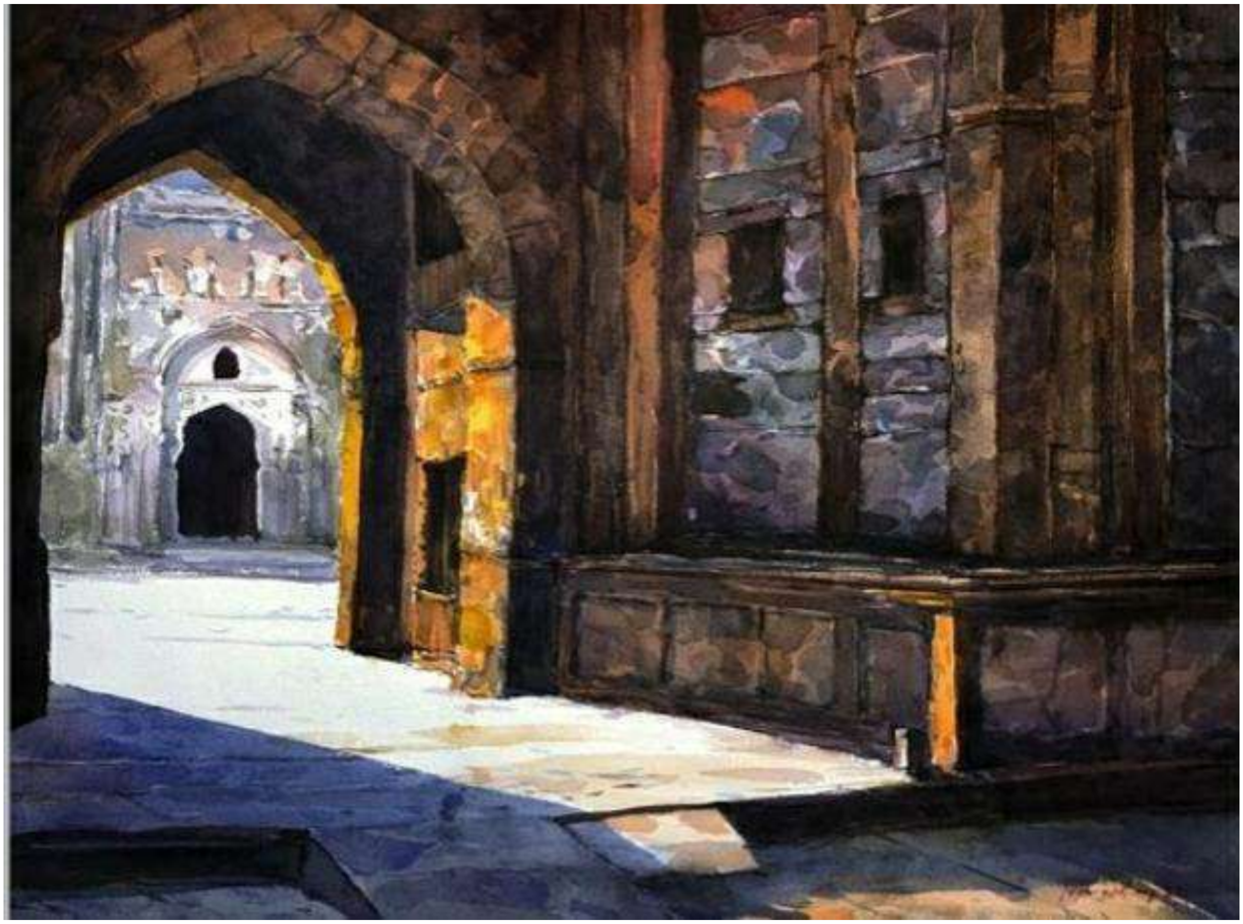

इतिहास पेंटिंग साइज़ 22/16

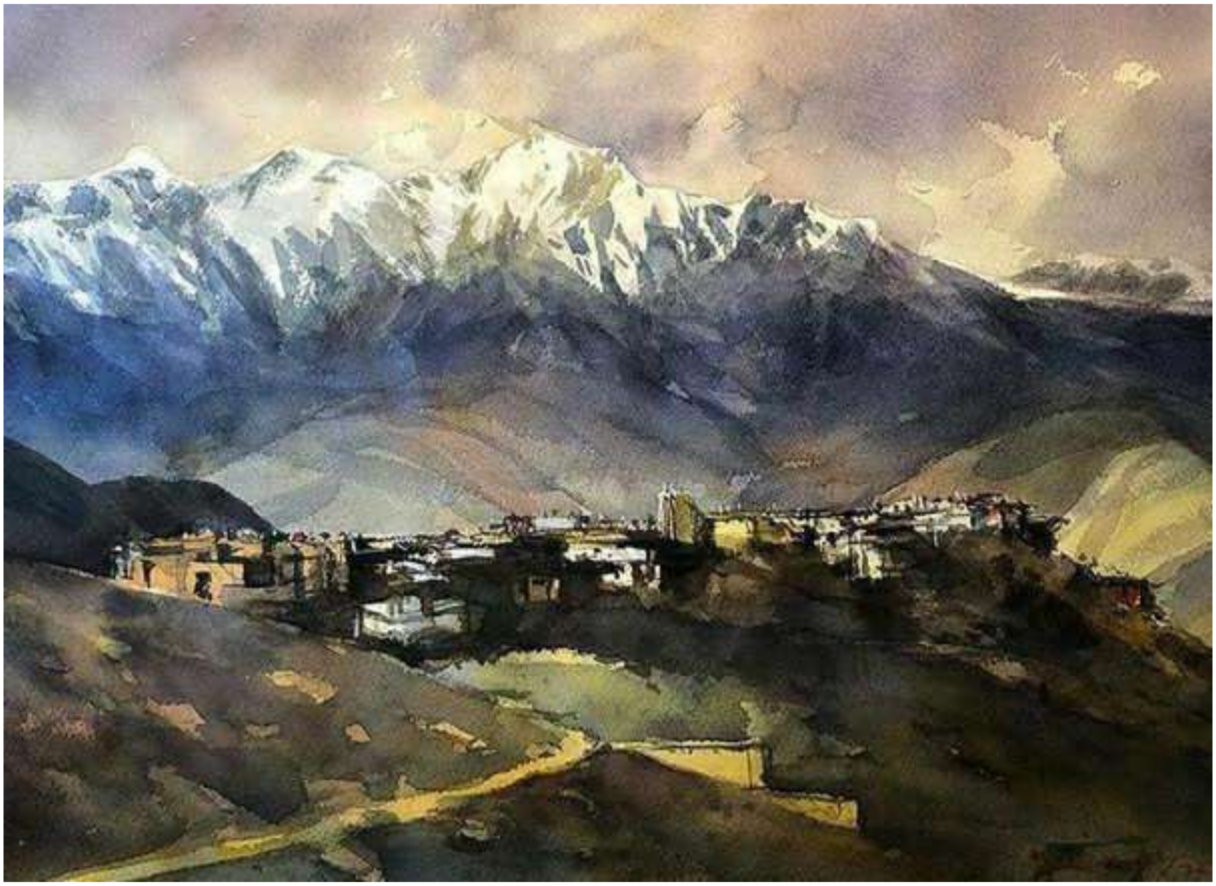

जल रंग लैंडस्केप

जैसे कि हम हम जानते ही हैं की *पंकज सरोज जी* ने इतने माध्यमों में कार्य किया है लेकिन इन माध्यमों में एक माध्यम और भी है जिसे ब्लैक जापान के नाम से जाना जाता है ब्लैक जापान पंकज जी जब लखनऊ आर्ट्स कॉलेज में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे तब उनके एक अध्यापक ***जय कृष्ण अग्रवाल*** ने उन्हें तृतीय वर्ष में बताया था कि जापानी लोग इस तकनीक को किया करते हैं क्योंकि है दुनिया की सबसे सस्ती तकनीक है

जिसमें जिसमें हजारों 10000 ,20000 जैसे संख्या तक पेंटिंग्स बनाई जा सकती है वह भी बिल्कुल ही सस्ते माध्यम से ब्लैक जापान असल में इंडिया में भारत में तारकोल या कोर ताल के नाम से जानी जाती है इसे अक्सर भारत में सड़क बनाने के कार्य में प्रयोग किया जाता है इसको कार्य में प्रयोग करने का तरीका इसमें 1 लीटर के साथ कई हजार पेंटिंग बनाई जा सकती है

ः इसको प्रयोग करने का पहला नियम है कि कोई आपके पास जब कोई खराब ब्रश हो और वहर वह तारकोल में भिगोकर उसे ड्राइंग की जाए तो तो एक अलग से ही रिजल्ट निकलता है जिससे बच्चे या व्यक्ति का डर निकलता है जो ड्राइंग करते हुए डरता है यह किसी भी तरह का डर वह जापानी इंक से इतना कार्य कर सकता है जितना वह सोच भी नहीं सकता इसका फायदा यह होता है कि एक तो अभ्यास हो जाता है तथा हाथ में सफाई आ जाती है दूसरा हर एक चीज में सुंदरता तथा स्पष्टीकरण हो जाता है

और उसका रिजल्ट अन्य माध्यमों से अलग ही सुंदर निकलता है क्योंकि यह अभ्यास इसलिए जरूरी है जो एक सबसे महंगी कागज होगा अगर आप का अभ्यास न होगा तो वह खराब हो जाएगी अगर आप इस कोल तार को जापानी इंक से अभ्यास कर रहे हो तो आप कोई भी सीट हो चाहे वह ₹600 की हो या फिर वह कितने ही महंगी हो आप उसे पर एक ही स्ट्रोक में कार्य कर सकते हैं इसका एक सबसे अच्छा उदाहरण

पंकज सरोज ने यह दिया था कि जब आप कहीं जाते हैं पार्टी वगैरा में अगर आपने सफेद कपड़े डाले हुए हैं तो आपका ध्यान सिर्फ आपके कपड़ो पर रहेगा कि वह खराब ना हो जाए यही ठीक यही चीज कलाकार के कार्य में रहती है कि वह जो कार्य कर रहा है कहीं वह खराब ना हो जाए इस चीज से बचने के लिए इस माध्यम में अभ्यास किया जाता है क्योंकि यह सबसे सस्ता माध्यम है

ब्लैक जापान चित्र 1

ब्लैक जापान चित्र 2

ब्लैक जापान चित्र 3

ब्लैक जापान चित्र 4

ब्लैक जापान चित्र 5

ब्लैक जापान चित्र 6

पंचम अध्याय

- पंकज सरोज जी से साथ साक्षात्कार

पंकज सरोज जी से साक्षात्कार

प्रश्न 01:- आपकी कला शिक्षा कैसे शुरू हुई ?

उत्तर - मेरी कला शिक्षा वैसे तो पूर्ण तरीके से कॉलेज कला संकाय लखनऊ से ही हुई है लेकिन मैं उससे पहले का आपको बताता हूं यह बचपन की बात है जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था मैं बचपन में ड्राइंग किया करता था जो की सभी बच्चे करते हैं कुछ का ज्यादा मन होता है कुछ का थोड़ा लेकिन मेरा फिर भी बहुत ज्यादा मन था

तो मुझे बचपन में मेरे एक दोस्त ने मुझे पूछने पर बताया कि उनके घर में एक युवती कला शिक्षा की कक्षाएं देती हैं जैसे कि hobby classes होती हैं तो मुझे पता चला और उनकी उनके कहने पर मैं शाम की कक्षाएं लेने लगा ।जहां मुझे तेल रंग की ज्यादा शिक्षा मिली हर चीज के बारे में बताया कि कैसे हैंडल करना है कितना कलर इस्तेमाल करना है जल रंग की भी शिक्षा दी गई जिनका नाम अमित शर्मा था मेरी रुचि को दिन प्रतिदिन बढ़ता देखकर उन्होंने मुझे पूछने पर बताया कि कल शिक्षा भी ली जाती है जो की कॉलेज में होती है और दसवीं के बाद एडमिशन लिया जा सकता है तब मैने वहां से जानना शुरू किया और आगे 12th करने के बाद में वही लखनऊ में दाखिला लिया

प्रश्न 02:- आपके घर में कला का क्या माहौल था ?

उत्तर -अच्छा तो, उसे समय खैर इस कला शिक्षा के बारे में कोई खास जानता नहीं था क्योंकि, सभी या तो सरकारी नौकरी का किया करते थे या फिर खेती बाड़ी का कार्य किया करते थे और मेरी भी पढ़ाई 11th (साइंस साइड) से ही हुई है लेकिन जब मैं मन में ठान लिया तो 12th में आर्ट्स ले ली क्योंकि आर्टिस्ट ही बनना था तो घर वालों को लगाकर चलो जैसा कर रहा है सही है ठीक है कि अच्छा ही होगा तो फिर आगे जाकर कॉलेज में आर्ट्स लखनऊ में एडमिशन ले लिया और वहां जाकर पूरा कला का कार्य सीखा हर वह कार्य सीखा जो एक एकेडमिक लेवल पर सिखाया जाता है

प्रश्न 03:- आपने वॉश तकनीक में कार्य कैसे शुरू किया ?

उत्तर - जब मैं कॉलेज में दाखिला लिया था तो वहां यह वॉश तकनीक पारंपरिक पद्धति है और इसके साथ-साथ लैंडस्केप्स को हर बच्चा किया करता है तो मैं भी इसको जानना शुरू किया हालांकि यह माध्यम थोड़े धैर्य रखने वाला है किंतु जब रिजल्ट या परिणाम आप पाते हैं तो इतना लाजवाब होता है की संतुष्टि मिल जाती है यह तकनीक लखनऊ कला संकाय में मैंने वॉश तकनीक में महारत प्राप्त कलाकार मेरे अध्यापक आदरणीय बद्रीनाथ आर्य जी से ही सीखी है हमें विकल्प दिया जाता है कि जल रंग, वास तकनीक, तेल रंग,या म्युरल सेरेमिक या लैंडस्केप या अन्य कुछ भी अब माध्यम चुने लेकिन आपको वहां वास तकनीक करने और एक लैंडस्केप करना जरूरी होता है तब से अब तक में लैंडस्केप के साथ-साथ वास तकनीक में कार्य कर रहा हूं

प्रश्न 04:- क्या आपको पेंटिंग से अलग कभी कुछ करने की चाह रही है ?

उत्तर - हां अगर मैं कहूं कि मैं लैंडस्केप तो बहुत कर लिए थे मैं कभी-कभी सोचता हूं कि मुझे सेरेमिक या पॉटरी में कुछ करना चाहिए था क्योंकि जब मैं पढ़ा करता था तो मेरे पास पेंटिंग के साथ-साथ सेरेमिक पॉटरी का भी एक विकल्प रहा था मैंने काफी समय लगभग पांच वर्षों तक सेरेमिक पॉटरी का कार्य भी किया है मुझे बहुत अच्छा लगा करता था जिसमें खासकर जो गलेजिंग पार्ट होता है वह सबसे पसंदीदा पार्ट था लेकिन इसका एक छोटा सा कारण यह भी रहा है कि

वहमाहौल बाद में नहीं मिल पाया वह प्रॉपर स्टूडियो जहां इस सेरेमिक का कार्य किया जा सकता था तो अभी भी कहीं ना कहीं कभी-कभी ख्याल आ जाता है कि मन करता है शायद मैं वह कार्य भी कर लेता तो सही रहता

प्रश्न 05:- आपका लखनऊ से चंडीगढ़ का सफर कला के विषय में कैसा रहा ?

उत्तर - हां आपने बड़ा अच्छा सवाल पूछा है जब मैं लखनऊ में था तो वहां का माहौल इतना प्यार था कि हर व्यक्ति लाइव पेंटिंग कर सकते हैं वहां झुग्गी झोपड़ियां, स्थल मंदिर लोगों का पहनावा तथा बजारों की वह चल पहल वो रौनक बिल्कुल ही पसंदीदा थी जो की एक कलाकार को अपने कार्य के विषय के दौरान चाहिए होती हैं सब बिखरा हुआ जो कि यह कलाकार को अपने आंखों से बड़ा स्पष्ट रूप से जो की एक कलाकार की आंखों से बड़ा स्पष्ट रूप से हुआ करता था लेकिन इससे पहले इसे बिल्कुल विपरीत चंडीगढ़ है यहां यह एक समझा बुझा शहर है एक सोच पर बना है हर जगह प्रॉपर चीज हैं बिल्कुल परफेक्ट बड़े से बड़े अमीर लोग छोटे से छोटे गरीब लोग बिल्कुल अलग से ही नजर नजरिया है जिसमें एक कलाकार को कार्य करने में जगह को देखना पड़ता है जबकि लखनऊ में बंजारों का माहौल से लेकर मंदिर की सीढ़िया तक की रौनक एक कलाकार की नजरों से होती थी हर तरह के मॉडल जो की कलाकार को चाहिए पैसा मिल जाया करता था चंडीगढ़ इससे काफी अलग है

प्रश्न 06:- आप लघु शोध से क्या समझते हैं ?

उत्तर - यह काफी बड़ा कार्य है क्योंकि एक किताब लिखना जिसका तात्पर्य किसी का जीवन भर का सार लिखना जो की एक बहुत बड़ी बात है इसके लिए मैं कहूंगा कि मुझे आपको मुझसे बेहतर कलाकार लेना चाहिए क्योंकि इसमें एक बेहद ऊंचाइयों वाला या एक अन्य स्तर कलाकार होना जरूरी है शायद अभी मैं उतना नहीं हूं क्योंकि यह मेरे लिए पहली बार इस तरह का साक्षात्कार है मेरा मानना है कि इसमें टाइटल वगैरा बिल्कुल प्रॉपर होना चाहिए बिल्कुल सावधानी से ताकि पढ़ने वाले को साफ-साफ पता चल सके की किताब के अंदर का विषय क्या है इसका सबसे बड़ा इफेक्ट पड़ता है मैं कहूंगा कि आपको पूरा सत्य इसमें लिखना होता है तो जितना हो सके त्रुटि रहित हो

प्रश्न 07:-आपको जल रंग या तेल रंग में सबसे अच्छा माध्यम क्या लगता है?

उत्तर - देखो वैसे तो दोनों मध्य बहुत ही सुंदर हैं इसमें ज्यादा या कम पसंदीदा पसंदीदा कहने वाला कुछ भी नहीं है क्योंकि जब मैं जल रंग में कार्य करता हूं तो जल रंग बढ़िया लगने लगता है किस इस ही मध्य में कार्य करते जाऊं और अगर मैं तेल रंग में कार्य करता तो मेरा मन करता है कि तेल रंग में ही कार्य करते जाऊं जब तेल रंग को करता हूं तो एक अलग लेवल का ही रिजल्ट मिलते हैं क्योंकि पहले आप एक लेयर लगते हैं तब आपको कुछ अलग प्रेरणा मिलते हैं दूसरे लगाने पर थोड़ी और ग्रेस बढ़ती है तीसरे पर और ऐसे करके लेयर बाय लेयर उसमें कार्य किया जाता है और उसे ग्रेस निकाल के आती हैं जिसमें व्हाइट कलर का रोल ज्यादा इंपोर्टेंट है और जल रंग में तो आप भी जानते हैं कि उसमें एक साथ कार्य किया जाता है एक स्टिंग में कार्य किया जाता है ऐसा नहीं है कि आप 1 घंटे बाद उसमें जाकर कलर करेंगे वह उस मैच नहीं होगा उसका वह मजा नहीं आता इसलिए थोड़ा जल्दी कार्य करना होता है बाकी दोनों मध्य मुझे बराबर पसंद है लेकिन बचपन में मेरी तेल रंग में शिक्षा ज्यादा हुई है तो उसे चीज का थोड़ा फर्क पड़ जाता है

प्रश्न 08:- समाज में कला के साथ कलाकार का क्या किरदार है?

उत्तर - यह समाज में एक कलाकार कैसे भूमिका निभाता है उत्तर अच्छा तो मैं कहना चाहूंगा कि देखो हर व्यक्ति का वैसे तो समाज में एक रोल होता है जो कि वह निभा रहा होता है लेकिन यहां कलाकार कभी एक रोल है जो कि वह निभा रहा है जैसे समाज में चल रही चीजों के ऊपर अपनी कलाकारी से व्यंग कर सकता है उन चीजों पर प्रकाश डाल सकते हैं जो अभी तक समाज में छुपी हुई है कलाकार समाज का अहम हिस्सा है वह दुनिया की कभी सच बदलता है जैसे एक अच्छा उदाहरण यह लीजिए कि भोपाल में जब एक गैस दुर्घटना कांड हुआ था तब लघु राय जी ने फोटो ली थी और वह फोटो अब तक उसे दृश्य कार्य को दर्शाती हैं यानी कलाकार के के कार्य की वजह से उसको प्राथमिकता मिली है पिकासो ने भी वर्ल्ड वॉर के समय बनाई थी जो की वर्ल्ड वॉर को दर्शाती हैं इस तरह पेंटिंग के माध्यम से कलाकार अपने समाज में चल रही अपने आसपास सोसाइटी में चल रही समस्याओं के ऊपर व्यंग कर सकता है प्रकाश डाल सकते हैं उनको सामने लेकर आ सकता है

प्रश्न 09:- विदेशी कलाकारों में किस-किस के कार्य से ज्यादा प्रभावित हुए हैं?

उत्तर - देखो कार्य तो सभी का बहुत ही ज्यादा अच्छा है हर व्यक्ति के कार्य से सीखने को कुछ ना कुछ मिलता जरूर है अगर मैं नाम लेकर बात करूं तो मुझे ब्रांड यानी कैमरा का कार्य बहुत पसंद है क्योंकि जो उन्होंने लाइट के साथ प्ले किया है हर सबसे ज्यादा दिलचस्प है फिर उन्होंने ब्रश के पीछे वाली साइड से जो एक नया तरीका अपनाया है और पेंटिंग्स बनाई है वह भी बहुत खूबसूरत खूबसूरत स्टाइल है फिर एक मुझे सबसे ज्यादा पसंद है क्योंकि हर आर्टिस्ट को यह नहीं होना चाहिए कि मेरी पेंटिंग्स बिक जाए या फिर वह ऐसे काम करें कि उसकी पेंटिंग्स बीके क्योंकि वहां वह एक मतलब से समिति के लिए काम कर रहा है वह अपने लिए नहीं कर रहा है जबकि बहन को अपने ऐसा नहीं किया वह ऐसा कलाकार थे जिन्होंने अपने मन की खुशी के लिए खूब सारा कार्य किया काफी लोगों ने तो उनके कार्य को बकवास भी कहा लेकिन जब आप उनके कार्य को नजदीक से देखते हैं तो वह स्टॉक लगे हुए हैं छोटे-छोटे स्टॉक लगे हुए हैं जो कि ऐसा कार्य पहले किसी ने नहीं किया उसके बाद इंटरनल और कांस्टेबल दोनों का काम लाभ जवाब है जो कि प्लेन और में मुझे बहुत ज्यादा पसंद है और इसी तरह जो भारतीय कलाकार है उसमें मुझे तैयब मेहता और अमृता शेरगिल का कार्य बहुत ज्यादा पसंद है जिसे मैं प्रभावित हूं

प्रश्न 010:- अपने फोटोग्राफी करना कैसे शुरू किया ?

उत्तर - में फोटोग्राफी करता करता हूं लेकिन मैं एक प्रोफेशनल तरीके से ही नहीं करता मैं अपनी मन की खुशी के लिए करता हूं क्योंकि जब मैं लखनऊ में था कॉलेज में तब पहली बार कैमरा लिया था तब फिल्म हुआ करती थी ब्लैक एंड व्हाइट लेकिन हम कलर ज्यादा उसे करते थे क्योंकि जब उनके प्रिंट निकलवाने होते थे तो ब्लैक एंड व्हाइट में थोड़ा मुश्किल हो जाता था इसलिए हम कलर्ड फिल्म उसे करते थे और जो आसानी से निकलवाई जा सकती थी फोटोग्राफी करते समय हम बड़े सिलेक्टेड से ही प्रिंट कराया करते थे क्योंकि उसे समय में वह बड़े महंगे होते थे फोटोग्राफी इसलिए भी पसंद है क्योंकि जब हम नेचर के ज्यादा नजदीक होते तो ऐसा नहीं है कि आप हर वक्त उसे पेंट कर सकते हो या फिर उसे समय को उसे चीज को कैद कर सकते हो तो उसके लिए फोटो लेना यह उसे चीज को कैप्चर कमेंट करना कैमरे की हेल्प से वह थोड़ा इजी हो जाता है क्योंकि जब मैं फोटो क्लिक करता हूं तो अक्सर मैं उन फोटोस से पेंटिंग भी बनाता

हूं यानी एक रिफरेंस के रूप में उसे कर लेता हूं क्योंकि जैसे कई बार आप किसी के साथ घूमने जाते हैं तो जरूरी नहीं है कि वह आपके लिए रुके हॉफ पैंट्स करो क्योंकि हर व्यक्ति को यह होता है कि आगे चले और और घूमे इसलिए बैटरी यही है कि उसे सिम को कैप्चर कर लो और बाद में अपने स्टूडियो में जाकर उसको पेंट्स करो फोटोग्राफी का मुझे बहुत फायदा यह होता है कि मैं उसको अक्सर अपनी पेंटिंग्स में उसे कर लेता हूं और यह मैं अपने मां के लिए करता हूं क्योंकि मुझे नेचर में जो चीज हैं उनको कैप्चर करना बहुत अच्छा लगता है मुझे बहुत पसंद है इसलिए मैं फोटोग्राफी करता हूं

उपसंहार

अनुभूति को अभिव्यक्त करना एक कलाकार की पहचान है तथा जिसमें पंकज सरोज जी निपुण है। प्रकृति दृश्य को पेंटिंग में देखकर पता चलता है कि वह प्रकृति के कितने समीप है। साक्षात्कार के दौरान उन्होंने मुझे काफी सारे प्रकृति के उदाहरण देकर हर पहलू के विषय को समझाया उन्होंने इस बात पर भी जोड़ दिया है कि कलाकार के लिए संवेदनशील होना बहुत आवश्यक है क्योंकि जो दूसरों के दुख को देखकर दुखी हो तथा सुख में मुस्कुराए वही एक संपूर्ण कलाकार है उनका मानना है कि कैनवास पर जो कुछ भी हम बनाते हैं वह हमारे भावों के अभिव्यक्ति होती हैं ।उन्होंने कभी भी बंधन में बंद कर कार्य नहीं किया किसी भी प्रकार की कला को बचाकर रखना उतना ही जरूरी है जितना कि ***घर में गहनों को संजोकर रखना*** और बढ़ती तकनीक के साथ कला को साथ लेकर चलना ।अपने आप में ही बड़ा कार्य है इतिहास में या परंपरा से चलती आ रही कला के कुछ साक्ष्य अगर बचे रह जाए तो नवीन पीढ़ी को पता चलता है कि यह तकनीक भी हमारा ही हिस्सा रही है । हालांकि में धैर्य बनाए रखना जरूरी है लेकिन उसका परिणाम भी उतना संतोषजनक मिलता है और एक पारदर्शी दृश्य या प्रतिबिंब बनता है पंकज सरोज ने अपनी कला के माध्यम से उन साक्ष्य को सामने रखते हैं जो हमारे भारतीय कला का खासकर पुनर्जागरण का ***सिरमौर*** रही है।

पंकज सरोज का कहना है कि अगर आप किसी कार्य को कर रहे तो उसके अंदर आपको लीन हो जाना चाहिए। उसके हर एक पहलू को समझना चाहिए। बाद में आपसे कोई पूछे तो उसमें ऐसी कमी ना हो कि आप उसमें अटक जाओ या फिर आपके पास से ना हो तथा उनका यह कहना है कि कभी भी पैसे के लिए काम ना करें अपने लिए काम करें।

पंकज जी ने लगभग सभी माध्यमों में कार्य किया है लेकिन उन्होंने वॉश तकनीक को प्राथमिकता दी है तथा वह भी प्राकृतिक दृश्य के साथ उनकी अधिकतर कलाकृतियों में प्रकृति के दृश्य ही होते हैं पंकज सरोज के कला कार्य के शोध के अंत में मैं इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं । कि पंकज सरोज जी ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने कला जगत में अपनी पहचान बनाई है तथा उनके कार्य करने का तरीका बहुत अनोखा और प्रारंभिक है उनकी रचनाओं को देखकर पता चलता है कि वह स्वतंत्र होकर कार्य करना पसंद करते हैं उन्होंने प्रकृति की गोद में रहकर कार्य किया है और जो कि उन्हें बेहद पसंद है कला के क्षेत्र तथा अध्यापन के क्षेत्र में उनके अनुभव के कारण कला तथा दर्शन के प्रति उनके विचार अत्यंत स्पष्ट है उनके पास मार्गदर्शन के लिए आए छात्र सदैव ही लाभ वंचित होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

कृष्णा (2005).***"कला दर्शन"***. मेरठ: (प्रथम संस्करण) ISBN978-81-9404641-7 Pp.5

- (2005).***"कला दर्शन"***. मेरठ: (प्रथम संस्करण) ISBN978-81-9404641-7 Pp.7
- (2005).***"कला दर्शन"***. मेरठ: (प्रथम संस्करण) ISBN978-81-9404641-7 Pp.9

चतुर्वेदी, म. (2008). ***"समकालीन भारतीय कला"*** .जयपुर : (प्रथम संस्करण) ISBN 978-81-7137-647-6। Pp22

- (2008). ***"समकालीन भारतीय कला"*** .जयपुर : (प्रथम संस्करण) ISBN 978-81-7137-647-6। Pp35
- (2008). ***"समकालीन भारतीय कला"*** .जयपुर : (प्रथम संस्करण) ISBN 978-81-7137-647-6। Pp38

Journal Article

कुमार, अ. (2023). ***"आधुनिक भारतीय कला में वॉश पद्धति का योगदान"*** आईआईएस यूनिवर्सिटी जर्नल ऑफ आर्ट्स, 2(4), 299-313. (22-4-2024) http://iisjoa.org/sites/default/files/iisjoa/April%202023/25.pdf

Websites

https://www.abhivyakti-hindi.org/kaladirgha/aalekh/badri_arya/badri_arya.htm

https://aalekhan.in/art-news/arya/

राजीब गेन। (n.d.). Rajib Gain. Retrieved from (28-4-2024)https://www.rajibgain.com

YouTube Video

eIV5USrACOg. (2023). YouTube. Retrieved from (29-4 2024) Watercolour Painting Demonstration P-21 #painting #watercolour #waterfall #demonstration #live #art (youtube.com)